मोहन राकेश
रचनावली
संपादक जयदेव तनेजा

रचनावली के इस बारहवें खंड में मोहन राकेश द्वारा अनूदित तीन विदेशी उपन्यास, ग्रेहम ग्रीन के उपन्यास 'द एंड ऑफ़ द अफ़ेयर', क्लेरेंस डे के 'लाइफ विद द फादर' और एदिता मॉरिस के 'फ्लॉवर्स ऑफ़ हिरोशिमा' क्रमशः 'उस रात के बाद', 'जो कहें पापा जो करें पापा' और 'हिरोशिमा के फूल' को संगृहित किया गया है।

'उस रात के बाद' स्त्री-पुरुष के जटिल प्रेम और अवैध शारीरिक सम्बन्धों के रहस्य को एक गुप्तचर की तरह परत-दर-परत खोलते हुए रोमांच को अंत तक बड़ी कुशलता से बनाए रखता है एवं घृणा, ईर्ष्या और अविश्वास के माध्यम से प्रेम, समर्पण और आस्था की कहानी कहता है।

'जो कहें पापा जो करें पापा' में परिवार के साथ पिता के दिलचस्प एवं निरंकुश व्यवहार को लेकर मामूली और रोज़मर्रा की छोटी-छोटी बातों से सम्बन्धित तीस अलग-अलग प्रकरण शामिल हैं। ये सभी प्रकरण मिलकर ही इसे एक हास्य उपन्यास का रूप देते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमरीका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी जैसे नगरों पर अणु बम गिराकर जो अकल्पनीय नरसंहार किया था, तीसरा उपन्यास 'हिरोशिमा के फूल' बीसवीं शताब्दी की उसी त्रासदी की पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक संवेदनशील रचना है।

मोहन राकेश रचनावली-12
[कथानुवाद]

मोहन राकेश रचनावली

खंड : बारह

सम्पादक

जयदेव तनेजा

राधाकृष्ण

नयी दिल्ली पटना इलाहाबाद

ISBN : 978-81-8361-427-6

मोहन राकेश रचनावली-12

पहला संस्करण : 2011

मूल्य : ₹ 10400
(तेरह खंड)

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

आवरण : राधाकृष्ण स्टूडियो

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

MOHAN RAKESH RACHANAWALI-12
Edited by Jaidev Taneja

बनारस के घाट पर
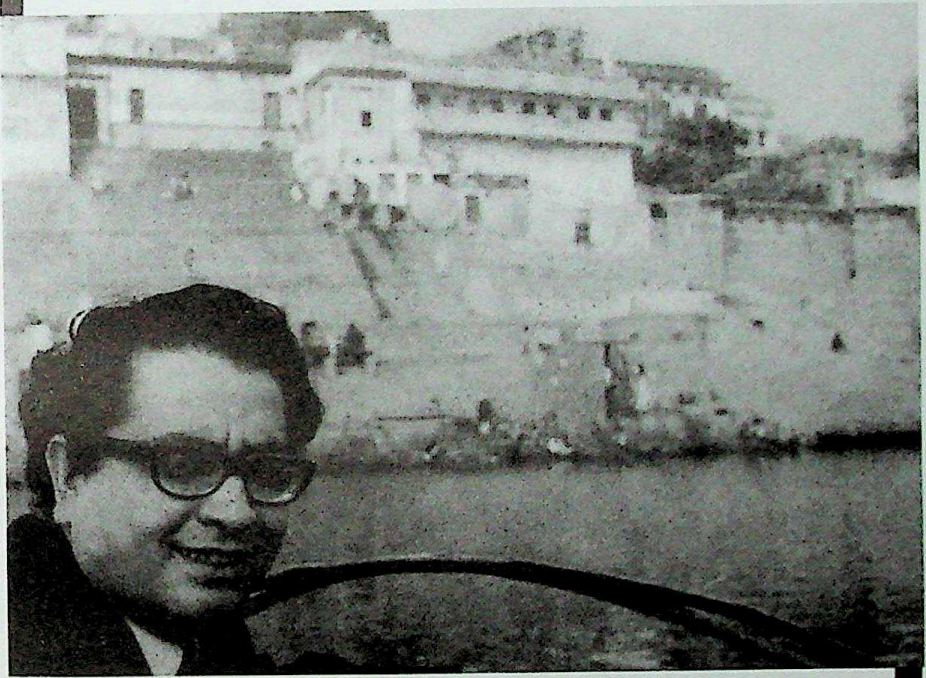
अंतिम पड़ाव

आने वाला कल !

'कितना कुछ एक साथ'

अनुक्रम

भूमिका

मोहन राकेश रचनावली के इस बारहवें खंड में तीन विदेशी उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद दिए गए हैं। यहाँ हमने इन्हें मूल उपन्यासों के प्रकाशन-क्रम के बजाय उनके अनुवादों के प्रकाशन-क्रम में संयोजित किया है। इसीलिए 1935 में छपे क्लेरेंस डे के उपन्यास 'लाइफ़ विद द फ़ादर' को 1951 में प्रकाशित ग्रेहम ग्रीन के 'द एंड ऑफ़ द अफ़ेयर' के बाद रखा गया है। 1959 में प्रकाशित एदिता मॉरिस के उपन्यास 'फ़्लॉवर्स ऑफ़ हिरोशिमा' का स्थान तो दोनों दृष्टियों से तीसरा ही है।

2 अक्टूबर, 1904 को इंग्लैंड में जन्मे सुप्रसिद्ध साहित्यकार ग्रेहम ग्रीन के विश्वविख्यात उपन्यास 'द एंड ऑफ़ द अफ़ेयर' का हिन्दी अनुवाद 'उस रात के बाद' 1960 में प्रकाशित हुआ। ग्रेहम ग्रीन ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में मानव जीवन में यातना और दुःख की व्यापकता, कैथलिक विश्वासों और जटिल चरित्रों के मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक अन्तर्मन का गहन, सूक्ष्म एवं संवेदनशील चित्रण किया है। इनकी अधिकांश कृतियाँ इनके आत्मानुभव से प्रेरित हैं।

'उस रात के बाद' का नायक मॉरिस बैंड्रिक्स (कुछ संस्करणों में बैंडिक्स) एक अल्प-प्रसिद्ध उपन्यासकार है, जो यहाँ स्वयं अपनी कहानी लिख रहा है। यह चरित्र बहुत हद तक रचनाकार ग्रेहम ग्रीन के अपने जीवन पर ही आधारित है। ग्रेहम ग्रीन ने स्वयं इंग्लैंड के सर्वाधिक समृद्ध व्यक्तियों में से एक हेनरी वाल्स्टन की पत्नी कैथेरीन से दस वर्षों तक अवैध सम्बन्ध रखे थे। इस उपन्यास में गृह रक्षा मंत्रालय के उच्च्व प्रशासनिक अधिकारी हेनरी माइल्स की पत्नी और बैंड्रिक्स की प्रेमिका सैरा का चरित्र कैथेरीन से प्रेरित है–जिसे यह उपन्यास समर्पित भी किया गया है। उपन्यास द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जून, 1944 की उस रात की घटना के इर्द-गिर्द घूमता है, जिस

रात नायक-नायिका एक साथ थे कि तभी वहाँ बम-विस्फोट हुआ और बैंड्रिक्स ध्वस्त घर के एक हिस्से के मलबे के नीचे दब गया। सैरा समझती है कि वह मर गया है। परन्तु कुछ ही समय बाद उसे अपने सामने जीवित खड़ा देखकर हतप्रभ हो जाती है। तभी वह बैंड्रिक्स से, बिना कुछ कहे, हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़कर चली जाती है। सैरा के इस आकस्मिक व्यवहार और विश्वासघात से आहत, दुःखी और क्रुद्ध बैंड्रिक्स इसका कारण जानने के लिए एक जासूस को सैरा के पीछे लगा देता है। वह सैरा की डायरी चुराकर बैंड्रिक्स को ला देता है। उससे पता चलता है कि बम-विस्फोट वाली रात बैंड्रिक्स को मरा समझकर सैरा ने जीवन में पहली बार ईश्वर (जिस पर कभी उसका विश्वास नहीं था) से प्रार्थना की थी कि यदि 'वह' बैंड्रिक्स को जीवनदान दे देगा तो उसकी कृपा के एवज में वह अपने अगाध प्रेम के बावज़ूद, अपने प्रेमी को हमेशा के लिए छोड़ देगी। बैंड्रिक्स चूँकि जीवित बच गया था। इसीलिए सैरा को ईश्वर से की गई अपनी प्रतिज्ञा के कारण उससे मजबूरन अलग होना पड़ा। वह निमोनिया से मर गई। उपन्यासकार को लगता है कि ईश्वर में उसके सच्चे विश्वास ने ही उस 'कुलटा और विश्वासघातिनी' को ईश्वर ने क्षमा कर दिया और अंत में वह एक नेक महिला की तरह मरी। उसकी पवित्र आत्मा ने कुछ चमत्कार भी किए जिन्हें स्वभाव से कट्टर नास्तिक बैंड्रिक्स केवल संयोग कहकर उड़ा देना चाहता है। परन्तु अंत में हेनरी के साथ बीयर पीते हुए अनायास वह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि 'वह' उसे उसके हाल पर छोड़ दे। वह इतना थक चुका है कि अपनी घृणा और संशय-वृत्ति को छोड़कर अब वह प्रेम और विश्वास नहीं कर सकता।

'उस रात के बाद' स्त्री-पुरुष के जटिल प्रेम और अवैध शारीरिक सम्बन्धों के रहस्य को एक गुप्तचर की तरह परत-दर-परत खोलते हुए रोमांच को अंत तक बड़ी कुशलता से बनाए रखता है। यह उपन्यास घृणा, ईर्ष्या और अविश्वास के माध्यम से प्रेम, समर्पण और आस्था की कहानी कहता है। गम्भीर साहित्यिक गुणवत्ता, नाटकीय घटनाक्रम, रोमांस, सैक्स, प्रतिशोध, जासूसी, रोमांच, चमत्कार और सिनेमाई दृश्य-बोध के कारण यह उपन्यास बीसवीं सदी के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में प्रमुख स्थान रखता है। इस उपन्यास पर तीन बार सफल फ़िल्में बनीं और सन् 2004 से जैक हैग्गी के निर्देशन में इसे एक लोकप्रिय ऑपेरा के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है।

जूनियर क्लेरेंस डे के आत्मकथात्मक हास्य उपन्यास 'लाइफ़ विद द फ़ादर' का हिन्दी अनुवाद 'जो कहें पापा जो करें पापा' 1961 में प्रकाशित हुआ। 18 नवम्बर, 1874 में क्लेरेंस डे का जन्म न्यूयॉर्क शहर में हुआ था। पिता के साथ घर-बाहर रहते हुए और वॉलस्ट्रीट स्टॉक एक्सचेंज में उनके साथ काम करते हुए बेटे के रूप में क्लेरेंस को जो भी अनूठे, अजीबोग़रीब और रोचक अनुभव हुए, उन्हीं को उसने कई उपन्यासों की शक्ल में लिखा। इनमें से 'जो कहें पापा जो करें पापा' सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय रचना है। यह उपन्यास के पारम्परिक शिल्प-विधान में लिखा गया उपन्यास नहीं है।

इसमें परिवार के साथ पिता के दिलचस्प एवं निरंकुश व्यवहार को लेकर मामूली और रोज़मर्रा की छोटी-छोटी बातों से सम्बन्धित तीस अलग-अलग प्रकरण शामिल हैं। 'पापा के साथ छुट्टी के दिन' से लेकर कब्रिस्तान में अपनी कब्र के लिए, बाक़ी रिश्तेदारों की कब्रों से अलग, 'कोनेवाला प्लॉट' खरीद रखने की उनकी सनक तक–पापा ही वह सूत्र हैं जो इन प्रकरणों को जोड़कर एक उपन्यास का रूप देते हैं। अपने दबंग स्वभाव, रईसी ठाठबाट, चुस्त-दुरुस्त सेहत और फ़ुर्तीले जिस्म वाले पिता अपने सही अर्थों में परिवार के स्वामी हैं। 'कोई भी इंसान या हैवान कभी पापा की मर्ज़ी के खिलाफ़ चल सकता है' इसकी कल्पना करना भी किसी के लिए सम्भव नहीं है। अपने इशारों पर सबको नचानेवाले ये स्वामी जब अपनी ही इच्छा और मर्ज़ी के चंगुल में फँसकर विवश, असहाय और बेचारे बन जाते हैं तो उनकी वह विसंगत स्थिति हास्य के सभी रंग बिखेर देती है।

28 दिसम्बर, 1935 में हुई लेखक की मृत्यु के बाद 15 फरवरी, 1940 में इस उपन्यास के कुछ प्रसंगों के साथ इसी लेखक के दो अन्य उपन्यासों 'गॉड एंड माई फ़ादर' तथा 'लाइफ़ विद मदर' के कुछ दृश्यों को जोड़कर एक नाटक प्रस्तुत किया गया जो ब्रॉडवे के सबसे ज़्यादा चलनेवाले असंगीतकों में से एक सिद्ध हुआ। 1947 में नाट्य-प्रदर्शन बंद होने के साथ ही 'लाइफ़ विद फ़ादर' पर एक लोकप्रिय फ़िल्म बनी जिसमें एलिजाबेथ टेलर और मार्टिन मिलनर जैसे फ़िल्मी सितारों ने काम किया। 1953-55 के बीच इसी शीर्षक से एक कामयाब धारावाहिक भी लगातार टी.वी. से प्रदर्शित किया गया।

'फ़्लॉवर्स ऑफ़ हिरोशिमा' की रचनाकार एदिता मॉरिस एक स्वीडिश-अमरीकी लेखिका थीं, जिनका जन्म 5 मार्च, 1902 को और निधन

15 मार्च, 1988 में हुआ। इन्होंने 'स्ट्रेट जैकेट' नामक अपनी आत्मकथा के अतिरिक्त पन्द्रह उपन्यास और भी लिखे हैं। लेकिन 'फ़्लॉवर्स ऑफ़ हिरोशिमा' जैसी प्रसिद्धि, सफलता और मान्यता किसी अन्य रचना को नहीं मिली। इसका हिन्दी अनुवाद 'हिरोशिमा के फूल' 1965 में छपा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमरीका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी जैसे नगरों पर अणु बम गिराकर जो अकल्पनीय नरसंहार किया था वह बीसवीं शताब्दि की सबसे बड़ी त्रासदी और अमानवीयता की बेमिसाल मिसाल है। इस खंड का तीसरा उपन्यास उसी पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक संवेदनशील रचना है।

'लिटिल ब्वाय' के नाम के जिस कालसूर्य को 6 अगस्त, 1945 को सुबह सवा आठ बजे जापान के समृद्ध शहर हिरोशिमा के बीचोबीच अनगिनत बेबस और बेगुनाह नागरिकों, बच्चों, स्त्रियों, बूढ़ों और बीमारों के ऊपर अचानक गिरा दिया गया था उसके क्षण-भर के उदय-अस्त ने 90,000 मनुष्यों को पलभर में भाप बनाकर उड़ा दिया। उस विस्फोट में जले-झुलसे, अधमरे, घायल, अन्धे, लंगड़े, लूले होकर बच रहे 70,000 से अधिक व्यक्तियों ने अस्पतालों या ख़ूनी दलदल से भरी सड़कों-गलियों में मर्मांतक पीड़ा से छटपटाते दम तोड़ दिया था। उस अमानुषिक हत्याकांड के दूरगामी परिणाम तो और भी भयानक थे, जो आनेवाली पीढ़ियों को भुगतने पड़े। परन्तु मृत्यु और जीवन के इस निर्णायक संघर्ष के बावज़ूद मनुष्य की जिजीविषा ने हार नहीं मानी। उसने विनाश की नकारात्मक क्रूर शक्तियों के सामने बंजर ज़मीन में से भी, अपनी अपराजेय रचनात्मक शक्तियों के बल पर जीवन के नवांकुर पैदा कर लेने में विजय पाई। नए फूल खिलाए और इंसानी रिश्तों को बचाए-बनाए रखने में अपनी पूरी जीवन-शक्ति लगा दी। पुनर्निर्माण के विजय-स्तम्भ सीना तानकर खड़े होने लगे। विध्वंसों के परिणामों से नवनिर्माण की यह लड़ाई कई स्तरों और रूपों में लड़ी गई।

इसके हिन्दी अनुवाद के शब्द 'फूल' में श्लेष है। हिन्दी में 'फूल' शब्द कुसुमों और पुष्पों के अर्थ में तो सामान्यतः प्रयुक्त होता ही है, परन्तु इसी का दूसरा अर्थ अस्थियाँ भी होता है। 'हिरोशिमा के फूल' में दोनों अर्थ समाहित हैं। हिरोशिमा के शूरवीर एवं कर्मठ निवासी, तमाम रुकावटों के बावज़ूद, हिरोशिमा के श्मशान में जल चुके शरीरों की अस्थियों (फूलों) के ढेरों में नवनिर्माण और नवजीवन के नए-ताज़े फूल खिलाने में संलग्न हो गए।

मूलतः यह उपन्यास एदिता मॉरिस के अपने बेटे इवान मॉरिस के स्वानुभवों से प्रेरित है, जो उन दिनों अमरीकी नेवी का इंटैलीजैंट ऑफ़िसर था। वह बम-कांड के ठीक बाद वहाँ गया था और उन भयानक नारकीय दृश्यों को उसने स्वयं अपनी आँखों से देखा था। इस पुस्तक का विश्व की चालीस से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। एदिता अपने धनी पति इरा विक्टर मॉरिस के साथ 1955 में स्वयं जापान गईं। हिरोशिमा के पीड़ितों से पूरी संवेदना एवं सहानुभूति से मिलीं। वहीं इन्हें 1961 में 'द फ़्लॉवर्स ऑफ़ हिरोशिमा' के लिए 'एलबर्ट श्वाईटर्ज़र' पुरस्कार भी दिया गया। ऑपेरा के रूप में भी इसे पर्याप्त ख्याति मिली। हॉलीवुड ने इसके फ़िल्मीकरण के अधिकार ले रखे हैं लेकिन फ़िल्म अभी तक बन नहीं पाई है।

मॉरिस दम्पत्ति ने पहले वहाँ पीड़ितों के लिए रैस्ट हाउस बनवाया और बाद में 'हिरोशिमा फाउंडेशन फ़ॉर पीस एंड कल्चर' की स्थापना भी की। 'हिरोशिमा के फूल' निश्चय ही एक दिलचस्प, सार्थक और अत्यन्त प्रासंगिक उपन्यास है।

—जयदेव तनेजा

उस रात के बाद
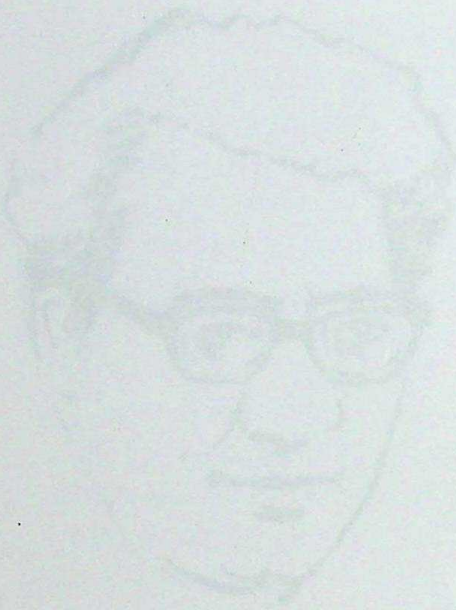
मनुष्य के हृदय में कुछ ऐसे भी स्थल हैं जिनका अभी कोई अस्तित्व नहीं; और पीड़ा उन्हीं को छूती है जिससे वे अस्तित्व में आ सकें।

—लेओन ब्लॉय

1

कहानी का अपना कोई आरम्भ या अन्त नहीं होता; लिखने वाला अपने अनुभव का कोई भी एक क्षण चुन लेता है और वहाँ से आगे या पीछे की ओर देखने लगता है। और चुन लेने की बात में भी मैं समझता हूँ कि मेरा व्यर्थ का गर्व ही झलकता है—एक ऐसे लेखक का गर्व जिसका यदि कहीं गम्भीरतापूर्वक उल्लेख हुआ है तो लोगों ने उसके शिल्प की ही प्रशंसा की है। इस कहानी का आरम्भ मैं जनवरी सन् छयालीस की एक अँधेरी गीली रात से कर रहा हूँ—उस रात से जब कॉमन के रास्तों पर चारों तरफ़ वर्षा का पानी फैला था और हेनरी माइल्स को मैंने उसमें से लाँघकर आते देखा था। मगर सोचता हूँ कि क्या मैं जान-बूझकर कहानी का आरम्भ यहाँ से कर रहा हूँ या यह चित्र अनायास ही मेरे मस्तिष्क में उभर रहा है? मैं मानता हूँ कि सुविधा मुझे यहीं से आरम्भ करने में है और शिल्प की दृष्टि से भी यहीं से आरम्भ करना ठीक है। परन्तु उन दिनों मुझे ईश्वर में विश्वास होता तो शायद मुझे यह भी लगता कि एक अज्ञात हाथ ने ही उस समय मेरी कुहनी को छूकर मुझे मजबूत किया था कि मैं हेनरी से बात करूँ, हालाँकि उसका ध्यान उस समय मेरी तरफ़ नहीं था।

नहीं तो मैं उससे बात क्यों करता? मनुष्य का मनुष्य से घृणा करना बुरी बात है, फिर भी मैं कह सकता हूँ कि मैं हेनरी से घृणा करता था। मैं उसकी पत्नी सैरा से भी घृणा करता था। और उस शाम मुझे मिलने के बाद मैं समझता हूँ कि हेनरी को भी मुझसे घृणा हो गई होगी—उसी तरह जैसे कभी-कभी उसे अपनी पत्नी सैरा और उस तीसरे व्यक्ति से घृणा रही होगी जिसके अस्तित्व में सौभाग्यवश उन दिनों हम दोनों को ही विश्वास नहीं था। बहरहाल, यह मेरी घृणा की कहानी है, इसलिए इसमें कोई बात मैं हेनरी या सैरा के पक्ष में भी कहूँ तो वह ग़लत न होगी। एक लेखक होने के नाते मेरा कर्तव्य मुझे मजबूर करता है कि घृणा की कहानी कहने में भी मैं अपने को सच्चाई से दूर न हटने दूँ।

तो, उस समय हेनरी को कॉमन में घूमते देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। एक तो उस जैसा आरामपसन्द आदमी, और दूसरे वह सैरा को घर में अकेला छोड़कर बाहर निकल पड़े, यह बात कुछ समझ में नहीं आती थी। मेरे जैसा आदमी हो तो

बात दूसरी है। मुझे ज़िन्दगी में कभी कहीं थोड़ा सुख और आराम मिले भी, तो मुझे लगता है कि कोई ग़लत बात हो गई है। अकेली ज़िन्दगी जीनेवाले आदमी को कष्ट में रहना ही स्वाभाविक लगने लगता है। कॉमन में दक्खिन की ओर मैंने एक छोटा-सा कमरा ले रखा था जिसमें फर्नीचर के नाम पर कुछ पुरानी टूटी-फूटी चीज़ें ही पड़ी थीं। मगर वह कमरा भी मुझे ज़रूरत से ज़्यादा ही आरामदेह लगता था और इसीलिए उस समय मैं वर्षा में बाहर टहलने के लिए निकल पड़ा था। सोचा था किसी जगह बैठकर एकाध पेग पी लूँगा। जब मैं कमरे से निकलकर बाहर अपने हॉल में आया तो देखा वहाँ बहुत-से लोग बैठे हैं और चारों तरफ़ हैट और कोट लटक रहे हैं। दूसरी मंज़िल के किराएदार के मेहमान आए हुए थे। मैंने भूल से किसी और का छाता उठा लिया और रंगदार शीशे का दरवाज़ा बन्द करके ध्यान से सीढ़ियों से उतरने लगा। उन्नीस सौ चवालीस की बमबारी में वे सीढ़ियाँ टूट-फूट गई थीं और अभी उनकी मरम्मत नहीं हुई थी। मुझे वह अवसर अच्छी तरह याद था। बमबारी का आघात सहकर भी विक्टोरिया के ज़माने के वे भद्दे और मज़बूत शीशे ज्यों-के-त्यों खड़े रहे थे—कुछ उसी तरह जैसे उस ज़माने के लोग ऐसे अवसर पर खड़े रहते।

कॉमन में पहुँचकर जब मैंने छाता खोला तो मुझे अपनी ग़लती का अहसास हुआ। वह छाता ऊपर से चूने लगा और वर्षा का पानी मेरी बरसाती के कॉलर से अन्दर जाने लगा। उसी समय मेरी नज़र हेनरी पर पड़ी। मैं चाहता तो उसकी नज़र बचाकर भी जा सकता था। उसके पास छाता नहीं था और लैम्प की रोशनी से साफ़ नज़र आ रहा था कि वर्षा के मारे उसे ठीक दिखाई नहीं दे रहा। रास्ते के काले रुंड-मुंड पेड़ भी उसका बचाव नहीं कर रहे थे; बल्कि वे ऐसे लगते थे जैसे टूटे हुए परनाले खड़े हों। हेनरी सिर पर काला सख़्त हैट लगाए था और सरकारी कर्मचारियों वाला काला कोट पहने था। पानी उसके हैट से नीचे टपक रहा था और कोट पर होकर धारें नीचे बह रही थीं। मैं उस समय बिलकुल उसके पास से होकर भी निकलता तो वह मुझे न देख पाता और अगर मैं दो-एक क़दम एक तरफ़ को हट जाता तब तो पता चलने की कोई बात ही नहीं थी। मगर मैंने खुद ही उसे रोककर कहा, ''कहो हेनरी, क्या हाल हैं? आजकल तो तुम दिखाई ही नहीं देते!'' और यह सुनते ही उसकी आँखों में ऐसी चमक आ गई जैसे वह और मैं एक ज़माने के दोस्त हों।

''बैंड्रिक्स*!'' उसने स्नेह-भरे स्वर में कहा, हालाँकि दुनिया की नज़र से देखा जाए तो घृणा उसे मुझसे होनी चाहिए थी, मुझे उससे नहीं।

---

* बैंड्रिक्स की जगह कई पुस्तकों में बैंडिक्स (BENDIX) भी पाया जाता है।

"इस वर्षा में कैसे निकल पड़े? ख़ैर तो है?" वह उन आदमियों में से था जिनकी भलमनसाहत हमें अच्छी नहीं लगती, और हम ख़ामख़ाह उन्हें छेड़ने लगते हैं। "कुछ नहीं, यूँ ही ज़रा हवाखोरी के लिए निकल आया था", उसने जैसे टालते हुए कहा। उसी समय हवा और वर्षा का एक झोंका आया जिससे उसका हैट उड़कर उत्तर की तरफ़ जाने लगा, मगर किसी तरह उसने उसे सँभाल लिया।

"सैरा ठीक-ठाक है?" यह मैंने इसलिए पूछा कि कुछ-न-कुछ तो पूछना ही चाहिए था, हालाँकि खुशी मुझे यही जानकर होती कि सैरा बीमार है, दुखी है और मर रही है। उन दिनों मुझे लगता था कि सैरा को जितना ही कष्ट हो, मुझे उतना ही सुख मिलेगा और अगर वह चल बसे तो मुझे छुटकारा मिल जाएगा। तब फिर वे बुरी-बुरी बातें मेरे दिमाग़ में नहीं आएँगी जो उस कमबख़्ती में हर समय मुझे घेरे रहती थीं। मैं तो बल्कि यह भी सोचता था कि अगर सैरा की मृत्यु हो जाए तो हो सकता है बेचारा हेनरी भी मुझे कुछ अच्छा लगने लगे।

"वह इस समय ज़रा घूमने गई है", उसने कहा, और यह सुनते ही मेरे मन का शैतान फिर जाग उठा। मुझे वे दिन याद हो आए जब हेनरी यही बात शायद दूसरे लोगों से कहता होगा, जब कि सैरा उस समय कहाँ होती थी, यह अकेला मैं ही जानता था।

"कुछ पीने की सलाह हो तो आओ", मैंने कहा, और मुझे आश्चर्य हुआ कि वह सचमुच ही मेरे साथ चल पड़ा। उससे पहले हमने उसके घर से बाहर कहीं इकट्ठे नहीं पी थी।

"तुम्हें देखे एक मुद्दत हो गई बैंड्रिक्स", उसने चलते हुए कहा। मेरे साहित्यिक माता-पिता ने अपनी तरफ़ से जाने क्या-क्या सोचकर मेरा नाम मॉरिस रखा था। मगर मेरे जानने वालों के लिए वह नाम न होने के ही बराबर था, क्योंकि सब लोग मुझे मेरे जाति नाम से ही बुलाते थे।

"हाँ, काफ़ी दिन हो गए।"

"मैं समझता हूँ कि साल-भर से ज़्यादा हो गया।"

"जून चवालीस के बाद नहीं मिले", मैंने कहा।

"इतने दिन हो गए? अरे, हाँ हाँ...।"

कैसा गधा है, मैंने सोचा। हम लोगों को मिले डेढ़ साल से ऊपर हो गया, और इसे उसमें कोई ख़ास बात ही नज़र नहीं आती! कॉमन के एक तरफ़ मेरा घर था और दूसरी तरफ़ उसका और बीच का मैदान पाँच सौ गज़ चौड़ा भी नहीं था। इतने दिनों में क्या उसे एक बार भी सैरा से यह कहने का ध्यान नहीं आया कि आजकल बैंड्रिक्स नज़र नहीं आया, कभी उसे बुला लिया जाए? और उसके कहने पर सैरा ने अगर ट[illegible] की बात नहीं लगी? मैं पानी

में फेंके हुए पत्थर की तरह अचानक ही उन लोगों के सामने से ग़ायब हो गया था। ऊपर की लहरों ने हो सकता है महीना-दस दिन सैरा को कुछ अस्थिर किया हो, मगर हेनरी ने तो जैसे आँखों पर पट्टी बाँध रखी थी। मुझे उन दिनों भी उसकी पट्टी से उसी तरह चिढ़ हुआ करती थी, क्योंकि उसका जितना लाभ मैं उठा रहा था उतना ही दूसरे लोग भी उठा सकते थे।

"वह सिनेमा देखने तो नहीं गई?" मैंने पूछा।

"नहीं, सिनेमा वह नहीं देखती।"

"उन दिनों तो बहुत देखा करती थी।"

'पांटफ्रेक्ट आर्म्ज़' आ गया तो हम उसके अन्दर चले गए। क्रिसमस की बाजारू साज़-सजावट अभी वहाँ से हटाई नहीं गई थी। पीली और जामुनी झंडियाँ और फानूस अभी उसी तरह लटक रहे थे। होटल की मालकिन काउंटर पर वक्ष टिकाए बैठी थी और घृणा की दृष्टि से अपने ग्राहकों को घूर रही थी।

"अच्छी जगह है", हेनरी ने खोई-खोई और घबराई-सी नज़र से हैट लटकाने की जगह ढूँढ़ते हुए निरर्थक ही कहा। मुझे लगा कि उससे पहले वह उस तरह के शराबखाने में कभी नहीं आया, मन्त्रालय के साथियों के साथ दोपहर का खाना खाने नार्थलैंड ऐवेन्यू के चॉप हाउस तक भले ही कभी गया हो।

"क्या लाऊँ?" मैंने पूछा।

"व्हिस्की ठीक रहेगी?"

"मेरा ख़याल है इस वक़्त रम ही चलने दें।"

एक जगह देखकर हम बैठ गए और चुपचाप अपने-अपने गिलास को सहलाने लगे। हेनरी के पास बैठकर मुझे कभी कोई बात नहीं सूझती थी। उससे मैंने परिचय भी एक ख़ास कारण से ही किया था, नहीं तो शायद उसे या उसकी पत्नी सैरा को जानने का मैं कष्ट ही न उठाता। यह उनतालीस की बात है। उन दिनों मैं एक सरकारी कर्मचारी का चरित्र लेकर एक कहानी लिखने की सोच रहा था। वाल्टर बेसेंट से बात करते हुए एक बार हेनरी जेम्स ने कहा था कि यदि किसी लड़की को एक ब्रिगेड के सम्बन्ध में उपन्यास लिखना हो और लिखने की प्रतिभा उसमें हो, तो गारद की बैरकों में जाकर वह एक बार बावर्चीखाने की खिड़की से अन्दर झाँक ले तो उसे अपने लिए पूरा मसाला मिल जाएगा। मगर मेरा ख़याल है कि लिखते समय ज़रा विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए शायद उसका किसी सिपाही के पास जाकर एक रात सोना भी ज़रूरी होगा। ख़ैर, मैं हेनरी के साथ सोया तो नहीं, मगर उससे उतरकर जो चीज़ की जा सकती थी वह मैंने ज़रूर की। वैसे पहली रात जब मैं सैरा को खाना खिलाने के लिए ले गया तो मेरा नेक इरादा इतना ही था कि एक सरकारी कर्मचारी की पत्नी के दिमाग़ को समझा जाए। उस

बेचारी को मेरे इरादे का कतई पता नहीं था और वह शायद यही समझ रही थी कि मुझे उसकी घरेलू ज़िन्दगी में वाकई दिलचस्पी है। इसीलिए शायद मैं उसे अच्छा भी लगा। मैं उससे ऐसे-ऐसे सवाल पूछता रहा कि हेनरी नाश्ता किस समय करता है, वह दफ़्तर बस में जाता है या ट्यूब में या टैक्सी में, रात को घर पर भी काम करता है या नहीं और उसके बैग पर राजकीय निशान बना है या नहीं। मेरी इस दिलचस्पी ने बहुत जल्द ही हमें मित्र बना दिया, क्योंकि उसके लिए यह बहुत खुशी की बात थी कि कोई आदमी हेनरी के बारे में भी इतनी गम्भीरता से बात कर सकता है। हेनरी निःसन्देह एक बड़ा आदमी था, क्योंकि उसका रुतबा बड़ा था, मगर ऐसा बड़प्पन हाथी के बड़प्पन जैसा ही होता है और उसे गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया जाता। हेनरी पेंशन्स के मन्त्रालय में एक महत्त्वपूर्ण असिस्टेंट सैक्रेटरी था; आगे चलकर वह गृह-रक्षा मन्त्रालय में चला गया। 'गृह-रक्षा' की बात को लेकर मैं सैरा का बहुत मज़ाक उड़ाया करता था। सहवास के क्षणों के बाद जब व्यक्ति का मन भर जाता है तो ख़ामख़ाह उसका हुज्जत करने को मन होने लगता है। जब हम लोगों की आपस में घनिष्ठता बढ़ गई तो एक बार मैंने जान-बूझकर सैरा को बता दिया कि मैंने हेनरी से परिचय एक चरित्र का खाका उतारने के लिए ही किया था, और खाका भी ऐसे चुगद का जिसका कि मैं मज़ाक उड़ाना चाहता था। इससे सैरा मेरे उपन्यास की बात से चिढ़ने लगी। उसे हेनरी से काफ़ी लगाव था इससे मैं भी इनकार नहीं कर सकता। और इसीलिए उन धुँधले क्षणों में जब मेरे दिमाग़ पर शैतान सवार होता तो मैं अपने मन का गुबार गरीब हेनरी पर निकालने लगता। उपन्यास का ज़िक्र लाकर सैरा को तंग करने के लिए मैं ऐसे-ऐसे क़िस्से घड़ता कि तौबा! एक बार सारी रात वह मेरे पास रही। एक लेखक जिस उत्सुकता के साथ अपनी पुस्तक के अन्तिम शब्द पर पहुँचने की राह देखता है उसी उत्सुकता के साथ मैंने उस अवसर की प्रतीक्षा की थी। बहुत देर तो हम जैसे प्रेम के शिखर पर पहुँचे रहे, परन्तु फिर मेरे मुँह से एक ऐसी बात निकल गई कि दोनों का ही मूड बिगड़ गया और सारा मज़ा किरकिरा हो गया। दो बजे के लगभग मैं कुढ़ता हुआ सोया और तीन बजे मेरी नींद फिर उखड़ गई। मैंने सैरा की बाँह हिलाकर उसे जगा दिया। मेरी इच्छा यही थी कि अब झगड़े को समाप्त किया जाए, मगर उस कमबख़्त ने मेरी तरफ़ मुँह फेरा ही था कि मेरा मन फिर भड़क उठा, क्योंकि उसकी भोली आँखें नींद के खुमार से और भी सुन्दर लग रही थीं और उन्हें देखकर लगता ही नहीं था उसे झगड़े की बात याद भी है। मनुष्य, मैं समझता हूँ कि, एक बहुत ही टेढ़ी चीज़ है और लोग कहते हैं कि इसे ईश्वर ने बनाया है! ईश्वर ने बनाया होता तो वह दो और दो चार की तरह सरल और हवा की तरह साफ़ न होता?

"देखो सैरा, मुझे नींद नहीं आ रही", मैंने कहा, "इसलिए मैं लेटा-लेटा उपन्यास के पाँचवें अध्याय के विषय में सोचा रहा था। यह बताओ कि हेनरी जब किसी बड़ी कॉन्फ्रेंस में जाता है तो उससे पहले साँस साफ़ करने के लिए कॉफ़ी के दाने तो नहीं चबांता?" उस बेचारी ने सिर हिला दिया और चुपचाप रोने लगी। मैंने ऐसे प्रकट किया जैसे उसके रोने का कारण मेरी समझ में न आया हो। मैंने तो एक साधारण-सी बात पूछी थी, क्योंकि मैं अपने चरित्र का खाका ठीक उतारना चाहता था। मैं हेनरी की बुराई थोड़ी ही कर रहा था! और फिर भी कॉफ़ी के दाने तो अच्छे-अच्छे लोग चबाते हैं, उसमें ऐसी क्या बात थी! मैं ये बातें कह ही रहा था कि उसे रोते-रोते फिर नींद आ गई। मेरा मन इस बात को लेकर और कुढ़ता जाता था कि उसे इतनी जल्दी नींद कैसे आ जाती थी।

हेनरी जल्दी-जल्दी रम के घूँट भर रहा था और परेशान-सी नज़र से पीले और जामुनी फानूसों को ताक रहा था। "इस बार क्रिसमस कैसी रही?" मैंने उससे पूछा।

"अच्छी रही", उसने कहा।

"कहाँ, घर पर ही मनाई?"

"हाँ, घर पर ही।"

"सैरा का क्या हाल है?"

"ठीक है।"

"रम और लाऊँ?"

"ठहरो, मैं जाकर लाता हूँ।"

हेनरी रम लाने गया तो मैं शौचालय में चला गया। वहाँ दीवारों पर ऐसे-ऐसे वाक्य खुदे हुए थे–'शराबखाने के मालिक, तुझे और तेरी बड़े-बड़े स्तनोंवाली बीवी को जहन्नुम रसीद हो' और 'संसार-भर की वेश्याओं और उनके दलालों को सिफ़लिस और गनोरिया मुबारक हो!' मैं जल्दी से वहाँ से निकलकर बाहर चमकते हुए फानूसों और टकराते हुए गिलासों के बीच आ बैठा। आरामतलब लोगों की हरकतों में कई बार मुझे अपना चेहरा इस तरह दिखाई देता है कि ख़ामख़ाह मेरा मन सन्तों और उनकी धार्मिक बातों में विश्वास करने को होने लगता है।

मैं जो पंक्तियाँ पढ़कर आया था, वे मैंने हेनरी को सुना दीं। सोचा था, सुनकर वह चौंकेगा। मगर मुझे आश्चर्य हुआ, जब उसने सिर्फ़ इतना ही कहा, "मेरा ख़याल है ईर्ष्या बहुत बुरी चीज़ है।"

"यह तुम बड़े-बड़े स्तनोंवाली बीवी की बात को लेकर कह रहे हो?"

"दोनों ही बातों को लेकर कह रहा हूँ। जब इनसान को अपने को सुख नहीं मिलता तो उसे दूसरों के सुख से ईर्ष्या होने लगती है।" मैंने नहीं सोचा था कि गृह-रक्षा मन्त्रालय में काम करनेवाला आदमी इस तरह की बातें भी सोच सकता है।

मगर मुझे लगता है कि मेरी कलम से फिर कटुता टपकने लगी है। सचमुच कटुता भी कितनी बेहूदा और निर्जीव-सी चीज़ है! मैं चाहता हूँ कि मैं जो कुछ भी लिखूँ, अन्दर से स्नेह उँडेलते हुए लिखूँ, मगर यही कर सकूँ तो मैं और ही इनसान न हो जाऊँ? यही गुण मुझमें होता तो मुझे प्रेम से वंचित ही क्यों होना पड़ता? ख़ैर उस समय मुझे लगा कि शराबखाने की चौखाना मेज़ के उस तरफ़ बैठे हुए हेनरी के मन में मेरे लिए एक भाव ज़रूर उमड़ रहा है; वह स्नेह का भाव तो नहीं था, शायद दुख में साझेदारी का भाव ही था।

"क्या बात है, तुम दुखी क्यों नज़र आते हो?" मैंने पूछा।

"मैं कुछ परेशान हूँ बैंड्रिक्स।"

"मुझे बताओ क्या बात है।"

शायद रम ने ही उसकी ज़बान खोल दी, या शायद पहले ही उसे कुछ अनुमान था कि मैं उसके सम्बन्ध में काफ़ी-कुछ जानता हूँ। सैरा ने तो मुझे ज़्यादा नहीं बताया था, मगर मेरे साथ उसका जिस तरह का सम्बन्ध था, उसमें आदमी दो-चार बातें जान ही जाता है। मुझे पता था कि हेनरी की नाभि के बाईं तरफ़ एक तिल है, क्योंकि एक बार मेरे पैदायशी निशान को देखकर सैरा को उसकी याद आई थी। मैं यह भी जानता था कि उसकी आँखें कमज़ोर हैं, मगर वह अजनबियों के सामने चश्मा नहीं लगाता (और मैं अभी उन अजनबियों में ही था, क्योंकि मेरे सामने उसने कभी चश्मा नहीं लगाया था)। मुझे यह भी पता था, वह दस बजे चाय पीता है, बल्कि यहाँ तक भी मुझे पता था कि वह सोता किस तरह से है। परन्तु क्या उसे यह पता था कि मैं इतनी सब बातें जानता हूँ, इसलिए एक और बात बता देने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा?

"मेरी परेशानी सैरा को लेकर है", वह बोला।

सहसा शराबखाने का दरवाज़ा खुल गया और रोशनी में मुझे वर्षा की तेज़ बूँदें पड़ती दिखाई दे गईं। एक ठिगना-सा मस्त आदमी अन्दर दाखिल हुआ और आते ही उसने कहा, "यारो, इधर देखो!" मगर किसी ने भी उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

"वह बीमार है क्या? मगर तुमने तो अभी कहा था..."

"नहीं, यह बात नहीं, वह बीमार नहीं है।" वह परेशानी की नज़र से इधर-उधर देखने लगा। वहाँ का वातावरण उसे अपने अनुकूल नहीं लग रहा था। उसकी आँखों के कोये लाल हो रहे थे, शायद उसे अजनबी बहुत मिलते थे, इसलिए वह चश्मा बहुत कम लगा पाता था, या शायद रोते रहने से उसका यह हाल हो रहा था। "बैंड्रिक्स, मैं यहाँ बात नहीं कर सकता", उसने ऐसे कहा, जैसे पहले और कहीं वह मुझसे बात करता ही रहा हो। "तुम मेरे साथ मेरे घर चलो।"

"सैरा जल्दी तो नहीं लौट आएगी?"

"ख़याल तो नहीं।"

मैंने रम के पैसे अदा किए तो हेनरी फिर कुछ परेशान हो उठा। कोई उस पर पैसे ख़र्च करे, यह उसे अच्छा नहीं लगता था। वह उन आदमियों में से था जो टैक्सी में बैठे हुए हमेशा पैसे अपनी हथेली में तैयार रखते हैं और दूसरों के ज़ेब में हाथ डालने से पहले अदा भी कर देते हैं।

कॉमन की सड़कों पर वर्षा का पानी उस समय भी चल रहा था। मगर हेनरी का घर पास ही था। चाबी निकालकर उसने अपना दरवाज़ा खोला और दो बार आवाज़ दी, "सैरा, सैरा!" मुझे उत्तर में सैरा की आवाज़ सुनने की अभिलाषा भी थी, और यह डर भी था कि कहीं सचमुच ही उसकी आवाज़ सुनाई न दे जाए। अन्दर से कोई उत्तर नहीं आया तो उसने कहा, "वह अभी लौटकर नहीं आई। तुम मेरे पढ़ने के कमरे में आ जाओ।"

मैं हेनरी के पढ़ने के कमरे में कभी नहीं गया था। सैरा का मित्र होने के कारण हेनरी से भी मेरी भेंट सैरा के कमरे में ही होती थी। सैरा के कमरे में हर चीज़ उलझी-बिखरी रहती थी और कोई चीज़ किसी चीज़ से मेल नहीं खाती थी। वहाँ की हर चीज़ का सम्बन्ध जैसे उसी सप्ताह से होता था, क्योंकि पहले दिनों की रुचि या भावना से सम्बन्धित कोई चीज़ वह अपने कमरे में रहने ही नहीं देती थी। उसकी कोई चीज़ ऐसी नहीं होती थी जो इस्तेमाल न की जा चुकी हो। मगर हेनरी के कमरे में आकर मुझे लगा, जैसे वहाँ की कोई चीज़ कभी इस्तेमाल की ही न गई हो। वहाँ गिबन का सेट रखा था जो शायद कभी खोला ही नहीं गया था। स्कॉट का सेट भी था जो शायद इसीलिए पड़ा था कि उसके पिता ने उसे ख़रीदा था। गोलाबाज़ की पीतल की मूर्ति भी शायद इसीलिए रखी थी। मगर अपने उस अछूते कमरे में आकर हेनरी काफ़ी प्रसन्न दिखाई दे रहा था, क्योंकि वह उसका अपना, बिलकुल अपना कमरा था। मैं ईर्ष्या और कटुता के साथ सोचने लगा कि जिस चीज़ पर इनसान का पूरा अधिकार हो, उसे इस्तेमाल करने की क्या उसे ज़रूरत ही महसूस नहीं होती!

"व्हिस्की?" हेनरी ने पूछा। मुझे फिर उसकी आँखों का ध्यान हो आया। क्या वह अब पहले से ज़्यादा पीने लगा था? उसने सचमुच गिलासों में काफ़ी खुले दिल से दोहरे-दोहरे पेग डाल दिए।

"हेनरी, वह क्या चीज़ है जो तुम्हें परेशान कर रही है?" मैंने पूछा। सरकारी अफ़सर के सम्बन्ध में उपन्यास लिखने का इरादा मैं बहुत पहले छोड़ चुका था और उस समय मैं उसका खाका उतारने के इरादे से यह बात नहीं पूछ रहा था।

"बात सैरा की है", उसने कहा।

यह बात इसी ढंग से उसने दो साल पहले कही होती तो क्या मैं अपने मन में कुछ डरा होता? नहीं। मैं समझता हूँ कि मुझे खुशी ही होती, क्योंकि दुराव-छिपाव करते-करते आदमी बुरी तरह तंग आ जाता है। मैं बल्कि उससे खुले में लड़ने के

लिए तैयार भी हो जाता, क्योंकि काफ़ी हद तक मुझे यह आशा रहती कि वह ज़रूर कोई-न-कोई ग़लती करेगा और जीत आख़िर मेरी ही होगी। उससे पहले या उसके बाद मेरे जीवन में ऐसा कोई अवसर नहीं आया जब मेरे मन में किसी से जीतने की उतनी तीव्र इच्छा जागी हो, बल्कि एक अच्छी पुस्तक लिखने की भी उतनी तीव्र इच्छा मेरे अन्दर कभी नहीं जागी।

उसने अपनी लाल-लाल आँखें उठाकर मेरी तरफ़ देखा और कहा, ''बैंड्रिक्स, मुझे डर है कि...'' और मुझे लगा कि अब मैं उससे संरक्षणात्मक ढंग से बात नहीं कर सकता। वह दुख की पाठशाला में पढ़कर अपना प्रमाणपत्र ले चुका था। मुझे पहली बार लगा कि अब वह और मैं दोनों एक-से हैं। उसके डेस्क पर ऑक्सफोर्ड फ्रेम में जड़ा हुआ पहले दिनों का एक भूरा फोटोग्राफ रखा था—उसके पिता का फोटोग्राफ। वह लगभग उसी की उम्र में, चालीस और पैंतालीस के बीच, लिया गया था। मैं उसे देखता हुआ सोचने लगा कि हेनरी उस फोटोग्राफ से कितना मिलता है, फिर भी कितना भिन्न है! अन्तर सिर्फ़ मूँछों का ही नहीं था। वास्तविक अन्तर यह था कि फोटोग्राफ के चेहरे से विक्टोरियाकालीन आत्मविश्वास झलकता था और लगता था कि वह आदमी ज़िन्दगी से उखड़ा हुआ नहीं है और दुनिया में अपने रास्ते का उसे पता है; और उस अन्तर को देखते हुए मेरे मन में हेनरी के लिए मित्रता का भाव जाग आया। मैं उसके पिता को (जो अर्थ-विभाग में थे) शायद कभी उस तरह मित्रता की दृष्टि से न देख पाता। हेनरी और मैं आपस में अजनबी होते हुए भी एक दुख में सहयोगी तो थे ही।

''क्या चीज़ है, जिसका तुम्हें डर है?''

वह आरामकुर्सी पर बैठ गया—ऐसे जैसे किसी ने उसे धकेलकर बिठा दिया हो और हताश स्वर में बोला, ''बैंड्रिक्स, इनसान जो बुरी-से-बुरी बात सोच सकता है, वही मैं अपने मन में सोचता हूँ...।''

पहले दिनों की बात होती तो शायद मैं कुछ सतर्क हो जाता, मगर इस समय मैं निरपराध था, इसलिए मेरे चेहरे पर एक रूखी और अस्वाभाविक-सी गम्भीरता छाई रही।

''तुम मुझ पर पूरा विश्वास कर सकते हो।'' मगर मन में मैं सोचने लगा कि हो सकता है, सैरा ने मेरी कोई चिट्ठी रख रखी हो जो उसने देख ली हो, हालाँकि मैंने सैरा को बहुत कम चिट्ठियाँ लिखी थीं। चिट्ठियाँ लिखना एक लेखक के लिए बहुत ख़तरनाक बात है। स्त्रियाँ अकसर अपने प्रेमियों का महत्त्व बढ़ा-चढ़ाकर बताना चाहती हैं और यह वे कभी नहीं सोचतीं कि उनकी ज़रा-सी असावधानी से कोई चिट्ठी इधर-उधर निकल गई तो भाई लोग उसे 'हस्ताक्षर तालिका में' 'रोचक' शीर्षक के अन्तर्गत छाप देंगे और वह पाँच-पाँच शिलिंग में बाज़ार में बिका करेंगी।

''तुम एक बार इसे देख जाओ'', हेनरी ने कहा।

और उसने एक चिट्ठी मेरी तरफ़ बढ़ा दी। वह मेरे हाथ की लिखी चिट्ठी नहीं थी।

''इसे पढ़ जाओ'', वह बोला। चिट्ठी हेनरी के किसी दोस्त की थी और उसने उसे लिखा था, 'मेरा सुझाव है कि जिस आदमी की तुम सहायता करना चाहते हो, उसे तुम 159 विगो स्ट्रीट में सैवेज नामक व्यक्ति के पास भेज दो। वह बहुत योग्य और समझदार व्यक्ति है और उसके कर्मचारी लोगों को उस तरह तंग नहीं करते जैसे उस पेशे के दूसरे लोग करते हैं।'

''यह क़िस्सा क्या है?'' मैंने पूछा।

''मैंने इस आदमी को लिखा था कि मेरे एक परिचित ने मुझसे किसी जासूस का पता माँगा है। मगर अब मुझे बहुत बुरा लग रहा है। वह आदमी ज़रूर समझ गया होगा कि असली बात क्या है।''

''तो तुम्हारा मतलब है कि...''

''मैंने इस बारे में किया कुछ नहीं है। मगर अपने डेस्क पर इस पत्र को देखकर मुझे अकसर इस चीज़ की याद हो आती है। कितनी बेवकूफ़ी की बात है कि सैरा दिन में दस बार इस कमरे में आती है और मैं फिर भी विश्वास किए जाता हूँ कि उसकी नज़र इस पत्र पर नहीं पड़ती। मुझसे यह भी नहीं होता कि इसे उठाकर दराज़ में ही रख दूँ। और कभी-कभी मुझे यह भी लगता है कि शायद उसने इसे...। इस समय वह बाहर सैर के लिए गई है। सोचो, 'सैर' के लिए।'' वर्षा उसके कपड़ों के अन्दर तक पहुँच गई थी, इसलिए अपने जैकेट की बाँह उसने गैस की आग के पास कर दी।

''मुझे बहुत अफसोस है, हेनरी!''

''तुम उसके ख़ास मित्र रहे हो। लोग कहते हैं कि पति ही एक ऐसा व्यक्ति है जो स्त्री के बारे में...। मैंने आज तुम्हें कॉमन में देखा तो मुझे लगा कि मैं तुम्हें इस पत्र के विषय में बताऊँ तो शायद तुम इस बात पर हँस दो। उस हालत में मैं इसे आसानी से आग के सुपुर्द कर सकूँगा।''

उसकी गीली बाँह आगे हुई थी और आँखें दूसरी तरफ़ देख रही थीं। मुझे उसकी बात पर ज़रा भी हँसी नहीं आई, हालाँकि हँस सकता तो मैं ज़रूर हँस देता।

''ऐसी बात पर हँसा कैसे जा सकता है?'' मैंने कहा। ''हालाँकि इस चीज़ की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि...।''

''तो तुम यही समझते हो कि इस चीज़ की कल्पना भी नहीं की जा सकती?'' वह आश्वस्त स्वर में बोला। ''तुम्हारा यही ख़याल है कि ऐसी बात सोचना भी मेरी मूर्खता है?''

क्षण-भर पहले मैं खुशी से उसकी बात पर हँस दिया होता। मगर अब झूठ बोलने का अवसर आया तो मेरी पुरानी ईर्ष्या और जलन फिर लौट आई। क्या सचमुच पति-पत्नी में इतनी शारीरिक घनिष्ठता हो जाती है कि एक से घृणा होने पर दूसरे से अपने-आप घृणा होने लगे? मुझे उस समय याद हो आया कि हेनरी को धोखा देना कितना आसान रहा था! उन दिनों मुझे लगता था कि वह स्वयं ही अपनी पत्नी को मेरे पास भेजने में सहायक हो, उसी तरह जैसे एक आदमी, जो होटल के कमरे में अपने बैंक नोट खुले छोड़ जाता है, चोरी करनेवाले का सहायक होता है। उसके जिस गुण के कारण मेरे प्रेम को पनपने का मौका मिला था, उसी के लिए मुझे उससे घृणा हो रही थी।

गैस के सामने की हुई जैकेट की बाँह में से भाप निकल रही थी। हेनरी की आँखें अब भी दूसरी तरफ़ ही देख रही थीं। ''मैं जानता हूँ तुम इसे मेरी मूर्खता समझ रहे हो'', उसने फिर कहा।

अब मेरे अन्दर का शैतान बोल उठा, ''नहीं हेनरी, इसमें मूर्खता की कोई बात नहीं है।''

''तो तुम्हारा मतलब है कि...कि वैसी बात सच हो सकती है?''

''हाँ, हो भी सकती है। आख़िर सैरा इनसान ही तो है!''

"और मैं समझता था कि उसके मित्र होने के नाते तुम उसे मुझसे ज़्यादा जानते हो!'' उसने इस तरह आवेश के साथ कहा, जैसे सचमुच वह चिट्ठी मेरे ही हाथ की लिखी हो।

''नहीं, वैसे तो तुम्हीं उसे ज़्यादा जानते हो।''

''हाँ, एक लिहाज़ से यह कहा जा सकता है'', वह मुरझाए हुए स्वर में बोला। मगर जिस लिहाज़ से वह सोच रहा था, उस लिहाज़ से मैं सैरा को उससे अच्छी तरह जानता था।

''देखो हेनरी, तुमने मुझसे पूछा था कि क्या ऐसी बात सोचना मुझे तुम्हारी मूर्खता लगती है। मैंने सिर्फ़ इतना कहा है कि ऐसा सोचना मूर्खता की बात नहीं है। सैरा के खिलाफ मैंने कुछ नहीं कहा।''

''मैं जानता हूँ बैंड्रिक्स! माफ़ करना, आजकल मुझे ठीक से नींद नहीं आती। आधी-आधी रात को मैं जाग जाता हूँ और सोचने लगता हूँ कि अब इस चिट्ठी का क्या करूँ।''

''इसे आग में झोंक दो।''

''मैं भी कई बार यही सोचता हूँ।'' चिट्ठी अभी तक उसके हाथ में ही थी। क्षण-भर के लिए मुझे लगा कि वह सचमुच ही उसे आग में झोंकने जा रहा है।

''या जाकर एक बार मिस्टर सैवेज से मिल आओ।''

"मगर उससे तो मैं यह बहाना नहीं कर सकता कि मैं इस स्त्री का पति नहीं हूँ। सोचो बैंड्रिक्स, मुझे जाकर उसके डेस्क के सामने उसी कुर्सी पर बैठना होगा, जिस पर मुझसे पहले कितने ही और पति जाकर बैठे होंगे और लगभग वही कहानी उसे सुनानी होगी। वहाँ शायद कोई वेटिंग रूम भी हो, जहाँ बैठे हुए लोग एक-दूसरे को गुज़रते देखते हों। बताओ मैं ऐसी जगह पर कैसे जा सकता हूँ?"

मुझे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि इस बात से हेनरी की कल्पना-शक्ति झलक रही थी। मेरी बड़प्पन की भावना को इससे ठेस लगी और उसे तंग करने की पुरानी इच्छा फिर मन में जाग आई। मैंने कहा, "हर्ज़ न हो तो तुम्हारी जगह मैं चला जाऊँ।"

"तुम?" क्षण-भर के लिए मुझे लगा कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा आगे बढ़ गया हूँ; अब ज़रूर हेनरी के मन में सन्देह जाग उठेगा।

"हाँ, हाँ", मैंने खतरे से खेलते हुए कहा। सोचा अब उसे उन दिनों के बारे में पता चल भी जाए तो क्या है! शायद यह उसके लिए अच्छा ही होगा और वह अपनी पत्नी को आगे से सँभालकर रखेगा। "देखो, मैं एक धोखा खाए हुए प्रेमी के रूप में उसके पास जा सकता हूँ", मैंने कहा। "धोखा खाया हुआ पति मज़ाक का विषय होता है, धोखा खाया हुआ प्रेमी नहीं। बल्कि वह एक सम्मानित व्यक्ति ही समझा जाता है। साहित्य भी उसी का पक्ष लेता है। धोखा खाए हुए प्रेमी का दुख दुख ही समझा जाता है, उपहास का विषय नहीं। तुम ट्रायलस का उदाहरण ले लो। इसलिए सैवेज के पास जाने में मेरे आत्मसम्मान को ज़रा भी ठेस नहीं पहुँचेगी।"

हेनरी की बाँह सूख चुकी थी, मगर वह उसे आग के पास ही किए था, जिससे कपड़ा जलने को आ गया था। "क्या सचमुच तुम मेरा यह काम कर सकोगे?" उसने कहा और उसकी आँखें भर आईं। शायद इतनी गहरी मित्रता की उसने मुझसे आशा नहीं की थी, और न ही वह अपने को इसके लायक समझता था।

"क्यों नहीं कर सकूँगा? तुम अपनी बाँह बचाओ, नहीं तो जल जाएगी।"

उसने इस तरह अपनी बाँह की तरफ़ देखा जैसे वह उसकी न होकर किसी और की बाँह हो। फिर बोला, "मगर ऐसी बात क्या कभी सोची भी जा सकती है? जाने मेरे दिमाग़ को आजकल क्या हो गया है? पहले तुम्हें यह सब बतलाया, और अब तुमसे इस काम के लिए कह रहा हूँ। आदमी एक मित्र के ज़रिए अपनी पत्नी पर जासूसी करे और वह मित्र यह बहाना करे कि वह उस स्त्री का प्रेमी है, यह क्या अच्छी बात है?"

"अच्छी बात तो नहीं", मैंने कहा, "मगर व्यभिचारी, चोर, और दुश्मन को पीठ दिखाकर भाग जाना, ये भी तो अच्छी बातें नहीं हैं। मगर जो न करने की बातें हैं, वही तो आज हर रोज़ की जाती हैं। वे आज के जीवन का आवश्यक अंग हैं, हेनरी! इनमें से कई बातें मैंने खुद की हैं।"

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो बैंड्रिक्स", वह बोला। "मैं बस इतना ही चाहता था कि किसी से बात करके अपना दिमाग़ हलका कर लूँ।" और इस बार सचमुच ही उसने चिट्ठी गैस की लपटों के सामने कर दी। जब उसका आख़िरी टुकड़ा वह ऐश-ट्रे में डाल चुका तो मैंने कहा, "तो उस व्यक्ति का नाम है सैवेज, और पता है एक सौ उनसठ या एक सौ उनहत्तर, विगो स्ट्रीट...।"

"तुम इस चीज़ को भूल जाओ", हेनरी बोला। "जो बात मैंने तुमसे की है, उसे भी भूल जाओ। वह सब बेकार की बात है। असली बात इतनी ही है कि मुझे आजकल सिर-दर्द का दौरा पड़ता है। मैं जाकर किसी डॉक्टर को दिखाऊँगा।"

"नीचे दरवाज़ा खुलने की आवाज़ हुई है", मैंने कहा, "शायद सैरा लौट आई है।"

"नौकरानी आई होगी", वह बोला। "सैरा तो सिनेमा देखने गई है।"

"नहीं, आवाज़ सैरा के पैरों की ही है।"

उसने उठकर दरवाज़ा खोल दिया और एकदम उसके चेहरे पर स्नेह और कोमलता की रेखाएँ खिंच गईं। सैरा के सामने उसके इस मशीनी व्यवहार से मुझे हमेशा चिढ़ होती थी; मुझे यह बहुत फ़िज़ूल-सी चीज़ लगती थी। एक व्यक्ति किसी स्त्री से कितना भी प्रेम करता हो, उसे हर समय उस स्त्री की उपस्थिति अच्छी नहीं लग सकती, और मैं सैरा की इस बात पर विश्वास करता था कि उन दोनों में कभी प्रेम रहा ही नहीं था। घृणा और अविश्वास के क्षणों में भी मैं जिस तरह सैरा से बात करता था, उसमें इससे ज़्यादा सच्चाई होती थी। कम-से-कम मैं उसे एक स्वतन्त्र इकाई तो मानता था, चीनी के बरतनों की तरह उसे अपने घर की सजावट का एक ऐसा भाग तो नहीं समझता था जिसे बहुत सावधानी से हाथ लगाना चाहिए।

"सै-रा! सै-रा!!" हेनरी ने बीच में तोड़ते हुए कहा और मुझे इस बनावटीपन पर और गुस्सा हो आया।

मैं एक अनजान व्यक्ति को अब यह किस तरह समझा सकता हूँ कि हॉल में सीढ़ियों के पास आकर सैरा किस तरह रुकी, और किस तरह उसने घूमकर हम दोनों की तरफ़ देखा। मैं तो अपने काल्पनिक पात्रों का वर्णन भी केवल उनके क्रिया-कलाप देकर ही करता हूँ। मेरी यह धारणा रही है कि उपन्यास के पाठक को अपनी रुचि से ही हर चरित्र के आकार-प्रकार की कल्पना करने देना चाहिए। पहले से ही तैयार ख़ाके पाठक के सामने रखने के हक़ में मैं नहीं हूँ। मगर यहाँ पर मेरी शैली मुझे धोखा दे रही है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि पाठक के सामने सैरा के अतिरिक्त और किसी स्त्री का रूप आए। मैं चाहता हूँ कि वह एक ही वृत्त में तराशा हुआ चौड़ा माथा और खुला मुँह मैं उसी तरह अपने पाठक को दिखा सकूँ, मगर मेरे लिए सम्भव इतना ही है कि एक अनिश्चित-सी आकृति का चित्र उसके सामने प्रस्तुत कर दूँ,

जिसने भीगी बरसाती ओढ़े हुए हमारी तरफ़ घूमकर कहा, "हाँ हेनरी!" और फिर, "अरे, तुम?" वह हमेशा मुझे 'तुम' ही कहा करती थी। फ़ोन कर रही होती तो कहती, "तुम बोल रहे हो?" या "तुम यह कर सकते हो? तुम यह करोगे? तुम यह करते हो?" और मैं मूर्ख बना कुछ देर यह सोचता रहता था कि संसार में 'तुम' नाम का केवल एक ही जीव है और वह मैं हूँ।

"तुम्हें देखकर बहुत खुशी हुई", मैंने कहा, हालाँकि मेरे लिए वह क्षण घृणा का क्षण था। "कहीं घूमने गई थीं?"

"हाँ।"

"वैसे काफ़ी ख़राब रात है", मैंने जैसे अभियोग लगाकर कहा। हेनरी अपनी परेशानी व्यक्त करता हुआ बोला, "देखो, कैसे सिर से पैर तक भीग रही हो। कहीं इस तरह भीगकर एक दिन अपनी जान ही न दे देना।"

कई बार अनायास ही मुँह से कोई बात निकल जाती है जो कही तो एक कहावत के रूप में जाती है, मगर बाद में सचमुच का अभिशाप सिद्ध होती है। मगर मैं सोचता हूँ कि उस समय अगर हमें पता भी होता कि वह बात वास्तव में ही एक दिन सच निकलेगी तो क्या हममें से किसी के भी मन में सैरा के लिए वास्तविक चिन्ता पैदा हुई होती? हमारे मन पर घृणा और अविश्वास का परदा उस समय कितना गहरा था!

2

मुझे ठीक याद नहीं कि उसके बाद कितने दिन उसी तरह बीत गए। मेरे मन में वही पुरानी उथल-पुथल लौट आई थी और उस अन्धकारपूर्ण मनःस्थिति में मेरे लिए दिनों की गिनती रखना उतना ही कठिन था जितना एक अन्धे के लिए प्रकाश में बदलते हुए रंगों को देख पाना। कह नहीं सकता कि यह उससे सात दिन बाद की बात है या इक्कीस दिन की, जब मैंने अपनी आगे की योजना निश्चित की। अब तीन साल बाद मुझे इतनी ही धुँधली-सी याद है कि उन दिनों मैं कॉमन के एक तरफ़ तालाब के पास या अट्ठारहवीं सदी के गिरजाघर के पोर्टिको के नीचे खड़ा चौकस नज़र से देर-देर तक सैरा के घर की तरफ़ देखता रहता था कि शायद किसी समय वहाँ का दरवाज़ा खुले और उन मज़बूत चिकनी और साफ़ सीढ़ियों से सैरा नीचे उतरकर आती दिखाई दे जाए। परन्तु ऐसा अवसर कभी नहीं आया। वर्षा के दिन निकल गए और सुहानी कुहरीली रातें आ गईं, परन्तु टूटे हुए वेदर-हाउस* के स्त्री और पुरुष की तरह

* एक खिलौना, जिसमें एक घर तथा स्त्री और पुरुष की आकृतियाँ बनी रहती हैं। अच्छे और बुरे मौसम के अनुसार वे बारी-बारी से बाहर निकलते रहते हैं।

उन दोनों में से कोई भी बाहर निकलता दिखाई नहीं देता था। उसके बाद हेनरी को भी मैंने कभी सन्ध्या के समय कॉमन में से होकर जाते नहीं देखा। शायद जो कुछ उसने मुझे बतलाया था, उसके कारण वह कुछ लज्जित महसूस करता था, क्योंकि स्वभाव से वह पुराने संस्कारों का आदमी था। यह बात मैं कुछ व्यंग्य के साथ लिख रहा हूँ, मगर अपने अन्दर झाँककर देखूँ तो मन में मैं पुराने संस्कारों की प्रशंसा ही करता हूँ—कुछ उसी तरह जैसे ऊँची पहाड़ी सड़क पर से मोटर में गुज़रता हुआ आदमी नीचे के गाँव में पत्थर और भूसे के घरों को देखकर दिल में सोचता है कि अहा, वह जीवन कितना शान्त और सुखदायी है!

मुझे याद है कि मेरे वे धुँधले दिन या सप्ताह सैरा के सपने देखते हुए ही बीते थे। आँख खुलने पर कभी मन में पीड़ा का अनुभव होता, कभी उल्लास का। दिन-भर किसी स्त्री की बात एक व्यक्ति के दिमाग़ पर छाई रहे तो रात को उसे उसके सपने नहीं आने चाहिए। मैं उन दिनों एक पुस्तक लिखने का प्रयत्न कर रहा था, मगर मुझसे कुछ भी नहीं बन पड़ता था। मैं अपने रोज़ के पाँच सौ शब्द तो लिख लेता था, मगर चरित्रों में जैसे जान आती ही नहीं थी। यूँ जितना समय हम व्यर्थ गँवाते हैं, उसका भी हमारे लिखने में बहुत योग होता है। हम चाहे चीज़ें ख़रीदने, इन्कमटैक्स के काग़ज़ भरने, इधर-उधर की बातें करने में लगे रहें, अवचेतन की धारा अबाध रूप से अपना काम करती रहती है, समस्याएँ अपने आप हल होती जाती हैं, आगे की रूपरेखा अपने आप बनती जाती है। हम जड़ और मुरझाए-से जाकर डेस्क के पास बैठते हैं और सहसा शब्द आप उतरने लगते हैं। जो स्थितियाँ एकदम दलदल में फँसी लगती थीं, वे आगे चल पड़ती हैं। हमारे सोते, चीज़ें ख़रीदते और लोगों से गप्पें करते, काम अपने आप हो चुका होता है। परन्तु इस स्थिति में मेरे अवचेतन पर घृणा और सन्देह का तथा प्रेम और विध्वंस की भावना का प्रभाव पुस्तक के प्रभाव की अपेक्षा कहीं गहरा था और वहाँ हर समय यही सब बातें छाई रहती थीं। इसी से एक दिन सुबह जब मैं उठा तो मेरे मन में पहले से ही यह निश्चय हो चुका था कि मुझे मिस्टर सैवेज से मिलने जाना है, जैसे कि रात-भर मैंने अपने मन में इसी की योजना बनाई हो।

सचमुच कैसे-कैसे विचित्र पेशे के लोगों पर हमें विश्वास करना पड़ता है! हम अपने वकील पर विश्वास करते हैं, डॉक्टर पर विश्वास करते हैं और अगर हम कैथलिक हैं तो अपने पादरी पर विश्वास करते हैं। इस सूची में अब मैंने जासूस का नाम भी जोड़ लिया। हेनरी का यह ख़याल ठीक नहीं था कि सैवेज के यहाँ आए हुए दूसरे लोगों की निगाह उस पर पड़ेगी। उस दफ़्तर में दो वेटिंग रूम थे, जिनमें से एक में मुझे ले जाया गया। विगो स्ट्रीट में मैं जिस तरह की जगह की आशा करता था, वह

जगह उससे बहुत भिन्न थी। वहाँ की हवा में वैसी ही सीलन थी जैसी किसी छोटे वकील के बाहरी दफ़्तर में होती है। वेटिंग रूम में, जोकि एक दन्दानसाज़ के कमरे जैसा लगता था, वे सब पत्रिकाएँ रखी थीं जिनका उन दिनों प्रचलन था—'हार्पर्स बाज़ार', 'लाइफ' और कुछ फैशन-सम्बन्धी फ्रांसीसी पत्रिकाएँ। जो आदमी मुझे अन्दर ले गया, वह काफ़ी चुस्त था और काफ़ी अच्छे कपड़े पहने हुए था। उसने आग के पास कुर्सी खींचकर मुझे बैठने को कहा और बहुत सावधानी से दरवाज़ा बन्द करके चला गया। मैं उस समय अपने को एक मरीज़ की तरह महसूस कर रहा था, और वास्तव में मैं था भी एक मरीज़ ही, जो वहाँ ईर्ष्या नाम के रोग का इलाज कराने आया था।

मिस्टर सैवेज की जिस चीज़ पर मेरी नज़र सबसे पहले पड़ी, वह उसकी टाई थी। मेरा ख़याल है कि वह किसी 'ओल्ड बॉयज़ एसोसिएशन' की यादगार थी। दूसरी चीज़ जो मैंने देखी वह यह थी कि उसके चेहरे पर हलका पाउडर लगा है और उसकी दाढ़ी ख़ूब साफ़ बनी हुई है। उसके बाद मेरी नज़र उसके माथे पर पड़ी। उसके भूरे बाल काफ़ी ऊपर तक उड़ चुके थे और उसका माथा बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और सेवाभाव के मशाल की तरह चमक रहा था। मुझसे हाथ मिलाते हुए उसने मेरे हाथ को कुछ विचित्र ढंग से मोड़ दिया। वह ज़रूर 'फ्रीमेसन सोसाइटी' का सदस्य रहा होगा और अगर मैं भी उसका हाथ उसी गर्मजोशी से दबा देता तो शायद मेरी काफ़ी रियायत हो जाती।

"आप मिस्टर बैंड्रिक्स हैं?" वह बोला। "आइए बैठिए। यह कुरसी आपको काफ़ी आरामदेह लगेगी।" उसने कुरसी का गद्दा मेरे लिए झाड़ दिया और जब तक मैं उस पर बैठ नहीं गया, वह उसकी तरफ़ हाथ किए खड़ा रहा। फिर वह अपने लिए एक सीधी कुरसी खींचकर मेरे पास ले आया जैसे कि मेरी नब्ज़ देखने जा रहा हो। "अब आप सारी बात अपने शब्दों में मुझे बताइए", उसने कहा। मेरी समझ में नहीं आया कि मैं अपने शब्दों के सिवा और किसके शब्दों में उसे बात बता सकता हूँ। मुझे कुछ अजीब-सा भी लगा और गुस्सा भी आया। आख़िर मैं उससे सहानुभूति माँगने तो नहीं आया था, पैसे देकर उससे अपना काम कराने आया था।

"मैं नहीं जानता कि आप किसी पर निगाह रखने की क्या फ़ीस लेते हैं", मैंने कहना आरम्भ किया।

वह अपनी धारीदार टाई को धीरे-धीरे सहलाता हुआ बोला, "फिलहाल उसकी चिन्ता मत कीजिए मिस्टर बैंड्रिक्स! आरम्भिक परामर्श के लिए मैं तीन गिनी लेता हूँ। मगर आप मुझसे काम न लेना चाहेंगे तो मैं कुछ भी नहीं लूँगा, बिलकुल कुछ नहीं। ग्राहक का सन्तोष हमारा सबसे बड़ा विज्ञापन है।" यह कहावत उसने इस तरह जड़ दी, जैसे मेरे मुँह में थर्मामीटर रख रहा हो।

एक विशेष स्थिति में हम सब एक ही तरह का व्यवहार करते हैं और एक-से ही शब्दों का प्रयोग करते हैं। ''मामला बहुत साधारण-सा है'', मैंने कहा और मुझे यह सोचकर गुस्सा हो आया कि वह तो शायद मेरे कहने से पहले ही सब कुछ जानता है। मैं कोई ऐसी बात नहीं कह रहा था जो उसके लिए नई हो और न ही उसे मेरे लिए कोई ऐसी खोज करनी थी जो उसी साल उसने दर्जनों और व्यक्तियों के लिए न की हो। डॉक्टर फिर भी कभी अपने मरीज़ के सामने घबरा जाता है, मगर वह तो ऐसा विशेषज्ञ था जिसे वास्ता एक ही बीमारी से पड़ता था, और वह उसके सारे लक्षण जानता था।

''आप आराम से बात कीजिए'', उसने अत्यधिक कोमलता के साथ कहा।

उसके और मरीज़ों की तरह मेरा सिर भी चकरा रहा था। ''बात दरअसल कुछ ख़ास नहीं है'', मैंने फिर कहना आरम्भ किया।

''वह आप मुझ पर छोड़ दीजिए'', वह बोला। ''आप बस मुझे स्थिति और वातावरण पूरा बता दीजिए। जहाँ तक मैं समझता हूँ, हम लोग मिसेज़ बैंड्रिक्स के विषय में बात कर रहे हैं?''

''नहीं, मिसेज़ बैंड्रिक्स के विषय में नहीं...।''

''मतलब लोग उन्हें मिसेज़ बैंड्रिक्स के नाम से जानते हैं?''

''आप ग़लत समझ रहे हैं। मुझे अपने एक दोस्त की पत्नी के विषय में बात करनी है।''

''तो आपके उस दोस्त ने आपको भेजा है?''

''नहीं।''

''शायद आप में और उस महिला में कुछ...घनिष्ठता है?''

''यह भी नहीं। सन् चवालीस के बाद तो मैंने उसे सिर्फ़ एक ही बार देखा है।''

''माफ़ कीजिए, बात ठीक से मेरी समझ में नहीं आ रही। आपने कहा था कि मामला किसी पर निगाह रखने का है।''

अन्दर ही अन्दर मुझे उस पर बहुत गुस्सा आ रहा था। मैं एकदम उस पर बरस पड़ा, ''तो आप समझते हैं कि आदमी इतने दिन किसी से प्रेम या घृणा नहीं कर सकता। आप ग़लत मत समझिए, मैं भी उन्हीं लोगों में से हूँ जो ईर्ष्या के मारे आपके यहाँ आते हैं। मैं किसी भी तरह औरों से अलग नहीं हूँ। सिर्फ़ इस मामले में समय का थोड़ा व्यवधान ज़रूर पड़ गया है।''

मिस्टर सैवेज ने मेरी बाँह पर ऐसे हाथ रख दिया जैसे एक बच्चा उसके सामने बड़बड़ा रहा हो। ''ईर्ष्या करने से इनसान छोटा नहीं हो जाता मिस्टर बैंड्रिक्स'', उसने कहा। ''मैं तो ईर्ष्या को बहुत ही अच्छी चीज़ समझता हूँ, क्योंकि सच्चे प्रेम की वही तो एक निशानी है। तो जिस महिला की बात हम कर रहे हैं, आपका ख़याल है कि आजकल उसकी किसी और से घनिष्ठता है?''

"उसके पति का ख़याल है कि वह उसे धोखा दे रही है। वह गुप्त रूप से किसी से मिलने जाती है, और झूठ बोलकर इस बात को छिपाती है। उसे लगता है कि वह उससे कुछ भेद रखती है।"

"हाँ-हाँ, कहते जाइए।"

"हो सकता है बात कुछ भी न हो।"

"मेरा इतने दिनों का अनुभव यही कहता है मिस्टर बैंड्रिक्स, कि बात कुछ-न-कुछ ज़रूर होती है।" और जैसे उतने में अपनी चिकित्सा पर मेरी आस्था पैदा करके वह वहाँ से उठकर अपने डेस्क के पास चला गया और लिखने लगा—नाम, पता, पति का काम? फिर पैंसिल को लिखने की स्थिति में रखे हुए ही उसने पूछा, "क्या मिस्टर माइल्स को आपके यहाँ आने का पता है?"

"नहीं।"

"तो मतलब यह कि हमारे आदमी पर मिस्टर माइल्स की नज़र नहीं पड़नी चाहिए।"

"बिलकुल नहीं।"

"इससे उलझन कुछ बढ़ जाती है।"

"हो सकता है मैं आपकी रिपोर्ट बाद में उन्हें दिखा दूँ। मगर अभी मैं नहीं कह सकता।"

"क्या आप उस घर के बारे में कुछ बातें बता सकते हैं? क्या उनके यहाँ कोई नौकरानी है?"

"हाँ, है।"

"उसकी उम्र क्या है?"

"कह नहीं सकता। शायद अड़तीस के लगभग हो...।"

"कोई उससे मिलनेवाले लोग?"

"मैं उनके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता, और न ही मुझे यह पता है कि उसकी दादी का नाम क्या है।"

मिस्टर सैवेज के चेहरे पर एक गम्भीर मुस्कराहट आ गई। क्षण-भर के लिए मुझे लगा कि वह अभी उठकर फिर मेरी पीठ थपथपा देगा। "मेरा ख़याल है मिस्टर बैंड्रिक्स", वह बोला, "कि आपको इस तरह के मामले का तजुरबा नहीं है। नौकरानी की बात मैं यूँ ही नहीं पूछ रहा। नौकरानी को साथ मिला लिया जाए तो उससे उसकी मालकिन के बारे में बहुत-कुछ पता चल सकता है। आपको यह जानकर शायद हैरानी हो कि छोटी-से-छोटी खोज में भी हमें कई-कई तरफ़ नज़र दौड़ानी पड़ती है।" और जैसे अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए ही उसने अपने छोटे-छोटे घसीटे हुए अक्षरों में पन्ने-के-पन्ने काले कर डाले। बीच में एक बार सवाल पूछना छोड़कर उसने

कहा, "देखिए, ख़ास ज़रूरत पड़ने पर मेरे आदमी को अगर आपके यहाँ आना पड़े तो आपको एतराज़ तो नहीं होगा?" मैंने कह तो दिया कि मुझे एतराज़ नहीं होगा, मगर कहते ही मुझे लगा जैसे मैंने किसी रोग के कीटाणुओं को अपने घर में आने का निमन्त्रण दे दिया हो। "मगर, उसके बग़ैर काम चल सके तो..."

"हाँ-हाँ, मैं आपकी बात समझता हूँ।" और मेरा ख़याल है वह ज़रूर ही मेरी बात समझ गया होगा। अगर मैं उससे कहता कि उसके आदमी का अपने यहाँ आना मुझे ऐसे ही लगेगा जैसे मेरे फर्नीचर पर बाहर से धूल आ पड़े, या मेरी किताबों पर कालिख के धब्बे पड़ जाएँ, तो भी उसे आश्चर्य या झुँझलाहट न होती। मेरी आदत है कि मैं साफ़ लकीरदार फुलस्केप काग़ज़ों पर लिखता हूँ, और ज़रा-सा धब्बा या चाय का दाग़ पड़ जाने से काग़ज़ मेरे लिए बेकार हो जाता है। उस अनचाहे अतिथि के आने की बात से एक अजीब ख़याल मेरे दिमाग़ में यह आया कि आगे से मुझे अपने काग़ज़ों को ताले में बन्द करके रखना चाहिए। "अच्छा हो, अगर आने से पहले वह मुझे सूचना दे दे", मैंने कहा।

"ज़रूर! मगर हमेशा शायद ऐसा न हो सके। आप मुझे अपना पता और टेलीफ़ोन नम्बर दे दीजिए।"

"मेरा अलग नम्बर नहीं है। हमारी मकान-मालकिन के पास एक्सटेंशन है।"

"मेरा आदमी पूरी सावधानी बरतेगा। अच्छा, यह बताइए कि आप हर सप्ताह रिपोर्ट चाहेंगे या कार्रवाई पूरी हो जाने पर ही आपको पता दिया जाए?"

"हर सप्ताह ही ठीक रहेगा। हो सकता है कार्रवाई पूरी होने की नौबत ही न आए, मतलब पता लगाने की कोई बात ही न हो।"

"यह भी कभी होता है मिस्टर बैंड्रिक्स, कि आप डॉक्टर के यहाँ जाएँ और आपको पता चले कि आपको कोई बीमारी ही नहीं है? जब कोई आदमी हमारी सहायता की आवश्यकता का अनुभव करता है तो कोई-न-कोई बात होती ही है।"

यह अच्छा ही था जो मुझे मिस्टर सैवेज से वास्ता पड़ा था। उसके नाम का सुझाव देनेवाले ने लिखा था कि वह उस धन्धे के दूसरे लोगों जितना असभ्य नहीं है और वह जिस सुझाव के साथ बात कर रहा था, मुझे उसी से बहुत कोफ्त हो रही थी। भोले-भाले लोगों के पीछे जासूसी करते फिरना कोई शराफ़त का पेशा तो है नहीं। जो लोग प्रेम करते हैं वे बेचारे भोले ही तो होते हैं। वे गरीब किसी का बुरा नहीं करते और वे हमेशा यह कह सकते हैं कि अगर वे किसी का बुरा कर रहे हैं तो अपना ही कर रहे हैं। और फिर प्रेम में हर चीज़ माफ़ होती है—कम-से-कम वे यही विश्वास करते हैं। जिन दिनों मैं प्रेम करता था, उन दिनों मैं भी ऐसे ही सोचा करता था।

ख़ैर फ़ीस की बात आई तो मिस्टर सैवेज ने बहुत लम्बी-चौड़ी फीस नहीं बताई। रोज़ की तीन गिनी और ख़र्च, जिसकी मंजूरी मुझसे ली जाएगी। उसने बताया कि कहीं उनके आदमी को एकाध कॉफ़ी पीनी-पिलानी पड़ जाती है, या किसी को एकाध पेग पेश करना पड़ जाता है। मैंने मज़ाक में कहा कि व्हिस्की की मंजूरी मैं नहीं दूँगा। मगर मिस्टर सैवेज ने मज़ाक को न समझकर कहा, "देखिए, एक बार की बात है कि दो पेग व्हिस्की ने हमारी महीने-भर की परेशानी बचा दी थी। बताइए वह व्हिस्की कितनी सस्ती पड़ी?" उसने यह भी बताया कि कुछ लोग उनसे रोज़-के-रोज़ हिसाब चाहते हैं। मगर मैंने कहा कि मुझे हिसाब सप्ताह में एक बार ही मिल जाए तो ठीक है।

सारा मामला काफ़ी जल्दी तय हो गया। जब मैं बाहर निकलकर बिगो स्ट्रीट में आया तो मन में मुझे लग रहा था कि हर आदमी को कभी-न-कभी ज़रूर इस तरह की स्थिति में से गुज़रना पड़ता होगा।

3

मिस्टर सैवेज ने मुझे पूछा था, "क्या इससे सम्बद्ध और कोई ऐसी बात है जो आप मुझे बता सकते हों?" एक उपन्यासकार की तरह एक जासूस को भी सही चीज़ तक पहुँचने के लिए शायद बहुत-सी अनावश्यक सामग्री इकट्ठी करनी पड़ती है। मगर सही चीज़ तक पहुँचना, असली बात को पकड़ पाना, कितना मुश्किल है? बाहरी दुनिया का दबाव हमें किस तरह घेरे रहता है? आज जब मैं यह कहानी लिखने बैठा हूँ तो भी यही समस्या बल्कि इससे भी गहरी समस्या मेरे सामने है। मुझे कोई बात घड़नी नहीं है, मगर कितनी-कितनी घटनाएँ हैं, जो एक साथ सामने आने लगती हैं! दृश्य-पट पर एक साथ कई-कई चीज़ें उभरती हैं—दैनिक समाचारपत्र, दो समय का खाना, बैटर्सिया की तरफ़ जाता हुआ ट्रैफिक, चोगे की तलाश में टेम्ज़ पर से उड़कर आते हुए कबूतर, और युद्ध से पहले का वह गरमी का सुहाना मौसम, और उनतालीस की आरम्भिक गरमी में चमकता हुआ वह पार्क जहाँ बच्चे अपनी किश्तियाँ चलाया करते थे। मैं इनसान के चेहरे को इस सबसे अलग करके कैसे देख सकता हूँ? यह उन्हीं दिनों की बात है, जब हेनरी ने एक पार्टी दी थी। मैं देर तक बैठा उस पार्टी के विषय में सोचता रहा कि शायद उसी से सैरा के नए प्रेमी के सम्बन्ध में कुछ अनुमान हो सके।

उसी पार्टी में मैंने सैरा को पहली बार देखा था। स्पेन के युद्ध के कारण हम लोग दक्षिण अफ्रीका की घटिया-सी शैरी ही पी रहे थे। मेरा ध्यान सैरा की तरफ़

इसलिए खिंचा कि वह उस समय बहुत खुश नज़र आ रही थी। उन दिनों युद्ध की आशंका के कारण एक अरसे से खुशी जैसे चेहरों से गायब ही हो गई थी। बच्चों और शराबियों को छोड़कर और किसी के चेहरे पर खुशी नज़र नहीं आती थी। मुझे सैरा इसलिए भी अच्छी लगी कि एक बार इतना कहने के बाद कि उसने मेरी पुस्तकें पढ़ी हैं, उसने फिर इस विषय में बात नहीं की। मुझे खुशी हुई कि वह मुझे एक लेखक न समझकर एक इनसान ही समझ रही है। उस समय मुझे यह ख़याल तक नहीं था कि कभी मैं उससे प्रेम करने लगूँगा। इसकी बड़ी वजह यही थी कि वह बहुत सुन्दर थी और सुन्दर स्त्री यदि साथ में समझदार भी हो तो मेरे अन्दर ख़ामख़ाह हीनता का भाव जाग आता है। मैं नहीं जानता कि मनोवैज्ञानिकों ने इस काम्प्लेक्स को अभी गिना है या नहीं, मगर मुझे जब तक शारीरिक और मानसिक रूप से अपनी बेहतरी का अहसास न हो, तब तक मेरे अन्दर वासना जागती ही नहीं। उस समय मेरे मन पर सैरा की इतनी ही छाप पड़ी कि वह बहुत सुन्दर है, ख़ूब प्रसन्न रहती है और लोगों को इस तरह हाथ से छूती है, जैसे उनसे प्रेम कर रही हो। उसने जो पहली बात मुझसे कही थी, उसके अतिरिक्त उसकी और एक ही बात मुझे याद आती है, ''लगता है ज़्यादातर लोग आपको अच्छे नहीं लगते।'' शायद मैं अपने समकालीन लेखकों के बारे में उस समय बढ़-बढ़कर बातें कर रहा था, मुझे ठीक याद नहीं।

कितनी अच्छी गरमी थी! महीने का नाम बताने का प्रयत्न मैं नहीं करूँगा। उसके लिए मुझे बहुत पीड़ा में से गुज़रना पड़ेगा। मगर मुझे याद है कि मैं वह घटिया शैरी बहुत पी गया था और उस गरम और भरे हुए कमरे से निकलकर हेनरी के साथ कॉमन में टहलने के लिए निकल आया था। सूरज झुककर मैदान के बराबर आ गया था जिससे घास पीली नज़र आ रही थी। दूर के घर ऐसे लग रहे थे जैसे विक्टोरिया के ज़माने के छापे में छपे हुए घर हों—छोटे-छोटे, एक-से और ख़ामोश। एक बच्चा कुछ फासले पर रो रहा था। अट्ठारहवीं सदी का गिरजाघर ऐसे लगता था जैसे घास के द्वीप में एक ऐसा खिलौना रखा हो, जिसे उस अँधेरे और रूखे वातावरण में बाहर छोड़ देने में कोई हर्ज़ न हो। वह एक ऐसा समय था जब इनसान अनायास ही किसी अजनबी से अपने दिल की बातें कहने लगता है।

''इनसान कितना प्रसन्न रह सकता है...'' हेनरी बोला।

''हाँ, यह तो है ही।''

उसकी आँखें भर आई थीं, और अपनी पार्टी से बाहर कॉमन के वातावरण में खड़ा वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। ''तुम्हारा घर बहुत सुन्दर है'', मैंने कहा।

''यह घर मेरी पत्नी का ढूँढ़ा हुआ है।''

मेरी उससे भेंट कुल एक सप्ताह पहले एक और पार्टी में हुई थी। वह उन दिनों पेन्शंस के मन्त्रालय में था और मैंने उसे अपने उपन्यास के लिए नज़र में रख लिया था। दो दिन बाद ही मुझे उसके यहाँ से निमन्त्रण मिल गया। बाद में सैरा ने बताया कि निमन्त्रण उसी ने भिजवाया था।

"तुम लोगों के ब्याह को बहुत दिन हो गए क्या?" मैंने पूछा।

"दस साल हो गए।"

"मगर तुम्हारी पत्नी अब भी बहुत आकर्षक लगती है।"

"मुझे उससे बहुत सहायता मिलती है।" बेचारा हेनरी! मगर मैं उसे बेचारा क्यों कहता हूँ? शराफत, नम्रता और विश्वास, उसके पास क्या ये ऐसे पत्ते नहीं थे, जिनसे इनसान ज़िन्दगी में कोई भी बाज़ी जीत सकता है?

"मेरा ख़याल है, अब वापस चला जाए", वह बोला। "सैरा बेचारी वहाँ अकेली ही सब कुछ कर रही होगी।" और उसने इस तरह मेरी बाँह पर हाथ रख दिया जैसे हम एक-दूसरे को साल-भर से जानते हों। इस तरह हाथ रखना क्या उसने सैरा से सीखा था? विवाहित स्त्री-पुरुष प्रायः एक-दूसरे जैसे ही हो जाते हैं। ख़ैर, तो हम लोग साथ-साथ वापस लौटे। ज्यों ही हमने हॉल का दरवाज़ा खोला, मुझे सामने शीशे में लगा जैसे पिछली कोठरी में चुम्बन की मुद्रा में खड़े दो व्यक्ति झट से एक-दूसरे से अलग हो गए हों। उनमें एक सैरा थी। मैंने हेनरी की तरफ़ देखा। या तो उसने सामने देखा ही नहीं था, या वह ऐसी चीज़ की परवाह नहीं करता था, और या फिर बेचारा बहुत ही दुखी आदमी था।

क्या मिस्टर सैवेज को इस दृश्य की बात बताना कुछ उपयोगी सिद्ध हो सकता था? बाद में मुझे पता चला था कि जो व्यक्ति सैरा को चूम रहा था, वह उसका प्रेमी नहीं था, पेन्शंस के मन्त्रालय में हेनरी के सहयोगियों में से एक था, जिसकी पत्नी सप्ताह-भर पहले एक नाविक के साथ भाग गई थी। सैरा से उसकी भेंट उस दिन पहली बार ही हुई थी। यह कुछ ठीक नहीं जँचता था कि जिस दृश्य में से मुझे अब बाहर कर दिया गया था, उसमें वह व्यक्ति अभी तक मौजूद हो। प्रेम को पनपने में इतना समय कहाँ लगता है!

मैं उन दिनों की बात ही न उठाता तो अच्छा था, क्योंकि सन् उनतालीस के विषय में लिखते हुए मेरी घृणा फिर मुझ पर छाई जा रही है। घृणा और प्रेम का हमारे स्नायुओं पर एक-सा ही प्रभाव पड़ता है और दोनों का परिणाम भी एक-सा ही होता है। अगर ईसा की कहानी हमें पहले से ही न समझा दी जाए तो केवल कार्य को देखकर क्या हम बता सकेंगे कि ईसा से सच्चा प्रेम किसे था—ईर्ष्यालु जुडास को या डरपोक पीटर को?

4

मैं सैवेज के यहाँ से वापस आया तो मकान-मालकिन ने बताया कि पीछे से मिसेज़ माइल्स का फ़ोन आया था। मेरे शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई। लगा, जैसे वह खुद ही दरवाज़ा बन्द करके हॉल में से होकर मेरे पास आ रही हो। मेरे मन में कहीं यह आशा ज़रूर थी कि उस दिन की भेंट के बाद उसके मन में पहले जैसा प्रेम न सही, एक भाव ज़रूर जाग आया होगा, और शायद मुझे एक बार फिर उसके निकट आने का अवसर मिल सकेगा। मुझे लग रहा था कि अगर एक बार भी मुझे उसके सहवास का अवसर प्राप्त हो जाए—चाहे वह ठीक ढंग से और सुविधापूर्वक न भी हो—तो मुझे काफ़ी शान्ति प्राप्त हो जाएगी और हर समय उसी की बात मेरे दिमाग़ पर सवार नहीं रहेगी। इस बार उसने मुझे छोड़ा है, फिर मैं उसे छोड़ दूँगा। मैकाले 7753, अट्ठारह महीने के बाद यह नम्बर मिलाते हुए मुझे कुछ विचित्र-सा लगा। उससे भी विचित्र बात यह लगी कि नम्बर मुझे अपनी डायरी में देखना पड़ा—उसका आख़िरी हिन्दसा मुझे भूल रहा था। कुछ देर उधर घंटी बजती रही। मैं सोचने लगा कि अगर हेनरी घर आ गया हो और वह फ़ोन उठाए तो मैं क्या कहूँगा। सोचा, जो भी हो, मैं सच बात ही करूँगा। झूठ बोलने का मेरा ज़रा मन नहीं था—झूठ भी जैसे एक पुराना दोस्त था जो अब मेरे लिए अजनबी हो गया था।

किसी नौकरानी की मँजी हुई आवाज़ ने उस तरफ़ से नम्बर दोहरा दिया।

"मिसेज़ माइल्स हैं?" मैंने पूछा।

"मिसेज़ माइल्स?"

"यह मैकाले सात-सात पाँच तीन है न?"

"जी हाँ।"

"मैं मिसेज़ माइल्स से बात करना चाहता हूँ।"

"माफ़ कीजिए, यह ग़लत नम्बर है।" और उसने चोंगा रख दिया। मैंने यह सोचा ही नहीं था कि समय के साथ ऐसी छोटी-छोटी चीज़ें भी बदल सकती हैं।

मैंने डायरेक्टरी उठाकर नम्बर देखा। वहाँ वह पुराना नम्बर ही दिया हुआ था। वह डायरेक्टरी एक साल से ज़्यादा पुरानी थी। मैंने सोचा इन्क्वायरी से पूछ लूँ, मगर उसी समय फ़ोन की घंटी बज उठी। फ़ोन सैरा का ही था। उसने कुछ अव्यवस्थित-से स्वर में पूछा, "हलो, तुम बोल रहे हो?" वह कभी मेरा नाम लेकर नहीं बुलाती थी, और पुरानी घनिष्ठता न रहने से शायद उसे कुछ दिक़्क़त महसूस हो रही थी।

"मैं बैंड्रिक्स बोल रहा हूँ।"

"मैं सैरा बोल रही हूँ। मेरा सन्देश मिला था?"

"हाँ। मैं फ़ोन करने की सोच ही रहा था, मगर ज़रा एक लेख पूरा करने बैठ

गया था। और मेरा ख़याल है तुम्हारा नया नम्बर भी मेरे पास नहीं है। डायरेक्टरी में तो होगा?''

''नहीं डायरेक्टरी में नहीं है, क्योंकि अभी हाल ही में बदला है। नया नम्बर है, मैकाले, छह दो सिफर चार। देखो, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।''

''हाँ-हाँ।''

''ऐसी कोई ख़ास बात नहीं है। मैं चाहती थी कि किसी दोपहर को खाना तुम्हारे साथ खाऊँ।''

''हाँ, हाँ, यह तो बहुत खुशी की बात होगी। तो कब का रखें?''

''कल का रख सकते हो?''

''नहीं, कल का तो नहीं। यह लेख मुझे कल तक ज़रूर पूरा करना है।''

''तो बुधवार का रखें?''

''मेरा ख़याल है, बृहस्पत को ठीक रहेगा।''

''अच्छी बात है।''

मुझे उसके शब्दों में निराशा की ध्वनि साफ़ सुनाई दी, या शायद अपने घमंड के कारण ही मुझे ऐसा लगा।

''तो उस दिन एक बजे मैं तुम्हें कैफे रॉयल में मिल जाऊँगा।''

''धन्यवाद!'' मुझे लगा कि वह दिल से धन्यवाद दे रही है। ''अच्छा तो बृहस्पत को मिलेंगे।''

''ठीक है।''

मगर चोंगा रखते ही मुझे अपनी घृणा पर गुस्सा हो आया। किस लानती चीज़ से पाला पड़ा था! मैंने झट से फिर उसका नम्बर मिलाया। वह तब तक शायद फ़ोन के पास से हटी भी नहीं थी। ''मेरा ख़याल है सैरा'', मैंने कहा, ''बेहतर होगा कि हम कल ही मिल लें। मुझे कल के बारे में कुछ ग़लत ख़याल था। समय और स्थान वही ठीक रहेगा।'' और ख़ामोश फ़ोन पर हाथ रखे हुए मैं जैसे तभी से उस घड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। मन में मैं सोच रहा था कि क्या यही चीज़ है जिसे आशा कहते हैं?

5

मैं अखबार मेज़ पर फैलाए बैठा था और एक ही पन्ने को बार-बार पढ़ रहा था। कई लोग आ-जा रहे थे। मैं बार-बार दरवाज़े की तरफ़ नहीं देखना चाहता था। किसी के आने की आशा में बार-बार सिर उठाकर देखना बहुत बेवकूफ़ी की हरकत लगती है। जीवन में कोई भी आशा इतनी महत्त्वपूर्ण कहाँ होती है जो हम ख़ामख़ाह अपने

चेहरे पर निराशा की रेखाएँ लिए रहें? अखबार में वही रोज़मर्रा की खबरें थीं—किसी ने किसी का कत्ल कर दिया और चीनी के राशन पर संसद में झगड़ा हो गया। सैरा पाँच मिनट लेट हो चुकी थी। दुर्भाग्यवश ज्योंही मैंने घड़ी की तरफ़ देखा, त्योंही वह अन्दर आ गई।

"माफ़ करना!" मैं उसकी आवाज़ सुनकर चौंक गया। "मैं बस में आई हूँ। रास्ते में बहुत भीड़ थी, इसलिए थोड़ी देर हो गई।"

"बस से ट्यूब जल्दी ले आती है," मैंने कहा।

"मगर मैं जल्दी नहीं पहुँचना चाहती थी।"

उसकी सच बोलने की आदत से मुझे हमेशा कोफ्त होती थी। जिन दिनों हमारा सम्बन्ध चल रहा था, उन दिनों कई बार मैं उसे सच की सीमा से आगे लाना चाहता था; चाहता था वह कहे कि हमारा सम्बन्ध सदा इसी तरह रहेगा और एक दिन हम आपस में ब्याह कर लेंगे। यह बात विश्वास करने की नहीं थी, मगर उसके मुँह से ऐसा सुनकर मुझे अच्छा लगता, शायद इसलिए कि तब मैं अपनी तरफ़ से उससे कह सकता कि "नहीं, ऐसा भला कहाँ सम्भव है!" मगर अपने को ख़ामख़ाह धोखे में रखना उसे पसन्द नहीं था, हालाँकि कभी-कभी अचानक ही वह एक ऐसी मीठी और बहुत बड़ी बात कह जाती थी जिससे मेरा सारा गुस्सा काफूर हो जाता था। एक बार उसके यह कहने पर कि एक दिन हम लोगों का सम्बन्ध टूट जाएगा, मुझे बहुत बुरा लगा, तो उसने उल्लास से चमकते हुए कहा था, "सुनो, मैंने कभी भी किसी पुरुष से ऐसे प्रश्न नहीं किया जैसे तुमसे करती हूँ। समझे?" मैंने तब सोचा था कि चाहे अनजाने ही सही, वह भी कुछ हद तक अपने को धोखे में रखती ही है।

उसने बैठकर मुझसे बियर मँगवाने को कहा तो मैंने उसे बताया कि मैंने 'रूल्ज़' रेस्तराँ में टेबल रिज़र्व करवा रखी है।

"यहीं बैठे रहें तो क्या है?"

"हमेशा हम लोग वहीं जाया करते थे, इसलिए मैंने कहा कि इस बार भी वहीं चले चलेंगे।"

"अच्छी बात है।"

शायद हम लोग कुछ खिंचे-खिंचे-से बात कर रहे थे, क्योंकि मैंने देखा कि कुछ दूर सोफे पर बैठा हुआ एक छोटा-सा आदमी हमारी तरफ़ दिलचस्पी की नज़र से देख रहा है। मैंने उसे घूरकर देखा तो वह दूसरी तरफ़ देखने लगा। उसकी मूँछें बहुत लम्बी थीं, और आँखों से शोखी टपकती थी। उसने जल्दी से अपनी आँखें दूसरी तरफ़ हटाईं तो उसकी कुहनी बियर के गिलास से टकरा गई जिससे बियर लुढ़ककर फ़र्श पर गिर गई। इससे वह काफ़ी सकपका गया। मुझे थोड़ा अफसोस हुआ। सोचा, हो

सकता है बेचारा मेरे थोड़े से पाठकों में से हो और चित्रों में देखे हुए चेहरे से मुझे पहचानने की कोशिश कर रहा हो। उसका छोटा-सा लड़का भी वहाँ पास ही बैठा था और बेटे के सामने बाप का शर्मिन्दगी उठाना ख़ासी बुरी बात होती है। बैरा जल्दी से उन लोगों की तरफ़ गया तो लड़के का चेहरा सुर्ख हो उठा। बाप बैरे के सामने ज़रूरत से ज़्यादा अफसोस प्रकट करने लगा।

''मगर तुम यहाँ चाहो तो यहीं खाना खा सकते हैं,'' मैंने सैरा से कहा।

''नहीं, और कोई बात नहीं है। सिर्फ़ उसके बाद मैं वहाँ गई नहीं हूँ।''

''तुम्हारा रेस्तराँ तो ख़ैर वह था भी नहीं।''

''तुम क्या उसके बाद भी वहाँ जाते रहे हो?''

''हाँ, सप्ताह में दो-तीन बार तो चला ही जाता हूँ। मुझे वह जगह ज़रा पास पड़ती है।''

वह सहसा उठ खड़ी हुई और बोली, ''चलो, वहीं चलते हैं।'' मगर साथ ही उसे खाँसी उठ आई। वह छोटा-सा शरीर और इतनी गहरी खाँसी! खाँसते-खाँसते उसके माथे पर पसीना आ गया।

''बहुत बुरी खाँसी हो रही है तुम्हें?''

''नहीं, ऐसी कुछ ख़ास नहीं है।''

''टैक्सी ले लें?''

''नहीं पैदल ही चलते हैं।''

मेडन लेन में आगे जाकर बाएँ हाथ को एक गेट और जंगला है। हम लोग चुपचाप चलते हुए उसे पार कर गए। पहली बार जब मैं सैरा को खाना खिलाने के लिए ले गया था और उससे हेनरी के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछता रहा था तो लौटते में वहीं से होकर ट्यूब की तरफ़ जाते हुए उसे खुश देखकर मैंने कुछ घबराहट के साथ उसे चूम लिया था। पता नहीं मैंने ऐसा क्यों किया! शायद शीशे में देखा हुआ प्रतिबिम्ब मुझे याद हो आया था, क्योंकि उससे प्रेम करने का तब भी मेरा कोई इरादा नहीं था। बल्कि मेरा तो उससे उसके बाद मिलने का भी ख़ास इरादा नहीं था। मैं यह सोच ही नहीं सकता था कि इतनी सुन्दर स्त्री मुझसे प्रेम कर सकती है।

'रूल्ज़' में पहुँचकर हम लोग बैठ गए तो एक पुराने बैरे ने आकर कहा, ''बहुत दिनों से आप इधर नहीं आए साहब?'' मुझे अफसोस हुआ कि मैंने सैरा से झूठ क्यों बोला। ''नहीं मैं आता तो हूँ,'' मैंने कहा, ''मगर आजकल ऊपर बैठकर खाना खाता हूँ।'' ''और आप भी बहुत दिनों के बाद आई हैं,'' बैरे ने कहा। ''हाँ, लगभग दो साल हो गए।'' उसके इस तरह सही बात कहने से मुझे बहुत चिढ़ होती थी।

''आप बड़ा लागर लिया करती थीं।''

''तुम्हारी याददाश्त बहुत अच्छी है, एलफ्रेड।'' अपना नाम सुनकर बैरे के चेहरे पर चमक आ गई। बैरों को खुश करने का ढंग सैरा को बहुत आता था। खाना खाते हुए हम कुछ इधर-उधर की बातें करते रहे। उसके आने के उद्देश्य का पता मुझे खाना खा चुकने के बाद ही चला। मैंने तुमसे खाना खिलाने को इसलिए कहा था,'' वह बोली, ''कि मैं तुमसे हेनरी के बारे में कुछ पूछना चाहती थी।''

''हेनरी के बारे में?'' और मैंने चाहा कि किसी तरह उससे यह छिपा रहे कि उसकी बात सुनकर मुझे कितनी निराशा हुई है।

''देखो, हेनरी के बारे में मैं आजकल बहुत चिन्तित हूँ। उस रात जब तुम उससे मिले थे तो तुम्हें उसकी बातचीत में कुछ अजीब नहीं लगा?''

''नहीं, मुझे तो ऐसा नहीं लगा।''

''मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ, हालाँकि मुझे पता है कि तुम बहुत व्यस्त रहते हो। हो सके तो कभी-कभी हेनरी से मिलने आ जाया करो। वह बहुत अकेला महसूस करता है।''

''तुम्हारे पास होते हुए भी?''

''मेरे पास होने-न-होने से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, यह बात मैं बरसों से जानती हूँ।''

''तुम्हारे पास होने-न-होने से ही तो उसे फ़र्क़ पड़ता है।''

''मगर मैं आजकल ज़्यादा घर से बाहर नहीं जाती।'' और खाँसी उठ आने से उसे व्याख्या नहीं करनी पड़ी। खाँसी रुकने तक उसने आगे की बात सोच ली थी, हालाँकि झूठ बोलना उसके स्वभाव में नहीं था। ''आजकल तुम कोई नई किताब लिख रहे हो?'' यह उसने एक ऐसे अजनबी की तरह पूछा जिसका किसी कॉकटेल पार्टी में मुझसे नया-नया परिचय हुआ हो। पहली बार मिलने पर दक्षिण अफ्रीका की शैरी पीते हुए भी उसने यह सवाल नहीं पूछा था।

''हाँ।''

''तुम्हारी पिछली किताब मुझे ज़्यादा पसन्द नहीं आई।''

''उन दिनों तो कुछ भी लिख लेना मेरे लिए बड़ी बात थी। शान्ति अभी आई ही थी''...और इसकी जगह मैंने कहा होता कि शान्ति अभी गई ही थी तो भी ख़ास फ़र्क़ न पड़ता।

''मैं कभी-कभी सोचती थी कि तुम कहीं वह पुरानी किताब तो नहीं लिखने लगे जिससे मुझे इतनी चिढ़ होती थी। कई बार लोग इस तरह भी बदला लेते हैं।''

''बदला लेने के लिए मैं पूरा एक साल ख़राब नहीं कर सकता। किताब लिखने में मुझे एक साल लगता है।''

''बदला लेने की कोई वजह भी तो नहीं थी।''

"मैं मज़ाक ही कर रहा हूँ। कुछ वक़्त अच्छा साथ गुज़र जाए, वही काफ़ी होता है। इससे ज़्यादा की आशा करना बचपना है। आख़िर कभी-न-कभी तो वह खेल समाप्त होना ही था। अच्छा है, जो अब हम दो मित्रों की तरह बैठकर हेनरी के बारे में बात कर सकते हैं।"

मैंने बिल अदा किया और हम लोग वहाँ से बाहर निकल आए। वह गेट और जंगला कुल बीस गज़ के फासले पर ही थे। मैंने फुटपाथ पर रुककर पूछा, "तो तुम अब स्ट्रैंड की तरफ़ चल रही हो?"

"नहीं, मुझे लैस्टर स्क्वेयर जाना है।"

"मैं स्ट्रैंड की तरफ़ जा रहा हूँ।" सड़क पर कोई नहीं था। वह क्षण-भर के लिए गेट के पास आकर रुक गई। "अच्छा तो मैं अब यहीं पर तुमसे विदा लूँगी। इतने दिनों के बाद तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

"मुझे भी बहुत खुशी हुई।"

"कभी ख़ाली हो तो फ़ोन कर लेना।"

मैं जंगले पर खड़ा था। सहसा मेरे हाथ उसकी तरफ़ बढ़ गए। "सैरा," मैंने कहा। उसने जल्दी से अपना मुँह दूसरी तरफ़ कर लिया, जैसे देख रही हो कि कोई आ तो नहीं रहा। मगर मुँह मेरी तरफ़ करते ही उसे खाँसी उठ आई, और वह खाँसी के मारे दोहरी हो गई। उसकी आँखों में लाल डोरे उभर आए। उस समय अपने फर के कोट में वह जाल में फँसे हुए खरगोश जैसी लग रही थी।

"माफ़ करना!"

"तुम्हें इस खाँसी का इलाज करना चाहिए," मैंने इस तरह तीखे स्वर में कहा जैसे उसने मेरी कोई चीज़ छीन ली हो और मैं उसके लिए उसे झिड़क रहा होऊँ।

"नहीं, बहुत मामूली-सी ही खाँसी है।" कहते हुए उसने अपना हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा दिया। "अच्छा मॉरिस, गुड-बाई!"

मुझे लगा कि वह नाम लेकर उसने मेरा अपमान किया है। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में नहीं लिया और 'गुड-बाई' कहकर जल्दी से वहाँ से चल दिया। मैंने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा और ऐसे प्रकट करना चाहा जैसे मुझे एक मुसीबत से छुटकारा मिला हो। पीछे से मुझे फिर वही खाँसी सुनाई दी तो मेरा मन होने लगा कि मैं एक मस्त चलती हुई धुन में सीटी बजाता हुआ चलूँ, हालाँकि संगीत से मेरा दूर का भी रिश्ता नहीं था।

6

जवानी के दिनों में इनसान काम करने की जो आदतें डाल लेता है, वह समझता है कि वे ज़िन्दगी-भर वैसे ही चलेंगी, चाहे कितनी भी मुश्किलें पड़ती रहें। मैं बीस साल से ज़्यादा अरसे से सप्ताह में पाँच दिन, पाँच सौ शब्द प्रतिदिन के हिसाब से लिखता रहा हूँ। साल-भर में मैं उपन्यास पूरा कर लेता हूँ और उसमें दोहराने और टाइप की गलतियाँ लगाने के लिए भी समय निकल आता है। मैंने अपना यह क्रम नहीं तोड़ा, और काम का निश्चित अंश पूरा हो जोने पर मैं एक दृश्य के बीच में ही हाथ रोककर उठ खड़ा होता हूँ। सुबह काम करते हुए मैं बीच-बीच में गिनता जाता हूँ कि मैंने कितने शब्द कर लिए हैं और टाइप किए हुए पन्नों में सौ-सौ के बाद निशान लगाता जाता हूँ। किसी प्रकाशक को मेरी रचना के विस्तार की छानबीन नहीं करनी पड़ती, क्योंकि मेरी पांडुलिपि के बाहर ही लिखा होता है, शब्द-संख्या 83, 764। जवानी के दिनों में किसी से प्रेम करने के सिलसिले में भी मेरा यह क्रम नहीं बदला। प्रेम का सिलसिला दोपहर के खाने के बाद ही आरम्भ होता था, और रात को चाहे मैं कितनी भी देर से सोता, बशर्ते कि सोता अपने बिस्तर में, तो उससे पहले मैं दिन में किए हुए काम पर एक नज़र डाल लेता था। युद्ध का मेरे इस क्रम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक टाँग से लँगड़ा होने के कारण मैं फ़ौज में नहीं जा सका था और नागरिक रक्षा दल में मेरे साथियों को इसमें खुशी होती थी कि मैं ड्यूटी के लिए सुबह का शान्त समय नहीं चाहता था। इससे ख़ामख़ाह ही मुझे यह ख्याति मिल गई थी कि मैं अपना काम बहुत ध्यान से करता हूँ, हालाँकि मेरा ध्यान इसी में होता था कि सुबह उठकर आराम से पाँच सौ शब्द काग़ज़ पर लिख लूँ। अपने पर लगाए गए मेरे इस प्रतिबन्ध को किसी ने तोड़ा तो केवल सैरा ने। आरम्भिक हवाई हमलों और सन् चवालीस के वी 1 बमों को छोड़कर, बमबारी भी प्रायः रात को आराम से अपने वक़्त पर होती थी। मगर सैरा से मेरी मुलाक़ात सुबह ही हो सकती थी। दोपहर के बाद उसकी सहेलियाँ अपनी ख़रीदारी से फारिग होकर उसके यहाँ मिलने और गप करने चली आती थीं, और शाम का भोंपू बजने तक वहीं बैठी रहती थीं। इसलिए सैरा अकसर सब्ज़ी की दुकान से निकलकर गोश्त की दुकान में जाने से पहले मेरे यहाँ चली आती थी और उन दो चीज़ों की ख़रीद के बीच में हम आपस में प्रेम कर लेते थे।

मगर उस हालत में भी मैं आसानी से अपना काम कर लेता था। इनसान अन्दर से खुश हो तो वह किसी भी प्रतिबन्ध को स्वीकार कर लेता है। मेरा यह कार्यक्रम टूटा तो मेरे दुख की वजह से। जब मैंने महसूस किया कि अकसर ही हम लोग आपस में लड़ पड़ते हैं और अकसर ही मैं झुँझलाकर उस पर नुक्ताचीनी करने लगता हूँ

तो मुझे लगने लगा कि हमारा सम्बन्ध बहुत दिन नहीं चलेगा। हमारा प्रेम जैसे प्रेम न होकर केवल एक परिचय ही था, जिसका जिस तरह एक दिन आरम्भ हुआ था, उसी तरह एक दिन अन्त भी हो जाना था। उसके आरम्भ के क्षण की मुझे अच्छी तरह याद थी और मुझे लगता था कि उसी तरह एक दिन मैं उसके अन्त का क्षण भी बता सकूँगा। जब सैरा मेरे पास से चली जाती तो मैं अपने को किसी भी काम में न लगा पाता। मैं उसके साथ हुई बातों को एक-एक करके मन में दोहराता और इस तरह अपने खेद और गुस्से को और बढ़ा लेता। मुझे पता था कि मैं खुद ही स्थिति को ख़राब कर रहा हूँ और जिस एक चीज़ से मुझे प्रेम है, उसे धक्के दे-देकर जीवन से निकाल देने का प्रयत्न कर रहा हूँ। जब तक मुझे यह विश्वास था कि हमारा प्रेम सदा बना रहेगा, तब तक मैं प्रसन्न था और हमारा समय भी तब तक अच्छा बीतता था। मगर जब मुझे यह ख़याल होने लगा कि एक-न-एक दिन हमारे प्रेम का अन्त हो जाएगा तो मैं चाहने लगा कि वह अन्त जितनी जल्दी आ जाए उतना ही अच्छा है—प्रेम जैसे जाल में फँसकर तड़पता हुआ एक नन्हा-सा प्राणी था और मुझे आँखें मूँदकर जल्दी से उसकी गर्दन मरोड़ देना था।

और मुझसे कुछ भी नहीं होता था। मैं कह चुका हूँ कि एक उपन्यासकार का बहुत-सा लेखन उसके अवचेतन में होता है; काग़ज़ पर पहले शब्द के उतरने से पहले अवचेतन की गहराई में उसका आख़िरी शब्द लिखा जा चुका होता है। हम अपनी कहानी के विवरण जैसे याद करते हैं, उनका आविष्कार नहीं करते। मेरें अन्दर की इन अथाह गहराइयों में युद्ध के कारण भी कोई व्याघात नहीं पहुँचा था, परन्तु प्रेम का अन्त हो जाने की बात मेरे लिए युद्ध और उपन्यास की अपेक्षा कहीं महत्त्वपूर्ण थी। और जैसे मैं एक कहानी की तरह ही उस पर काम कर रहा था; चुन-चुनकर ऐसे शब्द कहता था जो सैरा को रुला देते थे। वे शब्द बहुत स्वाभाविक ढंग से मेरी ज़बान पर आ जाते थे, जैसे वे अन्दर की उन्हीं गहराइयों से निखरकर आए हों। मेरा उपन्यास बीच में लटक रहा था, मगर मेरा प्रेम आन्तरिक प्रेरणा से जल्दी-जल्दी अपने अन्त की तरफ़ बढ़ रहा था।

सैरा को मेरी आख़िरी पुस्तक पसन्द नहीं आई थी, इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं था। मैंने वह ज़बर्दस्ती किसी तरह मन मारकर लिखी थी, क्योंकि जीने के लिए कुछ-न-कुछ करना ज़रूरी होता है। समीक्षकों ने कहा था कि केवल एक शिल्पकार की रचना है; मेरी प्रेरणा का अब यही रूप शेष रह गया था। मैंने सोचा था कि शायद अगले उपन्यास में मेरी प्रेरणा लौट आए और अवचेतन की गहराइयों में से सामने आता हुआ अप्रत्याशित कुछ मेरे मन को चमत्कृत कर दे, परन्तु 'रूल्ज़' में सैरा के साथ खाना खाने के बाद सप्ताह-भर मैं ज़रा भी काम नहीं कर सका। मगर फिर वही मैं, मैं, मैं...जैसे कि मैं यह अपनी कहानी लिख रहा हूँ, सैरा, हेनरी और उस

तीसरे व्यक्ति की नहीं, जिसे बिना जाने और बिना जिसमें विश्वास किए ही मैं उससे घृणा करने लगा था।

उस दिन सुबह मैंने काम करने की कोशिश की, मगर मुझे सफलता नहीं मिली। दोपहर के खाने के साथ कुछ ज़्यादा पी गया, जिससे शाम भी बर्बाद हो गई। अँधेरा होने पर मैं बिना बत्ती जलाए अपनी खिड़की के पास खड़ा होकर कॉमन के उस तरफ़ उत्तर के घरों की जगमगाती हुई खिड़कियों को देखता रहा। सर्दी बहुत थी और गैस की आग से भी तभी गर्मी मिलती थी जब बिलकुल उससे सटकर बैठा जाए, यहाँ तक कि जलने की नौबत आ जाए। बरफ के गाले दक्खिन के लैम्प के आस-पास गिरते हुए उसके शीशे को अपनी मोटी गीली उँगलियों से छू रहे थे। नीचे घंटी बजी तो वह आवाज़ मुझे सुनाई नहीं दी। मकान-मालकिन ने दरवाज़ा खटखटाया और कहा, "कोई मिस्टर पारकिस आपसे मिलने के लिए आए हैं।" 'कोई' के प्रयोग से स्पष्ट था कि आनेवाला किस स्तर का व्यक्ति हो सकता है। मैंने यह नाम पहले नहीं सुना था, फिर भी मैंने कहा कि उसे अन्दर भेज दे।

वह अन्दर आया तो उसकी क्षमा-याचना करती हुई मासूम आँखों और बर्फ़ से गीली पुराने फ़ैशन की दाढ़ी से मुझे लगा कि मैंने उस व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है। कमरे में सिर्फ़ टेबल लैम्प जल रहा था, इसलिए वह अपनी कमज़ोर आँखों से टटोलता हुआ-सा आगे आ रहा था। मेरा चेहरा अँधेरे में था, इसलिए उसे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था।

"मिस्टर बैंड्रिक्स आप ही हैं?" उसने पूछा।

"हाँ, कहिए।"

"मेरा नाम पारकिस है," उसने ऐसे कहा जैसे इतना कहना ही मेरे लिए काफ़ी हो। "मैं मिस्टर सैवेज का आदमी हूँ।"

"आओ बैठो," मैंने कहा। "सिगरेट लोगे?"

"जी नहीं," उसने कहा। "ड्यूटी के वक़्त मैं सिगरेट नहीं पीता। अपने को छिपाने के लिए पीना ज़रूरी हो तो और बात है।"

"मगर इस वक़्त तो तुम ड्यूटी पर नहीं हो।"

"एक तरह से ड्यूटी पर ही हूँ। आपको रिपोर्ट देने के लिए मैंने यह आध घंटे की छुट्टी ली है। मिस्टर सैवेज ने कहा था कि आपको रिपोर्ट और ख़र्च का ब्यौरा हर सप्ताह देना है।"

"तो रिपोर्ट के लायक कुछ है क्या?" कह नहीं सकता कि मेरे स्वर से निराशा अधिक झलक रही थी या उत्तेजना।

"मैं बिलकुल ख़ाली ही नहीं आया," उसने सन्तुष्ट भाव से कहा और ज़ेब से कई काग़ज़ और लिफाफे निकालकर उसमें से मुझे देने का काग़ज़ ढूँढ़ने लगा।

"बैठ जाओ, इस तरह अच्छा नहीं लग रहा।"

"जी बैठ रहा हूँ।" बैठकर उसे मेरा चेहरा कुछ स्पष्ट नज़र आने लगा। "लगता है कि मैंने आपको पहले भी कहीं देखा है।"

मैंने लिफ़ाफ़े से एक काग़ज़ निकाल दिया। वह ख़र्च का हिसाब था जो बहुत सुन्दर अक्षरों में जैसे किसी स्कूल के लड़के ने लिखा था। "तुम्हारी लिखाई बहुत साफ़ है," मैंने कहा।

"यह मेरे लड़के की लिखाई है," उसने कहा। "मैं उसे भी अपने साथ यह काम सिखा रहा हूँ।" मगर साथ ही जल्दी से उसने कहा, "मगर मैं उसके ख़र्च की कोई चीज़ हिसाब में नहीं लिखता। इस समय की तरह वह ड्यूटी पर हो तो बात दूसरी है।"

"तो इस समय वह ड्यूटी पर है?"

"जी हाँ, मगर सिर्फ़ उतनी ही देर के लिए जितनी देर मैं यहाँ हूँ।"

"लड़का कितना बड़ा है?"

"बारह में जा चुका है," उसने ऐसे कहा जैसे लड़के की बजाय घड़ी में वक़्त की बात कर रहा हो। "बच्चे से ऐसे काम में कई बार बहुत सहायता मिलती है और ख़र्च भी कुछ नहीं होता, सिवाय इसके कि कभी उसे एकाध कार्टूनों की किताब ख़रीद दी जाए। किसी को शक भी नहीं होता, क्योंकि लड़कों को तो इधर-उधर घूमने और चीज़ें देखने की आदत ही होती है।"

"मगर एक बच्चे के लिए यह काम कुछ अजीब-सा नहीं है?"

"बात यह है साहब कि असली बात का मैं उसे पता नहीं चलने देता। जब कभी किसी के सोने के कमरे में दाखिल होने की नौबत आएगी तो मैं उसे बाहर ही छोड़ जाऊँगा।"

मैं आगे पढ़ने लगा :

जनवरी 18	शाम के अखबार	2 पेंस
	ट्यूब का आने-जाने का किराया	1 शिलिंग 8 पेंस
	गुंटर्ज़ में कॉफ़ी	2 शिलिंग

वह मुझे ध्यान से देख रहा था। "यह कॉफ़ी हाउस ज़रूरत से ज़्यादा ही महँगा था," वह बोला। मैं वहाँ इतना भी आर्डर न देता तो लोगों का ध्यान ख़ामख़ाह मेरी तरफ़ खिंच जाता।"

जनवरी 19	ट्यूब का किराया	2 शिलिंग 4 पेंस
	बियर की बोतलें	3 शिलिंग
	कॉकटेल	2 शिलिंग 6 पेंस
	एक पिंट बिटर	1 शिलिंग 6 पेंस

मेरे पढ़ते-पढ़ते वह फिर बीच में बोल उठा, "बियर का साहब मेरे मन पर ज़रूर कुछ भार है, क्योंकि मेरी असावधानी से एक गिलास मुझसे उलट गया था। मैं उस समय ज़रा उत्तेजित था, क्योंकि कई बार तो कई-कई सप्ताह बीत जाते हैं और कुछ हाथ नहीं लगता और इस बार दूसरे ही दिन...।"

और मुझे याद हो आया कि मैंने उसे और उसके घबराए हुए लड़के को कब और कहाँ देखा था। मैं 19 जनवरी के नीचे पढ़ने लगा। 18 जनवरी के नीचे मैंने एक नज़र में ही देख लिया कि साधारण गतिविधि का ही उल्लेख है। "बस पकड़कर वह स्त्री पिकेडिली सरकस तक गई, जहाँ बहुत उत्तेजित नज़र आ रही थी। एयर स्ट्रीट में से होती हुई वह कैफ़े रॉयल में चली गई, जहाँ एक पुरुष उसका इन्तज़ार कर रहा था। मैं और मेरा लड़का...।"

वह फिर बीच में बोल पड़ा, "देखिए साहब, यहाँ अक्षर दूसरे हैं। जहाँ घनिष्ठता की बात हो, वहाँ मैं लड़के को नहीं लिखने देता।"

"तुम लड़के का बहुत ख़याल रखते हो," मैंने कहा और आगे पढ़ने लगा। "मैं और मेरा लड़का पास ही के एक कोच पर बैठ गए। उस पुरुष के साथ उस स्त्री की काफ़ी घनिष्ठता नज़र आती थी। उनके आपसी व्यवहार में बहुत स्नेह और बेतकल्लुफ़ी झलकती थी। एक बार मुझे लगा कि मेज़ के नीचे से वे एक-दूसरे के हाथ भी पकड़े हुए हैं, हालाँकि यह बात निश्चित रूप से नहीं कही जा सकती। स्त्री का बायाँ हाथ और पुरुष का दायाँ हाथ ऊपर दिखाई नहीं दे रहे थे, इसलिए इस तरह का अनुमान किया जा सकता था। थोड़ी देर की बातचीत के बाद वे लोग वहाँ से उठ खड़े हुए और पैदल 'रूल्ज़' नाम के एक एकान्त रेस्तराँ की तरफ़ चल दिए। वहाँ पहुँचकर वे मेज़ की बजाय एक कोच पर बैठे और उन्होंने दो पोर्क चॉप्स का आर्डर दिया।"

"पोर्क चॉप्स का ज़िक्र करने की क्या ज़रूरत थी?"

"आदमी अकसर एक ही चीज़ खाता हो तो इससे उसकी पहचान हो सकती है।"

"मगर तुम उस आदमी को नहीं पहचान सके?"

"आप आगे पढ़ें तो आपको पता चल जाएगा।"

"उन्होंने पोर्क चॉप्स का आर्डर दिया है, इसका पता मुझे बार पर कॉकटेल पीते हुए चल गया, मगर वह पुरुष कौन है, यह मैं वेटरों से और बार की लड़की से बातचीत करके नहीं जान सका। मैंने उनसे कोई सीधा सवाल नहीं पूछा, घुमा-फिराकर ही बातें करता रहा। लोगों को शक न होने लगे, इसलिए मैंने ज़्यादा पूछताछ नहीं की। वाडविल थियेटर के स्टेज के रखवाले से जान-पहचान करके मैंने इतना कर लिया कि उस रेस्तराँ पर आँख रख सकूँ।"

"उससे तुमने जान-पहचान कैसे की?" मैंने पूछा।

"बेडफोर्ड हेड के बार में। वह स्त्री और पुरुष उस समय चॉप्स खाने में व्यस्त थे। मैं वहाँ से रखवाले के साथ थियेटर में चला गया। वहाँ स्टेज का दरवाज़ा...।"

"मुझे उस जगह का पता है।"

"रिपोर्ट में साहब मैंने सिर्फ़ ज़रूरी बातें ही लिखी हैं।"

"ठीक है!"

और रिपोर्ट में आगे लिखा था, "खाने के बाद स्त्री और पुरुष साथ-साथ मेडल लेन में आ गए और वहाँ एक बिसाती की दुकान के बाहर एक-दूसरे से अलग हो गए। उस समय लग रहा था जैसे वे अपने मन पर बहुत बोझ महसूस कर रहे हों और जैसे जीवन-भर के लिए एक-दूसरे से बिछुड़ रहे हों। मैंने सोचा कि अगर सचमुच ऐसा हो तो मेरी खोज का यह एक तरह से अच्छा अन्त ही होगा।"

वह फिर उतावली में बोल उठा, "मेरा ख़याल है मैंने अपनी तरफ़ से जो टिप्पणी की है उसका आप बुरा नहीं मानेंगे।"

"कतई नहीं।"

"इस धन्धे में भी अब साहब, कभी-कभी कोई बात इनसान के मन को छू जाती है। मुझे वह महिला सचमुच बहुत ही अच्छी लगी।"

"मैं क्षण-भर दुविधा में रहा कि मुझे पुरुष के पीछे जाना चाहिए या स्त्री के। मगर मैंने तय किया कि अपनी हिदायतों की नज़र में रखते हुए मुझे स्त्री के पीछे ही जाना चाहिए। सो मैं उसी के पीछे चल दिया। वह उस समय बहुत उत्तेजित प्रतीत होती थी। थोड़ा रास्ता चेयरिंग क्रास रोड पर जाकर वह नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी की तरफ़ मुड़ गई। मगर वहाँ भी वह कुछ मिनट ही ठहरी।"

"वहाँ की और कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं?"

"जी नहीं, मेरा ख़याल है कि वह सिर्फ़ बैठने के लिए कोई जगह ढूँढ़ रही थी, क्योंकि उसके बाद वह एक गिरजे के अन्दर चली गई।"

"गिरजे के अन्दर?"

"जी हाँ, मेडन लेन में एक रोमन गिरजे के अन्दर। यह सब भी मैंने लिखा है। मगर वह वहाँ प्रार्थना करने नहीं गई थी, सिर्फ़ बैठने के लिए ही गई थी।"

"इसका तुम्हें कैसे पता है?"

"मैं भी उसके साथ ही अन्दर चला गया था। मैं उससे थोड़ा पीछे घुटनों के बल बैठ गया जिससे यह लगे कि मैं वास्तव में प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि वह वहाँ प्रार्थना नहीं कर रही थी। मेरा तो ख़याल है वह कैथलिक नहीं है।"

"हाँ, कैथलिक तो वह नहीं है।"

"वह सिर्फ़ मन शान्त होने तक अँधेरे में बैठना चाहती थी।"

"हो सकता है वह किसी से मिलने गई हो।"

"जी नहीं, वह वहाँ सिर्फ़ तीन मिनट रही और उसने किसी से भी बात नहीं की। मेरा तो ख़याल है वह उस समय खुलकर रोना चाह रही थी।"

"शायद यह ठीक हो। मगर हाथों के बारे में तुम्हारा अन्दाज़ा ठीक नहीं था।"

"हाथों के बारे में क्या?"

मैं थोड़ा हिला जिससे रोशनी ठीक से मेरे चेहरे पर पड़ने लगी। "हमने तो एक-दूसरे के हाथों को छुआ भी नहीं था।"

उसे बना चुकने के बाद अब मुझे उस पर तरस आने लगा। उस गरीब को, जो पहले ही इतना डरपोक था, मैंने ख़ामख़ाह और घबरा दिया था। उसका मुँह खुले-का-खुला रह गया था और वह इस तरह मेरी तरफ़ देख रहा था जैसे एक अप्रत्याशित चोट खाकर अब वह दूसरी का इन्तज़ार कर रहा हो। "इस तरह की ग़लती अकसर हो जाती है मिस्टर पारकिस," मैंने कहा। "मिस्टर सैवेज को हम लोगों का परिचय करा देना चाहिए था।"

"नहीं साहब, यह मेरा फर्ज़ था," वह परेशान-सा बोला। फिर उसका सिर झुक गया और वह घुटने पर रखे हुए अपने हैट को देखता बैठा रहा। मैंने उसे खुश करने के लिए कहा, "मगर यह कोई ऐसी गम्भीर बात नहीं है। अगर तुम इसे ज़रा अलग होकर देखो तो शायद यह एक दिलचस्प बात ही लगेगी।"

"मगर साहब मैं इसे अलग होकर कैसे देख सकता हूँ?" वह बोला। उसने एक बार अपने हैट को घुमाया और फिर बाहर के मौसम जैसी ही गीली और खुश्क आवाज़ में बोला, "मुझे मिस्टर सैवेज की चिन्ता नहीं है। वे इस धन्धे के सबसे समझदार आदमियों में से हैं। मुझे चिन्ता अपने लड़के की है। वह अपने दिल में जाने मुझे क्या समझता है!" और उसके दुख की गहराई से निकलकर एक खेद और आशंका-भरी मुस्कराहट उसके चेहरे पर फैल गई। "आपको पता ही है कि ये लड़के किस तरह की चीज़ें पढ़ते हैं। निक कार्टर्ज़ और ऐसी-वैसी पुस्तकें...।"

"मगर उसे इस बात का पता कैसे चलेगा?"

"एक बच्चे के साथ साहब बिलकुल साफ़ और सीधी बात ही करनी पड़ती है। वह मुझसे सवाल ज़रूर पूछेगा और जानना चाहेगा कि मैं निष्कर्ष पर कैसे पहुँचा, क्योंकि यही बात है जो वह आजकल सीख रहा है कि हम निष्कर्ष पर कैसे पहुँचते हैं।"

"क्या तुम उससे यह नहीं कह सकते कि मैं उस आदमी को पहचानता हूँ और मुझे उसमें दिलचस्पी नहीं है।"

"यह आपकी मेहरबानी है जो आप ऐसा कह रहे हैं। मगर हमें बात पर हर पहलू से विचार करना चाहिए। यह मैं नहीं कहता कि मैं अपने लड़के से इस तरह की बात बिलकुल नहीं कहूँगा। मगर सोचिए कि इस काम के सिलसिले में कभी उसका आपसे सामना हो गया, तो वह अपने मन में क्या सोचेगा?"

"मगर यह ज़रूरी तो नहीं है!"

"ज़रूरी न सही, मगर हो तो सकता है।"

"तो तुम उसे अब घर पर ही क्यों नहीं रहने देते?"

"उससे तो बात बिगड़ने का ही डर है। घर में उसकी माँ है नहीं, और स्कूल में उसकी छुट्टी के दिनों में ही मैं उसे इस काम की शिक्षा देता हूँ। इसके लिए मैंने मिस्टर सैवेज से इजाज़त भी ले रखी है। नहीं, मैं खुद बेवकूफ़ बना हूँ, और मुझे इस स्थिति का सामना करना ही होगा। लड़का हर चीज़ को इतनी गम्भीरता से न लेता तो और बात थी। मगर मैं कोई भी बेतुकी बात करूँ तो वह उसे दिल में लगा लेता है। मिस्टर सैवेज का एक सहायक है मिस्टर प्रेंटिस। काफ़ी सख़्त आदमी है। एक दिन उसने इसके सामने ही कह दिया, 'यह फिर तुम अपनी बेतुकी उड़ा रहे हो पारकिस!' उससे इसकी आँखें खुल गईं।" और जैसे मन-ही-मन कोई बहुत बड़ा निश्चय करके वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं अपनी समस्या की बात करके ख़ामख़ाह आपका वक़्त बर्बाद कर रहा हूँ।"

"नहीं, मुझे अच्छा लग रहा था," मैंने बिना व्यंग्य के कहा। "तुम चिन्ता मत करो। लड़का तुम्हारी तरह ही होशियार निकलेगा।"

"मगर साहब, उसका दिमाग़ तो उसकी माँ जैसा है," वह कुछ खेद के साथ बोला। "ख़ैर, मुझे अब जल्दी चलना चाहिए। मैं आते हुए उसे एक अच्छी ढकी हुई जगह पर छोड़ आया था। मगर फिर भी बाहर काफ़ी ठंड पड़ रही है, और उसे इस काम का इतना शौक है कि मेरा ख़याल नहीं कि वह इतनी देर सूखा बैठा रहा होगा। तो यह ख़र्च आपके ख़याल से ठीक हो तो इस पर हस्ताक्षर कर दीजिए।"

मैं खिड़की के पास खड़ा होकर उसे जाते हुए देखता रहा। उसने अपनी पतली बरसाती ऊपर को उठा ली थी और पुराना हैट नीचे को झुका लिया था। बर्फ़ तेज़ हो रही थी। तीसरे लैम्प तक जाते-जाते वह बर्फ़ के पुतले जैसा लगने लगा जिसके अन्दर कहीं-कहीं से कीचड़ नज़र आ रहा हो। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे दस मिनट मैं सैरा की और अपनी ईर्ष्या की बात बिलकुल भूला रहा था; मुझमें इतनी मनुष्यता जाग आई थी कि मैं किसी और के दुख के विषय में भी सोच सकूँ।

7

ईर्ष्या कामना के अन्दर से ही जन्म लेती है, कम-से-कम मैं यही मानता हूँ। पुरानी बाइबल के लेखक ईश्वर के लिए 'ईर्ष्यालु' शब्द का प्रयोग बहुत करते थे; शायद इससे वे एक मोटे लाक्षणिक ढंग से यही विश्वास व्यक्त करना चाहते थे कि ईश्वर

मनुष्य से प्रेम करता है। मगर कामना के कई रूप हैं। मेरी कामना ने उन दिनों प्रेम से अधिक घृणा का रूप ले लिया था। सैरा ने बताया था कि हेनरी को उससे शारीरिक सम्बन्ध की कामना अब नहीं के बराबर ही है, फिर भी उसके मन में भी उन दिनों मेरे जितनी ही ईर्ष्या थी। उसकी कामना थी कि सैरा उसके पास रहे। वह जीवन में पहली बार महसूस कर रहा था कि वह सैरा के दिल को नहीं जानता, और इसलिए वह चिन्तित और परेशान था। क्या हो रहा है, और क्या होने जा रहा है, यह उसे समझ में नहीं आ रहा था। उसे अपने चारों ओर बस अनिश्चितता ही नज़र आती थी और इस दृष्टि से उसकी स्थिति मुझसे भी ख़राब थी। मेरे लिए कोई अनिश्चितता नहीं थी, क्योंकि मेरे पास अब कुछ था ही नहीं। जितना था, वह मैंने खो दिया था। हेनरी के पास अब भी बहुत कुछ था—सैरा उसकी मेज़ पर खाना खाती थी, सीढ़ियों पर उसे उसके क़दमों की और उसके दरवाज़ा खोलने और बन्द करने की आवाज़ सुनाई देती थी, और वह आकर उसके गालों को चूमती थी। उनके बीच इससे अधिक कुछ नहीं रहा था, मगर एक भूखे आदमी के लिए इतना भी बहुत होता है। और इससे भी बड़ी बात यह थी कि कभी तो वह निश्चितता का अनुभव कर ही चुका था, जो मैंने कभी नहीं किया था। मेरे यहाँ से लौटकर कॉमन में से जाते हुए पारकिस को शायद यह ख़याल तक नहीं हो सकता था कि कभी मुझमें और सैरा में प्रेम-सम्बन्ध भी रहा है। और यहाँ आकर मेरा मन अनायास फिर उस बिन्दु की तरफ़ लौट पड़ता है जहाँ से मेरी पीड़ा का आरम्भ हुआ था।

मेडन लेन में घबराहट के साथ सैरा को चूमने के एक सप्ताह बाद मैंने उसे फ़ोन किया। उसने उस दिन डिनर पार्टी पर मुझसे कहा था कि हेनरी को सिनेमा अच्छा नहीं लगता, इसलिए वह बहुत कम सिनेमा देखने जाती है। उन दिनों वार्नर्स में मेरे एक उपन्यास का फ़िल्म चल रहा था। मैंने उसे अपने साथ चलने को कहा। कुछ तो मेरे मन में प्रदर्शन की भावना थी, कुछ यह शिष्टाचार का तकाज़ा था कि एक बार उसे चूमने के बाद अब बिलकुल चुप रह जाना ठीक नहीं और कुछ शायद यह भी था कि एक सरकारी कर्मचारी के जीवन का खाका उतारने में मेरी दिलचस्पी तब भी बनी हुई थी। "मेरा ख़याल है कि हेनरी से साथ चलने को कहना तो फिज़ूल ही होगा।"

"हाँ, फिज़ूल ही है।"

"उससे पिक्चर के बाद खाने पर मिलने को कहा जा सकता है।"

"वह बहुत-सा काम अपने साथ घर ला रहा है, क्योंकि अगले सप्ताह उदार दल का एक सदस्य सदन में विधवाओं के सम्बन्ध में कोई सवाल रख रहा है।" तो एक तरह से मैं कह सकता हूँ कि उदार दल के सदस्य ने ही—वह वेल्ज़ से था और उसका नाम शायद लुई था—उस रात हम दोनों के साथ सोने की व्यवस्था की।

फ़िल्म अच्छा नहीं था और मुझे यह देखकर कोफ्त हो रही थी कि जो स्थितियाँ मेरे लिए इतनी यथार्थ रही थीं, उन्हें किस तरह उन लोगों ने दकियानूसी फ़िल्मी कहानी में बदल दिया है। मैं सोच रहा था कि सैरा को लेकर मैं कहीं और ही चला जाता तो कितना अच्छा था। एकाध बार तो मैंने उससे कहा कि मैंने वह बात वैसे नहीं लिखी थी, मगर यही बात बार-बार मैं कैसे कहता? उसने सहानुभूति के साथ मेरे हाथ को छुआ, और तब से हम बहुत भोलेपन से हाथ-में-हाथ उलझाए बैठे रहे जैसे कि बच्चे और प्रेमी लोग प्रायः किया करते हैं। तभी अप्रत्याशित रूप से कुछ देर के लिए फ़िल्म में जान आ गई। मैं भूल गया कि वह कहानी और संवाद मेरे लिखे हुए हैं और मेरा मन सस्ते रेस्तराँ के उस दृश्य में खो गया। लड़के ने प्याज़ और गोश्त की कतलियों का आर्डर दिया था। लड़की ने पल-भर प्याज़ खाने से संकोच किया, क्योंकि उसके पति को प्याज़ की गन्ध अच्छी नहीं लगती थी। लड़के के दिल को इससे चोट लगी, क्योंकि वह लड़की के संकोच का कारण जानता था। यह सोचकर कि घर लौटने पर उसे अपने पति के आलिंगन में बँधना है, उसे और गुस्सा हो आया। वह दृश्य बहुत अच्छा उतरा था। मैंने चाहा था कि साधारण स्थिति के ज़रिए, बिना आलंकारिक भाषा या लम्बी-चौड़ी घटनाओं का आश्रय लिए, हृदय के आवेश को प्रकट किया जा सके; और मुझे लग रहा था कि मैं उसमें सफल हुआ हूँ। कुछ क्षण के लिए मेरा मन प्रसन्न हो उठा। क्या ख़ूब लिखा था! दुनिया की और किसी चीज़ से मुझे मतलब ही क्या था? मेरा मन होने लगा कि तुरन्त घर जाकर उस दृश्य को फिर से पढ़ूँ और किसी नई चीज़ पर कुछ काम करूँ। और मुझे लगने लगा कि मैं सैरा माइल्स को डिनर खिलाने के लिए साथ न लाया होता तो कितना अच्छा था!

कुछ देर बाद 'रूल्ज़' मे आकर गोश्त की कतलियाँ सामने रखकर बैठे हुए सैरा ने कहा, "तो एक दृश्य तो ऐसा था जो उन्होंने ठीक उतारा था।"

"हाँ, एक दृश्य ऐसा था...।"

"वही प्याज़ वाला?"

"हाँ, वही।" और उसी समय प्याज़ की तश्तरी हमारी मेज़ पर आ गई। मैंने अनायास ही (उससे प्रेम करने की बात तब तक भी मेरे दिमाग़ में नहीं आई थी) उससे पूछ लिया, "हेनरी को तो प्याज़ से चिढ़ नहीं है?"

"बहुत चिढ़ है। तुम्हें प्याज़ अच्छा लगता है?"

"बहुत!" उसने पहले कुछ प्याज़ मेरी प्लेट में डाले, फिर अपनी प्लेट में डाल लिए।

प्याज़ की तश्तरी भी कभी प्रेम का कारण बन सकती है? यह बात असम्भव-सी लगती है, फिर भी मैं निश्चय के साथ कह सकता हूँ कि मैं उसी समय से सैरा से

प्रेम करने लगा था। कारण प्याज़ नहीं थे, कारण था उसका वह स्वतन्त्र भाव, उसकी वह निश्छलता जिससे आगे चलकर कई बार मुझे सुख मिला और कई बार मुझे दुखी होना पड़ा। मैंने अपना हाथ मेज़पोश के नीचे से उसके घुटने पर रख दिया और उसने अपना हाथ ऊपर रखकर मेरे हाथ को वहीं स्थिर कर दिया। ''कतलियाँ बहुत अच्छी हैं,'' मैंने कहा और उसका उत्तर मुझे ऐसा लगा जैसे वह कविता की एक पंक्ति हो। ''मैंने इतनी अच्छी कतलियाँ पहले नहीं खाईं।''

और मुझे अनुरोध करके उसे राज़ी करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। कतलियों की आधी प्लेट और क्लेअरेट की एक-तिहाई बोतल बीच में ही छोड़कर हम वहाँ से उठ खड़े हुए और बाहर मेडन लेन में आ गए। दोनों के मन में इरादा एक ही था। पहले की तरह उसी जगह पर, दरवाज़े के और जंगले के पास, हमने एक-दूसरे को चूम लिया। मैंने उससे कहा, ''मुझे तुमसे प्रेम हो गया है।''

''मुझे भी।''

''हम घर पर तो नहीं चल सकते?''

''नहीं।''

हमने चेयरिंग क्रास से टैक्सी पकड़ी और मैंने ड्राइवर से आर्बकल एवेन्यू चलने को कहा। लैसटर टैरेस को ड्राइवर लोगों ने आपस में यही नाम दे रखा था। लैसटर टैरेस पैडिंग्टन स्टेशन के एक तरफ़ होटलों की एक पंक्ति थी। होटलों के नाम बहुत ऊँचे-ऊँचे थे–रिट्ज कार्ल्टन और जाने क्या-क्या! इन होटलों के दरवाज़े हर समय खुले रहते थे और कोई जब भी चाहे घंटे-दो घंटे के लिए कमरा ले सकता था। अभी एक सप्ताह हुआ, मैं फिर उस जगह पर आ गया था। उसका आधा हिस्सा, जहाँ कि उन दिनों होटल थे, अब बमबारी से तबाह हो चुका है, और जहाँ हम दोनों ने प्रेम किया था, वह जगह अब हवा में ही कहीं है। तब उस जगह का नाम ब्रिस्टल था। वहाँ हॉल में फर्न का गमला रखा था। नीले बालोंवाली होटल की मैनेजर हमें अपने सबसे अच्छे कमरे में ले गई थी जो सही अर्थ में एडवर्डकालीन ढंग से सजा था। उसमें एक बड़ा मढ़ा हुआ पलंग रखा था। लाल मखमल के पर्दे लगे थे और एक बड़ा आदमकद शीशा था। (जो लोग आर्बकल एवेन्यू में आते थे, उन्हें दो अलग-अलग पलंगों की ज़रूरत ही नहीं होती थी) मुझे उस दिन की कई छोटी-छोटी चीज़ें याद हैं। मैनेजर ने पूछा था कि क्या हम वहाँ रात-भर रहेंगे, और बताया था कि थोड़ी देर ठहरने के वहाँ पर पन्द्रह शिलिंग लगेंगे। बिजली का मीटर शिलिंग के सिक्के से चलता था और हम दोनों के पास एक भी शिलिंग का सिक्का नहीं था। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ याद नहीं–यह भी याद नहीं कि सैरा मुझे पहली बार कैसी लगी थी और हमने वहाँ पर क्या-क्या किया था। हाँ, इतना मुझे याद है कि हम दोनों ही बहुत घबराए हुए थे और अच्छी तरह प्रेम नहीं कर सके थे। मगर उसका क्या

महत्त्व था! हम आरम्भ कर चुके थे, असली बात इतनी ही थी; और बातों के लिए पूरी ज़िन्दगी पड़ी थी। मगर एक और भी चीज़ मुझे अच्छी तरह याद है। अपने कमरे से (जोकि आध घंटे में ही 'अपना' हो गया था) बाहर आकर जब मैंने दरवाज़े के पास फिर उसे चूम लिया, और कहा कि मुझे उसके लौटकर हेनरी के पास जाने की बात अच्छी नहीं लग रही तो उसने कहा था, ''उसकी तुम चिन्ता न करो। हेनरी आज विधवाओं के काग़ज़ों में ही व्यस्त होगा।''

''मगर घर जाने पर वह तुम्हें चूमेगा, मुझे यह बात भी अच्छी नहीं लग रही।''

''यह बात भी नहीं होगी। उसे प्याज़ से ज़्यादा किसी चीज़ से चिढ़ नहीं है।''

मैं उसे कॉमन के उस तरफ़ उसके घर तक छोड़ने चला गया। हेनरी के पढ़ने के कमरे की रोशनी दरवाज़े के नीचे से नज़र आ रही थी। हम ऊपर चले गए। सोने के कमरे में हम एक-दूसरे के शरीर पर हाथ रखे खड़े रहे क्योंकि अलग होने को जी नहीं चाहता था। ''हेनरी अब ऊपर आनेवाला ही होगा,'' मैंने कहा।

''हमें पता चल जाएगा,'' उसकी इस स्पष्टवादिता से मुझे कुछ चोट लगी। ''एक सीढ़ी ऐसी है जो हमेशा आवाज़ करती है।''

मगर मुझे कोट उतारने का भी समय नहीं मिला। हमारे होंठ आपस में मिले ही थे कि सीढ़ी आवाज़ कर उठी। हेनरी के आते ही सैरा के चेहरे पर अपना सहज भाव लौट आया जो मुझे अच्छा नहीं लगा। ''हम लोग सोच ही रहे थे,'' वह उससे बोली, ''कि तुम अभी ऊपर आओगे और हमसे कुछ पीने को कहोगे।''

''ज़रूर, ज़रूर,'' हेनरी बोला, ''बताओ बैंड्रिक्स, क्या पीना चाहोगे?'' मैंने कहा कि मैं कुछ भी नहीं पीना चाहूँगा, क्योंकि मुझे जाकर काम करना है।

''मेरा ख़याल है कि तुमने कहा था तुम रात को काम नहीं करते।''

''यह कोई वैसा काम नहीं है। सिर्फ़ एक समीक्षा लिखनी है।''

''कैसी पुस्तक थी? रोचक थी?''

''ऐसी ख़ास रोचक नहीं थी।''

''काश कि तुम्हारे जैसी लिखने की शक्ति मेरे पास भी होती।''

सैरा मुझे नीचे तक छोड़ने आई और हमने वहाँ फिर एक-दूसरे को चूम लिया। उस समय मुझे सैरा की बजाय हेनरी ज़्यादा अच्छा लग रहा था। मुझसे पहले सैरा के जीवन में जितने पुरुष रहे थे और मेरे बाद जितने पुरुष आनेवाले थे, उन सबकी छाया जैसे उस समय मेरे ऊपर आ पड़ी थी।

''क्या बात है?'' उसने पूछा। चुम्बन के पीछे छिपे हुए भाव को वह तुरन्त ताड़ जाती थी...आख़िर चुम्बन मस्तिष्क तक पहुँचनेवाली एक फुसफुसाहट ही तो होती है।

''कुछ नहीं,'' मैंने कहा। ''मैं सुबह तुम्हें फ़ोन करूँगा।''

''अच्छा होगा कि मैं ही तुम्हें फ़ोन करूँ,'' उसने कहा। सावधान—मैंने अपने मन से कहा। वह इस तरह के कामों में कितनी चतुर प्रतीत होती है! अभी-अभी तो उसने कहा था कि एक सीढ़ी ऐसी है जो हमेशा आवाज़ करती है। हाँ, 'हमेशा'—यही शब्द तो था जो उसने इस्तेमाल किया था।

1

सुख की अपेक्षा दुख की अनुभूति को व्यक्त करना कहीं आसान है। दुख में हम अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हो जाते हैं, चाहे यह इस क्रूर अहंभाव के रूप में ही हो कि यह पीड़ा मेरी अपनी है, यह स्नायु जो फड़कता है मेरा ही है, किसी और का नहीं। परन्तु सुख इस अहंभाव को मिटा देता है और हम अपना अस्तित्व उसमें खो देते हैं। सन्तों ने ईश्वर के साक्षात्कार का वर्णन करने के लिए मानवीय प्रेम की शब्दावली का प्रयोग किया है, और मैं समझता हूँ कि उसी तरह हम भी एक नारी के लिए अपने प्रेम-भाव की तीव्रता को प्रकट करने के लिए उपासना, मनन और चिन्तन आदि शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं। हम भी उसी तरह अपने प्रेम में स्मृति, बुद्धि और विवेक खो बैठते हैं, उसी तरह विरह का अनुभव करते हैं, और कभी-कभी वैसी ही शान्ति प्राप्त करते हैं। रति-व्यापार को तो लघु-मृत्यु की संज्ञा दी ही जाती है, पर प्रेम करनेवाले कई बार इसी तरह लघु-शान्ति का भी अनुभव करते हैं। वैसे यह सब लिखते हुए मुझे बहुत विचित्र लग रहा है। इससे तो लगता है जैसे वास्तव में मुझे सैरा से घृणा न होकर प्रेम हो। कभी-कभी मुझे स्वयं अपने विचारों का पता नहीं चलता। 'अन्धकारमयी रात्रि' और प्रार्थना जैसी चीज़ों का भला मुझे पता ही क्या है, क्योंकि मेरा मन तो केवल एक ही प्रार्थना जानता है। मुझे ये शब्द उसी तरह विरासत में मिले हैं जैसे कि पत्नी की मृत्यु हो जाने पर पति के पास उसके वस्त्र, सुगन्धियाँ और क्रीम की शीशियाँ पड़ी रह जाती हैं जिनका उसके लिए कोई भी उपयोग नहीं होता। फिर भी मन में शान्ति की अनुभूति तो थी ही।

उन आरम्भिक महीनों के सम्बन्ध में मैं सोचता हूँ...क्या वह युद्ध और शान्ति का मिला-जुला आभास नहीं था? पर जो कुछ भी था, संशय और प्रतीक्षा के दिनों पर उसने सुख और दिलासे की बाँहें फैला रखी थीं; हालाँकि मुझे यह भी लगता है कि उस शान्ति में जगह-जगह भ्रान्ति और सन्देह के पैबन्द लगे थे। तो उस रात घर लौटते हुए मेरा मन आनन्द से उछल नहीं रहा था, खेद और उदासी की अनुभूति में ही खोया था। उसके बाद रोज़-रोज़ मैं उसके पास से यही सोचता हुआ लौटता कि मैं उसके प्रेमपात्रों में से केवल एक हूँ, केवल उन दिनों का ही चहेता हूँ। उसके प्रेम ने मेरे मन को इस तरह छा लिया था कि मैं रात को सोते में जाग जाता, तो भी

मस्तिष्क में उसी का विचार होता और मेरी नींद उड़ जाती। यूँ लगता यही था कि वह भी अपना पूरा समय मुझी को दे रही है, फिर भी मुझे भरोसा नहीं होता था। शारीरिक सम्बन्ध के समय मैं अपने पर गर्व कर लेता था, मगर अकेले में मैं आईना देखता तो मुझे अपने चेहरे पर सन्देह की रेखाएँ ही दिखाई देतीं। मैं सोचता कि मेरे चेहरे पर लकीरें पड़ी हैं, एक टाँग से मैं लँगड़ा हूँ, फिर वह केवल मुझी से कैसे प्रेम कर सकती है? कई अवसर ऐसे आते थे जब हम लोग आपस में नहीं मिल पाते थे—कभी उसे दाँत दिखाने या बाल बनवाने जाना होता था, कभी हेनरी कोई पार्टी दे रहा होता था, और कभी वह अकेले में हेनरी के पास होती थी। इस विचार से मेरा मन नहीं बहलता था कि अपने घर में रहते हुए वह मुझसे विश्वासघात नहीं कर सकती (मैं इस शब्द का प्रयोग एक प्रेमी के दम्भ के साथ करता था, क्योंकि इसमें मेरे प्रति उसके कर्तव्य का संकेत रहता था), क्योंकि हेनरी तो घर में भी विधवाओं की पेंशनों, और बाद में जब वह उस काम से हट गया, तो गैस-मास्कों के वितरण और गत्ते के डब्बों के स्वीकृत डिज़ाइन तैयार कराने जैसी बातों में ही उलझा रहता था। और यह मैं क्या नहीं जानता था कि इच्छा हो तो इनसान ख़तरनाक-से-ख़तरनाक परिस्थितियों में भी प्रेम कर सकता है? ज्यों-ज्यों प्रेम में सफलता मिलती है, व्यक्ति का अविश्वास बढ़ता जाता है। हम लोग जब दूसरी बार ही मिले तो सब कुछ उस अनहोने ढंग से हुआ था जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

सुबह मैं सोकर उठा तो सैरा की सतर्कता के कारण पैदा हुई उदासी मेरे मन में अभी बाक़ी थी। मगर तीन मिनट फ़ोन का इन्तज़ार करने के बाद सहसा उदासी दूर हो गई। मैंने सैरा से मिलने से पहले या बाद किसी और ऐसी स्त्री को नहीं जाना जिसकी आवाज़ फ़ोन पर सुनते ही मन इतना प्रभावित हो उठे, और वह आकर कन्धे पर हाथ रख दे तो मन में वह पूरा विश्वास सहसा लौट आए जोकि उससे अलग होते ही हर बार खो जाता था।

''हलो,'' उसने कहा, ''सो रहे हो क्या?''

''नहीं। मगर तुम यह बताओ कि हम लोग मिल कब रहे हैं! अभी सुबह ही?''

''देखो, हेनरी को सर्दी लग गई है। उसे आज घर पर ही रहना है।''

''तो तुम यहाँ पर नहीं आ सकतीं...?''

''मुझे फ़ोन का जवाब देने के लिए घर पर ही रहना पड़ेगा।''

''सिर्फ़ इसलिए कि हेनरी को सर्दी लग गई है?''

रात को मेरे मन में हेनरी के लिए मित्रता और सहानुभूति का भाव जागा था, मगर अब वह मुझे अपना दुश्मन लग रहा था और मैं उसका मज़ाक उड़ाकर और उस पर ग़ुस्सा दिखाकर मन-ही-मन उसे नीचा दिखाना चाहता था।

''उसके गले से तो आवाज़ ही नहीं निकलती।''

मेरा मन एक ईर्ष्या-मिली खुशी से भर गया—कि बीमारी ने उसे किस भद्दी स्थिति में डाल दिया है...एक सरकारी कर्मचारी बिना आवाज़ के घरघराता हुआ विधवाओं की पेंशनों के बारे में भाषण देता है जो किसी को सुनाई नहीं देता। "तुमसे किसी भी तरह मुलाक़ात नहीं हो सकती?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं हो सकती?"

क्षण-भर उस तरफ़ ख़ामोशी रही और मुझे लगा कि लाइन कट गई है। मैंने कहा, "हलो, हलो!" मगर बात सिर्फ़ इतनी थी कि वह सब चीज़ों को नज़र में रखकर जल्दी-जल्दी सोच रही थी, जिससे मुझे सीधा और निश्चित उत्तर दे सके। "मैं एक बजे हेनरी को बिस्तर में खाना दूँगी। हम लोग नीचे के कमरे में सैंडविच खा सकते हैं। मैं हेनरी से कह दूँगी कि तुम उस फ़िल्म के बारे में या अपनी कहानी के बारे में कुछ बात करना चाहते हो।" और ज्यों ही उसने चोंगा रखा, मेरे विश्वास की लाइन भी साथ ही कट गई। मैंने सोचा कि पहले भी जाने कितनी बार उसने इसी तरह की व्यवस्था की होगी। जब उसके घर पहुँचकर मैंने घंटी बजाई तो मुझे लग रहा था जैसे मैं उसका कोई दुश्मन हूँ, या कोई जासूस हूँ जिसे उसके एक-एक शब्द का ध्यान रखना है—ठीक उसी तरह जैसे अब कुछ साल बाद पारकिस और उसका लड़का उसकी हर गतिविधि का ध्यान रख रहे थे। मगर ज्योंही उसने दरवाज़ा खोला, मेरा विश्वास फिर लौट आया।

कौन किसे चाहता है, इसका उस समय कोई सवाल नहीं था, क्योंकि हम दोनों की कामना एक-सी ही थी। हेनरी हरा ऊनी ड्रेसिंग गाउन पहने दो तकियों के सहारे बैठा ट्रे में अपना खाना खाता रहा और नीचे के कमरे में दरवाज़ा खुला रखे और सिर्फ़ एक गद्दे का सहारा लिए हम लकड़ी के फ़र्श पर आपस में प्रेम करते रहे। जब चरमोत्कर्ष का क्षण आया तो मैंने उसके मुँह पर हाथ रख दिया जिससे उसके गले से निकली हुई भावातिरेक की वह विचित्र, उदास और गुस्सीली कराह ऊपर हेनरी को न सुनाई दे जाए।

तो यह वही स्त्री थी जिससे मैंने उसके पति का दिमाग़ समझने के लिए ही परिचय किया था! उसके पास ही फ़र्श पर पड़ा मैं देखता रहा, देखता रहा, जैसे जीवन में फिर कभी उसे देखना न हो। उसके अनिश्चित-से रंग के भूरे बाल लुढ़की हुई शराब की तरह फ़र्श पर फैले थे, माथे पर पसीना आ रहा था, और वह इस तरह लम्बी-लम्बी साँसें ले रही थी जैसे कोई युवा खिलाड़ी एक दौड़ जीतने के बाद थककर पड़ गया हो।

और तभी सीढ़ी आवाज़ कर उठी। क्षण-भर के लिए हम दोनों स्तब्ध हो रहे। सैंडविच अभी ज्यों-के-त्यों मेज़ पर पड़े थे और गिलास भी ख़ाली-के-ख़ाली रखे थे। उसने फुसफुसाकर कहा, "वह नीचे गया है," और उठकर कुर्सी पर बैठ गई।

मैंने प्लेट उसकी गोद में रख दी और एक गिलास भी भरकर उसके पास रख दिया।

"फर्ज़ करो गुज़रते हुए वह आवाज़ उसके कानों में पड़ जाती?"

"उसे पता ही नहीं चलता कि वह कैसी आवाज़ थी।"

मैं आश्वस्त नहीं हुआ तो उसने कुछ उदास और कोमल स्वर में कहा, "पूरे दस साल में कभी भी तो ऐसा अवसर नहीं आया।" मगर उसके बाद हम पूरी तरह सुरक्षित महसूस नहीं कर सके और जब तक सीढ़ी पर फिर आवाज़ नहीं हुई, चुपचाप बैठे रहे।

मुझे खुद ही अपनी आवाज़ टूटी हुई और झूठी-सी लगी जब मैंने कहना आरम्भ किया, "मुझे इस बात की खुशी है कि प्याज़वाला दृश्य तुम्हें अच्छा लगा।" और तभी हेनरी दरवाज़े से अन्दर झाँका। वह सलेटी फ्लैनल में चिपटी हुई गरम पानी की बोतल हाथ में लिये था। "हलो बैंड्रिक्स!" उसने फुसफुसाती हुई आवाज़ में कहा।

"तुम्हें बोतल लाने खुद नहीं जाना चाहिए था," सैरा बोली।

"मैं यूँ ही विघ्न नहीं डालना चाहता था।"

"हम लोग कल के फ़िल्म की बात कर रहे थे।"

"तुम्हें जो चाहिए था, वह मिल गया?" हेनरी ने मुझसे पूछा। फिर सैरा ने मेरे गिलास में जो क्लेअरेट डाली थी, उस पर नज़र डालकर जैसे साँस में ही बोला, "बैंड्रिक्स को तेईस नम्बर क्यों नहीं निकालकर दी?" और गरम पानी की बोतल को सँभाले हुए वह ऊपर चला गया। हम दोनों फिर अकेले रह गए।

"तुम्हें बुरा तो नहीं लगा?" मैंने सैरा से पूछा। उसने सिर हिला दिया। जाने क्यों मैंने यह सवाल पूछा था। शायद मैंने सोचा था कि हो सकता है हेनरी को देखकर उसके मन में पश्चाताप जाग आया हो। मगर वह पश्चाताप से मन को बचाए रखना ख़ूब जानती थी साधारण लोगों की तरह अपराध की अनुभूति उसे नहीं घेरती थी। उसका विचार था कि जब जो हो जाता है, हो जाता है और कार्य के साथ ही पश्चाताप का भी अन्त हो जाना चाहिए। अगर हेनरी हमें देख लेता तो भी वह यही सोचती कि उसे बस क्षण-भर के लिए ही गुस्सा करना चाहिए, उससे अधिक गुस्सा करना उसकी ज़्यादती है। अपने पापों को स्वीकार कर लेने से व्यक्ति उनसे मुक्त हो जाता है इस दृष्टि से सैरा सच्ची कैथलिक थी, हालाँकि ईश्वर में उसे उतना ही विश्वास था जितना मुझे; उन दिनों कम-से-कम मैं यही समझता था, और अब सोचता हूँ तो मुझे आश्चर्य होता है।

मैं यह कहानी जो सीधे ढंग से नहीं लिख पा रहा, उसका कारण यह है कि मैं एक ऐसे अज्ञात प्रदेश में भटक रहा हूँ जिसका कोई रेखाचित्र मेरे पास नहीं है। मैं

यह भी नहीं कह सकता कि मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, वह सब सच ही है। उस दोपहर को मेरे बिना पूछे ही अचानक जब सैरा ने मुझसे कहा, 'मैंने कभी किसी भी व्यक्ति से इस तरह प्रेम नहीं किया जैसे तुमसे करती हूँ,' तो सहज ही मुझे उस पर पूरा विश्वास हो गया था। मुझे लगा था कि आधा सैंडविच हाथ में लिये कुर्सी पर बैठी हुई भी वह उसी तरह मेरे सामने आत्मसमर्पण कर रही है जैसे पाँच मिनट पहले लकड़ी के सख़्त फ़र्श पर कर रही थी। हम लोग इस तरह खुलकर बात कहते संकोच कर जाते हैं, कुछ स्मृतियाँ, कुछ आशंकाएँ और कुछ सन्देह उसमें बाधा डाल देते हैं। मगर उसके मन में जैसे कहीं सन्देह था ही नहीं। उसके लिए तो बस क्षण का ही महत्त्व था। कहते हैं कि काल समय के विस्तार का नाम नहीं, समय के अभाव का ही नाम है। मुझे कभी-कभी लगता था कि सैरा का आत्मसमर्पण गणित के उस विचित्र अनन्त बिन्दु को छू लेता है जिसका कोई फैलाव नहीं, कोई घेरा नहीं है। समय का महत्त्व ही क्या था—उस सारे अतीत का और उन सब पुरुषों का जोकि समय-समय पर (फिर वही शब्द!) उसके जीवन में आए थे, और उस सारे भविष्य का जिसमें कि उसी सचाई के साथ वह फिर-फिर वही बात जाने किस-किससे कह सकती थी! जब मैंने उससे कहा कि मैं भी उससे उतना ही प्रेम करता हूँ तो वास्तव में मैं झूठ बोल रहा था, क्योंकि मैं तो कभी भी समय की चेतना से मुक्त नहीं होता। मेरे लिए वर्तमान कभी होता ही नहीं, पिछला साल और अगला सप्ताह बस यही कुछ होता है।

और वह तब भी झूठ नहीं बोल रही थी जब उसने कहा, 'और न ही अब कभी किसी से कर सकूँगी।' समय में कुछ अन्तर्विरोध होते हैं, इतनी बात सच है। परन्तु गणित के उस बिन्दु पर उनका भी कोई अस्तित्व नहीं। सैरा में प्रेम करने की शक्ति मुझसे कहीं अधिक थी। मैं एक क्षण को उसकी तरह यवनिकाओं के घेरे में ही नहीं ला सकता था, अपने को विस्मृति में नहीं खो सकता था, निःशंक नहीं हो सकता था। मैं तो जैसे प्रेम के क्षणों में भी एक पुलिस अफ़सर बना रहता था जिसे बस अपराध के प्रमाण ही इकट्ठे करने होते थे। और सात साल बाद पारकिस की चिट्ठी खोलकर पढ़ने के समय भी वे प्रमाण ज्यों-के-त्यों मेरी कटुता बढ़ाने के लिए मेरी स्मृति में सुरक्षित थे।

2

''श्रीमन्'' चिट्ठी में लिखा था, ''मुझे यह सूचना देते हुए हर्ष है कि मैंने और मेरे लड़के ने 17 नम्बर के घर की नौकरानी से मित्रता पैदा कर ली है। खोज का काम उससे अब ठीक आगे बढ़ रहा है, क्योंकि कभी-कभी मैं उस स्त्री की दिनचर्या की

कापी पर नज़र डाल लेता हूँ, जिससे यह पता चल जाता है कि वह कहाँ-कहाँ जाती-आती है। कभी-कभी रद्दी कागज़ों की टोकरी भी टटोल लेता हूँ जिसमें से निकली हुई एक रोचक चीज़ साथ में भेज रहा हूँ। इसे देखकर कृपया अपनी टिप्पणी के साथ वापस भेज दीजिए। वह स्त्री पिछले कुछ सालों से अपनी एक डायरी भी रखती है, मगर नौकरानी को (सुरक्षा की दृष्टि से आगे से मैं उसका उल्लेख मित्र के रूप में ही करूँगा) अभी वह नहीं मिल सकी, क्योंकि वह स्त्री अपनी डायरी ताले में बन्द रखती है। यह वैसे एक संदिग्ध स्थिति हो सकती है, और नहीं भी हो सकती जो महत्त्वपूर्ण चीज़ साथ भेजी जा रही है, उसके अलावा यह बात भी लक्षित करने की है कि उस स्त्री की दिनचर्या की कापी सिर्फ़ एक दिखावा है, क्योंकि दिन में अधिकांश समय उसका आना-जाना उस कापी के अनुसार नहीं होता। यह न चाहते हुए भी कि मैं अपनी ओर से कोई ऐसी टिप्पणी करूँ जिससे कि मन में कोई ग़लत धारणा या पूर्वग्रह पैदा हो, मुझे यह लिखना पड़ रहा है, क्योंकि इस तरह की जाँच में सभी पक्षों की दृष्टि से सचाई की खोज करना आवश्यक होता है।''

केवल दुखान्त स्थितियाँ ही मन को नहीं कीलतीं, हास्यास्पद स्थितियाँ भी एक पैने, ओछे और बेहूदा अस्त्र की तरह कई बार मन को चीर जाती हैं। मेरा मन होता था कि पारकिस की उन चक्करदार और बेमतलब रिपोर्टों को उसके लड़के के सामने उसके मुँह में ठूँस दूँ। मैंने उससे सैरा का पीछा करने को क्यों कहा था, हेनरी को चोट पहुँचाने के लिए या अपने को ही? मगर उससे जैसे मैंने एक विदूषक को अपने से घनिष्ठ होने का मौका दे दिया था। 'घनिष्ठ' शब्द से भी वैसे मुझे पारकिस की रिपोर्टों की ही गन्ध आती है। एक बार उसी ने तो लिखा था, ''हालाँकि इसका कोई प्रमाण नहीं कि 16 सेडर रोड के व्यक्ति के साथ उसका घनिष्ठ सम्पर्क हुआ, फिर भी इतना स्पष्ट है कि वह नेक इरादे से वहाँ नहीं गई थी।'' मगर यह तो ख़ैर बाद की बात है। इस बार की रिपोर्ट से मुझे इतना ही पता चला कि उसने अपनी कापी में दंदानसाज़ और दर्जी के यहाँ जाने की बात लिख रखी थी, मगर वह दोनों जगह नहीं पहुँची। जाने उसके वहाँ जाने की बात थी भी या नहीं, कम-से-कम इससे उसका पीछा नहीं हो सका। पारकिस की वह भद्दी रिपोर्ट सस्ते कागज़ पर बैंजनी स्याही से वेवरली की पतली निब से लिखी हुई थी। उसे पलटते ही मेरी नज़र सैरा के स्पष्ट अक्षरों पर पड़ी। मैंने नहीं सोचा था कि दो साल बाद भी मैं उन अक्षरों को इतनी आसानी से पहचान लूँगा।

वह कागज़ का एक टुकड़ा ही था जो रिपोर्ट के साथ नत्थी किया गया था। लाल पेंसिल से उस पर 'ए' का निशान बना था। 'ए' के नीचे पारकिस ने लिखा था, ''आगे की कार्यवाही को दृष्टि में रखते हुए यह उचित होगा कि सब 'लिखित प्रमाण' फ़ाइल में रखने के लिए लौटा दिए जाएँ।'' उस पुरज़े का उद्धार रद्दी की

टोकरी से किया गया था और इस तरह उसके बल निकाले गए थे जैसे वह किसी प्रेमिका की ही चिट्ठी हो : ''मैं जानती हूँ कि मुझे तुम्हें कुछ भी लिखने की या कहने की आवश्यकता नहीं। तुम मेरे कहने से पहले ही सब कुछ जानते हो। परन्तु जब हम प्रेम करते हैं तो जैसा हमें अभ्यास हो उसी ढंग से बात कहना चाहते हैं। मैं जानती हूँ कि यह मेरे प्रेम का आरम्भ ही है, फिर भी मन होता है कि एक तुम्हें पाकर और हर चीज़ और हर व्यक्ति को, यहाँ तक कि अपने को भी खो दूँ। परन्तु कुछ डर के कारण और कुछ अभ्यास के कारण ऐसा कर नहीं पाती। परन्तु मेरे...''

इससे आगे कुछ नहीं था। वे अक्षर जैसे आँखें फाड़-फाड़कर मेरी तरफ़ देख रहे थे। सैरा ने मुझे जितने पत्र लिखे थे उनमें से किसी की ऐसी एक भी पंक्ति मुझे याद नहीं थी। अगर किसी एक भी पत्र में उसने उतने खुले ढंग से मेरे लिए अपना प्रेम प्रकट किया होता तो मैंने उसे कितना सँभालकर रखा होता! उन दिनों तो वह बहुत सावधानी से पत्र लिखा करती थी और कहा करती थी कि मुझे संकेत से ही बात समझ जानी चाहिए। मगर इस प्रेम ने तो संकेत के पिंजरे को बिलकुल तोड़ दिया था, और गुमसुम होकर उसमें बन्द नहीं रह सकता था। उसके पत्रों का केवल एक शब्द मुझे याद था—प्याज़। यह शब्द सतर्क ढंग से हमारी वासना को अभिव्यक्त करता था। एक तरफ़ 'मन होता है कि तुम्हें पाकर हर चीज़ और हर व्यक्ति को, यहाँ तक कि अपने को भी खो दूँ', और दूसरी तरफ़ 'प्याज़'! मेरे मन में घृणा जाग उठी। मेरे दिनों में 'प्याज़' से ही सारी बात हो जाती थी!

''कोई टिप्पणी नहीं,'' मैंने उस पुर्जे के नीचे लिखा और उसे एक लिफाफे में बन्द करके पारकिस के पते पर भेज दिया। परन्तु रात को जब मेरी आँख खुली तो वह पूरी चीज़ ज्यों-की-त्यों मेरे दिमाग़ में चक्कर काट रही थी। उसने अपने को खो देने की बात लिखी थी; उससे मेरे मन में तरह-तरह के शारीरिक चित्र उभर रहे थे। मैं उसी तरह जागता पड़ा रहा। एक-के-बाद-एक पुरानी यादें मेरे मन में चुभती रहीं और मेरी घृणा और कामना को जगाती रहीं...वह दिन जब उसके बाल लकड़ी के फ़र्श पर फैले थे और सीढ़ी पर आवाज़ हो उठी थी; और वह दिन जब एक बार हम लोग देहात की तरफ़ निकल गए थे और सड़क की सतह से नीचे एक गड्ढे में पड़े थे। वहाँ की सख़्त ज़मीन पर बिखरी उसकी लटों के बीच मुझे कोहरा चमकता दिखाई दे रहा था। ठीक पराकाष्ठा के क्षण एक ट्रैक्टर उधर आ निकला, मगर उस व्यक्ति ने एक बार भी आँखें फेरकर नहीं देखा था।...ओह! घृणा कामना का अन्त क्यों नहीं कर देती? मैं चाहता था कि किसी तरह मुझे नींद आ जाए। सैरा की जगह किसी और को ले आने की बात सोचना भी बहुत बचकाना लगता था, मगर एक बार मैंने उसका प्रयत्न करके भी देख लिया, हालाँकि फल कुछ नहीं हुआ।

मेरे स्वभाव में ईर्ष्या बहुत है। यहाँ यह लिखना फ़िज़ूल ही है, क्योंकि यह कहानी मेरी ईर्ष्या के लम्बे इतिहास के सिवा कुछ है ही नहीं। मुझे हेनरी से ईर्ष्या थी, सैरा से ईर्ष्या थी और उस अज्ञात व्यक्ति से ईर्ष्या थी जिसका पीछा पारकिस अपने ऊल-जलूल ढंग से कर रहा था। अब जब यह घटना अतीत में चली गई है, मुझे हेनरी से ईर्ष्या तभी होती है जब वे स्मृतियाँ बहुत स्पष्ट हो उठती हैं (क्योंकि यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि सैरा और मैं विवाहित होते तो बहुत सुखी जीवन व्यतीत करते—उसकी भावना और मेरी कामना की तीव्रता ऐसी ही थी)। परन्तु अपने उस प्रतिद्वन्द्वी से मुझे उतनी ही ईर्ष्या अब भी होती है। प्रतिद्वन्द्वी शब्द मुझे कुछ नाटकीय लगता है और इससे उस व्यक्ति का रूप ठीक स्पष्ट भी नहीं होता जिसके आत्म-सन्तोष, विश्वास और सफलता से मुझे चिढ़ रही है। कई बार मुझे लगता है कि शायद उसे इसका आभास तक भी न होगा कि इस सारे चित्र में मैं भी कहीं हूँ। मेरी बहुत इच्छा होती है कि किसी तरह उसका ध्यान अपनी तरफ़ खींच सकूँ और उसके कान में चिल्लाकर कह सकूँ, 'देखो, यह मैं यहाँ हूँ। तुम मेरी उपेक्षा नहीं कर सकते। बाद में चाहे जो हुआ हो, मगर पहले सैरा मुझी से प्रेम करती थी।'

ईर्ष्या के सम्बन्ध में मैं और सैरा काफ़ी बहस किया करते थे। वह कभी-कभी बहुत स्पष्टता के साथ मुझे अपने गुज़रे हुए दिनों की बातें बताया करती थी—ऐसी बातें जिनका वैसे कोई ख़ास महत्त्व नहीं था (सिवाय इसके कि वह उन बातों से फिर अपने में कामना का वही उद्रेक लाना चाहती थी जो उसे एक स्तब्धता की स्थिति में ले जाता था, और जो हेनरी के सहवास में कभी नहीं आ पाया था)। मगर मुझे उन बातों से भी ईर्ष्या होती थी। वह कहती थी कि वह अपने प्रेमी के प्रति उतनी ही सच्ची रह सकती है जितनी वह हेनरी की है, परन्तु बजाय इसके कि यह जानकर मुझे खुशी हो कि मेरे प्रति भी वह उतनी ही सच्ची है, मुझे इस पर गुस्सा हो आता था। वह कई बार मेरे गुस्से पर हँस देती थी। उसे विश्वास ही नहीं होता था कि मेरा गुस्सा दिखावटी नहीं है, जैसे कि उसे यह भी विश्वास नहीं होता था कि वह बहुत सुन्दर है। और मुझे इस बात पर भी गुस्सा आता था कि मैंने क्या-क्या झख मारी है और आगे क्या-क्या झख मार सकता हूँ, यह जानकर भी उसे ईर्ष्या नहीं होती थी। और वह बात मेरी समझ में नहीं आती थी कि प्रेम का जो रूप मैं जानता हूँ, उसके अतिरिक्त और भी कोई रूप हो सकता है। ईर्ष्या मेरे लिए प्रेम की एकमात्र कसौटी थी और उस कसौटी से देखने पर वह मुझसे प्रेम करती ही नहीं थी।

बहस हमेशा एक ही तरह से होती थी। मैं ऐसे केवल एक अवसर की बात बताना चाहूँगा क्योंकि उस बार बहस के बाद मैं एक मूर्खतापूर्ण हरकत कर बैठा था। उससे हुआ कुछ भी नहीं सिवाय इसके कि मुझे मन में यह संशय ज़रूर होने लगा

कि शायद मैं ही ग़लत सोचता हूँ और वह ठीक सोचती है। और वही संशय अब यह सब लिखते समय भी, बारम्बार मेरे मन में उठ आता है।

मुझे याद है मैंने एक गुस्से में उससे कहा था, "यह सिर्फ़ तुम्हारी पहले दिनों की जड़ता ही है जो अब तुम्हारा स्वभाव बन गई है। जिस स्त्री के मन में प्रेम के लिए उत्साह न हो, उसे ईर्ष्या कहाँ होगी! तुम्हें अब भी एक साधारण मनुष्य की तरह आवेगों का अनुभव करना नहीं आया।"

उसने मेरी बात का विरोध नहीं किया, इससे मुझे और गुस्सा हो आया। "हो सकता है तुम ठीक कहते हो," उसने कहा। "मैं तो इतना ही कहती हूँ कि मैं तुम्हें प्रसन्न देखना चाहती हूँ। तुम दुखी होते हो तो मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम्हें जो कुछ भी कहना-करना अच्छा लगे, उसका मुझे बुरा नहीं लगेगा।"

"यह सिर्फ़ बहाना है। तुम तो यह समझती हो कि अगर मुझे किसी के भी साथ सोने की छूट रहे तो तुम भी जब चाहो वह छूट ले सकती हो।"

"इसका तो कुछ भी मतलब नहीं हुआ। मैं तो सिर्फ़ यह चाहती हूँ कि तुम प्रसन्न रहो। बस इतनी-सी बात है।"

"तुम अपनी आँखों से मुझे किसी के साथ सोते देख सकती हो?"

"क्यों नहीं देख सकती?"

प्रेम में अनिश्चितता ही सबसे बुरी चीज़ है। इससे शायद वह घोटाले का ब्याह ज़्यादा अच्छा है, जिसमें कामना नाम की चीज़ होती ही नहीं। अनिश्चितता बात को कुछ-का-कुछ रूप दे देती है और विश्वास का गला घोंट देती है। जो शहर बुरी तरह घिरा हो, उसमें हर सिपाही से द्रोह की आशंका हो सकती है। मैं पारकिस से पहले भी सैरा की बातों पर निगरानी रखने की चेष्टा कर रहा था, और वह कोई छोटा-मोटा झूठ बोलती, या बात को कभी टालने का प्रयत्न करती, तो मैं उसे वहीं पकड़ लेता था, हालाँकि वह ऐसी बात मेरे डर के मारे ही करती थी। ज़रा-से झूठ को भी मैं विश्वासघात के रूप में देखता था और साफ़ कही हुई बातों में भी कोई छिपा हुआ मतलब ढूँढ़ता रहता था। मुझे उसका किसी और पुरुष को छूना तक सह्य नहीं था, इसलिए सदा ही मुझे इस बात की आशंका बनी रहती थी। वह किसी को देखकर हाथ भी हिलाती तो मुझे उसमें घनिष्ठ परिचय की गन्ध आती थी।

"तुम्हीं बताओ तुम्हें क्या अच्छा लगेगा, मुझे खुश देखना या दुखी देखना?" उसने कहा। उसके इस तरह के तर्क मुझसे नहीं सहे जाते थे।

"मैं तुम्हें किसी और के साथ देखूँ इससे पहले या तुम्हारी जान ले लूँगा, या अपनी जान दे दूँगा," मैंने उसे कोसते हुए कहा। "यह मेरा पागलपन नहीं है। साधारण आदमी का प्रेम ऐसा ही होता है। तुम किसी से भी पूछ लो। जिसे किसी से प्रेम होगा, वह यही कहेगा। जहाँ प्रेम हो, वहाँ ईर्ष्या का होना ज़रूरी है।"

यह बात मेरे कमरे की है। बसन्त की दोपहर थी और हमें किसी के आने का खतरा नहीं था। प्रेम करने के लिए घंटों समय हमारे पास था। मगर मैंने वह सारा समय झगड़े में ही गँवा दिया और हम प्रेम नहीं कर सके।

"मुझे बहुत अफसोस है," वह बिस्तर पर बैठती हुई बोली। "मैं तुम्हें गुस्सा दिलाना नहीं चाहती थी। हो सकता है तुम्हीं ठीक कहते हो।" मगर मैं इतने में छोड़नेवाला कहाँ था! मुझे उसकी ऐसी बातों से घृणा होती थी क्योंकि मैं तो विश्वास करना चाहता था कि वह मुझसे प्रेम नहीं करती और इस तरह उसके प्रभाव से छुट्टी पाना चाहता था। अब सोचाता हूँ कि वह चाहे मुझसे प्रेम करती थी या नहीं, पर मुझे उससे शिकायत करने का क्या अधिकार था? साल-भर से वह मेरे साथ अपना सम्बन्ध निभा रही थी, मुझे उसने इतना सुख दिया था और मेरे बिगड़ने पर भी बेचारी चुप रहती थी, और बदले में मैंने उसे क्षणिक सुख के अतिरिक्त दिया ही क्या था? मैंने खुली आँखों से इस सम्बन्ध को स्वीकार किया था और आरम्भ से ही जानता था कि एक-न-एक दिन इसका अन्त हो जाएगा। मगर फिर भी अब अनिश्चितता की अनुभूति मन पर छाकर मुझे उदास कर देती और तर्क कहता कि भविष्य अन्धकारपूर्ण है तो मैं उसे बुरी तरह कचोटने लगा, जैसे कि वह भविष्य असमय आनेवाला एक अनचाहा अतिथि हो और मुझे उसे उसी समय खींचकर अपने दरवाज़े पर ले आना हो। कामना और भय ही जैसे मेरा विवेक बन गए थे। यदि हम दोनों को पाप में विश्वास होता तो भी हमारा व्यवहार इससे भिन्न न होता।

"हेनरी ऐसा करे तो तुम्हें ज़रूर ईर्ष्या होगी," मैंने कहा।

"कतई नहीं। मुझे तो ऐसी बात ही बचकाना लगती है।"

"अगर तुम्हें लगे कि तुम्हारे विवाहित जीवन को इससे खतरा है...।"

"ऐसा हो ही नहीं सकता," उसने बहुत उदासीन ढंग से कहा। मुझे लगा कि वह मेरा अपमान कर रही है। मैं तुरन्त खड़ा हुआ और सीढ़ियों से उतरकर सीधा सड़क पर पहुँच गया। तो क्या यही अन्त था,...मैं जैसे अपने से ही नाटक करता हुआ सोचने लगा। मैं अगर अपने को उसके प्रभाव से मुक्त कर लूँ तो क्या किसी और के साथ अच्छा विवाहित जीवन व्यतीत नहीं कर सकता? उसमें कम-से-कम ऐसा संशय तो न होगा। उस स्थिति में न मैं इतना प्रेम करूँगा और न ही मुझे इतनी ईर्ष्या होगी, और मैं अपने मन में आश्वस्त रहूँगा। कॉमन के अँधेरे वातावरण में उस समय मेरी घृणा और करुणा ऐसे हाथ-में-हाथ डाल रही थीं, जैसे दो पागल बिना रखवाले के चले जा रहे हों।

आरम्भ में मैंने कहा था कि यह मेरी घृणा की कहानी है, मगर मुझे इसमें पूरा विश्वास नहीं है। शायद मेरी घृणा में भी कुछ वैसी ही कमी है जैसी कि मेरे प्रेम में थी। अभी लिखते-लिखते मैंने सिर उठाकर अपने डेस्क के पास के आईने में अपना

चेहरा देखा है। क्या घृणा इसे कहते हैं? मुझे तो इसे देखकर वह चेहरा याद आता है—अपनी ही साँस से धुँधलाया हुआ चेहरा, जिसे बचपन में हम सबने देखा है; जब हम किसी दुकान की खिड़की से अन्दर की दुर्लभ चीज़ों को अभिलाषा के साथ देखते थे तो वह चेहरा खिड़की के शीशे में से हमारी तरफ़ झाँका करता था।

यह बहस शायद मई सन् चालीस में किसी दिन हुई थी। युद्ध ने हमारी कई तरह से सहायता की थी और मुझे लगा करता था जैसे हमारे सम्बन्ध को बढ़ाने में वह बदनाम और अनिश्चित युद्ध भी एक सहयोगी है। (मैं जान-बूझकर शब्द 'सम्बन्ध' का प्रयोग करके अपनी ज़बान पर कास्टिक सोडा डाल रहा हूँ, क्योंकि 'सम्बन्ध' में आरम्भ और अन्त दोनों का ही संकेत रहता है।) मेरा ख़याल है कि तब तक जर्मनी ने निचले देशों पर अधिकार कर लिया था। उस साल वसन्त में भी एक शव की-सी मृत्यु की गन्ध भर रही थी। मगर मुझे केवल अपने काम की दो चीज़ों से ही मतलब था। एक तो यह कि हेनरी का तबादला गृह-रक्षा मन्त्रालय में हो गया था और वह वहाँ देर तक काम करता रहता था; और दूसरे यह कि मेरी मकान-मालकिन हवाई हमलों के डर से सबसे निचली मंज़िल में चली गई थी। पहले वह मेरी छत के ऊपर मँडराती रहती थी और ज़ीने से झाँककर देखती रहती थी कि नीचे कोई ऐसा-वैसा मेहमान तो नहीं आया है। लँगड़ा होने से मेरी निजी ज़िन्दगी में कोई अन्तर नहीं आया था। (बचपन की एक दुर्घटना की वजह से मेरी एक टाँग दूसरी टाँग से ज़रा छोटी है।) पहरा देने का काम भी हवाई आक्रमण आरम्भ होने के बाद ही मुझे मिला, इसलिए उन दिनों स्थिति ऐसी थी जैसे युद्ध के साथ मेरा कोई सम्बन्ध ही न हो।

ख़ैर, उस दिन मैं पिकेडिली तक पहुँच गया तो घृणा और अविश्वास उसी तरह मुझ पर छाए थे। मैं उस समय एक ही चीज़ चाह रहा था कि जैसे भी हो सके सैरा को कोई चोट पहुँचाऊँ। मेरा मन हो रहा था कि किसी और स्त्री को अपने साथ घर ले जाऊँ और उसके साथ उसी बिस्तर पर जा लेटूँ जिस पर पहले सैरा के साथ सोया था, जैसे कि मुझे यह लगता हो कि अपने को चोट पहुँचाकर ही मैं सैरा को चोट पहुँचा सकता था। अँधेरा हो चुका था और सड़कों पर ख़ामोशी छाई थी। अमावस के आकाश में केवल सर्चलाइटों के बल्ब और उनकी किरणें ही दिखाई दे रही थीं। इधर-उधर की गलियों में जो स्त्रियाँ अपने दरवाज़ों के पास या ख़ाली रक्षा-स्थलों के बाहर खड़ी थीं, उनके चेहरे ठीक दिखाई नहीं दे रहे थे। वे जुगनुओं की तरह टार्च जला-जलाकर इशारे कर रही थीं। सारी सैकविल स्ट्रीट में वे छोटी-छोटी बत्तियाँ जलती-बुझती नज़र आ रही थीं। मैं सोचने लगा कि सैरा इस समय क्या कर रही होगी—अपने घर चली गई होगी या वहीं पर मेरे लौटने का इन्तज़ार कर रही होगी?

एक स्त्री ने अपना टार्च जलाया और पूछा, ''क्यों डियर, मेरे साथ घर चलोगे?'' मैंने सिर हिलाया और आगे निकल गया। गली में आगे जाकर एक लड़की एक आदमी से बात कर रही थी और उसे दिखाने के लिए अपने चेहरे पर रोशनी डाले थी। उसका रंग गहरा था, मगर वह अभी ज़्यादा बिगड़ी नहीं लगती थी और ताज़ा और खुश नज़र आती थी—ऐसे जानवर की तरह जिसे अभी यह पता न हो कि वह पिंजरे में बन्द है। मैं पहले पास से निकल गया, फिर सड़क से होकर उनकी तरफ़ लौट आया। ज्यों ही मैं पास पहुँचा, वह आदमी उसके पास से चला गया। मैंने उससे पूछा, ''क्यों, कुछ पीने चलने का इरादा है?''

''बाद में मेरे साथ घर चलोगे?''

''हाँ।''

''तो जल्दी से एक पेग पी लूँगी।''

हम गली के सिरे पर एक शराबखाने में चले गए। मैंने दो पेग व्हिस्की के लिए कह दिया। मगर व्हिस्की पीते हुए सैरा की जगह उस लड़की के चेहरे को देखना मुझे सह्य नहीं हुआ। उम्र में वह सैरा से छोटी थी, उन्नीस से ज़्यादा की नहीं होगी, और देखने में उससे अधिक सुन्दर थी और उससे कम बिगड़ी लगती थी। मगर शायद बिगड़ने को उसमें था ही बहुत कम। मुझे उसकी उतनी ही चाह हो सकती थी जितनी मुझे किसी कुत्ते या बिल्ली की होती। वह मुझे बताती रही कि थोड़े ही घर आगे एक मकान की ऊपरी मंज़िल पर उसके पास अच्छा-सा फ्लैट है और फ्लैट का किराया इतना है, उसकी अपनी उम्र इतने साल है, वह पैदा उस जगह हुई थी और इस तरह एक कैफे में साल-भर काम कर चुकी है। उसने यह भी कहा कि वह हर ऐरे-ग़ैरे के साथ नहीं चल पड़ती, मगर मुझे देखते ही उसे पता चल गया था कि मैं एक भला आदमी हूँ। और फिर वह बताने लगी कि उसके पास एक कैनरी पक्षी है जिसका नाम उसने जोन्स रखा है, क्योंकि जिसने वह उसे दिया था, उसका भी नाम जोन्स था...और कि लन्दन में ग्राउंडसेल के पौधे बहुत मुश्किल से मिलते हैं। मैं सोच रहा था कि सैरा अभी भी कमरे में ही हो तो मैं उससे फ़ोन पर बात कर सकता हूँ, और लड़की पूछ रही थी कि मेरे घर में अगर बाग़ीचा है तो क्या मुझे कभी उसके कैनरी की याद आएगी? ''मेरा यह सब पूछना तुम्हें बुरा तो नहीं लग रहा?'' उसने कहा। और मैं व्हिस्की हाथ में लिये उसकी तरफ़ देखता हुआ सोचता रहा कि कितनी विचित्र बात है कि मेरे अन्दर उसे पाने की ज़रा भी चाह नहीं है। जैसे कि अनिश्चित सम्बन्धों के बरस गुज़र गए थे और अब सहसा ही मैं बड़ा हो गया था। सैरा के लिए मेरी कामना ने जैसे साधारण वासना को मेरे अन्दर सदा के लिए सुला दिया था और प्रेम के बिना अब मैं कभी भी स्त्री के सहवास में सुख प्राप्त नहीं कर सकता था।

मगर जिसकी वजह से मैं भागकर उस शराबखाने में पहुँचा था वह प्रेम तो नहीं था। मुझे तो सैरा से घृणा थी और मैं कॉमन में सारा रास्ता अपने को यही बात समझाता आया था। और इस समय यह कहानी लिखते हुए भी मैं अपने को यही समझा रहा हूँ क्योंकि मैं अपने को उसके प्रभाव से मुक्त कर लेना चाहता हूँ। उन दिनों मैं हमेशा अपने को समझाया करता था कि यदि सैरा की मृत्यु हो जाए तो मैं ज़रूर उसे भूलने में सफल हो सकूँगा।

लड़की अभी व्हिस्की पी ही रही थी कि मैं उसे छोड़कर शराबखाने से बाहर चला आया। उसके स्वाभिमान पर मरहम लगाने के लिए मैं उसके पास एक पौंड का नोट छोड़ आया था। न्यू बलिंग्टन स्ट्रीट में कुछ दूर जाकर मैं टेलीफ़ोन के बॉक्स में पहुँच गया। मेरे पास टार्च नहीं था, इसलिए दियासलाइयाँ जला-जलाकर मैंने अपना नम्बर मिलाया। घंटी बजने के साथ ही जैसे अपना वह डेस्क मेरे सामने आ गया जिस पर मेरा टेलीफ़ोन रखा था और मैं कल्पना करने लगा कि सैरा अगर कुर्सी पर बैठी हो, या पलंग पर लेटी हो, तो टेलीफ़ोन तक पहुँचने के लिए उसे कितने क़दम चलना पड़ेगा। आधा मिनट मैं घंटी की आवाज़ सुनता खड़ा रहा। उसके बाद मैंने उसके घर पर फ़ोन किया तो नौकरानी से पता चला कि वह अभी वापिस नहीं पहुँची। मुझे अपने पर झुँझलाहट होने लगी कि वह बेचारी इस समय ब्लैक-आउट में न जाने कॉमन के इधर-उधर कहाँ घूम रही होगी! कॉमन उन दिनों घूमने के लिए सुरक्षित जगह नहीं थी। मैंने घड़ी देखी। अगर मैंने यह बेवकूफ़ी न की होती तो हम तीन घंटे और साथ रह सकते थे। मैं अकेला घर चला आया। वहाँ आकर मैंने कुछ पढ़ने की चेष्टा की, मगर मेरा मन सारा समय टेलीफ़ोन की घंटी का ही इन्तज़ार करता रहा। मगर घंटी नहीं बजी। आख़िर में नींद की दोहरी खुराक लेकर सो गया और सुबह तभी उठा जब टेलीफ़ोन की घंटी बजी और सैरा की आवाज़ सुनाई दी। उसकी आवाज़ से ज़रा भी नहीं लगता था कि कल कोई बात हुई थी। जब तक चोंगा मेरे हाथ में रहा मेरे मन पर भी शान्ति छाई रही। मगर चोंगा रखते ही मेरे मन का शैतान फिर मुझे उकसाने लगा कि जो तीन घंटे कल व्यर्थ चले गए थे, उनका उसे तो कुछ अफ़सोस ही नहीं है!

मुझे समझ नहीं आता कि जो लोग व्यक्तिगत ईश्वर जैसी असम्भव कल्पना को पचा लेते हैं, उन्हें 'व्यक्तिगत शैतान' की सत्ता स्वीकार करने में क्या कष्ट होता है! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी कल्पना में शैतान किस तरह अपना घर बसाकर रहता है। सैरा जो कुछ भी कहती थी उसमें उसकी शैतानियत कोई-न-कोई सन्देह की बात ढूँढ़ ही निकालती थी। सैरा की उपस्थिति में तो वह चुप रहता, मगर उसके सामने से हटते ही झट बोल पड़ता। हम लोगों की लड़ाई बाद में होती और वह उसकी भूमिका पहले ही बाँध रखता। उसकी दुश्मनी सैरा से नहीं थी, प्रेम से ही थी, और

शैतान की दुश्मनी होती भी तो प्रेम से ही है! अगर सचमुच ईश्वर का अस्तित्व हो, और वह प्रेमरूप हो, तो शैतान प्रेम के हलके और अनिश्चित-से आभास को भी नष्ट कर देना चाहेगा, क्योंकि उसे तो डर होगा कि लोगों को इस तरह प्रेम करने की आदत पड़ जाएगी। वह तो चाहेगा कि हम सब प्रेम से द्रोह करें और उसे मिटाने में उसके सहायक हों। अगर ईश्वर है, और जिस मिट्टी के हम बने हैं, उसे लेकर सन्तों की सृष्टि कर सकता है, तो निःसन्देह शैतान की भी अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ हो सकती हैं। वह मेरे जैसे, या गरीब पारकिस जैसे व्यक्तियों को लेकर अपने सन्त तैयार करने की बात सोच सकता है, ताकि जहाँ कहीं हमें प्रेम नज़र आए, वहीं हम अपने दिखावटी धर्मोत्साह से उसका गला घोंट दें।

3

पारकिस की अगली रिपोर्ट आई तो मुझे लगा कि वह पूरे उत्साह के साथ शैतान का ही खेल खेल रहा है। आख़िर उसे प्रेम की गन्ध मिल गई थी और वह उसे सूँघता हुआ उसका पीछा कर रहा था। उसका लड़का एक उद्धारक की तरह उसके साथ था। पारकिस को यह पता चल गया कि सैरा अधिकांश समय कहाँ जाती है। उसने यह भी जान लिया था कि वहाँ जाने के लिए किस तरह छल का आश्रय लेती है। मुझे मान लेना पड़ा कि पारकिस अपने काम में बहुत उस्ताद है। उसने एक दिन अपने लड़के की सहायता से ऐसी व्यवस्था की थी कि जिस समय 'वह स्त्री' सैडर रोड पर सोलह नम्बर के घर की तरफ़ जाने के लिए अपने यहाँ से निकली, उस समय नौकरानी उसे घर से बाहर मिल गई। वैसे नौकरानी की उस दिन छुट्टी थी। सैरा ने रुककर नौकरानी से बात की और नौकरानी ने लड़के का उससे परिचय करा दिया। आगे जाकर सैरा जब मोड़ मुड़ी तो वहाँ पारकिस स्वयं उसके इन्तज़ार में खड़ा था। उसके सामने वह कुछ रास्ता आगे गई और फिर लौट पड़ी। यह निश्चय करके कि नौकरानी और लड़का अब चले गए हैं, उसने सोलह नम्बर के घर की घंटी बजाई। पारकिस उसके बाद से अब इस बात की छानबीन कर रहा था कि सोलह नम्बर में वह किसके यहाँ गई थी, क्योंकि उस घर में कई फ्लैट थे और यह जानने का उसके पास कोई साधन नहीं था कि सैरा ने उस घर की तीन घंटियों में से कौन-सी घंटी बजाई थी। इस सम्बन्ध में निश्चित रिपोर्ट उसने कुछ दिनों में भेजने को लिखा था। उसने इसके लिए यह तय किया था कि अगली बार जब सैरा वहाँ जाने के लिए घर से चलेगी तो वह उससे पहले ही वहाँ पहुँचकर तीनों घंटियों पर पाउडर छिड़क देगा। 'ए' का निशान लगाकर जो पुरजा भेजा गया था, उसके अतिरिक्त अभी ऐसा कोई

प्रमाण हाथ में नहीं आया जिससे उस स्त्री की चरित्रहीनता की स्थापना की जा सके। इन रिपोर्टों को नज़र में रखते हुए आगे कानूनी कार्यवाही करने के लिए अगर इस तरह के प्रमाणों की आवश्यकता हो तो उसके लिए अपेक्षित यह होगा कि कभी 'उस स्त्री' के पीछे उस फ्लैट के अन्दर जाया जाए। उसके लिए साथ में एक और ऐसे गवाह का होना आवश्यक होगा जो उस स्त्री को पहचानता हो। यह आवश्यक नहीं कि ठीक उस कार्य के समय ही उसे पकड़ा जाए। उसके कपड़ों का अस्त-व्यस्त होना और उसके चेहरे का उत्तेजित दिखाई देना ही अदालत की नज़र से काफ़ी होगा।

घृणा और शारीरिक प्रेम, इन दोनों में बहुत कुछ समानता है, क्योंकि घृणा में भी उसी तरह एक चरम स्थिति आती है और उसके बाद कुछ देर के लिए मन शान्त हो जाता है। उत्तेजना की स्थिति को पार करके मैं अब सन्तोष की स्थिति में पहुँच रहा था, और मुझे सैरा पर दया आ रही थी। सचमुच, किस बुरी तरह से बेचारी को घेरा जा रहा है। उस बेचारी का अपराध इतना ही तो था कि वह प्रेम कर रही थी! और उस अपराध के लिए पारकिस और उसका लड़का उसकी हर गतिविधि का निरीक्षण कर रहे थे, उसकी नौकरानी को साथ मिलाकर षड्यन्त्र रच रहे थे, और घंटियों पर पाउडर छिड़क रहे थे। उस बेचारी को उन दिनों जीवन में जो थोड़ी-बहुत शान्ति प्राप्त थी, उसमें भी वे भूचाल खड़ा करने की योजना बना रहे थे। मेरा आधा मन हुआ कि उस रिपोर्ट को फाड़ दूँ और उन जासूसों से उसका पीछा छुड़ा दूँ। ऐसा शायद मैं कर भी डालता, मगर अपने मनहूस साहित्यिक क्लब में बैठे हुए मेरी नज़र 'टैटलर' के अंक में हेनरी के चित्र पर पड़ गई। हेनरी अब एक सफल आदमी बन गया था। पिछली बार जन्मदिन की उपाधियों में उसकी मन्त्रालय की सेवाओं के लिए उसे सी.बी.ई. की उपाधि दी गई थी और उसे एक राजकीय आयोग का अध्यक्ष बना दिया गया था। वह चित्र 'द लॉस्ट साइरेन' नामक ब्रिटिश फ़िल्म के विशेष समारोह की रात का था। उसमें हेनरी सैरा की बाँह-में-बाँह डाले खड़ा था। उसका चेहरा फ्लैश की रोशनी में पीला-सा लगता था और आँखें बाहर को निकली-सी जान पड़ती थीं। सैरा ने फ्लैश से बचने के लिए अपना सिर झुका लिया था, मगर मैं तो उसके घने घुँघराले बालों से भी उसे पहचान सकता था। उन बालों में या तो उँगलियाँ धँसती नहीं थीं, और धँसती थीं तो उलझकर रह जाती थीं। सहसा मेरा मन होने लगा कि मैं हाथ बढ़ाकर उसके बालों को छू लूँ, उसे अपने पास लिटा लूँ और तकिए पर सिर रखकर मुँह उसकी तरफ़ किए हुए उससे बातें करूँ। मुझे उसके शरीर की भीनी गन्ध और उसके ज़ायके की चाह होने लगी। मगर मेरे सामने वह चित्र था जिसमें प्रेस के कैमरे के सामने हेनरी चेहरे पर यह गर्व और आत्मसन्तोष लिये कि वह एक विभाग का अध्यक्ष है, उसके साथ खड़ा था।

सर वाल्टर वेसेंट ने 1898 में क्लब को एक हरिण का सिर भेंट किया था। उसके नीचे बैठे हुए मैंने हेनरी को एक पत्र लिखा। मैंने लिखा कि मुझे उससे कुछ महत्त्वपूर्ण बात करनी है, इसलिए अगले सप्ताह किसी दिन वह मेरे साथ दोपहर का खाना खाए। हेनरी ने अपने स्वभाव के अनुसार बहुत जल्दी ही फ़ोन किया और कहा कि अच्छा हो मैं उसके साथ खाना खा सकूँ। मुझे पता था कि किसी का मेहमान बनने में उसे बहुत घबराहट होती है। उसने बहाना क्या किया, यह मुझे याद नहीं, मगर मुझे बुरा बहुत लगा। उसने शायद यह कहा था कि उनके क्लब में पोर्ट बहुत अच्छी मिलती है, मगर वास्तव में कारण यही था कि किसी का एहसान लेना उसे बहुत अखरता था, चाहे वह खाना खिलाने जैसा मामूली एहसान ही क्यों न हो। मगर इस बार का एहसान कितना मामूली होगा, इसका उसे अनुमान तक न रहा होगा। उसने शनिवार का दिन चुना था। शनिवार को हमारा क्लब लगभग ख़ाली ही होता है, क्योंकि उस दिन दैनिक पत्रकारों को कोई पर्चा नहीं निकालना होता, स्कूल-इन्स्पेक्टर ब्रामले और स्ट्रीथम में अपने घरों को चले जाते हैं और पादरियों को क्या हो जाता है, इसका मुझे पता नहीं; शायद वे घर रहकर अपने व्याख्यान तैयार करते हैं। जहाँ तक उन लेखकों का सम्बन्ध है, जिनके लिए कि इस क्लब की स्थापना की गई थी, उनमें से अधिकांश तो अब दीवारों पर ही टँगे हैं—कॉनन डॉयल, चार्ल्स गारविस, स्टैनले वेमन, नैट गूल्ड और एकाध इनसे अधिक परिचित और विख्यात लेखक सब वहीं पर हैं। और जीवित लेखक जितने हैं उन्हें तो उँगलियों पर ही गिना जा सकता है। मुझे क्लब में जाकर इसीलिए अच्छा लगता था कि वहाँ किसी लेखक-बन्धु के मिलने की सम्भावना नहीं होती थी।

मुझे याद है कि हेनरी ने खाने के लिए 'विएना स्टीक' मँगवाया था जोकि उसके भोलेपन का ही सबूत था। उस बेचारे को शायद पता ही नहीं था कि वह क्या मँगवा रहा है; उसे शायद ख़याल था कि वह 'विएना श्नित्ज़ेल' जेसी कोई चीज़ होगी। और क्योंकि उस समय वह दूसरे के यहाँ आया हुआ था, इसलिए वह इतना अव्यवस्थित हो रहा था कि उससे कुछ कहते भी नहीं बनता था। जैसे-तैसे पानी के उस गुलाबी घोल को उसने अन्दर डाल लिया। मगर मुझे उस समय भी प्रेस के कैमरे के सामने उसकी वह ठाठ की मुद्रा की याद आ रही थी, इसलिए जब उसके बाद उसने 'कैबिनेट पुडिंग' के लिए आदेश दिया तो मैं भी चुप ही बैठा रहा। वह मनहूस खाना खाते हुए (उस दिन तो क्लब ने अपने रोज़ के खाने को भी मात कर दिया था) हम बहुत-सी बेमतलब की बातें करते रहे। हेनरी मुझे अपने राजकीय आयोग के विषय में बताता रहा, जैसे मन्त्रिमंडल की बहुत गुप्त बातें बता रहा हो, हालाँकि वे सब बातें रोज़ अखबारों में छपती थीं। कॉफ़ी के लिए हम लोग उठकर लाउंज में चले गए। वहाँ उस समय कोई नहीं था। आग जल रही थी और घोड़े के बालों के बड़े-बड़े सोफे ख़ाली ही पड़े

थे। वहाँ की दीवारों पर लगे हुए सींग मुझे अवसर के बहुत अनुकूल लग रहे थे। मैंने बैठकर अँगीठी की पुरानी जाली पर अपने पैर रख दिए जिससे हेनरी एक कोने में बन्द हो गया। फिर मैंने कॉफ़ी को हिलाते हुए पूछा, ''सैरा कैसी है?''

''ठीक है,'' हेनरी ने जैसे टालते हुए कहा। वह अपनी पोर्ट बहुत सन्देह और सावधानी के साथ पी रहा था। मेरा ख़याल है कि उसे अभी बिएना स्टीक की याद भूली नहीं थी।

''तुम क्या अब भी उस बात को लेकर परेशान हो?'' मैंने पूछा।

''किस बात को लेकर?'' उसकी आँखें झेंपकर दूसरी तरफ़ घूम गईं।

''तुमने उस दिन कहा था कि तुम कुछ परेशान हो।''

''मुझे याद नहीं। सैरा तो बिलकुल ठीक है,'' उसने कमज़ोर आवाज़ में कहा, जैसे कि मैं उससे सैरा के स्वास्थ्य के विषय में ही पूछ रहा था।

''तुमने फिर उस जासूस से सलाह नहीं की?''

''मेरा ख़याल था कि तुम्हें वह बात भूल गई होगी। दरअसल उन दिनों मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इस राजकीय आयोग की बात-वात चल रही थी, और मुझ पर काम भी काफ़ी ज़्यादा था।''

''तुम्हें याद है मैंने कहा था कि तुम्हारी जगह मैं उससे मिल आऊँगा?''

''उन दिनों शायद हम दोनों के ही दिमाग़ की नसें चढ़ी हुई थीं।'' वह अपने सिर से ऊपर पुराने सींगों की तरफ़ देखने लगा। भेंट करनेवाले का नाम पढ़ने के लिए उसकी आँखें थोड़ा मिंच गईं। ''तुम्हारे यहाँ जानवरों के बहुत-से सिर हैं,'' उसने मूर्ख की तरह कहा।

मगर मैं उसे छोड़नेवाला कहाँ था! मैंने कहा, ''मगर मैं कुछ दिनों बाद उससे मिलने चला गया था।''

उसने अपना गिलास नीचे रख दिया। ''बैंड्रिक्स, तुम्हें इसका कोई अधिकार नहीं था,'' उसने कहा।

''मगर मैं सारा ख़र्च अपनी ज़ेब से कर रहा हूँ।''

''मैं नहीं जानता कि तुम्हारा यह हौसला किस तरह हुआ!'' वह सहसा उठ खड़ा हुआ। मगर मैंने उसे इस तरह फँसा रखा था कि वह बग़ैर ज़ोर आज़माए निकलकर नहीं जा सकता था; और ज़ोर आज़मानेवाली जिंस वह थी नहीं।

''मैंने सोचा, अच्छा होगा कि मन का सन्देह निकल जाए,'' मैंने कहा।

''सन्देह की कोई बात ही नहीं थी। अब मेहरबानी करके तुम मुझे यहाँ से चले जाने दो।''

''मगर मैं चाहता हूँ कि तुम एक बार रिपोर्ट पढ़ लो।''

''मुझे कुछ नहीं पढ़ना है...।''

"तो मैं ही तुम्हें पढ़कर सुना देता हूँ कि वह छिप-छिपकर कहाँ जाती है। उसका एक प्रेमपत्र भी था, मगर वह मैंने फ़ाइल में रखने के लिए वापस कर दिया है। तुम्हें दोस्त, अच्छी तरह चकमा दिया जा रहा है।"

मुझे लगा कि वह मेरे मुँह पर थप्पड़ मारने जा रहा है। वह सचमुच मार देता तो मुझे बहुत खुशी होती, क्योंकि तब मैं भी उसे दो-एक घूँसे लगा देता। मुझे गुस्सा था कि सैरा जाने क्यों इतने वर्षों से इस 'गधे' से चिपकी हुई है। मगर उसी समय क्लब का सेक्रेटरी अन्दर आ गया। उसकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी और सूप के दाग़ोंवाली वास्कट को देखकर लगता था जैसे वह विक्टोरिया के ज़माने का कोई कवि हो। वैसे अपनी जान-पहचान के कुत्तों के शोकपूर्ण संस्मरण छोड़कर उसने और कुछ नहीं लिखा था ('फॉर एवर फिडो' की सन् बारह में बहुत चर्चा हुई थी)। "अरे, बैंड्रिक्स," उसने कहा, "तुम तो बहुत दिनों से दिखाई ही नहीं दिए।" मैंने हेनरी का उसके साथ परिचय कराया और फिर एक हज्जाम की तरह जल्दी-जल्दी बात करने लगा, "मगर मैं तो रोज़ रिपोर्ट पढ़ता रहा हूँ।"

"कैसी रिपोर्ट?" शायद जीवन में पहली बार 'रिपोर्ट' शब्द सुनकर हेनरी का ध्यान अपने दफ़्तर की रिपोर्टों की तरफ़ नहीं गया।

"वही, राजकीय आयोग की रिपोर्टें।"

जब सेक्रेटरी चला गया तो हेनरी ने कहा, "मेहरबानी करके तुम वे रिपोर्टें मुझे दे दो और मुझे यहाँ से चले जाने दो।"

जितनी देर सेक्रेटरी वहाँ रहा था, उतनी देर वह मन में स्थिति पर फिर से विचार करता रहा था। मैंने आख़िरी रिपोर्ट उसके हाथ में दे दी। उसने सीधे उसे आग में झोंक दिया और सलाख से उसे अच्छी तरह अन्दर कर दिया। मुझे यह मानना पड़ेगा कि उसके उस अन्दाज़ में बहुत शान थी। "तो तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" मैंने पूछा।

"कुछ भी नहीं।"

"मगर इससे असलियत बदल तो नहीं जाएगी।"

"असलियत जाए भाड़ में," उसने कहा। इससे पहले मैंने उसे गाली देते नहीं सुना था।

"तुम चाहो तो मैं हर रिपोर्ट की एक कार्बन कापी तुम्हें भिजवा सकता हूँ।"

"क्या तुम मुझे अब यहाँ से जाने दोगे?" शैतान अपना काम कर चुका था, और मेरी ईर्ष्या अपनी सीमा तक पहुँचकर अब शान्त हो रही थी। मेरा ज़हर काफ़ी निकल गया था। मैंने अपनी टाँगें जाली से हटा लीं और उसे गुज़र जाने दिया। वह सीधा क्लब से बाहर चला गया। उसका हैट, वही काला सरकारी हैट, जिससे कुछ दिन पहले कॉमन में मैंने बूँदें टपकती देखी थीं, वहीं रह गया था। उस समय मुझे लग रहा था कि वह घटना कुछ दिन पहले की नहीं, जाने कितने बरस पहले की है।

4

मैं उसका हैट साथ लिये हुए बाहर निकल आया। ख़याल था कि तेज़ चलकर मैं उसे पकड़ लूँगा, या कम-से-कम व्हाइट हाल की लम्बी सड़क पर वह मुझे कहीं दिखाई दे ही जाएगा। मगर दूर तक जाकर भी वह मुझे नज़र नहीं आया। आख़िर मैं वापस मुड़ आया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अब कहाँ जाऊँ। आजकल यह एक बहुत बड़ी दिक़्क़त है कि आदमी के पास बहुत-सा समय फालतू होता है और यह समझ ही नहीं आता कि उसे किस तरह बिताया जाए। कुछ देर के लिए मैं चेयरिंग क्रॉस से नीचे पुस्तकों की दूकान में चला गया। मन में सोच रहा था कि शायद सैरा उस समय 16 सेडर रोड की पाउडर-लगी घंटी बजा रही होगी और पारकिस एक तरफ़ खड़ा उसका इन्तज़ार कर रहा होगा। अगर समय को पीछे लौटाया जा सकता तो मैं ज़रूर उसे लौटा लेता, और हेनरी को उस दिन कॉमन में वर्षा से भीगते हुए अपने पास से गुज़र जाने देता। मगर मुझे सन्देह होता है कि मेरे कुछ भी करने से क्या परिस्थितियों का रुख और हो सकता था। हेनरी और मैं आज एक तरह से आपस में सहयोगी हैं, परन्तु यह सहयोग क्या एक अनन्त प्रवाह के सामने बेबसी का सहयोग ही नहीं है?

मैं सड़क पार करके फल बेचनेवालों के पास से होता हुआ विक्टोरिया बाग़ में चला गया। हवा में हलकी धूल उड़ रही थी और बेंचों पर ज़्यादा लोग नहीं थे। मैंने अन्दर क़दम रखते ही हेनरी को देख तो लिया, मगर उसे पहचानने में मुझे ज़रा समय लगा। घर से बाहर और बिना हैट के बैठा हुआ वह आस-पास के उन साधारण व्यक्तियों जैसा ही लग रहा था, जो छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं और जिन्हें कोई भी नहीं जानता। एक बुड्ढा आदमी था जो वहाँ बैठा चिड़ियाँ उड़ा रहा था और एक स्त्री थी जो 'स्वान और एडगर' की मोहरवाला भूरे काग़ज़ में बँधा पारसल हाथ में लिये बैठी थी। हेनरी सिर झुकाए अपने जूतों की तरफ़ देख रहा था। मुझे उस समय तक केवल अपने लिए ही खेद हो रहा था, मगर अपने प्रतिद्वन्द्वी के लिए भी जब मेरे मन में खेद पैदा हुआ तो मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने चुपचाप उसका हैट उसके पास रख दिया। मैं बिना कुछ कहे ही वहाँ से चला आता, मगर हेनरी की आँखें सहसा मेरी तरफ़ उठ गईं और मैंने देखा कि वह रो रहा है। मुझे उसका रोना बहुत ही अस्वाभाविक लगा, क्योंकि आँसू और राजकीय आयोग एक-दूसरे से बहुत दूर की चीज़ें हैं।

"मुझे बहुत अफसोस है हेनरी," मैंने कहा। हम कितना आसान समझते हैं कि ज़रा-से पश्चाताप से हम अपने अपराध को धो डालेंगे!

"बैठ जाओ," हेनरी ने अपने आँसुओं के अधिकार से कहा और मैं चुपचाप उसके पास बैठ गया। "मैं तब से ही उस विषय में सोच रहा हूँ, बैंड्रिक्स," वह बोला। "क्या तुम्हारा और सैरा का आपस में प्रेम रहा है?"

"तुम ऐसी बात कैसे सोचते हो?"

"क्योंकि तुम्हारे यह सब करने का यही कारण हो सकता है।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही।"

"और टालने के लिए तुम यही बात कह सकते हो। तुम्हें पता है बैंड्रिक्स, कि जो काम तुमने किया है, वह कितना...कितना बुरा है!" कहते हुए उसने अपने हैट को थोड़ा घुमा लिया और उसके अन्दर बनानेवाले का नाम देखने लगा।

"मेरा ख़याल है कि तुम मुझे बहुत मूर्ख समझते हो जो मैं यह चीज़ पहले नहीं सोच सका। मगर ऐसी बात थी तो वह मुझे छोड़कर चली क्यों नहीं गई?"

तो अब मुझे उसे बताना था कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर क्यों नहीं चली गई? मेरे दिमाग़ में फिर ज़हर भरने लगा। मैंने कहा, "इसलिए कि तुम्हारी अच्छी आमदनी है। फिर उसे तुम्हारे पास रहने की आदत हो गई है और वह इसमें अपने को सुरक्षित समझती है।" वह बहुत ध्यान से और बहुत गम्भीरतापूर्वक मेरी बात सुन रहा था जैसे कि आयोग में बैठा हुआ किसी गवाह का हलफिया बयान सुन रहा हो। "और तुम्हारी वजह से हमें कोई असुविधा भी नहीं थी," मैं और ज़हर घोलने लगा, "जैसे कि मुझसे पहले किसी और को भी असुविधा नहीं हुई।"

"तो तुमसे पहले भी कोई रहा है?"

"मेरा तो ख़याल था कि तुम्हें सब पता है और तुम जान-बूझकर इस तरफ़ ध्यान नहीं देते। बल्कि मैं तो यहाँ तक समझता था कि तुम्हारे साथ साफ़ बात कर लेने में कोई हर्ज़ नहीं–इसी तरह जैसे आज इस समय कर रहा हूँ, हालाँकि अब बात करना निष्फल ही है। मैं तुम्हें बताना चाहता था कि मैं तुम्हारे बारे में क्या सोचता हूँ।"

"तो तुम मेरे बारे में क्या सोचते थे?"

"मैं सोचता था तुम खुद अपनी पत्नी को लोगों के पास भेजते हो। तुम्हारी सहायता से ही वह पहले दूसरों के पास जाती थी, फिर मेरे पास आती रही और अब एक नए व्यक्ति के पास जाती है। क्यों, तुम्हें यह बात सुनकर गुस्सा नहीं आता?"

"मुझे सचमुच कुछ भी पता नहीं था।"

"और तुम पता न रखने के कारण ही तो उसे दूसरों के पास भेजने में सहायक थे। तुम्हें यह पता ही नहीं था कि प्रेम किस तरह किया जाता है और उसे उसके लिए दूसरों का मुँह देखना पड़ता था। तुम इसमें सहायक थे, क्योंकि तुम उसे मौका देते थे, क्योंकि तुम अपनी मूर्खता से उसे उकता देते थे। और अब एक ऐसा आदमी जो तुम्हारी तरह अपनी मूर्खता से उसे नहीं उकताता, सेडर रोड पर उसके साथ गुलछर्रे उड़ा रहा है।"

"मगर उसने तुम्हें भी क्यों छोड़ दिया?"

"क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह उसे अपनी मूर्खता से उकताने लगा था। मगर हेनरी, मैं जन्मजात मूर्ख नहीं था। मुझे मूर्ख तुम्हारी वजह से बनना पड़ा, क्योंकि वह तुम्हें छोड़ना नहीं चाहती थी और मैं ईर्ष्या के मारे कोंच-कोंचकर उसे उकता देता था।"

"मगर तुम्हारी पुस्तकों के बारे में तो लोगों की राय बहुत अच्छी है," उसने कहा।

"लोगों की तो एक अध्यक्ष के रूप में तुम्हारे बारे में भी बहुत अच्छी राय है। मगर इस चीज़ का जीवन में महत्त्व ही क्या है!"

"मेरे लिए तो और किसी चीज़ का महत्त्व ही नहीं रहा," उसने मुरझाए स्वर में कहा। उसकी आँखें दक्खिनी तट के ऊपर से गुज़रते हुए सलेटी बादल की तरफ़ उठ गई थीं। डूँगों के ऊपर से कई-एक मुर्गाबियाँ उड़ती जा रही थीं और शीतकालीन उजाले में उस समय टूटे-फूटे गोदामों के बीच खड़ा गोलीखाना बिलकुल स्याह लग रहा था। चिड़ियाँ उड़ानेवाला आदमी और भूरे पारसलवाली स्त्री दोनों ही वहाँ से जा चुके थे। स्टेशन से बाहर झुटपुटे में से आती हुई फल बेचनेवालों की आवाज़ें ऐसी लगती थीं जैसे बहुत-से जानवर एक साथ चिल्ला रहे हों। कुछ ऐसा महसूस हो रहा था जैसे संसार-भर की खिड़कियाँ अब बन्द होती जा रही हों और शीघ्र ही हर-एक को बस अपने में ही सीमित होकर रह जाना हो। "और मैं सोचा करता था कि जाने क्यों इतने दिनों से तुम हमारे यहाँ नहीं आए," उसने फिर कहा।

"हमारा प्रेम एक तरह से समाप्त हो चुका था और आपस में मिलने का और कोई कारण नहीं था। तुम्हारी बात दूसरी है। तुम्हारे साथ वह चीज़ें ख़रीदने जा सकती है, घर में खाना बना सकती है, और तुम्हारे बिस्तर में सो सकती है। मगर मेरे साथ तो उसका एक ही सम्बन्ध था।"

"मगर वह तुम्हें अब भी बहुत मानती है," उसने ऐसे कहा जैसे उसकी नहीं, मेरी आँखें आँसुओं से भीगी हों और उसे ही मुझे तसल्ली देनी हो।

"सिर्फ़ मानने से क्या होता है!"

"मैं तो इतना ही बहुत समझता हूँ।"

"मगर मैं तो चाहता था कि हमारा प्रेम निरन्तर बढ़ता रहे और कभी कम न हो।" मैंने इससे पहले सैरा के अतिरिक्त और किसी से यह बात नहीं की थी। मगर सैरा ने यह सुनकर जो कहा था, हेनरी ने उससे बिलकुल अलग बात कही। "यह चीज़ मनुष्य के स्वभाव में कहाँ है," वह बोला, "आदमी को सन्तोष करना ही पड़ता है।" मगर सैरा ने तो बिलकुल दूसरी बात कही थी। और हेनरी के पास वहाँ विक्टोरिया बाग़ में बैठकर डूबते हुए दिन को देखते हुए मेरे मन में वह सारी घटना ताज़ी हो आई जिसके बाद से हमारा सम्बन्ध समाप्त हो गया था।

5

"तुम इस तरह डरते क्यों हो?" सैरा ने कहा था। मेरे कमरे से निकलकर हॉल में जाने से पहले यही आख़िरी शब्द थे जो उसने मुझे कहे थे..."प्रेम का कभी अन्त नहीं होता। हम आपस में नहीं मिलेंगे तो उससे क्या होता है...!" वह तब तक अपना निश्चय कर चुकी थी, हालाँकि मुझे उसका पता दूसरे दिन ही चला। दूसरे दिन जब मैंने उसे फ़ोन किया तो मुझे ऐसे लगा कि जैसे सहसा किसी मरे हुए व्यक्ति का खुला मुँह मेरे सामने आ गया हो। "यह तुम कैसी बातें करते हो?" उसने कहा था। "लोग ईश्वर को कभी देखते नहीं, फिर भी जीवन-भर उससे प्रेम नहीं करते?"

"वह प्रेम और तरह का होता है।"

मेरे लिए तो प्रेम का और कोई रूप है ही नहीं। मुझे तभी जान लेना चाहिए था कि उसके हृदय पर किसी और का अधिकार हो चुका है। उससे पहले मुझसे मिलने पर उसने ऐसी बात कभी नहीं कही थी। हमने अपने संसार से ईश्वर को खुशी-खुशी विदा दे रखी थी। तहस-नहस हुए हॉल में से गुज़रते हुए जब सावधानी से टार्च जला-जलाकर मैं उसे रास्ता दिखा रहा था तो उसने फिर कहा, "यदि हम वास्तव में प्रेम करते हैं तो हमें कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए।"

"तुम सोचो सैरा, मैं अब और किसका मुँह देख सकता हूँ," मैंने कहा। "तुम्हारे पास तो फिर भी सभी कुछ है।"

"तुम जानते नहीं हो," वह बोली, "इसलिए ऐसा कह रहे हो।"

खिड़कियों के टूटे हुए शीशे हमारे पैरों के पास आ गिरे। सिर्फ़ दरवाज़े के ऊपर लगे हुए विक्टोरिया के ज़माने के रंगदार शीशे अपनी असली हालत में रह गए थे। और जहाँ-जहाँ से शीशा चूरा हुआ था, वहाँ वह इस तरह सफ़ेद लगने लगा था जैसे गीले खेतों में या सड़क के किनारे बच्चों की चूरा की हुई बरफ हो। "इस तरह घबराओ नहीं," सैरा ने फिर कहा। मैं जानता था कि उसका संकेत उन विचित्र नए बमों की ओर नहीं है जो पाँच घंटे गुज़र जाने पर भी लगातार मधुमक्खियों की तरह गुंजार करते हुए दक्खिन की तरफ़ से चले आ रहे थे।

जून चवालीस की उस रात को पहली बार उन बमों का आक्रमण हुआ था जो बाद में वी 1 के नाम से जाने गए थे। हम एक तरह से हवाई आक्रमणों की बात भूल ही चुके थे। फरवरी चवालीस के थोड़े से दिनों को छोड़कर सन् इकतालीस के बड़े आक्रमणों के बाद वह धूम-धड़ाका फिर नहीं हुआ था। जब भोंपू बजे और पहली बार वे स्वचालित बम इधर आए तो हमने समझा कि कुछ हवाई जहाज़ हमारे रात के पहरे को चीरकर चले आए हैं। जब एक घंटे के बाद आक्रमण समाप्त होने का भोंपू नहीं बजा, तो हमें उलझन हुई। मुझे याद है मैंने सैरा से कहा था, "आजकल

इनके पास कुछ काम नहीं है, इसलिए ये लोग ढीले पड़ रहे हैं।'' और उसी क्षण, अँधेरे में अपने बिस्तर पर लेटे हुए हमने पहले स्वचालित बम को देखा। वह कॉमन में काफ़ी नीचे से गुज़रा और हमने समझा कि किसी जहाज़ में आग लग गई है। उसकी अजीब-सी गूँज भी हमें ऐसी लगी जैसे जहाज़ का इंजन ख़राब हो गया हो। मगर तभी फिर दूसरा और फिर तीसरा बम आया। तब हमें अपने हवाई पहरे के बारे में अपनी राय बदलनी पड़ी। ''वे लोग तो इन्हें कबूतरों की तरह भून रहे हैं,'' मैंने कहा। ''कैसे दीवानावार बम छोड़ रहे हैं!'' मगर समय गुज़रता गया और बम उसी तरह आते रहे, यहाँ तक कि दिन भी निकलने को आ गया और हमें भी विश्वास होने लगा कि यह तो कोई नई ही चीज़ है।

जब आक्रमण आरम्भ हुआ तब हम बिस्तर में लेटे ही थे। मगर आक्रमण से हमें क्या फ़र्क़ पड़ता था? उन दिनों मौत का तो कोई अर्थ था ही नहीं। बल्कि पहले दिनों में मैं प्रार्थना किया करता था कि एक धड़ाके में हम दोनों के प्राण निकल जाएँ और न बिस्तर से उठकर कपड़े पहनने पड़ें और न मुझे धीरे-धीरे दूर जाती हुई कार की बत्ती की तरह उसके टार्च की रोशनी को कॉमन में से होकर दूर जाते देखना पड़े। कई बार मैं सोचता हूँ कि क्या मृत्यु का क्षण ही तो बाद में सार्वकालिक नहीं हो जाता! और ऐसा होता हो तो मैं तब भी, और सैरा यदि जीवित होती तो अब भी, मरने के लिए वही क्षण चुनता, क्योंकि वही क्षण मेरे लिए सम्पूर्ण विश्वास और सम्पूर्ण सुख का क्षण होता था। उस क्षण में कोई कलह नहीं रहती थी, क्योंकि मन में कोई विचार ही नहीं होता था। मैं यह न जानता कि सैरा किस पूरी तरह अपने को समर्पित कर सकती है तो शायद उन दिनों उसकी सतर्कता से मुझे उतनी शिकायत न होती कि मुझसे वह केवल 'प्याज़' के संकेत से ही क्यों बात करती थी और न ही पारकिस के भेजे हुए काग़ज़ में अपने प्रतिद्वन्द्वी के नाम उसके सन्देश को पढ़कर मुझे उतनी चोट पहुँचती।

उस दिन जब तक हम प्रेम करते रहे तब तक हम पर वी 1 बमों का कोई प्रभाव नहीं हुआ। मैं उस समय अपनी पूरी पूँजी ख़र्च कर चुकने के बाद लेट गया था। मेरा सिर उसके पेट पर था और मेरे मुँह में अभी उसके शरीर का पानी जैसा तरल और अस्पष्ट ज़ायका बाक़ी था। तभी एक बम कॉमन में गिरकर फटा और हमें दूर दक्खिन की तरफ़ शीशे टूटने की आवाज़ सुनाई दी।

''मेरा ख़याल है नीचे के तहखाने में चले चलें,'' मैंने कहा।

''तुम्हारी मकान-मालकिन वहाँ पर होगी। मैं और लोगों के सामने नहीं जाना चाहती।''

किसी को पूरी तरह पा लेने के बाद दायित्व की कोमलता मन पर छा जाती है और व्यक्ति यह नहीं सोचता कि वह केवल एक प्रेमी है और उसका दायित्व कुछ भी नहीं है। ''हो सकता है वह कहीं गई हो। मैं नीचे जाकर देखता हूँ।''

''मत जाओ। देखो, मैं कह रही हूँ, मत जाओ।''

''मैं अभी पल-भर में आया।'' उन दिनों भी हम इस शब्द का प्रयोग करते थे हालाँकि सबको पता था कि कोई भी पल सृष्टि के अन्त तक लम्बा हो सकता है। मैंने अपना ड्रेसिंग गाउन पहनकर टार्च ढूँढ़ा। वैसे टार्च की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि आकाश में हल्का उजाला नज़र आ रहा था और बत्ती के बिना भी मुझे सैरा के चेहरे की रेखाएँ दिखाई दे रही थीं।

''जल्दी आना,'' उसने कहा।

मैं जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतरने लगा तो मुझे फिर एक आते हुए बम की आवाज़ सुनाई दी, और फिर इंजन के कट जाने से कुछ देर ख़ामोशी छाई रही। तब हमें यह पता नहीं था कि वही क्षण खतरे का होता है और उस समय शीशे के पास से हटकर ज़मीन पर लेट जाना चाहिए। धमाके की आवाज़ मैं नहीं सुन सका—जाने पाँच सेकेंड या पाँच मिनट बाद जब मेरी चेतना लौटी तो मैंने अपने को दूसरी ही दुनिया में पाया। मुझे लग रहा था कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हूँ, मगर अँधेरा मुझे घबराए दे रहा है। ऐसे लग रहा था जैसे एक ठंडी मुट्ठी मेरे गाल को दबाए हो। मुँह में लहू का नमकीन स्वाद भरा था। कुछ क्षण मेरा मस्तिष्क बिलकुल ख़ाली रहा, मुझे केवल थकान का-सा अनुभव होता रहा, जैसे मैं किसी लम्बी यात्रा से लौटकर आया होऊँ। मेरे मन में न सैरा की याद थी, न कोई चिन्ता, न ईर्ष्या, न भय और न घृणा, जैसे मेरा मन एक ख़ाली पन्ना था जिस पर क्षण-भर में कोई सुख का एक सन्देश लिखने जा रहा था। मुझे लग रहा था कि स्मरण-शक्ति के लौट आने पर भी वह लिखाई चलती रहेगी और मैं निरन्तर सुख का अनुभव करता रहूँगा।

मगर मेरी स्मरण-शक्ति लौटी तो मुझे वैसा नहीं लगा। एक तो मुझे यह पता चला कि मैं नीचे पीठ के बल पड़ा हूँ और जो चीज़ मेरे ऊपर झुकी हुई है और जिसने उजाले को रोक रखा है, वह सामने का दरवाज़ा है। कुछ और टूटी-फूटी चीज़ों ने उसे अटका लिया था और वह मेरे शरीर से कुछ ही इंच ऊपर झूलकर रह गया था। फिर भी यह विचित्र बात थी कि मुझे कन्धों से लेकर घुटनों तक चोटें आ गई थीं, जैसे कि दरवाज़े की छाया ने ही यह हाल कर दिया हो। दरवाज़े की चीनी की हत्थी ही मुट्ठी की तरह मेरे गाल को दबाए थी और मेरे दो दाँत उसने बाहर निकाल दिए थे। और तभी हेनरी और सैरा की बात मेरे दिमाग़ में आई और मन में यह डर भी जाग आया कि हमारे सम्बन्ध का अन्त तो नहीं हो जाएगा।

दरवाज़े के नीचे से निकलकर मैंने अपने को झाड़ लिया। फिर नीचे तहखाने में गया, मगर वहाँ कोई नहीं था। टूटे हुए दरवाज़े में से सुबह का हल्का उजाला दिखाई दे रहा था। तहस-नहस हुए हॉल में से जैसे एक ख़ालीपन उमड़ा पड़ रहा था। जो पेड़ उजाले को रोके रहता था उसका कहीं पता ही नहीं था, यहाँ तक कि गिरे

हुए तने का भी नामोनिशान नहीं था। काफ़ी दूर पहरेदार सीटियाँ बजा रहे थे। मैं ज़ीने से ऊपर चला गया। ज़ीने का जंगला उड़ गया था और वह एक-एक फुट पलस्तर में धँस गया था। मगर उन दिनों के लिहाज़ से मकान की हालत ज़्यादा ख़राब नहीं हुई थी; पूरा धमाका हमारे पड़ोस के घर पर पड़ा था। मेरे कमरे का दरवाज़ा खुला था और सैरा को मैंने बाहर से ही देख लिया। वह बिस्तर से उतरकर जैसे डर के मारे फ़र्श पर लेटी हुई थी और अविश्वसनीय रूप से छोटी लग रही थी, जैसे कि एक नंगा बच्चा पड़ा हो। "इस बम ने तो बस मार ही दिया था," मैंने कहा।

उसने जल्दी से मुँह फेरा और डरी हुई आँखों से मुझे देखने लगी। मुझे तब तक यह पता नहीं था कि मेरा ड्रेसिंग गाउन फट रहा है और उस पर ऊपर-नीचे पलस्तर की धूल पड़ी है। मेरा सिर भी उस धूल से सफ़ेद हो रहा था और मेरे मुँह और गालों से ख़ून बह रहा था। "ओ ईश्वर!" उसने कहा, "तुम जीवित हो?"

"तुम्हारे कहने से तो लगता है जैसे तुम्हें निराशा हुई हो।"

उसने फ़र्श से उठकर अपने कपड़े उठा लिये। "तुम अभी ही क्यों चल दीं?" मैंने उससे कहा। "अभी हमला समाप्त होने का भोंपू बजेगा, तब चली जाना।"

"नहीं, मुझे जाना ही चाहिए," उसने कहा।

"दो बम एक ही जगह नहीं गिरते," मैंने अनायास ही यह कहावत बोल दी, हालाँकि वह कई बार ग़लत साबित हो चुकी थी।

"तुम्हें काफ़ी चोट आई है?"

"सिर्फ़ मेरे दो दाँत टूट गए हैं, बस!"

"इधर आओ, मैं तुम्हारा मुँह धो दूँ।" मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने कपड़े पहन लिये थे। मैंने और किसी स्त्री को इतनी जल्दी कपड़े पहनते नहीं देखा। वह बहुत आहिस्ता और सावधानी से मेरा मुँह साफ़ करने लगी।

"तुम फ़र्श पर क्या कर रही थीं?" मैंने पूछा।

"प्रार्थना कर रही थी।"

"किससे?"

"जो कोई भी हो, उससे।"

"उससे तो अच्छा होता कि नीचे आकर देखतीं मेरा क्या हाल है।" उसके चेहरे की गम्भीरता से मुझे डर लग रहा था। मैं उसे छोड़कर उसकी गम्भीरता दूर करना चाहता था।

"मैं आई थी," उसने कहा।

"मैंने तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनी।"

"वहाँ कोई भी नहीं था। पहले मैंने तुम्हें भी नहीं देखा। फिर दरवाज़े के नीचे से तुम्हारी बाँह फैली हुई दिखाई दी। मुझे लगा तुम्हारे प्राण निकल चुके हैं।"

"तुम्हें पास आकर देखना चाहिए था।"

"मैंने कोशिश की, मगर दरवाज़ा मुझसे नहीं उठा।"

"मगर तुम मुझे तो हिला सकती थीं। मैं दरवाज़े के नीचे दबा नहीं था। हो सकता था मैं उठ पड़ता।"

"मैं कुछ नहीं कह सकती। मुझे विश्वास था कि तुम्हारे प्राण निकल चुके हैं।"

"तब तो प्रार्थना करने की कोई बात ही नहीं थी," मैं उसे छेड़ता रहा। "तुम किसी चमत्कार की आशा कर रही थीं?"

"जब किसी स्थिति पर मनुष्य का वश न हो तो वह चमत्कार के लिए भी प्रार्थना कर सकता है," वह बोली। "चमत्कार असमर्थ व्यक्तियों के साथ ही होते हैं न! और मैं उस समय बहुत असमर्थ थी।"

"जब तक भोंपू नहीं बजता तब तक तो ठहर जाओ!" मगर वह सिर हिलाकर सीधी कमरे से निकल गई। मैं उसके पीछे-पीछे ज़ीने से नीचे चला गया और मन न होते हुए भी जान-बूझकर उसे तंग करने लगा। "तो आज शाम को मिलोगी?"

"नहीं।"

"तो कल किसी समय?"

"हेनरी कल वापस आ रहा है।"

हेनरी, हेनरी, हेनरी! यह नाम हमेशा हमारे बीच आ टपकता था और सारी प्रसन्नता, मस्ती और उत्साह पर पानी डाल देता था। इससे मुझे याद हो आता था कि एक दिन समाप्त हो जाता है और उसकी जगह केवल एक तरह का स्नेह और एक आदत शेष रह जाती है। "तुम इस तरह डरते क्यों हो?" उसने कहा। "प्रेम का कभी अन्त नहीं होता...।" और उस दिन हॉल में उससे अलग होने के पूरे दो साल बाद उसके मुँह से सुनने को मिला था, "अरे, तुम?"

6

पहले काफ़ी दिन मेरे मन में आशा बनी रही थी। मैं सोचता था कि शायद यह संयोग की ही बात है जो टेलीफ़ोन पर उससे भेंट नहीं हो पाती। सप्ताह-भर बाद उसकी नौकरानी से पता चला कि वह देहात में चली गई है। तब भी मैं सोचता रहा कि लड़ाई के दिन हैं, रास्ते में उसकी चिट्ठियाँ गुम हो जाती होंगी। हर सुबह मैं अपने लेटर-बक्स के खुलने और बन्द होने की आवाज़ सुनता और जान-बूझकर बिस्तर में पड़ा मकान-मालकिन के चिट्ठयाँ ऊपर लाने की राह देखता रहता। फिर काफ़ी देर

चिट्ठियों को पड़ी रहने देता जिससे जितनी देर तक हो निराशा की घड़ी को टाला जा सके। फिर एक-एक चिट्ठी को खोलकर पूरा पढ़ने लगता। अन्तिम चिट्ठी पर पहुँचकर ही पता चलता कि सैरा की चिट्ठी नहीं है। तब से चार बजे की डाक तक ज़िन्दगी की रफ़्तार सुस्त हो जाती और उसके बाद जैसे-तैसे अगली पूरी रात सुबह का इन्तज़ार करते हुए कटती।

पहले सप्ताह-भर मैंने भी अपनी ऐंठ में उसे चिट्ठी नहीं लिखी। फिर एक दिन मैंने अपनी ऐंठ को ताक़ पर रखा और अपनी सारी उत्सुकता और कड़वाहट एक चिट्ठी में उँडेल दी। चिट्ठी सामने कॉमन के उत्तर में ही जानी थी। फिर भी मैंने उसके बाहर लिख दिया 'आवश्यक' और साथ में 'आगे भेज दीजिए।' उसका भी कोई उत्तर नहीं आया तो मेरी आशा लुप्त होने लगी। तब मुझे उसके शब्द याद आने लगे, "लोग ईश्वर को कभी देखते नहीं, फिर भी जीवन-भर उससे प्रेम नहीं करते?" मेरे मन में घृणा भरने लगी कि वह आइने में अपना चेहरा हर तरह से अच्छा ही क्यों देखना चाहती है! अपनी आँखों में ऊँची उठने के लिए वह अपनी उदासीनता को भी धार्मिकता का रंग क्यों देना चाहती है? इससे तो वह साफ़ मुझसे कह सकती थी कि मेरे बजाय उसे किसी और के साथ सोना अच्छा लगता है।

वे बहुत बुरे दिन थे। कल्पना करना और हर चीज़ को रूप देकर उसके बारे में सोचना तो मेरा पेशा ही है। दिन में पचासों बार और रात को भी जब कभी मेरी आँख खुल जाती तो मेरी कल्पना में एक नाटक आरम्भ हो जाता...हर बार वह एक ही नाटक, कि सैरा किसी और व्यक्ति के साथ प्रेम कर रही है, वही कुछ जो मेरे साथ करती थी, अब उस व्यक्ति के साथ कर रही है, अपने ख़ास ढंग से उसे चूम रही है और उसी तरह एक दर्द की-सी कराह उसके मुँह से निकल रही है...वह अपने को पूरी तरह उस व्यक्ति के हाथों में समर्पित किए है। रात को तो मैं नींद की टिकिया खा लेता जिससे जल्दी से नींद आ जाए, मगर ऐसी कोई टिकिया नहीं थी जिससे दिन में भी नींद आई रहे। केवल स्वचालित बम ही दिन के समय मेरा ध्यान थोड़ा बँटा देते थे, क्योंकि ख़ामोशी और धमाके के बीच जो कुछ क्षण बीतते उनमें सैरा की बात मेरे दिमाग़ में नहीं रहती थी। तीन सप्ताह गुज़र गए और मेरे दिमाग़ में वह नाटक ज्यों-का-त्यों चलता रहा। मुझे लगता था कि वह हमेशा उसी तरह चलता रहेगा और मैं सचमुच आत्महत्या की बात सोचने लगा। मैंने आत्महत्या के लिए दिन भी निश्चित कर लिया और उसके लिए अपनी नींद की टिकियाँ बचाकर रखने लगा। सोचा कि ज़िन्दगी-भर मैं इस तनाव की स्थिति में नहीं रह सकता। मगर वह दिन आया और निकल गया। नाटक उसी तरह चलता रहा और मैं आत्महत्या नहीं कर सका। सोचा, आत्महत्या करना बुज़दिली है। सच पूछा जाए तो सैरा के उस भाव की याद ने ही मुझे रोक दिया जो बम पड़ने के बाद कमरे में लौटकर मैंने उसके

चेहरे पर देखा था। वह भाव निराशा का था और उसका अर्थ यह था कि वह मेरी मृत्यु की आशा कर रही थी जिससे दूसरे व्यक्ति के साथ अपने सम्बन्ध को लेकर उसे मन में ज़्यादा ग्लानि न हो। कम-से-कम इतना अहसास उसमें बाक़ी था। मैं आत्महत्या कर लेता, वह मेरी तरफ़ से निश्चिन्त हो जाती, चाहे नए व्यक्ति के साथ भी कुछ साल बाद उसे उसी परेशानी का सामना करना पड़ता। मैंने सोचा कि मैं उसे निश्चिन्त नहीं होने दूँगा। मुझसे बन पड़ता तो मैं उसे इतना पेरशान करता कि वह भी याद करती, मगर ऐसा करना मेरे वश में नहीं था और मुझे अपने पर बहुत गुस्सा आता था। सचमुच, मैं उससे कितनी घृणा करता था!

मगर प्रेम की तरह घृणा का भी एक अन्त होता है। छह महीने के बाद एक दिन मुझे लगा कि सारा दिन सैरा की बात नहीं सोची और अपने में खुश रहा हूँ। मगर मेरी घृणा बिलकुल समाप्त नहीं हो गई थी। मैंने एक स्टेशनरी की दुकान से एक पिक्चर-पोस्टकार्ड लेकर उछलते दिल से उस पर सैरा के लिए एक सन्देश लिखा। इरादा शायद यही था कि उसके दिल को कुछ चोट पहुँचाई जाए। मगर पता लिखते हुए मेरा मन बदल गया और मैंने पोस्टकार्ड सड़क पर एक तरफ़ डाल दिया। मुझे आश्चर्य होता है कि हेनरी से मिलते ही मेरी घृणा फिर क्यों उतनी ही तीव्र हो उठी। जब मैं पारकिस की अगली रिपोर्ट खोल रहा था तो मन में सोच रहा था कि क्या प्रेम में भी फिर से वैसी ही तीव्रता नहीं आ सकती!

पारकिस अपना काम ठीक से कर रहा था। पाउडरवाली बात काम कर गई थी और फ्लैट का पता चल गया था। वह 16 सेडर रोड का फ्लैट था। वहाँ कोई मिस स्माईद और उसका भाई रिचर्ड रहते थे। मैं सोचने लगा कि क्या यह मिस स्माईद वैसी ही आँखें मूँदकर बैठनेवाली बहन तो नहीं है जैसा आँखें मूँदकर बैठनेवाला पति हेनरी है। और उस नाम के हिज्जों को देखकर मेरा अभिमान भी जाग उठा। तो क्या वह इतना नीचे जा उतरी थी कि सेडर रोड के स्माईद से प्रेम करने लगी थी? यह पिछले दो साल के प्रेमियों की लम्बी शृंखला में आख़िरी कड़ी थी, या कि यही वह आदमी था जिसकी वजह से उसने सन् चवालीस में मुझे छोड़ दिया था? मैं पारकिस की रिपोर्टों में उसके सम्बन्ध में पढ़ने की बजाय उस आदमी को पास से देखना चाहता था।

पारकिस से समय निश्चित करके मैं एक छोटे-से रेस्तराँ में उससे मिला तो मैंने उससे पूछा, ''तो क्या मैं सीधे उस आदमी के घर चला जाऊँ और उससे कहूँ कि मैं उस स्त्री का पति हूँ जिसे वह फुसला रहा है?'' मैं पारकिस के कहने से ही उसे वहाँ मिला था। उसका लड़का साथ था, इसलिए हम लोग किसी शराबखाने में नहीं जा सकते थे।

''मैं यह राय नहीं दूँगा,'' पारकिस अपनी चाय में चीनी का तीसरा चम्मच मिलाता हुआ बोला। उसका लड़का सन्तरे की बोतल और बन लिये कुछ दूर बैठा था और हमारी बातचीत नहीं सुन रहा था। हर आने-जानेवाले को वह बहुत ध्यान से देख रहा था।

लोग अन्दर आकर अपने हैट और कोट पर पड़ी हुई हल्की-हल्की बर्फ़ झाड़ते तो वह इस तरह हर-एक को देखता जैसे उसके बारे में भी उसे रिपोर्ट देनी हो। शायद पारकिस की शिक्षा ही ऐसी थी। ''आपको पता है,'' पारकिस ने कहा, ''कि अगर कोई आदमी गवाही देनेवाला न हो तो अदालत में जाकर मुश्किल पड़ सकती है।''

''मगर बात अदालत तक पहुँचेगी ही नहीं।''

''मतलब आपस में ही समझौता हो जाएगा?''

''नहीं, मुझे इसमें दिलचस्पी ही नहीं है,'' मैंने कहा। ''स्माईद नाम के आदमी से कौन झगड़ता है! मैं उसे सिर्फ़ देखना चाहता हूँ।''

''तो सबसे आसान चीज़ यह होगी कि आप जाकर कहें कि आप बिजली का मीटर देखने आए हैं।''

''मैं वह इंस्पेक्टरों वाली टोपी नहीं पहन सकता।''

''मैं इस बात को समझता हूँ। मैं खुद ऐसी चीज़ पसन्द नहीं करता और मैं चाहूँगा कि मेरा लड़का भी बड़ा होकर ऐसी चीज़ों से बचता रहे।'' उसकी उदास आँखें लड़के की हर गतिविधि को देख रही थीं। ''यह आइसक्रीम माँग रहा था, मगर मैंने कहा कि नहीं, इस मौसम में तुम्हें आइसक्रीम नहीं ले दूँगा।'' वह थोड़ा सिहर गया जैसे आइसक्रीम के ख़याल से ही उसके शरीर में ठंड भर गई हो। ''हर काम की अपनी इज़्ज़त होती है साहब!'' मुझे क्षण-भर बाद समझ आया कि वह किस मतलब से यह कह रहा है।

''तुम अपने लड़के को मेरे साथ भेज सकते हो?'' मैंने कहा।

''अगर आप इस सम्बन्ध में निश्चित हों कि वहाँ कोई ऐसी-वैसी बात नहीं होगी,'' उसने कुछ अनमने स्वर में कहा।

''मैं उस समय नहीं जाऊँगा जब मिसेज़ माइल्स वहाँ होंगी। ऐसा कोई दृश्य लड़के के सामने नहीं आएगा जिसके लिए सेंसर को एतराज़ हो कि बच्चों को वह नहीं देखना चाहिए।''

''मगर लड़के को साथ ले जाने की ज़रूरत क्या है?''

''मैं उनसे कहूँगा कि लड़के की तबीयत ठीक नहीं है और हम लोग ग़लत पते पर आ गए हैं। वे लड़के को थोड़ी देर सुस्ताने से मना नहीं कर सकेंगे।''

''ऐसे काम में लड़का बहुत होशियार है,'' पारकिस गर्व के साथ बोला। ''लैंस को कोई मना नहीं कर सकेगा।''

''लड़के का नाम लैंस है?''

''जी हाँ, राउंड टेबल के सर लैंसलाट के नाम पर इसका नाम रखा है।''

''अच्छा? मगर उसके साथ तो ख़ासी बुरी घटना हुई थी।''

''मगर पवित्र 'ग्रेल' तो उसी को मिला था!''

''वह गैलहैड को मिला था। लैंसलाट तो गिनेवीर के साथ बिस्तर में पकड़ा गया था।''

जाने हम भोले और अनजान लोगों को ख़ामख़ाह क्यों तंग करते हैं! क्या उसमें भी ईर्ष्या ही छिपी रहती है? पारकिस ने लड़के की तरफ़ ऐसे देखा जैसे लड़के ने उसे धोखा दिया हो, और कहा, ''अच्छा? मगर मुझे इसका पता नहीं था।''

7

अगले दिन सेडर रोड पर जाने से पहले मैंने पारकिस को चिढ़ाने के लिए लड़के को आइसक्रीम खाने को ले दी। पारकिस ने बतलाया था कि हेनरी उस दिन एक कॉकटेल पार्टी दे रहा है, इसलिए हमें वहाँ जाने में किसी तरह का डर नहीं था। उसने अच्छी तरह लड़के के कपड़ों के बल निकालकर उसे मेरे साथ कर दिया था। लड़का अपने जीवन में पहली बार किसी के साथ अकेला बाहर आया था, इसलिए उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे थे, जबकि मैंने अपने सबसे ख़राब कपड़े पहन रखे थे। ऐसा लगता था जैसे एक लॉर्ड का बेटा अपने नौकर के साथ चला जा रहा हो। थोड़ी-सी स्ट्राबेरी आइसक्रीम लड़के से गिर गई, जिससे उसके सूट पर एक जगह दाग़ पड़ गया। मैं चुपचाप बैठा उसे प्याली साफ़ करते देखता रहा। जब वह खा चुका तो मैंने पूछा, ''और लोगे क्या?'' उसने सिर हिला दिया। ''यही स्ट्राबेरी?''

''नहीं वेनीला,'' उसने कहा और काफ़ी देर बाद साथ जोड़ा, ''जी!''

दूसरी आइसक्रीम उसने बहुत धीरे-धीरे और बहुत ध्यान से चम्मच को देखते हुए खाई, जैसे किसी चीज़ पर उँगलियों के निशानों की परीक्षा कर रहा हो। फिर हम हाथ-में-हाथ डाले कॉमन में होकर सेडर रोड की तरफ़ चले, जैसे एक बाप-बेटा चले जा रहे हों। मैं सोचने लगा कि न तो सैरा के कोई बच्चा है और न मेरे। अगर हम वासना, ईर्ष्या और पारकिस की रिपोर्टों के इस लुका-छिपी के धन्धे में न पड़कर आपस में ब्याह करके बच्चे पैदा करते और आराम से शान्त और ख़ामोश ज़िन्दगी व्यतीत करते तो कितना अच्छा होता!

सेडर रोड पहुँचकर मैंने ऊपरी मंज़िल की घंटी बजाई। लड़के से मैंने कहा, ''याद रखना, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।''

''अगर वे मुझसे आइसक्रीम खाने को कहें...?'' वह बोला। पारकिस ने उसे हर चीज़ के लिए तैयार रहना सिखा दिया था।

''नहीं, ऐसा वे नहीं कहेंगे।''

एक अधेड़ स्त्री ने जिसके रूखे सफ़ेद बाल कहीं से धर्मार्थ बनवाए गए लगते थे, दरवाज़ा खोला। मैंने सोचा कि वही मिस स्माईद होगी। मैंने पूछा, ''क्या मिस्टर विलकॉक्स यहाँ रहते हैं?''

"जी नहीं। मेरा ख़याल है आप..."

"आपको पता है कि वे निचली मंज़िल पर भी नहीं रहते?"

"जी नहीं, इस घर में कोई मिस्टर विलकॉक्स नहीं हैं।"

"ओहो!" मैंने कहा। "मैं इतनी दूर से बच्चे को साथ लेकर आया हूँ और इस बेचारे की तबीयत ख़राब हो रही है।"

लड़के के चेहरे की तरफ़ देखने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। मगर मिस स्माईद की आँखों से ही लग रहा था कि लड़का अपना पार्ट ठीक अदा कर रहा है। मिस्टर सैवेज को उस समय उसे अपनी टीम का सदस्य मानकर गर्व का अनुभव होता।

"बच्चे को कुछ देर अन्दर आकर बैठ लेने दीजिए," मिस स्माईद बोली।

"बहुत-बहुत मेहरबानी!"

अन्दर जाते हुए मैं सोचने लगा कि सैरा न जाने कितनी बार इस दरवाज़े से गुज़रकर अन्दर इस अस्त-व्यस्त हॉल में आई होगी! आख़िर मैं उस आदमी के घर में पहुँच ही गया था। सामने खूँटी पर जो भूरा पतला हैट लटक रहा था, वह शायद उसी का था। हर रोज़ वे उँगलियाँ, मेरे प्रतिद्वन्द्वी की उँगलियाँ, जो अब सैरा के शरीर को छूती थीं, वही इस दरवाज़े के हैंडल को भी घुमाती होंगी। दरवाज़ा खुला तो पहले मेरी नज़र सामने गैस की आग की पीली लपटों पर पड़ी। बर्फ़ पड़ने के कारण शाम होने से पहले ही झुटपुटा हो गया था और अन्दर गुलाबी शेड से ढके हुए लैम्प जल रहे थे। हर चीज़ पर मोटे छींट के गिलाफ चढ़े हुए थे।

"मैं लड़के के लिए पानी ला दूँ?"

"बहुत-बहुत मेहरबानी!" मुझे ध्यान आया कि यह मैं पहले भी कह चुका हूँ।

"या कहें तो ऑरेंज स्क्वैश ले आऊँ?"

"नहीं, आप इतनी तकलीफ़ न करें।"

मगर लड़का तभी दृढ़ता के साथ बोल उठा, "मैं ऑरेंज स्क्वैश पिऊँगा," और फिर काफ़ी देर के बाद जब वह दरवाज़े से बाहर जा रही थी तो उसने साथ जोड़ा, 'जी।' जब हम अकेले रह गए तो मैंने लड़के की तरफ़ देखा। वह छींट से अपनी पीठ टिकाए लम्बा हो रहा था और वास्तव में ही बीमार नज़र आता था। अगर वह मुझे आँख न मारता तो मुझे शायद लगता कि वह सचमुच ही...। मिस स्माईद ऑरेंज स्क्वैश लेकर आ गई तो मैंने कहा, "आर्थर, इनसे कहो धन्यवाद!"

"इसका नाम आर्थर है?"

"आर्थर जेम्स," मैंने कहा।

"पुराने ढंग का नाम है।"

"हमारा खानदान ही पुराने ढंग का है। इसकी माँ टेनिसन की बहुत भक्त थी।"

"तो क्या वह...?"

"हाँ," मैंने कहा और करुण भाव से लड़के की तरफ़ देखा।

"तब तो यह लड़का ही आपका एक-मात्र सुख है।"

"हाँ सुख भी है और चिन्ता भी," मैंने कहा। मुझे अब शरम आ रही थी। वह बेचारी इतनी भोली थी और मैं वहाँ क्या झख मार रहा था! उस व्यक्ति से मिल पाने की अब भी कोई सम्भावना नज़र नहीं आ रही थी और लड़के बेचारे को मैंने ख़ामख़ाह परेशान कर रखा था। मैंने अब दूसरी युक्ति अपनाई। "मैं अपना परिचय दे दूँ," मैंने कहा। "मेरा नाम ब्रिजिज़ है।"

"मेरा नाम स्माईद है।"

"मुझे लगता है मैंने आपको कहीं देखा है।"

"मेरा ऐसा ख़याल नहीं। मुझे चेहरे कभी नहीं भूलते।"

"शायद कभी कॉमन में ही देखा हो।"

"वहाँ कभी-कभी मैं अपने भाई के साथ जाती हूँ।"

"उनका नाम जॉन स्माईद तो नहीं है?"

"नहीं, उसका नाम रिचर्ड है," वह बोली। "अब लड़के की तबीयत कैसी है?"

"अब और भी ख़राब हो गई है," पारकिस का बेटा बोला।

"इसका टेम्परेचर ले लें?"

"मुझे थोड़ा ऑरिंज स्क्वैश और दे दें।"

"ऑरिंज स्क्वैश से नुकसान तो नहीं होगा?" मिस स्माईद कुछ विस्मित-सी बोली। "बच्चा माँग रहा है!"

"नहीं, हमारी वजह से आपको पहले ही बहुत तकलीफ़ हुई है।"

"आप लोग इस तरह चले जाएँगे तो मेरा भाई मुझ पर बहुत नाराज़ होगा। उसे बच्चों से बहुत प्रेम है।"

"आपके भाई साहब घर पर नहीं हैं?"

"बस अब वह आया ही चाहता है।"

"इस समय तक उनका काम पूरा हो जाता होगा।"

"नहीं, उसके काम का दिन तो इतवार ही होता है।"

"अच्छा, तो वे पादरी हैं!" मैंने कुछ व्यंग्य के साथ कहा। मगर मुझे जो उत्तर मिला उसमें मैं थोड़ा चकरा गया। "नहीं वह पादरी नहीं है।" वह जाने किस निजी सोच में पड़ गई जिससे हम दोनों के बीच एक पर्दा-सा छा गया। फिर वह उठी तो साथ ही हॉल का दरवाज़ा खुल गया और वह व्यक्ति मेरे सामने आ गया। हॉल के झुटपुटे में मुझे लगा जैसे एक सुन्दर अभिनेता मेरे सामने खड़ा हो...ऐसा अभिनेता जिसे आवारा लोगों की तरह बार-बार अपना चेहरा आइने में देखने की आदत हो।

मुझे मन में खेद के साथ असन्तोष का भी अनुभव हुआ। सोचा कि क्या सैरा को इससे अच्छा आदमी नहीं मिल सकता था। जब वह लैम्प की रोशनी के सामने पहुँचा तो मैंने देखा कि उसके गाल की हड्डी से नीचे ठोड़ी तक फैला हुआ एक निशान है जो मसली हुई जामुनी स्ट्रॉबेरी जैसा लगता है, हालाँकि उसमें एक व्यक्तित्व भी झलकता है। यह जानकर कि मुझे उससे ईर्ष्या है, शायद उसे कुछ भी फ़र्क़ न पड़ता।

"मिस्टर ब्रिजिज़, यह मेरा भाई रिचर्ड है," मिस स्माईद बोली। "मिस्टर ब्रिजिज़ के लड़के की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए मैंने इन्हें अन्दर बुला लिया है।"

उसने लड़के की तरफ़ देखा और मुझसे हाथ मिलाया। मुझे महसूस हुआ कि उसका हाथ रूखा और गरम है। "मैंने तुम्हारे लड़के को पहले कहीं देखा है," उसने कहा।

"कहाँ, कॉमन में?"

"शायद।"

उस कमरे के लिहाज़ से वह काफ़ी बड़ा नज़र आता था—छींट के उन गिलाफ़ों के साथ उसका कोई मेल नहीं था। मैं सोचने लगा कि जब सैरा और वह साथ के कमरे में आपस में प्रेम करते होंगे तो क्या उसकी बहन इस कमरे में बैठी रहती होगी, या वे लोग उसे कोई काम बताकर बाहर भेज देते होंगे।

तो उस आदमी को मैंने देख लिया और अब वहाँ बैठे रहने की कोई वजह नहीं थी। मगर उसे देखकर मेरे मन में कई तरह के सवाल उठ रहे थे। वे लोग आपस में कहाँ मिले थे? क्या आरम्भ सैरा की तरफ़ से हुआ था? मगर उसने इस आदमी में देखा क्या था? वे दोनों कब से मिल रहे थे और कितनी बार मिल चुके थे? सैरा के लिखे हुए वे शब्द मुझे ज़बानी याद थे—मैं जानती हूँ कि मुझे तुम्हें कुछ भी लिखने या कहने की आवश्यकता नहीं!...मैं जानती हूँ कि यह मेरे प्रेम का आरम्भ ही है, फिर भी मन होता है कि तुम्हें पाकर और हर चीज़ और हर व्यक्ति को खो दूँ।" और मैं उस व्यक्ति के गाल पर स्ट्रॉबेरी के निशान को देखता हुआ सोचने लगा कि दुनिया में किस पर भरोसा किया जा सकता है! आदमी कुबड़ा हो या लूला हो, उसके पास वह अस्त्र तो होता ही है जिससे वह किसी को अपने प्रेम का लक्ष्य बना सकता है।

"आपके आने का असली उद्देश्य क्या है?" वह व्यक्ति सहसा मेरे विचारों को चीरता हुआ बोला।

"मैंने मिस स्माईद को बताया ही था। मेरे एक परिचित हैं विलसन..."

"मुझे आपके चेहरे की तो याद नहीं, मगर आपके लड़के का चेहरा मेरा देखा हुआ है।" उसके हाथ कुछ इस तरह हिले जैसे वह लड़के को छूकर देखना चाहता हो। उसकी आँखों में एक अस्पष्ट-सी कोमलता नज़र आ रही थी। देखिए, मुझसे

घबराने की कोई बात नहीं," वह बोला। "मेरे पास बहुत-से लोग आते रहते हैं। मैं लोगों की सहायता करना चाहता हूँ।"

"लोग पहले बहुत संकोच करते हैं," मिस स्माईद जैसे समझाने लगी। मेरी समझ में खाक नहीं आ रहा था कि वे लोग क्या बात कर रहे हैं।

"मैं विल्कॉक्स नाम के आदमी का पता करने आया था।"

"यहाँ इस नाम का कोई आदमी नहीं है, यह आपको भी पता है और मुझे भी।"

"आप मुझे टेलीफ़ोन डायरेक्टरी दिखा दें तो मैं उसका ठीक पता देख लूँगा।"

"आप बैठे रहिए," उसने कहा और मुरझाई हुई नज़र से देखता हुआ कुछ सोचता रहा।

"मेरा ख़याल है मुझे अब चलना चाहिए। आर्थर की तबीयत अब कुछ बेहतर है और विल्कॉक्स...।" उसकी रहस्यपूर्ण बातों से मेरी तबीयत काफ़ी परेशान हो रही थी।

"आप जाना चाहें तो चले जाइए, मगर क्या लड़के को आप आध घंटे के लिए यहाँ छोड़ जाएँगे? मैं इससे कुछ बात करना चाहता हूँ।" मुझे लगा कि शायद उसने पहचान लिया है कि यह लड़का पारकिस का साथी है और इसीलिए उसकी कुछ जाँच करना चाहता है। मैंने कहा, "आपको जो कुछ पूछना है, आप मुझसे पूछ लीजिए।" उसका साफ़ गाल मेरी तरफ़ होता तो मेरा गुस्सा बढ़ने लगता और उसका दाग़वाला गाल मेरी तरफ़ होता, तो मेरा गुस्सा शान्त होने लगता। उस गाल को देखकर मुझे यह विश्वास नहीं होता था कि सैरा के मन में ऐसे व्यक्ति के लिए भी कामना जाग सकती है। वैसे उस घर की फूलदार छींट और मिस स्माईद की वहाँ उपस्थिति भी शरीर की भूख मिटाने के लिए अनुकूल वातावरण नहीं था। परन्तु मेरी निराशा मुझे अन्दर से कोंचकर कहने लगी कि तुम क्या चाहते हो कि यह सम्बन्ध वासना का सम्बन्ध न होकर प्रेम का सम्बन्ध हो!

"हम दोनों काफ़ी बड़े हो चुके हैं," वह बोला, "मगर यह बच्चा छोटा है और अध्यापकों और पादरियों के झूठ ने अभी इसे ज़्यादा ख़राब नहीं किया।"

"ये जहन्नुमी बातें मेरी समझ में खाक नहीं आ रहीं।" और फिर मिस स्माईद की तरफ़ देखकर मैंने कहा, "माफ़ कीजिएगा!"

"यही तो बात है," वह बोला। "मैं आपको ज़रा और गुस्सा दिला दूँ तो जैसे अब आप 'जहन्नुमी' शब्द का प्रयोग कर रहे हैं वैसे ही आप 'ओ मेरे ईश्वर' जैसे शब्द का प्रयोग करने लगेंगे।"

मुझे लगा कि मेरी बात से उसे काफ़ी धक्का लगा है। मैंने सोचा कि हो सकता है कि वह द्वैतवादी गिरजे का पादरी हो, क्योंकि मिस स्माईद ने कहा तो था कि वह इतवार को ही काम करता है। मगर इस तरह का आदमी सैरा का प्रेमी हो, यह बात

कितनी विचित्र थी! इससे सहसा सैरा का महत्त्व मेरी आँखों में कम होने लगा और उसका प्रेम मुझे एक मज़ाक-सा लगने लगा। मुझे लगा कि अगली किसी पार्टी में शायद सैरा के प्रेम का यह मज़ाक दूसरों को भी सुना सकूँगा। क्षण-भर के लिए मैंने उसे अपने से दूर हटा दिया।

"मेरी तबीयत अभी ठीक नहीं हुई," तभी लड़का बोल उठा, "क्या मुझे थोड़ा-सा ऑरेंज स्क्वैश और मिल सकता है?"

"नहीं बेटे, अब और स्क्वैश मत पिओ," मिस स्माईद बोली।

"मेरा ख़याल है मुझे अब इसे ले जाना चाहिए। मैं आप लोगों का बहुत आभारी हूँ।" और अपनी आँख उस आदमी के स्ट्रॉबेरीवाले गाल पर रखने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा, "मेरी किसी बात से आपको चोट लगी हो तो बुरा नहीं मानिएगा। मेरा ऐसा मतलब नहीं था। आपका धार्मिक विश्वास और मेरा विश्वास अलग-अलग हैं।"

उसने कुछ आश्चर्य के साथ मेरी तरफ़ देखा और कहा, "लेकिन मेरा तो कोई भी धार्मिक विश्वास नहीं। मैं किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता।"

"मगर आपको एतराज़ था न कि..."

"मुझे उन सब शब्दों से नफरत है जो हमें विरासत में मिले हैं। माफ़ कीजिएगा मिस्टर...मिस्टर ब्रिजिज़, मुझे पता है कि मैं ज़रूरत से ज़्यादा आगे बढ़ जाता हूँ। मगर मुझे कई बार लगता है कि हमारे व्यवहार के कई शब्दों से भी अन्ध-विश्वास की बू आती है। उदाहरण के लिए शब्द 'गुड बाई' को ही ले लीजिए। मैं तो चाहता हूँ कि मेरे पोते के लिए 'ईश्वर' का भी इतना ही अर्थ रह जाए कि यह स्वाहिली भाषा का एक शब्द है।"

"आपके पोता है?"

"मेरे कोई बच्चा नहीं है," वह मुरझाए हुए स्वर में बोला। "मुझे आपके बच्चे को देखकर सचमुच स्पर्द्धा होती है। एक बच्चे के प्रति हमारा बहुत कुछ उत्तरदायित्व रहता है।"

"आप इससे क्या पूछना चाहते थे?"

"मैं यही चाहता था कि यह इस जगह का अभ्यस्त हो जाए जिससे फिर कभी यहाँ आ सके। एक बच्चे को इनसान कितनी ही बातें बताना चाहता है। मैं इसे बताना चाहता हूँ कि यह दुनिया कैसे बनी है और मृत्यु क्या है। मैं उसे झूठ से बाहर निकालना चाहता हूँ जो स्कूलों में सिखाया जाता है।"

"आध घंटे में आप ये सब कर लेते?"

"आदमी उतने में बीज तो बो ही सकता है।"

"यह वाक्य भी धर्मग्रन्थों का है," मैंने उसे चिढ़ाने के लिए कहा।

"यह आपको बताने की ज़रूरत नहीं। मेरे संस्कार भी तो ऐसे ही हैं।"

''क्या सचमुच लोग छिपकर आपके पास आते हैं?''

''आपको शायद आश्चर्य हो,'' मिस स्माईद बोली। ''लोग आशा के एक सन्देश के लिए तरसते हैं।''

''आशा के सन्देश के लिए?''

''हाँ, आशा के सन्देश के लिए,'' स्माईद बोला। ''यदि संसार में हरएक को यह पता चल जाए कि जो कुछ यहाँ पर है, बस वही कुछ सत्य है और इससे आगे कोई प्रतिदान, कोई पुरस्कार या कोई दंड नहीं है, तो सोचिए कि संसार के लिए यह कितनी बड़ी आशा की बात होगी!'' उस आदमी का स्ट्रॉबेरी का निशान दूसरी तरफ़ रहता था तो उसके चेहरे पर एक विचित्र भद्रता दिखाई देने लगती थी। ''और तब हम इसी दुनिया को अपने लिए स्वर्ग नहीं बना सकेंगे?''

''मगर उससे पहले हमें बहुत-सी चीज़ों की व्याख्या करनी होगी,'' मैंने कहा।

''आप मेरा पुस्तकालय देखेंगे?''

''लन्दन के दक्षिण में इससे अच्छा तार्किक पुस्तकालय नहीं है,'' मिस स्माईद बोली।

''मुझे धर्म-परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है मिस्टर स्माईद,'' मैंने कहा। ''कभी-कभार की बात छोड़ दें तो मैं भी किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता।''

''मगर कभी-कभार का भी तो इलाज होना चाहिए।''

''चाहे यह एक विचित्र बात लगती है, मगर वही क्षण आशा के क्षण होते हैं।''

''अभिमान और स्वार्थ भी तो आशा का बाना पहन लेते हैं।''

''मुझे इन दोनों चीज़ों का कोई सम्बन्ध नज़र नहीं आता। वे क्षण तो जैसे सहसा ही आ जाते हैं—बिना कारण, एक गन्ध की तरह...।''

''आह!'' स्माईद बोला। ''ये सब पुरानी बातें हैं—फूल को किसने बनाया? उसे रंग किसने दिए? जो घड़ी टिकटिक करती है, उसके बनानेवाला भी कोई होना ही चाहिए। श्वेनिगन पच्चीस साल पहले इन सब बातों का जवाब दे चुका है। मैं आपको अभी दिखाता हूँ...।''

''नहीं, आज नहीं। मुझे अब लड़के को घर ले ही जाना चाहिए।'' उसके हाथ फिर हताश कोमलता के साथ मिले, जैसे वह एक ऐसा प्रेमी हो जिसका प्रेम अस्वीकार कर दिया गया हो। मुझे लगा कि जाने कितने लोगों ने मरते समय उसे अपने से दूर रखने की चेष्टा की होगी। मेरा मन हो रहा था कि मैं भी उसे कुछ आशा का सन्देश दे सकूँ, मगर उसका घमंडी अभिनेता वाला गाल मेरी तरफ़ आ गया। मुझे उतनी देर ही उससे सहानुभूति रहती थी जितनी देर वह दीन-हीन और असहाय नज़र आता था। मैंने सोचा कि आयर और रसेल का तो इन दिनों फैशन ही है, पर

क्या उसके पुस्तकालय में तार्किक सम्पूर्णतावादी साहित्य भी होगा, नारेबाज़ी का साहित्य एक चीज़ है और तटस्थ विवेकपूर्ण साहित्य दूसरी चीज़।

हम दरवाज़े के पास पहुँच गए तो उसने उस ख़तरनाक शब्द 'गुड बाई' का प्रयोग नहीं किया। मैंने उसके सुन्दर गाल को लक्ष्य में रखकर कहा, "देखिए, मेरी एक मित्र हैं मिसेज़ माइल्स। आप उनसे मिलिए। उन्हें आपकी बातों में ज़रूर रुचि होगी।" और इतना कहते ही मैं रुक गया। लक्ष्य ठीक रहा था। स्ट्रॉबेरी का निशान जैसे उसके सारे चेहरे पर फैल गया। "अरे!" मिस स्माईद ने कहा और सहसा अपना चेहरा दूसरी तरफ़ मोड़ लिया। मैंने उसके दिल को तकलीफ़ पहुँचाई थी, मगर मेरे दिल को भी उससे तकलीफ़ ही हुई थी। मैं तो चाहता था कि मेरी सोची हुई बात ग़लत निकलती।

बाहर जब हम नाली के पास पहुँचे तो पारकिस के लड़के की तबीयत सचमुच ख़राब हो गई। मैं उसके पास खड़ा होकर सोचने लगा कि क्या सैरा ने स्माईद को भी छोड़ दिया है और अब मुझे किसी और व्यक्ति की खोज करनी होगी? क्या इसका कोई अन्त नहीं है?

8

"मुझे ज़रा भी मुश्किल नहीं पड़ी," पारकिस बोला। "वहाँ भीड़ बहुत थी। मिसेज़ माइल्स ने समझा कि मैं मिस्टर माइल्स का मन्त्रालय का कोई मित्र हूँ और मिस्टर माइल्स ने सोचा कि मैं मिसेज़ माइल्स के मित्रों में से हूँ।"

"अच्छी कॉकटेल पार्टी थी?" मुझे वह पहली पार्टी याद आ रही थी जिसमें मैंने सैरा को एक अपरिचित व्यक्ति की बाँहों में देखा था।

"बहुत ही अच्छी पार्टी थी साहब! मगर मिसेज़ माइल्स कुछ उखड़ी-उखड़ी-सी लग रही थीं। उन्हें बहुत बुरी खाँसी हो रही है।" मुझे यह सुनकर खुशी ही हुई। सोचा कम-से-कम इस पार्टी में तो उसका किसी से छिपकर मिलना नहीं हुआ होगा! पारकिस ने एक भूरे काग़ज़ में लिपटा हुआ पारसल मेरे सामने रख दिया और ज़रा गर्व के साथ कहा, "उसके कमरे का रास्ता मुझे नौकरानी ने बता दिया था। कोई देख लेता तो मैं कहता कि मैं गुसलखाने का रास्ता ढूँढ़ रहा हूँ। मगर किसी ने देखा नहीं। वहाँ यह डायरी उसके डेस्क पर पड़ी थी। शायद उस दिन वह इसमें कुछ लिखती रही थी। हो सकता है उसने डायरी काफ़ी सावधानी से लिखी हो, मगर मेरा तजुरबा कहता है कि डायरी से असलियत का पता चल ही जाता है। बीच में कोई चीज़ छोड़ी हो तो भी पता चल जाता है कि क्या छोड़ा गया है।" वह अभी बात कर ही रहा था कि मैंने काग़ज़ हटाकर डायरी बाहर निकाल ली। "इनसान का साहब स्वभाव ही ऐसा है। वह

डायरी रखता है कि कुछ चीज़ों को याद रख सके। नहीं तो डायरी रखने की ज़रूरत ही क्या है?''

''तुमने इसे पढ़ा है?'' मैंने पूछा।

''मैंने यह देख लिया था कि किस तरह की डायरी है। एक जगह पढ़कर मुझे लगा कि वह इसे सावधानी से लिखती रही है।''

''यह डायरी इस साल की तो नहीं है, दो साल पुरानी है,'' मैंने कहा। क्षण-भर के लिए वह जैसे धराशायी हो गया।

''मगर इससे मेरा काम चल जाएगा,'' मैंने कहा।

''हाँ साहब, अगर बाद में चलकर स्थिति बदल न गई हो तो इससे काम चल जाना चाहिए।''

डायरी हिसाब रखने की कॉपी में लिखी हुई थी। लाल और नीली लकीरों के ऊपर उभरे हुए सैरा के बड़े-बड़े परिचित अक्षर नज़र आ रहे थे। डायरी रोज़ नहीं लिखी गई थी। ''यह कई सालों की डायरी है,'' मैंने पारकिस को थोड़ा और आश्वस्त कर दिया।

''हो सकता है किसी वजह से उसने पढ़ने के लिए निकाली हो!'' मैंने सोचा कि हो सकता है किसी वजह से उस दिन उसका मन थोड़ा ख़राब हुआ हो, और उसे मेरे और अपने प्रेम की बात याद हो आई हो।

''मुझे बहुत खुशी है कि तुम इसे ले आए हो,'' मैंने कहा, ''मेरा ख़याल है कि अब हम अपना हिसाब कर सकते हैं।''

''आप मेरे काम से सन्तुष्ट तो हैं न?''

''हाँ, मैं बिलकुल सन्तुष्ट हूँ।''

''यह बात आप मिस्टर सैवेज को लिख देंगे? अकसर लोग बुरी बात हो तो उन्हें लिख देते हैं, अच्छी बात काई नहीं लिखता। हमसे काम करानेवाला जितना ही सन्तुष्ट होता है, उतना ही वह चाहता है कि अब इस बला से पिंड छूटे। इसलिए मैं किसी को दोष नहीं देता।''

''मैं लिख दूँगा।''

''और लड़के पर आपकी कृपा रही है, उसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। उसकी तबीयत ज़रा ख़राब ज़रूर हुई थी, मगर मुझे पता है कि लैंस को आइसक्रीम खाने से मना नहीं किया जा सकता। वह तो माँगे बग़ैर ही आपसे जो चाहे ले लेता है।'' मैं चाह रहा था कि जल्दी से डायरी पढ़ूँ, मगर पारकिस अभी टल ही नहीं रहा था। शायद यह सोचकर कि मैं उसे भूल न जाऊँ, वह अपनी पालतू जानवर की-सी आँखें और चिड़ी के गुलाम की-सी मूँछों की याद अच्छी तरह मेरे ज़हन में बिठा देना चाहता था। ''मुझे साहब आपका काम करके बहुत ही खुशी हुई, मतलब इस

तरह की शोकपूर्ण स्थिति में अगर खुशी हो सकती है। कई बार हम बड़े-बड़े रुतबेवाले लोगों का काम करते हैं, मगर सब लोग आपकी तरह भले नहीं होते। एक बार मैं एक लॉर्ड का काम कर रहा था। जब मैंने जाकर उसे रिपोर्ट दी तो वह इस तरह मुझ पर बिगड़ पड़ा जैसे वास्तव में दोष मेरा ही हो। इससे साहब मन बहुत ख़राब होता है। हमें अपने काम में जितनी ही सफलता मिलती है, लोग उतना ही चाहते हैं कि ये अब जल्दी से दफ़ा हों तो अच्छा है।''

मैं खुद चाहता था कि जितनी जल्दी हो उससे पीछा छूटे, इसलिए उसकी बात से मुझे अपराध का अनुभव हो आया और मुझे पता लगा कि उसे जल्दी से जाने का संकेत देना ठीक नहीं। ''मैं आपको यादगार के तौर पर एक चीज़ भेंट करने की सोच रहा हूँ,'' वह बोला, ''मगर आप शायद ऐसी यादगार रखना नहीं चाहेंगे।''

कोई हममें रुचि लेता है, यह जानकर अपने आप एक विचित्र मित्रता का भाव जाग आता है। मैंने उससे झूठ ही कहा, ''अरे वाह! तुमसे बातें करके मुझे हमेशा खुशी होती है।''

''हालाँकि आरम्भ में मुझसे कितनी भद्‌दी ग़लती हो गई थी।''

''तुमने वह बात अपने लड़के को बताई थी?''

''बताई थी, मगर कुछ दिनों बाद। तब तक रद्‌दी की टोकरी से वह काग़ज़ मुझे मिल चुका था, इससे वह बात उसे अखरी नहीं।''

मेरी नज़र डायरी की तरफ़ चली गई और मैं पढ़ने लगा, ''आज बहुत खुश हूँ। 'एम' कल वापस आ रहा है।'' मैं क्षण-भर हैरान रहा कि यह 'एम' कौन है। यह बात अब मेरे लिए विचित्र और अस्वाभाविक-सी थी कि कभी किसी को मुझसे प्रेम था, और मेरे पास होने से किसी के दिन खुशी से भर उठते थे!

''सचमुच अगर आपको यादगार रखने में बुरा न लगे तो...''

''तुम यह कैसी बात करते हो पारकिस?''

''मैं एक इस्तेमाल की चीज़ लाया हूँ जो हो सकता है आपको अच्छी लगे।'' कहते हुए उसने अपनी ज़ेब से पतले काग़ज़ में लिपटी हुई एक चीज़ निकाली और कुछ संकोच के साथ डेस्क पर मेरी तरफ़ बढ़ा दी। मैंने खोलकर देखा। वह एक सस्ती-सी ऐश-ट्रे थी जिस पर 'होटल मेट्रोपोल, ब्राइटलिंगसी' का नाम लिखा था। ''साहब इसका भी एक इतिहास है। आपको बोल्टन केस की याद है?''

''नहीं।''

''उन दिनों उससे बहुत हलचल मची थी। बात लेडी बोल्टन, उसकी नौकरानी और एक और आदमी की थी। वे तीनों साथ पकड़े गए थे। ऐश-ट्रे बिस्तर के पास पड़ी थी—लेडी बोल्टन की तरफ़।''

''तुम्हारे यहाँ तो ऐसी चीज़ों का अच्छा अजायबघर होगा।''

"मुझे यह चीज़ मिस्टर सैवेज को दे देनी चाहिए थी, क्योंकि उन्होंने उस केस में बहुत दिलचस्पी ली थी। मगर अब मुझे खुशी है कि मैंने यह उन्हें नहीं दी। इस पर जो नाम लिखा है उसे पढ़कर आपके मित्र हमेशा आपसे इसके सम्बन्ध में पूछेंगे और तब आप उन्हें बोल्टन केस के विषय में बता सकते हैं। उससे उनकी उत्सुकता और भी बढ़ेगी।"

"बात तो काफ़ी रोचक लगती है।"

"यह साहब मनुष्य का स्वभाव ही है, क्योंकि प्रेम करना मनुष्य के स्वभाव में ही है। मगर मुझे आश्चर्य ज़रूर हुआ था, क्योंकि नौकरानी को वहाँ देखने की आशा मैंने नहीं की थी। और कमरा भी बहुत छोटा और पुराने ढंग का था। मिसेज़ पारकिस तब जीवित थी, मगर मैंने उसे सब बातें विस्तार से नहीं बताई थीं, क्योंकि ऐसी बातें सुनकर उसका मन ख़राब होता था।"

"मैं तुम्हारी इस यादगार की कद्र करूँगा।"

"काश कि एक ऐश-ट्रे भी अपने मन की बात कह सकती।"

"हाँ, सो तो है ही।"

मगर वह गम्भीर बात कह चुकने के बाद पारकिस के पास और कुछ कहने को नहीं रहा। आख़िर उसने उठकर मुझसे हाथ मिलाया–शायद लैंस का हाथ पकड़े रहने के कारण वह हाथ चिपचिपा हो रहा था–और चला गया। उस जैसे आदमी से फिर कभी भेंट होने की अब कोई सम्भावना नहीं थी।

मैंने फिर डायरी खोल ली। सोचा था कि पहले जून चवालीस के उस दिन की डायरी पढ़ूँगा जिस दिन हमारा सम्बन्ध समाप्त हुआ था और उसका कारण जानने के बाद अपनी डायरी से मिलाता हुआ शेष दिनों की डायरी पढ़ूँगा जिससे ठीक पता चल सके कि उसका मेरे प्रति प्रेम किस तरह धीरे-धीरे समाप्त हुआ था। मैं उसे उसी तरह पढ़ना चाहता था जैसे उन केसों में जिनकी बात पारकिस करता था, एक ज़रूरी दस्तावेज़ पढ़ा जाता है। मगर मेरे में उतना धैर्य नहीं था। और डायरी खोलते ही जो कुछ मेरे सामने आया उसकी मैंने ज़रा भी आशा नहीं की थी। घृणा, ईर्ष्या और सन्देह मेरे मन पर इस तरह छाए हुए थे कि मैं तो जैसे एक अपरिचित व्यक्ति की प्रेम-घोषणा पढ़ने की ही आशा कर रहा था और सोच रहा था कि मुझे उसमें सैरा के विरुद्ध जाने कितने प्रमाण मिलेंगे, क्योंकि मैंने खुद भी तो कितनी ही बार उसे झूठ बोलते पकड़ा था। उसके मुँह से निकले हुए शब्दों पर मुझे कभी विश्वास नहीं होता था, मगर अब उसके मन की पूरी बात लिखे हुए शब्दों में मेरे सामने थी और उस पर अविश्वास नहीं हो सकता था। मैंने पहले अन्त के दो पन्ने पढ़ डाले और फिर ठीक से विश्वास करने के लिए उन्हें दूसरी बार भी पढ़ा। जब व्यक्ति को यह लगता हो कि माता-पिता और ईश्वर को छोड़कर संसार में कोई किसी से सच्चा प्रेम नहीं कर सकता तो अपने ही प्रति किसी के प्रेम का विश्वास पाकर उसे कितना विचित्र अनुभव होगा!

1

...और फिर तुम्हारे सिवा कुछ नहीं रहा; दोनों के लिए ही कुछ नहीं रहा। यूँ चाहे मैं जीवन-भर इस या उस पुरुष को अपना प्रेम थोड़ा-थोड़ा बाँटती रहती, परन्तु उस दिन पैडिंगटन के पास के होटल में पहली बार मिलने पर ही हम दोनों ने अपना सब-कुछ एक-दूसरे को दे डाला था। मेरे ईश्वर, तुम वहाँ पास ही खड़े हमें अपने को पूरी तरह लुटा देने की शिक्षा दे रहे थे—वैसी ही शिक्षा जैसी तुमने धनी व्यक्ति को धन लुटाने की दी थी, जिससे हमारे पास केवल तुम्हारा प्रेम ही शेष रह जाए। सचमुच, मेरे प्रति तुम कितने दयालु हो! मैंने तुमसे पीड़ा माँगी तो तुमने मुझे शान्ति दी। शान्ति उसे भी दो; उसे इसकी और भी आवश्यकता है।

12 फरवरी, 1946

दो दिन हुए मन पर कैसा शान्ति, सुख और प्रेम का अनुभव छाया था! लगता था जीवन फिर सुखी होने जा रहा है। मगर रात को सपने में देखा कि मैं एक लम्बा ज़ीना पार करके ऊपर मॉरिस तक पहुँचना चाह रही हूँ। मन प्रसन्न था कि ऊपर पहुँचूँगी तो हम दोनों फिर प्रेम कर सकेंगे। मैंने उसे आवाज़ दी कि मैं आ रही हूँ। मगर उत्तर में जो आवाज़ सुनाई दी, वह मॉरिस की आवाज़ नहीं थी, एक अपरिचित व्यक्ति की आवाज़ थी, जैसे सहसा कोहरे में खोए हुए जहाज़ को चेतावनी देने के लिए एक भोंपू बज उठा हो। मैं डर गई। मुझे लगा कि मॉरिस अपना फ्लैट छोड़कर न जाने कहाँ चला गया है। ज़ीने से उतरने लगी तो मुझे लगा कि मेरी कमर तक पानी आ गया है और हॉल घने कोहरे से भर गया है। तभी मेरी आँख खुल गई। तब से मन में शान्ति नहीं रही। मैं पहले के दिनों की तरह ही मॉरिस को पाना चाहती हूँ। चाहती हूँ उसी तरह उसके साथ बैठकर सैंडविच खाऊँ, उसी तरह उसके साथ कहीं जाकर कुछ पिऊँ। मैं थक गई हूँ और पीड़ा नहीं चाहती। मैं मॉरिस को पाना चाहती हूँ। मैं साधारण और हीन मानवीय प्रेम चाहती हूँ। मेरे ईश्वर, तुम जानते हो मैं पीड़ा पाने की कामना रखती हूँ, परन्तु इस समय नहीं। इस समय इसे ले लो, फिर कभी लौटा देना।

इतना पढ़ चुकने पर मैं डायरी आरम्भ से पढ़ने लगा। डायरी रोज़ नहीं लिखी गई थी और मैं उसका हर पन्ना नहीं पढ़ना चाहता था। वह हेनरी के साथ किस-किस

थियेटर, रेस्तराँ या पार्टी में गई थी, यह सब जानकर मैं व्यर्थ ही अपने को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।

2

जून 12, 1944

कभी-कभी मैं उसे समझाते हुए थक जाती हूँ कि मैं उससे कितना प्रेम करती हूँ और सदा करती रहूँगी। वह एक वकील की तरह मेरे शब्दों पर झपटकर, उन्हें तोड़ने-मरोड़ने लगता है। शायद उसे लगता है कि हमारा प्रेम यदि समाप्त हो गया तो जीवन एक मरुस्थल की तरह हो जाएगा। मगर वह यह नहीं समझता कि मुझे भी तो ऐसा ही लगता है। वह जो बातें कह देता है, मैं उन्हें अपने में बन्द रखती हूँ और यहाँ लिखती हूँ। मरुस्थल में तो कुछ भी निर्माण नहीं किया जा सकता। प्रेम कर चुकने के बाद कई बार मैं सोचती हूँ कि क्या एक दिन यह कामना समाप्त नहीं हो जाएगी। वह भी शायद यही सोचता है और आगे के मरुस्थल से डरता है। मरुस्थल में एक-दूसरे को खो देने पर हम क्या करेंगे? उसके बाद कैसे जीवित रहेंगे?

उसे वर्तमान, अतीत और भविष्य सबसे ईर्ष्या होती है। उसका प्रेम मध्यकालीन पवित्रता की पेटी की तरह है। वह जब मेरे पास होता है, मेरे में होता है, तभी उसे सुरक्षा का अनुभव होता है। यदि मैं उसे अपने पर पूरा विश्वास दिला सकूँ तो हम शान्त और प्रसन्न रहकर प्रेम कर सकते हैं। तब यह अति और यह बर्बरता नहीं रहेगी, और तब शायद मरुस्थल भी सामने से हट जाएगा—शायद जीवन-भर के लिए!

यदि व्यक्ति को ईश्वर में विश्वास हो तो क्या उससे मरुस्थल हरिया सकता है?

मेरी यह हमेशा इच्छा रही है कि कोई मुझे चाहे और मेरी प्रशंसा करे। कोई मुझसे मुँह मोड़ ले या दूर चला जाए तो मेरा मन बहुत शंकित हो उठता है। मैं तो अपने पति को भी खोना नहीं चाहती। मैं चाहती हूँ कि मेरा सब-कुछ सदा और सब जगह मेरे पास रहे। मरुस्थल से मैं डरती हूँ। गिरजों में यह कहा जाता है कि ईश्वर सबसे प्रेम करता है, वही सब कुछ है। जिन्हें इसमें विश्वास होगा उन्हें प्रशंसा या किसी के सहवास की आवश्यकता नहीं है। वे निःशंक रह सकते हैं। मगर मैं यह विश्वास कहाँ से लाऊँ।

आज दिन-भर मॉरिस बहुत मीठी बातें करता रहा। वह कहता है कि उसने कभी किसी और स्त्री से इतना प्रेम नहीं किया। उसे लगता है कि वह बार-बार यह कहकर ही मुझे इसका विश्वास दिला सकता है। परन्तु मुझे तो बिना कहे ही इसमें विश्वास है, क्योंकि मैं भी तो उसे उतना ही चाहती हूँ। मुझे उससे प्रेम न रहे, तभी मुझे उसके

प्रेम में अविश्वास हो सकता है। मुझे ईश्वर से प्रेम हो तो अपने प्रति उसके प्रेम में भी मुझे विश्वास रहेगा। मुझे प्रेम की आवश्यकता है, इतना सोचना काफ़ी नहीं। पहले मेरे मन में प्रेम होना चाहिए। परन्तु उसके प्रेम की आवश्यकता का अनुभव करते हुए भी मैं उससे कैसे प्रेम करूँ, यह मेरी समझ में नहीं आता।

मॉरिस बहुत मीठी बातें करता रहा था। केवल एक बार जब मैंने किसी दूसरे व्यक्ति का नाम लिया तो उसकी आँखें दूसरी ओर घूम गई थीं। उसका ख़याल है, मैं अब भी दूसरे लोगों के पास जाती हूँ। मगर मैं जाती भी तो उससे क्या अन्तर पड़ता? वह कभी किसी और स्त्री के पास जाए तो मैं शिकायत नहीं करूँगी। हम एक-दूसरे को खो दें तो मरुस्थल में उसे किसी का थोड़ा-सा भी सहारा मिल सके तो मैं उसे उससे वंचित क्यों करना चाहूँगी? मगर कभी-कभी मुझे लगता है कि ऐसा अवसर आने पर वह शायद मुझे पानी का एक गिलास भी नहीं देगा और मुझे एक संन्यासी की तरह हर चीज़ और हर व्यक्ति से अलग, बिलकुल अकेले में डाल देगा। मगर संन्यासी तो अकेला नहीं होता, कम-से-कम सुना तो यही है। मेरी कुछ समझ में नहीं आता, हम एक-दूसरे के साथ यह क्या कर रहे हैं! मैं भी तो उसके साथ वही कर रही हूँ जो वह मेरे साथ कर रहा है। कभी हम इतने सुखी होते हैं और कभी इतने दुखी कि जीवन में कभी नहीं हुए, जैसे कि एक-दूसरे के दुख को तराशते हुए हम एक ही मूर्ति का निर्माण कर रहे हों, हालाँकि मुझे उस मूर्ति की आकृति का भी पता नहीं है।

17 जून, 1944

कल मैं उसके साथ उसके यहाँ गई थी, और वहाँ पहले की तरह ही सब-कुछ हुआ। वह सब लिखने का साहस नहीं पड़ता, फिर भी लिख लेना चाहती हूँ क्योंकि इस समय तक वह कल बीत चुका है और मैं नहीं चाहती कि अभी उसे बीतने दूँ। जब तक मैं लिखती रहूँगी, वह कल मुझे आज जैसा ही लगेगा, जैसे कि हम अभी भी साथ ही हों।

कल जब मैं प्रतीक्षा कर रही थी तो कॉमन में कई भाषण चल रहे थे... आई.एल.पी. और कम्यूनिस्ट पार्टी के भाषण हो रहे थे, मज़ाकिया मज़ाक सुना रहा था और एक व्यक्ति ईसाई धर्म की निन्दा कर रहा था। दक्षिण लन्दन का तर्क-समाज या ऐसा ही कोई बोर्ड उसने लगा रखा था। उसके एक गाल पर स्ट्रॉबेरी जैसा निशान न होता तो शायद वह सुन्दर लगता। उसे सुननेवाले लोग बहुत कम थे और कोई उससे सवाल-जवाब नहीं कर रहा था। मेरी समझ में नहीं आया कि वह एक निर्जीव चीज़ की निन्दा करने का कष्ट क्यों उठा रहा है। मैं कुछ देर रुककर सुनती रही। वह ईश्वर के अस्तित्व की युक्तियों का खंडन कर रहा था। मैं

तो ऐसी कोई युक्ति जानती ही नहीं—सिवा इसके कि मैं कमज़ोर हूँ और अकेली होना नहीं चाहती।

अचानक मुझे इस डर ने आ घेरा कि हेनरी ने अपना मन बदलकर यह तार न दे दिया हो कि वह घर वापस आ रहा है। मैं नहीं जानती कि मुझे किसकी निराशा ज़्यादा अखरती है, अपनी या मॉरिस की। दोनों पर उसका एक-सा ही प्रभाव होता है और हम आपस में लड़ पड़ते हैं। मुझे अपने पर क्रोध आता है और उसे भी मुझ पर क्रोध आता है। मैं घर चली गई, मगर कोई तार नहीं आया था। इससे मॉरिस से मिलने में दस मिनट की देर हो गई। वह गुस्सा न करे इससे मैंने ही गुस्सा दिखाना आरम्भ कर दिया और वह अप्रत्याशित रूप से मीठी बातें करने लगा।

दिन में इतना समय हम कभी साथ नहीं रहे थे और अभी रात भी हमारे पास थी। हमने कुछ सलाद, मक्खन और रोल ख़रीद लिये थे; ज़्यादा खाने को हमारा मन नहीं था। मौसम काफ़ी गरम था। मौसम अब भी गरम है। हर व्यक्ति यही कहेगा कि कितनी अच्छी गर्मी है। मैं इस समय गाड़ी में बैठी हेनरी के पास जा रही हूँ। आज सब कुछ सदा के लिए समाप्त हो चुका है। मुझे डर लगता है कि शायद यही मरुस्थल है। आस-पास मीलों तक कहीं कोई नहीं है, कुछ नहीं है। लन्दन में रहकर शायद जल्दी प्राण दे सकती, परन्तु लन्दन में रहती तो ज़रूर मैं फ़ोन कर वही नम्बर मिला लेती। वही तो एक नम्बर है जो मुझे याद है। अपना नम्बर भी बल्कि मैं भूल जाती हूँ। शायद फ्रायड कहेगा कि वह हेनरी का भी नम्बर है, इसलिए मैं उसे भूलना चाहती हूँ। मगर मैं तो हेनरी से भी प्रेम करती हूँ और चाहती हूँ कि वह प्रसन्न रहे। केवल आज मुझे उससे घृणा हो रही है, क्योंकि वह इस समय प्रसन्न है जबकि मॉरिस और मैं दोनों ही दुखी हैं और हेनरी इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। हेनरी मुझे देखकर कहेगा कि मैं थकी लगती हूँ और सोचेगा कि यह भी उसने बुरी बात कह दी है; बीच में कितने ही दिन गुज़र चुके हैं इसका उसे कुछ ध्यान ही नहीं आएगा।

आज शाम भोंपू बज उठे थे...आज नहीं कल शाम। परन्तु क्या अन्तर पड़ता है? मरुस्थल में समय क्या चीज़ है? मगर मैं चाहूँ तो इस मरुस्थल से निकल सकती हूँ। कल वापसी गाड़ी पकड़कर चली जाऊँ और जाकर उसे फ़ोन कर दूँ—बस! हेनरी अभी देहात में ही होगा और हम लोग रात-भर साथ रह सकेंगे। मैंने एक प्रतिज्ञा की है...मगर ऐसे व्यक्ति से की गई प्रतिज्ञा का महत्त्व ही क्या है। जिसे मैं जानती नहीं और जिसकी सत्ता में मुझे विश्वास ही नहीं! मेरे और उसके सिवा किसी को पता नहीं होगा कि मैंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी है...और वह...वह क्या है भी? नहीं, वह नहीं है। वह दयालु ईश्वर यदि है तो मेरे मन में ऐसी निराशा क्यों भरी है?

मैं लौट जाऊँ तो हम अपने को कहाँ पाएँगे? वहीं जहाँ कल भोंपू बजने के समय थे और साल-भर पहले भी थे। आनेवाले अन्त के डर से एक-दूसरे पर गुस्सा निकालते हुए कि जब सब-कुछ समाप्त हो जाएगा तो हम क्या करेंगे? इस समय तो मन में वह दुविधा नहीं है, वह डर नहीं है। तो यही अन्त है? परन्तु मेरे ईश्वर, मैं अपनी प्रेम करने की कामना का क्या करूँगी?

मैं 'मेरे ईश्वर' क्यों लिखती हूँ? वह मेरा नहीं है? कभी नहीं रहा। अगर वह है तो यह विचार शायद उसने मेरे मन में भर दिया है और मुझे इसके लिए उससे घृणा होती है। मैं उससे घृणा करती हूँ। हर कुछ मिनटों के बाद एक गिरजाघर या सराय सामने से निकलकर पीछे चली जाती है। इस मरुस्थल में न जाने कितने गिरजे और कितनी सरायें हैं। फिर कई तरह की दूकानें हैं, साइकलों पर जाते लोग हैं, घास चरती गौएँ हैं और फ़ैक्टरियों की चिमनियाँ हैं। उड़ती रेत में वे ऐसे नज़र आते हैं जैसे एक तालाब में मछलियाँ। और इसी तालाब में कहीं हेनरी मुझे चूमने के लिए अपने जबड़े उठाए मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

भोंपू बजते रहे और हमने कोई ध्यान नहीं दिया। उनसे कोई अन्तर नहीं पड़ता था। उस तरह मरने का हमें डर नहीं था। मगर हवाई आक्रमण चलता ही रहा। वह साधारण आक्रमण नहीं था। समाचारपत्रों को लिखने की इजाज़त नहीं, मगर हम सब जानते हैं। यह वह नई चीज़ थी, जिसकी हमें चेतावनी दी जा चुकी थी। मॉरिस देखने गया कि नीचे तहखाने में कोई है या नहीं। वह मेरे लिए डर रहा था और मैं उसके लिए। मुझे पता था कि कुछ-न-कुछ होने जा रहा है।

उसे गए दो मिनट भी नहीं हुए थे कि सड़क पर एक धमाका हुआ। मॉरिस का कमरा पीछे की तरफ़ था, इसलिए वहाँ ज़्यादा कुछ नहीं हुआ, सिर्फ़ दरवाज़ा खुल गया और कुछ पलस्तर नीचे आ गिरा। मगर मुझे पता था कि बम गिरने के समय मॉरिस मकान के आगे के हिस्से में था। मैं ज़ीने पर पहुँची तो वहाँ की रेलिंग टूटी हुई थी और बहुत-सा कूड़ा वहाँ जमा था। हॉल की तो बुरी हालत थी। पहले मॉरिस मुझे दिखाई ही नहीं दिया। फिर दरवाज़े के नीचे से मुझे उसकी बाँह बाहर को फैली हुई दिखाई दी। मैंने उसका हाथ छुआ तो मुझे निश्चित रूप से लगा कि उसमें प्राण नहीं हैं। जो व्यक्ति आपस में प्रेम करते हैं, उन्हें झट पता चल जाता है कि कब उनमें से किसी एक के चुम्बन में कम उत्साह रहा है। यदि उस समय मॉरिस में प्राण होते तो क्या उसका हाथ छूते ही मुझे पता न चल जाता? मुझे लगा कि मैं उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी तरफ़ खींचूँ तो वह हाथ अलग होकर दरवाज़े के नीचे से मेरी तरफ़ सरक आएगा। अब मुझे लगता है कि यह शायद मेरा पागलपन ही था। मुझे शायद धोखा हुआ था। उसके प्राण नहीं निकले थे। पागलपन की अवस्था में की गई प्रतिज्ञा के लिए व्यक्ति कहाँ तक उत्तरदायी है? और उसी पागलपन में वह

उसे तोड़ भी तो सकता है? इस समय यह लिखते हुए भी तो मैं एक पागलपन की स्थिति में ही हूँ। परन्तु मैं कहीं किसी से भी तो नहीं कह सकती कि मैं दुखी हूँ, क्योंकि जब मुझसे पूछा जाएगा कि क्यों दुखी हूँ और और भी सवाल सामने आएँगे तो मैं बिलकुल टूट नहीं जाऊँगी? परन्तु मैं टूटना नहीं चाहती क्योंकि मुझे हेनरी की रक्षा करनी है। हेनरी! भाड़ में जाए हेनरी! मुझे तो एक ऐसा व्यक्ति चाहिए जो मेरे सत्य को स्वीकार कर ले और जिसे किसी तरह की रक्षा की आवश्यकता न हो। अगर मैं कुलटा और विश्वासघाती हूँ तो क्या कोई ऐसा नहीं, जो एक कुलटा और विश्वासघाति ी से प्रेम कर सके?

मुझ पर उस समय वह पागलपन पूरी तरह सवार हो गया और मैं घुटने के बल फ़र्श पर बैठ गई। यह काम मैंने बचपन में भी नहीं किया था क्योंकि मेरे माता-पिता भी मेरी तरह प्रार्थनाओं में विश्वास नहीं करते थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या प्रार्थना करूँ, क्योंकि मॉरिस के प्राण तो निकल चुके थे और अब कुछ भी शेष नहीं था। आत्मा की सत्ता में मुझे विश्वास नहीं था। जो थोड़ा-बहुत सुख मॉरिस को मुझसे मिलता था, वह भी अब लहू के साथ ही निचुड़ गया था। मैं सोचने लगी कि अब मॉरिस को कभी किसी के साथ भी कोई सुख नहीं मिल सकेगा। वह जीवित रहता तो सम्भव था कि कोई और स्त्री उसे मुझसे अधिक सुख दे सकती। मगर अब वैसा अवसर कैसे आएगा! मैंने अपना सिर बिस्तर पर झुका लिया और कामना करने लगी कि किसी तरह मैं ईश्वर में विश्वास कर सकूँ। मैंने कहा प्रिय ईश्वर, मुझे विश्वास दो। मेरे मन में विश्वास नहीं है, तुम मुझे विश्वास दो। मैंने कहा कि मैं एक कुलटा और विश्वासघातिनी हूँ और अपने से घृणा करती हूँ। मैं अपने को सुधार नहीं सकती। तुम मुझे विश्वास दो। मैंने आँखें बन्द करके अपने नाख़ून अपनी हथेलियों में गड़ा दिए, यहाँ तक कि पीड़ा के अतिरिक्त और कोई अनुभव मुझे नहीं रहा। मैंने कहा कि मैं विश्वास करूँगी...तुम मॉरिस को जीवित कर दो तो मैं विश्वास करूँगी। उसे एक अवसर दे दो, सुख पाने का अधिकार दे दो तो मैं विश्वास करूँगी। परन्तु इतना पर्याप्त नहीं था। केवल विश्वास करने में त्याग तो कुछ नहीं! मैंने कहा कि तुम उसे जीवित कर दो तो मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। और फिर मैंने बहुत धीरे से कहा कि तुम उसे जीवित कर दो, एक अवसर दे दो, तो मैं उसे छोड़कर सदा के लिए हट जाऊँगी। मैंने नाख़ूनों को इतना दबाया कि मेरा मांस छिल गया। मैंने कहा कि एक-दूसरे को देखे बिना भी तो लोग आपस में प्रेम कर सकते हैं, वैसे ही जैसे तुम्हें देखे बिना तुमसे प्रेम करते हैं। और तभी मॉरिस दरवाज़े से अन्दर आ गया। वह जीवित था। मुझे लगा कि इसी क्षण से मुझे उससे अलग रहने की पीड़ा सहन करनी होगी, और मेरा मन हुआ कि क्यों नहीं वह वहाँ दरवाज़े के नीचे प्राणहीन ही पड़ा रहा?

9 जुलाई, 1944

हेनरी के साथ साढ़े आठ की गाड़ी पकड़ी। फर्स्ट क्लास का ख़ाली डब्बा था। हेनरी राजकीय आयोग की कार्यवाही पढ़कर सुनाता रहा। पेडिंगटन से टैक्सी लेकर हेनरी को मन्त्रालय में छोड़ दिया। कहा, वह रात को घर ज़रूर आए। टैक्सीवाला ग़लती से दक्षिण में चौदह नम्बर के आगे से होकर निकला। दरवाज़े और खिड़कियों की मरम्मत हो चुकी थी। विनाश की अनुभूति बहुत भयानक चीज़ है। मनुष्य जैसे भी हो, फिर से जीना चाहता है। उत्तर की ओर अपने घर पहुँची तो बहुत-सी पुरानी चिट्ठियाँ पड़ी थीं। मैं कह गई थी कि चिट्ठियाँ मुझे भेजी न जाएँ। कुछ पुस्तकों के सूचीपत्र थे, कुछ पुराने बिल थे, और एक चिट्ठी थी जिस पर लिखा था, 'आगे भेज दीजिए।' चाहा कि उस चिट्ठी को खोल लूँ जिससे विश्वास कर सकूँ कि मैं जीवित हूँ, परन्तु उसे भी सूचीपत्रों के साथ ही फाड़कर फेंक दिया।

3

10 जुलाई, 1944

सोचा कि यदि कॉमन में मॉरिस से अचानक भेंट हो जाए तो उससे मेरी प्रतिज्ञा नहीं टूटेगी। इसलिए नाश्ते के बाद घूमने के लिए गई। दोपहर के खाने के बाद फिर गई और शाम को फिर गई। इधर से उधर तक टहलती रही, मगर मॉरिस नज़र नहीं आया। घर पर हेनरी ने खाने पर मेहमान बुला रखे थे। कॉमन में उसी तरह भाषण चल रहे थे। स्ट्रॉबेरी के निशानवाला आदमी उसी तरह ईसाई धर्म की निन्दा कर रहा था और कोई उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था। मैंने सोचा कि शायद वही मुझे आश्वस्त कर सके कि जिसमें हमें विश्वास न हो उससे की गई प्रतिज्ञा का कोई अर्थ नहीं, और कि चमत्कार-अमत्कार कुछ नहीं होता। इसलिए मैं कुछ देर उसका भाषण सुनती रही। मगर सारा समय मेरा ध्यान इसी तरफ़ था कि शायद मॉरिस कहीं दिखाई दे जाए। वह व्यक्ति इंजील की रचना-तिथि बता रहा था और कह रहा था कि ईसा से सौ साल पहले तक उसका कोई भी अंश नहीं लिखा गया था। मैं समझती थी वह सब बहुत बाद में लिखा गया है, मगर क्या कब लिखा गया, इससे अन्तर ही क्या पड़ता है? वह कह रहा था कि इंजील में ईसा ने कहीं अपने को ईश्वर नहीं कहा और मुझे इसी में सन्देह था कि कोई ईसा नाम का व्यक्ति हुआ भी है। फिर मॉरिस को न देख पाने की पीड़ा के सामने इंजील का महत्त्व ही क्या था? एक सफ़ेद बालोंवाली स्त्री छोटे-छोटे कार्ड बाँट रही थी, जिन पर उसका नाम रिचर्ड स्माईद और सेडर रोड का पता दिया हुआ था और हरएक को यह खुला निमन्त्रण था कि वह

कभी भी घर पर आकर अकेले में उससे उस विषय में बात करे। कुछ लोग तो बिना उसकी तरफ़ ध्यान दिए ही निकल जाते थे जैसे कि वह स्त्री उनसे चन्दा माँग रही हो, और वह कुछ लोग कार्ड लेते ही उन्हें घास पर गिराकर आगे चल देते थे। (वह बेचारी शायद बचत के लिए ही गिरे हुए कार्डों को फिर उठा लेती थी।) उस व्यक्ति का स्ट्रॉबेरी का निशान, और एक ऐसे विषय पर भाषण जिसे कोई सुनना नहीं चाहता था, और लोगों का उसके कार्ड गिराकर चल देना, जैसे वे उसका दोस्ती का हाथ झटककर चले जा रहे हों, यह सब देखकर मुझे बहुत दया आ रही थी। मैंने उसका कार्ड लेकर ज़ेब में रख लिया और उसने देख भी लिया।

सर विलियम मैलक घर खाने पर आए हुए थे। वे राष्ट्रीय बीमे के सम्बन्ध में लॉयड जॉर्ज के परामर्शदाताओं में से थे। वे काफ़ी उम्र के और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। हेनरी का अब पेंशनों से कोई वास्ता नहीं है, मगर उसे उस विषय की बातें करके पुराने दिनों को याद करना अच्छा लगता है। वह जिन दिनों विधवाओं की पेंशनों में उलझा हुआ था, उन्हीं दिनों तो मैं पहली बार मॉरिस के साथ खाना खाने गई थी और हमारा प्रेम आरम्भ हुआ। हेनरी आँकड़े देता हुआ मैलक से बहस करता रहा कि विधवाओं की पेंशनें एक शिलिंग और बढ़ा दी जाएँ तो क्या उससे वे दस साल पहले की रकम तक नहीं पहुँच जाएँगी? लोगों के औसत ख़र्च के बारे में उनमें बहुत मतभेद था। मगर वह बहस केवल काग़ज़ी ही थी, क्योंकि इस बात में वे दोनों ही सहमत थे कि पेंशन बढ़ाना इस समय सम्भव नहीं है। मुझे उस समय गृह-रक्षा मन्त्रालय के अध्यक्ष से बात करनी पड़ रही थी और वी 1 बमों को छोड़कर मुझे बात के लिए और कोई विषय नहीं सूझ रहा था। सहसा मेरा मन होने लगा कि मैं सबको बता दूँ कि कैसे उस दिन मैंने ज़ीने से नीचे आकर मॉरिस को दबे हुए देखा था, और कि मैं उस समय नग्न थी क्योंकि मुझे कपड़े पहनने का अवकाश ही नहीं मिला था। उससे क्या सर विलियम मैलक हमारी तरफ़ देखते, या हेनरी का ध्यान हमारी तरफ़ आकर्षित होता? हेनरी जिस विषय की बात कर रहा हो, उसके अतिरिक्त और किसी विषय की बात उसके कान में जाती ही नहीं और उस समय उसे सिर्फ़ सन् तेतालीस के औसत ख़र्च की तालिका का ही ध्यान था। और मैं कहना चाह रही थी कि मैं उस समय नग्न थी, क्योंकि मैं और मॉरिस सारी शाम प्रेम करते रहे थे!

मैंने हेनरी के चीफ़ की तरफ़ देखा। उसका नाम टंडन था। उसकी नाक बैठी हुई थी और चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा था जैसे बनानेवाले से कहीं ग़लती हो गई हो और वह अलग किए हुए अस्वीकृत माल में से हो। मैंने सोचा कि वह मेरी बात सुनकर केवल मुस्करा देगा, गुस्सा या बेरुखी कुछ नहीं दिखाएगा, और ऐसे ही सिर हिला देगा जैसे सभी लोग ऐसा करते हों। मुझे लगा जैसे मैं वह बात कहने ही जा रही हूँ, और वह

सिर हिलाने ही जा रहा है। सोचा कि क्यों न कह ही दूँ! चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, क्यों न उस मरुस्थल से बाहर निकल आऊँ? मैंने मॉरिस को लेकर प्रतिज्ञा की है, दूसरे लोगों को लेकर तो नहीं। मैं अपना सारा जीवन हेनरी के साथ अकेली रहकर नहीं काट सकती। यह कैसे सम्भव है कि कोई मेरी प्रशंसा न करे, और मुझे देखकर उत्तेजित न हो और मैं चेडर की गुफा के बाउलर हैट की तरह जीवन-भर हेनरी की बातों की बौछार सहती हुई जड़ होती जाऊँ।

15 जुलाई, 1944

जार्दिन दे गूर्मे में डंस्टन के साथ लंच खाया। उसने कहा...

21 जुलाई, 1944

डंस्टन के साथ घर पर ड्रिंक करती रही। वह हेनरी का इन्तज़ार कर रहा था। सब कुछ ठीक था, मगर...।''

22 जुलाई, 1944

डंस्टन के साथ डिनर खाया। बाद में वह ड्रिंक के लिए घर चला आया। मगर बात नहीं बन सकी, नहीं बन सकी।

23 जुलाई–30 जुलाई, 1944

डंस्टन का फ़ोन आया। कहला दिया, घर पर नहीं हूँ। हेनरी के साथ दौरे पर चली गई। दक्षिण इंगलैंड के नागरिक रक्षा दल। चीफ वार्डनों और बॉरो इंजीनियरों की कॉन्फ्रेंस। रास्ता बनाने की समस्या। आश्रय-स्थलों की समस्या। जीवित होने का बहाना करने की समस्या। मकबरे के पत्थरों की तरह रोज़ रात को हेनरी का और मेरा साथ-साथ सोना। बिगवेल-ऑन-सी के नए मरम्मत हुए आश्रय-स्थल में चीफ वार्डन ने मुझे चूम लिया। हेनरी मेयर और इंजीनियर के साथ अगले चेम्बर में चला गया था और मैंने वार्डन को पीछे रोक लिया था। मैंने उसकी बाँह छूकर उससे एक मूर्खतापूर्ण बात पूछी कि आश्रय-स्थलों में विवाहित लोगों के लिए दोहरे फौलादी बर्थ क्यों नहीं बनवाए जाते? मैं चाहती थी कि वह मुझे चूम ले। उसने मुझे एक बर्थ के सहारे दोहरा करके चूम लिया जिससे फौलाद मेरी पीठ में चुभता रहा। उसे घबराया हुआ देखकर मैं हँस दी और मैंने खुद उसे चूम लिया। मगर बात नहीं बनी। क्या अब कभी भी वह बात नहीं बनेगी? हेनरी और मेयर लौट आए। मेयर कह रहा था, ''एक चुटकी में हम दो सौ व्यक्तियों को यहाँ आश्रय दे सकते हैं।''

उस रात हेनरी के दफ़्तर का डिनर था। मैंने टेलीफ़ोन एक्सचेंज से मॉरिस का नम्बर मिलाने को कहा। बिस्तर पर लेटी हुई फ़ोन की प्रतीक्षा करती रही। मैंने ईश्वर से कहा कि मैंने अब छह महीने अपनी प्रतिज्ञा रख ली है। मुझे तुममें विश्वास नहीं, न ही मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, फिर भी मैंने इतने दिन अपनी प्रतिज्ञा रखी है। अगर

मैं अपना जीवन वापस न पा सकी तो मैं बिलकुल एक बाज़ारू स्त्री की तरह हो जाऊँगी। मैं जान-बूझकर अपने को भ्रष्ट करूँगी। हर साल अधिक-अधिक गिरती जाऊँगी। क्या मेरे प्रतिज्ञा तोड़ने से यह तुम्हें ज़्यादा अच्छा लगेगा? मैं शराब-घरों की उन स्त्रियों जैसी हो जाऊँगी जिन्हें बिना परिचय के तीन-तीन आदमी एक साथ अपनी तरफ़ खींचते रहते हैं। मैं अभी से टूटती जा रही हूँ।

मैंने चोंगा अपने कन्धे पर रख रखा था। एक्सचेंज ने कहा, ''हम अब तुम्हारा नम्बर मिलाने जा रहे हैं।'' मैंने ईश्वर से कहा कि फ़ोन पर मुझे मॉरिस मिल गया तो मैं कल वापस चली जाऊँगी। मुझे पता था उसका फ़ोन उसके बिस्तर के पास कहाँ रखा रहता है। एक बार सोते में मेरा हाथ लग जाने से वह नीचे गिर गया था। ''हेलो!'' एक लड़की की आवाज़ उधर से सुनाई दी और मेरा मन हुआ कि चोंगा रख दूँ। मैं चाहती थी कि मॉरिस को सुख मिले, परन्तु जल्दी नहीं। मेरे पेट से कोई चीज़ उठकर ऊपर को आने लगी, मगर मैंने अपने को सँभाले रखा। अपने को समझाया कि मैंने ही तो उसे छोड़ दिया है और मैं चाहती भी हूँ कि वह सुखी हो! फिर मुझे उसके सुख से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

''क्या मैं मिस्टर बैंड्रिक्स से बात कर सकती हूँ?'' मैंने पूछा। मगर मुझे लग रहा था कि अब सब-कुछ समाप्त हो चुका है। शायद मॉरिस को इसकी आवश्यकता नहीं कि मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ूँ। शायद उसने एक ऐसी लड़की ढूँढ़ ली है जो सदा उसके साथ रहेगी, उसके साथ खाना खाएगी और सब जगह जाएगी, हर रात उसके साथ रहेगी, जो धीरे-धीरे एक मधुर अभ्यास बन जाएगा, और जो उसकी जगह फ़ोन का जवाब दिया करेगी।

तभी उस आवाज़ ने कहा, ''मिस्टर बैंड्रिक्स यहाँ पर नहीं हैं, कुछ दिनों के लिए बाहर गए हैं। मैंने उनका फ्लैट उधार ले रखा है।''

मैंने चोंगा रख दिया। पहले मुझे खुशी हुई। फिर दुख हुआ। वह जाने कहाँ है! हम एक ही मरुस्थल में हैं, पर एक-दूसरे से खो गए हैं। दोनों शायद एक ही झरने को खोज रहे हैं, पर अकेले और एक-दूसरे की आँखों से दूर रहकर। हम साथ होते तो यह मरुस्थल न होता। मैंने ईश्वर से कहा—तो यह बात है! मुझे तुम पर विश्वास होता जा रहा है। मगर मुझे पूरा विश्वास हो गया तो मैं तुमसे घृणा करूँगी। मैं जब भी चाहूँ अपनी प्रतिज्ञा तोड़ लूँ, और प्रतिज्ञा तोड़कर भी मुझे कुछ नहीं मिलेगा! इधर से मुझे फ़ोन करने दिया और उधर से तुमने द्वार बन्द कर दिए; मुझे पाप करने दिया और उसका फल नहीं चखने दिया! डंस्टन के साथ बाहर जाने दिया, परन्तु सुख का अनुभव नहीं करने दिया! मेरा प्रेम मुझसे छुड़ा दिया और कह दिया कि अब शरीर का सुख भी तुम्हारे लिए नहीं है! तुम क्या चाहते हो ईश्वर? मैं अब कहाँ जाऊँ?

स्कूल के दिनों में एक राजा की कहानी पढ़ी थी—उस राजा हेनरी की जिसने बेकेट को मरवाया था। उसके शत्रुओं ने उसका शहर जला दिया तो यह सोचकर कि ईश्वर ने उनके साथ ऐसा किया है, उसने कसम खाई थी, ''तुमने मेरा शहर मुझसे छीन लिया है—वह शहर जिसमें में पैदा हुआ और पला और जिसे मैं इतना प्यार करता था, इसलिए अब मैं तुमसे अपने अन्दर का वह कुछ छीन लूँगा जिसे तुम सबसे अधिक प्यार करते हो।'' सोलह साल के बाद आज यह प्रार्थना मुझे याद आई है। सात सौ साल पहले एक राजा ने घोड़े पर बैठे हुए यह बात कही थी और मैं आज बिगवेल रेगिस में, बिगवेल-ऑन-सी के इस होटल के कमरे में बैठी हुई वही बात कह रही हूँ। मुझे और प्रार्थना याद नहीं है, मगर यह याद है...और यह क्या प्रार्थना है? मेरे अन्दर का वह कुछ जिसे तुम सबसे अधिक प्यार करते हो...।

मेरे अन्दर वह क्या है? मुझे तुममें विश्वास होता, तभी मैं आत्मा में भी विश्वास करती। क्या आत्मा ही वह चीज़ है जिससे तुम प्यार करते हो? क्या मेरी खाल के अन्दर वह तुम्हें दिखाई देती है? जो चीज़ हो ही नहीं और दिखाई न देती हो, उससे ईश्वर भी कैसे प्रेम कर सकता है? ईश्वर को क्या मुझमें ऐसा कुछ दिखाई देता है जिसे मैं स्वयं नहीं देख सकती? वह उससे प्यार करता हो तो वह चीज़ अवश्य सुन्दर होनी चाहिए। मुझमें भी कुछ सुन्दर है, यह मैं कैसे विश्वास कर सकती हूँ! मैं पुरुषों से प्रशंसा पाना जानती हूँ, मगर वह तो स्कूल में सीखा हुआ एक हुनर ही है कि दूसरे की तरफ़ देखना कैसे चाहिए, उससे बात कैसे करनी चाहिए और उसके सिर और कन्धों को हाथ से छूना कैसे चाहिए। आप किसी की प्रशंसा करें तो वह भी आपकी प्रशंसा करेगा कि आपकी सूझ-बूझ कितनी अच्छी है। और प्रशंसा करते हुए कुछ देर के लिए शायद उसे यह भ्रम भी हो जाएगा कि वास्तव में ही आपमें प्रशंसा के लायक कुछ है। मैंने जीवन-भर अपने को इस भ्रम में रखना चाहा है। यह एक तरह का नशा है, जिससे मैं यह भूली रहती हूँ कि वास्तव में मैं एक कुलटा और विश्वासघातिनी हूँ। परन्तु एक कुलटा और विश्वासघातिनी में तुम्हें ऐसा क्या मिल सकता है जिससे तुम प्रेम कर सको? उसमें वह अमर आत्मा कहाँ होगी? वह सुन्दर चीज़ तुम्हें मेरे अन्दर कहाँ मिल सकती है? वह तुम्हें हेनरी में—मतलब मेरे हेनरी—मिल सकती है। उसमें शालीनता है, कोमलता है, असन्तोष है। वह तुम्हें मॉरिस में मिल सकती है, जो यह सोचता हुआ भी कि वह घृणा करता है, अपने शत्रुओं तक से भी केवल प्रेम ही करता है। परन्तु इस कुलटा और विश्वासघातिनी में वह चीज़ तुम्हें कहाँ मिल सकती है?

मुझे बताओ ईश्वर, मेरे अन्दर वह सुन्दर चीज़ क्या है, जिससे मैं उसे सदा के लिए तुमसे छीन लूँ।

उस राजा ने अपनी प्रतिज्ञा कैसे पूरी की थी, मुझे याद नहीं। मुझे इतना ही याद है कि उसने बेकेट की कब्र पर साधुओं से चाबुकें खाई थीं। मगर यह तो उसका समाधान नहीं है।

आज रात हेनरी फिर बाहर रहेगा। मैं शराबखाने से किसी व्यक्ति को साथ लेकर यदि समुद्र-तट पर चली जाऊँ और रात-भर उसके साथ रेत के टीलों की ओट में पड़ी रहूँ तो क्या मैं वह चीज़ तुमसे छीन सकूँगी? मगर उससे कुछ नहीं होगा, कुछ भी नहीं होगा। मुझे उसमें सुख न मिला तो मैं तुम्हें चोट न पहुँचा सकूँगी। इससे तो अच्छा है कि मरुस्थल में खोए व्यक्तियों की तरह अपने शरीर में सुइयाँ चुभोऊँ। ओह, मरुस्थल! मैं कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिसमें मुझे सुख मिले और तुम्हें चोट पहुँचे। नहीं तो वह केवल आत्म-पीड़न ही होगा जो विश्वास का ही दूसरा नाम है। मगर मुझ पर विश्वास करो ईश्वर, अभी मैं तुममें विश्वास नहीं करती, नहीं, अभी नहीं।

4

सितम्बर 12, 1944

पीटर जोन्स में लंच खाया और हेनरी के पढ़ने के कमरे के लिए नया लैम्प ख़रीदा। लंच बहुत अच्छा था और आस-पास केवल स्त्रियाँ ही बैठी थीं। पुरुष एक भी नहीं था। लगा, जैसे फ़ौजी दस्ते में बैठी हूँ। मन लगभग शान्त रहा। फिर पिकेडिली में समाचार-चित्र देखने चली गई—नॉरमेंडी के खंडहर और एक अमरीकन राजनीतिज्ञ का आगमन। सात बजे हेनरी के लौटने तक करने को कुछ नहीं था। अकेले में दो-एक पेग पिए। लगा, ग़लती की है। क्या पीना भी अब छोड़ देना होगा? मगर सब कुछ छोड़ दूँ तो जिऊँगी कैसे? मैं क्या हूँ, एक व्यक्ति जिसे मॉरिस से प्रेम है और जिसे लोगों के साथ बाहर जाना और मदिरापान करना अच्छा लगता है। यह सब छोड़ दूँ तो मेरा 'मैं' क्या रह जाएगा? हेनरी लौट आया। लग रहा था वह बहुत प्रसन्न है। वह चाहता था मैं उससे उसकी प्रसन्नता का कारण पूछूँ, मगर मैंने नहीं पूछा। आख़िर उसने खुद ही बताया, "मेरा नाम ओ.बी.ई. के लिए भेजा गया है।"

"वह क्या होता है?" मैंने पूछा।

वह तिलमिलाया कि मैं इतना भी नहीं जानती। उसने समझाया कि इसके बाद जब वह अपने विभाग का अध्यक्ष बन जाएगा तो उसे सी.बी.आई. बना दिया जाएगा। "और उसके बाद," उसने कहा, "जब मैं रिटायर हो जाऊँगा तो शायद मुझे के.बी.आई. का पद मिल जाएगा।"

"यह तो बहुत उलझानेवाली बात है," मैंने कहा, "क्या सदा ये अक्षर एक-से ही नहीं रह सकते?"

"क्या तुम लेडी माइल्स नहीं कहलाना चाहोगी?" हेनरी ने कहा और मुझे गुस्सा हो आया, क्योंकि मैं तो यही चाहती थी कि मिसेज़ बैंड्रिक्स कहला सकूँ और वह आशा मैं सदा के लिए छोड़ चुकी थी। लेडी माइल्स, जिसे किसी से प्रेम नहीं, और जो शराब नहीं पीती और जो विलियम मैलक से पेंशनों के बारे में बातें करती है... उसमें 'मैं' कहाँ रहूँगी?

कल रात हेनरी सो रहा था तो उसके चेहरे की तरफ़ देखती रही। जब तक न्याय की दृष्टि से मैं अपराधिनी थी, तब तक मैं हेनरी को स्नेह से देखती थी जैसे कि वह एक बच्चा हो और उसे मेरी रक्षा की आवश्यकता हो। परन्तु अब निरपराध होने पर मुझे उसे देख-देखकर क्रोध आ रहा था। कभी-कभी घर पर हेनरी को उसकी एक सेक्रेटरी का फ़ोन आता था। वह कहती, "मिसेज़ माइल्स, एच.एम. घर पर हैं?" हेनरी की सभी सेक्रेटरी लड़कियाँ उसे इसी तरह बुलाती थीं और मुझे इस बेतकल्लुफ़ी से चिढ़ होती थी। तो एच.एम. उस समय मेरे सामने सोया था! एच.एम.! हिज़ मैजेस्टी!! और मैं हिज़ मैजेस्टी की पत्नी! सोए-सोए कभी उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट आ जाती—वही सरकारी नौकरों वाली मुस्कराहट, जैसे कह रहा हो—हाँ, हाँ, ठीक है, बहुत अच्छा है, मगर अब आगे काम की बात करें।

एक बार मैंने उससे पूछा था, "हेनरी, क्या कभी तुमने अपनी किसी सेक्रेटरी से प्रेम किया है?"

"प्रेम?"

"मतलब तुम्हारा कभी किसी से कुछ सम्बन्ध नहीं रहा?"

"कभी नहीं। तुम ऐसी बात कैसे सोच रही हो?"

"यूँ ही, सोचा शायद कभी तुम्हारा किसी से कुछ सम्बन्ध रहा हो।"

"मेरा कभी किसी और स्त्री से सम्बन्ध नहीं रहा," कहकर वह शाम का अखबार पढ़ने लगा और मैं सोचने लगी कि क्या हेनरी इतना ही बदसूरत है कि किसी स्त्री ने उससे प्रेम नहीं किया...मतलब सिवाय मेरे? उन दिनों मुझे ज़रूर उससे प्रेम रहा होगा, हालाँकि अब उसका कारण मेरी भी समझ में नहीं आता। शायद उन दिनों मैं बहुत छोटी थी और मुझे कुछ पता ही नहीं था। यह विचित्र बात है कि जिन दिनों मेरा मॉरिस से प्रेम चल रहा था, उन दिनों मैं हेनरी से भी प्रेम करती थी, और अब जबकि मैं निर्दोष जीवन व्यतीत कर रही हूँ तो मैं हेनरी से भी प्रेम नहीं कर पाती—और तुमसे भी नहीं।

5

मई 8, 1945

विजय दिवस का उत्सव देखने के लिए सेंट जेम्स पार्क में चले गए। महल के पास बहते हुए पानी पर बत्तियाँ चमक रही थीं और वहाँ बहुत शान्ति छाई थी; शराब पीकर गाने या चिल्लाने वाला वहाँ कोई नहीं था। घास पर बहुत-से जोड़े एक-दूसरे का हाथ पकड़े बैठे थे। शान्ति हो जाने से सभी बहुत प्रसन्न नज़र आते थे।

''मुझे शान्ति अच्छी नहीं लगती,'' मैंने हेनरी से कहा।

''मैं सोच रहा हूँ,'' वह बोला, ''कि अब गृह-रक्षा मन्त्रालय से मुझे कहाँ भेजा जाएगा।''

''शायद सूचना-विभाग में भेज दिया जाए,'' मैंने उसकी बात में रुचि प्रदर्शित करने की चेष्टा की।

''सूचना-विभाग में मैं नहीं जाऊँगा। सारी नई भरती वहीं पर है। गृह कार्यालय के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है?''

''तुम्हें वह अच्छा लगता है, तो वह ठीक है,'' मैंने कहा। तभी राजपरिवार बाल्कनी पर आ गया और लोग उत्साह से गाने लगे। हिटलर, स्टालिन, चर्चिल और रूज़वेल्ट की तरह वे नेता लोग नहीं थे, एक ऐसे परिवार के सदस्य थे, जिसने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा था। मेरा मन होने लगा कि मॉरिस मेरे पास हो, हम फिर से अपना जीवन आंरम्भ करें, और मेरा भी ऐसा ही अपना परिवार हो।

''कितना अच्छा लग रहा है!'' हेनरी बोला। ''अब हम लोग रात को आराम से सो तो सकते हैं!''

और मैं सोचने लगी कि रात को आराम से सोने के सिवा हम लोग और करते ही क्या रहे हैं!

सितम्बर 16, 1945

मुझे अपने हवास ठीक करने चाहिए। दो दिन हुए हेनरी ने मुझे एक नई कीमती बैग लाकर दिया। कहा, ''यह शान्ति का उपहार है।'' मैं पुराना बैग साफ़ करने लगी तो उसमें मुझे एक कार्ड मिला, 'रिचर्ड स्माईद, 16 सेडर रोड। मिलने का समय 4 से 6। कभी भी आइए।' मैंने सोचा बहुत समय भटक चुकी, अब यह दवा भी आज़माकर देख लूँ। यह आदमी मुझे इस बात का विश्वास दिला सके कि जो हुआ है, वह मेरा भ्रम है और मेरी प्रतिज्ञा का कोई अर्थ नहीं है तो मैं मॉरिस को चिट्ठी लिख दूँगी कि हम फिर पहले की तरह ही मिल सकते हैं। शायद मैं हेनरी को छोड़कर

मॉरिस के पास ही चली जाऊँ। मगर पहले मेरा दिमाग़ ठिगाने पर आना चाहिए। यह पागलपन की हरकतें ठीक नहीं। कहीं इस तरह भी जीवन चलता है? मैं सेडर रोड पर उस व्यक्ति के घर पहुँच गई।

मुझे पूरी घटना याद नहीं। मिस स्माईद ने चाय बनाई और उसके बाद मुझे अपने भाई के पास अकेली छोड़कर चली गई। उस व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि मुझे क्या परेशानी है। मैं छींट के सोफे पर बैठी थी और वह बिल्ली को गोद में लिये उसे सहलाता हुआ लकड़ी की कुर्सी पर बैठा था। उसके हाथ काफ़ी सुन्दर थे, जो मुझे अच्छे नहीं लग रहे थे। मुझे उसके चेहरे पर स्ट्रॉबेरी का निशान बल्कि अच्छा लग रहा था, मगर वह अपना दूसरा गाल ही मेरी तरफ़ रखना चाहता था।

"आपको कैसे यह विश्वास है कि ईश्वर नहीं है?" मैंने पूछा।

वह क्षण-भर बिल्ली को सहलाता हुआ अपने हाथों को देखता रहा। लगता था उसे अपने हाथों का बहुत गुमान है, और मुझे उसके लिए खेद हो रहा था, क्योंकि उसके चेहरे पर वह दाग़ न होता तो शायद उसे किसी तरह के गुमान की आवश्यकता न होती।

"आपने मुझे कॉमन में बोलते सुना था?"

"जी हाँ!"

"वहाँ मैं जान-बूझकर मोटे ढंग से चुभती हुई बातें कहता हूँ जिससे लोग घर जाकर कुछ सोचें। आप उसके बाद कुछ सोचती रही हैं?"

"'जी हाँ!"

"आपका गिरजा कौन-सा है?"

"कोई भी नहीं।"

"तो आप ईसाई नहीं हैं?"

"रिवाज के अनुसार कभी दीक्षा ज़रूर हुई होगी।"

"परन्तु आप अगर ईश्वर में विश्वास नहीं करतीं तो मेरे पास किसलिए आई हैं?

मैं सोचने लगी कि इसे क्या बताऊँ। कह दूँ कि मॉरिस को दरवाज़े के नीचे दबा देखकर मैंने ईश्वर से एक प्रतिज्ञा कर डाली थी? मगर नहीं। बात केवल इतनी ही तो नहीं थी। जीवन में पहले भी तो मैंने कितनी प्रतिज्ञाएँ की थीं जो बाद में टूट गई थीं। मगर यह प्रतिज्ञा उस भद्दे फूलदान की तरह मुझसे चिपक गई थी जो किसी मित्र ने आपको उपहार में दिया हो और आप रोज़ चाहें कि वह कमबख़्त नौकरानी के हाथ से गिरकर टूट जाए, मगर और अच्छी-अच्छी चीज़ें टूटती रहें और वह मनहूस ज्यों-का-त्यों बना रहे। मैं उसके सवाल के लिए तैयार नहीं थी, इसलिए उसे अपना सवाल दोहराना पड़ा।

"ठीक नहीं कह सकती कि मैं विश्वास करती हूँ या नहीं," मैंने कहा। "मगर मैं चाहती हूँ कि विश्वास न करूँ।"

"मुझे आप सारी बात बताएँ," वह बोला। वह अब वास्तव में ही मेरी सहायता करना चाह रहा था। वह अपने हाथों की बात भूल गया था और उसका दाग़वाला गाल मेरी तरफ़ आ गया था। मैंने बम गिरने की रात का और अपनी मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञा का सारा क़िस्सा उसे सुना दिया।

"और आप सचमुच विश्वास करती हैं कि..."

"जी हाँ!"

"मगर सोचिए, इस समय भी दुनिया में हज़ारों लोग हैं जो ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं और उन सबकी प्रार्थनाएँ अनसुनी जा रही हैं।"

"मगर फ़िलस्तीन में हज़ारों लोग मर रहे थे जब लैज़रस ने..."

"उस कहानी में कौन विश्वास करता है! आप करती हैं?" उसने कुछ दम्भ के साथ कहा।

"नहीं, मैं तो नहीं करती, मगर लाखों लोग करते भी हैं। उनके विश्वास करने का कोई कारण तो होगा ही।"

"भावना का प्रश्न हो तो लोग तर्क की बात भूल जाते हैं। जिस तरह प्रेम में कोई तर्क नहीं होता, उसी तरह..."

"तो आप प्रेम को भी निरर्थक समझते हैं?" मैंने पूछा।

"बिलकुल," वह बोला। "कुछ लोग अपनी अधिकार की इच्छा को ही प्रेम समझते हैं और कुछ उत्तरदायित्व से भागकर दूसरे के हाथ में सब कुछ छोड़ देने को। कई बार हम उसी से प्रेम करने लगते हैं जो बिना उकताए हमारी बात सुन सकता हो...मतलब जो हमारे लिए माता या पिता की भूमिका ले सकता है। और इस सबके पीछे शारीरिक भूख तो होती ही है।"

यह सब तो ठीक है, मैंने सोचा, मगर इसके अतिरिक्त भी तो कुछ है। ये सब बातें मैं अपने और मॉरिस के अन्दर देख चुकी हूँ, मगर फिर भी तह तक क्यों नहीं पहुँच पाई? "तो ईश्वर का प्रेम क्या है?" मैंने पूछा।

"वह भी वही चीज़ है। मनुष्य जैसा आप है वैसे ही ईश्वर की उसने कल्पना कर ली है, और इसीलिए उससे वह प्रेम भी करता है। आपने मेलों में वे आइने देखने होंगे जिनमें चेहरा और-का-और दिखाई देता है। यह भी मनुष्य ने एक ऐसा ही आइना बना रखा है, जिसमें वह अपने को एक सुन्दर, शक्तिशाली, न्यायपूर्ण तथा प्रतिभा-सम्पन्न रूप में देखकर प्रसन्न हो लेता है। जो आइने उसका चेहरा बिगाड़ देते हैं, उन पर वह हँस देता है, परन्तु इस आइने में अपने को देखकर वह अपने से प्रेम कर लेता है।"

वह चेहरा बिगाड़नेवाले और उसे सुन्दर बनानेवाले आइनों की बात कर रहा था और मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। मैं सोच रही थी कि छोटी उम्र में वह कैसे चेहरा मोड़कर शीशे के सामने खड़ा होता होगा, जिससे अपना चेहरा उसे सुन्दर नज़र आए। और मैंने सोचा कि उसने अपने दाग़ को छिपाने के लिए लम्बी दाढ़ी क्यों नहीं बढ़ा ली? क्या इसलिए कि वह दुनिया को धोखा नहीं देना चाहता था। शायद सचमुच ही वह सत्य से प्रेम करता हो। फिर वही शब्द–'प्रेम'! तो सत्य से प्रेम के भी कई अर्थ हो सकते हैं–एक यह कि उससे उसके दाग़ की कुछ क्षतिपूर्ति हो जाए। दूसरे यह कि अपने में उसे एक शक्ति का आभास हो। और तीसरे यह कि उसके चेहरे को भूलकर लोग इसी कारण से उससे प्रेम कर सकें। मेरा बहुत मन हो रहा था कि उसके दाग़ को हाथ से छू दूँ और कोई ऐसी स्नेहपूर्ण बात कहूँ जो उसके हीन भाव को दूर कर सके। मुझे कुछ वैसा ही लग रहा था, जैसा मॉरिस को दरवाज़े के नीचे दबा देखकर लगा था। क्या मेरी कोई भी प्रार्थना या बड़े-से-बड़ा त्याग उसके दाग़ को दूर कर सकता था? मगर मेरे पास अब त्याग करने को था ही क्या?

"देखिए," वह कह रहा था, "ईश्वर की बात बीच में मत लाइए। आपका द्वन्द्व अपने प्रेमी और अपने पति को लेकर ही है। एक निराधार छाया को ख़ामख़ाह बीच में ले आने का कोई अर्थ नहीं।"

"जब प्रेम नाम की कोई चीज़ है ही नहीं तो मैं निश्चय किस आधार पर कर सकती हूँ?"

"उसके लिए आपको यही सोचना है कि आपको अधिक सुख किसके पास रहकर मिलेगा।"

"तो आप सुख में विश्वास करते हैं?"

"सम्पूर्ण सुख जैसी चीज़ में तो विश्वास नहीं करता, परन्तु..."

मैं सोचने लगी कि लोगों को परामर्श, दिलासा और सहायता देकर इसे जो सुख मिलता है, उसके अतिरिक्त किसी सुख का बेचारे को शायद पता ही नहीं है। इसी सुख के लिए यह हर सप्ताह कॉमन में जाकर भाषण देता है, हालाँकि लोग इसकी बात बिना सुने ही, और इसके कार्ड घास पर फेंककर चले जाते हैं। मेरी तरह कौन यहाँ इसके पास आता होगा!

"आपके पास काफ़ी लोग आते हैं?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने कहा। "बहुत दिनों में आप ही आई हैं।" तो अपने गुमान के कारण भी वह झूठ नहीं बोल पाता था।

"आपसे बातें करके मुझे बहुत खुशी हुई," मैंने कहा। "कई बातें मन में साफ़ हो गईं।" उसका भ्रम बनाए रखकर ही शायद उस समय मैं उसे सुख दे सकती थी।

"आप कुछ समय दे सकें," वह ज़रा संकोच के साथ बोला, "तो मैं तह तक जाकर आपको पूरी बात आरम्भ से युक्तियों और प्रमाणों के साथ समझाना चाहूँगा।"

मैंने उसे टालने की चेष्टा की तो वह और भी ज़ोर देकर कहने लगा, "नहीं, आप ज़रूर कुछ समय निकालिए। हमें अपने विरोधियों के पक्ष को भी एक बार समझना चाहिए।"

"आप ऐसा समझते हैं?"

"हाँ, हालाँकि उस पक्ष में जान नहीं है, सब ऊपरी बातें हैं, फिर भी...।"

वह उत्सुकता से मुझे देख रहा था और शायद सोच रहा था कि कहीं मैं भी उन लोगों में से ही तो नहीं हूँ जो बिना उसकी बात सुने कार्ड फेंककर चले जाते हैं।

"आप सप्ताह में एक घंटा ही निकाल सकें तो मैं आपको बहुत-कुछ बता सकता हूँ," वह अस्थिर स्वर में बोला। मैंने सोचा कि ज़रा-सी ही तो बात है। मेरे पास इतना समय फालतू है जो मैं पढ़ने और सिनेमा देखने में बिताती हूँ, और बाद में मुझे कुछ याद नहीं रहता कि मैंने क्या पढ़ा या देखा है। सारा समय अपना दुख ही मुझ पर छाया रहता है। वहाँ थोड़ी देर के लिए मैं अपने दुख को भूली तो रही थी।

"मैं ज़रूर आऊँगी," मैंने कहा। "यह आपकी कृपा है जो आप अपना समय मुझे दे रहे हैं।" और उसे आशा बँधाकर मैंने मन में ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे शक्ति दो, जिससे मैं उसके लिए कुछ कर सकूँ—उसी ईश्वर से जिससे वह मुझे छुटकारा दिलाना चाहता था।

अक्तूबर 2, 1945

दिन में बहुत गर्मी थी, बाद में बूँदें पड़ने लगीं। मैं थोड़ी देर पार्क रोड के कोने के गिरजे में बैठने के लिए चली गई। हेनरी घर पर ही था, मगर मैं उससे दूर रहना चाहती थी। घर पर मुझे यह याद रखना पड़ता है कि मुझे नाश्ते के समय और खाने के समय उससे कुछ मीठी बातें करनी हैं, और जब मैं यह भूल जाती हूँ तो वह मुझसे मीठी बातें करने लगता है। यही रोज़ का सिलसिला है। गिरजे में जाकर पता चला कि वह एक रोमन गिरजा है। वहाँ चारों तरफ़ पलस्तर की मूर्तियाँ बनी थीं, मुझे उन मूर्तियों से और उस क्रॉस से घृणा होने लगी। मैं तो शरीर से भागने का प्रयत्न कर रही थी और एक ऐसा ईश्वर चाहती थी जो हमारे जैसा न होकर अस्पष्ट, अदृश्य और व्यापक हो। ऐसे ही ईश्वर से तो मैंने अपनी प्रतिज्ञा की थी, और बदले में उसने भी मुझे अस्पष्ट-सा ही कुछ दिया था, जो मेरे सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त हो रहा था, जैसे कि वह अदृश्य स्वयं एक चहारदीवारी के अन्दर घिर आया हो। मुझे लगता था कि एक दिन मैं भी वैसे ही अदृश्य होकर इस शरीर के बन्धन से छूट जाऊँगी। मगर

वहाँ पार्क रोड के गिरजे में चारों तरफ़ मूर्तियाँ-ही-मूर्तियाँ दिखाई दे रही थीं, और उनके पलस्तर से बने अभिमानी चेहरों से मुझे घृणा हो रही थी। मैं तो अपना भी शरीर नहीं चाहती थी। तभी मुझे ध्यान आया कि कैथलिक लोग तो शरीर के फिर से जी उठने में विश्वास करते हैं। मेरे जिस शरीर ने इतना अनिष्ट किया था, उसे मैं सदा के लिए क्यों बनाए रखना चाहूँगी! तभी मुझे रिचर्ड की बात याद हो आई कि मनुष्य अपनी इच्छाओं के अनुसार ही सिद्धान्तों की रचना कर लेता है और मुझे लगा कि उसकी बात ठीक नहीं है। मैं तो अपने लिए सिद्धान्त चाहती थी कि शरीर एक ही बार गल-सड़कर नष्ट हो जाता है और फिर उसे कभी भी आकार नहीं मिल सकता। मगर मन घड़ी के पेंडुलम की तरह एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ डोलता रहता है। सत्य कहाँ है? बीच की उस सीध से हटकर जहाँ पेंडुलम रुका रह सकता है—एक या दूसरी तरफ़ के किसी ऐसे बिन्दु पर जहाँ पेंडुलम कभी स्थिर नहीं रहता? अगर किसी चमत्कार से पेंडुलम उस कोण पर स्थिर हो सके, तभी निर्णय हो सकता है कि सत्य कहाँ है। मेरे मन का पेंडुलम भी उस समय दूसरी तरफ़ को चला गया और मैं अपनी जगह मॉरिस के शरीर की बात सोचने लगी—उसके चेहरे की लकीरों की बात, जिनका उसकी लिखी पंक्तियों की तरह ही अपना अलग अस्तित्व है, और उस चोट की बात, जो एक आदमी को गिरती हुई दीवार से बचाने के प्रयत्न में उसे लगी थी। उसने मुझे नहीं बताया था कि वह तीन दिन अस्पताल में क्यों पड़ा रहा था; मुझे हेनरी से पता चला था। उसकी ईर्ष्या की तरह वह चोट भी उसके व्यक्तित्व का ही एक अंग थी। मेरा शरीर अदृश्य हो जाए तो ठीक है, मगर मॉरिस का शरीर? उसकी चोट का निशान तो मैं चाहूँगी कि सदा-सदा के लिए मेरे सामने रहे। मगर स्वयं अदृश्य होकर क्या मैं उस निशान से प्रेम कर सकूँगी? और मैं चाहने लगी कि मेरा यह घृणित शरीर भी ऐसा ही बना रहे, जिससे मैं उस निशान से प्रेम कर सकूँ। हम मन से प्रेम करते हैं, परन्तु केवल मन से ही तो नहीं करते। प्रेम तो इस तरह व्याप्त हो जाता है कि हम अपने बेजान नाख़ूनों या कपड़ों से भी दूसरे को छूकर एक पुलक का अनुभव करते हैं।

मैंने सोचा, रिचर्ड की बात ठीक है। हम शरीर के फिर से जी उठने की बात में इसलिए विश्वास करते हैं कि हम चाहते हैं हमारा शरीर सदा बना रहे, यूँ चाहे यह मन को दिलासा देने के लिए गढ़ी गई एक झूठी कल्पना ही है। और यह सोचते हुए मुझे मूर्तियों से घृणा नहीं रही। लगा कि वे तो हैंस एंडरसन के भद्दे रंगीन चित्रों की तरह या किसी की लिखी कविता की भद्दी पंक्तियों की तरह ही हैं। रचना करनेवाले के मन में भाव था, इसलिए उसने रचना कर दी; इससे उसे कोई मतलब नहीं था कि लोग उसकी रचना के बारे में क्या कहेंगे। मैं घूम-घूमकर उन मूर्तियों को देखने लगी। उनमें सबसे भद्दी मूर्ति के सामने, जो जाने किसकी मूर्ति थी, एक

अधेड़ आदमी घुटनों के बल बैठा प्रार्थना कर रहा था। उसका ऊँचा हैट उसके पास पड़ा था और हैट के अन्दर अखबार में लिपटी हुई फलियाँ रखी थीं।

और ऊपर चबूतरे पर एक और शरीर था—एक ऐसा शरीर जो मॉरिस के शरीर से भी अधिक परिचित था, इतना कि मैंने कभी उसे साधारण अंगों वाले शरीर के रूप में देखा ही नहीं था। एक बार हेनरी के साथ मैंने उस शरीर को एक स्पेनिश गिरजे में देखा था। वहाँ लाल रंग लगाकर उसकी आँखों और हाथों से लहू बहता दिखाया गया था। मेरा दम वहाँ घुटने लगा था। हेनरी मुझे बारहवीं सदी के खम्भों की नक्काशी दिखाना चाह रहा था, और मैं जल्दी से वहाँ से निकलकर बाहर खुली हवा में पहुँचना चाह रही थी। उस अदृश्य ईश्वर के साथ लहू और आँसुओं का सम्बन्ध जोड़ने का क्या अर्थ था? क्या यह क्रूरता की उपासना नहीं थी?

बाहर प्लाज़ा में आकर मैंने हेनरी से कहा, ''ये रँगे हुए घाव...ये मुझसे नहीं देखे जाते।'' हेनरी अपने स्वाभाविक ठहराव के साथ बोला, ''हाँ, इस धर्म में स्थूल-परकता और जादू-आदू का चक्कर बहुत है...।''

''जादू का स्थूल के साथ क्या सम्बन्ध है?'' मैंने पूछा।

''क्यों नहीं है?'' वह बोला। ''छिपकली की आँख, मेंढक का अंगूठा और मरे हुए बच्चे की उँगली, यह सब क्या है? इससे ज़्यादा स्थूलवाद क्या होगा? प्रार्थनाओं में अभी तक शरीर के रूप-परिवर्तन में विश्वास किया जाता है।''

मैं यह सब जानती थी, परन्तु मेरा ख़याल था कि धर्मक्रान्ति के बाद निचले वर्ग के लोगों को छोड़कर और किसी में ये विश्वास नहीं रहे। मगर हेनरी ने हमेशा की तरह मेरे विचारों को सुलझा दिया। ''केवल निचले दर्जे के लोग ही स्थूलवाद में विश्वास नहीं करते,'' उसने कहा। ''पास्कल और न्यूमैन जैसे बड़े-बड़े मेधावी लोगों का भी ऐसा विश्वास रहा है। मगर एक तरफ़ जहाँ सूक्ष्म ज्ञान है, वहाँ दूसरी तरफ़ वह केवल भोंडा अन्धविश्वास है। शायद एक दिन पता चले कि जिनके शरीर की शिराएँ ठीक काम नहीं करतीं, वही लोग ऐसी बातें सोचते हैं।''

और अब भी सामने स्थूल क्रॉस पर वह स्थूल शरीर लटका हुआ था। मैं सोचने लगी कि अदृश्य ईश्वर को लोग क्रॉस पर लटका सकते थे? जो अदृश्य हो उसे तो सुख-दुख का अनुभव कैसे होगा? वह मेरी प्रार्थना सुनता है, यह भी क्या मेरा अन्धविश्वास ही नहीं है? 'प्रिय ईश्वर' मैंने कहा था, जबकि मुझे उस समय कहना चाहिए था, ''प्रिय अदृश्य'। और मैंने कहा था 'मैं तुमसे घृणा करती हूँ,' परन्तु अदृश्य से कैसे घृणा की जा सकती है! मैं क्रॉस पर लटकी हुई आकृति से घृणा कर सकती थी, जो जैसे यह कह रही थी कि देखो मैंने तुम्हारे लिए कितना दुख उठाया है...मगर एक अदृश्य से...? और रिचर्ड तो उस अदृश्य में भी विश्वास नहीं करता था। वह पुराण-कथाओं से घृणा करता था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि वह उन्हें बहुत

महत्त्व देता था? हैन्सल और ग्रेटल के आडम्बर से तो कोई उस तरह घृणा नहीं कर सकता जैसे रिचर्ड स्वर्ग और नरक की कल्पना से करता था। बचपन में मैं स्नो व्हाइट की दुष्ट रानी से घृणा करती थी, परन्तु रिचर्ड की घृणा तो किसी ऐसी दुष्टता के प्रति नहीं थी। उसके लिए ईश्वर और शैतान दोनों का ही अस्तित्व नहीं था, परन्तु घृणा उसे ईश्वर से ही थी, शैतान से नहीं।

मैं फिर उस परिचित शरीर की ओर देखने लगी, जिसकी बाँहें दुख से फैली हुई थीं और सिर इस तरह झुका था जैसे उसे नींद आई हो। सोचा कभी-कभी मुझे मॉरिस से भी तो घृणा होती है, परन्तु उस घृणा का कारण यही तो है कि मैं उससे प्रेम करती हूँ। यदि मुझे ईश्वर से घृणा है तो उसका वास्तव में अर्थ क्या है?

तो क्या मुझे भी स्थूल में विश्वास है? क्या मेरी भी शिराओं में कुछ दोष है कि मैं दान-आयोग, औसत आय, और मज़दूरों के भोजन-स्तर जैसी यथार्थ चीज़ों में रुचि नहीं ले पाती? उस ऊँचे हैटवाले आदमी, धातु के उस क्रॉस और अपने प्रार्थना करनेवाले हाथों के अस्तित्व में मैं विश्वास करती हूँ, क्या यह मेरा स्थूल से प्रेम है? यदि यह मान लिया जाए कि ईश्वर भी हमारे जैसा एक स्थूल प्राणी है तो उसमें बुराई ही क्या है? उसके स्थूल होने या न होने से अन्तर ही क्या पड़ता है? मॉरिस एक अदृश्य प्राणी होता तो क्या मैं उससे प्रेम कर पाती? ऐसा सोचना अच्छा न हो और इसमें पशुवृत्ति की गन्ध आती हो तो भी क्या है? उससे क्या अन्तर पड़ता है? मैं वहाँ से उठ आई। गिरजे से निकलते हुए मैंने जैसे हेनरी और उस जैसे समझदार और तटस्थ लोगों को मुँह चिढ़ाने के लिए ही गुस्से में वह काम कर डाला जो स्पेनिश गिरजों में मैंने लोगों को करते देखा था। मैंने पवित्र जल में अपनी उँगलियाँ डुबाईं और अपने माथे पर क्रॉस का निशान बना लिया।

6

जनवरी 10, 1946

आज मुझसे घर में नहीं बैठा गया, इसलिए मैं वर्षा में भी बाहर निकल पड़ी। मुझे उस समय की याद आ रही थी, जब मैंने बिना जाने अपने नाख़ून अपनी हथेलियों में चुभो लिये थे और तुम उस पीड़ा में उतर आए थे। मुझे तुम पर विश्वास नहीं था, फिर भी मैंने तुमसे मॉरिस को ज़िला देने को कहा तो तुमने मेरी बात मान ली। तुम्हारे प्रेम ने मेरी प्रार्थना को एक भेंट की तरह ही स्वीकार किया। आज जब वर्षा में जाते हुए मेरे कपड़े अन्दर तक भीग रहे थे और मैं सर्दी से काँप रही थी तो पहली बार मुझे लगा जैसे मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। मैं जैसे वर्षा में तुम्हारी ही खिड़कियों

के नीचे से गुजर रही थी और चाहती थी कि रात-भर वहाँ खड़ी रहकर अपने को यह विश्वास दिला सकूँ कि मैं सचमुच प्रेम करना सीख रही हूँ और अब मुझे मरुस्थल का डर नहीं, क्योंकि तुम मेरे पास हो। घर लौटकर आई तो देखा, मॉरिस हेनरी के पास आया हुआ है। लगा, जैसे दूसरी बार तुमने मॉरिस को मुझे लौटा दिया है। पहली बार मुझे तुमसे घृणा हुई थी, परन्तु तुम्हारे प्रेम ने उस घृणा को मेरे अविश्वास की तरह ही अपने में समेट लिया था, जैसे बाद में कभी दिखाने के लिए तुमने उन्हें अपने पास रख लिया हो—उसी तरह जैसे कभी-कभी मैं और मॉरिस पुरानी बातों को याद किया करते थे और हँसा करते थे—"तुम्हें याद है वह तुमने कैसी बेवकूफ़ी की बात की थी?"

7

जनवरी 18, 1946

आज दो साल के बाद पहली बार मॉरिस के साथ लंच खाया। मैंने ही उसे मिलने के लिए फ़ोन किया था। स्टॉकवेल के पास भीड़ में बस कुछ देर रुकी रही और मैं दस मिनट देर से पहुँची। मैं पहले दिनों की तरह ही डर रही थी कि कोई ऐसी बात न हो जाए जिससे मॉरिस मुझ पर गुस्सा करे। मगर मैं नहीं चाहती थी कि मैं उससे पहले पहुँचूँ जिससे मुझे गुस्सा आए। कई और चीज़ों की तरह मेरे अन्दर अब गुस्सा भी भर रहा है। मैं मॉरिस से हेनरी के बारे में बात करना चाहती थी। कई दिनों से हेनरी कुछ अजीब-सा हो रहा है। वह केवल घर पर या क्लब में ही पीता है, मगर उस दिन उसने बाहर भी मॉरिस के साथ कहीं बैठकर पी थी। मैंने सोचा हो सकता है, उसने मॉरिस से कुछ बात भी की हो। शायद वह मेरी वजह से चिन्तित हो, हालाँकि विवाह के बाद यह पहला अवसर है जब उसे कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। पहले जब मैं मॉरिस से मिलती थी तो उसकी निकटता के अतिरिक्त और कोई बात मेरे दिमाग़ में नहीं आती थी। तब मैं उससे हेनरी के विषय में कोई बात नहीं करती थी। कभी-कभी वह ज़रूर मुझे चोट पहुँचाने के लिए हेनरी की बात करता था। मुझे बुरा लगता था, क्योंकि वास्तव में उससे वह चोट अपने को ही पहुँचाता था और यह मुझसे देखा नहीं जाता था।

क्या मॉरिस के साथ लंच खाकर मैंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है? सालभर पहले मुझे शायद ऐसा लगता, मगर आज मुझे ऐसा नहीं लगा। उन दिनों मुझे कुछ पता नहीं था, इसलिए मैं डरती थी। मुझे तब अपने प्रेम में विश्वास नहीं था। हमने 'रूल्ज़' में खाना खाया। मुझे मॉरिस के साथ बैठकर बहुत अच्छा लगा। केवल जंगले पर

आकर उससे विदा लेते समय मेरा मन थोड़ा अस्थिर हुआ। वहाँ मुझे लगा कि वह मुझे चूमने जा रहा है। मेरा भी मन हुआ, मगर तभी मुझे खाँसी उठ आई और वह क्षण बीत गया। जब वह चला गया तो मुझे लगा कि वह जाने क्या-क्या ग़लत बातें सोचकर मन में दुखी हो रहा होगा और उसके दुख की बात सोचकर मुझे भी दुख होने लगा।

मैं चाहती थी कहीं छिपकर थोड़ी देर रो लूँ, इसलिए मैं नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी में चली गई। मगर विद्यार्थियों का दिन होने से वहाँ बहुत भीड़ थी। मैं वहाँ से मेडन लेन के उस गिरजे में आ गई, जहाँ अँधेरे में किसी को अपने पास का आदमी भी दिखाई नहीं देता। मैं कुछ देर वहाँ बैठी रही। मुझे और एक-दूसरे छोटे-से आदमी को छोड़कर, जो कुछ फासले पर चुपचाप प्रार्थना कर रहा था, वहाँ और कोई नहीं था। मैं सोच रही थी कि जब पहली बार मुझे गिरजे में जाना पड़ा था तो मुझे मन में कितनी उलझन हुई थी। मैंने वहाँ प्रार्थना नहीं की। प्रार्थना मैं बहुत कर चुकी हूँ। मैंने केवल ईश्वर से इतना कहा कि ईश्वर, मैं अब बहुत थक गई हूँ—उसी तरह जैसे एक बच्चा अपने पिता से कहता है।

फरवरी 3, 1946

आज मैंने मॉरिस को देखा, मगर वह मुझे नहीं देख पाया। वह 'पोंटफ्रेक्ट आर्म्ज़' की तरफ़ जा रहा था। मैं उसके पीछे-पीछे चलती रही। मैं घंटा-भर सेडर रोड पर रिचर्ड के यहाँ बैठकर आई थी और रिचर्ड की युक्तियाँ सुनकर थकी हुई थी। रिचर्ड के पुराण-कथाओं को महत्त्व देने से मेरा विश्वास बल्कि और दृढ़ हो रहा था। उसकी इतनी ही बात मेरी समझ में आई कि तर्क से यह सिद्ध किया जा सकता है कि ईसा एक साधारण मनुष्य ही थे। इससे उसकी बात का समर्थन कैसे होता है, यह मेरी समझ में नहीं आया। इसीलिए उसकी बातों ने मुझे बहुत थका दिया था। मैं अपने विश्वास से मुक्ति पाने के लिए उसके पास जाती थी और उससे मिलकर मेरा विश्वास और भी गहरा हो जाता था। लगता था कि वह मेरे लिए कुछ नहीं कर रहा, मैं ही उसके लिए कुछ कर रही हूँ। परन्तु क्या वह कुछ भी नहीं कर रहा? मैं घंटा-भर उसके पास बैठी रही थी और मॉरिस का मुझे ख़याल तक नहीं आया था। और अब मॉरिस मेरे सामने सड़क पर जा रहा था।

उस पर आँखें रखे हुए मैं उसके पीछे-पीछे चलती रही। पोंटफ्रेक्ट आर्म्ज़ में कितनी ही बार हम इकट्ठे गए थे। मुझे पता था कि वह किस शराब-घर में जाएगा और क्या पिएगा। सोचा, मैं भी पीछे से जाकर वहाँ बैठ जाऊँ और कुछ पीने के लिए मँगवा लूँ, तो कैसा रहे! वह मेरी तरफ़ घूमकर देखेगा और फिर सब-कुछ पहले जैसा ही हो जाएगा। सुबह होते ही मन एक आशा से भर जाया करेगा, क्योंकि हेनरी

के घर से जाते ही मैं उसे फ़ोन कर सकूँगी और जब हेनरी को रात को देर से आना होगा तो हम शाम को भी मिल सकेंगे। और सम्भव है इस बार मैं हेनरी को छोड़ ही दूँ। मैं जितना सह सकती थी, सह चुकी थी। मेरे पास चाहे धन नहीं था और मॉरिस भी अपनी पुस्तकों से कठिनाई से ही गुज़ारा करता था, फिर भी मैं उसके काग़ज़ टाइप करके साल में उसकी पचास पौंड की बचत करा सकती थी। गरीबी से मैं नहीं डरती। कई बार आराम से बिस्तर में सोने की बजाय चादर के अनुसार टाँगें फैलाने में अधिक़ सुख मिलता है।

मैं बाहर खड़ी उसे अन्दर जाते देखती रही। मैंने ईश्वर से कहा कि अगर वह मेरी तरफ़ मुड़कर देखेगा तो मैं भी अन्दर चली जाऊँगी। मगर उसने नहीं देखा। मैं घर की तरफ़ चल दी, मगर ध्यान बराबर उसी की तरफ़ बना रहा। दो साल से मैं उससे दूर रह रही थी, और कुछ नहीं जानती थी कि वह दिन में किस समय क्या करता है। परन्तु उस समय मैं जैसे फिर उसके निकट पहुँच गई थी, क्योंकि मुझे पता था कि वह उस समय कहाँ है और क्या कर रहा है। मुझे पता था वह एक बियर और मँगवाएगा और फिर अपने कमरे में जाकर लिखने बैठ जाएगा। अब भी उसकी सब आदतें पहले की तरह ही थीं, और मुझे उसी तरह उन पर प्यार आ रहा था, जैसे अपने पुराने कोट को देखकर उस पर हो आता है। उसकी आदतें वही थीं, इसलिए हमारी घनिष्ठता में कभी कोई अन्तर नहीं आ सकता था।

और मैंने सोचा कि कितनी आसानी से मैं उसे सुखी बना सकती हूँ। मेरा मन होने लगा कि पहले की तरह ही उसे खुशी से ठहाके लगाते देखूँ। हेनरी घर पर नहीं था। उसे किसी के साथ लंच खाने जाना था, और बाद में उसे देर तक दफ़्तर में बैठकर काम करना था। उसका फ़ोन आया था कि वह सात बजे से पहले घर नहीं आएगा। मैंने सोचा, मैं साढ़े छह बजे तक उसका इन्तज़ार करके मॉरिस को फ़ोन करूँगी। कहूँगी, मैं आज रात के लिए ही नहीं सदा के लिए तुम्हारे पास आ रही हूँ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मैं अपना सामान बड़े नीले सूटकेस में और छोटे भूरे सूटकेस में भर लूँगी। इतने कपड़े साथ ले लूँगी, जितने महीने-भर के अवकाश के लिए काफ़ी हों। हेनरी ज़्यादा झंझट नहीं करेगा और महीने-भर में कानूनी कार्यवाही पूरी हो जाने पर आपसी कटुता भी समाप्त हो जाएगी। फिर मुझे जिन-जिन चीज़ों की ज़रूरत होगी, वे मैं आराम से आकर ले जाऊँगी। हेनरी में और मुझमें जब प्रेम ही नहीं था तो कटुता का क्या कारण हो सकता था? विवाहित जीवन में हममें अब केवल मित्रता का ही सम्बन्ध रह गया था, और यह सम्बन्ध आगे भी बना रह सकता था।

और सहसा मुझे लगा कि मैं अब स्वतन्त्र हूँ और प्रसन्न हूँ। ईश्वर से मैंने कहा कि मैं अब तुम्हारी चिन्ता नहीं करूँगी कि तुम हो या नहीं हो और कि मॉरिस को

तुमने जीवन-दान दिया था या वह मेरी व्यर्थ कल्पना ही थी। मैंने तो मॉरिस के लिए यही जीवन माँगा था जो मैं अब उसे देने जा रही हूँ। मैंने ईश्वर से कहा कि देखो अब मैं यह नई प्रतिज्ञा कर रही हूँ कि मैं जैसे भी हो मॉरिस को सुखी बनाऊँगी; तुमसे रोका जाता है तो रोक लो!

मैं ऊपर चली गई और हेनरी के नाम पत्र लिखने लगी। 'मेरे हेनरी,' मैंने लिखा, मगर मुझे लगा यह केवल दिखावा है। 'मेरे प्रिय' लिखती तो वह भी झूठ होता, इसलिए मैंने साधारण मित्र की तरह लिखा, 'प्रिय हेनरी,' और आगे लिखने लगी, 'तुम्हारे दिल को यह जानकर अवश्य चोट पहुँचेगी कि मैं पिछले पाँच साल से मॉरिस से प्रेम करती हूँ। दो साल से हमारा मिलना-जुलना और पत्र-व्यवहार बन्द है, फिर भी उससे कुछ अन्तर नहीं पड़ा। मैं उसके बिना नहीं रह सकती, इसलिए आज तुम्हें छोड़कर जा रही हूँ। बहुत दिनों से मैं तुम्हारे प्रति अपना कर्तव्य ठीक से नहीं निभा रही और जून 1944 से मैंने उसके प्रति भी अपना कर्तव्य नहीं निभाया। इस तरह हम सभी दुखी हैं। मैंने सोचा था कि यह प्रेम मुझे कुछ सन्तोष देकर धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा, मगर वैसा नहीं हुआ। मैं मॉरिस को सन् 1939 में जितना चाहती थी, आज उससे कहीं अधिक चाहती हूँ। हो सकता है मुझसे भूल हो गई हो, मगर अब भी मैंने निश्चय न किया, तो स्थिति और बिगड़ जाएगी। इसीलिए विदा! ईश्वर तुम्हें सुखी रखे! मगर 'ईश्वर तुम्हें सुखी रखे' को मैंने मोटी लकीरों से काट दिया, जिससे वह पढ़ा न जा सके। मुझे वह कुछ बनावटी-सा लगा और फिर हेनरी को तो ईश्वर में विश्वास ही नहीं था। फिर मैंने उसकी जगह 'प्यार' लिखना चाहा, परन्तु दिल में हेनरी के लिए एक तरह के प्यार का अनुभव करते हुए भी उस समय वह लिखना मुझे ठीक नहीं लगा।

चिट्ठी को लिफाफे में डालकर मैंने उसके ऊपर लिख दिया, 'अत्यन्त व्यक्तिगत,' जिससे हेनरी किसी और के सामने उसे न खोल ले। सम्भव था कि वह किसी मित्र को अपने साथ घर ले आता, और मैं नहीं चाहती थी कि किसी के सामने उसके स्वाभिमान को ठेस लगे। जब मैं अपने कपड़े सूटकेस में रखने लगी तो मुझे सहसा ध्यान आया कि वह चिट्ठी मैंने जाने कहाँ रख दी है। मैंने उसे तुरन्त ढूँढ़ लिया और यह सोचकर कि उसे हॉल में रखना भूल न जाऊँ और हेनरी मेरे लौटने की राह ही न देखता रहे, मैं उसे हॉल में रखने के लिए नीचे चली गई। हेनरी के आने में अभी आधा घंटा बाक़ी था। मैं अपनी सब चीज़ें पैक कर चुकी थी, केवल एक ही पोशाक तह करनी रहती थी।

हॉल में जाकर मैंने वह चिट्ठी शाम की डाक के ऊपर रख दी। तभी दरवाज़ा चाबी से खुल गया। मैंने जाने क्यों चिट्ठी जल्दी से उठा ली! हेनरी अन्दर आ गया। वह बीमार और दुखी-सा नज़र आ रहा था। "तुम यहाँ हो?" उसने इतना ही कहा

और मेरे पास से निकलकर अपने पढ़ने के कमरे में चला गया। क्षण-भर बाद मैं भी उसके पीछे वहाँ पहुँच गई। मैंने सोचा कि स्वयं चिट्ठी उसके हाथ में देने के लिए अब मुझे अपने मन को और भी मज़बूत करना होगा। वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि हेनरी बिना आग जलाए अँगीठी के पास बैठा है और रो रहा है।

"क्या बात है हेनरी?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं, सिर्फ़ मेरे सिर में दर्द है," उसने कहा।

मैंने आग जला दी और कहा, "मैं तुम्हें बाम लगा देती हूँ।"

"परेशान होने की कोई बात नहीं है," वह बोला। "अब ठीक हो रहा है।"

"आज दिन कैसे गुज़रा?"

"वैसे ही रोज़ की तरह। थकान कुछ ज़्यादा है।"

"लंच किसके साथ था?"

"बैंड्रिक्स के साथ।"

"बैंड्रिक्स के साथ?"

"हाँ, बैंड्रिक्स के साथ। उसके साथ उसी के क्लब में आज बहुत ही गन्दा खाना खाना पड़ा।"

मैंने उसके पीछे जाकर उसके माथे पर हाथ रख दिया। उसे छोड़कर जाने से पहले ऐसा करना मुझे बहुत विचित्र लगा। जब हमारा नया-नया ब्याह हुआ था तो मेरे सिर में बहुत दर्द हुआ करता था, क्योंकि हर चीज़ उन दिनों अव्यवस्थित नज़र आती थी। तब हेनरी मेरे माथे पर इसी तरह हाथ रख देता था और मैं बहाना किया करती थी कि मैं ठीक हो रही हूँ। हेनरी ने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखकर उसे माथे पर दबा लिया और कहा, "तुम्हें पता है, मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ?"

"मुझे पता है," मैंने कहा। लगा जैसे वह मुझ पर अपना अधिकार दिखा रहा था और मुझे उस अधिकार से चिढ़ थी। मैंने मन में कहा कि तुम्हें सचमुच मुझसे प्रेम होता तो तुम्हें मुझ पर क्रोध भी आता और तब मैं कितनी आसानी से तुमसे स्वतन्त्र हो सकती!

"मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता," उसने कहा। मैंने कहना चाहा कि रह क्यों नहीं सकते, तुम्हें थोड़ी असुविधा ही होगी, बस, जैसे तुम्हें एक बार अखबार बदलने पर हुई थी, मगर शीघ्र ही तुम्हें नए अखबार की आदत पड़ गई थी। ये केवल दकियानूसी शब्द हैं जो हर दकियानूसी पति कहता है और जिनका अर्थ कुछ भी नहीं होता। परन्तु तभी मुझे आइने में उसका चेहरा दिखाई दे गया। वह अब भी रो रहा था।

"हेनरी, बात क्या है?" मैंने पूछा।

"बात कुछ नहीं है। केवल मेरे सिर में दर्द है।"

"मैं यह नहीं मानती। क्या दफ़्तर में कोई बात हुई है?"

"दफ़्तर में क्या बात हो सकती थी!" वह कुछ अस्वाभाविक कटुता के साथ बोला।

"तो क्या बैंड्रिक्स ने कुछ कहा है?"

"नहीं, वह भला क्या कह सकता था!"

मैं उसका हाथ हटाना चाह रही थी, मगर वह उसे उसी तरह रखे रहा। मैं डर रही थी कि वह जाने अब क्या कहेगा और उससे मुझे अपने मन पर जाने कितना बोझ महसूस होगा। साथ ही सोच रही थी कि मॉरिस घर पर आ गया होगा। हेनरी न आया होता तो मैं पाँच मिनट में मॉरिस के पास पहुँच जाती और इस समय हेनरी के दुखी चेहरे की जगह मॉरिस का हँसता चेहरा मेरे सामने होता। दूर से दुख का पता नहीं चलता, इसलिए दूर रहकर किसी के दुख का कारण बनना उतना कठिन नहीं होता। "मैं जानता हूँ सैरा कि मैं एक अच्छा पति नहीं हूँ," हेनरी बोला।

"यह तुम क्या कह रहे हो?" मैंने कहा।

"मेरे स्वभाव में एक जड़ता है। मेरे मित्र भी जड़ हैं।...और हम लोग अब एक-दूसरे के निकट भी नहीं आते।"

"विवाहित जीवन में वह सम्बन्ध तो एक-न-एक दिन समाप्त हो ही जाता है," मैंने कहा। "मगर हम आपस में मित्र तो हैं ही।" यह मैं अपने छुटकारे की युक्ति ढूँढ़ रही थी। हेनरी हाँ कहता तो मैं वह चिट्ठी उसे दे देती और कह देती कि मैं उसे छोड़कर जा रही हूँ और चल भी देती। मगर हेनरी ने बात का वह सिरा पकड़ा ही नहीं और मैं अभी तक यहाँ हूँ और मॉरिस फिर मुझसे दूर हो गया है। परन्तु इस बार दोष ईश्वर का नहीं, मेरा है!

"मैं तुम्हें कभी केवल एक मित्र ही नहीं समझ सकता," हेनरी ने कहा। "एक मित्र के बिना इनसान जीता रह सकता है।" और फिर आइने में मुझे देखता हुआ बोला, "सैरा, तुम मुझे छोड़कर मत जाना। कुछ साल और हैं, किसी तरह काट लो। मैं चेष्टा करूँगा कि...।" और आगे बात न सूझने से वह फिर रोने लगा। कितना अच्छा होता जो मैं उसे बरसों पहले ही छोड़कर चली गई होती! मगर उसका दुख आँखों से देखने के बाद उसे मैं और दुख कैसे पहुँचा सकती थी? और अब तो कभी भी उसका अवसर नहीं आएगा।

"मैं वचन देती हूँ, मैं तुम्हें छोड़कर कभी नहीं जाऊँगी।" और यह नई प्रतिज्ञा करते ही मेरा मन होने लगा कि मैं तुरन्त उसके पास से चली जाऊँ। वह बाज़ी जीत गया था और मॉरिस हार गया था। और मुझे इसके लिए हेनरी से घृणा हो रही थी। यदि मॉरिस बाज़ी जीत जाता तो जाने मुझे कैसा लगता! मैंने ऊपर जाकर चिट्ठी के इतने छोटे टुकड़े कर दिए कि कोई उन्हें जोड़ न सके। सूटकेस को ठोकर मारकर

पलंग के नीचे कर दिया क्योंकि कपड़े निकालकर रखने की मुझमें हिम्मत नहीं थी, और डायरी लिखने बैठ गई। मॉरिस की पीड़ा उसके लेखन में निकल जाती है। उसके लिखे वाक्यों में उसका अनुभव किया जा सकता है। मॉरिस, यदि पीड़ा से कोई लेखक बन सकता है तो मैं भी अब लिखना सीख रही हूँ। चाहती हूँ कि एक बार तुमसे बातें कर सकूँ। हेनरी से या और किसी से मैं बातें नहीं कर सकती। मेरे ईश्वर, मुझे ऐसा एक अवसर तो दे दो!

कल जल्दी में एक सस्ता और भद्दा-सा क्रॉस ख़रीद लाई। मुझे दूकानदार से उसके लिए कहते शरम आ रही थी और डर लग रहा था कि कोई मुझे देख न ले। सोच रही थी कि उस दूकान में बन्द शीशे लगे होते तो कितना अच्छा होता! अब दरवाज़ा बन्द करके मैं उस क्रॉस को गहने के बक्से के अन्दर से निकालकर देख लेती हूँ। उससे प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरी सहायता करो, मुझे प्रसन्नता दो, मुझे शीघ्र मृत्यु दो...हाँ, मुझे मुझे मुझे! मुझे ऐसी प्रार्थना क्यों नहीं आती जिसमें यह 'मैं' और 'मुझे' न हो।

मुझे तुम ऐसी कर दो कि मैं रिचर्ड के चेहरे के दाग़ की बात सोचूँ, हेनरी के आँसुओं की बात सोचूँ और अपने को भूल जाऊँ! मेरे ईश्वर, मैंने प्रेम करना चाहा है और इस दलदल में फँस गई हूँ। मैं यदि तुमसे प्रेम कर सकूँ तो इन सबसे ठीक से प्रेम कर सकूँगी। मुझे इस कहानी में विश्वास है कि तुमने हमारे लिए जन्म लिया और हमारे लिए ही प्राण दे दिए। मुझे तुममें विश्वास है। मुझे प्रेम की शिक्षा दो! मैं अपनी पीड़ा से नहीं डरती, मगर इन लोगों की पीड़ा मुझसे नहीं सही जाती। मुझे चाहे जितनी पीड़ा दे लो, परन्तु उनकी पीड़ा दूर कर दो। मेरे ईश्वर, क्षण-भर के लिए अपनी जगह मुझे इस क्रॉस पर लटक जाने दो! मैं तुम्हारी तरह पीड़ा सह सकूँ, तभी तुम्हारी तरह पीड़ा दूर भी कर सकूँगी।

फरवरी 4, 1946

हेनरी ने जाने क्यों आज छुट्टी ले ली! पहले उसने मुझे लंच खिलाया, फिर हम नेशनल गैलरी में घूमते रहे। फिर शाम को खाना जल्दी खाकर थियेटर में चले गए। हेनरी का व्यवहार ऐसा था जैसे कोई पिता बच्चे को स्कूल आकर अपने साथ घुमाने के लिए ले जाए। परन्तु बच्चा तो वह स्वयं ही है।

फरवरी 5, 1946

हेनरी सोच रहा है कि वसन्त में हम लोग विदेश चलें। कभी उसका मन होता है लायर के चेटो में चला जाए और कभी कि जर्मनी जाया जाए। जर्मनी जाएँ तो बमबारी के दिनों में जर्मन लोगों की नैतिकता पर वह एक रिपोर्ट तैयार कर सकता है। मैं चाहती हूँ यह वसन्त कभी न आए। फिर 'मैं'? नहीं, मैं कुछ नहीं चाहती।

मुझे तुमसे प्रेम हो, तो हेनरी से भी प्रेम होना चाहिए। ईश्वर ही मनुष्य है–हेनरी के भैंगेपन में और रिचर्ड के दाग़दार चेहरे में वही रहता है। केवल मॉरिस अलग है। मैं कोढ़ी के कोढ़ से प्रेम कर सकती हूँ तो हेनरी की उकता देनेवाली बातों से क्यों नहीं कर सकती? मगर कोढ़ी सामने हो तो शायद मैं उससे भी उसी तरह मुँह मोड़ लूँगी जैसे अब हेनरी से मोड़े रहती हूँ। मुझे शायद नाटकीयता का मोह है। सोचती हूँ मैं तुम्हारी तरह कीलों का दर्द सह सकती हूँ, और हेनरी के नक्शे और गाइड मुझसे नहीं सहे जाते। मैं बिलकुल नाकारा हूँ। मेरे ईश्वर! मैं अब भी वही कुलटा और विश्वासघातिनी हूँ। मुझे रास्ते से हटा दो!

फरवरी 6, 1946

आज रिचर्ड के यहाँ ख़ासी बुरी स्थिति पैदा हो गई। वह ईसाई गिरजों के आपसी विरोध की बात बता रहा था और मैं समझने की चेष्टा करते हुए भी कुछ नहीं समझ पा रही थी। सहसा उसने कहा, ''तुम यहाँ किसलिए आती हो?''

''तुमसे मिलने,'' अपने को सँभालने से पहले ही मेरे मुँह से निकल गया।

''मेरा ख़याल था तुम कुछ सीखने के लिए आती हो।''

मैंने उसे बताया कि मेरा मतलब यही था। मैंने सोचा था कि उसे मेरी बात से चोट पहुँची होगी और अब वह मुझ पर गुस्सा करेगा, मगर उसे ज़रा भी गुस्सा नहीं आया। वह कुर्सी से उठकर मेरे पास छींट के सोफ़े पर उस तरफ़ आ बैठा जिधर से उसका दाग़दार गाल दिखाई नहीं देता था। ''तुम्हारे हर सप्ताह यहाँ आने से मुझे बहुत अच्छा लगता है,'' उसने कहा और मुझे लगा कि वह अब मुझसे प्रेम करने की बात कहने जा रहा है। ''मैं तुम्हें अच्छा लगता हूँ'' उसने मेरी कमर पर हाथ रखकर पूछा।

''अच्छे न लगते तो मैं यहाँ क्यों आती?''

''तुम मुझसे ब्याह करोगी?'' अपने गुमान के कारण यह उसने इस तरह कहा, जैसे मुझसे पूछ रहा हो बताओ, चाय की एक और प्याली लोगी।

''हेनरी कहाँ मानेगा?'' मैंने हँसने की चेष्टा करते हुए कहा।

''तुम किसी भी तरह हेनरी को छोड़ नहीं सकतीं?'' और मुझे क्रोध आने लगा कि मैंने मॉरिस के लिए हेनरी को नहीं छोड़ा तो तुम्हारे लिए कैसे छोड़ दूँगी।

''मैं एक विवाहित स्त्री हूँ।''

''उससे क्या होता है?''

''होता है,'' मैंने कहा और सोचा कि क्यों न उसे बता ही दूँ! ''मुझे ईश्वर में और सब चीज़ों में विश्वास है। यह विश्वास मुझे तुमसे मिला है–तुमसे और मॉरिस से।''

"मतलब?"

"तुम कहते थे कि तुम्हें पादरियों ने अविश्वासी बनाया है। इसका उलटा भी तो सच हो सकता है।"

वह अपने सुन्दर हाथों को देखता रहा, जैसे संसार में वही एक चीज़ उसके पास शेष हो। धीरे से बोला, "तुम जो भी विश्वास करो, चाहे जिस मन्त्र-तन्त्र को मानो, मुझे उसमें कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

"मुझे बड़ा खेद है रिचर्ड!"

"यह प्रेम मेरी घृणा से बड़ा है। यदि मेरे बच्चे हों तो तुम उन्हें चाहे जो भी सिखा लेना।"

"तुम ऐसी बातें क्यों करते हो?"

"मेरे पास धन नहीं है, मेरे पास अपना विश्वास ही एक ऐसी चीज़ है जो मैं तुम्हें उपहार के रूप में दे सकता हूँ।"

"मगर रिचर्ड, मैं किसी और से प्रेम करती हूँ।"

"तुम्हें उससे प्रेम होता तो तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा का इतना ध्यान न रहता।"

"मैंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़नी चाही है, मगर नहीं तोड़ पाई," मैंने उकताकर कहा।

"तुम समझती हो कि मैं मूर्ख हूँ?"

"क्यों?"

"क्या मैं नहीं जानता कि तुम मुझसे क्यों प्रेम नहीं कर सकतीं?" और उसने अपना दाग़वाला गाल मेरी तरफ़ कर दिया। "तुम सुन्दर हो, इसलिए आसानी से ईश्वर में विश्वास कर सकती हो। मगर जिसके मुँह पर ईश्वर ने बचपन में ही यह दाग़ लगा दिया हो, वह उससे कैसे प्रेम करेगा?"

"रिचर्ड, इसमें ऐसी कोई बुराई नहीं है।" और आँखें बन्द करके मैंने अपने होंठ उसके दाग़ पर रख दिए। क्षण-भर के लिए मुझे मितलाहट हुई, क्योंकि मैं अपरूपता से डरती हूँ। रिचर्ड ने अपना चेहरा नहीं हटाया और चुपचाप बैठा रहा। मुझे लगने लगा कि मैं पीड़ा को चूम रही हूँ—पीड़ा, जिसमें तुम्हारा निवास है। सुख में तुम नहीं रहते। मैं पीड़ा में तुमसे प्रेम करती हूँ। मेरे मुँह में घात और नमक का-सा स्वाद भर रहा था और मैं सोच रही थी कि तुम कितने अच्छे हो! तुमने सुख में रखकर हमारे प्राण नहीं लिये, दुख में रखकर हमें अपना आश्रय दिया है।

सहसा उसका चेहरा दूर हट गया और मैंने अपनी आँखें खोल लीं।

"अच्छा, गुड बाई!" उसने कहा।

"गुड बाई रिचर्ड!"

"अब कभी मत आना," वह बोला। "तुम्हारी दया मुझे नहीं चाहिए।"

"यह दया नहीं है।"

"मैंने अपने को स्वयं मूर्ख बनाया है।"

मैं चली आई। और ठहरने का कोई अर्थ नहीं था। मैं उससे कैसे कहती कि मुझे उससे स्पर्द्धा है क्योंकि उसके चेहरे पर पीड़ा का चिह्न है, और वह जब आइने में अपने को देखता है तो सुन्दरता जैसी साधारण मानवीय चीज़ की जगह उसे सामने तुम नज़र आते हो।

फरवरी 10, 1946

मुझे तुम्हें कुछ लिखने की या तुमसे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। थोड़ी देर पहले तुम्हें एक पत्र लिखना आरम्भ किया था, परन्तु फिर अपने पर ही लज्जित होकर उसे फाड़ दिया। तुम्हें पत्र लिखने का क्या अर्थ है, जब कि मेरे सोचने से पहले ही तुम सब कुछ जानते हो! तुम्हें प्रेम करने से पहले मैं मॉरिस से भी इतना प्रेम कहाँ करती थी? या कि मेरा प्रेम तब भी तुम्हीं से था और उसका स्पर्श तुम्हारा ही स्पर्श था? उसके स्पर्श में जो कुछ मुझे मिलता था वह हेनरी के या किसी के भी स्पर्श में नहीं मिला और उसके बिना क्या मैं तुम्हारे स्पर्श को जान सकती थी? मॉरिस को भी और किसी स्त्री का स्पर्श ऐसा नहीं लगा, तो क्या वह भी तुम्हीं से प्रेम करता है? मेरी जिन चीज़ों से तुम्हें घृणा है, उन्हीं से उसे भी घृणा थी। बिना जाने वह सदा तुम्हारा ही पक्ष लेता था। तुम्हारी इच्छा थी कि हमारा वियोग हो, परन्तु उसकी भी तो यही इच्छा थी। अपने क्रोध और ईर्ष्या से और प्रेम से वह इसी की तो भूमिका बना रहा था। हमारे पास प्रेम करने को जितना कुछ था, वह हमने एक-दूसरे पर उँडेल दिया था।...और फिर तुम्हारे सिवा कुछ नहीं रहा; दोनों के लिए ही कुछ नहीं रहा। यूँ चाहे मैं जीवन-भर इस या उस पुरुष को अपना प्रेम थोड़ा-थोड़ा बाँटती रहती, परन्तु उस दिन पैडिंगटन के पास के होटल में पहली बार मिलने पर ही हम दोनों ने अपना सब-कुछ एक-दूसरे को दे डाला था। मेरे ईश्वर, तुम वहाँ पास ही खड़े हमें अपने को पूरी तरह लुटा देने की शिक्षा दे रहे थे—वैसी ही शिक्षा जैसी तुमने धनी व्यक्ति को धन लुटाने की दी थी, जिससे हमारे पास केवल तुम्हारा प्रेम ही शेष रह जाए। सचमुच, मेरे प्रति तुम कितने दयालु हो! मैंने तुमसे पीड़ा माँगी तो तुमने मुझे शान्ति दी। शान्ति उसे भी दो; उसे इसकी और भी आवश्यकता है।

फरवरी 12, 1946

दो दिन हुए मन पर कैसा शान्ति, सुख और प्रेम का अनुभव छाया था! लगता था जीवन फिर सुखी होने जा रहा है। मगर रात को सपने में देखा कि मैं एक लम्बा ज़ीना पार करके ऊपर मॉरिस तक पहुँचना चाह रही हूँ। मन प्रसन्न था कि ऊपर पहुँचूँगी तो हम दोनों फिर प्रेम कर सकेंगे। मैंने उसे आवाज़ दी कि मैं आ रही हूँ।

मगर उत्तर में जो आवाज़ सुनाई दी, वह मॉरिस की आवाज़ नहीं थी, एक अपरिचित व्यक्ति की आवाज़ थी जैसे सहसा कोहरे में खोए हुए जहाज़ को चेतावनी देने के लिए एक भोंपू बज उठा हो। मैं डर गई। मुझे लगा कि मॉरिस अपना फ्लैट छोड़कर न जाने कहाँ चला गया है। ज़ीने से उतरने लगी तो मुझे लगा कि मेरी कमर तक पानी आ गया है और हॉल घने कोहरे से भर गया है। तभी मेरी आँख खुल गई। तब से मन में शान्ति नहीं रही। मैं पहले के दिनों की तरह ही मॉरिस को पाना चाहती हूँ। चाहती हूँ उसी तरह उसके साथ बैठकर सैंडविच खाऊँ, उसी तरह उसके साथ कहीं जाकर कुछ पिऊँ। मैं थक गई हूँ और पीड़ा नहीं चाहती। मैं मॉरिस को पाना चाहती हूँ। मैं साधारण और हीन मानवीय प्रेम चाहती हूँ। मेरे ईश्वर, तुम जानते हो मैं पीड़ा पाने की कामना रखती हूँ, परन्तु इस समय नहीं। इस समय इसे ले लो, फिर कभी लौटा देना।

1

मैं और पढ़ नहीं सका। जहाँ-जहाँ से पढ़ते हुए मन को बहुत कष्ट हुआ था, वहाँ मैं कई-कई पंक्तियाँ छोड़ गया था। मैं यह सोचकर पढ़ने बैठा था कि पढ़कर डंस्टन के विषय में कुछ पता चलेगा; यह नहीं सोचा था कि मुझे यह सब पढ़ने को मिलेगा। मगर पढ़ते हुए ही यह सब जैसे दूर अतीत के तहखाने में जाकर गुम होता गया, क्योंकि वर्तमान से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं था। मेरे मस्तिष्क में केवल सप्ताह-भर पहले की लिखी एक बात ही उभरी रह गई, "मैं मॉरिस को पाना चाहती हूँ। मैं साधारण और हीन मानवीय प्रेम चाहती हूँ।"

मैंने सोचा, मैं ऐसा प्रेम ही तो तुम्हें दे सकता हूँ, क्योंकि और किसी प्रेम का तो मुझे पता ही नहीं है। मैंने अपने को पूरा नहीं उँडेला, मेरे पास इतना कुछ शेष है जो दो जीवन चल सकता है। मुझे उस दिन का ध्यान आया जिस दिन वह सूटकेस लेकर मेरे यहाँ आ रही थी और मैं उस आनेवाली खुशी से बेखबर घर में काम कर रहा था। अच्छा था जो उस समय मैं बेखबर था। यह भी अच्छा था जो अब मुझे पता चल गया था। डंस्टन और वार्डन जाएँ भाड़ में, मैंने सोचा, मैं अब सैरा को फिर से पा सकता था। मैंने तुरन्त फ़ोन पर उसका नम्बर मिलाया।

उधर से नौकरानी ने फ़ोन उठाया। "मैं बैंड्रिक्स बोल रहा हूँ," मैंने कहा, "मैं मिसेज़ माइल्स से बात करना चाहता हूँ।" उसने मुझे रुकने को कहा और मैं इस तरह मुँह-खोले प्रतीक्षा करने लगा जैसे अभी-अभी मैंने एक लम्बी दौड़ दौड़ी हो। मगर फिर भी उधर से नौकरानी की ही आवाज़ सुनाई दी और उसने कहा कि मिसेज़ माइल्स घर पर नहीं हैं। जाने क्यों मुझे विश्वास नहीं आया! पाँच मिनट बाद अपने मुँह पर रूमाल बाँधकर मैंने फिर फ़ोन किया।

"मिस्टर माइल्स हैं?"

"जी नहीं!"

"तो क्या मैं मिसेज़ माइल्स से बात कर सकता हूँ? मैं विलियम मैलक बोल रहा हूँ।"

शीघ्र ही उधर से सैरा की आवाज़ सुनाई दी, "गुड ईवनिंग! मैं मिसेज़ माइल्स बोल रही हूँ।"

"मुझे पता है सैरा, मैं तुम्हारी आवाज़ पहचानता हूँ।"

"तुम हो? मैंने तो समझा था..."

"सैरा, मैं तुमसे मिलने के लिए वहाँ आ रहा हूँ।"

"नहीं, मॉरिस, मैं बिस्तर में पड़ी हूँ और इस समय वहीं से बोल रही हूँ।"

"यह तो और भी अच्छा है।"

"बेवकूफ़ी की बात मत करो। मेरा मतलब है मैं बीमार हूँ।"

"तब तो मेरा आना और भी ज़रूरी है। मुझे पता तो चलना चाहिए कि क्या बात है।"

"बात कुछ नहीं है, ख़ाली जुकाम है," और वह एक अध्यापिका की तरह एक-एक शब्द का अलग उच्चारण करती हुई बोली, "देखो...तुम...यहाँ...नहीं... आओगे।" मैं झुँझला उठा।

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और मैं वहाँ आ रहा हूँ।"

"तो मैं बिस्तर से निकलकर यहाँ से चली जाऊँगी।"

मैंने सोचा कि मैं दौड़ूँ तो चार मिनट में कॉमन के उस तरफ़ पहुँच सकता हूँ। उतनी देर में वह कपड़े भी नहीं पहन पाएगी। "...या मैं नौकरानी से कह दूँगी कि किसी को अन्दर न आने दे।"

"उसे मुझे धक्के देकर निकालना पड़ेगा और इतनी ताकत उसमें नहीं है।"

"देखो, मॉरिस, मेरी बात मान जाओ। मैंने इतने दिनों से तुमसे कोई अनुरोध नहीं किया।"

"अभी उस दिन लंच खिलाने का अनुरोध किया था।"

"देखो मॉरिस, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए आज तो मैं किसी भी तरह तुम्हें नहीं मिल सकती। अगले सप्ताह..."

"मैं बहुत सप्ताह देख चुका हूँ। मुझे तुमसे अभी इसी समय मिलना है।"

"क्यों, ऐसी क्या बात है?"

"क्योंकि तुम मुझसे प्रेम करती हो।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो?"

"कैसे भी सही! मैं तुम्हें अपने साथ यहाँ ले आना चाहता हूँ।"

"तो मैं तुम्हें फ़ोन पर उत्तर दिए देती हूँ। मैं नहीं आ सकती।"

"फ़ोन पर मैं तुम्हें छू नहीं सकता, इसलिए..."

"मॉरिस, बात सुनो, तुम मुझे वचन दो कि तुम नहीं आओगे।"

"मैं आ रहा हूँ।"

"मॉरिस, सुनो, मेरी तबीयत बहुत ही ख़राब है। दर्द आज बहुत बढ़ा हुआ है और बिस्तर से निकलना मेरे लिए ठीक नहीं।"

"तुमसे निकलने को कौन कहता है?"

"तुम मुझे वचन नहीं दोगे तो मैं सच कहती हूँ, मैं अभी कपड़े पहनकर घर से चली जाऊँगी।"

"यह तुम्हारे जुकाम से कहीं बड़ी चीज़ है सैरा कि हम लोग..."

"नहीं मॉरिस, नहीं! हेनरी अब आने ही वाला है।"

"आने दो उसे!" और मैंने चोंगा रख दिया।

महीना-भर पहले जिस रात मेरी हेनरी से भेंट हुई थी, यह उससे भी कहीं ख़राब रात थी। ओले पड़ रहे थे जो बरसाती के सूराखों में सीधे अन्दर चले जाते थे। कोहरे से लैम्प धुँधले पड़ रहे थे, इसलिए दौड़कर जाना असम्भव था...और यूँ भी अपनी टाँग की वजह से मेरे लिए वैसे दौड़ना मुश्किल था। टार्च भी घर पर ही छोड़ आया था, इसलिए सैरा के घर तक पहुँचने में मुझे आठ मिनट लग गए। मैं सड़क पार करने ही जा रहा था कि सैरा घर से बाहर निकल आई। मेरा दिल उछलने लगा कि अब वह कहीं नहीं जा सकती। मुझे विश्वास था कि वह रात हम ज़रूर साथ बिताएँगे और एक बार आरम्भ हो जाए तो फिर कुछ भी असम्भव नहीं रहेगा। पहले मैं उसे उतना नहीं जानता था, इसलिए शायद उतना प्रेम भी नहीं करता था; इनसान किसी को जितना जानता हो उसे उससे उतना ही प्रेम होता है। मैं अब फिर से विश्वास के क्षेत्र में पहुँच गया था।

सड़क काफ़ी चौड़ी थी और ओले गिर रहे थे, इसलिए सैरा की नज़र मुझ पर नहीं पड़ी। वह बाएँ को मुड़कर तेज़-तेज़ चलने लगी। मैंने सोचा कि वह कहीं सुस्ताने के लिए रुकेगी तो मैं उसे पकड़ लूँगा। मैं उसके बीस गज़ पीछे चल रहा था, मगर उसने एक बार भी मुड़कर नहीं देखा। कॉमन का चक्कर काटकर तालाब और पुस्तकों की जली हुई दूकान के पास से होती हुई वह अब ट्यूब-स्टेशन की तरफ़ जा रही थी। मैंने सोचा कि क्या है, मैं भरी हुई गाड़ी में भी उससे बात कर सकता हूँ। वह सीढ़ियाँ उतरकर टिकट घर के पास पहुँच गई। मगर वह अपना पर्स साथ नहीं लाई थी और ज़ेबों में टटोलकर भी उसे टिकट के लिए डेढ़ पेंस रेज़गारी नहीं मिली। ऊपर आकर उसने सड़क पार की और ट्राम-स्टैंड की तरफ़ चल दी। शायद मन में उसने कोई और जगह सोच ली थी। मैं बहुत प्रसन्न था। वह उस समय जैसे मन में बहुत डरी हुई थी कि मुझसे उसकी भेंट हो गई तो वह क्या करेगी। मुझे लग रहा था कि मैंने बाज़ी मार ली है और इसलिए मुझे उस पर दया भी आ रही थी। मैं उससे कहना चाह रहा था कि देखो ऐसी कोई बात नहीं है, वह बुरा सपना अब बीत गया है और हम लोग अब आराम से सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

और तभी मैंने उसे खो दिया। अपने अत्यधिक विश्वास के कारण मैंने उसे काफ़ी आगे निकल जाने दिया। उसने मुझसे बीस गज़ आगे सड़क पार कर ली।

मुझे अपनी टाँग की वजह से सीढ़ियाँ चढ़ने में कुछ देर लग गई थी। मेरे ऊपर आते ही एक ट्राम हम दोनों के बीच में आ गई और फिर मुझे उसका पता नहीं चला। जाने वह बाएँ को मुड़कर हाई स्ट्रीट में चली गई या पार्क रोड पर ही सीधी निकल गई। मैंने सोचा, कोई बात नहीं, आज नहीं तो कल सही, अब मुझे पता चल ही गया है कि वह मुझसे प्रेम करती है और उसकी मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञा ही हमारे रास्ते में एक बाधा है। जब दो व्यक्तियों में प्रेम हो तो कोई भी चीज़ उनके सहवास में बाधा नहीं डाल सकती। यह एक निश्चित फार्मूला है जो हर व्यक्ति का आजमाया हुआ है।

मैंने हाई स्ट्रीट के एक कैफे में झाँककर देखा। वह वहाँ नहीं थी। तभी मुझे पार्क रोड के कोने के गिरजे की याद हो आई। मेरे मन ने कहा कि वह ज़रूर वहीं गई होगी। वहाँ पहुँचा तो वह सचमुच वहाँ एक तरफ़ खम्भे से सटकर मेरी की भद्दी-सी मूर्ति के पास बैठी थी। वह प्रार्थना नहीं कर रही थी, केवल आँखें बन्द किए बैठी थी। वहाँ काफ़ी अँधेरा था और उसके चेहरे पर मूर्ति के सामने रखी मोमबत्तियों की ही रोशनी पड़ रही थी। मैं भी पारकिस की तरह उसके पीछे बैठ गया और प्रतीक्षा करने लगा। सारी बात जान लेने के बाद अब मुझे कई साल भी वहाँ बैठे रहना पड़ता तो कोई बात नहीं थी। भीगने के कारण मुझे ठंड लग रही थी, मगर मन से मैं बहुत प्रसन्न था। चबूतरे पर रखी हुई मूर्ति के प्रति भी मेरा मन उदार हो रहा था। मैं सोच रहा था कि सैरा चाहे हम दोनों से ही प्रेम करती है, परन्तु एक मनुष्य और एक मूर्ति की प्रतिद्वन्द्विता में मूर्ति कभी नहीं जीत सकती। मैं उसके शरीर के कोमल भागों को छूकर उसे अपनी बात के लिए राज़ी कर सकता था, परन्तु अपने चबूतरे में बँधी हुई वह मूर्ति भला क्या कर सकती थी!

और तभी वह एक हाथ अपनी छाती पर रखे हुए खाँसने लगी। मैं उसे उस कष्ट में अकेली नहीं रहने देना चाहता था, इसलिए मैंने पास जाकर उसके घुटने पर हाथ रख दिया। सोचा कि मैं भी उसे छूकर ही उसका कष्ट दूर कर सकता तो कितना अच्छा था! खाँसी समाप्त होने पर वह बोली, "तुम मुझे छोड़ोगे नहीं मॉरिस?"

"कभी नहीं," मैंने कहा।

"तुम्हें आज क्या हुआ है? उस दिन तुम्हारे साथ लंच खाने आई थी तो तुम ऐसे नहीं थे।"

"तब मैं तुमसे नाराज़ था। मैं सोचता था कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करतीं।"

"तो अब तुम्हें कैसे लगने लगा कि करती हूँ?" मेरा हाथ उसके घुटने पर वैसे ही रखा था। मैं उससे झूठ नहीं बोलना चाहता था, इसलिए मैंने पारकिस के डायरी चुराने की बात बता दी।

"यह अच्छा काम नहीं था।"

"मैं कब कहता हूँ अच्छा काम था!"

वह फिर खाँसने लगी और जब थक गई तो उसका कन्धा मुझसे आ लगा।

"देखो," मैंने कहा, "अब सब कुछ समाप्त हो गया है...मेरा मतलब है वह प्रतीक्षा का झंझट। अब हम यहाँ से साथ ही चलेंगे।"

"यह नहीं होगा," वह बोली।

मैंने उसकी कमर में हाथ डालकर उसके वक्ष को छू लिया। "हम फिर से जीवन आरम्भ कर रहे हैं सैरा," मैंने कहा। "अपने सन्देह और अविश्वास के कारण आज तक तुमसे ठीक से प्रेम नहीं कर सका। मैं तुम्हें ठीक से नहीं जानता था। अब मेरे मन में कोई सन्देह नहीं है।"

उसने कुछ नहीं कहा और उसी तरह मेरे ऊपर झुकी रही, जैसे कि मेरी बात उसने मान ली हो। "ऐसे करो," मैंने कहा, "कि घर जाकर दो दिन तुम बिस्तर में आराम कर लो। जुकाम में तुम्हारा सफ़र करना ठीक नहीं। मैं रोज़ फ़ोन पर तुम्हारा हाल पूछ लिया करूँगा। जिस दिन तुम ठीक हो जाओगी उस दिन मैं आकर तुम्हारा सामान बँधवा दूँगा। हम यहाँ नहीं रहेंगे। डॉरसेट में मेरे एक मित्र का कॉटेज ख़ाली पड़ा है, हम कुछ सप्ताह वहाँ जाकर आराम करेंगे। और मैं अपना उपन्यास भी पूरा कर लूँगा। कानूनी कार्यवाही बाद में होती रहेगी। पहले हम दोनों को आराम की ज़रूरत है। मैं तुम्हारे बिना अकेले रहते-रहते तंग आ चुका हूँ और अब बहुत थक गया हूँ।"

"मैं भी बहुत थक गई हूँ," उसने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि कोई अपरिचित होता तो शायद सुन ही न पाता। परन्तु मैं तो पैडिंगटन होटल में पहली बार उससे प्रेम करने के समय से ही इन शब्दों के निश्चित स्वर से परिचित था। मैं भी...एकान्त-सहवास, सुख-दुख और आशा-निराशा सब में वह मेरी सहभागिनी होती थी।

"पैसे की ज़रूर कुछ तंगी होगी," मैंने कहा, "मगर उतनी ज़्यादा नहीं। मुझे जनरल गार्डन की जीवनी लिखने का काम मिला हुआ है और उसके एडवांस में हम तीन महीने अच्छी तरह काट सकते हैं। तब तक मैं अपना उपन्यास पूरा करके उस पर एडवांस ले लूँगा। ये दोनों पुस्तकें इसी साल निकल जाएँगी और नई पुस्तक तैयार होने तक इनसे काम चल जाएगा। तुम पास होगी तो मैं ख़ूब काम करूँगा। अब तो वैसे भी मेरे काफ़ी अच्छे दिन आ रहे हैं। मुझे अपनी व्यावसायिक सफलता का ज़रा भी गर्व नहीं और न तुम्हें ही होगा, परन्तु ख़र्च करने और चीज़ें ख़रीदने के लिए तुम्हारे पास अब काफ़ी पैसे रहेंगे और साथ होने से हमें और भी अच्छा लगेगा।"

तभी मुझे लगा कि वह सो गई है। कितनी ही बार बसों, टैक्सियों और पार्क के बेंचों पर वह इसी तरह थककर मेरे कन्धे से लगी हुई सो जाती थी। मैं उसी तरह बैठा

रहा। उस अँधेरे गिरजे में विघ्न पड़ने की कोई सम्भावना नहीं थी। मेरी की मूर्ति के पास काँपती हुई मोमबत्तियों को छोड़कर और वहाँ कोई नहीं था। उसके भार से मेरी बाँह में जो हल्का दर्द हो रहा था, उस जैसा सुख मुझे जीवन में कभी नहीं मिला था।

कहते हैं बच्चों से सोते में जो कहा जाए, उसका उनके अवचेतन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। मैं धीरे-धीरे, जिससे वह जाग न जाए, उसके कानों में कहने लगा, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, सैरा!" सोच रहा था कि शायद उसके अवचेतन पर इन शब्दों का ही कुछ मोहक प्रभाव पड़ जाए। "अब से पहले तुमसे किसी ने भी इतना प्रेम नहीं किया। देखो, तुम अब सुखी होने जा रही हो। हेनरी को इसका बुरा नहीं लगेगा। उसके स्वाभिमान को ज़रूर कुछ चोट पहुँचेगी, परन्तु वह जल्दी ही ठीक हो जाएगा। तुम्हारे चले आने के बाद वह किसी और चीज़ के अभ्यास में खो जाएगा; हो सकता है वह यूनानी सिक्के इकट्ठे करने लगे। हम यहाँ से कहीं चले जाएँगे, सैरा! इस चीज़ को अब कोई नहीं रोक सकता। तुम मुझसे बहुत प्रेम करती हो सैरा!" और फिर मैं चुप होकर सोचने लगा कि बाहर जाने के लिए अब मुझे एक नया सूटकेस ख़रीद लेना चाहिए। तभी सैरा खाँसती हुई उठ खड़ी हुई।

"मैं सो गई थी," उसने कहा।

"तुम अब यहाँ से उठकर घर चली जाओ, तुम्हें ठंड लग रही है।"

"वह मेरा घर नहीं है मॉरिस," वह बोली। "मैं यहाँ से कहीं भी नहीं जाना चाहती।"

"तुम्हें ठंड लग रही है।"

"लगने दो। यहाँ अँधेरा है। अँधेरे में मैं किसी भी चीज़ में विश्वास कर सकती हूँ।"

"तुम बस अपने में और मुझमें ही विश्वास करो।"

"वही तो मैं कह रही हूँ मॉरिस!" और उसने आँख मूँद लीं। मैंने विजय-गर्व के साथ क्रॉस की तरफ़ देखा और जैसे वह सचमुच मेरा एक जीवित प्रतिद्वन्द्वी हो ऐसे मन में कहा कि देखो, ये युक्तियाँ हैं जिनसे किसी को जीता जा सकता है। और मेरी उँगलियाँ धीरे-धीरे उसके वक्ष को सहलाने लगीं।

"तुम बहुत थक गई हो?" मैंने पूछा।

"बहुत, मॉरिस!"

"तुम्हें इस तरह मुझसे दूर नहीं हटना चाहिए था।"

"मैं तुमसे दूर नहीं हटी थी मॉरिस!" और उसने अपना कन्धा हटा लिया। "देखो अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

"तुम्हें चलकर बिस्तर में आराम करना चाहिए।"

"मैं जल्दी ही चली जाऊँगी, मगर तुम्हारे साथ वापस नहीं जाऊँगी। मैं यहीं पर तुमसे विदा लेना चाहती हूँ।"

"वचन दो कि तुम बहुत देर यहाँ नहीं बैठोगी।"

"मैं वचन देती हूँ।"

"और मुझे फ़ोन करोगी?"

उसने सिर हिला दिया, मगर उसकी गोदी में निढाल-से रखे उसके हाथों पर मेरी नज़र पड़ी तो मैंने देखा कि उसने अपनी उँगलियों का क्रॉस बना रखा है। मैंने उसकी उँगलियाँ खोल दीं और सन्देहपूर्ण स्वर में कहा, "तुम यह सच कह रही हो? कहीं फिर तो तुम मुझे छोड़कर दूर नहीं हट जाओगी?"

वह रोने लगी और बच्चों की तरह मुट्ठियाँ भींचकर उनसे आँखों को मलती हुई बोली, "देखो मॉरिस, मुझसे इतनी शक्ति नहीं है। मैं इस समय तुमसे कुछ नहीं कह सकती। तुम मुझ पर दया करो और यहाँ से चले जाओ।"

उस समय उसे और उलझाना और तंग करना मुझे ठीक नहीं लगा। मैंने उसके स्वस्थ घुँघराले बालों को एक बार चूम लिया। वहाँ से फिसलते हुए मेरे ओंठ उसके आँसुओं से भीगे हुए मुँह से छू गए। "ईश्वर तुम्हें सुखी रखे," उसने कहा; और मुझे याद हो आया कि यही वे शब्द थे, जो उसने हेनरी की चिट्ठी में लिखने के बाद काट दिए थे।

मैं स्माईद तो नहीं था, जो उसकी बात के उत्तर में उससे कुछ भी न कहता। मैंने भी अनजाने ही उसके शब्द दोहरा दिए। गिरजे से निकलते हुए मैंने मुड़कर पीछे देखा तो वह मोमबत्तियों की रोशनी में इस तरह गठरी-सी बनकर बैठी हुई थी, जैसे कोई भिखारी वहाँ कुछ उष्णता प्राप्त करने के लिए आया हो। मुझे लगा, सचमुच ही उस समय उसे ईश्वर का प्रेममय आशीर्वाद मिल रहा हो। यह कहानी आरम्भ करते समय मेरा ख़याल था कि मैं घृणा की कहानी लिखने जा रहा हूँ, परन्तु अब लिखते समय मेरी घृणा जाने कहाँ खो गई है और मुझे लग रहा है कि सैरा चाहे जैसी भी थी, हम हज़ारों लोगों से अच्छी थी। यह विश्वास भी हमीं को हो सकता है, उसे तो अपने पर ज़रा भी विश्वास नहीं था।

2

उसके बाद कुछ दिन मैं प्रयत्न से अपने को सँभाले रहा। मैं अब अपने अतिरिक्त सैरा के लिए भी काम कर रहा था। सुबह मैं उपन्यास के साढ़े सात सौ शब्द लिखने की सोचकर बैठता, मगर ग्यारह बजे तक प्रायः एक हज़ार शब्द पूरे कर डालता। आशा का मेरे ऊपर यह विचित्र प्रभाव था कि साल-भर से जो उपन्यास घिसटता हुआ चल रहा था, अब वे तेज़ी से पूरा होने को आ रहा था। हेनरी साढ़े नौ बजे काम पर जाता था और सैरा का फ़ोन तब से साढ़े बारह के बीच ही आ सकता था। उसके बाद तीन

बजे तक उसके फ़ोन करने की सम्भावना नहीं रहती थी, क्योंकि पारकिस ने बताया था कि हेनरी अब लंच अपने घर पर ही खाता है। मैं साढ़े बारह तक अपने काग़ज़ दोहराकर चिट्ठियाँ भी लिख लेता, और उसके बाद मुरझाए मन से प्रतीक्षा करना छोड़ देता। फिर अढ़ाई बजे तक ब्रिटिश म्यूज़ियम के रीडिंग रूम में जाकर जनरल गॉर्डन की जीवनी के नोट्स लेता। पढ़ने और नोट्स लेने में मैं अपने मन को उपन्यास की तरह नहीं लगा पाता था, इसलिए उस समय मेरा आधा ध्यान चीन के मिशनरी जीवन में रहता और आधा ध्यान सैरा में। मुझे कई बार आश्चर्य होता कि मुझे उन लोगों ने जनरल गॉर्डन की जीवनी लिखने को क्यों कहा है? क्या उन्हें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलता जिसका गॉर्डन के ईश्वर में विश्वास होता? खार्टूम में उसकी दृढ़ता और इंगलैंड के राजनीतिज्ञों से उसकी घृणा की बात मुझे अच्छी लगती थी, मगर उसकी बाइबल मेरे लिए एक अपरिचित दुनिया की ही चीज़ थी। वह पुस्तक एक यहूदी प्रकाशक छाप रहा था। शायद उसने सोचा हो कि मैं ईसाई धर्म पर व्यंग्य करता हुआ पुस्तक लिखूँगा, इसलिए उसकी निन्दा होने के कारण ही उसकी बिक्री ज़्यादा होगी। मगर मेरा इरादा उसे खुश करने का नहीं था। गॉर्डन का ईश्वर सैरा का भी ईश्वर था और जिस छाया के प्रेम में सैरा को विश्वास था, उस पर मैं कीचड़ नहीं उछाल सकता। मुझे अब सैरा के ईश्वर से घृणा नहीं थी, क्योंकि आख़िर मैंने उसे हराकर बाजी जीत ली थी।

एक दिन लाइब्रेरी में बैठा अपने सैंडविच खा रहा था (जाने कैसे उन पर रोज़ ही मेरी पेंसिल का रंग चढ़ जाता था) तो सामने के डेस्क से किसी ने दूसरों का ध्यान रखते हुए ज़रा दबी हुई आवाज़ में कहा, ''गुस्ताखी माफ़ कीजिएगा साहब, अब तो सब कुछ ठीक चल रहा है?''

सिर उठाकर देखते ही मेरी नज़र पारकिस की मूँछों पर पड़ी। ''अरे पारकिस,'' मैंने कहा, ''सब तुम्हारी मेहरबानी है। आओ, ये बेस्वाद सैंडविच खाकर देखो।''

''नहीं साहब, यह रहने दीजिए।''

''अरे आ भी जाओ। समझना कि ये भी ख़र्च कि हिसाब में हैं।''

उसने हिचकिचाते हुए एक सैंडविच ले लिया और उसे खोलते ही ऐसे चौंक गया जैसे किसी ने निकल के सिक्के की जगह सोने का सिक्का उसके हाथ में रख दिया हो। ''यह तो असली हैम है,'' वह बोला।

''मेरे प्रकाशक ने मुझे अमरीका से एक डब्बा भेजा है।''

''आपकी बहुत मेहरबानी है साहब!''

''तुम्हारी एक ऐश-ट्रे मेरे पास रखी है,'' मैंने ज़रा दबी हुई आवाज़ में कहा, क्योंकि मेरे साथ बैठा हुआ व्यक्ति मुझे घूरकर देख रहा था।

''उसमें तो बस भावना ही थी।''

"तुम्हारे लड़के का क्या हाल है?"

"उसका जिगर कुछ बढ़ गया है।"

"तुम यहाँ कैसे चले आए? हममें से किसी पर निगाह तो नहीं रख रहे?" मैंने कहा, हालाँकि यह सोचना भी असम्भव था। सर्दी से बचने के लिए कमरे के अन्दर भी हैट और मफलर लगाकर बैठनेवाले उन भले आदमियों में से कौन प्रेम और ईर्ष्या के किसी नाटक का पात्र हो सकता है—वह हिन्दुस्तानी जो सिर-पैर के सारे प्रयत्न से जॉर्ज ईलियट की पुस्तकें पढ़ा करता था, या वह आदमी जो रोज़ किताबों का एक ही ढेर सामने रखकर सोया रहता था?

"अजी साहब," पारकिस बोला। "लड़का वापस अपने स्कूल में चला गया है और मेरी आज छुट्टी है।"

"तो यहाँ क्या पढ़ा जा रहा है?"

"टाइम्स की लॉ रिपोर्ट्स देख रहा हूँ। आज रसेल केस पढ़ रहा हूँ। इससे हमारे काम में काफ़ी सहायता मिलती है, क्योंकि कई नई-नई बातों का पता चलता है और रोज़ के झंझटों से भी आदमी कुछ देर अलग रह लेता है। इस केस के एक गवाह को मैं जानता हूँ। कभी हम एक ही दफ़्तर में इकट्ठे काम करते थे। उसका नाम तो अब इतिहास में पहुँच गया है, जबकि मैं अभी ऐसे ही हूँ।"

"हाँ, मगर कल का क्या कहा जा सकता है!"

"मुझे अपने बारे में कोई ग़लतफ़हमी नहीं है साहब! बोलटन केस के बाद अब मेरे लिए कोई आशा नहीं है। सम्बन्ध-विच्छेद के मुकद्दमों की गवाहियाँ अब प्रकाशित नहीं की जातीं। इसलिए अब मेरे जैसे आदमी की बारी कभी नहीं आ सकती। जज लोग भी हमसे खार खाए रहते हैं। वे कभी नाम लेकर हममें से किसी का उल्लेख ही नहीं करते।"

"यह तो बहुत ही बुरी बात है," मैंने सहानुभूति के साथ कहा।

पारकिस के साथ भी मेरे प्रेम का कुछ सम्बन्ध था ही। उसे देखकर मुझे झट सैरा की याद हो आती थी। पारकिस साथ था, इसलिए मैं ट्यूब पकड़कर घर चला आया। घर आकर जितनी देर वह बैठा रहा, उतनी देर मैं उत्सुकता के साथ सैरा के फ़ोन की प्रतीक्षा करता रहा। पाँच बजे मैंने उसका नम्बर लिया, मगर उधर से घंटी बजने लगी तो मैंने चोंगा रख दिया। सोचा, कहीं हेनरी घर पर न आ गया हो। हेनरी से बात करना अब मुझे असम्भव लगता था, क्योंकि सैरा उसे छोड़कर अब मेरे यहाँ आनेवाली थी। सैरा का प्रेम जीतकर मैं उसे हरा चुका था, हालाँकि इतने विलम्ब से प्राप्त हुई विजय मेरे लिए पराजय से कम दुखदायी नहीं थी।

आठ दिन तक सैरा के घर से फ़ोन नहीं आया और जब आया तो एक ऐसे समय जब मुझे उसकी ज़रा भी आशा नहीं थी। अभी सुबह के नौ नहीं बजे थे। "हलो," मैंने कहा। उधर से हेनरी की आवाज़ सुनाई दी।

"बैंड्रिक्स, तुम बोल रहे हो?" उसकी आवाज़ उस समय कुछ विचित्र-सी लग रही थी। मैंने सोचा कि हो सकता है सैरा ने उससे सारी बात कह दी हो।

"हाँ, मैं बोल रहा हूँ।"

"एक बहुत ही भयानक घटना हो गई है, जो तुम्हें बतानी आवश्यक है। सैरा की मृत्यु हो गई है।"

मेरे मुँह से सहसा बहुत ही दकियानूसी बात निकल पड़ी, "अच्छा? यह तो बहुत ही अफ़सोस की बात है।"

"तुम्हें आज रात को कुछ करना है?"

"नहीं!"

"तो तुम मेरे पास आ जाओ। मुझसे आज अकेले नहीं रहा जाएगा।"

1

वह पहला अवसर था जब मैं रात को हेनरी के यहाँ रहा। उनके यहाँ एक ही गेस्ट-रूम था जहाँ उस समय सैरा का शरीर पड़ा था। (हेनरी उसकी खाँसी से परेशान न हो, इसलिए सप्ताह-भर पहले से वह वहाँ चली गई थी)। मुझे ड्राइंग रूम में उसी सोफ़े पर सोना पड़ा जहाँ कभी हम प्रेम करते रहे थे। मेरा वहाँ रात को ठहरने का इरादा नहीं था, मगर हेनरी ने मुझे मजबूर करके रोक लिया था।

हम दोनों ने मिलकर व्हिस्की की डेढ़ बोतल पी डाली। हेनरी ने कहा, "देखो, व्यक्ति के चल बसने पर मन में ज़रा भी ईर्ष्या नहीं रह जाती। सैरा को गुज़रे कुछ ही घंटे हुए हैं और मैंने तुम्हें अपने पास बुला लिया है।"

"अब काफ़ी दिनों से ईर्ष्या की कोई बात नहीं थी।"

"तुम मुझे यह झूठा दिलासा मत दो। तुम दोनों के सम्बन्ध में अब भी कोई अन्तर नहीं आया था। यह मेरा भाग्य था जो वह इतने बरस मेरे घर में ही रही। तुम इसके लिए मुझसे घृणा करते हो?"

"मैं कह नहीं सकता हेनरी, मुझे कभी ऐसा लगता ज़रूर था, मगर अब मैं कुछ नहीं कह सकता।"

हम पढ़ने के कमरे में थे और बत्ती बुझी हुई थी। गैस की आग इतनी ऊँची नहीं थी कि हम एक-दूसरे का चेहरा देख सकते। हेनरी रो रहा है, इसका पता मुझे उसकी भीगी हुई आवाज़ से चल रहा था। अँधेरे में गोलाबाज़ हम दोनों का निशाना बनाए हुए था। "मगर उसकी मृत्यु हुई किस तरह हेनरी?"

"वह कब की बात है, तीन या चार सप्ताह पहले की न, जब मेरी तुमसे कॉमन में भेंट हुई थी? उस रात उसे ठंड लग गई थी, मगर उसने उसका कोई इलाज नहीं किया। मुझे नहीं पता था कि सर्दी उसके फेफड़ों तक चली गई हैं। मुझे उसने बताया ही नहीं।" मैंने सोचा यह बात तो उसने डायरी में भी नहीं लिखी। डायरी लिखते समय शायद बीमारी की बात सोचने का उसे अवकाश ही नहीं होता था।

"आख़िर वह बिस्तर पर पड़ गई," हेनरी बोला, "मगर चुपचाप पड़े रहना भी उसके लिए आसान नहीं था। उसने मुझे डॉक्टर को भी नहीं बुलाने दिया। अभी सप्ताह-भर पहले एक दिन उठकर बाहर जाने कहाँ चली गई! कहती थी मुझे कुछ

हिलना-डुलना चाहिए। मुझे घर आकर पता चला कि वह बाहर गई है। नौ बजे के बाद जब वापस आई तो पहली बार से ज़्यादा भीगी हुई थी जैसे घंटों वर्षा में घूमती रही हो। रात को बुख़ार में जाने किससे बातें करती रही! मैंने तब ज़बर्दस्ती डॉक्टर को बुलाकर दिखाया। वह बोला कि यदि सप्ताह-भर पहले भी पेनिसिलिन दी जाती तो वह बच सकती थी।"

हम चुपचाप व्हिस्की पीते रहे। मैंने पारकिस को जिस अनजान व्यक्ति के पीछे लगाया था, आख़िर जीत उसी की हुई थी। मैंने मन में उससे कहा कि देखो, मुझे हेनरी से घृणा नहीं है, तुमसे घृणा है। सैरा ने स्माईद से कहा था कि मैंने ही उसे विश्वास करना सिखाया है और अब उसे खोकर मुझे अपने से भी घृणा हो रही थी। "आज सुबह चार बजे उसके प्राण निकले हैं," हेनरी बोला। "मैं उस समय पास नहीं था। नर्स ने मुझे समय पर नहीं बुलाया।"

"अब नर्स कहाँ है?"

"वह सब कुछ ठीक करके लंच से पहले ही चली गई थी। उसके पास एक और ज़रूरी केस था।"

"मेरी किसी सहायता की ज़रूरत हो तो बताओ।"

"तुम बस यहाँ बैठे रहो। मेरे हाथ-पैर फूल रहे हैं बैंड्रिक्स! मैंने कभी भी मृत्यु जैसी स्थिति को सँभालने की बात नहीं सोची थी। मैं सोचता था कि पहले मेरी मौत होगी और सैरा खुद सब सँभाल लेगी। बच्चे के प्रसव की तरह यह काम भी एक स्त्री के सँभालने का ही है।"

"डॉक्टर ने कुछ सहायता नहीं की?"

"उसके पास इन दिनों बहुत काम है। उसने एक अंडरटेकर को फ़ोन कर दिया है, नहीं मुझे क्या पता था कि अब क्या करना है और किसे और कहाँ से बुलाना है। मगर डॉक्टर यह तो नहीं बता सकता था कि मैं उसके कपड़ों का क्या करूँ! सारी आलमारियाँ उनसे भरी पड़ी हैं। फिर कॉम्पेक्ट हैं, सैंट हैं, उन सबको मैं कहाँ फेंकूँ? उसकी कोई बहन होती तो...।" वह सहसा चुप कर गया, क्योंकि नीचे उसी तरह दरवाज़े खुलने और बन्द होने की आवाज़ हुई, जैसे पहली बार हुई थी। तब हेनरी ने कहा था कि नौकरानी होगी, और मैंने कहा था कि नहीं, सैरा है। अब हम चुपचाप ज़ीने पर नौकरानी के पैरों की आवाज़ सुनते रहे। तीन आदमियों के होते हुए भी घर कितना ख़ाली लग रहा था! हमने अपने गिलास ख़ाली किए और कुछ और व्हिस्की डाल ली। "घर में व्हिस्की बहुत है," हेनरी बोला। "सैरा ने इसके लिए एक नई जगह का पता लगाया था...।" और वह फिर चुप कर गया। सैरा जीवन के हर कोने पर खड़ी थी और क्षण-भर के लिए भी उसे अलग नहीं किया जा सकता था। तुमने हमारे साथ यह क्या किया है ईश्वर! वह बेचारी तुम पर विश्वास न करती

तो इस समय जीवित होती और हम लोग आपस में प्रेम कर रहे होते। मुझे खेद होने लगा कि उन दिनों मुझे हेनरी से ईर्ष्या क्यों थी? मैं और हेनरी दोनों साथ-साथ उससे प्रेम नहीं कर सकते थे?

''अन्तिम संस्कार का क्या सोचा है?''

''मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा, क्योंकि एक बहुत ही विचित्र बात हुई है। नर्स कहती है कि जब वह बेहोशी में थी तो उससे किसी पादरी को बुलाने के लिए अनुरोध कर रही थी। बार-बार कह रही थी, ''फ़ादर! फ़ादर!'' जबकि अपने पिता को उसने अपने होश में जाना भी नहीं था। नर्स को पता था हम लोग कैथलिक नहीं हैं, इसलिए वह चतुराई से उसे शान्त किए रही। मगर मैं फिर भी कुछ परेशान हूँ।''

अब बताओ ईश्वर देव, गरीब हेनरी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? तुम बीच में न आ टपकते तो हम सबकी ज़िन्दगी कितने आराम से कट रही थी! एक दूर देश से लौटकर आए हुए सम्बन्धी की तरह तुम्हारे हर चीज़ में टाँग अड़ाने की क्या ज़रूरत थी?

''लन्दन में दाह-संस्कार की कोई असुविधा नहीं है,'' हेनरी बोला। नर्स की बात सुनने से पहले मैं उसे गोल्डर्स ग्रीन में ले जाने की सोच रहा था। अंडरटेकर ने श्मशान में फ़ोन भी कर दिया है। परसों वहाँ जगह मिल सकती है।''

''उसकी बेहोशी की बड़बड़ाहट की तरफ़ तुम कैसे ध्यान दे सकते हो?''

''जाने क्यों मेरा मन था कि किसी पादरी को बुलाकर पूछ लिया जाए! वह कई चीज़ें बताती ही नहीं थी। हो सकता है इस बीच वह कैथलिक हो गई हो। इन दिनों कुछ ऐसी ही बातें किया करती थी।''

''अरे नहीं, वह बिलकुल मेरी-तुम्हारी तरह ही थी।'' मैं चाहता था कि सैरा का दाह-संस्कार ही हो जिससे मैं ईश्वर से कह सकूँ कि लो, देखें इसे कैसे पुनर्जीवन देते हो। हेनरी की तरह मेरी ईर्ष्या अभी समाप्त नहीं हुई थी। मुझे ऐसा ही लग रहा था जैसे सैरा अभी जीवित हो और मुझे छोड़कर मेरे प्रतिद्वन्द्वी के पास चली गई हो। मेरा बस होता तो मैं अब भी पारकिस को उसके पीछे लगाकर उसकी शान्ति नष्ट कर देता।

''तुम्हें इसका पूरा विश्वास है?''

''बिलकुल पूरा विश्वास है।'' मन में सोचा कि ज़रा बचकर रहूँ, कहीं स्माईद वाली बात ही न हो कि वास्तव में ही तुमसे घृणा करने लगूँ, क्योंकि घृणा का अर्थ होगा विश्वास और विश्वास का अर्थ होगा तुम्हारी और सैरा की जीत। मैंने सोचा कि मैं तो केवल ईर्ष्या और प्रतिशोध का नाटक कर रहा हूँ, जिससे मेरा दिमाग़ किसी तरफ़ लगा रहे और मुझे सैरा की मृत्यु की बात भूली रहे। सप्ताह-भर पहले मैं उससे

कहता, 'तुम्हें उस बात की याद है सैरा, जब मेरी ज़ेब में मीटर में डालने के लिए सिक्का नहीं निकला था?' तो हम दोनों को एक साथ उस दृश्य की याद आती। अब वे बातें याद करने के लिए मैं अकेला ही रह गया था। सैरा ने हर चीज़ की स्मृति खो दी थी और प्राणहीन होकर जैसे उसने मुझसे मेरा ही एक भाग छीन लिया था। अब मेरा व्यक्तित्व जैसे टूट रहा था; जर्जर अंगों की तरह स्मृतियों का क्षीण होना भी तो मेरी मृत्यु की भूमिका ही थी।

''मुझे कब्र खुदवाने और प्रार्थना कराने से घृणा है,'' हेनरी बोला।

''मगर उसकी इच्छा पूरी करने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ।''

''उसने ब्याह अदालत में कराया था तो अपना अन्तिम संस्कार वह गिरजाघर में चाहती?''

''हाँ, यह बात तो ठीक है!''

''ब्याह रजिस्ट्री से हो तो मरने पर दाह-संस्कार ही होता है।'' हेनरी ने सिर उठाकर मेरी तरफ़ देखा कि कहीं मैं व्यंग्य तो नहीं कर रहा।

''कहो, तो यह सब काम मैं अपने हाथ में ले लूँ,'' मैंने कहा, ठीक उसी तरह जैसे उसी कमरे में वहीं आग के पास बैठे हुए मैंने उसकी जगह जाकर सैवेज से मिल आने का सुझाव दिया था।

''यह तुम्हारी बहुत कृपा होगी, बैंड्रिक्स!'' उसने गिलासों में बराबर-बराबर व्हिस्की डालकर बोतल ख़ाली कर दी।

''देखो, आधी रात हो गई है। अब थोड़ी देर तुम सो जाने की चेष्टा करो।''

''डॉक्टर मुझे नींद की टिकियाँ दे गया है।'' वह अभी अकेला होना नहीं चाहता था। मुझे कारण का पता था, क्योंकि मैं भी सैरा के साथ एक दिन बिता लेता था तो बाद में देर तक अपने कमरे में अकेला रहना नहीं चाहता था।

''मैं बार-बार उसकी मृत्यु की बात भूल जाता हूँ,'' हेनरी बोला। मैं इस चीज़ का भी अनुभव कर चुका था। सन् पैंतालिस के उन मनहूस दिनों में मैं कई बार भूल जाया करता था कि हमारा सम्बन्ध समाप्त हो चुका है और फ़ोन पर अब मुझे सैरा की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। मेरे लिए तो तब भी वह आज की तरह ही थी, केवल बीच में दो-एक महीने से जैसे उसका भूत मुझे आशा से पीड़ित किए था, परन्तु अब वह भी सामने से हट गया था। यह पीड़ा भी शायद अब हर गुज़रते हुए दिन के साथ धीरे-धीरे कम होकर समाप्त हो जानी थी। परन्तु मैं नहीं चाहता था कि वह समाप्त हो, क्योंकि पीड़ा ही तो जीवन है!

''अब सो जाओ हेनरी!''

''सोऊँगा तो मुझे उसके सपने आएँगे।''

''नींद की टिकियाँ खा लोगे तो सपने नहीं आएँगे।''

"तुम्हें भी एक टिकिया दूँ?"

"नहीं।"

"बाहर मौसम ख़राब है। तुम रात-भर यहीं क्यों नहीं रह जाते?"

"मौसम की मैं चिन्ता नहीं करता।"

"तो मेरे लिए रह जाओ।"

"ठीक है, रह जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें चादरें और कम्बल ला देता हूँ।"

"नहीं उनकी कोई ज़रूरत नहीं।" मगर वह चला गया और मैं लकड़ी के फ़र्श को देखने लगा। मुझे याद था किस जगह पर सैरा के मुँह से चीख़ निकली थी। जिस डेस्क पर वह चिट्ठियाँ लिखा करती थी उस पर कई-एक चीज़ें जमा थीं जिनकी वास्तविक संगति का केवल मुझे ही पता था। उसने वह पत्थर भी पेपर वेट की तरह रख रखा था जिसके आकार पर हम लोग कभी हँसते रहे थे। खिलौने जैसी छोटी-सी शराब की बोतल थी, समुद्र में पालिश हुआ शीशे का टुकड़ा था, और वह लकड़ी का खरगोश था जो मैं नॉटिंघम से लाया था। मैंने सोचा हेनरी अब इन चीज़ों का क्या करेगा! यही अच्छा न होगा कि मैं इन्हें अपने साथ ही ले जाऊँ? हेनरी कभी सफ़ाई करने लगेगा तो इन्हें रद्दी की टोकरी में डाल देगा। मगर मैं भी क्या इन्हें अपने पास रख सकूँगा?

मैं उन्हें देख ही रहा था कि हेनरी कम्बल लादे हुए आ गया। "मुझे एक और बात कहनी थी बैंड्रिक्स," वह बोला। "सैरा की कोई वसीयत नहीं है। मगर तुम कोई भी चीज़ उसकी यादगार के रूप में ले जाना चाहो, तो..."

"धन्यवाद!"

"जिस किसी का भी उससे प्रेम था, अब जाने क्यों मैं अपने को उसका आभारी मानता हूँ।"

"मैं यह पत्थर ले जाना चाहूँगा।"

"कैसी-कैसी चीज़ें उसने रख रखी हैं! मैं तुम्हारे लिए यह पाजामा लाया हूँ।"

हेनरी तकिया नहीं लाया था। मैं गद्दे पर सिर रखकर लेटा तो मुझे लगने लगा जैसे उसमें से सैरा के शरीर की गन्ध आ रही हो। मेरी कामना अब कभी पूरी नहीं हो सकती थी; और कोई भी स्त्री मेरे लिए सैरा की जगह नहीं ले सकती थी। मुझे देर तक नींद नहीं आई। पीड़ा में अपने को भूलने के लिए मैंने भी सैरा की तरह अपने नाख़ून अपनी हथेलियों में चुभो लिये, परन्तु कामना का पेंडुलम लगातार इधर-से-उधर जाता रहा। मेरी कामना उसे भूलने की भी थी और याद रखने की भी, मर जाने की भी और जीवित रहने की भी। आख़िर मुझे नींद आ गई और मैं सपना देखने लगा। मैं ऑक्सफ़ोर्ड स्ट्रीट में से गुज़र रहा था और एक उपहार ख़रीदना

चाहता था। मगर सब दुकानों में सस्ते गहने ही भरे थे जो ढकी हुई रोशनी में जगमगा रहे थे। कभी कोई चीज़ सुन्दर लगती तो शीशे के पास जाकर देखने पर वह भी बनावटी ही नज़र आती। दूर से जो रूबियाँ लगतीं पास जाकर एक घिनौने हरे पक्षी की लाल आँखों में बदल जातीं। मैं जल्दी में एक-एक दूकान देख रहा था। तभी मुझे एक दूकान से सैरा निकलती दिखाई दी। "तुमने कुछ ख़रीदा है सैरा?" मैंने पूछा। "नहीं, यहाँ से नहीं। आगे एक दूकान है, वहाँ बहुत सुन्दर-सुन्दर शीशियाँ रखी हैं।"

"मुझे बहुत जल्दी है," मैंने कहा। "मुझे भी कुछ ख़रीदवा दो। कल ही मुझे किसी को जन्म-दिन का उपहार देना है।"

"तुम चिन्ता मत करो," वह बोली, "कुछ-न-कुछ तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा।" और उसके इतना कहते ही मेरी चिन्ता दूर हो गई। ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट कोहरे से भरे हुए एक बड़े-से मैदान में बदल गई। वहाँ मैं नंगे पैरों ओस पर चल रहा था। चलते-चलते पैर एक गड्ढे में पड़ गया और मेरी नींद खुल गई। सैरा तब भी जैसे कानों में कह रही थी, "तुम चिन्ता मत करो!" वह आवाज़ बचपन से सुनी हुई ग्रीष्म की ध्वनियों जैसी थी।

हेनरी नाश्ते के समय तक सोया रहा। वह नौकरानी, जिससे पारकिस ने अपना काम निकाला था, ट्रे में मेरे लिए कॉफ़ी और टोस्ट ले आई। ओलों की जगह अब बर्फ़ पड़ने लगी थी, इसलिए उसने पर्दे खींच दिए। मेरी आँखों में अभी तक नींद और सपने का खुमार छाया था, फिर भी मुझे लगा कि उसकी आँखें रो-रोकर लाल हो रही हैं। "क्या बात है मॉड?" मैंने पूछा। वह झल्लाई हुई-सी ट्रे रखकर चली गई तो मुझे ध्यान आया कि वह घर और संसार अब सुनसान हो चुका है। मैंने ऊपर जाकर हेनरी को देखा। वह टिकियाँ खाकर गहरी नींद में पड़ा एक कुत्ते की तरह मुँह खोले जैसे मुस्करा रहा था। मुझे उससे ईर्ष्या हुई। फिर मैं नीचे आ गया और नाश्ता खाने लगा।

तभी घंटी बजी और नौकरानी जाकर किसी को ऊपर ले आई। शायद अंडरटेकर का आदमी आया था। वह व्यक्ति अब सैरा के मृत शरीर को देख रहा था जबकि मैं उससे दूर बैठा था; मगर मैं उसे देखना भी नहीं चाहता था। मेरे लिए तो उस समय वह जैसे किसी और की बाँहों में लिपटी हुई पड़ी थी। किसी और को भले ही उसे उस रूप में देखने की उत्सुकता होती, मुझे नहीं थी। मैं मौत का एजेंट नहीं था। मैं अपने मन को थोड़ा सँभालकर सोचने लगा कि सैरा तो मर चुकी है, इसलिए मुझे अब नए सिरे से अपना जीवन आरम्भ करना चाहिए। मैं नए सिरे से किसी से प्रेम कर सकता हूँ। मगर मुझे स्वयं ही इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। मेरी शारीरिक कामना जैसे मर चुकी थी।

फिर घंटी बज उठी। हेनरी अभी सोया ही था और घर में कितना कुछ हो रहा था! तभी मॉड ने आकर मुझसे कहा, ''एक आदमी मिस्टर माइल्स से मिलना चाहता है, मगर मैं अभी उन्हें जगाना नहीं चाहती।''

''कौन आदमी है?''

''मिसेज़ माइल्स का कोई मित्र है।'' इस तरह पहली बार उसने स्वीकार किया कि उस सारे प्रकरण में उसका भी कुछ सहयोग है।

''उसे ऊपर भेज दो!'' मैंने कहा। मैं उस समय अपने को स्माईद से काफ़ी ऊँचा महसूस कर रहा था, क्योंकि मैं हेनरी का पाजामा पहने सैरा के ड्राइंग रूम में बैठा था, और क्योंकि मैं उसके सम्बन्ध में सभी कुछ जानता था जबकि उसे मेरे बारे में कुछ भी पता नहीं था। स्माईद ने अन्दर आकर कुछ अव्यवस्थित ढंग से मेरी तरफ़ देखा। उसके कपड़ों से बर्फ़ नीचे फ़र्श पर गिर रही थी।

''हम पहले मिल चुके हैं,'' मैंने उससे कहा, ''मैं मिसेज़ माइल्स का एक मित्र हूँ।''

''हाँ, उस दिन आपके साथ एक छोटा-सा लड़का भी था।''

''हाँ।''

''मैं मिस्टर माइल्स से मिलने आया हूँ।''

''आपको खबर मिल गई है?''

''हाँ, इसीलिए मैं आया हूँ।''

''हेनरी अभी सोया हुआ है। डॉक्टर ने उसे नींद की टिकियाँ दी हैं। हम सबको इस घटना से बहुत चोट लगी है।'' आख़िरी बात बहुत ही मूर्खता की थी। वह कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाने लगा। सेडर रोड पर सैरा उसके लिए एक सपने की तरह आकारहीन रही थी, परन्तु यह कमरा जैसे सैरा को आकार दे रहा था, बल्कि स्वयं ही उसका आकार ग्रहण कर रहा था। बाहर सिल पर बर्फ़ इस तरह इकट्ठी हो रही थी जैसे बेलचों से ढो-ढोकर जमा की गई हो। सैरा के शरीर की जगह वह कमरा ही जैसे दफ़न हो रहा था।

''अच्छा, मैं फिर किसी समय आऊँगा,'' कहकर वह चलने लगा तो उसका दाग़वाला गाल मेरी तरफ़ आ गया। मैंने सोचा कि क्या सैरा के होंठ उसी जगह छुए होंगे? उस बेचारी की दया को उकसा लेना कितना आसान था!

''मैं मिस्टर माइल्स से मिलने और अफसोस प्रकट करने आया था,'' उसने फिर एक मूर्ख की तरह कहा।

''आप उन्हें चिट्ठी लिख सकते थे।''

''मैंने सोचा कि शायद मैं इस समय कुछ सहायता कर सकूँ।''

''मिस्टर माइल्स को तो कोई शिक्षा देना बेकार ही है।''

"शिक्षा?" वह कुछ घबराया-सा बोला।

"हाँ, यह शिक्षा कि अब सैरा का कुछ भी शेष नहीं है; और यही पूर्ण अन्त है।"

"मैं केवल सैरा को देखना चाहता था," उसने सहसा कहा।

"देखो स्माईद, मिस्टर माइल्स को तुम्हारे विषय में कुछ पता नहीं है। तुमने इस समय यहाँ आकर अच्छा नहीं किया।"

"उसका दाह-संस्कार कब होगा?"

"कल गोल्डर्स ग्रीन में।"

"सैरा शायद ऐसा न चाहती।"

मैंने आश्चर्य के साथ उसकी तरफ़ देखा और कहा, "वह भी तो तुम्हारी तरह किसी चीज़ में विश्वास नहीं करती थी।"

"आप लोगों को क्या इसका पता नहीं है?" वह बोला। "वह अब कैथलिक हो रही थी।"

"छि:!"

"उसने मुझे लिखा था कि उसने इसका निश्चय कर लिया है। मैं उसे कुछ नहीं समझ सका। वह सचमुच दीक्षा ले रही थी। इसे दीक्षा लेना ही कहते हैं न?"

तो वह अब भी बातें छिपाकर रखती थी, मैं कुछ निराश भाव से सोचने लगा। बीमारी की बात की तरह यह बात भी उसने डायरी में नहीं लिखी थी। इस तरह की और कितनी बातों का अभी पता चलना रहता था?

"तुम्हें तो इससे बहुत चोट पहुँची होगी!" मैं अपना दुख कुछ कम करने के लिए उसे चिढ़ाने लगा।

"मुझे बुरा ज़रूर लगा था, मगर सब लोगों का विश्वास एक-सा तो नहीं हो सकता।"

"मगर तुम तो यह सब नहीं मानते थे।"

मेरी बात से वह कुछ चकरा गया और आँखें मेरे चेहरे पर गड़ाए हुए बोला, "आपका नाम मॉरिस है?"

"हाँ!"

"सैरा ने आपके विषय में मुझे बताया था।"

"मैंने तुम्हारे विषय में उसकी डायरी में पढ़ा था। वह हम दोनों को ही उल्लू बना रही थी।"

"मैं ग़लत था।" उसने अपने दाग़ को उँगली से छू लिया।

"क्या मैं एक बार उसे देख सकता हूँ?" सीढ़ियों पर अंडरटेकर के आदमी के पैरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"वह ऊपर के कमरे में है। बाईं तरफ़ को पहला दरवाज़ा है।"

''अगर मिस्टर माइल्स...''

''उनकी नींद अभी नहीं खुलेगी।''

उसके लौटकर नीचे आने तक मैंने कपड़े पहन लिये। उसने आकर कहा, ''अच्छा, धन्यवाद!''

''मुझे तुम धन्यवाद क्यों देते हो? मैं भी तुम्हारी तरह ही हूँ।''

''मुझे कहना तो नहीं चाहिए,'' वह बोला, ''मगर आप...मुझे पता है आप उससे प्रेम करते रहे हैं और...।'' और जैसे एक कड़वी गोली निगलकर उसने बात पूरी की, ''और वह भी आपसे प्रेम करती थी।''

''आप कहना क्या चाहते हैं?''

''मैं यही चाहता हूँ आपको उसके लिए कुछ करना चाहिए।''

''उसके लिए कुछ करना चाहिए?''

''उसका अन्तिम संस्कार कैथलिक ढंग से होना चाहिए। उसकी अपनी इच्छा यही होती।''

''मगर उससे अब फ़र्क़ ही क्या पड़ता है?''

''फ़र्क़ नहीं पड़ता, मगर उसके प्रति उदारता दिखाने से हमारा ही क्या बिगड़ जाएगा?''

''मगर इस सम्बन्ध में मैं क्या कर सकता हूँ?''

''वह कहा करती थी कि मिस्टर माइल्स आपको बहुत मानते हैं।''

उसकी बेहूदगी हद को पार कर रही थी। मेरा मन हुआ कि एक ठहाका लगाकर कमरे के कब्र जैसे वातावरण को छिन्न-भिन्न कर दूँ। अपनी हँसी से दोहरा-सा हुआ मैं सोफे पर बैठ गया। सैरा का शरीर ऊपर पड़ा था, हेनरी सोया हुआ मुस्करा रहा था और नीचे स्ट्रॉबेरी के दाग़वाला प्रेमी उस प्रेमी से अन्तिम संस्कार के विषय में बात कर रहा था, जिसने पारकिस को भेजकर उसकी घंटी पर पाउडर छिड़कवाया था। हँसते-हँसते मेरी आँखों में आँसू आ गए। एक बार बमबारी के बाद मैंने एक आदमी को अपने घर के बाहर वहाँ खड़े होकर हँसते देखा था जहाँ उसकी पत्नी और बच्चा दफ़न हो गए थे।

''यह चीज़ मेरी समझ में नहीं आ रही,'' स्माईद बोला। उसकी दाईं मुट्ठी इस तरह बँधी हुई थी जैसे उसे मुझसे प्रहार की आशंका हो। ''बहुत-सी चीज़ें हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हम लोगों का दुख एक ऐसे धमाके की तरह था जिसने हमें उड़ाकर एक ही ज़मीन पर फेंक दिया था।''

''अच्छा, मैं चलता हूँ,'' कहकर उसने दरवाज़े की हत्थी की तरफ़ अपना बायाँ हाथ बढ़ाया। मेरे दिमाग़ में सहसा एक विचित्र विचार कौंध गया कि वह अपनी दाईं मुट्ठी किसलिए बन्द किए हुए है...!

"क्षमा करना," मैंने कहा, "मैं इस समय बहुत ही दुखी हूँ। यूँ हम सभी दुखी हैं।" और मैंने अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। उसने कुछ संकोच के साथ उसे भी अपने बाएँ हाथ से ही छू दिया।

"स्माईद, तुम्हारे दाएँ हाथ में क्या है?" मैंने पूछा। "तुम सैरा के कमरे से क्या लाए हो?"

उसने अपना हाथ खोल दिया। उसमें बालों की एक लट थी। "यही लाया हूँ," उसने कहा।

"तुम्हें इसका कोई अधिकार नहीं था।"

"अब तो उस पर किसी का भी अधिकार नहीं है," वह बोला। और मुझे पहली बार यह महसूस हुआ कि सचमुच अब तो वह कूड़े का ढेर ही रह गई है, जिसे अब साफ़ कर दिया जाएगा। जो चाहे अब उसके बाल काट ले, और जो चाहे उसके नाख़ून तराश ले। लोग चाहें तो सन्तों की हड्डियों की तरह उसकी हड्डियाँ भी आपस में बाँट सकते हैं। जब वह शरीर जल ही जाना था, तो जिसे जो अच्छा लगे, वह उससे काटकर रख सकता है। मैं तो यूँ ही तीन साल तक मूर्ख बना उस पर अपने अकेले के अधिकार की बात सोचता रहा था। अधिकार किसका किस पर हो सकता है! वह तो अपना अपने पर भी नहीं होता।

"देखो, मेरी बात का बुरा नहीं मानना," मैंने कहा।

"आप जानते हैं उसने मुझे अभी चार दिन हुए क्या लिखा था?" वह बोला। मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि चार दिन पहले मुझे तो वह फ़ोन भी नहीं कर सकी, और उसे उसने चिट्ठी भी लिख दी। "उसने मुझे लिखा था कि मैं उसके लिए प्रार्थना करूँ...मैं, और उसके लिए प्रार्थना करूँ! विचित्र बात है या नहीं?"

"तो तुमने क्या किया?"

"जब उसकी मृत्यु का समाचार मिला तो मैंने सचमुच ही उसके लिए प्रार्थना की।"

"तुम्हें कोई प्रार्थना आती थी?"

"नहीं।"

"जिस ईश्वर में तुम्हें विश्वास ही नहीं, उससे प्रार्थना करने में क्या तुक थी?"

मैं उसके साथ ही बाहर निकल आया। हेनरी के जागने तक वहाँ बैठे रहने का कोई अर्थ नहीं था। आख़िर उसे भी मेरी तरह अकेले रहने की आदत डालनी ही थी। स्माईद को तेज़-तेज़ जाते देखकर मैंने सोचा कि शायद यह भी हिस्टीरिया का मरीज़ है। विश्वास की तरह अविश्वास भी तो हिस्टीरिया से ही पैदा होता है। लोगों के जूतों से मसली हुई बर्फ़ मेरे जूते के अन्दर जाकर मुझे सपने की ओस की याद दिला रही थी। मगर सैरा की वह आवाज़ 'तुम चिन्ता मत करो' चेष्टा करने पर भी मेरी स्मृति में नहीं उभर सकी। शायद ध्वनियों को स्मरण रखने की शक्ति मुझमें है ही नहीं।

मैं उस आवाज़ को स्वाभाविक तो क्या बिगड़े हुए रूप में भी याद नहीं कर पा रहा था। वह जैसे एक अज्ञात आवाज़ ही थी जो जिस किसी की भी आवाज़ हो सकती थी। तो भूलने का क्रम अभी से आरम्भ हो चुका था! क्या चित्रों की तरह हमें आवाज़ के रिकार्ड भी भरकर नहीं रख लेने चाहिए?

टूटी हुई सीढ़ियों से होकर मैं हॉल में आ गया। रंगदार शीशों को छोड़कर सन् चवालीस की हर चीज़ बदल चुकी थी। कौन-सी घटना कहाँ से आरम्भ होती है, यह कहना बहुत कठिन है। सैरा का विश्वास था कि हमारा सम्बन्ध उस दिन समाप्त हुआ था, जिस दिन मुझे दरवाज़े के नीचे दबे हुए देखा था। परन्तु समाप्ति का क्रम तो उससे कहीं पहले से ही आरम्भ हो चुका था। उससे कहीं पहले से ही फ़ोन पर बातें कम होने लगी थीं और मैं उससे ज़्यादा-ज़्यादा झगड़ने लगा था, क्योंकि मुझे उस सम्बन्ध के समाप्त होने की आशंका होने लगी थी। हम प्रेम से आगे देखने का प्रयत्न कर रहे थे, परन्तु मुझे ही पता था कि वास्तव में हम किस दिशा में जा रहे हैं। यदि वह बम एक साल पहले गिरा होता तो सैरा कभी भी ऐसी प्रतिज्ञा न करती और मुझे बाहर निकालने की चेष्टा में अपने नाख़ून तक तोड़ डालती। जब हमारा मन मनुष्यों से भर जाए तभी हम ईश्वर से लौ लगाने की सोचते हैं, उसी तरह जैसे खाने में रुचि न रहने पर आदमी नई-नई चटनियों के स्वाद की बात सोचता है। मैंने हॉल में चारों तरफ़ देखा—भद्दा हरा रोगन और वीरान जेल की कोठरी का-सा वातावरण! सैरा ने चाहा था कि मुझे जीवन में एक और अवसर मिले। तो वह अवसर क्या यही था? यह जेल का-सा ख़ाली, बेरंग, और सूना जीवन! मैं मन में सैरा को इस तरह कोसने लगा जैसे सचमुच उसकी प्रार्थना से ही यह सब हुआ हो। कहा, कि बताओ मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जिसकी तुमने मुझे यह सज़ा दी है? नए ज़ीने की हर सीढ़ी ऊपर जाते हुए आवाज़ करती थी। सैरा कभी इन सीढ़ियों से होकर ऊपर नहीं गई थी। घर की मरम्मत भी जैसे मुझे सैरा की याद भुला देना चाहती थी। एक ईश्वर ही समय से अछूता है, इसलिए वही हर परिवर्तन को सदा याद रख सकता है और यह सोचते हुए मेरे मन में जो भाव उमड़ रहा था वह जाने प्रेम था या केवल खेद!

मैं कमरे में पहुँचा तो डेस्क पर सैरा की चिट्ठी रखी थी।

उसे गुज़रे चौबीस घंटे हो चुके थे और बेहोश वह जाने उससे कितना समय पहले से थी, फिर उसकी चिट्ठी को कॉमन के उत्तर से दक्षिण तक आने में इतनी देर कैसे लग गई? चिट्ठी पर मेरे घर का नम्बर ग़लत लिखा था। इससे वह पुरानी कटुता मेरे मन में फिर से उभर आई। दो साल पहले क्या वह मेरा नम्बर भूल सकती थी?

चिट्ठी को देखकर मन में इतना दर्द उठा कि मन हुआ आग के सुपुर्द कर दूँ। मगर मेरी उत्सुकता दर्द पर छा गई। चिट्ठी पेन्सिल से लिखी हुई थी और शायद बिस्तर में बैठकर ही लिखी गई थी।

"प्रिय मॉरिस," उसने लिखा था, "मैं उस रात तुम्हारे जाने के बाद ही तुम्हें लिखना चाहती थी, मगर घर आकर तबीयत कुछ ख़राब हो गई जिससे हेनरी परेशानी में पड़ गया। मैं फ़ोन करने की जगह चिट्ठी लिख रही हूँ, क्योंकि फ़ोन पर तुमसे यह कहूँगी कि मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकती तो तुम्हारी भर्राई हुई आवाज़ मुझसे नहीं सुनी जाएगी। मेरे मॉरिस, मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकती। मैं तुमसे मिल नहीं सकती। इस पीड़ा और कामना को लिये हुए मैं कैसे जी सकूँगी, यह नहीं जानती, और इसीलिए ईश्वर से प्रार्थना कर रही हूँ कि वह मुझ पर दया करे और मुझे यहाँ से उठा ले। मेरे मॉरिस, मैं भी सबकी तरह दोनों ओर हाथ बढ़ाना चाहती हूँ। दो दिन हुए मैं एक पादरी के पास गई थी। मैंने उससे कहा कि मैं कैथलिक बनना चाहती हूँ। मैंने उसे तुम्हारे विषय में और अपनी प्रतिज्ञा के विषय में सब कुछ बता दिया, और कहा कि मैं वास्तव में अब हेनरी की पत्नी नहीं हूँ, क्योंकि एक साल तक तुम्हारे साथ सम्बन्ध रहने के बाद मेरा हेनरी के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहा। यूँ मैं कभी भी उसकी पत्नी नहीं थी, क्योंकि रजिस्ट्री का ब्याह ब्याह तो नहीं होता! मैंने उससे पूछा कि क्या मैं कैथलिक बनकर तुमसे ब्याह कर सकती हूँ? सोचा कि तुमसे कहूँगी तो तुम मेरे साथ एक गिरजे ज़रूर चल पड़ोगे। मैं हर बार इसी आशा से सवाल पूछती जैसे एक नए घर में कोई एक-एक खिड़की खोलकर बाहर का दृश्य देखना चाहता हो, मगर हर खिड़की के खुलने पर सामने एक बन्द दीवार ही नज़र आती हो। नहीं, नहीं, नहीं, उसने कहा। मैं कैथलिक हो जाऊँ तो भी तुमसे ब्याह नहीं कर सकती, मिल भी नहीं सकती। मैंने कहा, भाड़ में जाओ और ज़ोर से कमरे का दरवाज़ा बन्द करके वहाँ से चली आई जिससे उसे पता चल जाए कि मुझे उन लोगों की रत्ती-भर भी परवाह नहीं है। कमबख़्त ईश्वर और मनुष्य के बीच दीवार बनते हैं! ईश्वर कितना दयालु है! बाहर आकर मेरी नज़र क्रॉस पर पड़ी तो मैंने सोचा कि ईश्वर दयालु तो है, मगर उसकी दया बहुत विचित्र है, क्योंकि कभी-कभी वह एक सज़ा की तरह लगती है। मेरे मॉरिस, मेरे सिर में सख़्त दर्द हो रहा है, फिर भी मुझे उलझन होती है कि मेरा स्वास्थ्य इतना अच्छा क्यों है, मैं मर क्यों नहीं जाती! मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती और मुझे पता है कि जिस दिन भी तुम मुझे कॉमन में दिखाई दे गए उसी दिन मैं हेनरी और ईश्वर को भूल जाऊँगी। मगर उससे क्या होगा? मैं ईश्वर में विश्वास करती हूँ और उस सारे पाखंड में विश्वास करती हूँ। त्रिमूर्ति के लोग बारह भाग कर दें तो भी मैं उसमें विश्वास करूँगी। कल को लोग प्रमाण खोजकर यह सिद्ध कर दें कि ईसा एक ढकोसला है जो पाइलेट ने तरक्की पाने के लिए ईजाद दिया था तो भी मैं उनमें विश्वास करूँगी। यह विश्वास एक रोग की तरह है, मेरे प्रेम की तरह है। जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, पहले कभी किसी से नहीं किया, और जैसे आज मैं विश्वास करती हूँ, पहले कभी किसी पर नहीं कर पाई। मेरे मन में अब

सन्देह नहीं है। पहले कभी मेरा मन इतना निश्चित नहीं रहा। तुम लहू से भरा चेहरा लिये दरवाज़े के नीचे से निकलकर बढ़ आए थे, तभी मुझे सदा के लिए विश्वास हो गया था यद्यपि कई बार मुझे स्वयं ही इसका पता नहीं चलता था। मैंने प्रेम से अधिक अपने विश्वास से संघर्ष किया है, परन्तु अब वह संघर्ष भी शेष नहीं है।

मेरे मॉरिस, तुम मुझ पर क्रोध नहीं करना। दुखी होना, मगर क्रोध नहीं करना। मेरे जीवन में झूठ और छल बहुत है, मगर मेरे विश्वास में झूठ और छल नहीं है। पहले मैं अपने सम्बन्ध में बहुत निश्चित रहती थी और सोचती थी कि मुझे अच्छे-बुरे का सब पता है। मगर तुमने मुझे अपने पर सन्देह करना सिखाया। तुमने झूठ और छल मुझसे छुड़ा दिए–जैसे कूड़ा हटाकर किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के आने के लिए कोई रास्ता तैयार करता है। अब वह व्यक्ति आ चुका है, यद्यपि रास्ता तुम्हारा ही तैयार किया हुआ था। तुम अपने लिखने में भी सत्य को अपनाने का प्रयत्न करते हो, और मुझे भी कोंच-कोंचकर झूठ से छुटकारा तुम्हीं ने दिलाया है। तुम कहा करते थे, 'क्या तुम सचमुच ऐसा समझती हो या समझती ही हो कि ऐसा समझती हो?' तो मॉरिस, इसमें सारा दोष तुम्हारा ही है। मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रही हूँ कि मुझे वह इस रूप में अब जीवित न रहने दे।''

आगे कुछ नहीं था। उसकी प्रार्थना मुँह से निकलने से पहले ही पूरी होने लगती थी, क्योंकि जिस दिन मैं हेनरी के साथ उसके यहाँ गया था और वह वर्षा से भीगी हुई घर आई थी, उसी दिन से क्या मृत्यु ने उसे घेरना आरम्भ नहीं कर दिया था? मैं एक उपन्यास लिख रहा होता तो यहाँ आकर अब समाप्त कर देता, क्योंकि उपन्यास का तो एक अन्त होता ही है। कम-से-कम अब तक मैं यह सोचता रहा हूँ। परन्तु मेरे उस यथार्थवाद में कहीं दोष है, क्योंकि अब मुझे लगता है कि जीवन में किसी चीज़ का भी अन्त नहीं होता। रसायन-शास्त्री कहते हैं कि कोई चीज़ कभी पूरी तरह नष्ट नहीं होती और गणितज्ञों का कहना है कि एक कमरा पार करने में हर क़दम आधा करते जाओ तो कभी भी सामने की दीवार तक नहीं पहुँच सकते। इसलिए यह सोचना कि यह कहानी यहाँ समाप्त हो जाती है, कितना बड़ा आशावाद है! मैं भी आज सैरा की तरह सोचता हूँ कि यदि मैं इतना स्वस्थ न होता...!

2

अन्तिम संस्कार में पहुँचने में मुझे देर हो गई। मैं शहर में वाटरबरी नामक व्यक्ति से मिलने चला गया था, जो एक समीक्षा की पत्रिका में मेरे ऊपर एक लेख लिखने जा रहा था। मैं कुछ देर संशय में रहा था कि जाऊँ या न जाऊँ, क्योंकि इसका मुझे

पता था कि कैसे भारी-भरकम शब्दों में वह मेरी रचनाओं में क्या-क्या संकेत ढूँढ़ निकालेगा, जिनका मुझे खुद भी पता तक नहीं है और फिर मुझ पर क्या-क्या घिसे-पिटे आरोप लगाएगा। अन्त में ज़रा संरक्षणात्मक ढंग से कहेगा कि मेरा स्थान मॉम से कुछ ऊँचा है क्योंकि मैंने अभी मॉम जितना लोकप्रिय होने की गुस्ताखी नहीं की और कम लोकप्रिय होने की विशिष्टता अभी मुझे मिली हुई है, हालाँकि इन समीक्षकों को जासूसों की तरह कल को मेरे भी लोकप्रिय होने की गन्ध अभी से मिलने लगी है।

मैं इस संशय में भी क्यों रहा? मुझे न तो वाटरबरी से मिलने की चाह थी और न अपने ऊपर लेख लिखाने की। अब मैं काम में वैसी रुचि ही नहीं ले पाता, इसलिए न मुझे अपनी प्रशंसा से प्रसन्नता होती है और न ही निन्दा से दुख होता है। जब मैं एक सरकारी कर्मचारी पर उपन्यास लिखने की सोच रहा था, तब तक लिखने में मेरी रुचि फिर भी बाक़ी थी, मगर सैरा से मिलने के बाद मुझे पता चल गया था कि लिखना-लिखाना सब बेकार है–दिन बिताने के लिए सिगरेट न पिए, कुछ पन्ने काले कर डाले। अगर मृत्यु के साथ ही सब कुछ समाप्त हो जाता है जैसा कि मैं अब भी समझता हूँ तो कुछ पुस्तकें पीछे छोड़ जाना, गहने, कपड़े और शीशियाँ छोड़ जाने से कैसे बेहतर है? और अगर सैरा की बात सच है तो ये कला की बड़ी-बड़ी बातें यूँ भी बेकार हैं। उस समय संशय में पड़ने का कारण शायद मेरा अकेलापन ही था। दाह-संस्कार से पहले मुझे कुछ करना नहीं था और मैं दो-एक पेग पीकर अपने को थोड़ा स्थिर कर लेना चाहता था कि वहाँ जाकर मेरा बाँध टूट न जाए। और चीज़ों की आदमी परवाह न करे, मगर दुनियादारी की परवाह तो करनी ही पड़ती है।

वाटरबरी टॉटेन्हम कोर्ट रोड से ज़रा हटकर एक बार में मेरा इन्तज़ार कर रहा था। उसने कार्डुराय की काली पतलून पहन रखी थी और सस्ते-से सिगरेट फूँक रहा था। उसके साथ एक लड़की भी थी जो उससे काफ़ी लम्बी और काफ़ी सुन्दर थी, और वह भी वैसी ही पतलून पहने थी और वही सिगरेट फूँक रही थी। लड़की का नाम सिल्विया था और वह अभी बहुत छोटी लगती थी। उसकी शिक्षा वाटरबरी से आरम्भ हुई थी, मगर उसे अभी काफ़ी रास्ता आगे जाना था। अभी वह अपने शिक्षक की नकल करना ही बड़ी बात समझती थी। उसके नक्श अच्छे थे, बहुत भली-सी तीखी आँखें थीं और जगमगाते-से सुनहरी बाल थे और इन गुणों में वह जाने कहाँ-से-कहाँ पहुँच सकती थी! मैंने सोचा कि इस साल के अन्त में शायद उसे टॉटेन्हम कोर्ट रोड के उस बार की और वाटरबरी की याद भी न रहे। मुझे अफसोस हो रहा था कि जो आदमी आज इतने गुमान से जैसे हम दोनों की पीठ सहलाता हुआ बात कर रहा था, कुछ दिनों में कोई उसका नाम भी नहीं जानेगा। वह 'चेतना

के प्रवाह' के विषय में भाषण दे रहा था। गिलास उठाते हुए दो-एक बार मेरी आँखें लड़की से मिल गईं और मुझे लगा कि मैं चाहूँ तो अब भी उसे उससे छीन सकता हूँ। उसके लेख काग़ज़ की जिल्द में छपते थे जबकि मेरी किताबें गत्ते की जिल्द में निकलती थीं। वह जानती थी कि मुझसे वह कहीं ज़्यादा कुछ सीख सकती है। मगर वाटरबरी कमबख़्त बिना अपने चेहरे के कीलों का ख़याल किए ज्योंही लड़की उसकी बात पर अपनी कोई मोटी और सीधी-सी टिप्पणी कर देती त्योंही उसे झिड़क देता था। मेरा मन हो रहा था कि मैं उसे उसके सूने भविष्य की चेतावनी दे दूँ। मगर उसके बजाय मैंने अपना गिलास भरते हुए कहा, "मैं अब ज़्यादा देर नहीं रुकूँगा। मुझे गोल्डर्स ग्रीन में एक दाह-संस्कार में जाना है।"

"गोल्डर्स ग्रीन में?" वाटरबरी बोला, "तुम्हारी जान-पहचान के लोग भी तुम्हारे चरित्रों जैसे ही हैं क्या, जिनका संस्कार गोल्डर्स ग्रीन में ही होना चाहिए?"

"वह जगह मैंने नहीं चुनी है।"

"तो जीवन कला का अनुसरण करता है।"

"आपके किसी मित्र की मृत्यु हुई है?" सिल्विया ने सहानुभूति के साथ पूछा और वाटरबरी ने इस बेतुकी बात के लिए उसे घूरकर देखा।

"हाँ!"

उसके चेहरे से लगता था कि वह यह सोच रही है कि वह कैसा मित्र होगा? कोई स्त्री या पुरुष? और मित्रता कैसी थी? मुझे अच्छा लग रहा था कि उसके लिए मैं एक लेखक न होकर एक साधारण मनुष्य ही हूँ जो अपने मित्रों के दाह-संस्कार में जाता है, सुख और दुख का अनुभव करता है और जिसे दिलासे की ज़रूरत हो सकती है—केवल एक चतुर शिल्पकार नहीं जिसकी रचना में मॉम की अपेक्षा सहानुभूति का तत्त्व कुछ अधिक रहता है, मगर फिर भी जिसका स्थान इतना ऊँचा नहीं कि उसे...

"फ़ॉर्स्टर के बारे में तुम्हारी क्या राय है?" वाटरबरी बोला।

"फ़ॉर्स्टर के बारे में? माफ़ करना, मैं यह सोच रहा था कि यहाँ से गोल्डर्स ग्रीन जाने में कितना समय लगता है।"

"कम-से-कम चालीस मिनट पहले तो आपको चल ही देना चाहिए," सिल्विया बोली। "एगवेयर की गाड़ी के इन्तज़ार में भी समय लगता है।"

"हाँ, फ़ॉर्स्टर के बारे में," वाटरबरी ने कुछ झुंझलाकर कहा।

"स्टेशन से आपको बस लेनी पड़ेगी," सिल्विया बोली।

"सिल्विया, बैंड्रिक्स यहाँ गोल्डर्स ग्रीन की बसों का पता करने नहीं आया।"

"माफ़ करना पीटर, मगर मुझे अब...।"

"बात करने से पहले तुम छह गिन लिया करो," वाटरबरी बोला।

"तो हाँ, बात ई.एम. फ़ॉर्स्टर के बारे में ही हो रही थी...।"

"अब इसे रहने दो...।"

"तुम दोनों का दो अलग-अलग स्कूलों से सम्बन्ध है, इसलिए मुझे इस बात में रुचि है।"

"उसका किसी स्कूल से सम्बन्ध है क्या? मेरा तो नहीं है। आप क्या कोई पाठ्य-पुस्तक लिख रहे हैं?"

सिल्विया मुस्करा दी और उसने उसकी मुस्कराहट देख ली। मुझे तभी विश्वास हो गया कि अब वह मेरे ऊपर ख़ूब तेज़ छुरी चलाएगा, मगर मुझे क्या फ़र्क़ पड़ता था! अरुचि और घमंड दोनों एक-से लगते हैं और वह शायद सोच रहा था कि मुझे बहुत घमंड है। "अच्छा, तो अब मैं चलूँगा," मैंने कहा।

"मगर तुम्हें आए तो अभी पाँच मिनट ही हुए हैं। यह लेख दरअसल बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"मगर समय पर गोल्डर्स ग्रीन पहुँचना मेरे लिए और भी महत्त्वपूर्ण है।"

"उसमें ऐसी क्या बात है?"

"हैम्पस्टेड तक मैं भी चल रही हूँ," सिल्विया बोली, "मैं आपको रास्ता बता दूँगी।"

"तुमने मुझसे तो नहीं कहा था," वाटरबरी सन्देहपूर्ण स्वर में बोला।

"आपको पता ही है कि हर बुधवार को मैं अपनी माँ से मिलने जाती हूँ।"

"मगर आज तो मंगल है।"

"तो मैं कल नहीं जाऊँगी।"

"यह तो बहुत ही अच्छा है," मैंने कहा। "रास्ते में साथ हो जाएगा।"

"एक उपन्यास में तुमने 'चेतना के प्रवाह' का प्रयोग किया है," वाटरबरी बेतरह जल्दी में बोला। "बाद में वह शैली तुमने छोड़ क्यों दी?"

"पता नहीं। आदमी अपना मकान क्यों बदल लेता है।"

"तुम्हें लगा कि वह पुस्तक जमी नहीं?"

"मेरी अपनी सब पुस्तकों के बारे में यही राय है। अच्छा, गुड बाई!"

"मैं लेख की एक प्रति तुम्हें भेजूँगा," उसने इस तरह कहा जैसे मुझे धमकी दे रहा हो।

"धन्यवाद!"

"तुम जल्दी लौट आना सिल्विया! साढ़े छह बजे बार्टाक प्रोग्राम सुनना है।"

जब हम टॉटेन्हम कोर्ट रोड के विध्वस्त इलाके से निकल आए तो मैंने सिल्विया से कहा, "इस झंझट से पिंड छुड़ाने के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।"

"मुझे पता था आप उठना चाहते हैं," वह बोली।

"तुम्हारा दूसरा नाम क्या है?"

"ब्लैक।"

"सिल्विया ब्लैक!" मैंने कहा। "जुड़कर बहुत ही अच्छा लगता है!"

"आपकी उससे बहुत मित्रता थी?"

"हाँ!"

"कोई स्त्री थी?"

"हाँ!"

"मुझे बहुत अफसोस है!" मुझे लगा वह यह बात दिल से कह रही है। पुस्तकों के बारे में, संगीत के बारे में, और कपड़े पहनने और बातचीत करने के बारे में उसे अभी बहुत कुछ सीखना था, मगर मनुष्यता का पाठ उसे अच्छी तरह आता था। हम भरी हुई ट्यूब में साथ-साथ स्ट्रैप पकड़े खड़े रहे। मेरा शरीर उसके शरीर से छुआ तो मुझे अपनी कामना याद आने लगी। तो अब कामना की जगह कामना की याद ही शेष रह गई थी? गूज स्ट्रीट में एक नए आदमी को रास्ता देते हुए उसकी टाँगें मुझसे चिपक गईं; फिर मुझे लगा जैसे वह अतीत की ही कोई बात हो जो मुझे याद आ रही हो।

"यह पहला ऐसा संस्कार है जिसमें मैं जा रहा हूँ," मैंने बात करने के लिए ही कहा।

"तो आपके माता-पिता अभी जीवित हैं?"

"पिता जीवित हैं। माँ की मृत्यु हुई तो मैं स्कूल में था। मैंने सोचा स्कूल से कुछ दिन छुट्टी ही मिलेगी, मगर पिता का ख़याल था कि घर आकर मेरा मन ख़राब होगा, इसलिए मेरी छुट्टी मारी गई। सिर्फ़ जिस दिन खबर आई थी, उस रात को मश्क से ही छुट्टी मिली थी।"

"मैं नहीं चाहूँगी कि मेरा दाह-संस्कार किया जाए," वह बोली।

"शरीर को कीड़े खाएँ, यह ज़्यादा अच्छा है?"

"इससे तो अच्छा ही है।"

हमारे सिर बहुत पास-पास थे इसलिए हम धीमी आवाज़ में बात कर सकते थे। मगर लोगों का दवाब इतना था कि एक-दूसरे से हम आँख नहीं मिला सकते थे। "मुझे तो दोनों चीज़ों में कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता," मैंने कहा था और साथ ही मुझे गुस्सा हो आया कि मैं झूठ क्यों बोल रहा हूँ। मुझे फ़र्क़ नज़र आता था, तभी तो मैंने हेनरी से अनुरोध करके उसे मनाया था कि उसे दाह-संस्कार ही कराना चाहिए।

3

पिछली शाम हेनरी के मन में इस बात को लेकर काफ़ी दुविधा थी। इसीलिए उसने फ़ोन करके मुझे बुला लिया था। सैरा के चले जाने से हम दोनों में एक विचित्र घनिष्ठता पैदा हो गई थी। हेनरी मुझ पर उसी तरह निर्भर कर रहा था कि दाह-संस्कार के बाद कहीं वह मुझे अपने यहाँ आकर रहने को न कह दे और मैं सोच रहा था कि उस स्थिति में मैं उसे क्या उत्तर दूँगा। सैरा की स्मृतियाँ दोनों घरों के साथ जुड़ी हुई थीं, इसलिए उसे तो मैं कहीं रहकर भी नहीं भुला सकता था।

जब मैं हेनरी के पास पहुँचा तो उस पर नींद की टिकियों का प्रभाव अभी बाक़ी था, इसलिए मुझे ज़्यादा बात नहीं करनी पड़ी। वह पढ़ने के कमरे में बैठा था। पास एक कुर्सी के सिरे पर एक रिडेम्प्शनिस्ट पादरी मनहूस चेहरा बनाए बैठा था। जिस अँधेरे गिरजे में उस दिन मैंने सैरा को देखा था, शायद वहीं पर वह हर इतवार को लोगों के कानों में झूठ उँडेलता था। हेनरी पहले ही उसकी बातों से भुना बैठा था।

"फादर क्रॉम्प्टन!" हेनरी ने कहा, ''ये मिस्टर बैंड्रिक्स हैं, उपन्यासकार। मेरी पत्नी के बहुत अच्छे मित्र रहे हैं।'' फादर क्रॉम्प्टन के चेहरे से लगा जैसे वह पहले से ही मुझे जानता हो। उसकी नाक तिरछे खम्भे की तरह नीचे को झुकी हुई थी और मुझे लगा कि शायद यही वह आदमी है जिसने सैरा के लिए आशा के सब दरवाज़े बन्द कर दिए थे।

''गुड आफ्टरनून!'' फादर क्रॉम्प्टन ने इस तरह चेहरा बनाकर कहा कि मुझे गिरजे का सूना वातावरण याद हो आया।

''मिस्टर बैंड्रिक्स ने सारा प्रबन्ध करने में मेरा काफ़ी हाथ बँटाया है,'' हेनरी बोला।

''मुझे पता होता तो मैं आकर सारा प्रबन्ध अपने हाथ में ले लेता।''

कभी मुझे हेनरी से घृणा थी, मगर अब मुझे वह घृणा ओछी लग रही थी। बेचारा हेनरी तो मेरी ही तरह दुखी था और हमें दुखी बनानेवाला आदमी यह था जो पादरी का लबादा पहने सामने बैठा था। ''आप ऐसा कैसे कर सकते थे,'' मैंने कहा, ''आप तो दाह-संस्कार में विश्वास नहीं करते।''

''मैं उसका कैथलिक ढंग से संस्कार कराता।''

''सैरा कैथलिक नहीं थी।''

''उसने कहा था कि वह कैथलिक बनना चाहती है।''

''मगर इतने से ही क्या वह कैथलिक हो जाती है?''

फादर क्रॉम्प्टन ने अपना फार्मूला एक हुंडी की तरह पेश कर दिया—''हम इच्छा को भी दीक्षा मान लेते हैं!'' जब हम दोनों में से किसी ने भी इस हुंडी को नहीं उठाया

तो फादर क्रॉम्प्टन ने फिर कहा, ''अभी भी आप यह प्रबन्ध हटा सकते हैं। मैं सारा प्रबन्ध अपने हाथ में ले लूँगा।'' यह उसने इस तरह समझाने के स्वर में कहा जैसे लेडी मेकबेथ को बता रहा हो कि हाथों को सुगन्धित करने के लिए उसके पास जो नुस्खा है वह अरब की सुगन्धियों से कहीं अच्छा है।

''मगर उससे फ़र्क़ क्या पड़ेगा?'' हेनरी बोला। ''मैं कैथलिक नहीं हूँ, मगर मुझे समझ नहीं आता कि...''

''सैरा को उससे खुशी होती, और कुछ नहीं।''

''मगर क्यों?''

''धर्म कुछ उत्तरदायित्व चाहता है मिस्टर माइल्स, तो कुछ सुविधाएँ भी देता है। हम मृतात्माओं के लिए विशेष प्रार्थनाएँ करते हैं और उन्हें याद रखते हैं।''

आप याद रखते हैं! मुझे गुस्सा हो आया। कहने को सब ठीक है; व्यक्ति का बहुत महत्त्व है; हर व्यक्ति के सिर का एक-एक बाल गिना हुआ है, मगर मुझे भी तो अपने हाथों पर सैरा के बालों के स्पर्श की याद है, उस स्पर्श की जो उसकी पीठ को सहलाते हुए मुझे रोमांचित कर देता था। हम भी तो अपने ढंग से मृतात्माओं को याद रखते हैं।

हेनरी कुछ कमज़ोर पड़ रहा था, इसलिए मैंने दृढ़ता के साथ कहा, ''हमारे पास यह मानने का कोई भी कारण नहीं है कि वह कैथलिक होना चाहती थी।''

''नर्स ज़रूर यह कहती थी कि...'' हेनरी कहने लगा। मगर मैंने उसे बीच में ही टोक दिया, ''उस समय वह बुख़ार में बड़बड़ा रही थी।''

''देखिए मिस्टर माइल्स,'' फादर क्रॉम्प्टन बोला, ''अगर एक बहुत बड़ा कारण मेरे पास न होता तो मैं ख़ामख़ाह दखल देने यहाँ न आता।''

''मेरे पास मिसेज़ माइल्स की कुछ रोज़ पहले की लिखी चिट्ठी रखी है,'' मैंने कहा। ''आपसे उनकी भेंट कब हुई थी?''

''लगभग तभी—कोई पाँच-छह रोज़ हुए।''

''फिर चिट्ठी में उन्होंने इस चीज़ का ज़िक्र क्यों नहीं किया?''

''हो सकता है मिस्टर बैंड्रिक्स, आप पर उन्हें उतना विश्वास न हो।''

''यह भी हो सकता है कि आप ही एकदम उछलकर अपने नतीजे पर पहुँचे जा रहे हों। कोई आपके धर्म में ज़रा रुचि दिखाए, या कुछ प्रश्न पूछे तो इसका यह मतलब तो नहीं कि उसे आपके धर्म की दीक्षा ही लेनी है।'' और फिर मैंने जल्दी से हेनरी से कहा, ''अब सारा प्रबन्ध कैसे बदला जा सकता है? सब कुछ हो चुका है और लोगों को बुलावा जा चुका है। सैरा को यह कभी अच्छा न लगता कि इस ज़रा से अन्धविश्वास के लिए सारा प्रबन्ध बिगाड़ा जाए। और...'' और मैंने अपनी आँखें हेनरी के चेहरे पर स्थिर किए हुए कहा, ''और सारा संस्कार ईसाई ढंग से ही

तो हो रहा है, हालाँकि सैरा मन से ईसाई भी नहीं थी। वैसे फादर क्रॉम्प्टन को प्रार्थना के लिए पैसे दिए जा सकते हैं।''

''उसकी ज़रूरत नहीं होगी।'' फादर क्रॉम्प्टन के हाथ ज़रा-से हिले जिससे उसकी गम्भीरता उसी तरह टूटती प्रतीत हुई जैसे बम गिरने के बाद एक मज़बूत दीवार अपनी जगह से सरककर नीचे आ रहती है। ''मैंने आज भी उसके लिए प्रार्थना की है और आगे भी सदा करता रहूँगा।''

''यह आपकी कृपा है,'' हेनरी ने इस तरह सन्तोष के साथ कहा जैसे बात अब समाप्त हो गई हो और सिगरेट का डब्बा उसकी तरफ़ बढ़ा दिया।

''हालाँकि मुझे कहना नहीं चाहिए मिस्टर माइल्स, मगर आप शायद यह नहीं समझते कि मिसेज़ माइल्स कैसी महिला थीं।''

''मेरे लिए वह सभी कुछ थी,'' हेनरी बोला।

''बहुत से लोग उन्हें चाहते थे,'' मैंने कहा। फादर क्रॉम्प्टन ने इस तरह मुझे देखा जैसे एक हेडमास्टर क्लास में पीछे की बेंच से आवाज़ कसनेवाले शरारती लड़के को देखता है।

''मगर वह काफ़ी नहीं था,'' उसने कहा।

''ख़ैर, अब सामने की बात पर आएँ,'' मैं बोला। ''सारा प्रवन्ध बदलना अब सम्भव नहीं है। लोग सौ तरह की बातें करेंगे। क्यों हेनरी, तुम्हें यह अच्छा लगेगा?''

''कभी नहीं।''

'' 'टाइम्स' में नोटिस दिया जा चुका है; उसका संशोधन निकलवाना पड़ेगा। लोगों में इसकी बहुत चर्चा होगी। हेनरी को सभी लोग जानते हैं। फिर सभी को तार भेजने पड़ेंगे। बहुत से लोगों ने अभी से गोल्डर्स ग्रीन में मालाएँ भिजवा दी होंगी। इसलिए फादर, अब आप ही देखिए...''

''मुझे इसमें कुछ भी नज़र नहीं आता।''

''आप जो बात कहते हैं, उसमें कोई तुक नहीं है।''

''आपने जाने कैसे सिद्धान्त बना रखे हैं मिस्टर बैंड्रिक्स!''

''आप यह तो मानते हैं कि दाह-संस्कार के बाद भी शरीर का पुनरुज्जीवन हो सकता है?''

''मानता हूँ, मगर मैं जिन कारणों से वह बात कह रहा था उन्हें मैं स्पष्ट कर चुका हूँ। मिस्टर माइल्स का मन फिर भी न मानता हो तो ठीक है।'' वह कुर्सी से उठा तो बहुत ही भद्‌दा लगने लगा। बैठे हुए उसमें कुछ प्रभाव फिर भी लगता था, पर खड़ा होने पर वह बहुत ही छोटा लगने लगा, क्योंकि उसकी टाँगें बहुत छोटी थीं। लगा, जैसे एकदम वह हमसे काफ़ी दूर चला गया हो।

''बुरा मत मानिएगा फादर!'' हेनरी बोला। ''आप थोड़ा पहले आ जाते तो...''

"मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है, मिस्टर माइल्स!"

"मतलब मुझसे है?" मैंने जान-बूझकर अक्खड़ स्वर में कहा।

"जाने दीजिए मिस्टर बैंड्रिक्स, अब आपकी किसी बात का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।" वह शायद मेरी घृणा को पहचान रहा था। उसने हेनरी से हाथ मिलाया और मेरी तरफ़ पीठ करके चल दिया। मेरा मन हुआ कि उससे कहूँ कि तुम मुझे ग़लत समझ रहे हो फादर! मुझे सैरा से घृणा नहीं है और हेनरी को भी तुम ग़लत समझ रहे हो। सैरा को मैंने नहीं, उसने बर्बाद किया है। मुझे सैरा से प्रेम है, समझे...! आख़िर वह आदमी प्रेम को भी तो पहचानता होगा!

4

"अगला स्टॉप हैम्पस्टेड है," सिल्विया ने कहा।

"तो तुम्हें अपनी माँ से मिलने जाना है?"

"मैं वैसे मंगल को उससे मिलने नहीं जाती। आप चाहें तो मैं आपको गोल्डर्स ग्रीन तक रास्ता बता सकती हूँ।"

"इससे अच्छी बात क्या हो सकती है?"

"अगर समय पर पहुँचना हो तो आपको टैक्सी लेनी पड़ेगी।"

"पहले की पंक्तियाँ न भी सुनी जाएँ तो कोई हर्ज़ नहीं।"

मेरे साथ स्टेशन के बाहर आकर वह मुझसे विदा लेने लगी। जाने उसने मेरे लिए इतनी तकलीफ़ क्यों उठाई थी! मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं था कि कोई स्त्री मेरी ओर आकर्षित हो; और अब तो बिलकुल ही नहीं रहा था क्योंकि घृणा की तरह दुख और निराशा की कटुता से भी व्यक्ति भद्दा लगने लगता है और साथ ही स्वार्थी भी हो जाता है। मेरे पास सिल्विया को देने को कुछ नहीं था, मैं जीवन में उसे कुछ भी नहीं सिखा सकता था, मगर अगले आधे घंटे के लिए मैं उसके सौन्दर्य का सहारा लिये रहना चाहता था जिससे सैरा के और अपने सम्बन्ध को लेकर अटकल भिड़ानेवाले लोगों की आँखों से वहाँ अपने को ज़रा सुरक्षित रख सकूँ।

"इन कपड़ों में...मैं कैसे चल सकती हूँ?" मेरे अनुरोध करने पर उसने कहा, हालाँकि उसके चेहरे से लग रहा था कि मेरे साथ चलने की बात से उसे खुशी ही हुई है। मैं चाहता तो तभी वाटरबरी का पत्ता काट सकता था; उसकी बाज़ी अब खत्म हो चुकी थी। मैं चाहता तो रात को बार्टाक संगीत उसे अकेले ही सुनना पड़ता।

"हम जाकर पीछे खड़े होंगे," मैंने कहा। "लोग समझेंगे कि तुम वैसे ही उधर से गुज़र रही थीं।"

"कम-से-कम मेरी पतलून तो काली है ही," उसने कहा। मैं टैक्सी में जैसे आश्वस्त करने के लिए ही उसके घुटने पर हाथ रखे रहा, हालाँकि इस रास्ते पर आगे बढ़ने का मेरा इरादा नहीं था। श्मशान में धुआँ उठ रहा था और कँकरीले रास्ते के गड्ढों में पानी जमा हुआ था। बहुत-से लोग शायद किसी और के संस्कार से होकर बाहर आ रहे थे। उनके चेहरों से ऐसे लग रहा था जैसे बहुत देर तक किसी पार्टी में तकल्लुफ़ निभाकर अब उनका छुटकारा हुआ हो।

"रास्ता इधर से है," सिल्विया बोली।

"तुम इस जगह से परिचित हो?"

"दो साल हुए डैडी को यहाँ लाया गया था।"

जब हम गिरजे में पहुँचे, तो सब लोग वहाँ से बाहर निकल रहे थे। 'चेतना के प्रवाह' के बारे में बाटरबरी की बातचीत ने सचमुच ही मुझे देर करा दी। मुझे कोई चीज़ मन में चुभी—शायद यह रूढ़िगत संस्कार ही कि मैं अन्तिम समय सैरा को नहीं देख सका। तो वह धुआँ जो बस्ती के बाग़ों के ऊपर उठता दिखाई दे रहा था, सैरा का ही धुआँ था! हेनरी अकेला बाहर निकला, मगर रोने से उसकी आँखें ऐसी हो रही थीं कि वह मुझे नहीं देख पाया। ऊँचा हैट पहने सर विलियम मैलक के सिवा मैं वहाँ और किसी को नहीं जानता था। वह भी एक वितृष्णा की नज़र मुझ पर डालकर आगे चला गया। आधा-दर्जन सरकारी अफ़सर आए हुए थे। शायद उनमें डंस्टन भी था। कुछ अफ़सरों की पत्नियाँ साथ थीं। उनके हैट देखकर लगता था जैसे वह मन में बहुत सन्तुष्ट हों क्योंकि सैरा की मृत्यु से उनके लिए एक खतरा उठ गया था।

"यह तो बहुत बुरी बात हुई," सिल्विया बोली।

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।"

और मैं सोचने लगा कि सैरा का शरीर लेप से सुरक्षित कर लिया जाता तो भी शायद इन स्त्रियों के लिए खतरा बना रहता, क्योंकि उसका मृत शरीर भी इन्हें इनकी हीनता का अनुभव कराता।

स्माईद चुपचाप जल्दी से बाहर निकला और एक गड्ढे में फिसल गया। एक स्त्री कह रही थी, "इस सनीचर को कार्टर्स ने हमें घर पर बुलाया है।"

"मैं अब चली जाऊँ?" सिल्विया ने पूछा।

"नहीं, नहीं," मैंने कहा, "तुम मेरे साथ रहो।"

मैंने गिरजे के दरवाज़े से अन्दर झाँककर देखा। चिता की तरफ़ का रास्ता ख़ाली था, मगर पुरानी मालाएँ बाहर निकालकर नई मालाएँ अन्दर ले जाई जा रही थीं। एक बुड्ढी स्त्री अब भी प्रार्थना करती हुई बैठी थी जैसे अचानक पर्दा बदल जाने पर भी पहले दृश्य का कोई अभिनेता रंगमंच पर रह गया हो। तभी मुझे पीछे से एक

परिचित आवाज़ सुनाई दी, "यहाँ आपसे मिलना बहुत विचित्र लग रहा है साहब! यहाँ से जो गया, वह तो बस गया ही!"

"अरे पारकिस!" मैंने कहा।

"मैंने 'टाइम्स' में नोटिस देखा था। मिस्टर सैवेज से कहकर मैंने शाम की छुट्टी ले ली थी।"

"तो तुम लोगों का यहाँ तक भी पीछा करते हो?"

"वह बहुत ही भली महिला थीं साहब," वह खेद के साथ बोला। "एक बार सड़क पर उन्होंने मुझसे रास्ता पूछा था, बिना यह जाने कि मैं वहाँ पर क्यों खड़ा हूँ। उस बार कॉकटेल पार्टी में उन्होंने शेरी का गिलास मुझे दिया था।"

"दक्षिण अफ्रीका की शेरी थी?" मेरा दुख फिर उभरने लगा।

"उनके हाथों की थी, इसलिए मुझे कुछ पता ही नहीं चला कि कहाँ की है। वे अपने जैसी एक ही थीं। लड़का भी अकसर उनकी बातें करता है।"

"लड़के का क्या हाल है?"

"अच्छा नहीं है साहब! उसके पेट में बहुत दर्द रहता है।"

"किसी डॉक्टर को दिखाया है?"

"अभी नहीं साहब! सोचता हूँ शायद अपने आप ही ठीक हो जाए।"

मैंने आस-पास के अपरिचित लोगों पर नज़र दौड़ाते हुए कहा, "यह कौन-कौन लोग हैं पारकिस?"

"इस लड़की को तो मैं नहीं जानता।"

"वह मेरे साथ है।"

"माफ़ कीजिएगा! वे श्री विलियम मैलक हैं। उनका सितारा आजकल बहुत बुलन्द है।"

"उन्हें मैं जानता हूँ।"

"वे साहब जो गड्ढा लाँघ रहे हैं, वे भी मिस्टर माइल्स के डिपार्टमेंट में हैं।"

"उनका क्या नाम है, डंस्टन?"

"जी हाँ, यही नाम है।"

"तुम बहुत जानकारी रखते हो, पारकिस!" मैं सोचता था कि मेरी ईर्ष्या समाप्त हो चुकी है और अब यदि सैरा जीवित हो सके तो मैं उसे संसार-भर के लोगों के साथ बाँट सकता हूँ। परन्तु डंस्टन को देखते ही कुछ क्षणों के लिए मेरी पुरानी घृणा लौट आई। "सिल्विया," मैंने जैसे सैरा को सुनाते हुए कहा, "तुम शाम का खाना किसके साथ खा रही हो?"

"मैंने पीटर से कह रखा है।"

"पीटर कौन?"

"वाटरबरी।"

"उसे छोड़ो!"

क्या तुम हो और मुझे देख रही हो? मैंने सैरा से पूछा। देखो मैं तुम्हारे बिना भी गुज़ारा कर सकता हूँ। मुझे कोई असुविधा नहीं है। मेरी घृणा को अब भी लगता था कि सैरा जीवित है, जबकि मेरा प्रेम जानता था कि एक मरे हुए पक्षी की तरह उसका अब कोई अस्तित्व नहीं है।

किसी और के संस्कार के लिए आए हुए लोग वहाँ जमा हो रहे थे, इसलिए प्रार्थना करती हुई स्त्री हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई, जैसे वह किसी ग़लत जगह पर आ फँसी हो।

"मैं उसे फ़ोन कर सकती हूँ।"

उसने मान लिया तो मुझे लगा कि मैंने घृणा के मारे अपने पर मुसीबत डाल ली है। बिना प्रेम के अब मुझे प्रेम का अभिनय करना पड़ेगा। अपराध करने से पहले ही अब मैं अपने को दोषी ठहरा रहा था, क्योंकि उस मासूम को मैंने यूँ ही अपने चक्कर में घसीट लिया था। शारीरिक सम्बन्ध का यूँ कुछ भी महत्त्व नहीं, परन्तु मेरी उम्र में आकर आदमी को यह पता चल जाता है कि कई बार उसका अर्थ बहुत गहरा हो सकता है। मुझे कुछ न होता, मगर उस बच्ची के अन्दर उससे जाने क्या पागलपन जाग उठता! हो सकता है ऐसी शाम बिताने के बाद मुझसे ज़्यादा कुछ न हो पाता, या कुछ भी न हो पाता, और वह बौखलाहट ही उसे कहीं-का-कहीं ले जाती। या मैं ठीक से अपना कर्तव्य निभा लेता तो मेरा अनुभव ही शायद उसका दिमाग़ ख़राब कर देता। मैं सैरा से याचना करने लगा कि अब इस परिस्थिति से मुझे बचाओ, मेरी खातिर नहीं, तो उस लड़की की खातिर ही...।

"मैं उससे कह देती हूँ माँ की तबीयत ठीक नहीं है," सिल्विया बोली। मैंने सोचा वह झूठ बोलने को तैयार है। तो गरीब वाटरबरी का पत्ता सचमुच कट गया; वह झूठ ही हम दोनों को साझीदार बना देगा। काली पतलून पहने वह जमे हुए गड्ढों के पास खड़ी थी, और वहीं से मेरे लिए एक नए भविष्य का आरम्भ हो सकता था। मैं फिर याचना करने लगा कि सैरा, जैसे भी हो, मुझे इस परिस्थिति से निकालो; मैं उसके साथ कुछ भी करके अपराधी नहीं बनना चाहता। मैं तुम्हारे सिवा किसी से प्रेम नहीं कर सकता, किसी से भी नहीं। तभी वह बुढ़िया मेरी तरफ़ घूमकर बोली, "तुम्हारा नाम बैंड्रिक्स है?"

"हाँ!"

"सैरा ने मुझे बताया था...।" और उसके बोलना आरम्भ करते ही मुझे लगा कि वह मुझे मृतात्मा का कोई सन्देश देने जा रही है। "वह कहती थी कि तुम्हीं उसके सबसे अच्छे मित्र हो।"

"हाँ, मैं उसके अच्छे मित्रों में से था।"

"मैं उसकी माँ हूँ।" मुझे याद भी नहीं था कि उसकी माँ जीवित है। उन दिनों अपने बारे में ही इतनी बातें करने को होती थीं कि दोनों का पहले का जीवन एक ख़ाली नक्शे की तरह पड़ा रहता था जिसे सोचते थे कि जब चाहेंगे, तब भर लेंगे।

"तुम्हें पता नहीं था?" वह बोली।

"बात यह है कि...।"

"हेनरी को मैं अच्छी नहीं लगती, इसलिए मैं इनसे दूर ही रहती थी।" वह अपने को काफ़ी संयत रख रही थी, फिर भी उसके आँसू जैसे बाँध तोड़कर बह आए। और लोग वहाँ से जा चुके थे और नए लोग इन तीनों के पास से होकर अन्दर जा रहे थे। केवल पारकिस कुछ फासले पर खड़ा था; फासला रखने के मामले में वह बहुत सचेत था। शायद वह सोच रहा था कि मुझे और किसी तरह की जानकारी की ज़रूरत हो तो वह दे दे।

"तुम मेरा एक काम कर सकोगे?" सैरा की माँ बोली। मुझे उसका नाम याद नहीं आ रहा था—"कैमेरॉन? चैंडलर? शायद 'सी' से आरम्भ होता था। "मैं ग्रेट मिसेंडन से इतनी जल्दी में आई थी कि...।" उसने धीरे से इस तरह अपने आँसू पोंछे जैसे हाथ में तौलिया लिये हो। मैं सोच रहा था कि शायद बर्ट्रम नाम है...हाँ, बर्ट्रम ही तो था।

"क्यों नहीं मिसेज़ बर्ट्रम," मैंने कहा।

"आते हुए मैं अपने काले बैग में पैसे रखना भूल गई थी।"

"मुझे बताइए...।"

"तुम मुझे एक पौंड उधार दे सकोगे? मुझे जाने से पहले यहीं खाना खाना पड़ेगा, क्योंकि ग्रेट मिसेंडन में दूकानें जल्दी बन्द हो जाती हैं।" और उसने फिर एक बार अपने आँसू पोंछ लिये। मुझे उसे देखकर सैरा की याद आ रही थी—शायद दुख के समय भी उसके इस तरह सीधी बात करने से। या जाने क्यों! मैंने सोचा कि क्या हेनरी पर वह ऐसी कृपा बहुत बार कर चुकी है?

"आप खाना मेरे साथ खाएँ," मैंने कहा।

"तुम्हें मैं ख़ामख़ाह तकलीफ़ दूँगी।"

"मैं सैरा को बहुत चाहता था।"

"मैं भी उसे बहुत चाहती थी।"

मैंने सिल्विया से कहा, "ये उसकी माँ हैं। मुझे इन्हें खाना खिलाना पड़ेगा, इसलिए आज के लिए मुझे अफसोस है। फिर किसी दिन के लिए तुम्हें फ़ोन करूँगा।"

"ज़रूर!"

"तुम्हारा अपना नम्बर है?"

"वाटरबरी का है," वह कुछ मुरझाई-सी बोली।

"तो अगले सप्ताह का रखें?"

"ठीक है!" और उसने हाथ बढ़ाकर कहा, "अच्छा गुड बाई!" उसके चेहरे से लग रहा था कि वह भी जानती है कि वह क्षण अब बीत चुका है। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि चलो अब तो उसे थोड़ा-सा रंज ही होगा, या बर्टाक कार्यक्रम पर वाटरबरी से उसकी थोड़ी झड़प हो जाएगी। मैं मिसेज़ बर्ट्रम की तरफ़ मुड़ा तो मुझे लगा जैसे मैं सैरा से कहने जा रहा हूँ कि देखा मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ, परन्तु मेरी घृणा को उसके सुन पाने का जैसा विश्वास था वैसा मेरे प्रेम को नहीं था।

गेट के बाहर आकर मुझे पता चला कि पारकिस तब तक चला गया है। मैंने उसे जाते देखा नहीं था। उसने शायद सोच लिया था कि अब मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है।

मैंने मिसेज़ बर्ट्रम के साथ आइसोला बेला में खाना खाया। जहाँ कहीं मैं सैरा के साथ गया था, वहाँ मैं नहीं जाना चाहता था। मगर वहाँ बैठा मैं उस स्थान की उन सब स्थानों में तुलना करता रहा। अब हम चिआँटी पी रहे थे। सैरा और मैं कभी चिआँटी नहीं पीते थे, क्लेअरेट पीते थे। क्लेअरेट पीता तो भी उस समय मुझे उसकी उतनी ही याद आती। उसकी याद दिलानेवाली चीज़ों को छोड़कर भी उसे भुला पाना सम्भव नहीं था।

"मुझे यह संस्कार अच्छा नहीं लगा," मिसेज़ बर्ट्रम ने कहा।

"अच्छा? यह जानकर मुझे दुख हुआ।"

"सब कुछ वैसा मशीन-सा लग रहा था, जैसे अनाज ढोया जा रहा हो।"

"मुझे तो कुछ बुरा नहीं लगा। प्रार्थना वगैरह सभी कुछ हुआ।"

"वह पादरी...वह क्या पादरी था?"

"मैंने उसे नहीं देखा।"

"वह सर्वव्यापी की बात कर रहा था। पहले मेरी समझ में ही नहीं आया कि क्या कह रहा है। मैं समझी किसी व्यापारी की बात कर रहा है।" और सूप में चम्मच चलाती हुई वह फिर बोली। "मुझे तो हँसी आने को हो रही थी। हेनरी ने यह देख लिया था। इससे अब वह और भी मेरे खिलाफ हो गया होगा।"

"इसमें ऐसी क्या बात थी?"

"वह बहुत ही कमीना आदमी है।" उसने नेपकिन से अपने आँसू पोंछे और चम्मच से सूप को जल्दी-जल्दी हिलाने लगी। "एक बार मैंने उससे दस पौंड उधार

लिये थे। मैं अपना बैग घर भूल आई थी। कोई भी आदमी अपनी चीज़ घर भूल सकता है।''

''क्यों नहीं!''

''मैं तो दुनिया में किसी का कर्ज़ सिर पर नहीं लेती।''

उसकी बातें ट्यूब सिस्टम की तरह चल रही थीं–एक चक्कर और कुछ शाखाओं में। मैं कॉफ़ी पीता हुआ उसके स्टेशन गिनने लगा--हेनरी कमीना है, वह किसी से कर्ज़ नहीं लेती, अन्तिम संस्कार अच्छा नहीं हुआ, और वह सर्वव्यापी की बात क्या थी...और इस स्टेशन पर आकर गाड़ियाँ फिर हेनरी की तरफ़ चल देती थीं।

''वह बात ही ऐसी थी,'' वह कह रही थी। ''नहीं तो मैं क्या हँसना चाह रही थी? सैरा से मेरे जितना प्रेम किसे होगा!'' इस तरह की बात हम सभी कहते हैं, मगर दूसरा कहे तो हमें बुरा लगता है। ''मगर हेनरी को इसका क्या पता है! वह तो ठूँठ है।''

मैं चाह रहा था कि विषय किसी तरह बदल जाए। ''तो और कैसा संस्कार हो सकता था?''

''सैरा कैथलिक थी।'' उसने पोर्ट का गिलास उठाया और एक घूँट में ख़ाली कर दिया।

''यह फिज़ूल की बात है।''

''उसे खुद भी पता नहीं था,'' मिसेज़ बर्ट्रम बोली।

सहसा न जाने क्यों मेरे अन्दर एक डर-सा समा गया, जैसे किसी ने अपने अपराध के सारे प्रमाण नष्ट कर दिए हों, मगर अचानक अपनी धोखे की दीवार में उसे एक दरार नज़र आ जाए। वह दरार कितनी बड़ी थी? क्या जल्दी से उसका कुछ किया जा सकता था?

''यह बात मेरी समझ में नहीं आई।''

''सैरा ने तुम्हें नहीं बताया कि मैं पहले कैथलिक थी?''

''नहीं।''

''ऐसा ख़ास विश्वास नहीं था मुझे। मेरे पति को इस सबसे बहुत चिढ़ थी। मैं उसकी तीसरी पत्नी थी। पहले साल के बाद जब कभी हमारी लड़ाई होती थी तो मैं उससे कहा करती थी कि हमारा तो ठीक से ब्याह ही नहीं हुआ।'' और फिर उसने मशीनी ढंग से आगे जोड़ दिया, ''वह बहुत ही कमीना आदमी था।''

''आपके कैथलिक होने से सैरा कैथलिक नहीं हो जाती।''

उसने पोर्ट का एक घूँट और भर लिया और बोली, ''मैंने यह और किसी को नहीं बताया। मगर मुझे शायद थोड़ी चढ़ रही है। बताओ मुझे चढ़ रही है?''

''बिलकुल नहीं। अभी थोड़ी और लीजिए।''

''पोर्ट के आने तक उसने बात बदलने की चेष्टा की, मगर मैं बात को फिर वहीं ले आया। ''यह आप कैसे कह सकती हैं कि सैरा कैथलिक थी?''

''मुझसे वादा करो कि तुम हेनरी को नहीं बताओगे।''

''मैं वादा करता हूँ।''

''हम लोग बाहर नॉरमैंडी में गए हुए थे। सैरा तब दो साल की हुई थी। मेरा पति मुझसे यह कहकर जाता था कि वह डूविले जा रहा है, और जाता था अपनी पहली पत्नी से मिलने। मुझे बहुत गुस्सा आता था। सैरा और मैं उस दिन समुद्र-किनारे घूम रही थीं। सैरा बैठना चाहती थी, मगर मैं उसे थोड़ा-सा सुस्ताने देकर फिर आगे ले चलती थी। मैंने सैरा से कहा कि वह यह बात किसी को न बताए। वह तब भी बात को दिल में रख लेती थी। मैं डर रही थी, मगर मुझे बदला तो लेना ही था।''

''बदला लेना था? आपकी बात मेरी समझ में कुछ नहीं आ रही।''

''मुझे अपने पति से बदला लेना था न! मुझे गुस्सा पहली पत्नी की वजह से ही नहीं था। मैंने अभी कहा था कि वह मुझे कैथलिक नहीं बनने देता था। मैं गिरजे जाती थी तो वह मेरा जीना दुभर कर देता था। तो मैंने कहा कि मैं सैरा को कैथलिक बना देती हूँ, और कभी मैंने ही गुस्से में बक न दिया तो उसे पता भी नहीं चलेगा।''

''तो उसे पता नहीं चला?''

''वह तो साल-भर बाद ही मुझे छोड़कर चला गया।''

''और आप भी फिर कैथलिक हो गईं?''

''मुझे ऐसा ख़ास विश्वास नहीं था। मैंने एक यहूदी से ब्याह कर लिया। वह और सख़्त आदमी था। लोग कहते हैं यहूदी दिल के अच्छे होते हैं, मगर ग़लत बात है। वह बहुत ही कमीना आदमी था।''

''मगर समुद्र-किनारे क्या हुआ?''

''वहाँ पर कुछ भी नहीं हुआ। मेरा मतलब था कि हम वहाँ से होकर गई थीं। मैं सैरा को गिरजे के बाहर छोड़कर अन्दर पादरी को देखने चली गई। उसे राज़ी करने के लिए मुझे उसमें थोड़ा झूठ बोलना पड़ा, मगर ऐसा ख़ास झूठ नहीं। मैंने कहा कि मेरे पति ने ब्याह से पहले मुझसे वादा किया था, मगर अब वह अपने वादे से फिर रहा है। यह भी अच्छा था कि मुझे टूटी-फूटी फ्रेंच ही आती थी। आदमी पूरी बात न कह सके तो लगता है सच ही बोल रहा है। तो उसने उसी समय सब कुछ कर दिया और हम बस पकड़कर लंच से पहले घर पहुँच गईं।''

''उसने क्या कर दिया?''

''उसने दीक्षा देकर सैरा को कैथलिक बना दिया।''

"बस इतनी ही बात थी?" मैं जैसे आश्वस्त हो गया।

"यह एक पवित्र संस्कार है—कहते तो यही हैं।"

"मैंने समझा आप सैरा को सही माने में कैथलिक बता रही हैं।"

"कैथलिक तो वह थी ही, मगर उसे अपने को पता नहीं था। हेनरी उसे ठीक से दफ़न करता तो अच्छा था," और मिसेज़ बर्ट्रम की आँखों से फिर आँसू गिरने लगे।

"जब सैरा को ही नहीं पता था तो उस बेचारे का क्या दोष है!"

"मैं सोचा करती थी कि शायद इसका भी वैसा ही प्रभाव होता हो जैसा कीटाणुओं का होता है।"

"मगर आप पर तो कोई प्रभाव नज़र नहीं आता," मैंने कहा। मगर उसे बुरा नहीं लगा।

"मुझे जीवन में कई-कई प्रलोभन सताते रहते हैं," वह बोली। "मैं सोचती थी अन्त में जाकर सब कुछ ठीक हो जाएगा। और सैरा भी उसका बुरा नहीं मानती थी। वह बहुत ही अच्छी लड़की थी। जितना मैं उसे जानती थी, कोई नहीं जानता।" उसने थोड़ी पोर्ट और पी ली और फिर बोली, "तुम भी उसे पूरी तरह नहीं जानते थे। मेरे सभी पति कमीने न होते और मैं उसे ठीक से पाल सकती तो मैं सच कहती हूँ, वह एक सन्त बन सकती थी।"

"मगर उस पर उस चीज़ का कोई प्रभाव नहीं पड़ा," मैंने कुछ झुँझलाकर कहा और वेटर से बिल मँगवा लिया। मेरी पीठ में एक ठण्डी सिहरन दौड़ रही थी, जैसे भविष्य में मेरी कब्र पर मँडरानेवाले बगुलों ने मेरी तरफ़ अपने पंख फड़फड़ा दिए हों। शायद ज़मीन की सीलन की वजह से ही मुझे ठंड लग रही थी। कितना अच्छा होता जो यह ठंड मृत्यु की ठंड होती।

"सैरा पर उस चीज़ का कोई प्रभाव नहीं पड़ा," मिसेज़ बर्ट्रम को मेरिलबोन छोड़ने के बाद ट्यूब में घर लौटते हुए भी मैं मन में दोहरा रहा था। मिसेज़ बर्ट्रम जाती हुई मुझसे तीन पौंड भी ले गई थी। "कल बुधवार है और मुझे यहाँ पर थोड़ा काम है," उसने कहा था। सैरा पर यदि किसी चीज़ का प्रभाव पड़ा था तो अपनी माँ के आचरण का, जो हर साल अपना पति बदल लेती थी। उस स्त्री ने उसे भी यही सिखाना चाहा था कि एक जीवन के लिए एक पुरुष पर्याप्त नहीं, परन्तु इसकी विडम्बना उसने उस स्त्री के जीवन में ही देख ली थी। उसने हेनरी से ब्याह किया तो जीवन-भर के लिए ही किया था और इसी से मुझे इतनी निराशा सहनी पड़ी थी।

मगर समुद्र-तट के गिरजे में हुई दीक्षा का उस पर क्या प्रभाव रह सकता था। सैरा समझती थी कि ईश्वर ने मेरी जान बचाई थी, मगर मुझे तो ईश्वर में विश्वास तक नहीं था। आख़िर उसे मेरी जान बचाने की क्या पड़ी थी? उसने तो बल्कि मेरे

जीवन का एक-मात्र सुख मुझसे छीन लिया था, हालाँकि मुझे उसके अस्तित्व में ही सन्देह था। मैंने ईश्वर से कहा कि यह झूठ है कि सैरा के मन पर बचपन से ही तुम्हारा प्रभाव रहा था। ऐसे जादू पर मुझे तुम्हारे अस्तित्व से भी कम विश्वास है। तुम्हारा क्रॉस, शरीर का पुनरुज्जीवन, कैथलिक धर्म और सन्त-संगठन, मुझे इनमें से किसी भी जादू पर विश्वास नहीं।

बिस्तर में सीधा लेटकर मैं छत पर हिलती हुई कॉमन के वृक्षों की छायाओं को देखता रहा और ईश्वर से कहता रहा कि यह सब संयोग के सिवा कुछ नहीं कि अन्त में उसका झुकाव फिर तुम्हारी ओर हो गया। यह कैसे सम्भव है कि दो साल के बच्चे पर पानी छिड़ककर ज़रा-सी प्रार्थना की गई तो सदा के लिए उसके हृदय पर तुम्हारा प्रभाव पड़ गया! मैं इसमें विश्वास करूँ तो ईसा के शरीर और लहू की बात में भी मुझे विश्वास करना चाहिए। इतने साल सैरा के दिल पर तुम्हारा नहीं मेरा अधिकार रहा है। अन्त में तुमने उसे जीत लिया, यह ठीक है; जब वह मेरे साथ इस बिस्तर पर इसी तकिए के सहारे लेटती थी, तब तो उसका तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं था! तब वह मेरे साथ सोया करती थी, तुम्हारे साथ नहीं। वह अपना शरीर मुझे सौंपती थी, तुम्हें नहीं।

तभी बत्तियाँ बुझ गईं और चारों तरफ़ अँधेरा छा गया। मैं सपना देखने लगा कि मैं हाथ में बन्दूक लिये एक मेले में घूम रहा हूँ। कुछ बोतलें हैं जिन पर मैं निशाना लगाता हूँ। वे लगती शीशे की हैं, मगर मेरी गोलियाँ उनसे टकराकर इस तरह वापस उछल आती हैं जैसे वे फौलाद की बनी हों। मैं गोली-पर-गोली चलाए जाता हूँ, मगर एक भी बोतल नहीं टूटती। सुबह मेरी आँख खुली तो वह विचार मेरे दिमाग़ में वैसे ही चक्कर काट रहा था कि उन दिनों सैरा मेरी थी, केवल मेरी, उसकी नहीं।

5

मेरे लिए यह सोचना एक विचित्र मज़ाक ही था कि शायद हेनरी मुझे अपने यहाँ आकर रहने को कहे। सचमुच ऐसा होगा, यह मैंने नहीं सोचा था। इसलिए जब हेनरी ने मुझसे इसके लिए कहा तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। सैरा के संस्कार के सप्ताह-भर बाद ही उसका मेरे यहाँ आना भी आश्चर्य का ही विषय था, क्योंकि पहले कभी वह मेरे यहाँ नहीं आया था। उस रात वर्षा में वह मुझे जहाँ मिला था, उससे आगे इस तरफ़ शायद उसने कभी क़दम नहीं रखा था। नीचे घंटी बजी तो मैंने खिड़की से झाँककर देखा। मैं उस समय किसी से भी नहीं मिलना चाहता था। मेरा ख़याल था शायद वाटरबरी और सिल्विया आए हों। फुटपाथ के सीधे पेड़ से जो लैम्प लगा था,

उसकी रोशनी में मैंने हेनरी को उसके काले हैट से पहचान लिया। नीचे जाकर मैंने दरवाज़ा खोला तो हेनरी ने झूठ ही कहा, ''मैं इधर से गुज़रकर जा रहा था, सोचा मिलता चलूँ।''

''आओ, अन्दर आओ!''

मैं अलमारी से कुछ पीने को निकालने लगा तो भी वह जैसे एक दुविधा में खड़ा रहा। फिर बोला, ''तुम जनरल गॉर्डन पर कुछ काम कर रहे हो?''

''मुझे उसकी जीवनी लिखने का काम दिया गया है।''

''तो तुम लिख रहे हो?''

''सोच रहा हूँ लिख डालूँ। अपना काम तो इन दिनों मुझसे होता नहीं।''

''मुझसे भी आजकल कुछ नहीं होता।''

''राजकीय आयोग की बैठकें चल रही हैं?''

''हाँ!''

''तब तो तुम्हारा दिमाग़ उधर लगा रहता होगा।''

''हाँ, शायद कुछ हद तक लगा भी रहता है। लंच तक काम चलता है।''

''काफ़ी महत्त्वपूर्ण काम है। लो, यह शेरी लो।''

''अकेले रहकर कुछ पीना भी अच्छा नहीं लगता।''

''कहाँ वह 'टैटलर' के फोटाग्राफ़वाला हेनरी, जिसे देखकर मुझे जलन हुई थी और कहाँ यह आदमी! सैरा का एनलार्ज किया हुआ फोटोग्राफ मेरी मेज़ पर उलटा रखा था। हेनरी ने उसे सीधा करते हुए कहा, ''यह तसवीर मैंने ली थी, मुझे याद है।'' सैरा ने मुझे बताया था कि वह तसवीर उसकी एक सहेली ने ली थी। शायद बेचारी ने मेरा दिल रखने के लिए ही झूठ बोला था। जब उसका मेरे साथ परिचय हुआ था, तब भी वह कम सुन्दर नहीं थी, मगर उस तसवीर में वह काफ़ी छोटी और प्रसन्न नज़र आती थी। काश कि मैं भी कभी इतनी प्रसन्न देख सकता! परन्तु प्रेम करनेवाले के भाग्य में शायद यही बदा होता है कि वह अपनी प्रेमिका को दुख के साँचे में ढलते हुए ही देखे। ''मैं उस समय कई तरह के चेहरे बना रहा था, जिससे वह थोड़ा मुस्करा दे,'' हेनरी बोला। ''क्या जनरल गॉर्डन मज़ेदार आदमी था?''

''एक तरह से था ही।''

''मुझे घर आजकल बहुत अजीब लगता है। जहाँ तक बन पड़ता है, मैं घर से बाहर ही रहता हूँ। तुम इस समय ख़ाली हो तो चलो, क्लब चलकर खाना खाएँ।''

''मुझे अभी बहुत-सा काम पूरा करना है।''

उसने एक नज़र कमरे में इधर-उधर दौड़ाई और कहा, ''तुम्हारे पास यहाँ किताबें रखने के लिए ज़्यादा जगह नहीं है।''

''हाँ, बहुत-सी किताबें मुझे बिस्तर के नीचे रखनी पड़ती हैं।''

उसने वह मैगज़ीन उठा ली जो वाटरबरी ने मुझे उस दिन की भेंट से पहले भेजी थी, ताकि मैं उसके लेखों की शैली से परिचित हो जाऊँ, और बोला, "मेरे घर में बहुत जगह है। तुम चाहो, तो मैं तुम्हें एक तरह से अलग फ्लैट दे सकता हूँ।" मैंने आश्चर्य के साथ उसे देखा। वह जल्दी-जल्दी पत्रिका के पन्ने पलटने लगा जैसे वह बात उसने यूँ ही साधारण ढंग से कह दी हो। "तुम सोच लो, ऐसी जल्दी की कोई बात नहीं है।"

"यह तो तुम्हारा मेरे ऊपर एहसान होगा हेनरी!"

"बल्कि एहसान तो तुम्हारा मेरे ऊपर होगा।"

मैं सोचने लगा कि इसमें हर्ज़ क्या है! वह सरकारी कर्मचारी होकर यह बात कह रहा है तो मैं तो एक लेखक हूँ और लेखक स्वभाव से ही बेतकल्लुफ़ होते हैं।

"कल रात मैंने एक सपना देखा था," हेनरी बोला। "उसमें मैं था, तुम थे और सैरा थी।"

"मुझे उसके सपने नहीं आते।"

"मैं सोचता हूँ कि हम उस पादरी का कहना मान लेते तो अच्छा था।"

"क्यों? सैरा भी तो उतनी ही कैथलिक थी, जितने मैं और तुम हैं।"

"बैंड्रिक्स, तुम पुनरुज्जीवन में विश्वास करते हो?"

"एक-एक व्यक्ति के पुनरुज्जीवन में बिलकुल नहीं करता।"

"मगर हम इसका खंडन कैसे कर सकते हैं?"

"खंडन किसी भी चीज़ का नहीं हो सकता। मैं एक कहानी लिखता हूँ। तुम कैसे कह सकते हो कि उसकी घटनाएँ झूठी हैं और उसके चरित्र वास्तविक नहीं हैं? आज मैंने कॉमन में एक तीन टाँगोंवाला आदमी देखा है।"

"अच्छा?" हेनरी गम्भीर होकर बोला, "बेचारा सतमाहा रहा होगा।"

"और उसकी टाँगों पर मछलियों जैसी धारियाँ भी थीं।"

"तुम मज़ाक कर रहे हो।"

"मगर तुम इसका खंडन करो। जितना कठिन इसका खंडन करना है, उतना ही कठिन ईश्वर का खंडन करना है, हालाँकि मैं भी जानता हूँ कि यह झूठ है जैसे कि तुम जानते हो कि मेरी कहानियाँ झूठ होती हैं।"

"मगर ईश्वर के सम्बन्ध में युक्तियाँ तो दी जा सकती हैं।"

"मैं भी अपनी कहानी को सच सिद्ध करने के लिए अरस्तू की कोई दार्शनिक युक्ति ढूँढ़ सकता हूँ।"

"देखो, तुम मेरे यहाँ चले आओ," हेनरी अचानक पहले के विषय पर आ गया, "इससे तुम्हारी कुछ बचत भी जो जाएगी। सैरा कहती थी कि तुम्हारी पुस्तकें अभी उतनी सफल नहीं हो पा रहीं।"

''वैसे सफलता की छाया अब उन पर पड़ने लगी है,'' मैंने वाटरबरी के लेख की बात सोचते हुए कहा। ''एक समय आता है जब प्रसिद्ध आलोचक आपकी पुस्तक निकलने से पहले ही आपको प्रशंसा-पत्र देने के लिए अपनी कलमें स्याही में डुबोने लगते हैं। सारी बात समय की है।'' मैं इतनी बात इसलिए कर रहा था कि अभी मैं मन में निश्चय नहीं कर पाया था।

''अब तो हममें कोई मन-मुटाव नहीं है,'' हेनरी बोला। ''उस दिन क्लब में मुझे सेडर रोडवाले आदमी की बात का ज़रूर बुरा लगा था, मगर अब क्या है!''

''वह बात ग़लत थी। वह एक घंटी बजानेवाला नास्तिक आदमी है जिसके चेहरे पर बड़ा-सा स्ट्रॉबेरी का निशान है। उसकी बात तुम भूल जाओ।''

''लोग जो भी कहें बैंड्रिक्स, पर सैरा वास्तव में बहुत ही नेक स्त्री थी। यह उसका दोष नहीं था जैसे मैं उससे...ठीक से प्रेम नहीं कर पाता था। मेरे स्वभाव में संकोच और शंका बहुत है। उसे ऐसा व्यक्ति चाहिए था जैसे तुम हो।''

''मगर वह तो मुझे भी छोड़कर चली गई थी।''

''सैरा ने एक बार मुझे तुम्हारी एक किताब पढ़ने को दी थी—वह जिसमें एक स्त्री के गुज़र जाने के बाद उसके घर का वर्णन है।''

''द एंबिशस होस्ट।''

''हाँ, वही। तब मुझे वह वर्णन बिलकुल ठीक और यथार्थ लगा था। मगर अब लगता है कि वह ठीक नहीं था। तुमने लिखा था कि उसके पति को घर बिलकुल ख़ाली-ख़ाली-सा लगता है, वह एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता है, कुर्सियों को यहाँ से वहाँ रखता है और कभी दो गिलासों में शराब उँडेल लेता है, जिससे उसे लगे कि घर में कोई और भी रहता है।''

''मुझे ठीक याद नहीं, मगर यह वर्णन कुछ साहित्यिक-सा लगता है।''

''मगर वास्तव में ऐसा नहीं लगता बैंड्रिक्स! मुसीबत यह है कि घर कभी ख़ाली लगता ही नहीं। पहले दिनों में मेरे दफ़्तर से आने पर वह तुम्हारे साथ या और कहीं बाहर गई होती थी, और आवाज़ देने पर मुझे उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी, तो घर मुझे ख़ाली लगता था। लगता था जैसे घर में कुछ भी सामान न रहा। मैं भी अपने ढंग से उससे प्रेम करता था बैंड्रिक्स! उन दिनों घर आने पर जब वह मुझे दिखाई न देती तो मैं डरने लगता था कि कहीं मेज़ पर उसकी कोई चिट्ठी न पड़ी हो जिसमें लिखा हो, 'प्रिय हेनरी'...और वही कुछ जो उपन्यासों में लिखा रहता है।''

''हूँ!''

''मगर अब घर मुझे कभी ख़ाली नहीं लगता। मैं तुम्हें कैसे बताऊँ, वह कभी भी यहाँ नहीं होती, फिर भी हर समय वहीं रहती है, क्योंकि वह और कहीं नहीं गई

होती—न कहीं खाना खाने और न तुम्हारे साथ सिनेमा देखने। बस सारा समय घर पर ही रहती है।''

''मगर अब वह उसका घर कहाँ है?''

''माफ़ करना बैंड्रिक्स, मैं कुछ थका हुआ हूँ और परेशान हूँ। मुझे ठीक से नींद नहीं आती। मैं उससे बात नहीं कर सकता, इसलिए उसके बारे में बात करना चाहता हूँ, और एक तुम्हीं हो जिससे मैं बात कर सकता हूँ।''

''नहीं, वैसे और भी लोग हैं। सर विलियम मैलक हैं, डंस्टन...''

''इन लोगों से उसके विषय में मेरी उतनी ही बात हो सकती है, जितनी पारकिस जैसे आदमी से।''

''पारकिस से?'' मैं चमककर बोला। ''उसने क्या हमारा पीछा अभी भी नहीं छोड़ा?''

''वह कह रहा था कि वह हमारे यहाँ एक कॉकटेल पार्टी में आया था, और तुम्हें भी जानता है। सैरा जाने किस-किसको घर बुला लिया करती थी!''

''वह तुम्हारे पास किसलिए आया था?''

''कहता था कि सैरा, ईश्वर जाने कब, उसके बच्चे पर बहुत मेहरबान रही है। अब उसका बच्चा बीमार है। वह शायद कोई चीज़ यादगार के तौर पर ले जाना चाहता था। मैंने उसे सैरा की दो-एक बचपन की किताबें दे दीं। घर में बहुत-सी रखी हैं, जिन पर जगह-जगह पेंसिल घसीटी हुई है। मैंने कहा कि अच्छा है किसी काम आ जाएँगी। रद्दी में देने से तो बेहतर ही है। तुम्हारा क्या ख़याल है?''

''यह वही सैवेज का आदमी है जिसे मैंने सैरा के पीछे लगाया था।''

''ओ, ईश्वर! मुझे क्या पता था! वह तो सचमुच उसका प्रशंसक लगता था।''

''नहीं, वैसे वह भला आदमी है और महसूस करके बात कहता है।'' मेरी नज़र कमरे में घूम गई। तो अब हेनरी के घर में भी सैरा का अस्तित्व नहीं होगा, फिर भी वहाँ की हवा में तो वह घुली-मिली होगी ही।

''देखो हेनरी, मैं तुम्हारे यहाँ आ तो जाऊँगा, मगर तुम्हें मुझसे किराया लेना पड़ेगा।''

''मुझे इस बात की बहुत खुशी है बैंड्रिक्स। मगर किराया तो मैं खुद भी नहीं देता। जो टैक्स हैं, वे तुम आधे दे दिया करना।''

''जब तुम दूसरा ब्याह करो तो मुझे तीन महने पहले नोटिस दे देना।''

''मैं कभी दूसरा ब्याह नहीं करूँगा,'' वह सचमुच गम्भीर होकर बोला। ''मैं उन आदमियों में से नहीं हूँ। और अब तो मैं यह सोचता हूँ कि मैंने सैरा से ब्याह करके भी एक तरह से अन्याय ही किया था।''

6

मैं हेनरी के घर में आ गया। हेनरी चाहता था कि मैं तुरन्त ही वहाँ चला चलूँ, इसलिए मुझे एक सप्ताह का किराया बरबाद करना पड़ा। अपनी पुस्तकें और कपड़े दक्षिण से उत्तर तक पहुँचाने में भी पाँच पौंड ख़र्च हो गए। हेनरी ने एक तो मुझे गेस्ट रूम दे दिया और साथ एक कोठरी में मेरा पढ़ने का कमरा बना दिया। बाथरूम ऊपर था। हेनरी स्वयं ड्रेसिंग रूम में चला गया। जिस कमरे में उन दोनों का जुड़वाँ पलंग अब सूना पड़ा था, वह उसने मेहमानों के लिए रख दिया, हालाँकि आनेवाला कोई भी नहीं था। मुझे कुछ दिनों में अनुभव होने लगा कि हेनरी किसलिए कहता था कि घर उसे कभी भी ख़ाली नहीं लगता। मैं दिन में ब्रिटिश म्यूज़ियम में काम करता था और उसके बन्द हो जाने पर घर आकर हेनरी की प्रतीक्षा करता था। फिर हम इकट्ठे जाकर पोंटफ्रेक्ट आर्म्ज़ में कुछ पी लेते थे। एक बार हेनरी किसी कांफ्रेंस पर बोर्न माउथ गया, तो मैं पीछे से एक लड़की को अपने साथ घर ले आया। मगर मुझसे कुछ भी नहीं हुआ; कुछ हो ही नहीं सकता था। उसका मन रखने के लिए मैंने उससे कह दिया कि मैंने अपनी प्रेमिका को वचन दे रखा है कि यह काम मैं किसी के साथ नहीं करूँगा। उसने बहुत मीठे ढंग से कहा कि वह यह बात समझती है। वेश्याएँ सचमुच भावना की बहुत कद्र करती हैं। इस बार मेरे मन में प्रतिशोध की भावना नहीं थी और मुझे दुख हुआ कि वह सुख मैं अब कभी भी प्राप्त नहीं कर सकूँगा। बाद में सपने में मैंने सैरा को देखा। हम लोग अपने पुराने घर के कमरे में बैठे थे। मगर हुआ वहाँ भी कुछ नहीं, हालाँकि उससे मुझे दुख या खेद का अनुभव नहीं हुआ। हम दोनों मज़े से बातें करते रहे।

उसके कुछ दिन बाद मैंने अपने कमरे की अलमारी खोली तो उसमें मुझे कुछ पुरानी बच्चों की पुस्तकें मिलीं। हेनरी ने यहीं से पारकिस के लड़के के लिए पुस्तक निकालकर दी होगी। उनमें कई तरह की पुस्तकें थीं—परियों की कहानियाँ, जंगल की कहानियाँ, पहेलियाँ और उत्तरी ध्रुव की यात्रा, इत्यादि। दो-एक पुस्तकें बाद की भी थीं—कैप्टन स्कॉट की अन्तिम यात्रा और टॉमस हुड की कविताएँ। कविताओं की पुस्तक स्कूल की चमड़े की जिल्द में बँधी थी और उस पर यह लेबल लगा था कि वह सैरा बर्ट्रम को बीजगणित में उसकी योग्यता के लिए उपहार दी गई है। बीजगणित के लिए! मनुष्य जीवन में कहाँ-से-कहाँ जा पहुँचता है!

शाम को मुझसे कुछ काम नहीं हुआ। मैं वे पुस्तकें फ़र्श पर फैलाए मन में सैरा के जीवन के कुछ रिक्त कोष्ठों को भरने का प्रयत्न करता रहा। उन वर्षों में मैं उसके साथ क्यों नहीं था? उसका पिता और भाई भी मैं ही क्यों नहीं था? 'उत्तरी ध्रुव की यात्रा' शायद उनमें सबसे पुरानी पुस्तक थी, क्योंकि उसमें सब जगह

ऊपर-नीचे रंगीन चॉकों में जाने क्या-क्या घसीटकर उसे बुरी तरह ख़राब किया गया था। एक पहेलियों की किताब में उसने अपना नाम पेंसिल से उलटा लिख रखा था। 'जंगल की कहानियाँ' में बहुत साफ़-साफ़ लिख रखा था, "सैरा बर्ट्रम की पुस्तक, माँगकर उधार लो; चुराओ तो अपने को पाप में उतार लो।" और जगह-जगह वे सब निशान लगे थे जो हर बच्चे की पुस्तक पर होते हैं—जैसे शीतकाल के अज्ञात पक्षियों के पंजों के निशान हों। उन्हें बन्द करके रखते ही, वह जैसे फिर अतीत में चली गई।

हुड की कविताएँ शायद उसने कभी नहीं पढ़ी थीं। उस पुस्तक के पन्ने उसी तरह कोरे थे जैसे हेडमिस्ट्रेस या सम्भ्रान्त अतिथि के हाथों से लेने के समय रहे होंगे। उसे अलमारी में रखते हुए एक छपा हुआ कार्ड नीचे गिर गया जो शायद उसी पारितोषिक-वितरण का कार्यक्रम था। उस पर एक तरफ़ परिचित अक्षरों में, हालाँकि हमारे अक्षर भी छोटे से बड़े होकर समय की मार खा जाते हैं, लिखा था, 'सिर्फ़ बकवास!' मैं कल्पना करने लगा कि हेडमिस्ट्रेस भाषण देकर बैठ रही है, माता-पिता तालियाँ बजा रहे हैं और सैरा यह लिखकर अपनी सहेलियों को दिखा रही है और न जाने क्यों स्कूल की लड़की के उन उतावले अस्पष्ट परन्तु निश्चित शब्दों को पढ़ते ही मुझे उसकी एक और पंक्ति याद हो आई, 'मैं कुलटा और विश्वासघातिनी हूँ।' कैसी बिडम्बना थी कि अपनी मासूमियत में जो बात उसने किसी और के लिए लिखी थी, कुछ वैसी ही बात उसने बीस साल के अनुभव के बाद अपने लिए भी लिखी थी— कुलटा और विश्वासघातिनी! क्या कभी मैंने ही गुस्से में उससे यह बात कही थी? मेरी आलोचना को तो वह गाँठ बाँधकर रख लेती थी और प्रशंसा बर्फ़ के गालों की तरह उसके ऊपर से बह जाती थी।

मैं पन्ना पलटकर जुलाई 23, 1926 का कार्यक्रम पढ़ने लगा। मिस डंकन, आर.सी.एम. द्वारा हैंडल का जल-संगीत, बीट्रिस कॉलिन्स द्वारा 'मैं एक भटकता बादल' का पाठ, स्कूल ग्ली सोसाइटी द्वारा प्रस्तुत ट्यूडर आयर्ज़, मेरी पिपिट द्वारा वायलिन पर चोपिन का 'ए फ्लैट मे बॉल्ट्ज।' बीस साल पहले की वह शाम मेरी आँखों के सामने सजीव हो उठी और मुझे दुख होने लगा कि हमारा जीवन बाद में इतना बदल क्यों जाता है। उसी साल गर्मियों में मैंने अपना पहला उपन्यास आरम्भ किया था। तब काम करते समय मन में कितनी आशा, आकांक्षा और उत्साह होता था! मन में अवसाद नहीं, एक आह्लाद छाया होता। मैंने वह कार्ड उसी कोरी पुस्तक में रख दिया और पहेलियों और जंगल की कहानियों के साथ उसे भी अलमारी में डाल दिया। तब हममें दस साल और कुछ-एक मीलों का व्यवधान था, और हम दोनों ही प्रसन्न थे। बाद में हम एक-दूसरे से क्यों मिले? क्या केवल पीड़ा देने के लिए ही? मैंने स्कॉट की 'अन्तिम यात्रा' उठा ली।

यह मेरी भी प्रिय पुस्तक रही थी। मगर अब वह बर्फ़ को अपनी शूर-वीरता दिखाने की कहानी जिसमें बस जान देना ही था, जान लेना नहीं, बहुत पुरानी चीज़ लगती थी। तब से अब तक दो महायुद्ध हो चुके थे। मैं पुस्तक की तसवीरें देखने लगा—उभरी हुई चट्टानों की पृष्ठभूमि, दाढ़ियाँ, चश्मे, बर्फ़ के नाले, यूनियन जैक और पुराने ढंग के बालों-जैसे खच्चरों के अयाल! तब की मृत्यु भी उस ख़ास समय से ही जुड़ी हुई थी और वह लड़की भी जिसने हर पन्ने पर लाइनें और विराम-चिह्न बना रखे थे और जिसने स्कॉट के अन्तिम पत्र के एक तरफ़ लिख रखा था 'और फिर क्या आता है? ईश्वर? रॉबर्ट ब्राउनिंग!' तो ईश्वर तब भी एक प्रेमी की तरह ज़रा मौका मिलते ही उसे फुसलाने लगा था, जैसे बड़े लोग आज भी जब-तब अपने बड़प्पन की असम्भव कहानियों से हमें चकाचौंध करने का प्रयत्न करते रहते हैं। मैंने वह पुस्तक भी रख दी और अलमारी बन्द कर दी।

7

"तुम कहाँ चले गए थे हेनरी?" मैंने पूछा। रोज़ वह मुझसे पहले नाश्ता खाने पहुँचता था और कई बार मेरे नीचे पहुँचने से पहले ही खाकर चला भी जाता था। मगर उस दिन उसकी प्लेट अछूती ही रखी थी। वह आया तो बाहर का दरवाज़ा धीरे-से बन्द होने की आवाज़ मुझे सुनाई दी थी।

"यहीं, सड़क तक गया था," उसने टालते हुए कहा।

"क्या सारी रात बाहर रहे थे?" मैंने पूछा।

"नहीं तो!" और इस आक्षेप से बचने के लिए उसने सच बात बता दी, "फादर क्रॉम्प्टन आज सैरा के लिए प्रार्थना कर रहे थे।"

"यह चीज़ अभी तक चल रही है?"

"वे महीने में एक बार प्रार्थना करते हैं। मैंने सोचा कि शिष्टाचार के नाते कभी हो आना चाहिए।"

"फादर क्रॉम्प्टन को तो पता नहीं होता।"

"नहीं, मैं खुद ही बाद में उनसे धन्यवाद कहने चला गया था। मैंने उन्हें रात को खाने पर बुलाया है।"

"तो मैं उस समय कहीं बाहर चला जाऊँगा।"

"यह ठीक नहीं बैंड्रिक्स, वह भी एक तरह से सैरा के हितचिन्तक ही हैं।"

"कहीं अब तुम भी तो कैथलिक नहीं हो रहे?"

"नहीं, नहीं, मगर हमारी तरह उन्हें भी अपना विश्वास रखने का अधिकार है।"

तो शाम को वे तशरीफ ले आए। वही रूखा बदसूरत चेहरा जिसने सैरा को मुझसे दूर कर दिया था। उस आदमी ने एक ऐसी प्रतिज्ञा का साथ दिया था जो सप्ताह-भर में भुला दी जानी चाहिए थी। सैरा वर्षा में भीगती हुई इसी आदमी के गिरजे में आश्रय लेने गई थी और वहाँ से अपनी मृत्यु ले आई थी। मेरे लिए उसके साथ शिष्टाचार का पालन करना भी कठिन था, इसलिए खाने पर हेनरी ही बात करता रहा। फादर क्रॉम्प्टन के लिए बाहर खाना खाना एक कठिन कर्तव्य के पालन की तरह था। उसे इसकी आदत नहीं थी।

''यहाँ गरीबी बहुत है,'' हेनरी पनीर चबाता हुआ थके हुए स्वर में बोला। वह पहले कई और विषयों पर बात करने की चेष्टा कर चुका था—सिनेमा और पुस्तकों के प्रभाव की बात, उसकी हाल की फ्रांस-यात्रा की बात और तीसरे महायुद्ध की सम्भावना की बात।

''गरीबी कोई समस्या नहीं है,'' फादर क्रॉम्प्टन ने कहा।

''अच्छा, अनश्वरता की बात लें,'' हेनरी ने दिमाग़ को और कुरेदा। मगर उसका स्वर कुछ खोखला हो गया जैसा कि ऐसे विषय की चर्चा में स्वाभाविक ही है।

''वह भी कोई समस्या नहीं है,'' फादर क्रॉम्प्टन ने कहा।

''मेरा मतलब है...कॉमन में...रात को जो कुछ होता है...।''

''वह तो हर खुली जगह में होता है। और आजकल वैसे भी सर्दियों के दिन हैं।'' और वह बात भी ठप हो गई।

''थोड़ा पनीर और लीजिए!''

''नहीं, धन्यवाद!''

''इस तरह की जगह में आपको दान-वान तो कम ही मिलता होगा।''

''लोग जितना दे सकते हैं, दे देते हैं।''

''कॉफ़ी के साथ कुछ ब्रांडी लेंगे?''

''नहीं, धन्यवाद!''

''हम लोग थोड़ी ले लें, तो...''

''हाँ-हाँ, शौक से। मुझे पीकर नींद नहीं आती। सुबह छह बजे मुझे उठना होता है।''

''इतनी जल्दी क्यों?''

''प्रार्थना करने के लिए। आदमी को आदत हो जाती है।''

''मैंने बचपन के बाद कभी प्रार्थना नहीं की,'' हेनरी बोला। ''स्कूल में प्रार्थना किया करता था कि दूसरे पन्द्रह लड़कों में मेरा नाम आ जाए।''

''तो आ गया क्या?''

''तीसरे पन्द्रह में आया। इस तरह की प्रार्थना का तो कुछ अर्थ नहीं होता, फादर?''

"प्रार्थना न करने से तो अच्छा ही है। कम-से-कम इसमें ईश्वर की शक्ति का विश्वास तो होता ही है जो अपने में ही बड़ी चीज़ है।" वहाँ आने के बाद वह पहली बार इतनी बात कर रहा था।

"उस उम्र में तो यह इसी तरह होता था," मैं बोला, "जैसे हम लकड़ी छूते थे या रास्ते में लकीरों से बचते हुए चलते थे।"

"मैं थोड़े-बहुत अन्धविश्वास का भी विरोधी नहीं हूँ," फ़ादर नाक चढ़ाकर बोला। "उससे यह तो लगता है कि इस दुनिया से ऊपर भी कुछ है। यहीं से ज्ञान का आरम्भ हो सकता है।"

"आपके धर्म में तो कितना ही अन्धविश्वास है—सेंट जेनुएरिअस, रक्तरंजित मूर्तियाँ, और कुमारी के साक्षात्कार इत्यादि की बातें!"

"हम वह सब छाँट देने की चेष्टा कर रहे हैं। परन्तु यह विश्वास करना कि कुछ भी हो सकता है, ज़्यादा अच्छा है, या..."

तभी घंटी बज उठी। हेनरी बोला, "मैंने नौकरानी से कहा था कि वह सो जाए। मैं जाकर ज़रा देख लूँ।"

"मैं देखता हूँ," मैंने कहा। उस घुटन से निकलकर मुझे प्रसन्नता हुई। उस आदमी के पास हर चीज़ का जवाब पड़ा हुआ रखा था—साधारण आदमी की उससे दाल नहीं गल सकती थी। वह एक ऐसे मदारी की तरह था जिसके करतब देख-देखकर ही आदमी परेशान हो उठता है। मैंने दरवाज़ा खोला तो एक मोटी-सी औरत काले कागज़ का एक पार्सल लिये बाहर खड़ी थी। मैंने सोचा शायद कमरे साफ़ करनेवाली है। मगर उसने कहा, "मिस्टर बैंड्रिक्स आप ही हैं?"

"हाँ!"

"यह आपके लिए है।" और उसने इस तरह जल्दी से पार्सल मेरे हाथ में पकड़ा दिया जैसे उसमें बारूद भरा हो।

"किसने भेजा है?"

"मिस्टर पारकिस ने।" मैंने आश्चर्य के साथ उसे खोल लिया। सोचा, कहीं इसमें उसकी कोई और खोज न हो, जिसकी बात बताना वह भूल गया हो और अब उसे याद आया हो। मैं उस आदमी को अब भूल जाना चाहता था।

"मुझे रसीद दे दीजिए। उन्होंने कहा था कि पार्सल आपके हाथ में ही दूँ।"

"मेरे पास कागज़-पेंसिल कुछ नहीं है। इस ख़ामख़ाह की परेशानी की क्या ज़रूरत है?"

"आप मिस्टर पारकिस को जानते ही हैं। पेंसिल मेरे बैग में है।"

मैंने एक पुराने लिफाफे के पीछे उसे रसीद लिख दी। उसे उसने सँभालकर रखा और इस तरह चली गई जैसे जल्दी-से-जल्दी दूर-से-दूर पहुँच जाना चाहती हो। मैं

पार्सल हाथ में लिये हॉल में ही खड़ा था कि हेनरी ने आवाज़ दी, "क्या बात है बैंड्रिक्स?"

"पारकिस ने एक पार्सल भेजा है," कहते हुए मेरी ज़बान की मश्क हो गई।

"उसने वह पुस्तक वापस भेजी होगी।"

"इस समय? और मेरे नाम से?"

"तो और क्या है?" मैं पार्सल खोलना नहीं चाहता था। हम दोनों जी-जान से सैरा को भूलने की चेष्टा कर रहे थे। मुझे लग रहा था कि सैवेज के यहाँ जाने की मुझे काफ़ी सज़ा मिल चुकी है। उधर फादर क्रॉम्प्टन कह रहे थे, "तो मैं अब चलूँगा मिस्टर माइल्स।"

"अभी इतनी जल्दी क्या है?"

मैंने सोचा मैं उधर न जाऊँ तो इस तकल्लुफ़ से भी बच जाऊँगा, और वे जल्दी तशरीफ भी ले जाएँगे। मैंने पार्सल खोल लिया।

हेनरी का अनुमान ठीक था। वह एंड्रयू लैंग की परियों की कहानी ही थी। उसके पन्नों के बीच एक काग़ज़ दोहरा किया हुआ रखा था। वह पारकिस का पत्र था।

"प्रिय मिस्टर बैंड्रिक्स," इतना पढ़कर मैंने सोचा कि वह धन्यवाद का पत्र होगा, इसलिए मेरी आँखें तुरन्त अन्त की पंक्तियों पर पहुँच गईं। "इस स्थिति में मैं पुस्तक को घर में नहीं रखना चाहता। मिस्टर माइल्स को समझा दीजिएगा कि वे इसे मेरी अशिष्टता न समझें। आपका, एल्फ्रेड पारकिस।"

मैं हॉल में ही बैठ गया। उधर हेनरी कह रहा था, "यह मत समझिए फ़ादर क्रॉम्प्टन, कि मैंने अपने मन को ताला लगा रखा है।" और मैं पारकिस का पत्र आरम्भ से पढ़ने लगा।

"प्रिय मिस्टर बैंड्रिक्स, मैं मिस्टर माइल्स को न लिखकर यह पत्र आपको लिख रहा हूँ, क्योंकि आपसे मेरा निकट का परिचय है और आप साहित्यिक व्यक्ति होने के नाते वैसे भी विचित्र घटनाओं के अभ्यस्त हैं। इधर मेरे लड़के के पेट में बहुत दर्द होता रहा है जो आइसक्रीम खाने के कारण नहीं था। मेरा ख़याल था शायद उसे अपेंडेसाइटस है। डॉक्टर कहता था कि ऑपरेशन कराके देख लो, मगर मुझे डाक्टरी छुरी से बहुत डर लगता है क्योंकि लड़के की माँ की मृत्यु ऑपरेशन में असावधानी के कारण ही हुई थी। मेरा लड़का भी उसी तरह चला जाए, तो मैं क्या करूँगा? दुनिया में मेरा और कोई नहीं है। बात विस्तार से लिखने का बुरा नहीं मानिएगा। हमें शिक्षा ही यह दी जाती है कि पूरी बात को ठीक तरह क्रम से प्रस्तुत करना चाहिए जिससे न्यायाधीश तक को पूरा सन्तोष हो सके। तो मैंने सोमवार को डॉक्टर से कहा कि पहले हमें पूरी तसल्ली कर लेनी चाहिए। मैं सोचता था कि कहीं उसे ठंड न लगी हो। मिसेज़ माइल्स बहुत ही नेक महिला थीं और उन पर निगाह रखना भी एक गुनाह

था। मगर बेचारे लड़के को उनके घर के बाहर खड़े होकर पहरा देना पड़ता था। हम लोगों की अपनी इच्छा कुछ नहीं होती, परन्तु मेडन लेन में उन्हें पहली बार देखने पर ही मुझे लगा था कि यह काम अच्छा नहीं है। ख़ैर, तो उनकी मृत्यु के समाचार से लड़के को बहुत धक्का लगा था। उन्होंने लड़के से एक ही बार बात की थी, मगर उसे जाने कैसे लगने लगा था कि वे उसकी माँ जैसी हैं, हालाँकि ऐसा बिलकुल नहीं था। यूँ चाहे उसकी माँ भी अपनी तरह से एक नेक स्त्री थी और मुझे अब रोज़ उसकी याद आती है। 103 बुख़ार में, जो उस जैसे लड़के के लिए काफ़ी ज़्यादा है, वह इस तरह बड़बड़ाने लगा जैसे गली में मिसेज़ माइल्स से बात कर रहा हो और उन्हें बता रहा हो कि वह उन पर निगाह रख रहा है, हालाँकि वैसे वह यह बात उसे कभी न बताता, क्योंकि इस उम्र में भी वह इस काम को समझता है। वे चली गईं तो वह चिल्लाने लगा और फिर सो गया। जब उसकी नींद खुली तो उसका बुख़ार अभी 102 था, मगर वह कहने लगा कि मिसेज़ माइल्स ने सपने में उसे एक उपहार दिया है और माँगने लगा कि वह कहाँ है। इसीलिए मुझे मिस्टर माइल्स के पास जाकर झूठ बोलना पड़ा था जिसके लिए मैं लज्जित हूँ, क्योंकि यह झूठ मुझे काम की वजह से नहीं, अपने लड़के की वजह से बोलना पड़ा था।

"मैंने पुस्तक लाकर लड़के को दी तो वह कुछ शान्त हो गया, मगर डॉक्टर ने यह कहकर मेरी परेशानी बढ़ा दी कि अब और सोचना ठीक नहीं, उसे बुधवार को अस्पताल में भेज दिया जाए। उस दिन अस्पताल में बिस्तर ख़ाली होता तो शायद वह चला भी जाता। मुझे उस रात अपनी पत्नी की, लड़के की और छुरी की बातें सोच-सोचकर नींद नहीं आई। मैं आपको ही बता रहा हूँ, उस दिन सारी रात मैं प्रार्थना करता रहा। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की, अपनी पत्नी से प्रार्थना की, क्योंकि स्वर्ग यदि है तो वह स्वर्ग में ही होगी, और मिसेज़ माइल्स से भी प्रार्थना की, क्योंकि वे भी ज़रूर स्वर्ग में ही होंगी, कि जैसे भी हो लड़के के लिए कुछ करो। मैं इतना बड़ा होकर ऐसे कर रहा था तो लड़का जाने अपने मन में क्या-क्या सोंच रहा होगा! मैं सुबह उठा तो उसका बुख़ार 99 था, और पेट में दर्द भी नहीं था। डॉक्टर ने आकर देखा कि पेट में सूजन भी नहीं है, तो उसने कहा कि अब कुछ देर इन्तज़ार किया जा सकता है। लड़का तब से ठीक है। वह डॉक्टर से कह रहा था कि मिसेज़ माइल्स ने उसका दर्द दूर किया है, उन्होंने आकर उसे पेट पर दाईं ओर छुआ था (यह लिखने की गुस्ताखी माफ़ करें) और पुस्तक में भी कुछ लिख दिया था। अब पुस्तक को देखते ही वह उत्तेजित हो उठता है। डॉक्टर कहता है कि उसे शान्त रहना चाहिए। इस स्थिति में मैं पुस्तक को घर में नहीं रखना चाहता।..."

चिट्ठी के दूसरी तरफ़ फिर से लिखा था "पुस्तक में कुछ लिखा हुआ ज़रूर है, मगर वह स्पष्टतया मिसेज़ माइल्स ने बचपन में ही लिखा होगा। मगर लड़का इस

बात को नहीं समझता, और मैं डरता हूँ कि उसका दर्द फिर न लौट आए। आदर सहित, ए.पी.।'' मैंने पुस्तक का आरम्भिक ख़ाली पन्ना देखा तो वहाँ भी छोटी-सी सैरा बर्ट्रम ने और पुस्तकों की तरह पक्की पेंसिल से टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में अपनी पद्य-रचना कर रखी थी।

"यह पुस्तक मेरी माँ ने मुझको दी,
क्योंकि मैं बीमार थी।
कोई उसे चुराएगा,
तो वह मार खाएगा।
जो कोई बीमार होगा,
वह पढ़कर होशियार होगा!

मैं उसे लिये हुए डाइनिंग रूम में चला गया।

''क्या चीज़ थी?'' हेनरी ने पूछा।

''वही पुस्तक है,'' मैंने कहा। ''तुमने देने से पहले इसमें सैरा की लिखी हुई कुछ पंक्तियाँ पढ़ी थीं?''

''नहीं, क्यों?''

''एक संयोग की बात है, और कुछ नहीं। यूँ मन में अन्धविश्वास हो तो आदमी को फादर क्रॉम्प्टन की युक्तियों की भी ज़रूरत नहीं।'' मैंने चिट्ठी हेनरी को दे दी। उसने पढ़कर फादर क्राम्प्टन को पकड़ा दी।

''मुझे यह अच्छा नहीं लगता,'' हेनरी बोला। ''सैरा मर चुकी है और लोग उसे व्यर्थ में यूँ घसीट रहे हैं।''

''ठीक है, मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता।''

''लगता है जैसे बाहर के लोग उस पर टीका-टिप्पणी कर रहे हों।''

''मगर इसमें कोई बुरी बात तो नहीं लिखी है।'' फादर क्रॉम्प्टन ने चिट्ठी रख दी और कहा, ''अच्छा, अब मैं चलूँगा।'' मगर वह हिला नहीं, चिट्ठी पर नज़र लगाए बैठा रहा। ''इस लिखाई के बारे में आपका क्या ख़याल है?'' उसने पूछा।

''वह बरसों पहले की है।'' मैंने पुस्तक उसकी तरफ़ बढ़ा दी। ''ऐसी-ऐसी चीज़ें उसने कई पुस्तकों में लिख रखी हैं। सभी बच्चे ऐसा करते हैं।''

''समय बहुत विचित्र चीज़ है,'' फादर क्रॉम्प्टन बोला।

''वह बच्चा यह नहीं समझ सका कि यह बहुत समय पहले की लिखाई है।''

''सेंट ऑगस्टिन ने पूछा था कि समय कहाँ से आता है? उसने कहा कि वह भविष्य से जिसका अभी कोई अस्तित्व नहीं, वर्तमान में आता है जिसकी कोई अवधि नहीं, और अतीत में चला जाता है जिसका अस्तित्व मिट चुका होता है। यह कहना कठिन है कि समय की बात हम बच्चे से ज़्यादा समझते हैं।''

''मेरा मतलब यह नहीं...।''

''ख़ैर जाने दीजिए मिस्टर माइल्स,'' फादर क्रॉम्प्टन ने उठते हुए कहा, ''इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं। इससे यही तो पता चलता है कि मिसेज़ माइल्स कितनी अच्छी महिला थीं।''

''उसमें मुझे क्या सन्तोष है! अब वह उस अतीत में चली गई है जिसका अस्तित्व मिट चुका है।''

''जिसने यह चिट्ठी लिखी है वह काफ़ी समझदार व्यक्ति जान पड़ता है। हम मृतात्माओं के लिए ही नहीं, मृतात्माओं से भी प्रार्थना कर सकते हैं।...मिसेज़ माइल्स सचमुच बहुत नेक महिला थीं।''

मुझे एकदम गुस्सा आ गया कि यह आदमी अपने को समझता क्या है कि कोई भी तर्क इसे नहीं बौखला सकता और कि जिसे हम सालों से जानते थे उसे यह कुछ दिनों या घंटों के परिचय से ही हमसे ज़्यादा जानता है! ''बिलकुल नहीं थीं,'' मैंने कहा।

''बैंड्रिक्स!'' हेनरी उत्तेजित स्वर में बोला।

''वह किसी को भी उल्लू बना सकती थी—यहाँ तक कि पादरी को भी। उसने अपने पति को उल्लू बनाया, मुझे उल्लू बनाया और फादर, आपको भी उल्लू बनाया। वह सचमुच झूठ की पुतली थी!''

''वह जो थी, अपने को वही मानती थी।''

''उसका केवल मेरे साथ ही सम्बन्ध नहीं था...''

''चुप करो!'' हेनरी बोला, ''तुम्हें कोई अधिकार नहीं कि...''

''इन्हें बोलने दीजिए,'' फादर क्रॉम्प्टन ने कहा, ''अपना गुबार इन्हें निकाल लेने दीजिए।''

''मुझे यह आपकी पेशेवर दया नहीं चाहिए फादर! यह अपने पिट्ठुओं को दिखाइएगा।''

''मैं आपसे पूछकर किसी पर दया नहीं दिखाऊँगा मिस्टर बैंड्रिक्स!''

''वह किसी भी पुरुष के पास जा सकती थी।'' मैं चाहता था कि मुझे स्वयं इस पर विश्वास हो जाए जिससे मुझे दुख और अभाव का इतना अनुभव न हो, मैं अब भी उससे बँधा न रहूँ और अपने को उससे स्वतन्त्र महसूस कर सकूँ।

''पश्चात्ताप क्या है, यह मुझे अब सीखना नहीं है मिस्टर बैंड्रिक्स! मैं पच्चीस साल से लोगों की आत्म-स्वीकृतियाँ सुन रहा हूँ। मनुष्य कोई ऐसी बुराई नहीं कर सकता जो पहले किन्हीं सन्तों ने भी न की हो।''

''मुझे पश्चात्ताप केवल अपनी असफलता का है। आप जाइए फादर, आपके पिट्ठू, आपका वह मनहूस बॉक्स और आपकी माला आपका इन्तज़ार कर रहे हैं।''

''आपको कभी भी ज़रूरत पड़े, मैं आपको वहीं गिरजे में ही मिलूँगा।''

''मुझे आपकी ज़रूरत पड़ेगी? मेरी ज़बान न खुलवाइए फादर, मगर मैं सैरा नहीं हूँ।''

''मुझे बहुत खेद है फादर,'' हेनरी कुछ अव्यवस्थित-सा बोला।

''खेद की कोई बात नहीं है। मैं मनुष्य की पीड़ा को समझ सकता हूँ।''

उसकी धृष्टता की मोटी खाल अब भी मुझे उधेड़ रही थी। मैंने अपनी कुर्सी पीछे हटाते हुए कहा, ''आप ग़लत समझ रहे हैं फादर! यह पीड़ा जैसी सूक्ष्म चीज़ नहीं है। मेरे अन्दर पीड़ा नहीं, घृणा है। मुझे सैरा से घृणा है, क्योंकि वह कुलटा थी, हेनरी से घृणा है जो उससे चिपककर बैठा था और आपसे और आपके ईश्वर से घृणा है, जिन्होंने उसे हमसे छीन लिया है।''

"मैं आपकी घृणा की प्रशंसा करता हूँ,'' फादर क्रॉम्प्टन ने कहा। मेरी आँखों में आँसू आ गए, क्योंकि मैं उसे चोट नहीं पहुँचा सका था। ''भाड़ में जाएँ आप सब!'' मैंने कहा। और दरवाज़ा ज़ोर से बन्द करके वहाँ से चला आया। अपना पवित्र ज्ञान आप हेनरी पर उँडेलिए, मैंने मन में कहा। मैं...अकेला हूँ और अकेला ही रहना चाहता हूँ। सैरा, तुम्हारे बिना अब मैं सदा अकेला ही रहूँगा। यूँ, मैं भी एक साधारण व्यक्ति की तरह विश्वास कर सकता हूँ। थोड़ी देर के लिए अपने मन की आँखें मूँद लूँ, तो मैं भी विश्वास कर सकता हूँ कि तुमने ही रात को आकर पारकिस के बच्चे को छूकर ठीक कर दिया था और कि पिछले महीने श्मशान में मैंने तुमसे कहा कि उस लड़की को मुझसे बचाओ तो तुम्हीं अपनी माँ को हमारे बीच में ले आई थी। मगर इस सब में विश्वास करूँ तो मुझे तुम्हारे ईश्वर में भी विश्वास करना होगा, उससे प्रेम करना होगा। मगर मैं तुम्हारे साथ सोनेवाले व्यक्ति से प्रेम कर सकता हूँ, उससे नहीं।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मैं सोचने लगा कि यह ग़लत बात है। सैरा को गुज़रे कई दिन हो गए। आदमी जीवित लोगों से प्रेम कर सकता है, मरे हुओं से नहीं, और सैरा मर चुकी है, बिलकुल मर चुकी है। मैं यह मान लूँ कि वह जीवित है? मैंने बिस्तर पर लेटकर आँखें मूँद लीं और अपने मन को समझाने लगा। जब मैं उससे इतनी घृणा करता हूँ तो उससे मुझे प्रेम कैसे हो सकता है? क्या आदमी घृणा और प्रेम साथ-साथ कर सकता है? या कि घृणा मुझे केवल अपने से ही है? मुझे चतुराई से लिखी हुई अपनी तुच्छ पुस्तकों से घृणा है, अपने शिल्पी मन से घृणा है जो मैं ठीक चरित्र उतारने के लिए बिना प्रेम के भी एक स्त्री से सम्बन्ध जोड़ सकता हूँ। मुझे इस शरीर से घृणा है जिसने इतने सुख का अनुभव किया, फिर भी जो हृदय की अनुभूति को व्यक्त नहीं कर पाता। और मुझे अपने सन्देहशील मन से घृणा है, जिसने पारकिस को उसके पीछे लगाया था, उससे घंटियों पर पाउडर छिड़कवाया था, रद्दी की टोकरियाँ फुलवाई थीं और उसकी डायरी चुरा मँगवाई थी।

अपने दराज़ से उसकी डायरी निकालकर मैं यूँ ही एक जगह खोलकर पढ़ने लगा। अक्तूबर के एक दिन में उसने लिख रखा था—"यदि मुझे ईश्वर से घृणा है तो उसका वास्तव में अर्थ क्या है?" और मैं सोचने लगा कि इस तरह तो सैरा से घृणा का अर्थ है सैरा से प्रेम; अपने से घृणा का अर्थ है अपने से प्रेम। नहीं, मैं घृणा के योग्य नहीं हूँ—मैं, मॉरिस बैंड्रिक्स, 'द एंबिशस होस्ट', 'द क्राउंड इमेज' और 'द ग्रेव ऑन द वाटर फ्रंट' का लेखक, कलम घसीट बैंड्रिक्स! नहीं सैरा भी घृणा के योग्य नहीं। केवल तुम, ईश्वर, यदि तुम हो, तो केवल तुम्हीं इसके योग्य हो। "सोचा, कभी-कभी मुझे मॉरिस से भी घृणा होती है, परन्तु उस घृणा का कारण यही तो है कि मैं उससे प्रेम करती हूँ। यदि मुझे ईश्वर से घृणा है तो...।"

सैरा ने ईश्वर से प्रार्थना की थी यद्यपि उसे उसमें विश्वास नहीं था और मैं सैरा से बात कर रहा था, हालाँकि मुझे उसमें विश्वास नहीं था। मैंने कहा था तुमने मुझे जीवन दिलाने के लिए अपना और मेरा बलिदान कर दिया, परन्तु तुम्हारे बिना अब यह जीवन कैसा है? तुम्हारा ईश्वर से प्रेम करना ठीक है; तुम मरकर उसके पास पहुँच गई हो। परन्तु मुझे तो अपने जीवन और अपने स्वास्थ्य से लड़ना पड़ रहा है। मैं ईश्वर से प्रेम करने लगूँ तो मैं मर नहीं सकता; मुझे तो कुछ-न-कुछ करने को चाहिए। तुम्हें मैं हाथों से छूता था, ज़बान से चखता था; कुछ भी किए बिना प्रेम कैसे किया जा सकता है? तुमने एक बार सपने में कहा था, 'चिन्ता मत करो,' परन्तु उससे क्या होता है? मैं उस तरह प्रेम कर सकूँ तो कुछ भी शेष नहीं रहेगा। तुम्हारे प्रेम में मुझे खाने-पीने का या और किसी स्त्री का ध्यान नहीं आता था, परन्तु ईश्वर तो स्वयं भी मेरे पास नहीं है तो मेरे पास होगा ही क्या? मुझसे तो फिर काम भी नहीं होगा और... मैं बैंड्रिक्स भी नहीं रहूँगा। सैरा, मुझे इससे डर लगता है।

रात को दो बजे मेरी नींद पूरी खुल गई। मैंने स्टोर में जाकर कुछ बिस्कुट खाए और पानी पिया। मुझे अफसोस हो रहा था कि मैंने हेनरी के सामने सैरा की बुराई क्यों की। पादरी ने कहा था कि हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते, जो पहले किसी सन्त ने भी न किया हो। हत्या और व्यभिचार जैसे बाहरी पापों की बात और है। मगर क्या सन्तों के मन में ईर्ष्या और ओछेपन जैसे भाव भी होंगे? मेरी तो घृणा भी मेरे प्रेम की तरह ओछी थी। मैंने धीरे से हेनरी का दरवाज़ा खोलकर उसे देखा। बत्ती जल रही थी और वह आँखों पर बाँह रखकर सोया हुआ था। आँखें छिपी रहने से उसका शरीर अपरिचित-सा लगता था, जैसे किसी का भी शरीर हो। मुझे कुछ उसी तरह लगा जैसे युद्ध-भूमि में कोई सिपाही जाए और जो पहला शत्रु उसे नज़र आए वह मरा हुआ हो और उसका चेहरा बिगड़ा हुआ हो, और वह इस या उस पक्ष का सिपाही न लगकर उसे केवल अपने जैसा साधारण व्यक्ति ही नज़र आए। मैंने दो बिस्कुट हेनरी के बिस्तर के पास रख दिए और बत्ती बुझा दी।

8

मेरी पुस्तक ठीक नहीं चल रही थी। (यूँ लिखना ही मुझे बेकार लगता था, मगर समय बिताने को मेरे पास कोई साधन नहीं था।) मैं कॉमन में घूमने निकल गया और लोगों के भाषण सुनने लगा। एक आदमी जिसकी बातों से युद्ध से पहले मेरा काफ़ी मनोरंजन हुआ करता था, अब फिर अपनी जगह पर खड़ा बोल रहा था। राजनीतिक और धार्मिक वक्ताओं की तरह वह कोई सन्देश नहीं देता था। वह एक पुराना अभिनेता था जो लोगों को कविताएँ-कहानियाँ सुनाया करता था। वह लोगों को चैलेंज देता था कि उससे कुछ भी सुनाने को कहा जाए। कोई कहता, 'एन्शेंट मैरिनर' और वह तुरन्त अदा के साथ चार पंक्तियाँ सुना देता। किसी ने कहा, 'शेक्सपियर का बत्तीसवाँ सॉनेट', तो उसने जाने कौन-सी चार पंक्तियाँ बोल दीं। इस पर उस व्यक्ति ने एतराज़ किया तो वह बोला, ''आपके पास भाई साहब ग़लत संस्करण है।'' मैंने आस-पास के लोगों पर नज़र दौड़ाई तो मुझे स्माईद खड़ा दिखाई दे गया। उसने शायद मुझे पहले ही देख लिया था, क्योंकि उसने अपना वह अच्छा गाल जिसे सैरा ने नहीं चूमा था, मेरी तरफ़ कर रखा था और अपनी आँखें मुझसे बचा रहा था।

जाने क्यों मेरी सैरा के हर परिचित से बात करने की इच्छा हो आती थी! मैं भीड़ में रास्ता बनाकर उसके निकट चला गया और मैंने उससे कहा, ''हलो स्माईद!'' उसने झट दूसरे गाल पर रूमाल रख लिया और मेरी तरफ़ मुड़कर बोला, ''अरे, मिस्टर बैंड्रिक्स!''

''अन्तिम संस्कार के बाद फिर तुम दिखाई ही नहीं दिए।''

''मैं बाहर गया था।''

''तो अब तुम यहाँ भाषण नहीं देते?''

''नहीं।'' और कुछ हिचकिचाहट के बाद उसने किसी तरह कहा, ''मैंने यह काम छोड़ दिया है।''

''मगर घर पर तो लोगों को शिक्षा देते ही होगे।''

''नहीं, वह छोड़ दिया है।''

''अब तुम्हारे विचार बदल गए हैं क्या?''

''मुझे यह समझ ही नहीं आता कि व्यक्ति को किस चीज़ में विश्वास करना चाहिए,'' वह मुरझाया हुआ-सा बोला।

''किसी में भी नहीं। यही तो तुम सिखाया करते थे।''

''हाँ, सिखाया तो करता था।'' वह भीड़ से बाहर निकल आया और मैं उसके दाग़वाले गाल की तरफ़ चलने लगा। ''तुम्हारे दाँत में दर्द है क्या?'' मैंने उसे और चिढ़ाने के लिए कहा।

''नहीं, क्यों?''

''तुमने गाल पर रूमाल रख रखा है, इसलिए मैंने कहा कि शायद!''

उसने कुछ न कहकर रूमाल हटा लिया। उधर भी कोई दाग़ नहीं था। नई और स्वस्थ खाल पर केवल छोटा-सा नीला निशान बाक़ी था।

''बार-बार इसकी बात करने में मुझे बहुत उलझन होती है,'' वह बोला।

''तुमने इसका इलाज करा लिया?''

''हाँ, मैंने आपसे कहा है कि मैं बाहर गया था।''

''किसी नर्सिंग होम में गए थे?''

''हाँ!''

''ऑपरेशन कराया था?''

''नहीं।'' और फिर वह कुछ हिचकिचाहट के साथ बोला, ''यह स्पर्श से ही ठीक हो गया था।''

''यह विश्वास-चिकित्सा है क्या?''

''मुझे किसी चीज़ में विश्वास नहीं है। मैं किसी ऐरे-गै रे के पास नहीं गया।''

''मगर लगता तो नहीं था कि उस दाग़ का कोई इलाज हो सकता है!''

''एक नया इलाज निकला है, बिजली का।''

मैं घर चला आया और फिर लिखने का प्रयत्न करने लगा। लिखते हुए मुझे सदैव यह लगता है कि एक-न-एक चरित्र ऐसा होता है जिसमें जान नहीं आती। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसमें कुछ ग़लत नहीं होता, मगर वह कुछ ऐसा जड़ हो जाता है कि मुझे उसे धकेलकर चलाना पड़ता है, उसके लिए शब्द ढूँढ़ने पड़ते हैं और सालों की मेहनत से प्राप्त किया अपना सारा शिल्प उसे पाठकों के सामने सजीव बनाने में ख़र्च करना पड़ता है। कभी कोई आलोचक कह देता है कि उपन्यास में वही चरित्र सबसे अच्छा उतरा चरित्र है, तो मुझे एक विचित्र खटमिट्टा-सा अनुभव होता है, क्योंकि वह उतरा नहीं होता घसीटकर उतारा गया होता है। लिखते समय मेरे मन पर उसका वैसा ही बोझ रहता है जैसा पेट पर अधपचे भोजन का, जिससे जिस दृश्य में वह हो, उसे लिखने में मुझे ज़रा भी सुख नहीं मिलता। वह अपने से कुछ नहीं करता, कोई मोड़ नहीं देता, किसी स्थिति को नहीं बदलता। और चरित्र तो सहायता करते हैं, परन्तु वह केवल रुकावटें ही डालता है।

मगर उसके बिना काम भी नहीं चलता। शायद ईश्वर को भी हममें से कुछ-एक के बारे में ऐसा ही अनुभव होता हो। सन्त लोग शायद स्वयं अपनी रचना कर लेते हैं, अपने हाथ में बागडोर लेकर स्थितियों को मोड़ दे लेते हैं, स्वयं कथावस्तु की अपेक्षाओं से चालित नहीं होते। मगर हम जैसे लोगों को उसे धकेलकर चलाना पड़ता है, क्योंकि उनकी जड़ता ही उनकी धृष्टता बन जाती है। हम कथावस्तु के अन्दर

ही गुँथे रहते हैं और हमें ईश्वर अपनी इच्छा से यहाँ से वहाँ चलाता है। हममें कहीं कुछ कवित्व नहीं होता, हमारी अपनी कोई इच्छा नहीं होती और हमारा महत्त्व इतने में ही होता है कि हम कहीं किसी समय अपने से चलते हुए एक जीवित चरित्र के लिए पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर देते हैं; हमारे होने से एक सन्त को अपनी स्वतन्त्र इच्छा को अभिव्यक्त करने का अवसर मिल जाता है।

दरवाज़ा बन्द करके हेनरी घर में आ गया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे काम बन्द करने का बहाना मिल गया। उस चरित्र को सुबह तक जड़ ही रहने देकर हम लोग अब पोंटफ्रेक्ट आर्म्ज़ में जा सकते थे। मेरा ख़याल था कि हेनरी मुझे आवाज़ देगा, क्योंकि महीने-भर में ही हमारा रहन-सहन इस तरह आपस में सध गया था जैसे दो कुँआरे बरसों से साथ रहते हों। मगर हेनरी मुझे आवाज़ दिए बिना ही अपने पढ़ने के कमरे में चला गया। मैं भी कुछ पिए बिना कुछ देर बाद वहीं पहुँच गया।

मुझे उस अवसर की याद हो आई जब मैं पहली बार उसके साथ वहाँ आया था और वह गोलाबाज़ की हर मूर्ति के पास उदास और चिन्तित-सा बैठा रहा था। परन्तु अब उसे देखकर मुझे ईर्ष्या या सन्तोष का अनुभव नहीं हुआ।

''कुछ पीने चलोगे?'' मैंने उससे पूछा।

''हाँ, हाँ, मैं अपना जूता बदल लूँ।'' हेनरी ने शहर और देहात के अलग-अलग जूते रख रखे थे और कॉमन उसकी नज़र में देहात ही था। वह फ़ीते खोलने लगा, मगर एक फ़ीता उलझ गया—उसकी उँगलियाँ कुछ ऐसे ही काम करती थीं। तंग आकर उसने जूता खींचकर उतार दिया। मैंने उसे उठाकर फ़ीते की गाँठ खोल दी।

''धन्यवाद बैंड्रिक्स!'' शायद सहयोग की इस छोटी-सी बात से ही उसका विश्वास लौट आया। ''आज दफ़्तर में एक बहुत ही बुरी बात हुई है,'' उसने कहा।

''क्या?''

''मिसेज़ बर्ट्रम आई थी। तुम शायद उसे नहीं जानते।''

''उस दिन उससे भेंट हुई थी।'' 'उस दिन' जैसे वही एक दिन ख़ास हो, बाक़ी सब दिन साधारण हों।

''मेरा उससे सम्बन्ध कभी अच्छा नहीं रहा।''

''वह बता रही थी।''

''सैरा इस बात को समझती थी, इसलिए उसे दूर ही रखती थी।''

''तो वह कुछ पैसे माँगने आई थी?''

''हाँ, उसे दस पौंड चाहिए थे। वही पुरानी कहानी—कुछ ख़रीदने आई थी, पैसे चुक गए हैं और बैंक बन्द है। बैंड्रिक्स, मेरा दिल छोटा नहीं है, मगर इसके रंग-ढंग देखकर मुझे बहुत चिढ़ होती है। इसे साल में दो हज़ार की आय है—लगभग उतनी ही जितनी मेरी है।''

"तो तुमने दस पौंड दे दिए?"

"हाँ, दे दिए, क्योंकि देने तो पड़ने ही थे। मगर साथ में मैंने उसे थोड़ा उपदेश भी दे दिया जिससे वह भड़क उठी। मैंने आज पहली बार उससे कहा कि इतनी बार वह पैसे ले जाती है, क्या कभी वापस भी करती है? उसने ताव में अपनी चेकबुक निकाल ली कि मैं अभी तुम्हें सारी रकम का चेक देती हूँ। वह सचमुच ही चेक काट देती, मगर चेकबुक निकालकर उसे ध्यान आया कि वह उसके सभी चेक इस्तेमाल कर चुकी है। वह मुझे शर्मिन्दा करना चाहती थी, मगर बेचारी को आप शर्मिन्दा होना पड़ा। इससे वह और भी भड़क उठी।

"फिर?"

"वह मुझ पर तोहमत लगाने लगी कि मैंने सैरा का संस्कार ठीक-से नहीं किया, और उसने एक विचित्र कहानी मुझे सुना दी।"

"मुझे पता है। दो पोर्ट पीकर उसने वह कहानी मुझे भी सुनाई थी।"

"तो तुम समझते हो वह कहानी झूठ है?"

"नहीं।"

"तो यह एक विचित्र संयोग है या नहीं? दो साल की उम्र में दीक्षा, जिसकी कि किसी को याद भी नहीं रह सकती, और इतने दिनों बाद उसका प्रभाव दिखाई देना, जैसे कोई दबा हुआ छूत का रोग हो।"

"हाँ, एक विचित्र संयोग ही है और क्या!" पहले भी मैं हेनरी के मन को इसी तरह शक्ति दे चुका था और अब भी उसे कमज़ोर नहीं पड़ने देना चाहता था। "कारों के दस हज़ार नम्बर हैं और जाने कितने नम्बर साथ-साथ आ सकते हैं, मगर मैंने कितनी बार एक ही नम्बर की दो गाड़ियों को भीड़ में साथ-साथ जाते देखा है।"

"हाँ, ऐसा कई बार होता है।"

"इसलिए मैं संयोग में बहुत विश्वास करता हूँ।"

ऊपर फ़ोन की धीमी आवाज़ सुनाई दे रही थी। हमने पहले नहीं सुना था, क्योंकि इधर का बटन बन्द था।

"तौबा!" हेनरी बोला, "मुझे लगता है यह फिर उसी का फ़ोन है।"

"मरने दो!" और मेरे यह कहते ही घंटी बन्द हो गई।

"मेरा दिल छोटा नहीं है" हेनरी बोला। "दस साल में उसने कुल मिलाकर मुझसे सौ-एक पौंड उधार लिये होंगे।"

"चलो, अब चलकर कुछ पिया जाए।"

"हाँ, हाँ। मैं जूता पहन लूँ।" वह जूता पहनने के लिए झुका तो मुझे उसकी गंजी खोपड़ी नज़र आई। चिन्ताओं ने बेचारे का क्या हाल कर दिया था!...और मेरे

कारण उसकी चिन्ताएँ बढ़ी ही थीं। "तुम्हारे पास होने से मुझे कितना सहारा है बैंड्रिक्स!" वह बोला।

मैंने उसके कन्धे से थोड़ी धूल झाड़ दी। "तुम इस बात को छोड़ो...।" हमारे हिलने से पहले ही घंटी फिर बज उठी।

"इसे रहने दो!" मैंने कहा।

"अब सुन ही लूँ। क्या पता है," वह खुले फ़ीते लटकाए हुए उठकर डेस्क के पास चला गया। "हलो," उसने कहा, "मैं माइल्स बोल रहा हूँ।" और फिर जैसे आश्वस्त होकर उसने चोंगा मेरी तरफ़ बढ़ा दिया, "तुम्हारा फ़ोन है।"

"मैं बैंड्रिक्स बोल रहा हूँ," मैंने कहा।

"मिस्टर बैंड्रिक्स," एक पुरुष की आवाज़ सुनाई दी। "मेरा मन कह रहा था कि मुझे ज़रूर आपको फ़ोन करना चाहिए। मैंने उस समय आपसे सच नहीं कहा था।"

"आप कौन बोल रहे हैं?"

"स्माईद।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई।"

"मैंने आपसे अपने नर्सिंग होम में जाने की बात कही थी। वह झूठ है।"

"तो उससे मुझे क्या अन्तर पड़ता है?"

"थोड़ा अन्तर पड़ता ही है," उसकी आवाज़ उधर से कुछ चुभती हुई-सी लगी। "आप सुन रहे हैं न, मेरे चेहरे का किसी ने भी इलाज़ नहीं किया। वह एक रात अपने आप ही ठीक हो गया था।"

"कैसे? और कैसे भी हो मुझे उसमें..."

वह बहुत ही रहस्यपूर्ण स्वर में बोला, "यह कैसे हुआ यह आप और मैं दोनों ही जानते हैं। हम इससे बचकर नहीं रह सकते। मैंने सोचा आपको ग़लतफहमी में रखना ठीक नहीं। यह एक...।" मगर इससे पहले कि वह 'संयोग' के पर्यायवाची दूसरे अखबारी शब्द का प्रयोग करता, मैंने चोंगा रख दिया। मुझे उसकी बँधी हुई मुट्ठी और उस पर अपना गुस्सा याद हो आया कि कपड़ों की तरह एक मृत शरीर का भी बँटवारा किया जा सकता है। मैं सोचने लगा कि इस आदमी को अपने पर इतना गुमान है, इसलिए हो सकता है कि कुछ दिनों में यह कॉमन में खड़ा होकर लोगों को अपना चेहरा दिखाता हुआ इस पर भाषण देने लगे कि किस तरह एक चमत्कार से इसका दाग़ ठीक हो गया है। अखबारों में तब यह समाचार निकलेगा। 'तर्कवादी वक्ता के साथ चमत्कार!' मैं चाहता था कि जैसे भी हो 'संयोग' में मेरा विश्वास बना रहे, मगर उसकी जगह मेरे मन में अब ईर्ष्या जाग रही थी कि मैं ऐसे ही रह गया हूँ जबकि वह कमबख़्त रोज़ रात को सैरा के बालों पर अपना चेहरा रखकर सोता है।

"कौन था?" हेनरी ने पूछा। मैं क्षण-भर दुविधा में रहा कि उसे बताऊँ या नहीं। मगर फिर सोचा कि न बताना ही ठीक है। इसका कोई भरोसा नहीं कि वह भी फादर क्रॉम्प्टन की तरह ही सोचने लगेगा।

"स्माईद था," मैंने कहा।

"स्माईद?"

"वही जिसके पास सैरा जाया करती थी।"

"क्या कहता था?"

"उसका चेहरा ठीक हो गया है। मैंने कहा कि मुझे भी उस डॉक्टर का नाम बता दो क्योंकि मेरा भी एक ऐसा मित्र है..."

"तो क्या डॉक्टर ने उसे नई खाल लगा दी है?"

"कह नहीं सकता। मैंने कहीं पढ़ा था कि ये दाग़ हिस्टीरिया से होते हैं। शायद मनोविश्लेषण और रेडियम के योग से... ।" और मुझे स्वयं लगने लगा कि यह सम्भव तो है। शायद सचमुच ऐसा ही हो। तो यह एक और 'संयोग' था—एक ही नम्बर की गाड़ियों की तरह। मगर मेरा मन उकता रहा था कि ऐसे और कितने 'संयोग' उसे मानने पड़ेंगे? पहले सैरा की माँ का समय पर टपक पड़ना, फिर पारकिस के लड़के का सपना देखना...यह चक्कर क्या रोज़-रोज़ चलते रहने थे? मैं उस थके हुए तैराक की तरह हो रहा था जिसे पता था कि बहाव उससे कहीं अधिक शक्तिशाली है, फिर भी डूबते हुए आख़िरी दम तक मैं हेनरी को अपना कन्धा पकड़ाए रहना चाहता था। एक मित्र होने के नाते क्या यह मेरा कर्तव्य नहीं था? इन सब बातों को दबाया न जाता, और ये अखबारों में छप-छपा जातीं तो मामला जाने कहाँ तक पहुँच जाता! एक बार इसी तरह जब मैनचेस्टर के गुलाबों की बात चल पड़ी थी, तो जाने कितने दिन वह फॉड चलता रहा था। लोगों में आजकल इतना हिस्टीरिया है कि जाने क्या-क्या किया जाने लगे—सैरा के अवशेषों की खोज हो, प्रार्थनाएँ हों, जुलूस निकलें। हेनरी को इतने लोग जानते थे, उनमें इसकी कितनी चर्चा होती? पत्रकार लोग आकर उन दोनों के जीवन की एक-एक बात पूछते, और वे समुद्र-तट की दीक्षावाली कहानी भी खोज निकालते। धार्मिक प्रेस और सिर पर चढ़ता। बड़ी-बड़ी सुर्खियाँ देने के लिए लोग और भी चमत्कार खोज निकालते। इसलिए बात को पहले ही दबा देना आवश्यक था।

मैंने सोचा कि ऊपर दराज़ में रखी हुई डायरी को भी नष्ट कर देना चाहिए, क्योंकि यह सम्भव था कि लोग उसमें से भी इसी तरह के अर्थ निकाल लें। सैरा को केवल अपने लिए सुरक्षित रखने का यही उपाय था कि उसके प्रत्येक निशान को मिटा दिया जाए। उसकी बचपन की पुस्तकों से भी खतरा हो सकता था। उसके फोटोग्राफ, जैसा कि एक हेनरी ने ले रखा था, भी प्रेस के हाथ नहीं लगने चाहिए

थे। और नौकरानी? क्या उस पर भरोसा किया जा सकता था? मैंने और हेनरी ने मिलकर एक झूठा घर बसाने की सोची थी, और अब वह भी ढहता जा रहा था।

"तो कुछ पीने नहीं चल रहे?" हेनरी बोला।

"मैं अभी एक मिनट में आता हूँ।"

मैंने ऊपर कमरे में जाकर डायरी निकाली और उसकी जिल्द उखाड़ दी। जिल्द मज़बूत थी, इसलिए उसके पीछे से रुई के रेशे बाहर निकल आए। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने किसी पक्षी के पंख झिंड़ोड़कर उतार लिये हों। अब डायरी, पंखहीन और आहत एक पैड की तरह सामने बिस्तर पर पड़ी थी। ऊपर के आख़िरी पन्ने पर पढ़ने लगा, "...तुम वहाँ पास ही खड़े हमें अपने को पूरी तरह लुटा देने की शिक्षा दे रहे थे जिससे हमारे पास केवल तुम्हारा प्रेम ही शेष रह जाए। सचमुच, मेरे प्रति तुम कितने दयालु हो! मैंने तुमसे पीड़ा माँगी तो तुमने मुझे शान्ति दी। शान्ति उसे भी दो; उसे इसकी और भी आवश्यकता है।"

'तुम सफल नहीं हुईं सैरा,' मैंने मन में कहा, कम-से-कम तुम्हारी एक प्रार्थना पूरी नहीं हुई। मुझे शान्ति नहीं मिली और तुम्हारे सिवा किसी से मैं प्रेम भी नहीं कर सका। मैंने उससे कहा कि सुनो, मेरे मन में मुख्य चीज़ घृणा है। मगर मैं दूसरों की उत्तेजना की बात कहता रहा हूँ, मेरे अपने शब्दों में भी शायद उत्तेजना ही झलकती है। मेरे अन्दर उतनी घृणा नहीं है जितना डर है। अगर ईश्वर है और तुम्हारे जैसा व्यक्ति भी—वासना, व्यभिचार और झूठ का जीवन बिताने के बाद—एक छलाँग लगाकर सन्तों की श्रेणी में आ सकता है तो हममें से कोई भी व्यक्ति सन्त बन सकता है। आवश्कता केवल आँख मूँदने और छलाँग लगाने की है। ईश्वर हममें से किसी से भी कह सकता है—कूद जाओ। मगर नहीं, मैं नहीं कूदूँगा।

और बिस्तर पर बैठकर ईश्वर से कहा कि तुमने सैरा को ले लिया है, मगर अभी मुझे नहीं पा सके। मुझे पता है तुम बहुत धूर्त हो। तुम्हीं हो जो हमें शिखर पर ले जाकर सारी दुनिया दे देने का लोभ दिखाते हो। तुम्हीं शैतान हो जो हमसे कूद जाने को कहते हो। मगर मुझे न तुम्हारी शान्ति चाहिए और न ही तुम्हारा प्रेम चाहिए। मैं एक छोटी और साधारण-सी चीज़ चाहता था और वह यह कि सैरा जीवन-भर के लिए मेरे पास बनी रहे। मगर उसे तुमने मुझसे छीन लिया है। तुम बहुत चालबाज़ हो। जिस तरह फ़सल का रखवाला चूहों के बिल नष्ट करता है, उसी तरह तुम हमारा सुख हमसे छीन लेते हो। मुझे तुमसे घृणा है, उतनी ही घृणा है, जितनी सचमुच तुम्हारा अस्तित्व होता तो तुमसे होती।

मैंने फिर उस पैड को देखा। वह चीज़ बालों की लट से कहीं कम उसकी अपनी थी। बालों की लट को तो आदमी होंठों से छू सकता है, उँगलियों से सहला सकता है, मगर मन की बातों को लेकर वह क्या करे? मैं उसके शरीर को लेकर ही जीता

था, और उसके शरीर को ही पाना चाहता था। मगर मेरे पास इस डायरी के सिवा अब और था ही क्या? इसलिए मैंने उसे उठाकर अलमारी में रख दिया। मैं उसे नष्ट कर देता तो क्या वह ईश्वर की ही मेरे ऊपर एक और विजय न होती? क्योंकि तब तो मेरे पास सैरा की कोई भी निशानी न रह जाती। मैंने सैरा से कहा कि अच्छा तुम्हारी बात ही ठीक सही। मैं मान लेता हूँ कि ईश्वर है और तुम भी जीवित हो, परन्तु तुम्हारी कोई भी प्रार्थना मेरी घृणा को प्रेम में नहीं बदल सकती। ईश्वर ने मुझे वंचित किया है तो मैं भी उस राजा की तरह जिसके विषय में तुमने डायरी में लिखा था, उसे अपने अन्दर की उस चीज़ से वंचित करूँगा जिससे उसे प्रेम है। स्माईद की तरह या पारकिस के लड़के की तरह मेरी घृणा का कोई उपचार नहीं हो सकता, क्योंकि वह मेरी खाल या पेट के अन्दर नहीं है, मेरे मन में है। एक दर्द या दाग़ की तरह उसे दूर नहीं किया जा सकता। मैं तुमसे प्रेम करता था तो भी क्या तुमसे घृणा नहीं करता था? और क्या अपने से भी घृणा नहीं करता?

"मैं आ रहा हूँ," मैंने हेनरी को आवाज़ दी और हम साथ-साथ कॉमन में चलते हुए पोंटफ्रेक्ट आर्म्ज़ में पहुँच गए। बत्तियाँ बुझी हुई थीं और दोराहों के पास कई-एक जोड़े आपस में प्रेम कर रहे थे। घास के उस तरफ़ वह टूटी हुई सीढ़ियोंवाला घर दिखाई दे रहा था जहाँ ईश्वर ने यह मनहूस और अपंग ज़िन्दगी मुझे वापस दी थी।

"मैं दिन-भर शाम की इस सैर की राह देखता हूँ," हेनरी बोला

"मैं भी।"

और मैं सोच रहा था कि सुबह किसी डॉक्टर को फ़ोन करके पूछूँ क्या इस रोग का कोई इलाज है? फिर सोचा कि नहीं। जब तक अस्वस्थ रहे, तब तक व्यक्ति अपने मन से, सौ तरह के इलाज की बात सोच सकता है। मैं अपना हाथ हेनरी की बाँह पर रखे चलता रहा। मुझे अपने अतिरिक्त उसके मन को भी स्थिर रखना था, हालाँकि वह मेरी तरह परेशान नहीं था।

"अब यह शाम की सैर ही ज़िन्दगी में एक चीज़ रह गई है," उसने चलते हुए कहा।

मैंने आरम्भ में लिखा था कि यह घृणा की कहानी है। उस समय हेनरी के साथ बियर का गिलास पीने जाते हुए मन-ही-मन एक प्रार्थना करने लगा जो सर्दियों की उस शाम के बहुत अनुकूल थी—हे ईश्वर, तुमने मुझे बहुत सता लिया है और मेरा बहुत कुछ मुझसे छीन लिया है। मैं अब इतना पक चुका हूँ और इतना थक गया हूँ कि मैं प्रेम करना नहीं सीख सकता। मुझे तुम मेरे हाल पर ही छोड़ दो!

जो कहें पापा जो करें पापा

1. पापा के साथ छुट्टी का दिन

बहुत दिनों में कभी-कभार पापा मेहरबान होकर मुझे अपने साथ दफ़्तर ले जाते थे। यह शनिवार को सुबह ही होता, क्योंकि उस दिन स्कूल से छुट्टी रहती थी। 'दफ़्तर' जाने के दिन मैं अपने को बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण समझता—वहाँ पहुँचकर नहीं, सिर्फ़ घर से चलते समय, क्योंकि अम्माँ और तीनों छोटे भाई बहुत इज्ज़त के साथ मुझे बाहर छोड़ने आते थे।

बारिश का दिन होता, तो पापा रोज़मर्रा के टेल कोट के ऊपर डरबी हैट और रबर की काली बरसाती पहनकर अपने को उस ख़राब मौसम के लिए तैयार कर लेते थे। (धूप के दिनों को छोड़कर वह शहर में सेक कोट पहनने की बेतकल्लुफ़ी नहीं करते थे; हाँ, गरमियों में न्यूयार्क से देहात चले जाएँ, तो बात दूसरी थी।) धूप होती, तो वह रेशमी हैट पहनते और अपने मित्रों की तरह बेंत लेकर चलते। सड़क पर वे लोग एक-दूसरे के पास से गुज़रते, तो अपने-अपने बेंत से हैट को छूकर एक-दूसरे को सलाम करते थे।

यह ख़ूबसूरत रईसी अदा मुझे बहुत अच्छी लगती थी और मन होता था कि मैं भी उनकी नक़ल करूँ, मगर मेरी उम्र बेंत लेकर चलने की नहीं थी। मैं निकर के ऊपर नमक-मिर्चा सेक-सूट पहने होता था और चौड़ा और बड़ा सफ़ेद एटन कॉलर लगाए रहता था, जो इक्यासी-ब्यासी में अकसर लड़के लगाया करते थे। सुबह तो वह कॉलर बहुत सख़्त और साफ़ होता, मगर शाम के खाने के वक़्त तक उसकी बुरी हालत हो जाती। मैं तस्मे या बटन वाला काला जूता और काले ही मोज़े पहनता। गरमियों में देहात में हम भूरे मोज़े और भूरे जूते पहनते थे।

एक शनिवार को पापा धूप के बावजूद अपना डरबी हैट लगाकर तैयार हो गए। इसका कारण मुझे ज़रा बाद में समझ आया। मैडिसन एवेन्यू से भूरे पत्थर के खुशनुमा घरों की पंक्तियों में से होते हुए वह छठे एवेन्यू की तरफ़ चल दिए। मैं भी उछलता हुआ उनके साथ चला। एलेवेटिड की सीढ़ियाँ चढ़कर वह प्लेटफ़ॉर्म पर एक तरफ़ खड़े हो गए और अपने एक मित्र से गप करते हुए गाड़ी का इन्तज़ार करने लगे।

थोड़ी देर में एक छोटा कूबड़दार इंजन मोड़ मुड़ता नज़र आया। पीछे पत्थर के कोयले से लदी हुई खुली कोयला-गाड़ी थी और तीन-चार झूलते हुए मुसाफ़िरों के डिब्बे थे। धुआँखाने से सफ़ेद धुआँ निकल रहा था। इंजन का ड्राइवर खिड़की से झाँक रहा था। 'टू-ऊट, टू-टू-टूट' की आवाज़ के साथ धुआँ छोड़ता हुआ इंजन प्लेटफ़ार्म पर आ गया। गाड़ी पर सवार होकर हम लोग इत्मीनान से डिब्बों में से गुज़रने लगे। आख़िर पापा ने अपनी पसन्द की एक सीट ढूँढ ली।

हम शहर के निचले हिस्से की तरफ़ जा रहे थे। जब इंजन का धुआँ बहुत गाढ़ा न होता, तो मेरा ध्यान बाहर दिखाई देते हुए छोटे-छोटे लाल ईंटों के घरों की खिड़कियों की तरफ़ चला जाता। उनसे ज़्यादा दिलचस्पी मेरे मन में आवारा लोगों की रिहायशगाहों के अन्दरूनी हिस्सों को देखकर जागती। उन घरों के ऊपरी मंज़िल के कमरों में बहुत-बहुत लोग भरे हुए नज़र आते थे। फिर भी मुझे उन्हें देखकर ईर्ष्या होती थी। कितने आरामपसन्द थे वे लोग! करने को कोई काम नहीं। मज़े से पुराने कपड़े पहने हुए कुरसी की पीठ तिरछी करके दीवार से लगाए हैं और सिगरेट पी रहे हैं। अगर मैं भी उनकी तरह आवारा होता, तो मुझे भी हर शुक्रवार को अपनी उँगलियों के पोरों को रगड़-रगड़कर उनका सारा मैल निकालने की ज़हमत न उठानी पड़ती, न ही किड के तंग सफ़ेद दस्ताने पहनने पड़ते और न ही जाकर नाच-स्कूल के चिकने फ़र्श पर किसी छोटी-सी अनघड़ लड़की को इधर-से-उधर घसीटना पड़ता। ख़र्च भी बहुत कम होता, क्योंकि उन रिहायशगाहों के बाहर बड़े-बड़े अक्षरों में बोर्ड लगे थे–'एक रात के दस सैंट!'

पापा के साथ शहर में उस तरफ़ जाने पर ही ऐसे-ऐसे नज़ारे देखने को मिलते थे, क्योंकि अम्माँ तो एलिवेटिड से दूर ही रहती थीं। वह अभी नई-नई चीज़ थी और अम्माँ घोड़ागाड़ी को ही पसन्द करती थीं। फिर कालिख़ और अंगारों की वजह से औरतें सिक्स्थ एवेन्यू को वैसे भी पसन्द नहीं करती थीं। कभी-कभी वह पश्चिम में वहाँ तक और पूरब में लैसिंग्टन तक ख़रीदारी करने चली ज़रूर जाती थीं, मगर आम तौर पर वह इन दोनों सीमाओं के बीच के छोटे-से इलाक़े में ही रहती थीं।

सफ़र पूरा होने पर जब मैं पापा के साथ गाड़ी से उतरा, तो मैंने अपने को उलझी हुई गलियों में पाया, जहाँ आदमी-ही-आदमी और लड़के-ही-लड़के नज़र आते थे, औरत कोई नहीं थी। भीड़ में कोई इक्का-दुक्का बॉनेट कशमकश करती नज़र आ जाती, तो हम सब घूरकर उसकी तरफ़ देखने लगते। वहाँ ज़्यादातर काफ़ी पुरानी कारबारी इमारतें थीं और उनमें से कई तो बहुत गन्दी थीं। उनके लकड़ी के ज़ीने तिरछे और खस्ताहाल थे और नीचे के हिस्सों में बहुत अँधेरा और बहुत जमघट था। एक्सचेंज प्लेस और ब्रॉड स्ट्रीट में ऐसे बहुत से चूहेदान थे। कुछ वॉल स्ट्रीट पर भी थे। बॉल स्ट्रीट और ब्राडवे का दक्षिणी कोना सबसे ग़लीज था। वहाँ से

गुज़रते हुए पापा ने बेंत से इशारा करके कहा, ''वह जगह है जहाँ ग्रेट-आंट लेवीनिया पैदा हुई थी।''

ऐसे ऑफ़िस से थोड़ा आगे हम एक साफ़ मगर तंग पाँच-मंज़िला इमारत के पास पहुँच गए और आगे की ढलान से होकर अन्दर चले गए। यह जगह थी वाल स्ट्रीट नम्बर 38। ढलान से ऊपर जाकर पहली मंज़िल पर ही पापा का दफ़्तर था और दूसरी मंज़िल के पिछले हिस्से में उनका गोदाम था।

दफ़्तर का काम का ढंग मेरे लिए रहस्यपूर्ण था। ख़ज़ानची, जो कभी मुझे अपने पिंजरे के अन्दर नहीं जाने देता था, वहाँ एक स्टूल पर बैठा था। पास में उसका नक़दी का दराज़ था, एक पेटी किताबों की थी, एक हुंडियों की और डाक के टिकटों से भरा टीन का बक्सा था, जिसमें से वह ज़रूरत के मुताबिक टिकटें निकाल-निकालकर देता जाता था। दो-एक मुनीम बड़ी-बड़ी चमड़े की जिल्द वाली बहियों में सुन्दर-सुन्दर अंक बना रहे थे। उन्होंने अपनी कमीज़ों के सफ़ेद कलफ़दार कफ़ उतारकर एक कोने में रख दिए थे और अपनी कुरतियाँ उतारकर अलपाका के काले कोट पहन रखे थे। जिन्हें कल को मुनीम या दलाल बनना था, वे छोटे-छोटे लड़के अब काम करते हुए अन्दर-बाहर आ-जा रहे थे। पच्छिमी यूनियन के हरकारे तारें लिये हुए झपटते आ रहे थे। आगे के कमरे में एक लम्बी मेज़ पर रेलवे की आमदनी और ट्रैफ़िक-सम्बन्धी छपी हुई रिपोर्टें लदी हुई थीं। एक्सचेंज़ में उन दिनों कुल बीस-तीस कारख़ानों के माल के सौदे होते थे और पापा का दफ़्तर उन्हें नज़रअन्दाज़ ही करता था। मेज़ के ऊपर रखे थे कमर्शियल एंड फ़ाइनेंशियल, क्रानिकल, 'जनरल ऑफ़ कामर्स', एक स्याह तख़्ता, एक टिकर और आस-पास बैठे थे चार या पाँच दढ़ियल आदमी। उनमें से दो हेनरी वार्ड बीचार* के बारे में गरमागरम बहस कर रहे थे। बाक़ी 'नाइट्स ऑफ़ लेबर'** के इस अजीब प्रस्ताव पर सिर हिला रहे थे कि दिन में आठ घंटे काम होना चाहिए।

पापा के ख़ास कमरे में कोयले की आग जल रही थी। वहाँ आकर उन्होंने अपना हैट खूँटी पर टाँग दिया और अपना डेस्क खोलकर उसके सामने बैठ गए। वह अपनी डाक खोलने लगे, तो मैं जाकर गर्व के साथ पत्थर के दो स्याहीदान उठा लाया। एक में इंग्लैंड की बनी हरी झलक की काली स्याही थी और दूसरे में वह स्याही जो फ़ाइल में नकल रखने के लिए दाब निकालने के काम आती थी। मैं पापा की दवातें साफ़ करके उनमें स्याही भर देता था और उनके होल्डरों में नई निबें लगा देता था। घर में पापा पंख के कलम रखते थे, मगर दफ़्तर में वह फ़ौलादी क़लमों से ही काम करते थे। स्टेनोग्राफ़र न होने से दफ़्तर का बहुत-सा लिखने का काम वह अपने हाथों से ही करते थे।

---

* एक पादरी

** एक आरम्भिक श्रमिक संस्था।

दवातें भरने के अलावा दफ़्तर में और भी कई काम होते थे। सन्देश लेकर सड़कों पर भागते फिरने में बड़ा मज़ा आता था। (आजकल यह काम टेलिफ़ोन से हो जाता है।) या फिर मैं क्लर्कों के तिरछे डेस्कों पर रंगीन पेंसिलें लुढ़काता और टाइपराइटर की घंटी बजाने की कोशिश करता था। टाइपराइटर बिलकुल नई चीज़ थी जिसे ख़ास-ख़ास मौक़ों पर ही इस्तेमाल किया जाता था। मुनीम या दूसरे लड़के अपना काम छोड़कर कभी-कभी उस पर खटखट करने लगते थे।

दोपहर हो गई। ग्राहक चले गए। टिकर रुक गया। साढ़े बारह बजे पापा ने मुझे बुलाया और हम लंच के लिए निकल पड़े।

''मिस्टर डे, आप लौटकर आएँगे?'' ख़ज़ानची ने आदर के साथ परन्तु उत्सुक स्वर में पूछा। जब पापा 'हाँ, कह देते, तो सब क्लर्कों के चेहरे निराश हो जाते। वे कुछ न कहकर पापा के बाहर निकलने तक अपने डेस्कों पर झुके रहते, मगर मैं पल-भर के लिए पीछे रह जाता तो देखता कि किस तरह वे लेजर इधर-उधर पटकते हैं। जब तक पापा घर के लिए रवाना न हो जाएँ, तब तक उन्हें न बाहर निकलने की इजाज़त थी, न तम्बाकू पीने की।

उस समय पापा ने कहा 'नहीं' और उनके दहलीज़ पार करते-न-करते उन लोगों ने अपनी दियासलाइयाँ निकाल लीं और पापा के हॉल में पहुँचने तक उन्हें अपनी पतलूनों के निचले हिस्से से घिसने लगे।

मैं फुदकता हुआ पापा के साथ बीवर स्ट्रीट में एक पुरानी पुख़्ता इमारत के पास पहुँच गया। बाहर से वह एक अच्छे आरामदेह देहाती होटल की तरह लगती थी। ऊपरी मंज़िलों पर हरी चिकें और छोटी-छोटी बाहरी बालकनियाँ थीं और खिड़कियों पर जाली के कमानीदार परदे लगे थे। नीचे कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर अन्दर जाने का दरवाज़ा था जिसके आस-पास सफ़ेद खम्भे खड़े थे।

इस जगह का नाम था डेलमोनिकोज़। वहाँ का खाना इतना अच्छा था कि ऊपरी इलाकों में मैं भी उसकी चर्चा सुन चुका था। पापा-जैसे लोगों के लिए वह बहुत मौज़ूँ जगह थी।

डेलमोनिकोज़ एक तिकोने प्लॉट में बना हुआ था और उसके दरवाज़े नुकीले सिरे पर थे। जब हम वहाँ पहुँचे, तो बड़े दरवाज़े के पास काफ़ी भीड़ थी। रेशमी टोपियाँ पहनने वाले लोगों को इत्मीनान से खाना खा चुकने के बाद अचानक याद हो आया था कि उन्हें बाहर वॉल स्ट्रीट में पहुँचना है और वे रास्ता बनाने के लिए हल्के-हल्के मगर जल्दबाज़ी के साथ एक-दूसरे को हटाकर आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे।

जब मैं पापा के साथ भरे हुए लम्बे कमरे में दाखिल हुआ तो हैड वेटर बहुत उत्साह के साथ हमें दो आदमियों के बैठने की एक मेज़ के पास ले गया। हवा में सिगारों का धुआँ और बढ़िया खुशज़ायका, चिकनाईदार ख़ासे की ख़ुशबू फैली थी।

कमरे के एक कोने में खड़े एक रईस-सूरत विदेशी ने पापा को देखा, तो आदर के साथ हल्का अभिवादन किया।

वह हमारे पास पहुँचा तो पापा ने उससे कहा, "लोरेंज़ो, यह मेरा लड़का है।"

मैंने सिर उठाकर उसे देखा और थोड़ा सकपका गया। मिस्टर लोरेंज़ो क्रिस्ट डेलमोनिको ने अभिवादन करके कहा कि उसे मुझसे मिलकर बहुत खुशी हुई है।

उसके चले जाने के बाद बुढ्डा फ्राँक्वा, पापा का हमेशा का वेटर, जल्दी से हमारी मेज़ के पास आ गया। पापा फ्रांसीसी में उससे बात करने लगे कि कौन-सी डिश मँगवानी चाहिए। वे इतनी जल्दी-जल्दी बोल रहे थे कि मेरी समझ में कुछ नहीं आया, सिवाय इसके कि फ्राँक्वा पापा को यह विश्वास दिला रहा था कि चटनी बहुत अच्छी है। 'एकदम बढ़िया।' मुझे लगा कि पिछली बार पापा ने उसकी लच्छेदार चटनी पर भरोसा किया था, तो उन्हें बहुत निराशा हुई थी।

मैंने नोट किया कि ऐसे मौक़े पर बात को सँभालने का फ्राँक्वा का अपना ही तरीका था। वह अपने को पापा से भी ज़्यादा बेचैन और परेशान ज़ाहिर करता और झटपट ख़राब डिश उठाकर उसकी जगह दूसरी डिश ले आता। उस समय डेलमोनिका परिवार का कोई आदमी—लोरेंज़ो या चार्ल्स—उसके साथ होता जो मेज़ पर झुककर पापा के सामने रखी जा रही नई डिश को ग़ौर से देखता हुआ उस दुर्घटना के बारे में मुँह में बोलकर खेद प्रकट करता।

आज चटनी और हर चीज़ न सिर्फ़ अच्छी थी, बल्कि बहुत अच्छी थी। पापा और फ्रँक्वा ने मुस्कराकर जैसे एक-दूसरे को बधाई दी। मुझे हैरानी होती थी कि पापा घर की तरह डेलमोनिकोज़ में आपे से बाहर क्यों नहीं होते? मगर अब मैं इसका कारण समझ सकता हूँ। घर में कोई अपने-जैसा कारीगर न होने से वह बहुत अकेलापन महसूस करते थे।

पापा को फ्रांसीसी खाने और फ्रांसीसी वेटरों द्वारा खाना खिलाए जाने का बहुत शौक था। घर में आइरिश नौकरानी रखी जाती थी जो हर कुछ महीनों में बदल जाती थी और खाना चाहे अपने ढंग का बहुत अच्छा होता था, मगर आख़िर वह फ्रांसीसी खाना तो नहीं था। जब खाना अच्छा बना होता तो वह स्वाद और चाव के साथ खाते भी थे, मगर यह उसी तरह होता जैसे शहर का आदमी देहात का अच्छा-सादा खाना खा रहा हो।

मुझे फ्रांसीसी खाना उतना अच्छा नहीं लगता था। स्वाद तो लगता था मगर उसमें नखरा बहुत होता था और मिलता भी थोड़ा-सा ही था। पापा का काम बहुत हल्के लंच से चल जाता था। अपना देमि-तासे खाते हुए वह मेरे चेहरे से देखते कि मैं भूखा रह गया हूँ, तो मह मुस्कराकर फ्राँक्वा को बुलाते। वह भी मुस्कराता हुआ जाकर मेरे लिए एक बड़ा-सा चॉकलेट-एक्लेयर ले आता। अन्दर से उसका ज़र्द हिस्सा इतना मुलायम, घना और भरपूर होता और बाहर से चॉकलेट इस तरह पिघल रहा

होता कि मारे स्वाद के न तो मुझे वक़्त का ध्यान रहता और न ही इस बात का कि मैं किस जगह पर हूँ।

उस दिन लंच के बाद वापस चलने की बजाय पापा मुझे बैटरी की तरफ़ ले गए और वहाँ हम दक्षिण की फेरी में सवार हो गए। मुझे कुछ हैरानी हुई। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। अब मेरी समझ में आया कि वह डरबी पहनकर क्यों आए थे। हम देहात में जा रहे थे। खाड़ी में पाल वाली नावें, चार-चार मस्तूलों वाले जहाज़, टगबोट और डूँगे तैर रहे थे। पानी से बहुत अच्छी गन्ध उठ रही थी। खाड़ी पार करके हम स्टेशन आइलैंड पर उतरे, तो पापा ने बताया कि हम लोग 'बफ़ेलो बिल' देखने जा रहे हैं।

हमें लकड़ी के एक कमज़ोर स्टैंड में सीटें मिलीं। बेंचों से फाँसें चुभती थीं। हमारे सामने पश्चिम का खुला जंगली फैलाव था–धूल, घोड़े और सभी कुछ। निशानची शीशे की गेंदों पर बन्दूकों से ख़ूब निशाना लगाते थे। गेंदें हवा में उछाल दी जातीं और घुड़सवार तेज़ी से गुज़रते हुए बेपरवाही से उन्हें निशाना बनाते। जानवरों के झुंड, 'लेरिआट्स', ब्रास बैंड, पुराना 'डेडवुड स्टेज कोच' और उस पर इंडियन लोगों का रोमांचक आक्रमण और आख़िरी क्षण उसका बचाव! बचाव से थोड़ा पहले ही पापा मुझे खींचकर बाहर ले चले, जिससे फेरी में हमें सीटें मिल जाएँ। फिर भी दरवाज़े से बाहर घसीटते हुए भी मैंने वह दृश्य देख ही लिया।

घर लौटते हुए रास्ते में मैंने पापा से कहा कि मैं 'काउबॉय' बनना चाहता हूँ। उन्होंने मुस्कराकर मेरी बात उड़ा दी और कहा कि इससे अच्छा है कि मैं आवारा हो जाऊँ।

मैं सोचने लगा कि क्या पापा को यह बता देना ठीक होगा कि अभी सुबह ही यह बात भी मेरे दिमाग़ में आई थी। फिर सोचा कि आज पापा ने डेलमोनिकोज़ में खाना खिलाया है, आज ऐसी बात कहने का दिन नहीं है। मगर इतना मैंने पूछ लिया कि 'काउबॉय' बनने में क्या बुराई है?

पापा ने थोड़े में समझाया कि उनका रहन-सहन, खाना-पीना और रिहायश, सब-कुछ बाहरी इलाक़ों के ढंग का और गन्दा होता है। उन्होंने कहा कि वे लोग जंगलों में रहते-रहते खुद भी जंगली हो जाते हैं। ''अपनी टोपी सीधी करो'', फिर वह बोले, "मैं तुम्हें एक सभ्य आदमी बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।''

मैंने टोपी सीधी की और अपने इस भविष्य की बात सोचता हुआ आगे चलने लगा। जितना ही मैं सोचता, उतनी ही मुझे सभ्य आदमी बनने से चिढ़ होती। खाना मुझे इतना कम मिला था और थकान की वजह से मुझे और भी भूख लग रही थी। क्या ज़िन्दगी थी कि नाख़ून साफ़ रखो, किताबें ठीक से रखो, डांसिंग स्कूल में जाओ और इतवार को सरमन सुनो और इस तरह सभ्य आदमी बनकर मिलेगा क्या? खाने को थोड़े-से चॉकलेट एक्लेयर! यह भी कोई सौदा था!

2. पापा की घुड़सवारी

पापा का वज़न दिन-ब-दिन बढ़ रहा था और उन्हें इससे चिढ़ थी। वह मज़बूत हड्डी के आदमी थे, मगर दुबले-सीधे और चलने में फुरतीले। वज़न बढ़ने से उन्हें बहुत परेशानी हो रही थी। वह इस चीज़ के खिलाफ़ भी थे। किसी पर स्वाभाविक रूप से चरबी चढ़ रही हो, तो पापा को लगता था जैसे यह एक अच्छा-ख़ासा मज़ाक हो। अपने मुटापे के बारे में बेपरवाही बरतना उनकी नज़र में फूहड़पन था।

क्लब में वह इस बारे में बात किया करते थे। ग़रीब आदमी के लिए सैलून और लन्दन वालों के लिए कभी कॉफ़ी-हाउस का जो स्थान था, वही स्थान पापा के लिए उनके क्लब का था। उनके सामाजिक जीवन का वह प्रमुख केन्द्र था। वह दफ़्तर से घर आते हुए वहाँ आधे घंटे के लिए रुक जाते या शाम को नौ बजे के बाद अम्माँ के सो जाने पर वह वहाँ चले जाते। वे वहाँ ताश तो नहीं, हाँ बिलियर्ड्स की दो-एक बाज़ियाँ खेलते, या कॉमोडोर ब्राउन के साथ सोडा और व्हिस्की पीते, या फिर अच्छे रुतबे के विदेशियों से मिलकर उनका जायज़ा लेते, हालाँकि ज़्यादातर वे लोग उन्हें पसन्द नहीं आते थे, या फिर वह मुटापे के बारे में लोगों की राय पूछते।

कई लोगों का कहना था कि इसके लिए लम्बी सैर करनी चाहिए, मगर सैर तो पापा पहले ही काफ़ी करते थे। इसलिए क्लब के लोगों ने राय दी कि उन्हें घुड़सवारी करनी चाहिए।

घुड़सवारी का सही तरीका पापा की नज़र में यही था कि वे एक और क्लब के मेम्बर बन जाएँ। उन्होंने पश्चिम में फिफ्टी एट्थ स्ट्रीट में घुड़सवारी के क्लब में जाना शुरू कर दिया। वहाँ घोड़ों के तबेले और दूसरी सब सुविधाएँ थीं। वहाँ छालदार टहनियों के दायरे में प्रैक्टिस करने के बाद वे बाहर पार्क में निकलने लगे।

पार्क भी एक तरह का बड़ा दायरा ही था, जो ज़रा भी घना या ख़तरनाक नहीं था। पापा के लिए वह ठीक था। उन्हें खुला जंगल पसन्द नहीं था। वह लैंडस्केप में भी एक व्यवस्था चाहते थे जिससे वे अपनी सुविधा से उसका उपभोग कर सकें। वह अब पार्क के विषय में भी उसी तरह की नुक़्ताचीनी करने लगे जैसे पहले घर के बारे में किया करते थे। कच्चा रास्ता ठीक से बुहारा न गया हो, या उस पर

काग़ज़-आग़ज़ उड़ रहे हों, तो उन्हें लगता कि वह व्यक्तिगत रूप से उनका अपमान किया गया है।

उनका पहला घोड़ा रॉब राय काफ़ी ताक़तवर था। वह पापा को पसन्द नहीं करता था और पापा उसे और भी कम पसन्द करते थे। मगर यह उन्होंने इतनी मामूली बात समझी थी कि इसकी तरफ़ उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया था। पापा ने यह घोड़ा इसलिए ख़रीदा था कि वह ख़ूब चुस्त और मज़बूत था, मेहनत से थकता नहीं था और ख़ूबसूरत भी था। उन्होंने उसके तीन सौ डॉलर दिए थे और अब उम्मीद करते थे कि वह हमेशा उनकी मरज़ी से चले।

मगर रॉब राय अपने सौदे को उस नज़र से नहीं देखता था। वह बहुत आज़ाद ख़यालों का और मन-मरज़ी से चलने वाला जीव था और हमेशा अपना ही दृष्टिकोण सामने रखता था। उसे पापा से लगाव भी होता (जोकि नहीं था), तो इसी वजह से कठिनाइयाँ पैदा हो सकती थीं।

उन दोनों के बीच का एक दृश्य मुझे याद है जो पार्क के दरवाज़े के पास हुआ था। पतझड़ की गरम सुबह थी। पापा और रॉब राय क्लब से डुबकी लगाते हुए पार्क में आ गए थे। दोनों काफ़ी मज़बूत और तन्दुरुस्त थे और दोनों को अपने-अपने ख़यालों का मान था। जब कच्चे रास्ते पर जा रहे थे, तो बहुत अच्छा लग रहा था। तब तक दोनों के इरादे एक-से थे। मगर तभी मतभेद पैदा हो गया। पापा आगे चलते जाना चाहते थे मगर रॉब राय का यह ख़याल नहीं था। रॉब राय को रुकने का ख़याल क्यों आया, यह मैं नहीं कह सकता। शायद उसे पापा का सवार होने का ढंग पसन्द नहीं आ रहा था। बहरहाल वह रुक गया। पापा ने उसे चाबुक मार-मारकर ज़ख्मी कर दिया तो रॉब राय ने एक गोल चककर काट लिया। पापा ने ज़ोर से लगाम खींची और फिर मारा। रॉब राय पीछे को चलने लगा।

इस जद्दोजहद में पापा उसे मारते जा रहे थे और रॉब राय ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन को पंजों से कुरेद रहा था, मिट्टी को कुचल रहा था और ज़र्रा-ज़र्रा कर रहा था। दोनों का पसीने के मारे बुरा हाल था। न जाने कितने गैलन पसीना दोनों का बह गया होगा,' मगर दोनों अपने-अपने इरादे पर कायम थे और उसे छोड़ने को तैयार नहीं थे।

मगर रॉब राय के पास पूरा दिन ख़ाली था और पापा को घुड़सवारी से फ़ारिग़ होकर दफ़्तर भी जाना था। आख़िर उन्होंने तय किया कि रॉब राय का दिमाग़ ठीक नहीं है और क्लब वापस चले आए। रॉब राय अपने तबेले में पहुँच गया और वहाँ एक सईस उसका बदन पोंछने लगा। पापा मेम्बरों के ड्रेसिंग रूम में चले गए और वहाँ एक नौकर उनका पसीना पोंछने लगा।

जिम बहुत दोस्त-तबीअत आदमी था। "ख़ूब मज़ेदार घुड़सवारी की, मिस्टर डे!" उसने पूछा।

"मज़ेदार ख़ाक!" पापा ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया और अपना बेंत उठाकर बाहर चले आए।

इस सुबह की धींगामुश्ती से हमारे घर के लोगों को डर लगने लगा। हम लोग सपने में भी नहीं सोचते थे कि कोई भी इन्सान या हैवान कभी पापा की मरज़ी के ख़िलाफ़ चल सकता है। रॉब राय की यह गुस्ताख़ी ईश्वर के ख़िलाफ़ शैतान की गुस्ताख़ी की तरह थी। इसमें एक धुँधला आकर्षण तो लगता था मगर मेरे मन में इससे एक डर भी समा जाता है।

हमें बताया जाता था कि शैतान और ईश्वर की उस लड़ाई में विजय ईश्वर की होती है। हालाँकि ख़िलाफ़ आस-पास कई सबूत नज़र आते थे मगर हम तो सरकारी घोषणा पर ही विश्वास कर सकते थे। पापा और रॉब राय की लम्बी लड़ाई में भी हमारी धारणा सदा यही होती थी कि जीत पापा की ही हुई। मगर मेरा ख़याल है कि रॉब राय का इस बारे में ख़याल कुछ दूसरा ही रहा होगा। आख़िर पापा ने रॉब राय को हराने के लिए जो तरीका अपनाया वह यह था कि उसे बेच दिया।

हम लड़कों को ऐसे लगा जैसे बेचारे को देश-निकाला दे दिया गया हो। इससे रॉब राय विजातीय हो गया। उसे तो चाहे यही लगा हो कि अब उसे कोई ऐसा सवार मिलेगा जिसे वह कुछ ज़्यादा पसन्द कर सकेगा। मगर हमारे लिए तो वह जैसे अपनी जवानी में ही दुनिया से उठ गया। बाद में कई साल तक हम उसका ज़िक्र एक ऐसे विचित्र मित्र और पागल-से जीव के रूप में करते रहे जिसने बिना कारण अकड़ दिखाकर पापा के आज्ञापालन से कोताही की थी।

रॉब राय अच्छी नस्ल का घोड़ा था। उसके बाद जो आया, वह था ब्राउनी नाम का भूरा दुबला-सा घोड़ा, जोकि साधारण मध्यम श्रेणी का था। रॉब राय दुःसाहसी था। ब्राउनी उदास आँखों वाला दार्शनिक था। कुछ दार्शनिकों के दिल भी दुःसाहसियों की तरह ही बड़े होते हैं, मगर साधारण तौर पर वे बहुत नरम क़िस्म के लोग होते हैं। ब्राउनी पापा को वह जिधर जाना चाहते, उधर ले जाता। वह न कभी पीछे को चलता, न जमीन पर पैर मारता, न हिनहिनाता। कभी-कभी उनमें थोड़ा-सा मतभेद पैदा होता,? क्योंकि ब्राउनी पापा से जल्दी थक जाता था और आराम करना चाहता था। मगर वह न तो कभी विद्रोह करता और न ही अपने अधिकारों के लिए लड़ता। वह अपना काम सुस्ती से या सत्याग्रह से निकालने की कोशिश करता। उदाहरण के लिए पापा इस इरादे से निकलते कि अब सरपट पहाड़ी पर जाकर नीचे घाटी की तरफ़ उतरेंगे। मगर सरपट दौड़ने का काम तो ब्राउनी का था। वह कुछ देर तो उस तरह दौड़ता, कई बार अपने इरादे से ज़्यादा देर भी दौड़ता, क्योंकि रफ़्तार धीमी होते ही पापा की चाबुक उसके पुट्ठों पर पड़ने लगती थी। पर जब वह दिल हार जाता, तो उसका उछलना बन्द हो जाता और और वह इस तरह भारी क़दमों से चलने लगता कि आख़िर पापा को ही अपना इरादा बदलना पड़ता।

वैसे आम तौर पर दोनों में बहुत बनती थी। पापा बहुत उत्साहित होकर कहा करते कि घुड़सवारी में बहुत मज़ा है। उन्हें बातें करने का बहुत शौक था, इसलिए अकसर घर पर इसकी बात किया करते थे। बल्कि वह इतनी ज़्यादा बात करते थे, अम्माँ को लगने लगा कि वह बहुत स्वार्थी हैं जो अकेले ही घुड़सवारी का मज़ा लिया करते हैं, जबकि घर के और लोगों को भी उसमें हिस्सेदार होना चाहिए। वे कहने लगीं कि पार्क में घुड़सवारी करके सचमुच इतनी ताज़गी आती है, तो घर में सबको वह ताज़गी मिलनी चाहिए।

पापा कहते कि चाहते तो वह भी हैं, मगर क्या करें, घोड़ा एक ही है। इससे कुछ दिन तो घर के लोगों का मुँह बन्द रहा, मगर फिर अम्माँ कहने लगीं कि पापा के बाद हम लोग उसी घोड़े पर सवारी क्यों नहीं कर सकते।

पापा को यह सुझाव इतना अनुचित और असम्भव प्रतीत हुआ कि वह गरम हो उठे। अम्माँ से बोले कि उन्हें किसी चीज़ का पता नहीं है। घोड़ों का तो बिलकुल ही नहीं है। फिर उन्होंने समझाया कि ब्राउनी पहले ही बहुत थक जाता है, दूसरे लोग भी उस सवारी करने लगे, तो अगले दिन की सवारी के लिए वह कभी तारोताज़ा न होगा।

इस पर अम्माँ ने दृढ़ता के साथ कहा कि उन्हें कुछ और घोड़े ख़रीद लेने चाहिए।

पापा सकपका गए। वह हमेशा हमारी तरफ़ अपना फ़र्ज पूरा करना चाहते थे। उन्हें लगा कि उनकी यह नेकदिली अब उनके लिए मुसीबतें ढाने लगी है। यह उन्होंने कब सोचा था कि अपने लिए घुड़सवारी-जैसी मासूम खुशी ढूँढने पर उन्हें पूरे ख़ानदान को घोड़े की पीठ पर बिठाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि उन्हें पता होता कि उन-जैसे मेहनती आदमी को पार्क में घुड़सवारी करके कुछ आराम मिलता है, इसलिए सारा घर पार्क में घुड़सवारी करने की सोचने लगेगा, तो वह कभी यह बात भी मन में न लाते। अब भी वह इस बात को मन से निकाल देंगे और घेड़ा बेच देंगे।

मगर ऐसा करने का उनका इरादा नहीं था। इसकी बजाय उन्होंने एक और घोड़ा ख़रीद लिया जो ब्राउनी से ज़्यादा जवान और खुशमिज़ाज था और ग़रीब ब्राउनी को हम लड़कों के हवाले कर दिया।

3. बीमारियों का सामना

हममें से कोई बीमार पड़ जाता, तो पापा को बहुत झुंझलाहट होती। वह खुद अकसर ठीक-ठाक रहते थे, और हमसे भी उम्मीद करते थे कि हम भी उन्हीं की तरह रहें और बीमार या सुस्त पड़कर उनके हाथों का बोझ न बढ़ाएँ।

उन्हें कभी बीमारी का ख़तरा नहीं सताता था। वह उस पर नाक-भौं चढ़ाते थे। कीटाणुओं की बात के लिए वह कहते थे कि यह सब नए ज़माने की बकवास है। वह कहते कि जब वह छोटे थे तो उन्हें किन्हीं कीटाणुओं का पता ही न था। शायद कुछ अदृश्य कीड़े होते थे, पर उनकी भी परवाह किसे थी? वह खुद कीड़ों से कम स्वस्थ नहीं थे। "अगर कोई कम्बख़्त कीटाणु हैं, तो उन्हें ले आओ।" वह कहते, "देखूँ, मेरा वे क्या करते हैं।"

पापा का ख़याल था कि अम्माँ बीमारी को सँभालने का तरीका नहीं जानतीं। वैसे वह अकसर अम्माँ की प्रशंसा करते थे और समझते थे कि दुनिया में उन-जैसा कोई व्यक्ति नहीं है। हम लड़कों से अकसर कहा करते, "तुम्हारी माँ तो बस लाजवाब है।" मगर जब वह बीमार पड़ जातीं, तो पापा चिढ़ उठते।

ऐसे मौकों पर अम्माँ को बिस्तर की शरण लेनी पड़ती थी। मगर वह शोर नहीं मचाती थीं। पापा को कभी उनकी हल्की-सी कराह ही सुनाई देती, हालाँकि वह नहीं चाहती थीं कि पापा उतनी आवाज़ भी सुनें। इससे पापा यह नतीजा निकाल लेते कि अम्माँ को कोई तकलीफ़ नहीं है। "तकलीफ़ हो तो पता न चले?" वह कहते।

जितनी ज़्यादा तबीअत ख़राब होती, अम्माँ उतना ही ख़ामोश हो जातीं और पापा उतना ही समझते कि उनकी तबीअत ज़रा भी ख़राब नहीं है। एक बार जब मैं बाहर था, तो अम्माँ ने मुझे चिट्ठी में लिखा, "वह कहते हैं कि मुझे समझ नहीं आता कि तुम इतनी-इतनी देर बिस्तर में क्यों पड़ी रहती हो? मुझे कोलाइटिस है, जो ऐसी बुरी बीमारी है कि इन्सान को पीठ नहीं उठाने देती। कल डॉक्टर ने मुझे कोलाइटिस के बारे में बताया था। मगर तुम्हारे पापा बोले, 'खुदा का शुक्र है मैंने कभी इस चीज़ का नाम नहीं सुना।' उन्हें लगता है कि लोग ऐसी-ऐसी बीमारियाँ

लगाकर और घर में डॉक्टरों को बुलाकर ख़ामख़ाह उन्हें परेशान करते हैं।" शब्द 'लोग' के नीचे अम्माँ ने लकीर खींच रखी थी।

अम्माँ को जुकाम भी हो जाता नो पापा झुँझलाने लगते। वह बेचारी कन्धों पर शाल लपेटे, थका हुआ ज़र्द चेहरा लिये, अपने कमरे में काम करती रहतीं और जब तक बन पड़ता, बीमारी का मुकाबला करतीं। मगर कभी-कभी उनकी हिम्मत हार जाती तो उन्हें बिस्तर में लेटना पड़ जाता।

इस पर पापा हाय-तौबा मचा देते और मुँह में बड़बड़ाने लगते कि यह क्या हिमाकत है? अम्माँ से कहते कि उनकी तबीअत बिलकुल ठीक है और घोषणा कर देते कि जब लोग कहते हैं कि वह बीमार हैं, तो इसका यह मतलब नहीं होता कि उन्हें सचमुच कुछ बीमारी है, इसका मतलब सिर्फ़ इतना है कि वह हौसले के कच्चे हैं। वह अकसर अम्माँ को समझाते कि बीमार पड़ना एक बहुत बड़ी कमज़ोरी है। मगर जब भी वह इस तरह अम्माँ का हौसला बढ़ाने की कोशिश कर रहे होते, तो साथ ही उन्हें लगने लगता कि अम्माँ को उनकी बात पसन्द नहीं आ रही। इस तरह की कोशिश करना भौ पापा को तभी याद आता था जब अम्माँ में सिर उठाने तक की हिम्मत न रहती। ऐसे मौकों पर वह सोचते थे कि अम्माँ को उनकी सहायता की ज़रूरत है।

उन्हें खुद अम्माँ की सहायता, और सहायता नहीं तो उनके साथ की बहुत ज़रूरत रहती थी और यह बात वह खुलकर कहते भी थे। अम्माँ बीमार पड़ जातीं तो पापा को समझ में न आता कि वह क्या करें।

वह कोई पाँच या छह बजे के लगभग दफ़्तर से आते। आते ही पहले तलाश करते कि अम्माँ कहाँ हैं? वह घर में न होतीं, तो पापा को बहुत अजीब और ख़ाली-ख़ाली-सा लगता।

एक शाम छह बजे के लगभग उन्होंने अम्माँ के बेड-रूम का दरवाज़ा खटखटाया। कमरे में रोशनी नहीं थी, सिर्फ़ अँगीठी में हिलती हुई आग की ही लौ थी। हवा में विच-हेज़ल स्पिरिट और कपूर की मिली-जुली गन्ध फैली थी। बिस्तर पर अँधेरे में अम्माँ एक अफगान लोई में लिपटी हुई ख़ामोश लेटी थीं।

"विनी, कमरे में ही हो?" पापा ने अनिश्चय के कारण ज़रा ऊँची आवाज़ में पूछा।

"यहाँ से चले जाओ," अम्माँ कराहीं।

"क्या?" पापा हैरान होकर बोले।

"यहाँ से चले जाओ! हाय, चले जाओ न!"

"अब मैंने क्या किया है?" पापा बाहर को चलते हुए बोले।

"क्लेयर!"

''क्या बात है?''

''तुम में...ह...र...बा...नी करके दरवाज़ा बन्द कर जाओ!''

पापा ने दाँत पीसे और दरवाज़ा इस तरह ज़ोर से बन्द किया कि अम्माँ बिस्तर से उछल पड़ीं।

पापा ने अपने को समझाया कि अम्माँ को कुछ तकलीफ़ नहीं है, अभी सुबह ही तो वह ठीक-ठाक थीं। उन्होंने ख़ूब भर-पेट खाना खाया। अकेले होने की वजह से क्लेयरेट का एक गिलास और ले लिया, टोस्ट और पानी भी ज़्यादा खा गए। शाम उन्हें इतनी लम्बी और उदास लगी कि वह दो सिगार भी ज़्यादा पी गए।

अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद फिर वह अम्माँ के कमरे में गए। आग बुझ चुकी थी। दो पुराने टूटे-फूटे स्लीपर एक कुरसी पर पड़े थे। दिन की हल्की उदास रोशनी फैली थी। अम्माँ तब तक भी ठीक नहीं हुई थीं, इसलिए पापा माथे पर बल डाले उनके बिस्तर के पास खड़े होकर उन्हें देखने लगे। अब वह हँसें किसके साथ और लड़ें किससे? इस परेशानी में उनका चेहरा उतर रहा था।

''क्या बात है?'' अम्माँ ने अपनी थकी हुई आँखें खोलकर धीमे स्वर में पूछा।

''कुछ नहीं,'' वह ऊँची आवाज़ में बोले, ''कुछ भी तो नहीं।''

''तो इतनी मेहरबानी करो कि ऐसा चेहरा बनाकर इस कमरे में न आओ,'' अम्माँ ने याचना की।

''क्या मतलब? कैसा चेहरा बनाकर?''

''तुम यहाँ से चले जाओ,'' अम्माँ चिल्लाईं, ''आदमी बीमार हो तो दूसरे के चेहरे पर वह मुस्कराहट देखना चाहता है। तुम सामने खड़े होकर मुझे इस तरह घूरते रहोगे, तो मैं कभी ठीक न हो सकूँगी। और इस बार दरवाज़ा आराम से बन्द करना। मैं इस समय अकेली रहना चाहती हूँ।''

दरवाज़े से बाहर आने पर जब मैंने पापा से पूछा कि अम्माँ की तबीअत अब कैसी है, तो वह मुस्कराकर बोले, ''अब वह बिलकुल ठीक है। अभी बिस्तर में लेटी है, मगर उसकी आवाज़ पहले से काफ़ी अच्छी है।''

पापा को खुद बीमार होने का कम तजुरबा था। तैंतीस-चौंतीस साल की उम्र में उन्हें एक बार जोड़ों का दर्द हुआ था जो तीन हफ़्ते रहा था। उसके बाद चौहत्तर साल की उम्र में उन्हें निमोनिया हुआ। इस बीच और कोई ख़ास बीमारी उन्हें नहीं हुई। वह कहते कि बीमारियाँ सिर्फ़ ख़याली चीज़ है, और वह उन पर विश्वास नहीं करते।

वह तो समझते थे कि उनका निमोनिया भी सिर्फ़ ख़याली चीज़ है। ''बस उस डॉक्टर के दिमाग़ का फितूर है,'' वह कहते, ''मुझे सिर्फ़ ठंड लग गई है और कुछ नहीं।''

हमारा पुराना डॉक्टर मर गया था और इस नए डॉक्टर और उसकी दो ट्रेंड नर्सों ने मिलकर बड़ी मुश्किल से पापा को बिस्तर में लेटने के लिए राज़ी किया था।

नया डॉक्टर पीली-नीली आँखों वाला छोटे क़द का आदमी था, जो बात करते समय सामने के आदमी पर मन-ही-मन मुस्करा रहा होता था। खतरे के वक़्त वह घबराता नहीं था और शहर के सबसे अच्छे डॉक्टरों में से था। मगर अम्माँ ने उसे इसलिए चुना था कि उन्हें डॉक्टर की एक चचेरी बहन की शक्ल पसन्द आ गई थी।

हालत ज़्यादा ख़राब होने पर डॉक्टर को बार-बार पापा को चेतावनी देकर बताना पड़ता है कि उन्हें दरअसल निमोनिया ही है। और उस चौहत्तर साल की उम्र में उन्होंने ठीक से इलाज न होने दिया, तो शायद वह बिस्तर से उठ ही न सकें। पापा बिस्तर में पड़े-पड़े उसे घूरते हुए बोले, "मिस्टर, आपको मैंने नहीं बुलाया। मुझे क्या करना चाहिए, यह आपको वहाँ पर खड़े होकर बताने की ज़रूरत नहीं। मुझे डॉक्टरों का सब पता है। समझते हैं उन्हें सब-कुछ आता है। आता-जाता कुछ नहीं। ये गोलियाँ-ओलियाँ मेरी बीवी को खिला दो। उसे इन पर विश्वास है। बस मुझे और कुछ नहीं कहना है। मेरे साथ बहस करने की ज़रूरत नहीं। यह दरवाज़ा सामने है। गुड-बाई!"

मगर बहस फिर भी चलती रही। पापा को खुद हैरानी हुई जब डॉक्टर ने उन्हें किसी तरह मना लिया कि वह सचमुच बीमार हैं। वह जब अपने कमरे में यह बात गले से उतार रहे थे, तो डॉक्टर उन्हें अकेला छोड़कर परेशान और थका हुआ, बाहर हॉल में आ गया और अम्माँ से बात करने लगा। दरवाज़े के पास वह धीमी आवाज़ में बात कर रहा था कि अन्दर से पापा की आवाज़ सुनाई दी। यह जानकर कि वह सचमुच खतरे में हैं, पापा ने अपने विचारों का रुख परमात्मा की तरफ़ कर दिया था। "दया करो," वह गुस्से से चिल्लाकर परमात्मा से कह रहे थे, "मैं कह रहा हूँ, दया करो।"

कई भी तकलीफ़ होती तो पापा उसका भार परमात्मा के कन्धों पर लाद देते थे। परमात्मा चाहकर उन्हें तकलीफ़ देता है, यह तो वह कभी पल-भर के लिए भी नहीं सोचते थे। न ही वह यह सोचते थे कि परमात्मा उन्हें किसी चीज़ की सज़ा दे रहा है, क्योंकि अपनी आत्मा उन्हें बिलकुल पवित्र नज़र आती थी। उनका कुछ ऐसा ख़याल था कि परमात्मा का दिमाग़ थोड़ा ख़राब है, इसलिए वह यह सब गड़बड़ कर जाता है।

ख़ैर, डॉक्टर और परमात्मा ने जो भी सोचा हो, पापा का निमोनिया ठीक हो गया, उसी तरह जैसे चालीस साल पहले उनका जोड़ों का दर्द ठीक हो गया था। फ़र्क़ इतना ही था कि जोड़ों का दर्द ठीक करने में उन्हें एक बेंत और ओल्ड लाउँड्स नामक मालिशी की मदद लेनी पड़ी थी।

जोड़ों के दर्द का हमला होने पर पापा अपना दर्द वाला पैर स्टूल पर रखे आग के गास कुरसा पर बैठे रहते थे। उनका बेंत हर समय पास में तैयार रहता था। यह नहीं कि चलने के लिए वह बेंत से मदद लेते हों। चलते वक़्त तो वह गुस्से के मारे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए अपने एक पैर पर ही उछलते फिरते थे। मगर बेंत को वह और तरह से ज़रूरी समझते थे और लड़ाई के डंडे की तरह अपने पास रखते थे। घर-भर को वह उससे धमकाया करते थे। कोई मुलाक़ाती उनके कमरे में चला जाता, तो वह ज़ोर-ज़ोर से उसकी तरफ़ बेंत हिलाते रहते ताकि वह उनके पैर के अँगूठे से दूर रहे।

ओल्ड लाउँड्स को और लोगों से ज़्यादा नज़दीक जाने की इजाज़त थी, मगर उसे चेतावनी दे दी गई थी कि उसने ज़रा भी ग़लती की तो बेंत सीधा उसके सिर पर पड़ेगा। पापा कहते थे कि वह बेंत हिला-हिलाकर लाउँड्स को होशियार न रखते, तो जाने वह उन्हें क्या-क्या नुकसान पहुँचाता। तो ख़ास तौर पर अपने उस बेंत की वजह से ही पापा ठीक हो गए थे।

इससे उन्हें विश्वास हो गया कि कोई भी बीमारी हो, अगर आदमी डटकर उसका मुकाबला करे तो वह अपने-आप ठीक हो जाएगी।

जुकाम हो, तो उनका ख़याल था कि उसे भी लाठी के ज़ोर से ठीक किया जा सकता है। मतलब ज़ोर-ज़ोर से नाक साफ़ करके या उससे भी बेहतर तरीके से यानी ज़ोर-ज़ोर से छींककर। छींकते में वह इस तरह बला की आवाज़ करते थे कि अम्माँ परेशान हो उठती थीं। वह कहतीं कि आधे कमरे में उनकी छींक की खबर पहुँचती है और यह रोग एक से दूसरे को लग सकता है। पापा कहते कि यह सब बकवास है और ज़ोर से छींकना सेहत की निशानी है। तभी विजय-गर्व का एक और धमाका होता, अर्थात् वह फिर छींक पड़ते।

जुकाम तो उन्हें कभी ही होता था। इसके अलावा उससे दुश्मनी थी तो सिरदर्द को। पापा कहते कि सिरदर्द का सम्बन्ध खाने के साथ है। आदमी को पता होना चाहिए कि खाना बन्द कर देने से सिर दर्द से छुट्टी मिल सकती है। सिर दर्द का भूखों मरने में चाहे वक़्त लगता था। कई बार कई-कई घंटे लग सकते थे। मगर एक बार दर्द गया नहीं कि फिर आदमी जो चाहे खाए, और मज़े से बैठकर अपना सिगार पिए।

सिरदर्द शुरू होता तो पापा लेटकर आँखें मींच लेते और चिल्लाना शुरू कर देते। जितना ज़्यादा दर्द होता, उनके गले से आवाज़ भी उतनी ऊँची निकलती। लगता जैसे वह सिरदर्द से कह रहे हों कि जितनी ताक़त तुममें है, उतनी ही बल्कि उससे भी ज़्यादा ताक़त मुझमें है। सिरदर्द और वह, जब इकट्ठे बिस्तर में पड़ जाते तो दोनों मिलकर बहुत शोर मचाया करते।

मेरा ख़याल है कि मुक़ाबला करना पापा का उसूल था। वैसे वह कभी उसूलों के बारे में सोचते या बात नहीं करते थे, वह उस तरह के लोगों में से नहीं थे। मगर वह उन लोगों को छोटा समझते थे जो मुकाबला करने में या और किसी बात में उसूल ऊँचा न रखें। उन्हें यह ख़याल कभी नहीं आता था कि इन्सान को अपनी तकलीफ़ को छिपकार रखना चाहिए। ज़रा भी दर्द हो, तो वह पूरे ज़ोर-शोर से उसका इश्तिहार करने लगते। हौसला रखने से उनका यह मतलब नहीं था कि आदमी चुप रहे, बल्कि यह कि डटकर सिरदर्द से दो-दो हाथ हो लिया जाए।

अम्माँ उनसे कहतीं कि सिरदर्द हो तो भी कम-से-कम रात को तो वह चुप रहें, सारे घर को सिर पर न उठाए रखें। मगर पापा ऐसी विनती की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं देते थे। जब अम्माँ कहतीं, "क्लेयर, मेहरबानी करके अब इतना शोर न करो," तो माथे पर बल डालकर वह उनकी तरफ़ देखते, ऐसे जैसे किसी बहादुर को लड़ाई के मैदान में हुँकारा भरने से रोक दिया गया हो।

एक शाम को पापा ने देखा कि अम्माँ इस बात को लेकर परेशान हैं कि आंट एमा को कोई भी ऐसी बीमारी लग गई है जो सारे शहर में फैल रही है।

"छिः!" पापा बोले, "एमा को कुछ नहीं हुआ। शहर में जिस बीमारी का फ़ैशन हो, वही इन लोगों को लग जाती है। सुन लेते हैं कि लोगों को यह बीमारी हो रही है और डरकर सोचने लगते हैं कि हमें भी ज़रूर हो गई होगी। फिर बिस्तर पर पड़ जाते हैं और कहते हैं कि डॉक्टर को बुला दो। डॉक्टर, उल्लू के पट्ठे।"

"मगर क्लेयर डियर, अगर लोग तुम्हारे हाथों में सौंप दिए जाएँ तो तुम उन्हें कैसे ठीक करोगे?"

"बस, उन्हें हँसा दूँगा, अपने-आप ठीक हो जाएँगे।"

"मगर डार्लिंग, उन्हें हँसाओगे कैसे?" अम्माँ सन्दिग्ध स्वर में पूछतीं।

"कैसे? मैं उनकी तरफ़ मुँह करके कहूँगा, "बाः!"

4. गाँव-भर का जागरण

पापा अकसर कहा करते थे कि देहात के जीवन में सबसे बड़ी बुराई है तो यही कि गाँव के छोटे-छोटे दुकानदार बहुत सुस्त और निकम्मे होते हैं। वह कहते कि मैं तो सोचता था कि ये लोग दुकानें खोलकर उनमें इसलिए रुपया डुबोते हैं कि इनका इरादा व्यापार करने का होता है, मगर नहीं। ये तो दुकानें खोलते हैं सोने के लिए और बैठकर गप करने के लिए। सभ्यता के तौर-तरीकों का इन्हें पता ही नहीं। शायद उनके बारे में इन्होंने कभी सुना ही नहीं। आदमी अफ्रीका या ध्रुव-प्रदेश के मैदानों में कैम्प लगाए पड़ा हो, तब तो वह सोचे कि हाँ वहाँ आस-पास सब तरह का आराम नहीं मिल सकता और उसके बग़ैर भी काम चला लेना चाहिए। मगर न्यूयॉर्क से सिर्फ़ बीस मील दूर आदमी यह जंगलीपन कैसे बरदाश्त कर सकता है?

जब पापा यह बात कहते, तो अकसर अपने मन में वह बर्फ़ की बात सोच रहे होते। खाने की तश्तरी के पास बर्फ़ से ठंडा पानी का गिलास न हो, यह उन्हें ज़िन्दगी में एक दिन के लिए भी बरदाश्त नहीं था। शहर में घर पर रहते हुए तो इसमें कोई दिक़्क़त नहीं होती थी। एक आले में बर्फ़ के पानी वाली चाँदी की सुराही रखी रहती थी। पापा घर पर होते तो वह इतनी ठंडी रहती कि बाहर कोहरा नज़र आता। हाँ, उनके दफ़्तर चले जाने पर, किसी वक़्त चाहे बर्फ़ ढल जाए और पानी गरम हो जाए। मगर शाम को या इतवार के दिन ऐसा कभी न होता, क्योंकि जाने किस वक़्त पापा पानी माँग लें। "मुझे पानी अच्छा लगता है," वह कहते और बताते कि यह कुदरत की सबसे अच्छी देन है। मगर कुदरत की हर देन की तरह इन्सान के काम तभी आ सकती है जब इसे ठीक ढंग से इस्तेमाल किया जाए। और पानी को इस्तेमाल करने का ठीक ढंग यह था कि इसे बर्फ़ डालकर ठंडा कर लिया जाए।

इससे भी बड़ी बात यह थी कि कोई भी शराब पीने के लिए यह ज़रूरी था कि उसका तापमान सही हो। उसे रखने का तापमान भी ठीक हो। कोई सभ्य आदमी शराब के बग़ैर खाना नहीं खाता, वह कहते और जिसे इस विषय में थोड़ी-सी भी जानकारी है वह शराब को कभी गरम कोठरी में नहीं रखता। अम्माँ सोचतीं कि यह सिर्फ़ पापा का झक्कीपन है और कहतीं कि वह फिजूल शोर मचाते हैं। वह पूछतीं

कि वे लोग क्या करते हैं जो दो-दो कमरों में रहते हैं और जिनके पास शराब रखने की कोठरियाँ नहीं हैं? पापा कहते कि कोई शरीफ आदमी दो कमरों में नहीं रहता।

पहली बार जब पापा गरमियाँ बिताने के लिए देहात में गए, तो उन्होंने न्यूयॉर्क के पास ही हडसन के किनारे अरविंगटन में एक सजा-सजाया घर किराये पर लिया। उसके साथ एक बाग़ था, एक तबेला था और दो एकड़ की जंगली ज़मीन थी। वहाँ आकर पापा के मन को तसल्ली नहीं हुई थी। रोज़ सुबह नाश्ते के बाद आठ-दस की गाड़ी पकड़कर वह न्यूयॉर्क चले जाते और पाँच और छह के बीच वापस लौटते। हमें किसी ख़ास चीज़ की ज़रूरत होती तो वह साथ लेते आते—कभी आडुओं की टोकरी और कभी अपनी कॉफ़ी का ताज़ा डिब्बा।

अगस्त तक सब-कुछ ठीक चलता रहा। मगर एक दिन बर्फ़ देने वाला नहीं आया। गरमी बहुत थी, उसके घोड़े थके हुए थे। वैसे भी उसे हमारे घर आना पसन्द नहीं था, क्योंकि हमारा घर पहाड़ की चोटी पर था। उसने बाद में कहा कि उसे यह अच्छा नहीं लगा कि हमें पचास सेंट की बर्फ़ देने के लिए वह घोड़ों को इतनी तकलीफ़ दे कि वे उस बड़ी बर्फ़-गाड़ी को सीधी ढालू सड़क पर खींचकर ऊपर ले जाएँ। इसके अलावा बर्फ़ तो बची ही नहीं थी, गरमी ने उसे वैसे ही पिघला दिया था। चार-पाँच कारण और भी थे, इसलिए वह नहीं आया।

पापा शहर गए हुए थे। हम लोग हैरान होकर इन्तज़ार करते रहे कि बर्फ़ वाले को क्या हुआ है? हमें शहर के बँधे-बँधाए और सदा एक से जीवन का इतना अभ्यास था कि हमें विश्वास ही नहीं होता था कि बर्फ़ वाला नहीं आएगा। लंच के वक़्त हम यही बात करते रहे। अम्माँ बोलीं कि वह आए, तो आते ही उसे डाँट पिलाएँगी। मगर लंच के बाद एक घंटा बीत जाने पर भी वह नहीं आया तो अम्माँ घबराईं कि पापा आकर क्या कहेंगे? और उन्होंने गाँव से पता करने का फैसला किया।

उन दिनों न टेलीफ़ोन था, न मोटरों थीं। घोड़े ने उस हफ्ते बहुत काम किया था, इसलिए वह उस पर और मुसीबत नहीं डालना चाहती थीं। मगर यह बहुत बड़ा संकट था, इसलिए उनहोंने सईस मॉरगन को बुलाया और कहा कि वह टमटम ले आए।

बड़ी अंग्रेजी टमटम आ पहुँची। सईस के साथ हम दो लड़के चल दिए। धूप सीधी हमारे सिरों पर पड़ रही थी। काठी जहाँ ब्राऊनी की खाल को रगड़ रही थी, वहाँ से घना सफ़ेद झाग निकल रहा था। मॉरगन सिर डाले बैठा था। हमारे साथ होने से न तो वह अपना काला ऊँचा हैट उतार सकता था और न मोटे भरे हुए कोट के बटन ही खोल सकता था। उसकी नज़र में इससे भी बुरी बात शायद यह थी कि वह कहीं रुककर शराब का एक घूँट भी नहीं पी सकता था। अम्माँ ने इसलिए हमें भेजा था और उसे भी इसका पता था।

थोड़ी देर में हम कस्बे में आ पहुँचे। मैं बर्फ़ और कोयले के दफ़्तर में चला गया। एक कोने में परेशान-हाल बुढ्डा क्लर्क ऊँघ रहा था। कुरसी उसने तिरछी करके पीछे दीवार से लगा रखी थी। उसकी ठुड्डी उसकी मैली कमीज़ पर झुकी हुई थी। मैंने उसे जगा दिया और बताया कि हम किस संकट में हैं।

वह अनमने ढंग से सुनता रहा। जब मैं कह चुका, तो वह बोला कि आज गरमी बहुत है।

मैं इन्तज़ार करता रहा। उसने थूककर कहा कि बर्फ़-घर बन्द है। ऐसे में वह क्या कर सकता है?

मैंने उसे समझाया कि हम मिस्टर डे के घर से आए हैं, इसलिए कुछ-न-कुछ तो उसे करना ही होगा।

वह कई मिनट अपने डेस्क में इधर-उधर कुछ खोजता रहा और फिर अपना तम्बाकू निकालकर बोला, "अच्छा बेटे जाओ, मुझसे जो भी हो सकेगा करूँगा।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया। मुझे लगा कि बात तय हो गई है। मैं बाहर टमटम में लौट आया। ब्राउनी की लगामें खुली हुई थीं और वह सिर झुकाए खड़ा था। उसे सुस्ती चढ़ी हुई थी। पीछे बग्घी होती, तो वह उतना बुरा नज़र न आता। मगर छकड़ा-गाड़ी में जुता हुआ वह मरियल घोड़ा बहुत डरावना-सा लग रहा था। मॉरगन भी वहाँ पर नहीं था। जल्द ही बगल में थोड़ी दूर एक दरवाज़े से वह निकलता नज़र आया। वह कोट के बटन बन्द कर रहा था और उसका हैट सिर पर पीछे की तरफ़ तिरछा हो रहा था। उसकी हालत घोड़े से भी बदतर लग रही थी।

हमने थके हुए जानवर के सिर को कसकर ऊँचा किया और धीरे-धीरे घर की तरफ़ रवाना हुए। पीछे से आती हुई गरम हवा से पहियों की धूल भी हमारे साथ-साथ चल रही थी। पहाड़ी के नीचे पहुँचकर हम दोनों लड़के गाड़ी से उतर पड़े, ताकि ब्राऊनी को ज़्यादा भार न खींचना पड़े। उसकी आगे की लगाम भी हमने खोल दी और वह भारी टमटम को ऊपर ले चला।

अम्माँ बाहर ओसारे पर बैठी थीं। मैंने उनसे कहा कि बर्फ़ अभी आ रही है। हम लोग इन्तज़ार करने लगे।

वह दोपहर बहुत लम्बा था।

पाँच बजे ब्राऊनी को फिर जोता गया और मैं सईस के साथ फिर अकेला गाँव की तरफ़ चला। हमें पापा को गाड़ी से लेना था, उन्हें यह बुरी खबर भी सुनानी थी कि शाम को खाने के साथ उन्हें बर्फ़ का पानी नहीं मिलेगा और न ही उनकी राइन वाइन ठंडी की जा सकेगी।

गाँव हमेशा की तरह सोया हुआ था। मगर जब पापा आए और उन्हें स्थिति का पता चला तो उन्होंने कहा कि गाँव को जागना पड़ेगा। उन्होंने मुझे बताया कि

दफ़्तर में उन्हें उस दिन बहुत काम करना पड़ा है, शहर में उस दिन सहारा के रेगिस्तान से भी ज़्यादा गरमी थी, और वह बहुत थके हुए हैं; मगर फिर भी अगर कोई बर्फ़ वाला पल-भर के लिए भी यह सोच सकता हो कि वह उनके साथ इस तरह का सलूक कर सकता है, तो वह अपना सिर कटा देंगे। वह सीधे बर्फ़ और कोयले के दफ़्तर में चले गए।

वह दफ़्तर से निकले तो क्लर्क सिर पर अपना हैट पहने उनके पीछे आ रहा था और कोशिश कर रहा था कि पापा किसी तरह शान्त हो जाएँ, मगर कहाँ? वह बेचारा वचन दे रहा था कि अगर ड्राइवर चला गया होगा तो वह खुद बर्फ़-गाड़ी लेकर चला जाएगा और एक घंटे के अन्दर-अन्दर जितनी बर्फ़ हमें चाहिए, आकर दे जाएगा।

मगर पापा बोले, ''एक घंटे के अन्दर से क्या मतलब? तुम्हें उससे पहले आना होगा।''

इस पर क्लर्क थोड़ा भड़क उठा और कहने लगा कि उसे ख़ुद जाकर तबेले में घोड़ों को जोतना होगा और फिर किसी को साथ लेकर बर्फ़-घर से बर्फ़ की सिल उठाकर गाड़ी में रखनी होगी। उसने यह भी कहा कि उसका अपना खाने का वक़्त हो रहा है और उसे इस तरह के काम करने की आदत नहीं है। वह सिर्फ़ पड़ोस की वजह से पापा का यह लिहाज़ कर रहा है।

पापा बोले कि उसे वह लिहाज़ ज़रा जल्दी करना पड़ेगा, क्योंकि देर वह बरदाश्त नहीं कर सकते, और सिर्फ़-कम्पनी को क्या हक है कि उन्हें वह इस तरह तंग करे?

क्लर्क ने कहा कि यह कसूर उसका नहीं, ड्राइवर का है।

मगर उसकी चाल कामयाब नहीं हुई। पापा के तार फिर कस गए। ''मुझे नहीं पता कि कसूर किसका है,'' वह बोले, ''कसूर तुम सब लोगों का है। मुझे बर्फ़ चाहिए और बहुत सी चाहिए, और खाने के वक़्त से पहले चाहिए।''

आस-पास एक छोटी-सी भीड़ इकट्ठी होकर प्रशंसापूर्वक पापा की बातें सुन रही थी। पापा ने क्लर्क की तरफ़ उँगली हिलाते हुए कहा, ''खाना मैं ठीक साढ़े छह बजे खाता हूँ।''

क्लर्क पैर घसीटता आ घोड़ों को जोतने के लिए तबेले की तरफ़ चल दिया। पापा उसके मोड़ मुड़ने तक वहीं खड़े रहे। फिर भीड़ के साथ वह कसाई की दुकान में दाखिल हुए।

पन्द्रह मिनट बाद कसाई और उसका नौकर अनमने ढंग से काले मोमजामे में लिपटी हुई क़फ़न-जैसी कोई चीज़ लेकर निकले। वह थी बर्फ़ की एक बड़ी सिल।

पापा गाड़ी में सवार हुए और मेरे पास आगे बॉक्स-सीट पर बैठकर उन्होंने लगामें सँभाल लीं। गाड़ी चल दी। सईस पीछे की सीट पर हमारी तरफ़ पीठ किए

बैठा था और टाँगें फैलाए बर्फ़ को बाहर गिरने से रोक रहा था। गली में कुछ आगे जाकर एक फर्नीचर की दुकान के बाहर पापा फिर उतर पड़े।

इस बार मैं भी साथ अन्दर चला गया। मैं अब उस नाटक का कोई दृश्य छोड़ना नहीं चाहता था। पापा ने उस आदमी से यह कहकर कार्यबाही आरम्भ की कि अपने सब आईस-बॉक्स निकालकर दिखाओ। उसके पास आईस-बॉक्स थोड़े-से ही थे। पापा ने सबसे बड़ा आईस-बॉक्स चुन लिया। जब दुकानदार को लगा कि सौदा हो गया है और वह इस अचानक की कमाई की खुशी में खुलकर मुस्कराने लगा, तो पापा ने उससे कहा कि वह दो शर्तों पर आईस-बॉक्स ख़रीदेंगे।

पहली शर्त यह थी कि आईस-बॉक्स खाने के वक़्त से पहले घर पर पहुँच जाए। हाँ, अभी, इसी वक़्त। दुकानदार कहने लगा कि इसी वक़्त भेजना तो असम्भव है। हाँ, अगले दिन सुबह तक वह ज़रूर भेज देगा। मगर पापा बोले, "नहीं, अगले दिन सुबह तक हमें नहीं चाहिए। चाहिए तो इसी वक़्त चाहिए।" साथ ही उन्होंने बता दिया कि खाना वह साढ़े छः बजे खाते हैं और वह अधिक वक़्त वहाँ बरबाद नहीं कर सकते।

दुकानदार बेचारे को मानना पड़ा। इस पर पापा ने उसे जो दूसरी शर्त बताई वह बिलकुल दम निकालने वाली थी। उन्होंने कहा कि आईस-बॉक्स उनके वहाँ बर्फ़ से भरा हुआ पहुँचे।

दुकानदार ने कहा कि वह तो बर्फ़ का काम नहीं करता।

पापा बोले, "तो ठीक है। मुझे आईस-बॉक्स नहीं चाहिए।"

दुकानदार ने हठ के साथ कहा कि आईस-बॉक्स बहुत अच्छा है। इस पर पापा ने एक छोटा-सा भाषण दे डाला। यह उन्हीं भाषणों में से था जो हम घर पर कई बार सुन चुके थे कि गाँव के दुकानदार कितने आलसी हैं। उन्होंने बात कुछ इस तरह ज़ोर के साथ कही कि एक बार सारी दुकान गूँज उठी। अन्त में वह बोले, "आईस-बॉक्स में बर्फ़ न हो तो वह आदमी के किस काम का है? अगर तुम्हें माल बेचने का तरीका नहीं आता या उत्साह नहीं है, और तुम चीज़ ग्राहक के घर पर इस तरह तैयार नहीं पहुँचा सकते कि वह उसे इस्तेमाल कर सके, तो अच्छा है कि तुम दुकान बन्द कर दो और यह सारा झंझट खत्म करो।" यह कहकर वह बाहर निकल आए।

दुकानदार उनके पीछे-पीछे बाहर आया। वह गाड़ी में बैठने लगे तो बोला, "ठीक है मिस्टर डे, मैं आईस-बॉक्स अभी भरवाकर भेज देता हूँ।"

पापा जल्दी से घर आ पहुँचे। आँधी उठ रही थी जिससे ब्राऊनी की सुस्ती दूर हो गई थी। या शायद पापा ही अपनी शक्ति का कुछ हिस्सा ब्राऊनी को दिए दे रहे थे। उस बेचारे को इसकी ज़रूरत भी थी, क्योंकि उसे फिर ढालू चढ़ाई चढ़नी

थी। मैं पहाड़ी के नीचे उतर गया। गाड़ी के पीछे चलते हुए मैंने देखा कि मॉरगन की बुरी हालत है। बाँहें बगलों में दबाए वह इस तरह बैठने की कोशिश कर रहा है कि बर्फ़ उसके पैरों से रुकी रहे। वह बड़ी सिल लगातार इधर-से-उधर फिसल रही थी और अपनी पूरी कोशिश कर रही थी कि किसी तरह बाहर जा गिरे। सारा रास्ता वह मॉरगन की पिंडलियों से टकराती रही थी, जिससे उसकी पिंडलियाँ बिलकुल सुन्न पड़ गई थीं।

गाड़ी घर के दरवाज़े के पास पहुँच गई तो भी पापा पल-भर अपनी सीट पर बैठे रहे। मैं, मॉरगन और हमारी नौकरानी तीनों मिलकर बर्फ़ के साथ ज़ोर-आज़माई करने लगे। मोमजामा तब तक उतर गया था। उसे मैंने घास पर डाल दिया। कुछ देर बाद मॉरगन ने घोड़े की काठी उतारकर उसे जल्दी-जल्दी मला और फिर बर्फ़ के टुकड़े करने और उन्हें पीछे के रास्ते अन्दर ले जाकर आईस-बॉक्स में भरने के लिए हमारी मदद करने चला आया। पापा तब डिनर के लिए कपड़े बदल रहे थे।

अम्माँ तब एक शान्त हो गई थीं। राइन वाइन ठंडी हो रही थी। "ज़्यादा ठंडी मत करना," पापा ने आवाज़ दी।

तभी बर्फ़ वाला बर्फ़ लेकर आ गया। बूढ़ा क्लर्क उसके साथ था जैसे जेलर एक कैदी के साथ हो। अम्माँ बाहर निकल आईं और निकलते ही दिन-भर से सँभालकर रखी हुई झिड़कियाँ बर्फ़ वाले पर बरसाने लगीं।

क्लर्क ने पूछा कि हमें कितनी बर्फ़ चाहिए। अम्माँ बोलीं कि हमें अब बर्फ़ नहीं चाहिए। मिस्टर डे बर्फ़ ले आए हैं और हमारे आईस-बॉक्स में और जगह नहीं है।

बर्फ़ वाले ने क्लर्क की तरफ़ देखा। क्लर्क ने कुछ कहना चाहा, मगर उसके मुँह से शब्द ही न निकले।

तभी पापा ने खिड़की से सिर निकालकर कहा, "विनी, सौ पौंड बर्फ़ ले लो। अभी एक और आईस-बॉक्स आ रहा है।"

सौ पौंड की सिल घर में ले आई गई और नहाने के टब में डाल दीं गई। नौकरानी ने उसके ऊपर मोमजामा डाल दिया। बर्फ़ की गाड़ी चली गई।

जब हम खाना खाने बैठे तो नया आईस-बॉक्स आ पहुँचा—पूरा भरा हुआ।

अम्माँ को गुस्सा आ गया। वह तमककर बोलीं, "यह क्या हिमाकत है, क्लेयर? अब नहाने के टब में जो सिल पड़ी है, उसका मैं क्या क़रूँगी?"

पापा सिर्फ़ मुस्करा दिए।

"तुम्हें घर के मामलों की ज़रा समझ नहीं है," अम्माँ ने कहा और नौकरानी को लेकर उस समस्या को हल करने लांड्री में चली गईं। तभी आँधी का शोर सुनाई देने लगा। हम सब लड़के भाग-भागकर ऊपरी मंजिल की खिड़कियाँ बन्द करने लगे।

मगर पापा का मन बिलकुल शान्त था। उन्होंने आराम से खाना खाया और अपनी कॉफ़ी और ब्रांडी ओसारे में मँगवा ली। तब तक तूफ़ान थम गया था। पापा लम्बी-लम्बी साँस लेकर सुगन्धित हवा को अन्दर खींचते हुए मज़े से अपना सिगार पीते रहे।

''क्लेयरेन्स'' वह बोले, ''इन चीज़ों के बारे में मुझे राजा सोलोमन का ख़याल ठीक लगता है। उसका कहना था कि जिस काम पर तुम्हारा हाथ पड़े, उसे इस तरह करो कि उसका कचूमर निकल जाए।''

अम्माँ ने मुझे अन्दर बुला लिया, ''यह मोमजामा किसका है?'' उन्होंने मुझसे पूछा, ''केटी ने इसकी पीठ में सूराख़ कर दिया है।''

बाहर ओसारे में पापा बहुत इत्मीनान के साथ कह रहे थे, ''मुझे यह अच्छा लगता है कि मेरे गिलास में बहुत सी बर्फ़ पड़ी हो।''

5. मौत से मुक़ाबला

उस साल गरमी में जाने क्यों पापा और अम्माँ ने अरविंगटन जाने का फैसला किया था। और पचासों जगह थीं जहाँ हम सब भाई मौज कर सकते थे। मगर हमसे तो कोई सलाह लेता नहीं था। लेने का सवाल ही नहीं था। वे लोग समझते थे कि हमें वे चाहे जहाँ ले जाएँ, हम वहीं मज़े से रह लेंगे। हमारा भी यही ख़याल था। मगर अरविंगटन में हर चीज़ अपेक्षा से उलटी थी।

मैं पहाड़ी की चोटी पर बैठा नीचे हडसन को बहते देखता रहता। गन्दा, भूरा रंग और ख़ामोश बहाव। इतना ख़ामोश बहाव और इतना बेहूदा दरिया मैंने पहले कभी नहीं देखा था। हम लोग नीले, नमकीन पानी में तैरने के आदी थे, इसलिए उस ख़ामोश और बेजान पानी में तैरने को मन ही नहीं होता था। वैसे नहाने के लिए कोई बीच भी नहीं था।

सड़क पर नीचे जाकर 'सलीपी हौलो' में पुराना वाशिंगटन अरविंग-हाउस था। अम्माँ कहतीं कि वह ख़ूबसूरत जगह है हालाँकि वहाँ मौत की-सी ख़ामोशी छाई रहती। पोर्च में तो छोटे क़द की दुबली-बूढ़ी औरतें, जिन्हें आदमी का पास फटकना पसन्द नहीं था, अपनी कुरसियाँ हिलाती बैठी रहती थीं।

दूसरी तरफ़ घंटे-भर का रास्ता तय करके एक मोटा लड़का रहता था जिसने खरगोश पाल रखे थे। मगर हमें न वह लड़का पसन्द था और न ही उसके खरगोश।

हमारी पहाड़ी के चारों तरफ़ बाग़ों-जैसी बड़ी-बड़ी ख़ामोश ज़मीनें थीं जो कुछ ऐसे बड़े-बड़े ख़ामोश अमीर आदमियों की थीं जिन्हें छोटे लड़कों से चिढ़ थी। हम कभी-कभी बिन-बुलाए मेहमान बनकर वहाँ चक्कर काट आते। मगर उसमें भी कुछ मज़ा नहीं था। और हमारी पहाड़ी का घेरा इतना छोटा था कि उससे और छोटा हो ही नहीं सकता।

हमारे बाग़ का माली, बाग़ का मालिक लगता था। हमें अन्दर जाने ही न देता। अम्माँ को वह जैसे उपहार में कुछ फूल दे देता और जब सब्ज़ियाँ लेकर आता तो उसकी भौंहें तनी होतीं। अम्माँ पूछतीं कि वह और मटर या टमाटर कब लाएगा, तो वह बहुत सोच में पड़ जाता और कहता, "अभी एक-दो दिन लगेंगे।"

उसे शिकायत रहती कि हमारा बावरची हमारे लिए बहुत सब्ज़ियाँ पकाता है। जब चलने के लिए आए तो हमें पता चला कि अच्छा माल गरमियों में बेचने के लिए उसने अलग रख रखा था।

बाग़ के एक तरफ़ छोटा-सा पेड़ों का झुरमुट था जिसे हम जंगल कहते थे। वहाँ एक दलदली गड्ढे में झाड़ी के नीचे हम लोग एक घर बनाते रहते। इस उद्योग में पहले मैं शाह फेरो की तरह था और बाक़ी भाई मेरी मिस्री प्रजा की तरह। मगर धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि घर पूरा हो जाने पर यह मल्कियत तो मेरी होगी, इसलिए वे काम से बचने लगे और मुझे ज़्यादा-से-ज़्यादा काम अपने हाथों करना पड़ने लगा।

वह छोटा-सा घर अच्छा-ख़ासा बन गया। दोष यही था कि उसमें सीलन बहुत थी। नालियाँ थीं नहीं। ऊपर से पेड़ टप-टप करते रहते थे, इसलिए बेचारा कभी सूख ही नहीं पाता था। जगह थोड़ी होने से एक वक़्त में सिर्फ़ एक ही आदमी—मच्छरों के अलावा—अन्दर जा सकता था। और जाने वाला अकसर मैं ही होता था, यहाँ तक कि मैं मलेरिया में पड़ गया।

बिस्तर से निकलने के बाद ठीक से स्वस्थ होने से पहले मैं काफ़ी दिन तक उस स्लेटी पत्थर के मकान में ऊपर-नीचे घूमता रहा। एक दिन अटारी में मुझे तीस-चालीस पीले रंग के काग़ज़ की जिल्द की किताबें मिल गईं। रेलवे के बुक-स्टालों पर मिलने वाले ये पीली जिल्द के सस्ते रोमांचक उपन्यास पापा और अम्माँ मुझे पढ़ने नहीं देना चाहते थे। मैं हमेशा उनकी बात मानता था। मगर अब इतनी ढेर-सी किताबें सामने पड़ी थीं और ज़िन्दगी में पहली बार मेरे ऊपर ऊब और निठल्लेपन का दौर-दौरा था। मैं दो किताबें अपने साथ नीचे ले गया और उन्हें मैंने अपने बेड-रूम के पीछे की कोठरी में छिपा दिया।

उसके बाद रोज़ रात को मैं जल्दी बिस्तर में लेटने चला जाता और चाव के साथ एक भूखे आदमी की तरह वे साहस और प्रेम की कहानियाँ पढ़ता रहता। मैं तब तेरह साल का था और प्रेम के सम्बन्ध में मेरे मन में हल्की जिज्ञासा पैदा होने लगी थी। प्रेम के क़िस्सों में ज़रूरत से ज़्यादा मिठास होने पर मेरा मन ऊबने लगता था। मैंने सोचा था कि पीली जिल्द के उन उपन्यासों में इस तरह का सच्चे दिल का प्रेम ज़रा कम होगा और वर्जित प्रेम का चटपटा मसाला ही ज़्यादा मिलेगा।

मगर मुझे पढ़कर हैरानी हुई, क्यों उन उपन्यासों में ऐसी कोई बात ही नहीं थी? कोई रोमांचकारी चीज़ उनमें नहीं थी। निश्चय करने के लिए मैं उन्हें अन्त तक पढ़ गया। मगर दोनों किताबों में कोई वैसी बात नहीं मिली। मैं उन्हें अटारी में रखकर कुछ और किताबें ले आया।

मैं सिर फेंककर लगा रहा और सब किताबें पढ़ गया। सब पढ़कर फैसला किया कि ज़िन्दगी में फिर कभी पीली जिल्द की किताब नहीं पढ़ूँगा। उनमें रोचक और वर्जित बातों की जगह उपदेश की बातें लिखी थीं। बीच में पादरी भी थे। सबका लेखक एक ही था–'ऐंटनी ट्रोलोप', जिसका मैंने कभी नाम नहीं सुना था और जिसे, मुझे लगा कि रोमांचक उपन्यास लिखना नहीं आता। मैंने सब किताबें वापस अटारी में रख दीं।

पापा और अम्माँ को मैंने 'ट्रोलोप' की बात नहीं बताई। उस अपराध का भेद अपने सीने में ही रखा।

घर से चलने से पहले इस विषय को लेकर बहुत बातचीत हुई थी कि हम देहात में कैसी गाड़ी लेकर जाएँ ताकि पापा उसमें स्टेशन तक आ जा सकें और अम्माँ जाकर लोगों से मिल सकें। उससे पहले हमने कभी गाड़ी नहीं रखी थी।

ऐसी कोई गाड़ी नज़र नहीं आती थी जो हर काम आ सके। दो सीट की 'सरे' से शायद काम चल जाता। मगर पापा का कहना था कि वरदी वाला कोचवान 'सरे' चलाता तो ठीक लगता है, उसके अन्दर बैठा ठीक नहीं लगता। चलाना तो पापा खुद चाहते थे। इसी से उन्होंने विक्टोरिया भी रद्द कर दी। अम्माँ बोलीं कि जब हम लोग शहर में वापस जाएँगे तो बग्घी किसी काम नहीं आएगी। न्यूयॉर्क में बग्घी कोई देहाती ही चला सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि बग्घियों से उन्हें वैसे ही नफ़रत है। उससे तो अच्छा है कि इन्सान एक पहिये के ठेले में घूमने लगे। आख़िर पापा ब्रूसटर्ज़ के यहाँ सलाह लेने चले गए और उन्होंने वह अंग्रेज़ी छकड़ा-गाड़ी लैस करके पापा को पकड़ा दी, जिसका मैं पहले ज़िक्र कर चुका हूँ। अम्माँ बुदबुदाने लगीं, तो वह बोले कि ब्रूसटर्ज़ से ज़्यादा गाड़ियों की समझ और किसी को नहीं है। नतीजा यह हुआ कि अम्माँ कई साल तक उस छकड़ा-गाड़ी में ही घूमती रहीं।

छकड़ा-गाड़ी में जाना हम भाइयों को बहुत अच्छा लगता। ख़ूब ऊँची गाड़ी थी और बग्घियों की तरह दुःख देने वाली खिड़कियाँ और दरवाज़े उसमें नहीं थे। बरसात के दिनों में सईस गद्दों पर रबर के गिलाफ चढ़ा देता और हम लोग रबर के कोट पहनकर बैठते। गाड़ी काफ़ी मज़बूत और भारी थी और काफ़ी हिचकोले बरदाश्त कर लेती थी। मगर दो पहिए की गाड़ी होने से वह अम्माँ को अच्छी नहीं लगती थी। वह कहतीं कि यह झूलती बहुत है। इतवार की सुबह वह अपने हैट को कितना भी कसकर पिन लगाएँ, गिरजे में पहुँचने तक उनका हैट ढीला पड़ जाता और कपड़े सिकुड़ जाते। बारिश और छकड़ा-गाड़ी का मेल कुछ ऐसा था कि वह अम्माँ को ज़रा भी ठीक नहीं बैठता था।

उस गाड़ी में सवार होकर जब पहली ही बार हम निकले तो बारिश उतर आई। गाड़ी रोकी गई। पापा, अम्माँ, मैं और सईस मॉरगन, सबने खड़े होकर अपने रबर

के कोट पहने। मॉरगन ने रबर का बड़ा एप्रन भी निकाल लिया। अम्माँ ने अपने रिबन वाले हैट को बचाने के लिए छाता खोल लिया।

वह पापा के साथ बॉक्स-सीट पर बैठी थीं। पापा घूरकर उन्हें देखते हुए बोले, ''यह क्या कर रही हो?''

''तुम देख तो रहे हो,'' वह तुनककर बोलीं।

''मगर मैं गाड़ी किस तरह चलाऊँ?'' पापा बोले, ''आँखों के आगे तुमने इसके पैर फैला दिए हैं। अब मुझे दिखाई ख़ाक देगा!''

''मैंने कुछ नहीं फैलाया,'' अम्माँ चिल्लाकर बोलीं, ''हवा है, तो मैं क्या करूँ? अब तुम जल्दी करो, यहाँ बुरा हाल हो रहा है।''

''बुरा हाल,'' पापा ने चाबुक इस तरह तिरछा कर लिया कि छाता उसके साथ घिसने और रगड़ खाने लगा। ''बुरे से भी बुरा कहो।''

''तो मैंने कहा नहीं था कि बग्घी ख़रीदो!'' अम्माँ ने कहा।

''मैं कह रहा हूँ कि यह चीज़ मेरे सामने से दूर रखो,'' पापा चिल्लाकर बोले, ''अपनी कसम कितना बेहूदा लग रहा है! हटाओ विनी, मैं कह रहा हूँ। मेरी आँख ही निकाल दोगी क्या? छकड़ा-गाड़ी में छाता लेकर कौन बैठता है!''

आधे घंटे बाद उस ज़ोर की बारिश में जब हम घर पहुँचे, तो भी इस बारे में उनकी बहस अभी चल रही थी। उसके बाद भी सालों तक वह बहस चलती रही मगर फैसला कुछ नहीं हुआ।

हफ़्ता-भर बाद एक हवादार रात को जब पापा कज़िन जूली के साथ एक डिनर-पार्टी में जाने के लिए घर से निकले तो उससे भी ज़्यादा बारिश हो रही थी। उन दोनों में से कोई भी जाना नहीं चाहता था और जूली के लिए तो बुलावा भी नहीं था। मगर अम्माँ अड़ गईं कि उन लोगों को जाना होगा। उन्होंने दस दिन पहले से अपने और पापा के लिए वह निमन्त्रण स्वीकार कर रखा था, और वह सिर्फ़ इसलिए जूली को भेज रही थीं कि उनकी अपनी तबीअत बहुत ख़राब थी। पापा बोले कि उनकी भी तबीअत ख़राब है, बल्कि अम्माँ से भी ज़्यादा ख़राब है। मगर अम्माँ ने कहा कि हम ऐन वक़्त पर उन्हें धोखा नहीं दे सकते, सूचना भेजने के लिए समय नहीं है। सो शाम के बढ़िया कपड़ों में उन दोनों को अम्माँ ने सर्द हवा और बारिश में छकड़ा-गाड़ी की ऊँची सीट पर बिठाकर जल्दी से रवाना कर दिया हालाँकि उस रास्ते में बत्तियाँ भी नहीं थीं।

अरविंगटन के आस-पास की सड़कें धूल के बावजूद काफ़ी अच्छी थीं। दिक़्क़त यही थी कि पहाड़ी सड़कें थीं। हम भाइयों को तो वे अच्छी लगती थीं मगर ब्राऊनी को पसन्द नहीं थीं। ब्राऊनी और छकड़ा-गाड़ी दोनों का ही निर्माण पहाड़ी रास्ते के लिए नहीं हुआ था। पापा का कहना था कि रास्तों के लिए एक छोटा-तगड़ा घोड़ा

अच्छा रहता है। ब्राउनी बिलकुल दूसरी तरह का था, दुबला और लड़खड़ाता हुआ। अम्माँ को उसे लड़खड़ाते देखकर लगता जैसे गाड़ी को खींचकर ऊपर ले जाते हुए, वह जाने कैसा अजीब, लम्बूतरा-सा हो जाता है।

मगर हमें पहाड़ी सड़कों की वजह से ही घुड़सवारी में ज़्यादा मज़ा आता था। पापा हर रोज़ सुबह शहर की गाड़ी पकड़ने के लिए उस पर चढ़कर जाते और हम भाई बारी-बारी से उनके साथ जाते। धीरे-धीरे हमने उस ख़ूबसूरत इलाके का चप्पा-चप्पा देख डाला।

सितम्बर महीने में एक बार मैं पापा के साथ जा रहा था तो पापा को पहाड़ी के ऊपर की तरफ़ जाती हुई एक नई सड़क दिखाई दे गई। मैंने आगे घोड़ा दौड़ाया। ठीक चोटी पर सड़क के बीचों-बीच एक गहरी गड्ढे-जैसी दरार पड़ी थी। सड़क वहाँ से टूट गई थी। वह दरार ओट में होने से तब तक नज़र नहीं आई जब तक मैं ठीक से उसके ऊपर नहीं पहुँच गया। खुशक़िस्मती से मेरे देखते-न-देखते घोड़ा उसके ऊपर से कूद गया। घोड़ा आगे निकालकर मैंने घोड़े की लगाम खींची और पीछे मुड़कर देखा कि पापा भी वहाँ से कूद आए हैं या नहीं।

पापा मुँह के बल सड़क पर पड़े थे। घोड़ा भी पास ही पड़ा हवा में टाँगें हिला रहा था। ऊपर नज़र पड़ते ही मैंने देखा कि घोड़ा किसी तरह उठा और पापा के ऊपर पाँव रख आगे निकल गया। मैं घोड़ा कुदाकर वहाँ वापस आया, उतरा और किसी तरह मैंने पापा को पीठ के बल किया। वह बेहोश पड़े थे। मैंने वहीं पर बैठकर उनका सिर गोद में रख लिया और उनके मुँह से ख़ून पोंछने लगा। मैंने उन्हें ऐसी बुरी हालत में कभी नहीं देखा था। मुझे न जाने कैसा लगने लगा।

मैंने दोनों घोड़ों की लगामें अपनी बाँहों में डाल रखी थीं और वे किनारे की घास में मुँह मारने के लिए खींचातानी कर रहे थे और झटके दे रहे थे।

जब पापा को होश न आया और न ही वे हिले-डुले तो मैंने मदद के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया। इतवार की ख़ामोश सुबह थी। वह सड़क धान के खेतों और चरागाहों के बीच से जाती थी, इसलिए इधर कोई आने-जाने वाला नहीं था।

मैं वहाँ बैठा गला फाड़कर चिल्ला रहा था। मैंने देखा कि पापा ने एक बार भौंहें हिलाईं। उनकी आँखें बन्द थीं। कीचड़ और कंकड़ इस तरह उनके चेहरे से चिपके थे कि उनकी हालत ग़ैर नज़र आती थी। मगर मुझे अब कुछ उम्मीद होने लगी। मैं अपना सिर पीछे को फेंककर पहले से भी ज़ोर से चिल्लाया, ''ए! ए! ए! इधर आना भाई ए!''

दूर नीचे घाटी में एक पीली झोंपड़ी थी। आख़िर एक आदमी उसमें से आता दिखाई दिया। उसने दरवाज़ा बन्द किया और घास-भरे रास्ते से होता हुआ, ऊपर हमारी तरफ़ आने लगा।

कुछ देर में उसने पापा को पैरों पर खड़ा कर दिया। पापा को बीच में डगमगाते हुए लेकर हम आहिस्ता-आहिस्ता उसके घर की तरफ़ चल दिए। वहाँ घास पर हमने उन्हें एक कुरसी पर लिटा दिया और उनका चेहरा साफ़ किया। उनका सिर अब पहले से कुछ सँभल गया था, मगर हमारा कोई सवाल उनकी समझ में नहीं आता था।

मैंने और उस किसान ने मिलकर कई तरह की तरकीबें सोचीं। आख़िर तय किया कि अपने एक घोड़े को खींचकर मैं किसान की बग्घी में जोत दूँ और पापा को उसमें डालकर जल्दी-से-जल्दी घर ले जाऊँ।

पापा को कुछ पता नहीं था कि हम लोग क्या कर रहे हैं। जब बग्घी तैयार हो गई और हम उन्हें उसमें डालने के लिए उठाने लगे तो उन्होंने मना कर दिया। वे इस तरह बेहाल हो रहे थे और उनका अंग-अंग इस तरह निढाल हो रहा था कि उनसे बैठा भी नहीं जाता था। मगर वह ख़्याल उनके दिमाग़ में तब भी समाया हुआ था कि वह तो सुबह की सैर का लुत्फ़ उठाने निकले हैं। बोले, "मुझे इस बग्घी का क्या करना है, इसे परे करो।" फिर बोले, "मेरा घोड़ा लाओ, कहाँ है?"

मैं और वह किसान दोनों भौंचक्के रह गए। हमारा ख़याल था कि उस वक़्त फैसला करने वाले हम हैं और पापा की बात कुछ अर्थ नहीं रखती। मैंने इसी ख़याल से किसान से कहा कि हम पापा को थोड़ा ज़ोर देकर समझाएँ, तो वह मान जाएँगे। हमने थोड़ा क्या बहुत ज़ोर दिया। मगर नतीजा कुछ नहीं। यूँ चाहे बुरा हाल था, फिर भी पापा का यह पक्का ख़याल था कि ऐसी चोट से उनका कुछ नहीं बिगड़ता और पूरी बागडोर उन्होंने खुद ही सँभाल ली थी।

वह इस शान के साथ बार-बार अपना घोड़ा माँग रहे थे कि मुझे आख़िर उनकी बात माननी पड़ी। मैंने अपना घोड़ा खोलकर उस पर काठी चढ़ाई। बग्घी वापस तबेले में रख दी गई। मन में जाने क्या-क्या संशय लिए हुए हमने पापा को घोड़े पर चढ़ा दिया। हमें लग रहा था कि वह एक-मिनट में नीचे आ रहेंगे। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैंने किसान से विदा ली और पापा के साथ-साथ पहाड़ी पर ऊपर को चल दिया।

वह लम्बा रास्ता हमने ख़ामोशी में तय किया। कभी-कभी तो पापा मेरी आशा से अधिक होश पर काबू पा लेते थे। मगर फिर उनका सिर पीछे को गिर जाता और वह काठी से लुढ़कते से नज़र आते। फिर भी जब मुझे लगता कि उनका होश खो गया है और उनकी आँखें बंद हो जातीं, तब भी उनके घुटनों की पकड़ ढीली न पड़ती।

आख़िर हम लोग बड़ी सड़क पर पहुँच गए। कुछ और आगे चलकर हम लोग डॉक्टर कूडर्ट के घर पर पहुँच गए। मैंने घोड़े से उतरकर दरवाज़े की घंटी बजाई।

डॉक्टर कूडर्ट गिरजे में जाने की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने बेड-रूम की खिड़की से झाँककर नीचे देखा।

"गुड मॉर्निंग डे!" उन्होंने पापा से कहा, "क्या हुआ है?"

"हुआ यह है," पापा किसी तरह बोले, "कि गिरकर चोट लग गई है। मेरे घर आकर ठीक कर दो।"

और वह काठी में झूलते हुए घूमकर आगे चल दिए। मैं जल्दी-जल्दी उनके पीछे चला। घर के दरवाज़े पर पहुँचे तो अम्माँ अन्दर से चिल्लाती हुई दौड़कर आईं कि हमने इतनी देर लगा दी। पापा कोशिश करने लगे कि ख़ुद ही घोड़े से उतर पड़ें। "विनी, डीयर विनी," उन्होंने फुसफुसाकर कहा और साथ ही लुढ़ककर हमारी बाँहों में आ रहे।

हमने उन्हें बिस्तर में लिटा दिया। डॉक्टर कूडर्ट ने आकर देखा और बताया कि गरदन के निचले हिस्से में एक गहरा सुर्ख निशान है जो डर का कारण हो सकता है, मगर हम लोगों को यही चाहिए कि बर्फ़ की पट्टियाँ लगाएँ और इन्तज़ार करें।

अम्माँ ने झटपट अंकल हाल को तार दे दिया। वह पापा के बड़े भाई थे। कारोबार से रिटायर होकर वह किसी पहाड़ पर विश्राम कर रहे थे। वहाँ आने की उनकी इच्छा नहीं थी। मगर वह उसी दिन गाड़ी पकड़कर दोपहर ढलने तक अरविंगटन पहुँच गए। अम्माँ ने उनसे कहा कि किसी-न-किसी तरह पापा की जगह दफ़्तर का काम तो चलाना ही होगा और अंकल हाल अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिनके हाथों में यह काम भरोसे के साथ सौंपा जा सकता है। अंकल हाल पापा को इतनी अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें पता था कि इस प्रशंसा का कोई अर्थ नहीं है। वह अपने लम्बे तजरबे से जानते थे कि पापा उन पर और लोगों से कुछ ज़्यादा भरोसा ज़रूर रखते हैं, मगर असल में वह भरोसा किसी पर भी नहीं रखते।

ख़ैर, अंकल हाल वॉल स्ट्रीट के दफ़्तर में जाने लगे। रोज़ शाम को नियम से अरविंगटन आकर वह पूरी रिपोर्ट दे जाते। वह तगड़े और ऊँचे डील-डौल के आदमी थे और बहुत कम गुस्सा करते थे। उनका चेहरा देखकर लगता था जैसे वह लकड़ी तराशकर बनाया गया हो। उस पर कोई उतार-चढ़ाव नज़र नहीं आता था। हाँ, उनकी आँखों को अभी ग़ौर से देखा जाए, तो उनमें एक ख़ास तरह की चमक दिखाई देती थी।

एक दिन दोपहर ढलने के वक़्त मैं पापा के कमरे में बैठा बर्फ़ की पट्टियाँ बदल रहा था तो मैंने देखा कि अंकल हाल दबे पैरों अन्दर आकर उनके बिस्तर के पास एक तरफ़ बैठ गए। उन्होंने बहुत सोच-सोचकर बोलते हुए पापा को रोज़ के काम के बारे में बतलाया, फिर उँगलियों को उलझाकर इन्तज़ार करने लगे कि अब पापा क्या सवाल पूछते हैं।

पापा ने ज़ोर-शोर से सवालों की बौछार आरम्भ कर दी, ''तुमने 'रोम वाटर टाउन बांड्ज़' का क्या किया है?'' उन्होंने पूछा, ''चोट एंड लारेक' के साथ जो कानूनी मामला फँसा था, वह क्या ठीक हो गया?'' किसी भी सवाल के जवाब से पापा की पूरी तसल्ली नहीं हुई। अंकल हाल सब काम अच्छी तरह सावधानी से करते थे। कभी कोई काम ग़लत नहीं होता था। ऐसा कुछ भी नहीं रहता था जिस पर पापा एतराज़ कर सकें। मगर पापा को इसी से बहुत कोफ्त होती थी कि उनके पीछे उनका दफ़्तर उसी तरह नियम से नहीं चल रहा जैसे उनके वहाँ रहने पर चलता था। ''मुझे अपने दफ़्तर का काम इस तरह नहीं चलाना है,'' आख़िर वह गुर्रा उठे।

अंकल हाल फटी-फटी आँखों से उनकी तरफ़ देखते रह गए।

अम्माँ दौड़ती हुई अन्दर आई और तीखी आवाज़ में बोलीं, ''ओह, 'हाल', यह तुम क्या कर रहे हो? मैंने तुमसे कहा नहीं था कि इन्हें गुस्सा न दिलाना!''

अंकल हाल ने अपने लम्बे-चौड़े डील-डौल को कुरसी में आधा घुमा लिया और फटी-फटी आँखों से अम्माँ की तरफ़ देखने लगे।

''यह कोई काम करने का तरीका है? मैं तो कभी यह सोच भी नहीं सकता था,'' पापा ने जैसे कराहकर कहा।

''चलो हाल,'' अम्माँ चिल्लाईं, ''चलो बाहर हॉल में चलो। मैं तुम्हें चलकर फिर से समझाती हूँ। यहाँ बैठे-बैठे बात और मत बिगाड़ो।''

वे दोनों साथ-साथ बाहर चले गए।

थोड़ी देर में मैंने खिड़की से नीचे देखा कि अंकल हाल आहिस्ता से टमटम में सवार हो रहे हैं। उस गाड़ी में बैठकर उनका शरीर जेली की तरह हिलने लगता था और उन्हें उसमें बैठना ज़हर लगता था। गाड़ी चरमराती हुई चल दी और कोचवान उन्हें स्टेशन की तरफ़ ले चला।

पापा को ठीक होने में कई हफ्ते लग गए। मेरा ख़याल है उनके दिमाग़ को चोट पहुँची थी, हालाँकि हम बच्चों को इस बारे में नहीं बताया गया था। हम इतना ही जानते थे कि पापा का बिस्तर में रहना आवश्यक है। पहले-पहल तो वह बहुत चुप रहे जोकि हमारे लिए आश्चर्य की बात थी। मगर बाद में वह अपनी पुरानी आदत पर लौट आए और उसी तरह सारा घर सिर पर उठाने लगे। इस दौरान में मैं उनके घोड़े पर सवारी का मज़ा लेता रहा, क्योंकि वह हमारे वाले घोड़े से कहीं जानदार था।

ठीक होने पर पापा कुछ इस तरह व्यवहार करने लगे जैसे वह उस सारी घटना को जानना चाहते हों। जिस किसान ने अपनी बग्घी उनके लिए देनी चाही थी, उससे वह कभी मिलने नहीं गए। उन दिनों अम्माँ ने जो कुछ किया था, उसके लिए भी वह समझती थीं कि पापा के मन में कोई कृतज्ञता का भाव नहीं है। मगर एक दिन अचानक पापा उनके लिए तीन रूबियों की जड़ाऊ अँगूठी ले आए, तो उन्हें अपना

विचार बदलना पड़ा। डॉक्टर कूडर्ट ने यह बात सुनी तो बहुत खुश हुए। उन्होंने पापा से कहा कि तुम्हारी जान इस औरत ने ही बचाई है, एक नर्स की तरह यह तुम्हारी देखभाल करती रही है। अम्माँ ने यह बात सुनी तो ज़ोर से सिर हिलाकर बोलीं, "और क्या? यह भी कोई कहने क़ी बात है?"

6. रसोइए की नियुक्ति

एक शाम पापा लौटकर घर आए, तो उन्होंने देखा कि घर में सब लोग एक शशोपंज में पड़े हैं। बावर्चिन काम छोड़कर चली गई थी। मैं तब चार साल का था। ज्यॉर्ज दो साल का था। एक और बच्चा अम्माँ की बाँहों में था। अम्माँ बीमार थीं, वह हमें छोड़कर एजेन्सी में पता करने न जा सकीं। खुद खाना पकाने में वह बस ऐसी ही थीं, इसलिए आसार यही थे कि रात को खाना गोल हो जाएगा।

पापा को पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था। उनके पापा के यहाँ नौकर इस तरह अचानक नहीं बदलते थे, बल्कि कहा जा सकता है कि बदलते ही नहीं थे। फिर उनकी अम्माँ खाना बनाने में एक ही थीं। इसलिए उनका दोहरा बचाव रहता था। शादी के बाद से अलबत्ता उन्हें ज़िन्दगी में कई हिचकोले सहने पड़े थे, मगर यह हिचकोला सबसे बुरा था।

अम्माँ बिस्तर में पड़ी थीं। पापा ने पास जाकर पूछा कि इस बारे में क्या करना है? उन दिनों टेलीफ़ोन तो थे नहीं। अम्माँ बोलीं कि इस वक़्त तो कुछ नहीं हो सकता, सुबह मैं एजेन्सी में जाकर पता करूँगी कि क्या किया जा सकता है। "सुबह, मेरे ईश्वर!" पापा बोले, ''तुम मुझे बताओ, यह एजेन्सी है कहाँ पर?'' और सिर पर हैट लगाकर वह फिर निकल पड़े और सिक्स्थ एवेन्यू की तरफ़ चल दिए।

वहाँ क्या हुआ, इस कहानी का पता मुझे कुछ साल बाद चला। वहाँ पहुँचते ही वह तीन-तीन डग का एक डग भरते हुए आगे की ढलान से ऊपर पहुँचे और दफ़्तर में वहाँ जा पहुँचे, जहाँ गैस की रोशनी जल रही थी। पहले कभी वह ऐसी जगह पर गए नहीं थे। जगह ख़ाली देखी, तो उन्हें कुछ हैरानी हुई। सिर्फ़ एक सड़ियल-सी औरत एक तरफ़ डेस्क के पास बैठी थी। ''वे लोग कहाँ पर हैं?'' पापा ने जाते ही पूछा। उनके दिमाग़ में शाम के खाने की बात ही समाई थी।

उस औरत ने उनकी तरफ़ देखा, अपना कलम निकाला और आराम से एक बड़ा-सा रजिस्टर खोलने लगी। ''आप अपना नाम और पता लिख दीजिए,'' वह बोली, ''और यह बता दीजिए कि आपको किस तरह की नौकरानी चाहिए और कब से चाहिए।''

मगर पापा बोले कि उनके पास इन फिज़ूल बातों के लिए समय नहीं है। "वे लोग हैं कहाँ?" उन्होंने फिर पूछा। उन्हें लग रहा था कि वह औरत उनके शाम के खाने में रुकावट डाल रही है। मैं सोच सकता हूँ कि पापा का चेहरा उस वक़्त किस तरह लाल हो गया होगा और कैसे आग उगलती हुई आँखों से उन्होंने उस औरत की तरफ़ देखा होगा। "मैं पूछ रहा हूँ कि वे लोग हैं कहाँ पर?" वह गरजकर बोले।

"लड़कियाँ वहाँ अन्दर हैं," उस औरत ने उन्हें शान्त रखने के लिए कहा। "मगर बाहर के लोग उस कमरे में नहीं जा सकते। आप मुझे बता दीजिए कि आपको किस काम के लिए नौकरानी चाहिए, तो मैं अन्दर जाकर एक को बुला लाऊँ!"

मगर उसकी बात अभी बीच में ही थी कि पापा दरवाज़ा खोलकर अन्दर पहुँच गए। वहाँ बहुत सी लड़कियाँ बैठी थीं, बुढ्डी और जवान मरियल और तरोताज़ा, हर क़द और हर शक्ल की–जिनमें कुछ बदसूरत, कुछ ख़ूबसूरत और नाज़-नखरे वाली भी और कुछ भौंडी थीं। उनमें नर्सें भी और आम नौकरानियाँ भी, वेटरेसें, धोबिनें और बावर्चिनें सभी थीं।

मैनेजर भी पापा के पीछे-पीछे अन्दर पहुँच गई थीं और उन्हें बाहर निकालने की कोशिश में उनसे पूछ रही थी कि वे बताएँ, उन्हें कैसी नौकरानी चाहिए। मगर पापा उसकी तरफ़ ध्यान न देकर कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रहे थे। उनकी नज़र एक तरफ़ कोने में बैठी हुई एक औरत पर पड़ी जो अपनी स्लेटी आँखों से काफ़ी ईमानदार लगती थी और यूँ काफ़ी चतुर और ख़ामोश नज़र आती थी। पापा ने बेंत से उसकी तरफ़ इशारा किया और कहा, "मुझे वह नौकरानी चाहिए।"

मैनेजर थोड़ा तिलमिलायी और अपना अधिकार जताने के लिए बोली कि जब तक उसे पता न हो कि नौकरानी चाहिए किस काम के लिए तब तक...।

"बावर्चिन चाहिए," पापा बोले, "बावर्चिन!"

"मगर मारग्रेट बावर्चिन की नौकरी नहीं चाहती। वह चाहती है...।"

"तुम्हें खाना बनाना आता है? आता है कि नहीं?" पापा ने उस लड़की से पूछा।

इतने रोबदार आदमी ने भरे कमरे के बीच उसी को चुना है, इस बात से मारग्रेट का चेहरा लाल हो उठा था। पापा शायद उसकी तरफ़ देखकर मुस्कराये भी थे, क्योंकि उसी क्षण से दोनों एक-दूसरे को पसन्द करने लगे थे। वह बोला, "हाँ मैं एक घर में खाना बनाती तो रही हूँ।"

"मैंने कहा था कि वह खाना बना सकती है," पापा बोले।

बाद में इस घटना का ज़िक्र करते हुए वह हमेशा कहते, "मुझे देखते ही पता चल गया था कि वह खाना बना सकती है।"

मैनेजर को यह बात पसन्द नहीं आई। इससे दफ़्तर का अनुशासन टूटने का ख़तरा था। "आपको यही नौकरानी रखनी है," वह उफ़नकर बोली, "तो भी आपको

मुझे यहं तो बताना चाहिए कि आप कब से चाहते हैं कि यह नौकरी पर आए और आपका नाम क्या है?''

''ठीक है, ठीक है,'' पापा बिना कुछ भी बतलाए बोले, ''चलो मारग्रेट!''

और फ़ीस के पैसे डेस्क पर पटककर वह बाहर चले आए।

मारग्रेट उनके पीछे-पीछे दरवाज़े से निकल आई और घिसटती हुई उनके साथ घर पहुँच गई। पापा ने आते ही उसे किचन में भेज दिया और ख़ुद ऊपर कपड़े बदलने चले गए।

उस रात मारग्रेट का बनाया पहला खाना खा चुकने के बाद वह बहुत ही इत्मीनान के साथ अम्माँ से बोले, ''मेरी समझ में नहीं आता कि नौकर रखने में ऐसी तरद्दुद की क्या बात है? झट से गए और ले आए।''

और उसके बाद न जाने हमने मारग्रेट के बनाए कितने खाने खाए। वह छब्बीस साल हमारे यहाँ काम करती रही।

7. भूख का एहसास

गरमियों में जब हम देहात में जाते, तो मारग्रेट को शहर में छोड़कर उतने दिनों के लिए अपने साथ कोई और बावर्चिन ले जाते थे। उसे छोड़ जाना हमें अच्छा नहीं लगता था, मगर पीछे घर की रखवाली के लिए किसी-न-किसी का रहना ज़रूरी था। उन दिनों न तो बिजली के चोर-अलार्म थे और न ही ख़ास पहरेदार मिलते थे। मारग्रेट का क़द कुछ नहीं था, इसलिए वह पहरेदारी के लायक तो नहीं लगती थी, मगर उसमें हौसला बला का था। इसलिए दूसरी बावर्चिन को साथ लेकर हम हेरिसन में अपने समर-होम में चले जाते और मारग्रेट को पीछे रखवाली के लिए छोड़ जाते।

मगर इससे कुछ-न-कुछ गड़बड़ हो जाती थी। दूसरी बावर्चिन चाहे कितनी थोड़ी गलतियाँ करें, पापा उनसे बेहद परेशान हो उठते थे। एक गरमियों की बात मुझे याद है कि हम अपने साथ डेलिया नाम की एक बहुत अच्छी स्त्री को ले गए थे। उसके स्वभाव की मिठास और काम में उसकी रुचि के कारण अम्माँ से तो उसकी ख़ूब पटती थी, मगर पापा को वह ज़रा भी पसन्द नहीं थी। "मुझे नहीं पता, काम में उसकी रुचि है या नहीं," वह कहते, "मगर वह ठीक ढंग से ऐसा खाना नहीं बना सकती, जिसे इन्सान निगल सके, तो वह बेशक यहाँ से चली जाए।"

बात अनुचित नहीं थी, मगर उसके बनाए खाने से हममें से किसी को शिकायत नहीं थी और अम्माँ नहीं चाहती थीं कि कोई और तुनुकमिज़ाज नौकरानी उसकी जगह पर आ जाए। इससे यह हुआ कि हमारा खाने का कमरा रात-दिन की लड़ाई का केन्द्र बन गया। नाश्ते के वक़्त पापा हताश भाव से अपनी कॉफ़ी की प्याली मेज़ पर रख देते और चिल्ला उठते, "गँदला पानी है, गँदला पानी। इस बेज़ायका घोल को तुम कॉफ़ी कहती हो? वेस्टचेंस्टर के इलाके में मेरे अलावा क्या एक भी आदमी ऐसा नहीं है जिसे कॉफ़ी बनाना आता हो? कसम खाकर कहता हूँ मैं तो सोच भी नहीं सकता कि वह ऐसी बेहूदा चीज़ें बनाती किस ढंग से हैं! मैं हर सुबह भूख मिटाने के लिए इस कमरे में जाता हूँ और वह मुझे गँदला पानी पीने को दे देती है। उठाओ, ले जाओ मेरे सामने से!" वह हुँकारकर वेटरेस से कहते, "यह मनहूस घोल मेरे सामने से उठाकर ले जाओ।" और जब तक डेलिया और वह भाग-दौड़

करके नई केतली भरकर लातीं तब तक वह बड़े-बड़े लुकमों में अपना आमलेट और बेकन निगल लेते और यह अच्छी तरह बता देते कि आज उनका नाश्ता तबाह हो गया है।

जितने ज़्यादा दिन डेलिया हमारे पास रहती, उतनी ही पापा की झुँझलाहट बढ़ती जाती। अम्माँ उनसे कहतीं कि तुम खाना तो ख़ूब पेट भरकर खाते हो, मगर वह कहते कि उस खाने से उन्हें ताकत नहीं मिलती। साथ ही कहते, इस बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है, मुझे पता है कि मेरा अन्दर ख़ाली हो गया है। इस रात पूरे चार कोर्स का डिनर खा चुकने के बाद बकझक करते हुए मेज़ के पास से उठकर वह लाइब्रेरी चले गए और सिगार पीते हुए यह शिकायत करते रहे कि आज वह भूखे ही रह गए हैं। यह शिकायत वह गला फाड़कर अपने दिल की गहराई से कर रहे थे। दो-तीन मिनट के बाद नए सिरे से यह ध्यान आ जाने पर कि उन्हें कितनी सख़्त परेशानी उठानी पड़ी है, वह किताब नीचे रखकर फिर शोकपूर्ण स्वर में क्रन्दन करने लगते, "भूखा रह गया! बिलकुल भूखा रह गया।"

अम्माँ उन्हें शान्त करने के लिए लाइब्रेरी में गईं, तो उनसे बोले, "मैं यह चीज़ कभी बरदाश्त नहीं करूँगा। वह दोज़ख़ी, खरदिमाग़, कीचड़ की कीड़ी, जिसे तुमने मेरे किचन में रखा है, मुझे इस तरह कब्र में भेजे, यह मैं बरदाश्त नहीं करूँगा। सुन रही हो?"

"देखो क्लेयर, मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि कल एक जापानी बावर्ची आ रहा है। आज डेलिया की आख़िरी रात है। मेरा ख़याल है वह तुम्हें पसन्द आ जाएगा। शुरू-शुरू में हमारे यहाँ का चलन समझने में उसे वक़्त ज़रूर लगेगा, मगर वह खानसामा अच्छा है।"

उस वक़्त तो पापा का मिज़ाज ठीक हो गया कि चलो डेलिया से छुट्टी मिल रही है, मगर अगली रात की पहली ही डिश खाते हुए जब उन्हें लगा कि उसका स्वाद पूर्वी देशों के खाने का-सा है, तो भौंहें चढ़ाकर अम्माँ से बोले, "मेहरबानी करके अपने इस तोबो को जाकर बता दो कि मैं कुली नहीं हूँ।" बाक़ी खाना खा चुकने के बाद उन्होंने प्लेट परे हटा दी और चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते हुए बेड-रूम की तरफ़ चल दिए कि मुझे आज खाने में ज़हर दिया गया है। कपड़े उतारकर वह सोफ़े पर जा लेटे और अपनी 'हाय-हाय' से हवा को भारी करने लगे।

बीच-बीच में ऊँघ आ जाने से वह कुछ देर के लिए रुक जाते या सुनने लगते कि हम लोग आपस में क्या बात कर रहे हैं। वह चाहते थे कि हम कोई बात करें ही नहीं; जब तक वह ठीक न हो जाएँ, तब तक सिर झुकाए बैठे रहें। थोड़ी देर में हमें याद दिलाने के लिए उनकी आवाज़ फिर गूँज उठती, "ज़हर खिला दिया, हाय आज तो मुझे ज़हर ही खिला दिया!"

इस पर अम्माँ जो नीचे लाइब्रेरी में थीं, अचानक हँस पड़ीं। पापा ने उनकी आवाज़ सुन ली। वह उछलकर सोफ़े से उठ खड़े हुए और पैर पटकते हुए अपने बेड-रूम से हॉल में चले आए। "मैं बीमार हूँ," उन्होंने पूरी आवाज़ के साथ गरजकर कहा, "और इस घर में किसी को उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है।"

अम्माँ जल्दी से ऊपर पहुँचीं कि देखें उन्हें क्या चाहिए? वह बोले कि बैठकर मेरी पीठ मलो। बीमार हों या न हों, इसमें उन्हें मज़ा आता था और उन्हें अच्छा लगता था कि अम्माँ घंटों बैठकर उनकी पीठ मलती रहें। कोई हाथ धीरे-धीरे उन्हें सहला रहा हो, तो उनकी आँखें मुँद जाती थीं और उनके विचारों और स्नायुओं में धीरे-धीरे शान्ति का प्रवेश होने लगता था।

अम्माँ की पीठ मलने-मलाने में कोई तुक नज़र नहीं आती थी। न ही उन्हें यह चीज़ पसन्द थी। कोई उन्हें मलने लगे, तो वे अपने को अकड़ा लेतीं और तुरन्त उसे रोक देतीं। इसलिए उन्हें पीठ मलने का तरीका भी नहीं आता था। जब पापा को मलना पड़ता, तो कुछ ही मिनटों में वह थककर चूर हो जातीं।

उस समय अम्माँ ने जल्दी-जल्दी जैसे बन पड़ा उन्हें थोड़ा मल दिया और दबा दिया। मगर ज्यों ही पापा ज़रा ढीले पड़ने लगे, तो उन्होंने कह दिया, "अब बस क्लेयर, बहुत हो गया।" इससे पापा को जो निराशा हुई उससे फिर याद हो आया कि उन्हें ज़हर खिलाया गया है। इसका एक ही इलाज, जो उनकी समझ में आया, वह यह था कि तोबो को निकालकर बाहर किया जाए।

अगले दिन बूढ़ी मारग्रेट को सन्देश भेजा गया कि वह तुरन्त वहाँ चली आए और शहर के घर को ताला लगाकर उसे खुद ही अपनी रखवाली पर छोड़ आए। वह हेरिसन स्टेशन से किराये के एक टट्टू पर आई। उसकी सूरत कुछ अजीब-सी हो रही थी। अपनी काली बॉनेट-हैट अपनी ठुड्डी के नीचे बाँधे चेहरे से तो वह मारग्रेट ही लग रही थी। मगर कुछ अजीब तरह से वह जगह-जगह से फूलकर भारी हो गई थी। जाने कहाँ-कहाँ से उसका जिस्म बाहर को निकल रहा था। पीछे के दरवाज़े से वह किसी तरह अन्दर दाखिल हुई, तो उसके सख़्त और चुभती हड्डी वाले नितम्ब ने मुझे छील दिया। मगर बाद में पता चला कि दरअसल वह नितम्ब नहीं, उसका चहेता फ्राइंग पैन था जिसे वह स्कर्ट के अन्दर अपनी कमर से बाँधकर लाई थी। उसी तरह कई बड़-बड़े चम्मच, एक कलछी, डेगची और दो जोड़ी जूते भी, जो उसने स्कर्ट के नीचे जगह-जगह कसकर बाँध रखे थे। बाँहों में उसने अखबार में लिपटे हुए बंडल ले रखे थे। अम्माँ ने पहले समझा कि उनमें उसके कपड़े होंगे। मगर मारग्रेट ने उन्हें खोला, तो जो चीज़ें निकलीं वे यह थीं—पनीर, खरबूजे, ताज़ा कॉफ़ी, मेमने की टाँग, कुछ शकरकंद और खाने-पीने की दूसरी चीज़ें। मारग्रेट को इस बात का कतई भरोसा नहीं था कि देहात में भी खाने-पीने का कुछ सामान मिल सकता है। वह अपने साथ

इस तरह पूरा-का-पूरा भंडार उठा लाई थी जैसे कि हम हेरिसन की बजाय उत्तरी ध्रुव में रह रहे हों।

''मगर मारग्रेट, तुम साथ में अपने कपड़े क्यों नहीं लाईं?'' अम्माँ ने कहा, ''एक एप्रन तक नहीं है।''

बेचारी मारग्रेट पहले तो अच्छी तरह होंठ बन्द किए रही और कुछ न बोली। फिर यह देखकर कि अम्माँ जवाब चाहती हैं, उसने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा, ''अपने और कपड़े भी मैंने इनके नीचे ही पहने हुए हैं।''

पता चला कि वह अपने दोनों हाथ इसलिए ख़ाली रखना चाहती थीं कि हमारे वास्ते कोई अच्छी-सी चीज़ खाने को ला सके। इसीलिए उस गरमी के दिन में भी वह अपनी बाज़ार की पोशाक के नीचे दो पोशाकें, कुछ कलफ से अकड़े हुए पेटीकोट, तीन एप्रन, दो नाइट-गाउन और इनके अलावा अपनी अलमारी के लगभग सभी कपड़े पहने हुए थी।

वह अपना सामान निकालकर शरीर को हलका करने ऊपर जा रही थी, तो पापा की नज़र उस पर पड़ गई। ''तुम आ गईं, मारग्रेट?'' और उनकी तबीअत सहसा ठीक होने लगी। ''शुक्र है परमात्मा का!''

8. नाक में दम

बूढ़ी माग्रेट ठीक वैसी ही बावर्चिन थी जैसी कि हमें चाहिए थी। वह अच्छे-से-अच्छे बावर्चियों की तरह पकवान तो नहीं बना सकती थी, मगर रोज़मर्रा का सादा खाना वह इतना अच्छा बनाती थी कि हमारे मुँह में पानी भर आता था। उसकी बनाई हुई एपल-पाई खाने में जो मज़ा आता था, वह और किसी की बनाई हुई एपल-पाई में मुझे आज तक नहीं आया। उसके भूने हुए आलू इतने स्वादिष्ट होते थे कि मैं सिर्फ़ उन्हीं से अपना पेट भर सकता था।

कभी मारग्रेट से भी ग़लती हो जाती थी। एक बड़ा राजसी स्टीक पापा के सामने पेश किया जाता। काटने से पता चलता कि वह अन्दर से ठीक नहीं पका। पापा का चेहरा निराशा से स्याह पड़ जाता। अगर धरती अपनी धुरी पर लड़खड़ाते लगती तो शायद वह उतनी निराशा से सिर न हिलाते। मेज़ के नीचे अपना पैर उठाकर वह आहिस्ता-आहिस्ता तीन बार ग़लीचे पर उससे भारी आवाज़ करते—थप...थप....थप।

यह सिगनल मिलते ही मारग्रेट नीचे बावर्चीखाने से निकल पड़ती और सीढ़ियों पर हर क़दम से आवाज़ करती हुई डाइनिंग-रूम के दरवाज़े के पास आ खड़ी होती।

"मारग्रेट, ज़रा यह स्टीक देखो।"

मारग्रेट एक क़दम आगे आकर फटी-फटी आँखों से तश्तरी को देखने लगती। "ओ मेरे परमात्मा, यह क्या हुआ?" वह धीमी आवाज़ में अपने से कहती। फिर वह तश्तरी उठाकर स्टीक को जितना हो सके उतना बेहतर बनाने के लिए वहाँ से चल देती। पापा मुरझाए हुए-से इन्तज़ार करने लगते, कभी सब्ज़ियाँ खाने लगते और कभी क्लेयरेट का एक गिलास ढाल लेते।

अच्छा खाना बने, उसमें पापा और मारग्रेट दोनों की एक-सी रुचि थी। इसीलिए उनमें मतभेद नहीं होता था। दोनों स्वभाव से ही एक-दूसरे को समझते थे जिससे दोनों में बहुत आत्मीयता रहती थी। अम्माँ की रुचि बस बच्चों में ही थी—खाना-पकाना उन्हें किसी ने नहीं सिखाया था। वह बस इतना ही चाहती थीं कि किसी तरह पापा को खुश रख सकें। मगर जब यह काम कठिन लगता, तो वह इसका भी ख़याल छोड़ देती थीं।

खाने के समय पापा ही मुर्ग़ा काटने या भुने हुए मांस के टुकड़े करने का काम करते थे। वह छुरी तेज़ करके इस काम में जुट पड़ते, तो मुझे देखने में अच्छा लगता। उनका हाथ इस सफ़ाई से चलता था कि क्या कहने! मुझे भूख लगी होती, इसलिए लगता कि वह काटने में ज़रूरत से ज़्यादा सावधानी और सफ़ाई बरतते हैं। मगर दो-एक पल में ही सब काम पूरा हो जाता। अकसर खाना बना भी उतना ही अच्छा होता जितनी अच्छी तरह वह उसे काटते। कभी-कभी तो खाना इतना अच्छा होता कि खुशी के मारे पापा के चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जातीं। हमारी तरफ़ आँखें झपककर वह उसी तरह तीन बार सधे हुए ढंग से पैर मारकर मारग्रेट को ऊपर बुला लेते। वह परेशान-सी दोनों हाथों के स्कर्ट सँभाले ऊपर आती। "क्या चीज़ ठीक नहीं बनी?" वह पूछती।

"मारग्रेट," पापा स्नेह के साथ उससे कहते, "यह चिकेन-कोरमा बहुत अच्छा बना है।"

मारग्रेट का झुर्रियों से लदा चेहरा एक तरफ़ को हट जाता और वह हथेली पापा की ओर मोड़े हुए नीचे की तरफ़ देखने लगती। यह अन्दाज़ वही था जिससे वह अपने प्रशंसकों से कहती होगी, "जाओ अपना रास्ता देखो।" पापा से वह यह तो नहीं कह सकती थी, मगर आँखों में एक ख़ास चमक लाकर वह उन्हें देख लेती और बिना एक शब्द भी कहे, बाहर निकलकर अँधेरी तंग सीढ़ियों से नीचे उतर जाती।

बीच-बीच में जब घर का ख़र्च बहुत बढ़ने लगता तो पापा के सामने जो तश्तरी पेश होती, उसमें तीन छोटे-छोटे फ्रेंच चॉप्स रखे रहते। अम्माँ के सामने अनाज में पकाये हुए ठंडे गोश्त की बड़ी-सी तश्तरी या आयरिश-स्टू रखा जाता। हम सब भाइयों की ज़बान बन्द हो जाती और हम आँखें गोल किए हुए सुन्न होकर बैठे रहते।

पापा अम्माँ की तश्तरी की तरफ़ देखते कि उनका खाना ज़ायकेदार लगता है या नहीं। वह अक्सर कहा करते थे कि मारग्रेट के स्टू से अच्छी कोई चीज़ नहीं होती। स्टू उन्हें ख़ासा अच्छा जान पड़ता। मगर उसमें उनकी पूरी तसल्ली न होती। वह तन अम्माँ से पूछते कि क्या उन्हें एक चॉप चाहिए?

अम्माँ हमेशा कहतीं, "नहीं।"

"ख़ूब अच्छे चॉप हैं," पापा उन्हें लुभाने की कोशिश करते। मगर अम्माँ फिर इन्कार कर देतीं और अपनी आँख उनकी तश्तरी से हटा लेतीं।

तब पापा ज़रा हिचकिचाहट के साथ हममें से एक-एक की तरफ़ देखते। उनके चार बेटे थे और चारों का हाज़मा काफ़ी अच्छा था। वह अपना गला साफ़ करते, जैसे एक-एक से अलग-अलग पूछने जा रहे हों कि क्या उसे चॉप चाहिए। मगर अकसर वह अपने से समझौते के रूप में इतना ही कह पाते, "किसी और को चॉप तो नहीं चाहिए?"

इस पर अम्माँ जल्दी से बेसब्री के साथ कहतीं, ''नहीं क्लेयर, ये सिर्फ़ तुम्हारे लिए हैं। बाक़ी सब लोग आज स्टू ही लेंगे।'' साथ ही वह प्यार से हमारी तरफ़ देखकर मुस्करातीं और यह निगाह रखते हुए कि हममें से कोई कुनमुनाता तो नहीं, वह जल्दी से उस मसले को हल कर लेतीं।

हम सब भाई तब ध्यान से देखने लगते कि पापा तीनों चॉप्स की किस तरह सफ़ाई करते हैं।

हमें मारग्रेट का स्टू पसन्द न हो, यह बात नहीं थी। हमें वह दुनिया का सबसे अच्छा स्टू लगता था। मगर स्टू तो हमें लंच में भी मिलता था। डिनर को हम ख़ास खाना समझते थे।

अगर हममें से किसी ने कभी पापा के पूछने पर हाँ कर दी होती, और उनके हिस्से एक ही चॉप आता, या एक भी न आता तो मुझे विश्वास है कि वह अम्माँ की तरफ़ देखकर पूछते, ''बाक़ी के चॉप्स कहाँ हैं?'' और सहसा बिगड़ खड़े होते। मगर जब वह हमसे लेने के लिए कहते थे तो दिल से ही कहते थे, हालाँकि इसके लिए उन्हें कोशिश बहुत करनी पड़ती थी। वह चाहते थे कि हरेक को भरपूर खाना मिले। मन से वह उदार थे। मगर उदारता के बदले में उन्हें स्वयं कष्ट उठाना पड़े तो उनका मिज़ाज ठिकाने नहीं रहता था।

मारग्रेट के गुज़रने के काफ़ी अरसे बाद एक रात पापा उसकी तारीफ़ कर रहे थे कि वह बहुत अच्छा खाना बनाती थी।

''बेचारी मारग्रेट! वह यह सुन सकती, तो बात थी!'' अम्माँ बोलीं।

उस छोटे क़द की उदार और नेक स्त्री का ध्यान आ जाने से वह कोमल ढंग से मुस्करा दीं। ''अगर किसी का स्वर्ग में जाना निश्चित था,'' वह बोलीं, ''तो वह मारग्रेट ही थी।''

इससे पापा को लगा जैसे अम्माँ स्वर्ग की सिफ़ारिश कर रही हों। उन्होंने ब्रांडी का एक घूँट भरा और बहुत सहज ढंग से कहा, ''मैं वहाँ जाऊँगा तो ज़रूर उसका पता करूँगा। वहाँ भी उससे कहूँगा कि मेरी देखभाल करती रहे।''

अम्माँ कुछ कहने को हुई, मगर उन्होंने अपने को रोक लिया।

''चुप क्यों हो गईं?'' पापा बोले।

''बात यह है क्लेयर डियर!'' अम्माँ ने कहा, ''मारग्रेट को तो स्वर्ग के किसी ख़ास हिस्से में जगह मिली होगी। वह बेचारी कितनी अच्छी थी! तुम बहुत ही ख़ुशक़िस्मत होगे अगर तुम्हें भी वहाँ उसी हिस्से में जगह दी जाए।''

''आह!'' पापा भौंहें चढ़कार एकदम बोले, ''नहीं दी जाएगी, तो मैं वहाँ उन लोगों के नाक में दम नहीं कर दूँगा!''

9. गीत का उपहार

मैं जब दस साल का था और ज्यॉर्ज आठ साल का, तो पापा को अचानक एक दिन याद आया कि वह तो हमें संगीत सिखाना चाहते थे। यूँ तो कई एक चीज़ें थीं जो उनके ख़याल में हर लड़के को सीखनी चाहिए थीं—जैसे तैरना, जूते पॉलिश करना और हिसाब रखना। स्कूल के काम में वह समझते थे कि उनके हर लड़के को एक नम्बर होना चाहिए। अब उन्हें ख़याल आया कि हर लड़के की शिक्षा में संगीत का होना भी बहुत ज़रूरी है। उनका विश्वास था कि हर लड़के को गाना और साथ में कोई-न-कोई साज़ बजाना आना चाहिए।

उनका ख़याल शायद ग़लत नहीं था। इस प्रोग्राम के हक में कहना हो तो बहुत-कुछ कहा जा सकता है। मगर दूसरी तरफ़ लड़कों और लड़कों में बहुत फ़र्क़ होता है। मेरे कान संगीत के लिए नहीं बने थे।

मगर पापा को इससे भला क्या मतलब? उनकी नज़र में लड़के कच्चे माल की तरह थे, जिन्हें ढालना एक बाप का फ़र्ज़ है। मैं कहता कि मैं नहीं गा सकता, तो वह कहते कि यह बकवास है। वह प्यानो के पास जा बैठते। कुछ सुरों को छेड़ते, गला साफ़ करते और 'स, रे, ग, म' का अलाप शुरू कर देते। इसमें उन्हें बड़ा आनन्द आता। कभी आवाज़ ऊँची करते, कभी नीची। मैं फिर ज़ोर देकर कहता कि मैं नहीं गा सकता। वह हँस देते। "तुम्हें क्या पता कि तुम क्या कर सकते हो और क्या नहीं कर सकते?" और फिर दृढ़ परन्तु कोमल स्वर में कहते, "मैं जो कहता हूँ वह करो।" उन्हें अपनी बात पर इतना विश्वास होता कि मुझे भी उस पर विश्वास होने लगता। मेरी नज़र में उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं था, लड़के के पास गला हो चाहे न हो, उनके चाहने से वह ज़रूर हासिल हो सकता था। बात चाहे हैरानी की थी, मगर जब वह कहते थे कि मैं गा सकता हूँ तो इसका मतलब था कि मैं ज़रूर गा सकता हूँ।

मैं सिर झुकाए उनके सामने जा खड़ा हुआ। उन्होंने पहला सुर निकाला। किसी चीज़ को समझाने में समय नष्ट करने वाले आदमी वह थे नहीं, और मेरे पल्ले कुछ पड़ नहीं रहा था कि वह मुझसे चाहते क्या हैं। मगर मैंने जहाँ-तहाँ उँगलियाँ मारते हुए उन असाधारण अक्षरों का आलाप आरम्भ कर दिया।

"अरे नहीं, इस तरह नहीं," पापा हताश-स्वर में बोले।

सारी चीज़ एक बार फिर दोहराई गई।

"नहीं, नहीं, नहीं," पापा ऊँची आवाज़ में बोले।

सारी चीज़ फिर कई बार दोहराई गई।

धीरे-धीरे मेरी समझ में आने लगा कि किसी भी तरह मेरी आवाज़ प्यानो की आवाज़ के साथ मिलनी चाहिए। मगर यह मेरी समझ में नहीं आया कि यह बात हो कैसे सकती है? प्यानो से जो आवाज़ें निकलती थीं वह गले की आवाज़ों-जैसी तो थीं नहीं और जितने भी सुर थे सब मेरे लिए अजनबी थे। मुझे उनमें से हर एक की आवाज़ अलग सुनाई देती थी, मगर मेरी आवाज़ उनसे कैसे मेल खा सकती थी? एक तरफ़ के सुरों से भारी आवाज़ें निकलती थीं और दूसरी तरफ़ के सुरों से बारीक। मैं भी अपनी आवाज़ को भारी, बारीक या कैसी भी बना सकता था। मगर मैं प्यानो तो नहीं बन सकता था।

और मेरा ख़याल है मैं पूरा एक घंटा सीधी टाँगों पर खड़ा रहा और उस दौरान में पापा पूरा ज़ोर लगाते रहे कि मैं किसी तरह गाने लगूँ। मगर बात जहाँ-की-तहाँ रही। न तो उन्होंने हार मानी और न ही मैं गा सका। दो-तीन बार तो मुझे लगा कि अब मैंने ठीक सुर को पकड़ा कि अब पकड़ा। मगर मेरी आवाज़ हमेशा मुझे दगा देती रही। वैसे आवाज़ बेचारी का भी क्या बस था? जल्द ही वही थोड़ी-बहुत पकड़ भी गायब हो गई। मुझे अपने गले से एक ख़ास आवाज़ ज्यों-की-त्यों निकालना बहुत अजीब लग रहा था। मगर पापा इस पर तुले हुए थे और मेरे लिए वे शब्द बहुत ही बेगाने थे—स, रे, ग, म, प, ध, नी, स—जैसे एक डरावना सपना हो। पापा ने एक साथ पूरी सरगम सिखाने की धुन छोड़कर अपनी माँग बहुत कम कर दी और कहने लगे कि मैं पहला सुर 'स' ही ठीक से गाकर दिखा दूँ। उन्होंने जिस तरह पूरा मुँह खोलने को कहा था, उसी तरह खोलकर मैंने किसी भी तरह ज़ोर से बोल दिया, 'स', सोचा शायद ज़ोर लगाने से काम बन जाएगा। पापा ने भौहें सिकोड़ीं और प्यानो पर सुर बजाया। मैंने फिर बोल दिया—'स'।

ज्यॉर्ज पार्लर के दरवाज़े के पास सोफे पर बैठा बहुत हमदर्दी के साथ मुझे देख रहा था। उसे कभी मेरी तरह मुश्किल नहीं उठानी पड़ती थी। ज्यॉर्ज बहुत अच्छा भाई था, मेरी बात मानता था और मुझे प्यार करता था। मैं भी उसे प्यार करता था। मगर इसमें मुझे बहुत कोफ़्त होती थी कि पापा के साथ मुश्किलें तो मैं झेलूँ और उसके लिए रास्ता आसान हो जाए। पापा बच्चों को सिखाने-पढ़ाने का सारा तजुरबा मेरे सिर से हासिल करते थे। उन्होंने बच्चों से न जाने क्या-क्या ज़मीन-आसमान की उम्मीदें लगा रखी थीं। मेरे ऊपर तजुरबा करने के बाद ही उन्हें धीरे-धीरे अपनी ग़लती का एहसास होता था। वह अपनी कोई उम्मीद आसानी से छोड़ने वाले नहीं थे और अपना

हर हठ पूरा करने के लिए बहुत देर ज़द्दोज़हद करते थे। आख़िर वह हताश होकर हिम्मत हार देते। मगर तब तक मेरा भुरता हो चुका होता। इसके बाद अगर वह मेरे भाइयों से भी वही ज़ोर आज़माई करते, तो उन बेचारों को चाहे कितनी भी तकलीफ़ होती मुझे तो कम-से-कम कुछ तसल्ली मिल जाती मगर नहीं। एक बार एक चीज़ में निराश होकर वह कोई और ही तजुरबा करने की सोच लेते और बड़ा लड़का होने के नाते वह नया तजुरबा भी मेरे ही ऊपर होता। ज्यॉर्ज और दूसरे भाई मेरी बनिस्बत कहीं चैन से रहते और मज़े से वक़्त काटते, जबकि मुझे रोज़ किसी-न-किसी अखाड़े में पापा के साथ कुश्ती लड़नी पड़ती।

अम्माँ अपना लम्बा स्कर्ट पहने कमरे में दाखिल हुईं पापा बिना हटे पता नहीं नौ-हज़ारवीं बार प्यानो का सुर बजा रहे थे और मैं उसी तरह बेहाल होकर बोल रहा था–'स'।

"क्लेयर, यह क्या हो रहा है?" अम्माँ ज़ोर से बोलीं।

पापा उछलकर खड़े हो गए। मेरा ख़याल है कि इस रुकावट के आ पड़ने से दिल में उन्हें खुशी हुई होगी, क्योंकि इस तरह हार माने बिना उन्हें इस झंझट से छुटकारा मिल गया। मगर वह यह बिलकुल नहीं चाहते थे कि ऐसे मौक़े पर उन्हें किसी तरह फीका पड़ना पड़े और उनका ख़याल था कि अम्माँ इस मामले में उनका ज़रा भी लिहाज़ नहीं करतीं। फिर उन्हें इस बात की भी झुँझलाहट थी कि हर चीज़ उनकी मरज़ी के मुताबिक क्यों नहीं होती? वह झुँझलाहट मेरे ऊपर पूरी नहीं निकली थी। जो बाका थी वह अम्माँ पर निकलने लगी। वह अम्माँ से बोले कि तुम मेहरबानी करके यहाँ से चली जाओ। मैं अपने और लड़के के बीच में किसी का दख़ल नहीं चाहता। मुझे किसी तरह की दख़लन्दाज़ी बरदाश्त ही नहीं। यह कहते हुए उन्होंने प्यानो का ढक्कन ज़ोर से बन्द कर दिया। साथ ही बोले, "मैं कह रहा हूँ कि मैं रोज़-रोज़ की इन ज़्यादतियों और दख़लन्दाज़ियों से तंग आ गया हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं यह सब बरदाश्त कैसे कर लेता हूँ!" और निकलकर वह सीधे अपने कमरे की तरफ़ चल दिए।

"तुम्हें अभी कमरे से वापस आना पड़ेगा," अम्माँ पीछे से बोलीं, "सूप खाने की मेज़ पर रखा जा रहा है।"

"मुझे खाना नहीं खाना है।"

"प्लीज़ क्लेयर! आज ऑयस्टर का सूप बना है।"

"मुझे नहीं चाहिए," कहते हुए पापा ने ज़ोर से किवाड़ बन्द कर दिए।

हम डरे हुए खाना खाने बैठ गए। मैं थका हुआ था। मगर सूप पीकर जिस्म में ताज़गी आने लगी। लगता था जैसे वह सूप न होकर स्टू हो। बढ़िया दूध, सीप का रस और बड़े-बड़े सीप! मैंने बहुत से छोटे-छोटे करारे क्रेकर और फ्रेंच टोस्ट का

एक टुकड़ा उसमें डाल लिया। सूप में भीगा हुआ गरम टोस्ट बहुत स्वादु लगा। मगर टोस्ट था थोड़ा-सा ही। पापा को वह बहुत पसन्द था, इसलिए उनका अलग रख दिया गया था। मगर सूप काफ़ी था—एक रकाबी पूरी भरी हुई थी। हम सब लड़कों ने दो-दो बार लिया।

हम अभी खा ही रहे थे कि पापा आ पहुँचे। गुस्सा तब भी चढ़ा हुआ था, मगर खाना उन्होंने ठीक से खा लिया। मेरा ख़याल है कि ताज़गी की ज़रूरत उन्हें भी महसूस हो रही थी। चॉप्स-मटर और टमाटर उन्होंने ख़ूब डट कर खाए। धीरे-धीरे उन्हें भूल गया कि हम लोगों ने उनके साथ ज़्यादती की थी।

हम लोगों के घर में खाने के वक़्त कोई-न-कोई घटना होती ही रहती थी और उन्हें झुँझलाने के लिए कोई-न-कोई नई बात, अजीब बात, मिल ही जाती थी जिससे पहले की बात उन्हें भूल जाती थी।

छोटी-छोटी झुँझलाहटें तो वह वैसे ही मन से निकाल देते थे। मगर कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिनकी छाप उनके मन से कभी नहीं जाती थी। इनमें एक बात यह थी कि अम्माँ यह कभी नहीं समझतीं कि वह अपने बच्चों की भलाई के लिए क्या-क्या करना चाहते हैं और ख़ामख़ाह दख़ल देकर उनके रास्ते में मुश्किलें खड़ी करती रहती हैं; दूसरे यह कि मैं बहुत भौंडा लड़का हूँ; और तीसरे, कि रेलगाड़ी में सवार होना आसान काम नहीं है।

यह नहीं कि इन बातों से उन्हें कुछ तकलीफ़ होती हो, या उनके आत्म-विश्वास में कमी आ जाती हो। खाना खाने के बाद उन्होंने अपना सिगार सुलगा लिया, एक दार्शनिक की तरह पीछे टेक लगकार बैठ गए और मज़े से लम्बे-लम्बे कश खींचते हुए अपनी स्याह कॉफ़ी पीने लगे। जब मैंने उनसे कहा, "गुड-नाइट पापा!" तो वह मेरी तरफ़ देखकर इस तरह मुस्कराए जैसे कोई हँसोड़ कुम्हार अपने सामने मिट्टी के एक अजीब टुकड़े को देखकर पल-भर के लिए मुस्करा दे। फिर उन्होंने बहुत प्यार से कन्धा थपथपा दिया और मैं सोचने चला गया।

10. सबसे अच्छा साज़

पापा ऊपरी प्रदेश में एक पुरानी रेलवे की व्यवस्था ठीक करने के लिए गए हुए थे। वहाँ से वह व्यवस्था ठीक करने के मूड में वापस आए और आते ही घर को उन्होंने ऊपर-नीचे करना शुरू कर दिया। मुझे गाना चाहे नहीं आया था, फिर भी उन्होंने हमें संगीत सिखाने का इरादा नहीं छोड़ा था। उन्होंने आते ही हम सब भाइयों को बुलाया और बतलाया कि हमें तुरन्त कोई-न-कोई साज़ बजाना सीखना होगा। "अब चाहे तुम्हें यह अच्छा न लगे," वह बोले, "मगर आगे चलकर तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं यह क्यों चाहता था? क्लेयरेन्स, तुम तो वायलिन सीखना शुरू करो और तुम ज्यॉर्ज, प्यानो की प्रैक्टिस करो। जूलियन तुम, ख़ैर तुम अभी बहुत छोटे हो। तो तुम दोनों बड़े भाई अपने सबक लेना शुरू कर दो।"

मैं इस आदेश को आसानी से नहीं पचा सका। दस साल की उमर में मैं और नया बन्धन अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था। दिन में स्कूल से आकर हमें खेलों के लिए पहले ही समय नहीं मिलता था, और अब हफ्ते में तीन दिन उस समय में से और कटौती होने जा रही थी। बाद में पता चला कि यह कटौती हर रोज़ के लिए थी क्योंकि बाक़ी दिन प्रैक्टिस करनी थी।

ज्यॉर्ज पार्लर में बैठकर बहुत ईमानदारी से प्यानो को कूटता हुआ अपना अभ्यास करता रहता। उसकी किस्मत अच्छी थी। वह अच्छा बजाने वाला तो नहीं था, मगर संगीत का थोड़ा-बहुत मस उसे था। फिर उसे जिस साज़ का अभ्यास करना था वह ख़ूब मज़बूत था और उसके हाथ से गिरने या टूटने का डर भी नहीं था। इसके अलावा उसके सुर भी नहीं मिलाने पड़ते थे। प्यानो में कई एक खूबियाँ थीं।

मगर मेरा रास्ता बहुत अँधेरा और ख़तरनाक था। सबक लेने के लिए बाहर सड़क की धूप से नीचे के अँधेरे तलघर में जाने में ही मेरी जान जाती थी। मगर यह तो शुरुआत थी। असली जद्दोजहद का सामना तो बाद में करना होता था।

वह सारा सिलसिला ही मेरे बस का रोग नहीं था। पहले तो वॉयलिन ही सिगार-बॉक्स-जैसी एक अजीब नाजुक-सी चीज़ थी जिसे बहुत सावधानी से हाथ में लेना पड़ता था। कहीं ज़रा भी मज़बूती नहीं, यहाँ तक नाजुक कि केस में रखने-रखाने

में टूट जाए। फिर मेरे मास्टर उससे भी अजीब थे। पास बैठकर लगता जैसे अचार के मर्तबान के पास बैठे हों। वैसे ठीक कहूँ तो वह बेचारे कुछ भी अजीब नहीं थे। मगर मेरे परिचय के और लोगों से भिन्न होने के कारण, मुझे ऐसे लगते थे। वह शायद सैकड़ों से अच्छे हों, मगर मुझे इसका पता नहीं था। वह 'फिलहारमोनिक' में वायलिन बजाते थे और बहुत गुणी आदमी थे। अधेड़ उमर थी और स्वभाव के गम्भीर थे, अपनी मजबूरी की वजह से उन्हें सबक देने का काम करना पड़ता था।

वह मुचड़ा हुआ काला कोट पहने होते और सोने की बदरंग घड़ी-चैन लगाए रहते। वह धातु के काले फ्रेम का छोटा-सा चश्मा लगाया करते। उनका वॉयलिन काला, चमकदार और ऊँची क्वालिटी का था और उनके हाथों में ख़ूब सधा हुआ था।

मेरा वॉयलिन भौंडा और किसी काम का नहीं था—बिलकुल नया और हल्के आम रंग का था।

वॉयलिन उनके लिए होता है जिन्हें संगीत का शौक हो। मैं उन लोगों में से नहीं था। मैं बहुत चाव के साथ बैंड की ऐसी धुनें सुनता था जिनके साथ-साथ 'लेफ्ट-राइट' किया जा सके। मगर बाद में हज़ार कोशिश करके भी मैं सीटी में वह धुन नहीं निकाल पाता था। मेरे मास्टरजी इस बात से वाकिफ़ नहीं थे। वह तो मुझे जीनियस मानकर ही चलना चाहते थे।

मैं नहीं जानता कि हर माँ को अपने बच्चे के पहली बार रोने की आवाज़ की याद रहती है या नहीं। मगर मेरा वॉयलिन, मेरे हाथों में आकर पहली बार जिस तरह रोया, मुझे उसकी अच्छी तरह याद है।

उन्होंने मुझे उस साज़ को ठोड़ी के नीचे दबाकर पकड़ना सिखाया। मैंने यह भी सीख लिया कि उस पर नीचे-ऊपर उँगलियाँ किस प्रकार चलाई जाती हैं। यह भी सीख लिया कि कमान के तारों पर फेरकर किस तरह आवाज़ें पैदा की जाती हैं।

मेरे मास्टर हर एम. का चेहरा एकाएक ऐसे हो गया जैसे सिरके का गिलास उनके गले से नीचे उँडेल दिया गया हो। उन्होंने साँस रोककर अपने होंठ भींच लिये और आँखें बन्द कर लीं। मैं शुरू में ही बहुत मधुर बजाने लगूँगा, ऐसा तो उन्होंने न सोचा होगा, मगर वह आवाज़ कुछ ऐसी निकली थी जैसे कोई भूत बोल उठा हो। उन्होंने वॉयलिन मुझसे छीन लिया। उसे ऊपर-नीचे से देखा और उसकी खूँटियाँ ठीक कीं। फिर जैसे उसे दिलासा देने के लिए, उसे अपनी कमान से छू दिया। वॉयलिन नया था और ख़ास अच्छा नहीं था। मगर उनके हाथों में उससे जो आवाज़ें निकलीं, वे काफ़ी स्वाभाविक थीं और एक से दूसरा सुर अलग पहचाना जाता था। चाहे उनमें संगीत का वह रस नहीं था, फिर भी वे ऐसी आवाज़ें नहीं थीं जिनका इस धरती के साथ कोई सम्बन्ध ही न हो।

बहुत-सी हिदायतें देकर उन्होंने वह साज़ मुझे लौटा दिया। मैंने उसे ठोड़ी के नीचे दबाया और दूसरी तरफ़ से कसकर पकड़ लिया। जैसे बताया गया था, ठीक वैसे ही कमान को पकड़कर, मैं उत्सुकतापूर्वक उनके चेहरे की तरफ़ देखने लगा।

"अब शुरू करो," वह परेशान-से बोले।

मैंने धीरे से कमान को उठाया और फिर उसे नीचे ले आया।

इस बार हमारे उस तलघर में एक-साथ दो अचानक चीख़ें सुनाई दीं। इनमें से एक मेरे वॉयलिन में से निकली थी और दूसरी हर एम. के अन्दर से।

मगर जल्द ही मास्टरजी सँभल गए और हौसले के साथ मुस्कराते हुए मुझसे बोले कि मैं चाहूँ तो थोड़ी देर आराम कर लूँ। शायद उन्होंने सोचा हो कि मैं अपने होश ठिकाने लाने के लिए कुछ देर लेटना चाहूँगा। मगर मुझे लेटने की ज़रूरत महसूस नहीं हो रही थी। मैं यही चाहता था कि किसी तरह सबक खत्म हो। मगर मास्टरजी काफ़ी चकरा गए थे और तुरन्त आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। उन्होंने हताश भाव से इधर-उधर देखा और संगीत की पुस्तिका उठाकर बोले कि पहले वह मुझें उसमें से सबक देंगे। हम साथ-साथ खिड़की के पास की सीट पर बैठ गए। वह किताब गोद में रखकर सुरों की तरफ़ इशारा करते हुए मुझे उनके नाम बताने लगे।

थोड़ी देर के बाद, कुछ ठीक होने पर, उन्होंने अपना वॉयलिन उठा लिया और मुझसे बोले कि मैं ग़ौर से देखूँ कि वे तारों पर किस तरह उँगलियाँ चलाते हैं। इसके बाद फिर हौसला करके उन्होंने मुझे वॉयलिन उठाने की इजाज़त दे दी। "धीरे से बजाना, बहुत धीरे से," उन्होंने याचना की और स्वयं दीवार की तरफ़ देखने लगे।

जिस किसी तरह वह दोपहर बीता। मगर उस अनुभव ने उन्हें अन्दर से हिला दिया। आधा समय तो मेरी ग़लतियों ने उन्हें पागल किए रखा और आधा समय अपने अन्दर की परेशानी उन पर छाई रही और वह आँखों पर हाथ रखे रहे। लग रहा था जैसे बीमार हों। उन्होंने कितनी ही बार घड़ी की तरफ़ देखा और उसे हिलाया कि कहीं खड़ी तो नहीं हो गई। मगर घंटा पूरा होने से पहले वह उठे नहीं।

यह बुध की बात है। दूसरा सबक मुझे शुक्र को लेना था। इस बीच उन्हें अपने से कितना लड़ा पड़ा होगा इसका मैं हल्का-सा अनुमान ही लगा सकता हूँ। उन दिनों तो मैं यह बात सोचता भी न था। वह जब नया सबक देने के लिए आए तो वह मुझे पहले से बहुत बदले हुए, बहुत सख़्त नज़र आए। नाराज़गी की जगह उनमें तल्ख़ी और गुस्से की जगह कड़वाहट आ गई थी। उन्होंने मुझसे कोई बुरी बात नहीं कही। मगर हम दोनों में अब वह मेल नहीं रहा। वह कभी तो मुँह में कुछ बड़बड़ाने लगते और कभी बुरा-सा मुँह बनाए, काग़ज़ पर छोटी-छोटी रक़में लिखकर काग़ज़ को फाड़ देते।

तीसरे सबक के दौरान में उनकी आँखों में आँसू भर आए। वह उठकर पापा के पास चले गए और उनसे बोले कि उन्हें अफ़सोस है कि मैं इस ज़िन्दगी में वह साज़ बजाना नहीं सीख सकता।

मगर पापा को यह बात पसन्द नहीं आई। उन्होंने यह कहकर मास्टरजी को लौटा दिया कि आप सिखाइए, लड़का ज़रूर सीख जाएगा। दो मिनट में ही मास्टरजी लड़खड़ाते हुए नीचे आ पहुँचे। वह गए तो बहुत ताव के साथ थे—यह गुर्दा दिखाने की सोचकर कि सच बात कहने के लिए वह बँधी हुई आमदनी भी छोड़ सकते हैं। मगर लौट आए तो उनकी आमदनी तो बरकरार थी। मगर चेहरे से लग रहा था जैसे वह वीराने में भटक गए हों और अपने होश-हवास कायम रखने का उनके पास कोई ज़रिया न हो। मुरझाये हुए मन से वह जाने मुँह में क्या-क्या बड़बड़ाते रहे—कभी तकदीर को कोसते और कभी अमरीका को।

परन्तु उन्होंने संघर्ष छोड़ दिया और मैंन में स्वीकार कर लिया कि उनका भाग्य यही है। मैं उन्हें इन्सानी नस्ल से बाहर की एक ऐसी अभागी चीज़ नज़र आता था जिसके साथ माथा-पच्ची करना उनके लिए ज़रूरी था। यह काम कितना ही बुरा और मेहनत का क्यों न हो, उन्हें अब इसे करना ही था।

और उस तरह कष्ट पाने वाले वह अकेले ही नहीं थे। अम्माँ अपनी आशंकाओं के बावज़ूद मुझसे थोड़ी-बहुत उम्मीद रखती थीं। मगर दो-एक हफ्ते बाद उन्हें मारग्रेट से बात करते सुनकर मुझे पता चल गया कि वह इस विषय में क्या सोचती हैं। मैं नीचे दरवाज़े के पास बैठा एक स्वर को हलाल कर रहा था। अम्माँ नीचे आकर दरवाज़े से बाहर किचन के हॉल में खड़ी थीं और धीमे स्वर में कह रही थीं, ''ओह, मारग्रेट!''

मैंने घूमकर देखा कि मारग्रेट एक केक पका रही थी। उसने मुँह बनाया और मुट्ठियाँ भींचे हुए अपनी बाँहें उठाकर उन्हें फिर नीचे ले आई।

''मारग्रेट, मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ?''

''बेचारा लड़का!'' मारग्रेट बोली, ''इससे यह काम नहीं होने का।''

यह सुनकर मुझे ज़िद चढ़ गई। वह तो ऐसे बात कर रही थी जैसे मैं बिलकुल गावदी होऊँ। मैं हमेशा सोचता था कि ऐसा कोई काम नहीं है जो मैं नहीं कर सकता।

मैंने तय कर लिया कि अब यह चीज़ सीखकर ही रहूँगा। इतिहास बताता है कितने ही लोगों ने इस तरह की झूठी अकड़ में ख़ामख़ाह रात-दिन का दर्द सहा है और यह चीज़ मनुष्य-जीवन के कितने बड़े खोखलेपन को प्रकट करती हैं। मगर मुझे इतिहास का पता नहीं था। जो थोड़ा-बहुत पता था उसमें मुझे बहुत आकर्षण प्रतीत होता था। ऐसे व्यर्थ के प्रयत्न मुझे बहुत बड़े साहस का उदाहरण लगते थे, कोई भी साहस की बात, वह कितनी ही व्यर्थ क्यों न हो, मुझे बहुत आकर्षक लगती थी।

मगर अपने तलघर में साहस दिखाने का मौका नहीं था। उसके लिए तो लड़ाई का मैदान या वैसी ही कोई जगह चाहिए। यहाँ बात इतनी ही थी कि लोग मुझे फूहड़ समझ रहे थे, जिससे मेरे स्वाभिमान को चोट पहुँची थी। मैं साज़-संगीत से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, मगर अब वास्ता पड़ ही गया था तो हार मानना मुझे मंजूर नहीं था। एक लड़का लोगों को यह जतलाने के लिए कि वह उतना फूहड़ नहीं जितना कि लोग उसे समझते हैं, क्या-क्या मेहनत नहीं कर सकता है।

इस बीच मुझे और मास्टरजी को इस नई बात का पता चला कि मेरी आँखें कमज़ोर हैं। वॉयलिन एक ऐसा साज़ था जो मेरी गरदन को अकड़ाए रखता था और मैं नीचे झुककर संगीत की पुस्तक में से सुरों को ठीक से नहीं पढ़ सकता था। पहले मास्टरजी को यह पता नहीं चला कि मैं इसी वजह से अकसर गलतियाँ कर जाता हूँ। जब आख़िर हम दोनों को इस दोष का पता चला, तो मास्टरजी के मन में फिर से उम्मीद जाग आई कि हो सकता है सारी मुसीबत यही हो और इसके ठीक हो जाने से मैं एक इन्सान की तरह वॉयलिन बजाने लगूँ।

मगर पापा को यह बात कौन बताए? वह कैसे यह मान सकते थे कि उनके लड़के की, जोकि बिलकुल उनकी तस्वीर है, आँखों में किसी तरह का नुक्स है। डर था कि वह फ़ौरन यह न सोच लें कि उनके लिए ख़ामख़ाह एक और मुसीबत खड़ी की जा रही है, और परेशान होकर चिल्लाने न लगें इसलिए मास्टरजी ने अपना चश्मा मुझे दे दिया। उस चश्मे से काम ठीक चलने लगा। धुँधले सुर अब मुझे कुछ टेढ़े-मेढ़े मगर काफ़ी साफ़ और बड़े-बड़े नज़र आते। मुझे वह चश्मा कभी नहीं भूलेगा, चाहे था वह गन्दा और पुराना ही। मैं उसे गिरा न दूँ, इस ख़याल से मास्टरजी पहले देने में हिचकिचाते थे। साधारण ऐनक होती तो बात दूसरी थी, मगर वह पिंसनेज़ चश्मा था। उसे नाक पर स्थिर रखने के लिए मुझे बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। आँखों के पास से नाक पतली होने की वजह से मुझे वह नाक के बीचों-बीच रखना पड़ता था क्योंकि वहाँ मांस ज़्यादा था। सिर को भी थोड़ा पीछे को झुकाना पड़ता था क्योंकि म्यूज़िक-स्टैंड मेरे क़द के लिहाज़ से कुछ ऊँचा था। कभी-कभी मास्टर जी मुझे स्टूल पर खड़ा कर देते और चेतावनी देते रहते कि मैं गिरूँ नहीं। इस तरह जब मैं तैयार हो जाता और मास्टरजी बिना चश्मे के अन्धे हो हो जाते तो मैं फिर से सुरों की तोड़-फोड़ का काम आरम्भ कर देता।

पूरी सरदी मैं इस काम में लगा रहा। मुझे घर के लोगों का ध्यान नहीं रहता था। हमारे यहाँ घर को गरम रखने के लिए एक भट्टी थी जिससे गरम हवा की नालियाँ हॉल में से होकर सब कमरों में ले जाई गई थीं। टीन की उन बड़ी-बड़ी नालियों में से गूँजती हुई मेरी वॉयलिन की आवाज़ घर से सब हिस्सों में सुनी जा सकती थी। जब मैं प्रैक्टिस कर रहा होता, तो घर में और कोई कुछ भी नहीं कर

सकता था। कोई हमें मिलने के लिए आता, तो फौरन ही वापस चला जाता। अम्माँ बेबी को लोरी भी नहीं दे पाती थीं। घंटा-भर जब तक मेरी स्वर-साधना चलती रहती, वह बैठी घड़ी को देखती रहतीं। फिर नीचे आकर चिल्लाकर कहतीं कि अब बस करो, वक़्त हो गया है। वह देखतीं कि मेरा माथा गीला है, सिर के बाल भी गीले होकर खड़े हो गए हैं, कपड़े भी धीरे-धीरे भीगते जा रहे हैं और मैं लगातार आरा चलाने में लगा हूँ। मेरे कॉलर की बुरी हालत देखकर वह कहतीं कि मैं जाकर उसे बदल लूँ। "नहीं अम्माँ, नहीं," मैं उनसे कहता, क्योंकि मेरा मन होता कि अब जल्दी से खेलने निकल जाऊँ। अब सोचता हूँ तो लगता है कि उन्हें मेरे मुचड़े हुए कॉलर का नहीं, इस बात का ख़याल होता था कि मुझे बहुत ज़्यादा पसीना आया है इसलिए बाहर बर्फ़ में जाने से पहले मैं अपने-आपको थोड़ा सुखा लूँ।

अम्माँ ने वह सरदी बहुत मुश्किल से काटी। उन्हें शायद बेबी की वजह से भी परेशानी होती थी। कभी-कभी वह पापा से बहस करतीं, पर पाप कब किसी की बात मानते थे? वह चट्टान की तरह अटल रहे कि लड़का सीख रहा है और ज़रूर सीखेगा। शॉपेनहावर ने बहस करने के उसूलों में लिखा है कि अपना केस कमज़ोर हो, तो उसे जीतने के लिए दलील को असली बात से हटाकर चालाकी से किसी और बात की तरफ़ ले जाना चाहिए जो चाहे बहुत फिजूल लगे मगर हो बहुत ठोस। पापा ने शॉपेनहावर नहीं पढ़ा था और चालाक भी वह नहीं थे। मगर बहस के उसूलों में कुदरती तौर पर वह बहुत तेज़ थे। एक तो उनकी आवाज़ बहुत ऊँची और ज़ोरदार थी और इस तरह पूरा गला फाड़कर बोलते थे कि सामने का आदमी वैसे ही घबरा जाता था। दूसरा गुण उनमें यह था कि वह हमेशा मन में यह सोचकर चलते थे कि उनके विरोधी की बात ग़लत है। इसलिए दूसरा एक-आध दलील में जीत भी जाए, तो वह जीतना जीतना नहीं होता था। पापा बात को किसी तरह खींच-तानकर ऐसी जगह ले आते जहाँ जीत आख़िर सत्य की, अर्थात्, उनकी ही होती। अम्माँ ने उनसे कहा कि लड़के की संगीत में ज़रा भी रुचि नहीं है, तो पापा ने जवाब क्या दिया? बोले कि वॉयलिन इन्सान के बनाए हुए साज़ों में सबसे अच्छा साज़ है। और इस वज़नदार बात से अम्माँ को चुप कराकर वह आगे कहने लगे कि यह लड़के की खुशक़िस्मती है कि उसे यह साज़ सीखने का मौका मिला है। ज़रूरत है सिर्फ़ लगे रहने की। कोई भी काम हो, लगे रहने से ही होता है। इसलिए मोटो यह है कि इन्सान को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

फिर वह बतलाने लगे कि कई तरह की निराशाओं के बावजूद उन्होंने ज़िन्दगी में कभी हिम्मत नहीं हारी, और न ही आगे कभी हारेंगे। उनके लड़के को भी ऐसा ही करना चाहिए। बोले कि तुम लोगों में से कोई नहीं समझता कि मैंने ज़िन्दगी में क्या-क्या देखा है। अगर मैं भी पहली अड़चन पर ही हिम्मत हार देता, तो इस वक़्त

हम लोग कहाँ होते? सारा ख़ानदान कहाँ होता? उसका जवाब यही था कि या तो हम लोग होते ही नहीं, और होते तो कहीं गन्दगी में से अपने लिए रोटी के टुकड़े बीन रहे होते—बल्कि यहाँ तक कि उन्होंने हिम्मत हार दी होती, तो शायद हम लोग पैदा ही न होते।

जब पापा ने इतनी बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को पार कर लिया था, तो उसके सामने मेरी वॉयलिन सीखने की कठिनाई क्या माने रखती थी? मैंने इस पहेली से जूझने के लिए अपने को फिर से तैयार कर लिया। हिम्मत न हारने के उसूल का मास्टरजी पर भी काफ़ी असर पड़ा। वह उम्र में पापा से बड़े थे, मगर पापा-जितना पैसा उन्होंने नहीं कमाया था। एक सफल कारबारी आदमी के तजरबे के सामने उन्हें भी झुकना पड़ा। मास्टरजी को वैसी सफलता मिली होती, तो वह कभी मेरे-जैसे लड़के को संगीत सिखाने का काम न करते। पैसे की ज़रूरत उन्हें मेरे साथ जिस काल-कोठरी में बैठने के लिए मजबूर करती थी, वहाँ उन्हें इस बात का एहसास होने लगा कि उन्हें भी दुनियादारी के रंग-ढंग सीखने चाहिए। जब पापा अपनी तर्जनी हिलाते हुए उन्हें बता रहे थे कि आदमी उन्नति की सीढ़ी पर चढ़कर रुपया किस तरह कमा सकता है, तो वह इस तरह दिल लगाकर सुन रहे थे जैसे वे बातें परमात्मा के मुँह से निकल रही हों।

इन बातों से वह जिस नतीजे पर पहुँचे, वह यह था कि आदमी हिम्मत न हारे, तो दौलत उसके लिए वह रखी है।

इस तरह हमारी कोठरी हारे हुए दावों की भूमि ही बनी रही।

मैं मास्टरजी से अकसर प्रार्थना करता रहता था कि वह मुझे एकाध धुन ज़रूर सिखा दें। चाहे मैं कोई भी धुन ठीक से गुनगुना नहीं पाता था, फिर भी धुनें मुझे अच्छी लगती थीं और मैं सोचता था कि अभ्यास के समय धुन बजाने में कुछ-न-कुछ सुख तो मिलेगा ही। मतलब, दूसरों की बात मैं फिर भूल गया था।

मास्टरजी निराश-भाव से मुँह में कुछ कहते रहे कि इससे यह होगा वह होगा और मैं आदर्शपूर्वक सुनता रहा। फिर उन्होंने एक फटी-पुरानी किताब खोली और बहुत से पन्ने पलटकर हिचकिचाते हुए एक आसान-सी धुन खोज निकाली—ऐसी धुन जिसे मैं बजा सकूँ और आस-पड़ोस के लोग सुन सकें।

बसंत के दिन थे और हमारी खिड़कियाँ खुली रहती थीं। वह धुन शीघ्र ही बहुत लोकप्रिय हो गई।

सालों पहले जिस संगीतकार ने बहुत कोमल भावनाओं से वह धुन बनाई होगी, उसे पता होता कि मैडिसन-एवेन्यू में उसका क्या हाल होगा, तो जाने उसने क्या किया होता? मेरे हाथों दफ़न होने से पहले उस धुन को उस शान्त मोहल्ले के लोगों से भी जाने क्या-क्या गालियाँ सुननी पड़ीं। पड़ोसियों के दिमाग़ में मैंने उस धुन का

एक नक्शा खींच दिया, चाहे वह नक्शा असली धुन का न होकर मेरे अपने ही तरह-तरह के प्रयोगों का रहा हो। मुझे एक वही धुन आती थी, इसलिए मैं उसी को बार-बार बजाया करता था।

किसी भयानक-से-भयानक चीज़ से भी इन्सान का बार-बार वास्ता पड़े, तो उसका डर धीरे-धीरे कम होने लगता है। मगर जो भयानक आवाज़ें मैं पैदा करता था, वे हर बार नई-नई होती थीं। इतना मैं कह सकता हूँ कि मेरे पसीने से भीगे हुए हाथों में भी धुन का बाहरी ढाँचा वही रहता था। एक स्थल था जहाँ स्वर डगमगाता हुआ सीधा ऊपर को चढ़ता था। फिर वह कठिन स्थल आता था जहाँ वह काँपता, लड़खड़ाता या बिलकुल रह जाता था। इसके बाद एक झटके के साथ मैं फिर शुरू करता था। इस काम में मैं बहुत होशियार था। दोपहर को जब साज़ का स्वर उस कठिन स्थल पर पहुँचता तो पड़ोस के लोग आने वाले झटके के इन्तज़ार में जो कुछ उनके हाथों में होता, वह नीचे गिरा देते। वह उस क्षण से बचना भी चाहते थे और बेसब्री से उसका इन्तज़ार भी करते थे।

मगर रोज़-रोज़ उस धुन में ऐसी नई बात क्या होती थी जो लोगों को नई पीड़ा देती थी? मैं बताता हूँ। वॉयलिन के तार सिरे के पास खूँटियों से लिपटे रहते हैं और उनकी आवाज़ ठीक करने के लिए खूँटियों को घुमाना और कसना पड़ता है। मास्टरजी जाते वक़्त वॉयलिन के सुर ठीक कर जाते थे। मगर बाद में कभी कोई तार टूट जाता या कभी कोई खूँटी ढीली पड़ जाती। उसका तार झूल जाता और उसमें से आवाज़ ही न निकलती। मुझे तार को कसना पड़ता। संगीत की समझ न होने से मैं उसे कैसे भी कस देता।

बेचारे पड़ोसियों को क्या पता था कि मैं कब किस तार को कितना कस दूँगा। मैं खुद नहीं जानता था। मैं खूँटी को घुमा-घुमाकर तार को इतना कस देता कि उसमें से अच्छी ऊँची आवाज़ निकलने लगती। इस तरह न पड़ोसियों को पता होता और न मुझे कि किस दिन कौन-सा तार एक नए ढंग से कसा होगा और उससे अपने-आप उस धुन में जाने कौन-कौन-से गम्भीर परिवर्तन हो जाएँगे।

वह बेचारा अभागा गीत सारा वसन्त मेरी खिड़की के रास्ते बाहर जाया करता और धूप हो या बरसात, रोज़ घंटा-भर बाहर हवा में छटपटाया करता। पूरा वसन्त मैं और मेरे पड़ोसी साथ-साथ किसी तरह शिखर की ओर बढ़ा करते, शिखर पर पहुँचकर साथ-साथ लड़खड़ाते और फिर कराहते हुए साथ-साथ खुले आसमान में आ गिरते। अम्माँ के पास उसकी इतनी शिकायतें पहुँचने लगीं कि उन्होंने सोचा कि अब उन्हें कुछ-न-कुछ करना पड़ेगा। उन्होंने पापा से कहा कि यह चीज़ अब और नहीं चलेगी—बिलकुल नहीं। "इस रोज़-रोज़ के तूफान को अब रोकना पड़ेगा," उन्होंने कहा।

पापा ने सिर्फ़ मुँह बिचका दिया।

अम्माँ रोने लगीं कि इस चीज़ के मारे उनका बुरा हाल हो रहा है। पापा बोले कि वह गुस्से में बात कर रही हैं, और जिस तरह बढ़ा-चढ़ाकर वह मेरे सुरों का वर्णन कर रही हैं, वह सिर्फ़ उनका हिस्टीरिया है। "तुम हमेशा चिल्लाकर बात करती हो," वह चिल्लाकर बोले, "तुम्हें ख़ामोश रहना सीखना चाहिए।"

"मगर तुम तो घर से गए रहते हो, तुम्हें सुनना पड़े तो पता चले।"

पापा ने कन्धे हिला दिए कि यह सब बकवास है।

अम्माँ उन्हें शरम दिलाने की कोशिश करने लगीं कि जो आवाज़ें मैं पैदा करता हूँ, उनके लिए ज़िम्मेदार वही हैं और सब लोग इसके बारे सौ-सौ बातें कहते हैं।

मगर पापा इस दृष्टि से सहमत नहीं थे। उनका ख़याल था कि अगर कहीं कोई दोष है तो उसकी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर है। उन्होंने मुझे अच्छा वॉयलिन ले दिया था, अच्छा मास्टर रख दिया था। मतलब, उन्होंने जो कुछ किया था, उससे ज़्यादा दुनिया का कोई बाप नहीं कर सकता था। इसके बावज़ूद अगर मैं वॉयलिन से बेढंगी आवाज़ें निकालता था तो अम्माँ का फर्ज़ था कि वह मेरे साथ और सख़्ती बरतें और मुझसे और मेहनत कराएँ।

मेरे लिए बात हद को पार कर चुकी थी। और कोशिश मैं ख़ाक करता! अम्माँ ने जब पापा का फैसला मुझे सुनाया तो मैंने कहा कुछ नहीं, मगर मेरा शरीर विद्रोह कर उठा। अपने को डिसिप्लिन में रखने की भी एक हद होती है। वसन्त के दिन थे और मैं बाहर जाकर खेलना चाहता था। अब जब बाहर से लड़कों के खेलने आवाज़ें की सुनाई देतीं तो मैं अपनी प्रैक्टिस गोल कर जाता। सबक लेने के लिए या तो घर देर से पहुँचता या पहुँचता ही नहीं। धीरे-धीरे मेरा सबक लेना बिलकुल बन्द हो गया।

पापा बहुत तिलमिलाए। उनकी आख़िरी दलील यह थी कि वॉयलिन पर पच्चीस डॉलर ख़र्च हुए हैं, अगर मैंने बजाना न सीखा तो उतनी रकम बरबाद जाएगी, जोकि उनकी तौफ़ीक के बाहर की बात है। मगर उन्हें समझा दिया गया कि मेरी जगह मेरा छोटा भाई जूलियन बड़ा होने पर सीख लेगा। धीरे-धीरे गरमी आ गई और हम तीन महीने के लिए समुद्र-तट पर चले गए। इस घपले ने पापा को हरा दिया और मुझे छुट्टी मिल गई।

पतझड़ में एक दिन नन्हें जूलियन को मेरी जगह नीचे तलघर की कैद में पहुँचा दिया गया। उसे कितने दिन वहाँ रखा गया, मुझे ठीक याद नहीं। मगर वह कई साल वहाँ रहा। उसे संगीत की समझ थी, इसलिए मेरा ख़याल है कि वह कुछ अच्छा ही बजाने लगा होगा। इससे मेरे मास्टरजी को आख़िरकार कुछ सुख मिला होता, मगर ऐसा नहीं हुआ। जूलियन को सिखाने के लिए एक और ही छोटी उम्र का मास्टर रखा गया था। पापा ने कहा था कि हर एक को सिखाना नहीं आता।

11. माँ को हिसाब सिखाना

पापा हमेशा अम्माँ से कहते थे कि उन्हें पता होना चाहिए कि घर में क्या ख़र्च कहाँ और किस तरह होता है। वह खुद ढंग से चलने वाले आदमी थे और उन्हें व्यापार की अच्छी ट्रेनिंग भी मिली हुई थी। दफ़्तर के अलावा उन्होंने घर में भी हिसाब की कापियाँ रख रखी थीं, अपने व्यक्तिगत ख़र्च की कापी, जनरल, और लेजर जिनमें वह दोहरी लिखाई की पद्धति से हिसाब रखते थे। उनके घरेलू लेजर से फ़ौरन पता चल सकता था कि साल या महीने में उनका कपड़ों का, क्लब का या सिगारों का कितना ख़र्च हुआ है। उसमें हर चीज़ लिखी रहती थी। इससे उन्हें पता रहता था कि पिछले साल से इस साल कहाँ ज़्यादा ख़र्च हुआ है और कहाँ कम किया जा सकता है।

उनका ख़याल था कि उनकी शादी से पहले तक तो वे कापियाँ बिलकुल ठीक रहती थीं। मगर शादी के बाद से उनमें गड़बड़ होने लगी थी। अब उन्हें इससे कुछ पता नहीं चलता था। अपने व्यक्तिगत ख़र्च का तो उन्हें अब भी मालूम था। मगर घर के ख़र्च में सामने वह ख़र्च दाल में नमक के बराबर था। घर के ख़र्च का उन्हें कुछ भी पता नहीं चल पाता था, क्योंकि इसका कोई ब्यौरा तो रहता नहीं था, रहता था बस गरदन तोड़ देने वाला टोटल। उनका पैसा जाने कहाँ-कहाँ फूँका जा रहा था, उनके पास इसका कोई हिसाब ही नहीं रहता था।

हर थोड़े दिनों के बाद वह बैठकर अम्माँ को अपना तरीका समझाने लगते। मगर वह चमड़े की जिल्द वाले मोटे-मोटे लेजर, उनकी लाल रंग की तरतीबवार लकीरें, और हर छोटे-मोटे ख़र्च को उनमें दर्ज करना, यह सब अम्माँ के बस का नहीं था। अम्माँ समझती थीं कि जिस तरह मरदों को इससे कोई वास्ता नहीं होना चाहिए कि पार्लर की सफ़ाई हुई है या नहीं, उसी तरह औरतों को हिसाब-किताब से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए। सामाजिक जीवन से उनका परिचय शादी बाद ही हुआ था। वह तब स्कूल से निकली ही थीं। चाहे वह अपनी क्लास में फ़र्स्ट आती थीं, लिखने में और हिज्जों में बहुत अच्छी थीं और अच्छी फ्रेंच बोलती थीं, फिर भी लेजर नाम की चीज़ उन्होंने पहले नहीं देखी थी। इसलिए जब भी पापा उन्हें लेजर दिखाते, तो वह विद्रोह कर उठतीं।

पापा को हिन्दसों का कुछ ऐसा शौक था कि पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं आता था कि अम्माँ सचमुच उस चीज़ से नफ़रत करती हैं। वह सालों तक यह उम्मीद लगाए रहे कि अभी वह छोटी हैं, ज़रा बड़ी हो जाएँ, तो ज़रूर इसी चीज़ में दिलचस्पी लेने लगेंगी। वह बहुत विश्वास के साथ अम्माँ से कहा करते कि जल्द ही वह हिसाब रखना सीख जाएँगी—मामूली-सी तो बात है। तब तक वह बस अपने ख़र्च का ब्यौरा लिखती रहा करें। जब तक वह उस ब्यौरे को लेजर में नहीं उतार सकतीं, तब तक वह खुद उतारते जाएँगे।

मगर वह दिन कभी नहीं आया।

कुछ ख़र्च का तो पापा को पता रहता था, क्योंकि उनको उसके बिल अदा करने होते थे। मगर इतने से क्या होता था? यूँ उन बिलों में भी कितना ही ऐसा ब्यौरा उन्हें मिल जाता था जिसे देखकर वह सुन्न हुए बैठे रहते थे, फिर भी बहुत सा ख़र्च ऐसा था जिसके लिए वह कहते कि उन्हें उसका सिर-पैर कुछ समझ नहीं आता। बहुत-कुछ ऐसा होता जिस पर वह विश्वास ही न कर पाते।

हर बार वह अम्माँ को पास बिठाकर एक-एक बिल को देखते और जो ख़र्च उनकी समझ में न आता, उसका ब्यौरा अम्माँ से माँगते। मगर कई ख़र्च ऐसे होते थे जो अम्माँ को भी समझ नहीं आता था कि कैसे हुए हैं। वह कहतीं कि ख़र्च हुआ है, तो हुआ ही है, कहाँ हुआ है, यह मुझे याद नहीं। बहुत सोचकर भी उन्हें याद आता, लगता जैसे वह बिल कहीं आसमान से ही टपक पड़ा हो।

यह एक ऐसी चीज़ थी जिससे पापा बेहद झुंझला उठते।

अम्माँ को बिलों से माथा फोड़ना ज़रा भी पसन्द नहीं था। वह हमसे कहतीं कि उन्हें बिलों से नफ़रत है। जब बिल ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ जाते तो उन्हें पापा के सामने रखते उनकी जान जाती। जब अम्माँ को लगता कि इस बार बिल थोड़े हैं, तो वे बहुत खुश होतीं। मगर यह खुशी ज़्यादा देर न रहती, क्योंकि पापा की नज़र में बिल कभी थोड़े नहीं होते थे। कभी अम्माँ को किसी बिल में थोड़ी-सी भी ग़लती मिल जाती—जैसे कि उन्हें यह पता चलता कि टायसन कसाई ने भूने हुए मांस के ज़्यादा पैसे लगा लिये हैं—तो वह उसे ठीक कराने के लिए काफ़ी दौड़-धूप करतीं और कसाई से बहस करने में कितनी ही परेशानी उठातीं। और जब यह चीज़ वह पापा को बतातीं, तो पापा इसे बहुत मामूली बात समझते। अम्माँ को बहुत झुँझलाहट होती कि पापा उनकी दौड़-धूप की प्रशंसा ही नहीं करते।

कभी-कभी ऐसे काम मेरे ज़िम्में पड़ते थे। हमारे अखबार सिक्स्थ एवेन्यू में फ़्लैनेगन के यहाँ से आते थे। वह कभी ज़्यादा पैसे लगा लेता, तो उसे डाँट पिलाने मुझे जाना पड़ता। पापा कहते कि उस आदमी को हिसाब की रत्ती-भर समझ नहीं है। जोड़ की जाँच करने के बाद वह एक-एक अखबार की कीमत फिर से लगाकर देखते और आख़िर किसी तरह निकाल लेते कि बिल में तीन या तेरह सेंट ज़्यादा

लगाए गए हैं। तब मुझे बुलाकर वह बिल के पूरे पैसे मेरे हाथ में थमा देते और मुझे आदेश देते कि अगले दिन स्कूल से आते हुए मैं फ्लैनेगन के यहाँ होता आऊँ। उसे बता दूँ कि हम ये हरकतें बरदाश्त नहीं करेंगे।

बाद में तो मुझे आदत पड़ गई, मगर पहले-पहल बहुत डर लगा। फ्लैनेगन लम्बा-तगड़ा आदमी था जो चेहरे से सख़्त-मिज़ाज और लड़ाके शराब-फरोश-जैसा लगता था। जब मैं उसकी अँधेरी-सी छोटी दुकान में दाखिल हुआ और काँपती हुई आवाज़ में उसे बताने लगा कि हम ये हरकतें बरदाश्त नहीं करेंगे, तो वह काउंटर पर झुककर मुझे घूरता हुआ ऊँची आवाज़ में बोला, ''क्या कहा, जनाब?''

''माफ़ कीजिए, मिस्टर फ्लैनेगन!'' मैंने कहा, ''आपके बिल में कुछ ग़लती रह गई है।''

''क्या कहा, जनाब?''

''बिल में थोड़ी-सी ग़लती रह गई है, जनाब! आपने 'सन' के आठ सेंट ज़्यादा लगा लिये हैं।''

फ्लैनेगन ने बिल और पैसे मुझसे छीन लिये और अपने डेस्क पर जा बैठा। मोटी पेंसिल से सारे बिल पर ऊपर-नीचे और आगे-पीछे कीड़े-मकोड़े बनाकर, वह एक बार गुर्राया। फिर उसने जैसे पापा चाहते थे वैसे ही पैसों की रसीद लिख दी और दे मारने की तरह बिल को काउंटर पर पटक दिया। मैं बिल उठाकर चला गया।

पापा ने बिल देखा तो बोले, ''यह क्या हिमाकत है! बिल की यह क्या सूरत बना दी है?''

''मैंने नहीं बनाई पापा, मिस्टर फ्लैनेगन ने बनाई है।''

''तो उससे कहना कि किसी से सफ़ाई रखना सीखकर आए।''

''अच्छा जी,'' मैंने सूखते हुए गले से कह दिया।

हिसाब रखना मुझे भी पापा की तरह पसन्द था और मैं नहीं समझ पाता था कि अम्माँ उससे क्यों कतराती हैं। यूँ हिसाब करने में वह काफ़ी तेज़ थीं, मगर हिन्दसों को काग़ज़ पर लिखने और जोड़ने में उन्हें ज़रा खुशी हासिल नहीं होती थी। मैं स्कूल में हिसाब के सवाल बहुत चाव से निकालता था और पापा के बहीखाते भी मुझे बहुत अच्छे लगते थे, हालाँकि यह बात मैं पापा से कह नहीं पाता था। वह मुझे उन सुन्दर कापियों को हाथ तक नहीं लगाने देते थे। वह उन्हें ताला लगाकर आगे के बेसमेंट में एक डेस्क में बन्द रखते थे।

मैं कभी पापा को अपना हिसाब का सबक दिखाता, तो फौरन अखबार रखकर अपनी कुरसी से उठ खड़े होते और काग़ज़-पेंसिल लिये डाइनिंगरूम की मेज़ के पास आ बैठते। बैठकर देखते कि मैंने सवाल ठीक निकाले हैं या नहीं। मगर अम्माँ ऐसी चीज़ में कभी दिलचस्पी नहीं लेती थीं।

बिल आने पर हर महीने मुसीबत खड़ी हो जाती थी। अम्माँ बड़ी-बड़ी फ़िज़ूलखर्चियाँ तो नहीं करती थीं, मगर छोटी-छोटी चीज़ें ख़रीदना उन्हें अच्छा लगता था। चीनी के बरतनों का उन्हें ख़ास शौक था। सैकड़ों अच्छे-अच्छे कप और सॉसर पड़े देखकर चुपचाप पास से निकल जाना उनके लिए बड़ा मुश्किल था। यह जानते हुए भी कि ख़रीदने के लिए पैसे नहीं हैं और न ही कुछ ख़रीदना चाहिए, वह कुछ-न-कुछ ज़रूर ख़रीद लेतीं। एक-एक चीज़ के पैसे तो ज़्यादा नहीं बनते थे, मगर कुल मिलाकर एक ख़ासी रक़म बन जाती थी। पापा झल्लाते कि विंडसर होटल उतना चीनी का सामान नहीं ख़रीदता जितना अम्माँ ख़रीद लाती हैं।

पापा को समझ नहीं आता था कि अम्माँ को उधारखाते में चीज़ें लाने का इतना शौक क्यों है। मगर अम्माँ जब कोई चीज़ उधार ख़रीदतीं तो उन्हें लगता कि पहली तारीख़ अभी बहुत दूर है, और शायद इस बार पापा बुरा-भला न कहें और बात को टाल जाएँ। सामने की चीज़ पर उनकी तबीअत बुरी तरह आई होती और सज़ा भुगतने का दिन अभी दूर होता, हसलिए वह ख़रीद लेतीं।

मगर नक़द ख़रीदने के मामले में अम्माँ इतनी दिलेर नहीं थीं। पापा नक़द पैसे बहुत मुश्किल से निकालते थे। अम्माँ को वह बहुत थोड़े-थोड़े पैसे करके दिया करते थे। अम्माँ अपनी पॉकेट में नज़र डालतीं, तो लगता उनका छोटा-सा खज़ाना लगभग ख़ाली हो रहा है। वह चीज़ को हाथ में लिये सोचती रहतीं कि पैसा निकालकर दें या नहीं। मगर उधार-खाते में चीज़ें ख़रीदना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। वह चाहती थीं कि मन को रोके रहें, मगर मन था कि रुकता ही नहीं था। पूरी नेकनीयती से नौ बार मन को रोकने के बाद दसवीं बार मन की बात मान लेने में उन्हें कोई बुराई नज़र नहीं आती थी।

पापा की पूरी कोशिश रहती थी कि अम्माँ की सारी खुशी बराबर कर दें। हर महीने वह अदालत लगाकर और उसमें मुंसिफ़ बनकर बैठ जाते और अम्माँ को उनके सामने अपने हर गुनाह और कसूर की सफ़ाई देनी होती। अम्माँ रोने लगतीं या बुरा मान जातीं, तो पापा यह जतलाने लगते कि बुरा मानने का हक दर-असल उन्हीं को है। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहने लगते कि वह कभी बेइन्साफ़ी करना नहीं चाहते, मगर इस तरह उड़ाने के लिए पैसा उनके पास नहीं है। अम्माँ को घर चलाना हो तो ठीक से चलाना चाहिए।

कभी-कभी पापा बहुत उदास हो जाते और कहते कि उनकी हिम्मत अब हार गई है, तो अम्माँ को इतना अफ़सोस होता कि वह जी-जान से पैसे का हिसाब रखने की कोशिश करने लगतीं। वह हर छोटे-मोटे ख़र्च का ब्यौरा लिखतीं—कभी लिफ़ाफ़ों की पीठ पर और कभी हर तरह के छोटे-बड़े चिट्ठी के काग़ज़ों पर। जब वे काग़ज़ पापा को दिए जाते तो उनमें सौ-सौ तरह की लकीरें खींची होतीं, जाने क्या-क्या

फालतू चीज़ें लिखकर काटी होतीं। बीच में कितनी ही ऐसी भूलें होतीं कि पापा देखकर चकरा जाते, फिर वह बरसना शुरू करते कि मुझे समझाओ यह क्या चीज़ है और वह क्या चीज़ नहीं है। मगर स्त्री के हाथ की पैदा की हुई उस उलझन को सुलझाने की उनकी कोशिश बेकार ही जाती।

अकसर तो नहीं, मगर हाँ कभी-कभी अम्माँ की प्रशंसा करके उनसे काम निकाला जा सकता था। मगर अपनी आलोचना सुनकर वह एकदम तुनक उठती थीं। ऐसे अवसर पर वह आगे से काग़ज़ पर एक भी हिन्दसा न लिखने की कसम खा लेतीं। पापा से कहतीं कि उन्हें और भी सौ काम हैं—वह कपड़े ठीक करें, बाज़ार से चीज़ें लाएँ या बैठकर हिसाब-किताब करें? ख़र्च जो होना था सो हो गया, उसका हिसाब रखने का क्या फ़ायदा? ''मुझे यह तरीका पसन्द नहीं है,'' वह कहतीं।

''अच्छी बात है,'' पापा बहुत धीरज के साथ कहते। ''मगर मेरा ख़याल है कि हमे बात की तह में जाकर कोई-न-कोई हल तो निकालना ही होगा। तुम बताओ, तुम्हें कौन-सा तरीका पसन्द है?''

अम्माँ कहतीं कि उन्हें अपना तरीका पसन्द है। वह पूरी कोशिश करती हैं कि ख़र्च जितना कम हो सके उतना कम करें और उनकी सब सहेलियाँ इस बात की तारीफ़ करती हैं कि वह बहुत थोड़े में घर का ख़र्च चला लेती हैं। वाड्र्स के घर में उनसे दुगुना ख़र्च होता है।

''वाड्र्स जाएँ भाड़ में!'' पापा कहते, ''उन्हें बिना कमाई किए पैसा आता है! वे क्या ख़र्च करते हैं और किस तरह पैसा बरबाद करते हैं, यह सब बकझक मैं नहीं सुनना चाहता।''

अम्माँ कहतीं, ''यह तुम कैसी बातें करते हो? वे पैसे बरबाद करते हैं? वे अच्छी तरह अपना घर चलाते हैं और आराम से रहते हैं। तुम खुद कज़िन मेरी की कितनी तारीफ़ करते हो! तुम्हें पता ही है वह कितनी प्यारी लगती है! बेबी को उसने कप भी दिया था।''

पापा ज़ोर से कहते कि कज़िन मेरी उन्हें अच्छी लगती है तो इसका यह मतलब नहीं कि रात-दिन वह उसी की बात सुनते रहें और हर मिनट उनके सामने उसका उदाहरण दिया जाता रहे।

''तुम अपने घर के लोगों की कम बातें नहीं करते,'' अम्माँ कहतीं।

पापा कहते कि यह सरासर ज़्यादती है। वह अपने घर के लोगों की बात करते हैं, तो सिर्फ़ यह बताने के लिए कि वे लोग कितने ओछे हैं। बात का रुख पलट न जाए, इसलिए वह अपने को वश में किए हुए कहते कि उनका मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि कज़िन मेरी की ज़िन्दगी अपनी तरह की, हमारी अपनी तरह की है। इसलिए बात-बात पर कज़िन मेरी का हवाला देकर बहस करने का कोई मतलब नहीं है।

अम्माँ कहतीं, ''मगर डियर, मैं तो ज़रा भी बहस नहीं करना चाहती। बहस तो हमेशा तुम करते हो। मैं कज़िन मेरी का नाम भी ले दूँ तो बस...।''

''मैं कहता हूँ कि तुम चाहे रात-दिन उसका नाम लेती रहो,'' पापा गरम हो उठते।" मगर मुझे अपना घर किस प्रकार चलाना है, यह मैं कज़िन मेरी से पूछने नहीं जाऊँगा।''

''वह कहती है, तुम उससे पूछने जाओ? वह बेचारी तो इतनी अच्छी है कि...।''

''तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं,'' पापा कहते, ''तुम कभी किसी एक बात पर टिकती भी हो? आख़िर तुम्हारे कहने का मतलब तो यही था न कि कज़िन मेरी...।''

''मेरा कुछ मतलब नहीं था। वह बेचारी तुम्हारी तारीफ़ करती थकती नहीं और तुम हो कि उसके बारे में इस तरह की बातें करते हो।''

घर के खर्च़ की बात में हमेशा कोई-न-कोई इस तरह की बात उठ खड़ी होती। पापा पूरी कोशिश करते कि बात असली सवाल पर ही रहे, मगर वह चाहे कितनी भी शान्ति से बात आरम्भ करें, बहुत जल्द उन्हें किसी-न-किसी वजह से ताव आ जाता। अम्माँ बात को कहाँ-से-कहाँ ले जातीं और पापा वहीं पहुँचकर अपनी उछल-कूद मचाने लगते। बात अभी बीच में ही होती कि या तो कोई बच्चा रो पड़ता और अम्माँ उसे चुप कराने चल देतीं या मिसेज़ वेटाकिन को यह बताने नीचे चली जातीं कि पापा की कमीज़ें कैसे प्रेस करनी हैं। पापा इस पर झल्लाने लगते तो वह यह कहकर उनका मुँह बन्द कर देतीं कि उन्हें बातें ही नहीं करनी, घर का काम भी करना है।

ये दाव-पेंच पापा की हिम्मत तोड़ देते। मगर नीचे तलघर में पहुँचने पर वह जब लेजर में सीधी-सीधी लकीरें खींचने लगते, तो एक बार फिर अपने मन में फैसला कर लेते कि कोई बात नहीं, मैं भी इसे सिखा कर ही रहूँगा।

12. डगमग जहाज़

पापा कहते थे कि एक बात उनकी समझ में नहीं आती कि एक महीने और दूसरे महीने के ख़र्च में इतना फ़र्क़ कैसे पड़ जाता है। एक भला आदमी सोचता है कि आख़िर कभी तो कोई व्यवस्था बनेगी, जिससे वह आगे की कुछ योजना बना सके, मगर नहीं। यहाँ पता नहीं चलता कि अगले महीने क्या चिट्ठा सामने आएगा!

अम्माँ कहतीं कि उन्हें भी पता नहीं चलता, यह मामला ही कुछ ऐसा है।

''मगर विनी, यह मामला ऐसे नहीं चल सकता,'' पापा खीझ उठते, ''मैं इस चीज़ की इजाज़त नहीं दे सकता।''

अम्माँ कहतीं कि वह इस बारे में कुछ नहीं कर सकतीं। बिल ज़्यादा हो जाए, तो वे क्या करें? इसका यह मतलब नहीं कि वह फिजूल ख़र्च करती रही हैं।

''मगर इसका यह मतलब तो है कि तुम कुछ ज़्यादा ख़र्च करती रही हो?'' पापा कहते।

अम्माँ तुनक उठतीं। पापा की बात ग़लत नहीं थी। मगर अम्माँ कहतीं कि वह उनके साथ ज़्यादती कर रहे हैं।

असलियत देखने पर बात अम्माँ के ही खिलाफ जाती थी, मगर अम्माँ इससे घबराने वाली नहीं थीं। वह न पापा से डरती थीं और न किसी और से। उनमें इतना हौसला था कि कोई उन्हें भला-बुरा कहे, तो वह एक बार तो उसे नोच डालें। मगर जब ग़लती अपनी होती, तो उनसे बात कहते न बनता। पापा उन पर इसलिए छा जाते कि उनकी तो ग़लती कभी होती नहीं थी। वह यह भी नहीं समझते थे कि किसी से वह कभी बुरा-भला कहते हैं। वह तो समझते थे कि वह अकेले ऐसे आदमी हैं जिन्हें इतनी मुसीबत उठानी पड़ रही है। उन्हें लगता कि वह किसी से कुछ नहीं कहते, और अम्माँ-जैसे बेतुके व्यक्ति से झगड़ा होने पर भी बहुत लिहाज़ के साथ बात करते हैं। अम्माँ की यह ख़ूबी थी कि वह फुरती से अपने को बचा जाती थीं। पापा बहुत समझा-बुझाकर उन्हें ठीक करने की कोशिश करते, मगर वह उनकी पकड़ में न आतीं।

घर का ख़र्च बहुत बढ़ जाता तो पापा एकदम घबरा उठते। अम्माँ के शब्दों में, उन मौकों पर वह बोल-बोलकर अपना सिर ख़ाली कर लेते थे। थोड़ा-बहुत तो पापा रोज़ ही चिल्लाते रहते थे, यह उनके उसूल में शामिल था। मगर जब वह सचमुच घबरा जाते, तो उस तकलीफ़ में वह गरजना शुरू कर देते।

इससे थोड़े दिन के लिए ख़र्च कुछ नीचे आ जाता। मगर कभी-कभी उनके सारे शोर का कुछ भी असर न होता और ख़र्च हर महीने और-और बढ़ता जाता। आख़िर जब पापा मन में हार मानकर इस बरबादी को स्वीकार कर लेते और चिल्लाना कम करके पहले से गम्भीर रहने लगते तो एकाएक ख़र्च बहुत नीचे आ जाता और वह फिर चकरा जाते।

अम्माँ को पूरे ख़र्च का पता नहीं रहता था, वह तो हर छोटे-मोटे ख़र्च की ही बात जानती थीं। पापा तय न कर पाते कि अम्माँ को यह खुशखबरी सुनाएँ या न सुनाएँ। मगर वह बात दिल में पचा नहीं सकते थे, इसलिए आख़िर वह अम्माँ को बता देते, हालाँकि बाद में उन्हें हमेशा इसके लिए पछताना पड़ता।

जब वह अम्माँ को बताते तो काफ़ी तने हुए रहते। अम्माँ को वह कम ख़र्च करने के लिए कभी मुबारकबाद नहीं देते थे। बिल हाथ में हिलाते हुए माथे पर बल डाले वह अम्माँ के दरवाज़े के पास आकर कहते, ''मैंने हज़ार बार कहा है या नहीं कि तुम ज़रा-सी कोशिश करो तो ख़र्च कम हो सकता है। अब देख लो मेरी बात सच थी या नहीं।''

जब पापा इस तरह आक्रमण करते, तो अम्माँ कुछ चौंक जातीं, मगर इससे उन्हें घबराहट ज़रा भी न होती। वह पूछतीं कि ख़र्च कितना कम हुआ है, और अपने ख़र्च करने के ढंग की प्रशंसा करती हुई पापा से कहतीं कि जितने पैसे बचे हों वे उन्हें दे दिए जाएँ।

इससे पापा को अपना पैंतरा बदलना पड़ता और अम्माँ को सुधारने के लिए वह जो लेक्चर तैयार करके लाए होते, वह उन्हें बीच में ही छोड़ देना पड़ता। जितनी ज़्यादा बात होती, उतना ही अम्माँ इस पर ज़ोर देतीं कि बचत के पैसों पर उन्हीं का हक है। बहुत ही खुशक़िस्मती होती जब पापा का बिना उन्हें पैसे दिए छुटकारा हो जाता।

पापा कहते कि अम्माँ की इस तरह की आदतें एक इन्सान को पागल बना सकती हैं।

इस तरह की दूसरी आदत यह थी कि अम्माँ ढंग से काम नहीं करती थीं। हर बार कोई-न-कोई नई बात पैदा हो जाती और पापा इस तरह अम्माँ की ओर देखने लगते जैसे किसी अजनबी को देख रहे हों। ''मैं कहता हूँ,'' वह कहते, ''कि तुम्हें ढंग नाम की चीज़ का पता ही नहीं है और न ही तुम उसका पता रखना चाहती हो।''

अपनी तरफ़ से पापा ने हिसाब रखने की एक निर्दोष पद्धति निकाली। जब वह अम्माँ को पैसे देते, तो साफ़ यह बता देते कि वे पैसे किस चीज़ के लिए हैं। अपनी पॉकेट में भी वह उस चीज़ को दर्ज कर लेते। उनका ख़याल था कि पॉकेट का हिसाब बिलों के हिसाब से मिलाकर उन्हें ठीक पता चल जाएगा कि घर का एक-एक डॉलर कहाँ ख़र्च हुआ है।

मगर यह तरीका भी नहीं चला।

पापा नोट-बुक देखकर कहते, ''मैंने तुम्हें पिछले महीने की पच्चीस तारीख़ को नया कॉफ़ी-पॉट ख़रीदने के लिए छह डॉलर नक़द दिए थे।''

''हाँ दिए थे,'' अम्माँ कहतीं, ''क्योंकि पुराना कॉफ़ी-पॉट तुमने तोड़ दिया था, सीधे फ़र्श पर दे मारा था।''

पापा भौंहें सिकोड़कर कहते, ''मैं यह बात नहीं कह रहा। मैं तुमसे सिर्फ़ यह जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि आख़िर...।''

''मगर यह कोई बात है कि इन्सान इतना अच्छा कॉफ़ी-पॉट तोड़ दे। फ्रेंच कॉफ़ी-पॉट्स में वह बस आख़िरी ही बचा था। बताओ उस दिन कॉफ़ी में क्या ख़राबी थी? जैसी रोज़ बनती है, वैसी ही उस दिन भी बनी थी।''

''ख़ाक बनी थी!'' पापा कहते, ''लगता था जैसे किसी वहशी ने बनाई हो।''

''वैसा और फ्रेंच कॉफ़ी-पॉट मिला ही नहीं,'' अम्माँ बिना रुके बोलती जातीं। ''ऑफ़-मोटर्स ने जो दुकान बताई थी, वहाँ वे लोग अब वैसे पॉट्स रखते ही नहीं। कहते हैं कि चुंगी वाले उन्हें रोकते हैं। मैंने मोशियो दुवाल से कहा कि ऐसी बात कहते तुम्हें शरम आनी चाहिए। मैं तुम्हारी जगह दुकान चलाऊँ, तो देखूँ कि चुंगी वाले मुझे कैसे रोकते हैं।''

''मगर मैं कह रहा हूँ कि मैंने तुम्हें नए पॉट के लिए छह डालर नकद दिए थे,'' पापा बात पर ज़ोर देकर कहते, ''और इस बिल से यह ज़ाहिर है कि तुम 'लुई और काग़ज़' से पॉट उधार-खाते में लाई हो, देखो, लिखा है, एक भूरा मिट्टी का ड्रिप कॉफ़ी-पॉट, पाँच डॉलर।''

''तो मैंने तुम्हारा एक डॉलर बचाया ही है,'' अम्माँ खिल उठतीं, ''लाओ वह एक डॉलर मुझे दो।''

''तोबा! तुम्हारी बात का कोई सिर-पैर भी है! तुम किसी तरह मुझे हिसाब ठीक समझने दोगी या नहीं? जो छह डॉलर मैंने तुमहें दिए थे, उनका क्या हुआ?''

''मुझसे यह तुम अब पूछ रहे हो! उन्हीं दिनों तुमने क्यों नहीं पूछ लिया?''

''क्या कम्बख़्ती है!'' पापा जैसे कराह उठते।

''अच्छा ठहरो,'' अम्माँ कहतीं, ''साढ़े चार डॉलर का तो मैं अपने लिए नया छाता लाई थी। तुम कहते थे कि नया लाने की ज़रूरत नहीं है, मगर मुझे ज़रूरत महसूस होती थी।''

पापा पेंसिल निकालकर नोट-बुक में लिख लेते—विनी के लिए नया छाता।

"और मेरा ख़याल है," अम्माँ कहती रहतीं, कि उसी हफ्ते मैंने मिसेज़ टोबिन को दो दिन की अतिरिक्त धुलाई के दो डॉलर दिए थे, इस तरह साढ़े छह डॉलर हुए। पचास सेंट मेरे तुम्हारी तरफ़ निकलते हैं।"

"मेरी तरफ़ तुम्हारा कुछ नहीं निकलता," पापा कहते, "मेरा कॉफ़ी-पॉट आपके छाते में बदल गया। मैं एक चीज़ के लिए पैसा देता हूँ, और आप कोई और चीज़ ख़रीद लाती हैं। अगर यही सब चलना है, तो अच्छा है कि मैं हिसाब रखा ही न करूँ।"

"तुम खुद बग़ैर पैसे के घर चलाकर देख लो न," अम्माँ कहतीं।

"मैं पैसे का नहीं बना हूँ," पापा जवाब देते, "तुम समझती हो कि बस मेरी ज़ेब में हाथ डालने से ही पैसे अपने-आप निकल आते हैं।"

अम्माँ यह बात समझती ही नहीं थीं, जानती भी थीं। पापा का बटुआ हमेशा भरा रहता था। इसी से अम्माँ को चिढ़ होती थी कि ज़ेब में पैसे रखे हैं, फिर भी वह उन्हें नहीं देते। उन्हें पैसे लेने के लिए जाने कितनी सिर-खपाई करनी पड़ती थी।

"ख़ैर, इस वक़्त तो ज़ेब में हाथ डालो और मेरा डेढ़ डॉलर निकालकर दो दो," वह कहतीं, "यह डेढ़ डॉलर तो मेरा तुम्हारी तरफ़ निकलता ही है।"

पापा यह कहकर अपने डेस्क की तरफ़ चल देते कि उनके पास डेढ़ डॉलर फालतू नहीं है। मगर अम्माँ दिए बग़ैर उन्हें नहीं जाने देती थीं। वह कहतीं कि ऐसी बेइन्साफ़ी उन्हें बरदाश्त नहीं है।

अम्माँ कहतीं कि हाथ में नकद पैसे न होने से उन्हें बहुत तकलीफ़ होती है। कई छोटे-छोटे ख़र्च ऐसे निकल आते हैं जो पहले उन्हें याद नहीं आते। ऐसी हालत में वह हिसाब को ऊपर-नीचे न करें, तो क्या करें? इस तरह ऊपर-नीचे करने का एक सीधा फल यह होता कि उनका अपना मन जिस किसी चीज़ के लिए ललकता वह चीज़ वह ख़रीद लातीं। कोई बहुत ही बड़ी चीज़ न हो, तो पापा की कापियों में उसका हिसाब पहुँचता ही नहीं।

एक शाम को अम्माँ बाहर से बहुत घबराई हुई आईं। आते ही नौकरानी से बोलीं, "वह अभी पहुँची है कि नहीं?"

नौकरानी को पता नहीं था कि वह किसके पहुँचने की बात पूछ रही हैं।

अम्माँ इस तरह जल्दी-जल्दी ऊपर चली गईं, जैसे कोई उनके पीछे लगा हो। और जाते ही बिस्तर पर गिर गईं। हम पास पहुँचे तो वह सुबक रही थीं।

पता चला कि वह एक नीलाम में गई थीं। वहाँ अपनी उत्तेजना में उन्होंने एक पुरानी दीवार-घड़ी ख़रीद ली थी, मगर उसका पैसा देना भूल गई थीं।

अम्माँ दिल में जानती थीं कि उन्हें कभी नीलाम में नहीं जाना चाहिए। उन पर बातों का असर फौरन होता था। अगर किसी बातूनी नीलाम करने वाले की आँख एक बार उनसे मिल जाती, तो बस सौदा तय था। इसके अलावा नीलामघर में जाकर उनकी सब कमज़ोरियाँ जाग उठती थीं। वहाँ लोगों से मुकाबला करने, पैसा उड़ाने और सौदा करने का पूरा मौका रहता था। इस बार वह जो सौदा करके आई थीं, वह काफ़ी नुकसान का था। कम-से-कम घर पहुँचकर उन्हें यही लग रहा था। वह घड़ी कम्बख़्त आठ फुट ऊँची थी। अम्माँ को जो घड़ी पसन्द थी वह दूसरी थी। वह मिस वान उरवेंट ने ख़रीदी थी। इस घड़ी में डायल से ऊपर हुड के अन्दर एक छोटा-सा जहाज़ बना था जो अम्माँ ने लेते वक़्त नहीं देखा था। घड़ी की टिक-टिक के साथ वह कम्बख़्त जहाज़ हर बार ऊपर से नीचे डोलता था। अम्माँ से कहा गया था कि घड़ी शाम को घर भेज दी जाएगी और अब वह डर रही थीं कि पापा उसे देखकर क्या कहेंगे?

डिनर के वक़्त वह नीचे आई, मगर आधा खाना खाकर ही उठ गईं। उनके हाथ-पैर फूल रहे थे। दो-एक घंटे के बाद जब नीचे की घंटी बजी, तो वह किसी तरह हौसला करके पापा को बताने गईं।

अम्माँ को अचम्भा हुआ कि अचानक उस दिन किस्मत ने उनका साथ कैसे दे दिया। घड़ी कुछ पहले आई होती, तो शायद घर में कहर टूट पड़ता। मगर उस वक़्त बढ़िया खाना खाकर वह अच्छे मूड में बैठे थे। मुँह से चाहे उन्होंने कभी यह बात कही या मानी न हो, मगर घड़ियों का शौक उन्हें भी था। सारे घर में कई एक घड़ियाँ लगी थीं जिन्हें वह अपने अलावा किसी को चाबी नहीं देने देते थे। हर इतवार को नाश्ते के बाद और गिरजे में जाने से पहले वह एक चक्कर लगाते और हर घड़ी का वक़्त अपनी सदा ठीक चलने वाली घड़ी से मिला देते। घड़ियों की गति ठीक करते हुए हमें बताते जाते कि किस घड़ी में क्या दोष है। वह सीढ़ियों से उतर रहे होते और घंटा बजने लगता, तो वह घड़ी हाथ में लेकर कान खड़े किए सुनने लगते कि सब-की-सब घड़ियाँ एक साथ घंटा बजाती हैं या नहीं। ऊपर ख़ाली कमरे की शोख दीवार-घड़ी को वह उसकी मनमानी के लिए कोसते कि उसने वक़्त से पहले ही घंटा बजा दिया है और ड्राइंग-रूम की गम्भीर उदास घड़ी को कोसते कि वह एक मिनट पीछे रह गई है।

जब अम्माँ उनके सामने अपना अपराध स्वीकार करने के लिए उन्हें बाहर ले गईं और वहाँ जाकर पापा ने देखा कि वह एक दीवार-घड़ी ख़रीद लाई हैं, तो पहली नज़र में ही उन्हें उस घड़ी से प्रेम हो गया और उन्होंने ज़रा भी शोर नहीं मचाया।

इस चीज़ से अम्माँ को इतना धक्का लगा कि वह लड़खड़ाती हुई चुपचाप अपने कमरे में जाकर सो गईं। पापा नीलामघर के आदमी के साथ मिलकर नई घड़ी को हैटस्टैंड की बगल में लगाते रहे। पापा को वह डोलने वाला जहाज़ विशेष रूप से आकर्षक लगा।

13. मिस्र की ममी

एक बार सरदियों में हम सब भाई घर से बाहर थे। अम्माँ से मिसेज़ टाइटस तथा दो-तीन और लोगों ने साथ मिस्र चलने को कहा। मिसेज़ टाइटस का लड़का बॉब पार्टी का इंचार्ज था। उन्हें हाउस-बोट में नील नदी में ऊपर की तरफ़ लक्सर और मेम्फ्स नामक स्थान देखने जाना था। मौका बहुत अच्छा था। अम्माँ को सफर का शौक भी था। कोई भी नई जगह हो, वह बहुत शौक से देखने जातीं—वह जगह पास ही मेन का व्हिटनेज कैम्प ही क्यों न हो! मिस्र उससे दस गुना दूर था, इसलिए उसका आकर्षण भी दस गुना ज़्यादा था।

अम्माँ ने पापा को समझाया कि ऐसा मौका बार-बार हाथ नहीं आएगा, लेकिन पापा पर कोई असर नहीं हुआ। कहने लगे कि वह तो हमेशा कहीं-न-कहीं जाना चाहती हैं और कोई ऐसी औरत उन्होंने नहीं देखी। औरतें घर में रहती हैं, उसी में उन्हें सुख मिलता है। मगर अम्माँ हैं कि हर वक़्त उन्हें गाड़ी पर सवार रहने की ही सूझती है।

फिर कहने लगे कि उनके अपने होश अभी ठीक हैं, इसलिए उनका मिस्र जाने का उतना ही इरादा है जितना उत्तरी ध्रुव की यात्रा करने का। साल-दो साल में जब काम से फुरसत मिलेगी तो वे लोग एक बार फिर लन्दन और पैरिस का चक्कर लगा आएँगे। डे परिवार में या उनके और परिचितों में आज तक किसने मिस्र की यात्रा की है? हाँ, चार्ली बौंड ज़रूर वहाँ गया था। मगर वह बिलकुल बे-लगाम आदमी था, जो कोई-न-कोई अजीब हरकत करता ही रहता था। मिस्र बिलकुल जंगली और नामाकूल जगह है, वह अम्माँ को लेकर वहाँ कभी नहीं जा सकते।

"इसीलिए तो मैं वहाँ जाना चाहती हूँ, डियर! तुम तो बात ही नहीं समझते।"

पापा ने घूरकर उन्हें देखा और बोले, "क्या? किसलिए जाना चाहती हो? मैं सचमुच कुछ नहीं समझ सका।"

"तुम्हें वह जगह पसन्द नहीं है, इसलिए मैं सोचा कि तुम्हें यह बात सुनकर खुशी होगी।"

पापा के माथे की नसें फूलने लगीं, "तुमने सोचा कि मुझे इस बात पर खुशी होगी?"

"डियर, इस तरह बेसमझी की बातें मत करो। मुझे पता है कि तुम खुद मुझे लेकर मिस्र नहीं जाना चाहोगे। इसलिए मैं अगर मिसेज़ टाइटस के साथ हो आऊँ, तो तुम्हारे जाने की ज़रूरत नहीं रहेगी।"

अम्माँ सिर्फ़ उनकी मुसीबत बचाने के लिए जहाज़ पर बैठकर मिस्र जाने की बात सोच रही हैं, यह सुनकर पापा की ज़बान से कुछ देर एक शब्द भी नहीं निकल सका। अम्माँ अपनी बात पर अड़ी रहीं। बोलीं कि चाहे वह यह नहीं चाहतीं कि पापा मिस्र के पिरामिड न देख सकें, मगर पापा की मरज़ी के खिलाफ वह उन्हें साथ घसीटकर नहीं ले जाना चाहतीं। पापा की इच्छा घर पर रहने की है, इसलिए वह आराम से घर पर रहें। वह चुपचाप मिसेज़ टाइटस के साथ चली जाएँगी और वहाँ घूमकर जल्द ही लौट आएँगी।

जल्दी से फैसला हो जाए, इसलिए वह मिसेज़ टाइटस को पापा के पास बुला लाईं। मिसेज़ टाइटस का लड़का बॉब टाइटस भी साथ आया। अम्माँ पापा को बताने लगीं कि उन्हें कितनी रकम की हुंडी की ज़रूरत होगी। पापा इस पर एतराज़ करने लगे तो बोलीं कि वह तो उनके पैसे बचा रही हैं; पापा अगर खुद उन्हें साथ लेकर जाएँ तो उससे दुगुने पैसे ख़र्च होंगे।

पापा गुस्से से बोले कि वह चाहते हैं अम्माँ वहाँ उनके पास ही रहें। अम्माँ बोलीं, "वाह, कभी-न-कभी तो हर इन्सान को बाहर जाना ही पड़ता है।" फिर डॉक्टर मार्को का भी कहना है कि उनके लिए हवा बदलना ज़रूरी है।

डॉक्टर मार्को की बात पापा नहीं टालते थे। मिसेज़ टाइटस बहुत चतुर थीं और सुन्दर भी थीं। अम्माँ अपने हठ पर अड़ी हुई थीं। तीनों ने मिलकर पापा को हरा दिया। निश्चित दिन आने पर अम्माँ हुंडियाँ आदि सँभाले जहाज़ पर सवार हो गईं। पापा कुढ़ते रहे कि सारी सरदियाँ वह अम्माँ के हाल के बारे में सोच-सोचकर परेशान रहेंगे, अम्माँ के लौटने तक उन्हें एक मिनट भी आराम नहीं मिलेगा।

"गुड बाई डार्लिंग," अम्माँ बोलीं, "मेरे पीछे शान्त और अच्छे बनकर रहना।"

"नहीं रहूँगा," पापा उन्हें चूमकर बोले और यह कहकर कि चलो तुम्हें तसल्ली तो मिल गई, तने हुए-से चल पड़े। नीचे पहुँचे तो पीछे मुड़कर उन्होंने ज़ोर से आवाज़ दी, "डियर विनी!" अम्माँ ने हाथ हिलाया, भोंपू की बैठी हुई आवाज़ सुनाई दी और जहाज़ चल पड़ा। भीड़ के रेले ने दोनों को एक-दूसरे की आँखों से ओझल कर दिया।

पापा अगले रोज़ से ही चिट्ठी का इन्तज़ार करने लगे। चिट्ठी न आने से वह पाइलट और पोस्टमैन दोनों को कोसने लगते। कभी कहते कि उनके सिर में सख़्त दर्द है। मगर कुछ दिनों बाद पाइलट को चिट्ठी पोस्ट करने की फुरसत मिल गई और चिट्ठी आ पहुँची। पहले तीन-चार हफ्ते के बाद अम्माँ की चिट्ठयाँ अकसर आने लगीं।

अम्माँ चिट्ठियों में लिखतीं कि पहले जहाज़ पर और उसके बाद जिस-जिस बन्दरगाह पर वह मिसेज़ टाइटस के साथ उतरी हैं, वहाँ-वहाँ उनकी भेंट अपने परिचित लोगों से होती रही है। ''तुम्हारी अम्माँ की दुनिया भर के लोगों से जान-पहचान है,'' पापा कहते। "जहाँ जाती है वहीं उसे कोई-न-कोई परिचित मिल जाता है। मैं बाहर जाता हूँ, तो मुझे कोई नहीं मिलता। मगर यूरोप का कोई ऐसा शहर नहीं जहाँ तुम्हारी अम्माँ को पाँच मिनट के अन्दर-अन्दर कोई वाकिफ़ न मिल जाए।'' एक चिट्ठी में अम्माँ ने लिखा कि वेसुवियस पर्वत की चढ़ाई चढ़कर जब वह चोटी पर पहुँचीं, तो देखा कि वहाँ मिस्टर और मिसेज़ क्विटार्ड पहाड़ पर बैठे नीचे ज्वालामुखी को देख रहे हैं। पापा अपनी कसम खाकर बोले कि उन्होंने आज तक ऐसी औरत नहीं देखी।

कुछ चिट्ठियों में घर के लिए हिदायतें और उपदेश लिखे रहते थे—यह चीज़ खाना, यह बनाना; रबर के पेड़ का ध्यान रखना और परदे धुलवा लेना—देखना कहीं यह बात भूल न जाए! कुछ और चिट्ठियों में विदेशियों की भद्दी आदतों और सफ़र की तकलीफ़ों का ज़िक्र होता। ''मैंने इससे कहा नहीं था कि घर पर रहो?'' पापा विजय-गर्व के साथ कहते। जिन विदेशियों की वजह से अम्माँ को तकलीफ़ होती, उन सबको वे कोसते। मगर ये शिकायतें पढ़कर उन्हें मज़ा भी आता।

मगर जब अम्माँ काहिरा-जैसे दूर के पड़ाव को छोड़कर सभ्यता से दूर एक दहाबिया (पालवाली नाव) में वहाँ के मल्लाहों के साथ नील नदी में ऊपर की तरफ़ चली गईं और मिस्र के अन्दरूनी भाग से अजीब-अजीब नामों वाले प्राचीन शहरों से उनकी चिट्ठियाँ आने लगीं तो पापा बेचैन हो उठे। कहने लगे कि अम्माँ उत्साह में आकर बहुत बेसमझी का काम कर रही हैं। इस चीज़ की क्या ज़रूरत थी? इन्सान न्यूयॉर्क में बैठे-बैठे सारा मिस्र देख सकता है। अजायबघर में कितनी ही पुरानी मढ़ी हुई ममियाँ पड़ी हैं।

''मगर तुम्हारी अम्माँ उन्हें नहीं देखेंगी। वह उसे पूरी तरह मरी हुई नहीं लगतीं। उसे तो बस ममियाँ देखने के लिए उनके देश के झाड़-झंखाड़ में जाकर ही टक्करें मारनी थीं। यहाँ तो किसी ने न जाने कितनी रक़म ख़र्च करके एक चौकोर मीनार भी लाकर पार्क में लगा दिया है जहाँ पर वह अब खंडहर-सा हो रहा है। आदमी चाहे तो जाकर मुफ़्त में देख ले। मगर तुम्हारी अम्माँ की तने-से खंडहर से कहाँ तसल्ली होती है?''

कुछ चिट्ठियों में थीब्स के पीछे की विचित्र पहाड़ी शृंखला कार्नक की महान् स्तम्भ-शृंखला, मूर्तियों और मक़बरों का ज़िक्र होता, जिसे पढ़ते हुए पापा मुँह बिचकाने लगते। कुछ चिट्ठियों में पिस्सुओं का, चाँदनी का और न्यूबियन गीतों का ज़िक्र होता है। कुछ में साथ फोटोग्राफ भेजे होते। पापा कहते कि उन्हें इन तस्वीरों

से नफ़रत है। अरुचि के साथ सिर हिलाते हुए वह देर तक उन्हें देखते रहते। एक तस्वीर तो उन्हें बहुत ही ना-पसन्द थी। उसमें अम्माँ एक ऊँचे गुस्ताख़ ऊँट पर बैठी थीं और अपनी लम्बी-चौड़ी पोशाक में बहुत चुस्त और धूर्त लग रही थीं। दो लम्बे-तगड़े काले आदमी सफ़ेद पगड़ियाँ बाँधे, एक तरफ़ खड़े थे। पार्टी में से और कोई साथ नहीं था। अम्माँ और उन काले आदमियों के सिवा दूर-दूर एक पक्षी तक नज़र नहीं आता था। उस तस्वीर को देखकर पापा अकसर कराहते रहते और चिल्ला-चिल्लाकर 'दुनिया के उन छोरों' के बारे में अपने से कुछ कहते रहते।

कुछ दिनों बाद अम्माँ ने रुख मोड़ लिया और घर की तरफ़ चल पड़ीं। पापा उनके इन्तज़ार में रोज़ और अधिक बेसब्र होने लगे। अब तक अपनी नज़र में वह ख़ामोश रहे थे। मगर ज्यों-ज्यों अम्माँ के लौटने का दिन पास आ रहा था, उनका शोर और बेसब्री बढ़ती जा रही थी। बन्दरगाह पर भी वह झुँझलाकर कहते रहे कि यह भी कोई जहाज़ है जो इस तरह धीरे-धीरे आ रहा है।

मगर अम्माँ को बाँहों में लेते ही पापा का यह मूड बदल गया। उन्होंने फ़ौरन अम्माँ की चीज़ों की देख-भाल शुरू कर दी। सिर्फ़ एक काला बैग अम्माँ ने अपने पास रखा और किसी को उसे छूने नहीं दिया। पापा ने चुंगी-इन्स्पेक्टरों को इकट्ठा किया और जल्दी से सामान की जाँच कराकर वह अम्माँ को बाहर ले आए। ट्रंक उठाने के लिए भी उन्होंने आदमी ढूँढ लिया और सबसे बढ़िया बग्घी बुला ली। जब गाड़ी पत्थरों पर हिचकोले खाती हुई चलने लगी, तो अम्माँ ने कहा कि उन्हें घर आकर बहुत खुशी हुई है।

पापा ने घर की हर चीज़ ठीक-ठिकाने से लगवाने में बहुत मेहनत की थी, ताकि अम्माँ जब दरवाज़े के अन्दर दाख़िल हों तो उन्हें घर ज्यों-का-त्यों दिखाई दे। मगर अम्माँ ने अन्दर आते ही कहा, "हाय, यह क्या हाल कर रखा है मेरे कमरे का! मैं इसमें कैसे रहूँगी?" अपना काला बैग रखकर वह कुरसियों को इधर-से-उधर सरकाने लगीं और सजावट के सामान को ठीक करके यहाँ-से-वहाँ रखने लगीं। अपनी चीज़ों को सहलाती हुई बोलीं, "हाय, क्या इस घर में किसी को भी यह पता नहीं था कि तुम्हें किस जगह किस तरह रखना चाहिए?" पापा उनके साथ थे और परेशान थे कि अम्माँ यह क्या छोटे-छोटे नुक्स निकाल रही हैं? उन्होंने अम्माँ का ध्यान रबर के पेड़ की ओर दिलाया जो पहले से छह इंच ऊँचा हो गया था। अम्माँ बोलीं, "पीछे बेचारे की क्या हालत हो गई है! तहाँ-तहाँ सूखे पत्ते लटक रहे हैं।" मगर यह देखकर कि पापा को इससे बहुत धक्का लगा है और उनका चेहरा उतर गया है, वह उन्हें तसल्ली देने के लिए मुस्कराकर बोलीं, "डार्लिंग, तुमने तो अपनी तरफ़ से कोई कोशिश में कमी नहीं उठा रखी।" और अपना समान खोलने ऊपर चली गईं।

पापा के मन में बार-बार हुंडियों की बात आ रही थी। इतनी बड़ी रक़म उन्होंने पहले कभी अम्माँ के हाथ में नहीं दी थी। अम्माँ के लौटने की खुशी में शुरू में उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा। उन्हें ख़याल था कि अम्माँ ख़ुद ही बात करेंगी, मगर अम्माँ ने एक शब्द भी नहीं कहा।

पापा के दो अनुमान थे, हालाँकि वह नहीं सोच पा रहे थे कि ज़्यादा भरोसा किस पर करें। एक अनुमान कुछ हवाई-सा था–उससे उन्हें आशा बँधती थी। दूसरा अनुमान अपने लम्बे तजरबे की बिना पर था–उससे उनका मन बैठने लगता था।

हुंडियाँ काफ़ी रक़म की थीं। मिसेज़ टाइटस ने और भी ज़्यादा रक़म के लिए कहा था, मगर पापा का ख़याल था कि यह रक़म भी बहुत है। शायद सोचते थे कि अम्माँ ने वह रक़म भी पूरी ख़र्च नहीं की होगी और उसमें से काफ़ी पैसा अभी बाक़ी होगा जो वे वापस बैंक में अपने हिसाब में जमा करा देंगे। मगर उन्हें यह डर भी था–और इस डर में ज़्यादा असलियत थी–कि अम्माँ ने न सिर्फ़ पूरी रक़म ख़र्च कर दी होगी, बल्कि हो सकता है मिसेज़ टाइटस से कुछ पैसे उधार भी ले लिये हों, वरना वह इस बारे में बात करने से बचना क्यों चाहती थीं?

एक रात सोने के लिए ऊपर जाने के बाद अम्माँ पापा को कुछ काग़ज़ देने के लिए फिर नीचे चली आईं। "क्लेयर, ज़रा इन काग़ज़ों को देख लेना," वह बोलीं। "मैंने कोशिश तो की थी कि पूरा हिसाब रख सकूँ, मगर वह मुझसे नहीं हुआ। मगर बिल मैं सब रखती गई थी।" कहकर वह फिर सोने चली गईं।

पापा ध्यान से एक-एक बिल को देखने लगे। उनमें बहुत अजीबो-गरीब ब्यौरा दिया हुआ था–

काहिरा
फ़रवरी 24, 1900

मिसेज़ डे
कमरा नं.19
शैफ़र्ड्ज़ होटल,
दूसरे महाप्रपात तक का एक टिकट.....23 पौंड
दहराबिया 'तीह' का साठ दिन का किराया....85 पौंड 16 शिलिंग

108 पौंड 16 शिलिंग

"दूसरा महाप्रपात?" पापा मुँह में बुदबुदाएँ, "ऐसी औरत जो न करे सो थोड़ा है!"

जितना पापा को ख़याल था, उससे कहीं ज़्यादा ब्यौरा उन्हें वहाँ मिला। कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे लेकर वह बहस कर सकते। मगर कई सौ डॉलर फिर भी

बचते थे। पापा का ख़याल था कि अम्माँ अपने-आप बताएँगी कि उस रक़म का उन्होंने क्या किया है।

मगर दिन-पर-दिन बीतते गए और अम्माँ ने इस बारे में कोई बात नहीं की। पापा को लगने लगा कि मामला कुछ गम्भीर है। उनकी आशंका इतनी बढ़ गई कि अम्माँ बुरी-से-बुरी बात बताकर भी स्थिति को स्पष्ट कर देतीं, तो उन्हें आराम मिलता। मगर उनके हज़ार चाहने पर भी बिना उनके पूछे, अम्माँ उन्हें कुछ भी बताने को तैयार नहीं थीं।

पापा उन्हें सुना-सुनाकर जो बातें कहते थे, अम्माँ उन्हें ख़ूब समझती थीं। दरअसल कुछ बात थी भी जो उन्होंने छिपा रखी थी। सबसे पहले उन्होंने यह बात विल्हेमीन जॉनसन नाम की नवयुवती को बताई। इस लड़की को वह बहुत प्यार करती थीं। बाद में ज्यॉर्ज ने उससे शादी कर ली थी। अम्माँ ने जो भेद उसे बताया, वह यह था कि वे हुंडियों का पूरा रुपया ख़र्च करके नहीं आई थीं। मगर जो रक़म बची थी, वह रक़म वह पापा को लौटाना नहीं चाहती थीं। उनका विचार था कि यह बात चाहे बुरी है, फिर भी वह पैसे पापा को देंगी नहीं।

विल्हेमीन की पक्की राय थी कि अम्माँ को किसी भी हालत में वह रक़म लौटानी नहीं चाहिए। अम्माँ कब से चाहती थीं कि उनके पास अपना कुछ पैसा हो। अब मौका मिला था, तो उन्हें उसे गँवाना नहीं चाहिए था।

इस सलाह से अम्माँ को खुशी तो हुई, मगर हाथ में डर भी लगा। उस रक़म को पास रखने के लिए ऊँट पर सवार होने से कहीं ज़्यादा हौसले की ज़रूरत थी। मगर बाहर रहकर उन्हें स्वतन्त्रता का चस्का लग चुका था, इसलिए अब विक्टोरिया के ज़माने की ज़िन्दगी में वापस लौटने को तैयार नहीं थीं।

मगर आख़िर दिल को मज़बूत करके उन्होंने पापा को बता दिया। पापा का चेहरा खिल उठा और मुस्कराते हुए उन्होंने हल्के से अम्माँ को झिड़क दिया कि उन्होंने यह बात पहले क्यों नहीं बताई? अम्माँ रुपया अपने पास रखेंगी, यह सुनकर वह बोले कि यह बिलकुल फ़िजूल की बात है। परमात्मा का शुक्र है कि वह घर लौट आई हैं। घर में सब बिल वे खुद अदा करते हैं, इसलिए अम्माँ के पास पैसों की कोई ज़रूरत नहीं।

"मुझे ज़रूरत है," अम्माँ बोलीं।

"बताओ, क्या ज़रूरत है?" पापा ने पूछा।

अम्माँ यह नहीं बताना चाहती थीं। उन्हें खुद भी नहीं पता था कि वह नक़द पैसे क्यों पास रखना चाहती हैं। बस इतना ही जानती थीं कि रखना चाहती हैं। "कई छोटी-छोटी चीज़ें ख़रीदनी होती हैं," वह बोलीं। "मैं चाहती हूँ कि जब ज़रूरत हो तब मैं उन्हें ख़रीद सकूँ और मुझे तुमसे बातें न सुननी पड़े।"

मगर पापा को इसमें कोई तुक नज़र नहीं आई। वह बाक़ी रक़म माँगने लगे। उनका ख़याल था कि घर में जो भी पैसे हों, उनकी रक्षा करना उन्हीं का फ़र्ज है। और पैसे सुरक्षित रखने की जगह है बैंक। अम्माँ के नाम का बैंक में एकाउंट था नहीं। अम्माँ हठ करने लगीं कि वह अपनी मेज़ के दराज़ में छिपाकर रख लेंगी। पापा बोले कि इसमें बहुत ख़तरा है। मगर अम्माँ नहीं मानीं। मिस्र के सफ़र ने उन्हें बहुत बदल दिया था। वह नील में क्या घूम आई थीं कि पापा के लिए उन्हें बात मनवाना पहले से कहीं मुश्किल हो गया था।

हाँ, अम्माँ ने इतना किया कि एक बड़ा-सा पीले-नीले रंग का पत्थर का जुवैरला, जो एक स्कार्फ पिन की तरह जड़ा हुआ था, उन्हें भेंट में दे दिया। कहा कि देना तो क्रिसमस के मौक़े पर था, पर चलो ख़ैर। पापा ने बिना ज़रा भी उत्साह दिखाए उस चीज़ को देखा और पूछा कि यह क्या है? अम्माँ ने बताया कि यह एक पवित्र भौंरे को मूर्ति है। पापा ने झट से उसे परे हटा दिया। बोले कि मुझे अपने स्कार्फ़ में ये मरे हुए भौंरे नहीं लगाने हैं। उन्होंने अम्माँ से कहा कि जिस मक़बरे से वह उसे लाई हैं, वहीं उसे वापस भेज दें। "तुम्हें पता होना चाहिए," वह बोले, "कि मैं भी एक ममी नहीं हूँ।"

14. समय की पाबन्दी

पापा इस बात पर ज़ोर देते थे कि हम नाश्ते के लिए वक़्त पर पहुँचें। मैं भी चाहता था कि वक़्त पर पहुँचूँ, मगर वक़्त से पहले पहुँचने की कोशिश करूँ, यह बात मेरे दिमाग़ में कभी नहीं आती थी। मैं समझता था कि मुझे ऐन वक़्त पर कमरे में पहुँचना है। नतीजे के तौर पर मुझे हमेशा देर हो जाती थी।

ज्यॉर्ज को छोड़कर और भाई भी देर से पहुँचते थे। पापा का वह एक ही लड़का था जिस पर वह पूरा भरोसा कर सकते थे। पापा मुझसे कहते कि देखो, ज्यॉर्ज कितनी जल्दी नीचे पहुँच जाता है—यहाँ तक कि आकर कुछ मिनट प्यानो की प्रैक्टिस भी कर लेता है।

ज्यॉर्ज के जल्दी तैयार हो जाने की असल वजह यह थी कि वह अख़बार पापा के हाथ में जाने से पहले खेलों वाला पन्ना देख लेना चाहता था और प्यानो वह इसलिए बजाता था कि ऊपर कपड़े बदलते हुए हम लोगों को पता चल जाए कि कल कौन-सी टीम बेस-बॉल में जीती है। इसके लिए उसने एक कोड बना रखा था। हम लोग जूते और मौज़े पहनते हुए ज़ीने के जंगले पर झुककर उन आवाज़ों से नतीजे का पता कर लेते थे। मुझे अब यह तो याद नहीं कि क्या सूचना देने के लिए वह कौन-सी धुन बजाता था, हाँ उसमें बात यही थी कि जब वह खुशी की थिरकती हुई धुन बजाता तो उसका मतलब होता कि जायंट्स जीत गए हैं और जब रोने और विलाप करन के-से स्वर निकालता, तो मतलब होता कि पॉपएन्सन ने उन्हें हरा दिया है। पापा को पेशेवर बेस-बॉल से चिढ़ थी, इसलिए इस बारे में उन्हें हमने नहीं बता रखा था। घह अपने ढंग से चलते थे और हम ठीक उनकी नाक के नीचे अपने ढंग से चला करते थे। वह कमरे में आते तो अखबार ज्यॉर्ज के हाथों से ले लेते थे। ज्यॉर्ज उनसे गुड मॉर्निंग कहकर बड़े मासूम ढंग से पार्लर में पहुँच जाता। पापा बड़े दरवाज़े से उसे देखते हुए राजनीतिक सुर्खियाँ पढ़ने लगते और ज्यॉर्ज प्यानो पर हमें बेस-बॉल की खबरें सुनाने लगता। पापा उसे थोड़ा झिड़क देते कि इतने ज़ोर से न बजाए, मगर ज्यॉर्ज के लिए तो ज़ोर से बजाना ज़रूरी था। हम लोग सबसे ऊपरी मंज़िल पर होते थे और वह चाहता था कि हम चाहे अभी दाँत ही साफ़ कर रहे हों, तो भी हमें ख़बर

का पता चल जाए। ज्यॉर्ज जो काम करता था, ठीक से करता था। वह न सिर्फ़ ज़ोर से बजाता, बल्कि एक ही धुन को कई-कई बार दुहराता। पापा झल्लाते हुए मुँह में बोलते रहते, ''क्या बला की लगन है!''

ऊपर ज्यॉर्ज की दी हुई ख़बर के बारे में हम लोगों में बहस हो जाती। उसे चलती धुनें सीखने की इजाज़त नहीं दी गई थी जिन्हें हम आसानी से पहचान सकते। ज्यॉर्ज की संगीत-पुस्तिका में जो थोड़ी सी शास्त्रीय धुनें थीं, वे सब दूर से सुनने पर एक-सी ही लगती थीं। ज्यॉर्ज उन्हें अपने मन और हाथों की पूरी शक्ति के साथ बजाता, मगर बहुत ही बेदर्द ढंग से। प्यानो बजाने के बहुत से उसूलों को वह व्यर्थ की उलझनें समझता था।

बहरहाल, अकेला ज्यॉर्ज ही था जो हमेशा वक़्त पर पहुँच जाता था। पापा को इसकी इतनी खुशी थी कि वह उसके लिए एक घड़ी ख़रीद लाए जिसकी पीठ पर ये शब्द खुदे थे–'ज्यॉर्ज पार्मली डे, वक़्त का पाबन्द।' पापा ने मुझे बताया कि बड़ा लड़का होने के नाते सबसे पहले वह मुझी को घड़ी देना चाहते थे। वह घड़ी उन्होंने मुझे दिखाई भी थी जो वह मेरे लिए ख़रीदकर लाए थे। वह ठीक ज्यॉर्ज की घड़ी-जैसी ही थी मगर उसकी पीठ पर अभी कुछ भी नहीं खुदा था। पापा ने बताया कि जब तक मैं नाश्ते के लिए वक़्त पर पहुँचने की आदत नहीं डालता, तब तक वह घड़ी मुझे नहीं दी जाएगी।

वक़्त गुज़रता गया और मैं अपने को ज़रा भी नहीं सुधार सका। वक़्त गँवाने की मुझे आदत ही हो गई थी। कभी-कभी तो मुझे बहुत ही देर हो जाती। एक सुबह जब नाश्ता आधा हो चुका तो पापा ने नेपकिन हाथ में लिये आगे के हॉल में आकर आवाज़ दी कि मैं फ़ौरन नीचे पहुँच जाऊँ, वह इस तरह की बात बरदाश्त नहीं कर सकते। मैंने तब तक अपने लम्बे ऊनी जाँघिये के सिवा कुछ नहीं पहना था। मैंने झुँझलाहट में चिल्लाकर कहा कि मैंने अभी कपड़े नहीं पहने हैं। पापा गरजकर बोले, ''कोई परवाह नहीं। जैसे हो, वैसे ही चले आओ, हर चीज़ की एक हद होती है।'' मेरा मन हुआ कि पापा की बात मान लूँ। मगर फिर सोचा कि, इसमें कोई चाल न हो। इसलिए उसी तरह नहीं गया, पर अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की कि जल्दी-से-जल्दी पहुँच जाऊँ। पापा आँखें लाल किए मज़े से अपना नाश्ता खा रहे थे। मैं भी घबराहट और बेचैनी में जाकर बैठ गया और अपना नाश्ता खाने लगा। कुछ भी होता रहे, हम लोग खाने में कभी कमी नहीं करते थे। बाद में मुझे तो कभी उतना खाने के लिए अफ़सोस होता भी, मगर पापा को कुछ महसूस नहीं होता था। अम्माँ पापा से बोलीं कि अगर वह घड़ी मुझे दे दें, तो हो सकता है मैं थोड़ा सुधर जाऊँ। मगर पापा इससे सहमत नहीं हुए। बोले कि बच्चों के पालने का यह तरीका ग़लत है। पापा की बात ग़लत साबित करने के लिए अम्माँ ने गहने का बॉक्स खोलकर

अपनी किसी चचेरी बहन की दी हुई घड़ी मुझे दे दी। उन्होंने मुझसे कहा कि इतनी कीमती घड़ी आम तौर पर लड़के नहीं बाँधते, इसलिए मैं उसे होशियारी से रखूँ। मैंने सिर हिला दिया।

मगर वह घड़ी इतनी नाजुक साबित हुई कि क्या कहा जाए! घड़ी बहुत पुरानी थी और मेरी उम्र नई थी। हम दोनों में कोई समानता नहीं थी। घड़ी का आगे और पीछे का हिस्सा सोने की पत्री का था। आगे के ढक्कन से अम्माँ ने पहली मालकिन का नाम मिटवा दिया था। इससे बीच से ज़रा-सा दबाते ही ढककन अन्दर को बैठ जाता था। फिर उसकी चपनी इतनी तंग थी कि शीशे के लिए बहुत थोड़ी जगह बचती थी। वहाँ इतना पतला शीशा लगाना पड़ता था कि ज़रा-से दबाव से ही वह टूट जाता था।

पहली बार शीशा टूटने के बाद मैं सावधान हो गया और मैंने फिर चपनी पर बोझ नहीं पड़ने दिया। इससे आगे के लिए बात बनी रहती। मगर दूसरे लड़के मेरी तरह सावधान कैसे रह सकते थे? उन्हें सावधान रखना मेरे लिए सम्भव भी नहीं था। हम कभी हँसी में या गुस्से में आपस में लड़ पड़ते, तो मैं अपने विरोधी से कह देता कि वह इतनी मेहरबानी करे कि मेरे पेट की बाईं तरफ़ मुक्का न मारे। मगर दूसरा कभी सुनता, कभी न सुनता। जब हम दोनों ताव में होते और देर तक आपस में गुत्थमगुत्था हुए रहते, तो घड़ी का शीशा चटाक से टूट जाता। लड़ने से पहले घड़ी उतारने का वक़्त ही नहीं रहता था, और उतार भी देता तो रखता कहाँ? जो घड़ी एक लड़के की ज़ेब में पड़ी-पड़ी गलियों के चक्कर काटती फिरती हो, उसे ज़िन्दगी की काफ़ी मार सहनी पड़ती है। वह घड़ी इस तरह के भाग्य के लिए तैयार नहीं की गई थी।

पहले दो शीशों की कीमत तो अम्माँ ने अदा कर दी, क्योंकि पापा तो इस चीज़ के हक में ही नहीं थे और इससे किसी तरह का वास्ता नहीं रखना चाहते थे। अम्माँ के पास टूटे पैसे बहुत कम रहते थे और मुझे उन्हें तकलीफ़ देना अच्छा भी नहीं लगता था। अम्माँ भी तकलीफ़ सहना पसन्द नहीं करती थीं। मैं दूसरी बार शीशे का चूरा उन्हें दिखाने के लिए कवर को खोलने लगा तो वह चिल्ला उठीं, "ओ क्लेयरेन्स! घड़ी फिर से तो नहीं तोड़ लाए?" उन्हें इससे इतनी परेशानी हुई कि अगली बार शीशा टूटा तो मैं मारे शर्म के उनके सामने नहीं जा सका। इसके बाद उस नुकसान को भरने की ज़िम्मेवारी मेरे ऊपर आ गई।

मुझे ज़ेब-ख़र्च के लिए महीने में एक डॉलर से ज़्यादा नहीं मिलता था। नया शीशा पच्चीस सेंट का आता था। मेरे लिए यह बहुत बड़ा बोझ था।

घड़ी की बात भूलकर सैम विलेट्स के साथ फर्म पर गुत्थमगुत्था होते हुए अचानक मुझे किसी चीज़ के चटकने की हल्की-सी आवाज़ सुनाई देती और मुझे पता

चल जाता कि एक बार फिर मेरा दीवाला निकल गया है। मैं टूटा हुआ शीशा निकालकर घड़ी को तब तक बग़ैर शीशे के ही रहने देता जब तक पच्चीस सेंट पास में न हो जाते। इसमें वक़्त लग जाता तो मुझे घबराहट होने लगती। मैं जानता था कि अम्माँ की इस पर बहुत निगाह रहती है कि मैं घड़ी को सँभालकर रखता हूँ या नहीं, और वह किसी भी शाम को कह सकती हैं कि लाओ ज़रा तुम्हारी घड़ी देखूँ। पैसे पास में होते ही मैं सिक्स्थ एवेन्यू की तरफ़ चल देता। वहाँ दो बूढ़े जर्मनों की छोटी-सी घड़ी की दुकान थी। उनके पास मैं घड़ी ठीक करने के लिए छोड़ आता था। मुझे वहुत धुँधली-सी याद है कि उस मालगोदाम-जैसी दुकान से अजब-सी गन्ध आती थी और शीशे का काउंटर तब बहुत ऊँचा लगता था और वे दोनों जर्मन बहुत सुस्त जान पड़ते थे। मुझे वहाँ पहुँचने में देर हो जाती और वे जर्मन कहते कि मुझे घड़ी सुबह तक छोड़ जानी होगी, तो दूसरे दिन घड़ी वापस लाने तक मेरा खाना-पीना हराम हुआ रहता। मैं जर्मनों से काफ़ी बहस करता कि पच्चीस सेंट बहुत ज़्यादा हैं, हमेशा के ग्राहक का उन्हें कुछ तो लिहाज़ करना चाहिए, मगर वे कहते कि नहीं, वे पुराने ढंग के पतले शीशे अब मिलते ही नहीं—उस कीमत पर काम करके भी उन्हें कुछ बचत नहीं है।

आख़िर मेरी हिम्मत हार गई। मैंने अम्माँ से कह दिया कि मैं वह घड़ी नहीं लाना चाहता।

मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि मुसीबत से बचने का यह रास्ता भी मेरे लिए बन्द है। वह घड़ी विरासत की चीज़ थी और विरासत की चीज़ जिसे मिले, उसे उसका निरादर करने का कोई अधिकार नहीं। बड़े होने पर मैंने कहीं पढ़ा कि कोई अच्छा चीनी कभी अपनु बुजुर्गों का निरादर नहीं करता। बचपन में मुझे सिखाया गया था कि कोई अच्छा लड़का विरासत की चीज़ की बेकद्री नहीं करता।

मैं मन मारे अम्माँ के कमरे से चला आया। अपनी घड़ी की पतली-सी चाबी घुमाते हुए मुझे ज्यॉर्ज से ईर्ष्या होने लगती। पापा ने ज्यॉर्ज के लिए ठीक घड़ी चुनी थी। उन्हें पता था कि एक लड़के को कसी घड़ी चाहिए। उसका खोल मोटे निकल का था और शीशा भी काफ़ी मोटा था। वह घड़ी ज़िन्दगी की सब ज़्यादतियाँ सह लेती थी—यहाँ तक कि नहाने के टब में गिरकर भी उसका कुछ नहीं बिगड़ता था।

मुझे लगा कि मेरा भविष्य बहुत अन्धकारपूर्ण है। बड़ी सम्पत्ति का अभिशाप मेरे लिए केवल एक वाक्य न रहकर एक जीवित विचार बन गया था। ऐसी सम्पत्ति की देख-रेख करने में बेचारे मालिक का तो कचूमर ही निकल जाता है। महीनों तक मेरे पास कंचे ख़रीदने के लिए भी पैसे न बचते। नया लट्टू भी मैं न ख़रीद पाता। मेरी समझ में नहीं आता था कि क्यों मुझे उस घड़ी के साथ जोत दिया गया है! मुझे अब उस नाजुक चीज़ से नफरत होने लगी थी। कम्बख़्त ने मेरा नाक में दम

कर रखा था। आख़िर मुझे एक रास्ता सूझ गया। तब तक मैं पुरानी आदत के मुताबिक हफ्ते में कम-से-कम एक बार ज़रूर नाश्ते के लिए देर से पहुँचता था। अब मुझे ख़याल आया कि अगर मैं अपनी आदत सुधार लूँ तो हो सकता है पापा पसीज जाएँ और मुझे वह निकल की पुख्ता घड़ी दे दें जो उन्होंने मेरे लिए ख़रीदी थी। मैंने अपने को सुधार लिया। शुरू-शुरू में मेरा मन अपने निश्चय से थोड़ा डाँवाडोल हुआ होता, मगर शीशा टूटते ही मैं नए सिरे से कोशिश शुरू कर देता। आख़िर जब मैं समय का इतना पाबन्द हो गया कि पापा की शिकायत जाती रही, तो उन्होंने मेरे लिए ख़रीदी हुई घड़ी पर मेरा नाम लिखाकर वह मुझे उपहार में दे दी। उस अवसर पर मुझे इतनी ज़्यादा खुशी हुई कि पापा भी थोड़े हैरान हुए। मुझे खुशी के मारे कमरे में उछलते देखकर उन्होंने कई बार कहा, ''अब बस करो। इसमें उछलने की ऐसी क्या बात है? देखना, कहीं वह फूलदान न तोड़ देना।''

अम्माँ कहने लगीं कि लड़के के पास जब सोने की घड़ी है, तो उसे निकल की घड़ी देने का क्या मतलब है? इस पर पापा हँसकर बोले, ''उस पुरानी चीज़ को कौन लड़का पसन्द करता है?'' अम्माँ ने अनमने ढंग से फिर वह घड़ी गहने के बॉक्स में रख दी।

अम्माँ ने जो आख़िरी हथियार इस्तेमाल किया वह यह था कि आख़िर वह ठीक ही तो कहती थीं। लड़के को घड़ी दी, तभी तो उसे ठीक वक़्त पर आने की आदत पड़ी।

15. तेईसवाँ साम

बचपन में इतवार की शाम को ऊपर सोने के लिए जाते हुए हम पहले अम्माँ के कमरे में चले जाते थे और उनके चारों तरफ़ घेरा डालकर बैठ जाते थे। अम्माँ कभी हमें बाइबल में से कोई कहानी सुनातीं, कभी नेक बनने के लिए उपदेश देतीं और कभी प्रेम की शिक्षा देतीं। अम्माँ स्वयं ईश्वर से अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रेम करती थीं। हमसे भी बहुत प्रेम करती थीं। इतवार की शाम को वह हमसे बहुत ही मीठी व प्यार की बातें करती थीं। मेरे एक भाई ने बड़े होने पर मुझे बताया कि उन बातों का उसके जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा है। वह उनकी याद कभी नहीं भुला सका। हालाँकि और भाइयों से बड़ा था, फिर भी मेरा दिल उन बातों में पूरी तरह नहीं रमता था। मैं अम्माँ को प्यार करता था और उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहता था। मगर और भाइयों की तरह उनकी बताई हुई बातों पर मैं पूरी तरह अमल नहीं कर सकता था। जो भावना वह देखना चाहती थीं, वह मेरे अन्दर कभी नहीं जागती थी। अब सोचता हूँ कि कितना अच्छा होता जो मैं उनकी आँखों के भाव को ही देखता और मन में उनकी बातों पर नुक्ताचीनी न करता। ईश्वर के सम्बन्ध में मेरे विचार उनके विचारों से मेल नहीं खाते थे, या जो कहानियाँ उन्हें बहुत प्रिय थीं, वे मुझे उतनी प्रिय नहीं लगती थीं। तो उससे फ़र्क़ क्या पड़ता था? मगर मैं अनमना-सा बैठा दरी को घूरता रहता और उनके सवालों से बचने की कोशिश करता।

एक रात उन्होंने तेईसवाँ साम दोहराया और हमसे कहा कि हम उसे याद कर लें। "मालिक मेरा गड़रिया है," वह धीमे स्वर में बोलीं, "वही मुझे हरी-भरी चरागाहों में लिटाए रखता और ख़ामोश जल के साथ-साथ मुझे चलाकर ले जाता।" फिर आँखें उठाकर वह ज़रा हौसले के साथ मगर डर से काँपती हुई आवाज़ में बोलीं, "तेरी छड़ी और तेरी लाठी—इनसे मुझे सुख मिलता है।"

मालिक की लाठी का परिचय उन्हें अक्सर ही मिलता रहता था।

पापा बाहर से गुज़रकर हॉल में जा रहे थे। उन्होंने दरवाज़े से झाँककर हमारी और अम्माँ की तरफ़ देखा और प्यार के साथ मुस्कराये। फिर वह भारी-भारी क़दम रखते हुए अपने कमरे की तरफ़ चले गए।

वह अम्माँ के उपदेशों में दख़ल नहीं देना चाहते थे। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा था, मगर मैं अचानक ही मन में सोचने लगा कि तेईसवें साम के बारे में पापा क्या राय रखते हैं।

यह सोचना मुश्किल था कि मालिक की छड़ी और लाठी से पापा को भी सुख मिलता होगा, या कि वह यह बरदाश्त कर लेंगे कि कोई उन्हें अपनी मरज़ी से चरागाह में ले जाकर लिटा दे। मैं मन की आँखों से देखने लगा कि पापा अपना टेल-कोट और टॉप-हैट पहने खड़े हैं और चरागाह में दाख़िल होने से साफ़ इन्कार कर रहे हैं। वह सोचते हैं कि एक नौकर की पोशाक पहनने वाला ही यह काम कर सकता है। मन में इस चीज़ की प्रशंसा करते हुए भी मुझे लगा कि उनकी यह हरकत ठीक नहीं है। मुझे चीज़ बुरी लगी और महसूस होने लगा कि पापा की वजह से ही मैं भी पूरे दिल से अम्माँ की बातें नहीं सुन पाता। मेरा ख़याल था कि अम्माँ ज़रूरत से ज़्यादा धार्मिक है और पापा ज़रूरत से ज़्यादा नास्तिक।

"गुड-नाइट क्लेयेरेंस," अम्माँ कर रही थीं। "डार्लिंग, तुम यह भूल तो नहीं जाओगे?"

मैं उनका हाथ चूमकर बाहर निकल आया। मन में सोच रहा था कि किस चीज़ के लिए अम्माँ ने कहा है कि मैं उसे भूल न जाऊँ। याद आया कि उन्होंने तेईसवाँ साम याद करने के लिए कहा था।

ऊपर बेड-रूम में पहुँचकर मैंने बाइबल निकाल ली। जगह-जगह मैंने काग़ज़ के बुक-मार्क रखे थे ताकि जो मुझे याद करने थे, वे मुझे आसानी से मिल जाएँ। बुक-मार्क के ऊपर कई जगह मैंने बाइबल के दृश्यों की तस्वीरें बना रखी थीं। एक तस्वीर थी कि आदम ईडन में खड़ा सन्देहपूर्ण दृष्टि से ज्ञान-वृक्ष को देख रहा है और वृक्ष की शाखाओं से स्कूल के पाठ्यक्रम की पुस्तकों का पूरा सेट लटक रहा है। दूसरी थी कि सैरा हागर के साथ सख़्त सलूक कर रही है, मतलब कि उसे झाड़ू से खदेड़ रही है। तीसरी थी कि सूर्य, चाँद और सितारे नम्रतापूर्वक जोज़ेफ के सामने झुके हुए खड़े हैं।

बैठकर मैंने एक और तस्वीर बनाई कि बेचारा जॉब पाजामा पहने बैठा है और अपनी हज़ार मुश्किलों के बीच ज़ार-ज़ार रोता हुआ तेईसवाँ साम याद करने की कोशिश कर रहा है। मैंने उसके तीन बेवफ़ा दोस्तों की तस्वीरें भी बना दीं जो एक पंक्ति में खड़े उसे घूर रहे थे। उनमें से हर एक के चेहरे पर झूठी मुस्कराहट और तीसरे नेपोलियन-जैसी लम्बी-लम्बी मूँछें और राजसी दाढ़ी थी। मैंने अम्माँ की दी हुई एक और बाइबल निकाल ली। वह फ्रांसीसी ज़बान में थी और उसे पढ़कर कई बार मेरे मन को बहुत धक्का लगता था। मेरा विश्वास था कि जब ईश्वर ने दुनिया बनाई थी तो उसने कहा था, "लेट देयर बी लाइट।" यह मुझे ईश्वर का अपमान लगता

था कि अंग्रेज़ी की जगह उसके मुँह से यही बात फ्रांसीसी में कहलाई जाए, जैसे कि ईश्वर फ्रेंच बोलता हो। मेरा पक्का विश्वास था कि हिब्रू भाषा के शब्दों को छोड़कर ईश्वर के मुँह से हर बात अच्छी मँजी हुई अंग्रेज़ी में ही निकली थी।

मगर फ्रांस के लोगों को इससे क्या मतलब? उन्होंने बाइबल में जो हेर-फेर किया था उसे पढ़कर मुझे हँसी आती थी, हालाँकि साथ ही कुछ डर भी लगता था। मेरी अंग्रेज़ी बाइबल में डेविड का ज़िक्र इस तरह था कि वह ऐंग्लो-सैक्सन नस्ल का युवक था, ख़ूब तन्दुरुस्त और देखने में ख़ूबसूरत। मगर फ्रेंच में उसका रूप ऐसा था जैसे वह बुलेवार का एक छेकरा हो—गोरा, नाजुक और दिलफ़रेब। मेरी बाइबल में जहाँ तिमिंगल-जैसे तगड़े और रहस्यपूर्ण जीव का उल्लेख था, वहाँ फ्रांसीसियों ने उसे 'घड़ियाल' बनाकर उसकी जड़ मार दी थी। इसी तरह मेरी बाइबल में जहाँ था, ''बेहेमॉथ को देखो,'' वहाँ उन्होंने कर दिया था, ''दरियाई घोड़े को देखो।''

इज़राएल के बच्चे ईश्वर के क्रोध से भयभीत होने की बजाय फ्रेंच में सिर्फ़ मालिक की 'झुँझलाहट' से डरते थे। फ्रेंच बाइबल में जगह-जगह 'झुँझलाहट' शब्द का प्रयोग था। ईश्वर ही नहीं, केन और मोजिज़ को भी हर बार बस झुँझलाहट ही होती थी। (मोजिज़ का इस तरह उल्लेख मुझे बहुत बेढंगा लगता था।) और भी हर कोई वहाँ बस झुँझलाता रहता था। अपनी असली बाइबल में जब मैं उन लोगों के क्रोध का ज़िक्र पढ़ता, तो उसका मन पर सचमुच असर होता था। लगता था कि हाँ यह एक गम्भीर राजसी भाव है। मगर उनके सिर्फ़ 'झुँझलाने' की बात से तो लगता था जैसे वे सब भी डे परिवार के ही लोग हों।

मैं उस बाइबल में तेईसवाँ साम निकालकर देखने लगा। उन लोगों ने उसे भी भ्रष्ट कर रखा था। उसे कुछ इस तरह बदला गया था कि लगता था जैसे वह पेरिस के एक दृश्य का वर्णन हो। हरी-भरी चरागाहें वहाँ घास वाले पार्कों में बदल गई थीं और छड़ी और लाठी की जगह बल्लम ने ले ली थी, जैसे ईश्वर एक ड्रम मेजर हो और डेविड बोई-दे-बूलोन में कवायद कर रहा हो।

मैंने सोचा कि अब चलकर सो जाऊँ, उस साम को दो-एक दिन बाद देखूँगा। मगर उन किताबों को शेल्फ़ में रखने से पहले मैंने फ्रेंच बाइबल में एक ऐसा स्थल निकाल लिया जो मुझे बहुत पसन्द था। ''भाग्यवान हैं वे, जो विनम्र हैं।'' मेरी अंग्रेज़ी बाइबल में लिखा था, ''क्योंकि धरती के उत्तराधिकारी वही होंगे।'' मुझे हमेशा इन पंक्तियों से चिढ़ होती थी। इनकी वजह से धर्म से मन उचाट होने लगता था। मैं सोचता था कि विनम्र लोग डिकेन्स के उरिया ह्वीप-जैसे ही होते हैं। समझता था कि विनम्र लोग वे होते हैं जिनकी नाक बहती हो, जिनसे घिन आती हो और जिनके पास बैठना मुश्किल हो। मगर फ्रेंच बाइबल के पन्ने पलटते हुए, एक शाम मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई थी कि किसी प्यारे फ्रांसीसी ने 'सरमन ऑन द माउंट' का

रूप बदलकर इस तरह कर दिया है कि आदमी उसे बरदाश्त कर सकता है। उसमें ईसा की बात का यह मतलब निकलता था कि भाग्यवान हैं वे लोग जो सुशील और मिलनसार हैं, क्योंकि धरती का उत्तराधिकार उन्हीं को मिलेगा।

सुशील और मिलनसार! यह तो कुछ बात थी न! मैं खुशी से उछलकर अपने बिस्तर में जा घुसा।

16. माँ और आरमीनियन

गरमी की छुट्टियों में अम्माँ हमें कहीं-न-कहीं सैर के लिए ले जाती थीं। ऐसी जगहों पर अकसर एक आरमीनियन होटल के पियाज़ा में चक्कर काटता नज़र आता था। भूरे बाल, गहरे रंग की चमड़ी, चमकीली आँखें, तोते-जैसी नाक और ख़ूबसूरत दाँत। अम्माँ कहतीं कि पियाज़ा की हर स्त्री उसके दाँतों पर मुग्ध है। वह आरमीनियन इसी ताक में रहता था कि कब कोई स्त्री उसकी तरफ़ देखे और वह उससे अपने साथ चलकर ग़ालीचे और रेशमी कपड़े देखने का अनुरोध करे। ''खरीदिएगा नहीं मैडम, सिर्फ़ देख लीजिए!'' वह स्त्री देखने से इन्कार कर देती, तो भी वह कहता रहता, ''सच कहता हूँ बहुत बढ़िया माल है।'' साथ ही वह उस स्त्री को कोई सुगन्ध देने का वचन भी देता। उस स्त्री के पास दोपहर ख़ाली होती, तो वह अपनी बुनाई लपेटकर उसके साथ हॉल के सिरे पर उसके छोटे-से अँधेरे कमरे की तरफ़ चल देती।

अम्माँ को ग़ालीचों का शौक़ भी था और स्वभाव की भी वह बहुत कोमल थीं, इसलिए कभी-कभी उसकी बातों में आकर वह भी उसके साथ उसकी चीज़ें देखने के लिए चल देतीं। कभी वह एक ऐसा ग़ालीचा दिखाता जिस तरह का दूसरा ग़ालीचा आज तक बना ही नहीं था, और वह उस समय और सिर्फ़ उसी समय कुछ सौ डॉलरों में मिल सकता था। जिस कठिनाई के कारण वह उस ग़ालीचे को इतनी थोड़ी क़ीमत में बेच रहा था, वह सिर्फ़ उसी दिन के लिए थी। एक समझदार स्त्री को ऐसा बहुमूल्य अवसर खोना नहीं चाहिए था। इस तरह एक युवक को अपनी कॉलेज की शिक्षा पूरी करने का मौक़ा देकर वह एक उपकार भी करेगा। वह व्यापारी नहीं है, सिर्फ़ एक विद्यार्थी है। हाँ, कुछ अमूल्य ग़ालीचे उसके पास हैं। ख़रीदने वाली महिला अपने मुँह से जो भी क़ीमत कह दे, उसी क़ीमत पर वह उसे दे देगा। वह बस कह-भर दे, चाहे वह कुछ भी क़ीमत हो।

अम्माँ को यह अनुचित लगता कि वह कुछ भी क़ीमत मुँह से न कहें, ख़ास तौर पर जब कि उसे बेचारे को पढ़ाई पूरी करनी थी और चीज़ भी सस्ती मिल सकती थी। वह मन-ही-मन हिसाब करतीं कि स्लोन्ज़ के यहाँ उन्हें उस चीज़ की क्या कीमत देनी पड़ती, और उसमें से काफ़ी पैसे कम कर देतीं। फिर उन्हें शरम आती कि इतने

पैसे कम क्यों कर दिए, उन्हें उस युवक को ठगना तो नहीं है! उस बेचारे को अपनी नेकनीयती का कुछ तो मिलना चाहिए। वह मन में कीमत थोड़ी बढ़ा देतीं, मगर साथ ही मन में यह सोचकर डर जातीं कि यह रक़म काफ़ी बड़ी है, हालाँकि उन्हें विश्वास होता कि लॉर्ड एंड टेलर्ज़ के यहाँ या 'आरनल्ड कान्स्टेबल्ज़' के यहाँ उसके उससे ज़्यादा पैसे लगेंगे। मगर फिर सोचतीं कि गालीचों का क्या कहा जा सकता है? हो सकता है चीज़ असली न हो। उनका मन होता कि वह युवक किसी तरह पीछा छोड़ दे और बिना उनकी सहायता के अपनी पढ़ाई पूरी कर ले। यह चीज़ सम्भव नहीं जान पड़ती थी। उसे अंग्रेज़ी बहुत कम आती थी और वह प्रोफ़ेसर की या प्रोफ़ेसर उसकी बात समझ सकें यह मुश्किल ही लगता था। वह बेचारा तो ग़ालीचों की बात करते हुए भी इशारों से बात करता था। कई बार उसे अपने कन्धे इस तरह हिलाने पड़ते थे कि लगता था जैसे उनके जोड़ ढीले न हो जाएँ। रक़में वह इस तरह उँगलियों पर जोड़ता था कि कुछ समझ ही नहीं आता था। फिर भी कुछ-न-कुछ कीमत तो उससे कहनी ही चाहिए थी। सम्भव था उसे सुनकर वह उस तरह मुस्कराकर छोड़ दे। वह मुस्कराता चाहे सद्भाव के साथ ही था, पर उसकी साँस से गन्ध आती थी।

आख़िर असन्तुष्ट भाव से ग़ालीचे को उँगलियों से मलते हुए वह बोलीं कि वे उसके लिए सौ डॉलर दे सकती हैं। आरमीनियन की मुस्कराहट सहसा ग़ायब हो गई और वह मुरझाया-सा उठकर चल दिया। मगर फिर वह जल्दी से अस्थिर और उत्तेजित-सा लौट आया और तेज़-तेज़ एक लम्बा भाषण देकर हमारे कानों के परदे फाड़ने लगा। अम्माँ ने उसे चुप कराने के लिए सौ के एक सौ बीस डॉलर कर दिए। इस पर पता चला कि पहली बार उसने ठीक से सुना नहीं था। उसने समझा था कि वह दो सौ डॉलर कह रही हैं। तो अब वह दो सौ बीस कह रही थीं! अम्माँ बोलीं कि नहीं, कुल एक सौ बीस। आरमीनियन इससे लड़खड़ाकर एक कुरसी में जा धँसा। उसके दाँतों में से इस तरह आवाज़ निकलने लगी और उसका चेहरा ऐसा हो गया जैसे उसे साँप ने काट लिया हो। अम्माँ को डर लगा कि कहीं उसे दौरा न पड़ गया हो। वह सोचने लगीं कि किसी तरह इस मुसीबत से छुटकारा हो, तो वह ज़िन्दगी-भर और कोई चीज़ नहीं ख़रीदेंगी। इसलिए उन्होंने जान छुड़ाने के लिए गुस्से के साथ कहा कि वह डेढ़ सौ डॉलर दे देंगी। उनके कई बार दोहराने पर यह बात आरमीनियन के कानों में पड़ी। सुनकर वह आरमीनियन और भी चीख़ने और कराहने लगा। बोला कि उसे अब अपनी पढ़ाई छोड़नी ही होगी, क्योंकि वह इतना नुक़सान नहीं उठा सकता। सोचकर आया था कि अमरीका में उसे इतना नुक़सान नहीं होगा, मगर वहाँ न किसी को ग़ालीचों की समझ थी और न ही उस बेचारे के नष्ट होने की परवाह थी। अम्माँ कुछ गुस्से और कुछ निरशा के साथ बोलीं कि उन्हें ग़ालीचा नहीं चाहिए, उसने कहा था इसलिए उनहोंने क़ीमत बताई है और अब वह वहाँ से चलना चाहेंगी।

इस पर उसने जैसे मरते-मरते कहा कि ग़ालीचा वह अपने साथ ले जाएँ और उसे उसके हाल पर छोड़ दें—क़ीमत के फ़र्क़ को वह आधा-आधा बाँट सकती हैं। बाहर निकलते हुए अम्माँ ने होटल के क्लर्क से कह दिया कि वह उसे क़ीमत अदा कर दे और वह रक़म हमारे बिल में जोड़ दे।

सप्ताह के अन्त में पापा हमसे मिलने और इतवार वहाँ बिताने के लिए आए, तो अम्माँ ने उन्हें यह खुशख़बरी सुनाई कि वे अब एक बढ़िया पूरबी ग़ालीचे के मालिक हैं। अम्माँ ने तो यह ख़बर इस तरह सुनाई जैसे उन्होंने एक मैदान सर किया हो, मगर पापा पर इसका कुछ असर ही नहीं हुआ। अम्माँ के बार-बार कहने पर भी पहले तो जैसे उन्होंने सुना ही नहीं। ''ग़ालीचा?'' वह बोले, ''कैसा ग़ालीचा? तुमने ग़ालीचा ख़रीदा है? कुछ अक्ल की बात करो! ग़ालीचा!'' जब यह पता चला कि वह कहना सच है और वह उस बारे में अब कुछ नहीं कह सकते, तो उनका चेहरा गुस्से से स्याह और सुर्ख़ हो गया और वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लकार अपना गुबार निकालने लगे। कहने लगे कि मैं शहर में जानकारी करने के बाद यहाँ आया हूँ और इतनी ज़रा-सी चीज़ चाहता हूँ कि मुझे थोड़ी शान्ति मिले, और आकर अभी पहला सिगार भी नहीं पिया कि देखता हूँ कि मैं कमीने ठगों के गिरोह के हाथों लूटा और सताया जा रहा हूँ—मेरे अपने घर के लोग उनके साथ मिलकर मेरा दीवाला निकालने पर तुले हैं। फिर बोले कि वह ग़ालीचा फौरन उनके सामने पेश किया जाए ताकि वह उसे और उसके साथ-साथ उस आरमीनियन को खिड़की से बाहर फेंक सकें। वह क़सम खाने लगे कि उस आदमी की हड्डी-पसली तोड़कर रहेंगे। ग़ालीचे की विशेषता और उसके मूल्य की बातों पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया और बोले कि फ्रंट स्ट्रीट में वह चीज़ पचास सेंट फ़ी बैरेल के हिसाब से मिलती है। वह उठकर आरमीनियन के पालेर की तरफ़ चल दिए, जाने क्या सोचते हुए कि उसे क्या सबक़ देंगे। मगर वहाँ पहुँचकर पता चला कि वह चतुराई में ज़िन्दगी की मार न सहने वाला आदमी अपनी दुकान बढ़ा गया है। वहाँ बन्द दरवाज़े पर ताला लगा था और बाहर तख़्ती लगी थी :

बी. ए. के.

एन. ई. के. एस.

डब्ल्यू. ई. के.

''यह क्या घपला है?'' पापा बोले, ''तुम तो कहती थीं कि उसका नाम डूरबेबियन है।''

बेचारा यतीम डूरबेबियन! उसकी चीज़ें तब चाहे उतनी क़ीमती न रही हों, पर अब ज़रूर हो गई हैं। वह ग़ालीचा, सोफ़े के गद्दों के गिलाफ़ और रेशम के थान, जो अम्माँ ने अस्सी-बयासी में उससे ख़रीदे थे, आज उससे कहीं ज़्यादा क़ीमत में

मिलेंगे। मगर जब तक पापा आरमीनियन की बात भूल नहीं गए, तब तक अम्माँ ने वे चीज़ें उनके सामने नहीं निकालीं।

कई साल बाद अख़बार में एक बार पढ़ा कि किसी पादरी ने आरमीनियनों की हत्या के लिए तुर्किस्तान की निन्दा की है। मुझे याद हो आया कि पापा भी उन दिनों किस बुरी तरह डूरबेबियन की हत्या करना चाहते थे। मैंने उन्हें यह बात याद दिलाई, तो उम्र के साथ और कई बातों में सहनशील हो जाने के बावजूद इस बात का गुस्सा पापा के दिल में ज्यों-का-त्यों था। "पादरी लोग ऐसी ही बातें करते हैं," वह बोले, "पादरी साहब ने यह भी तो पता किया होता कि तुर्कों के साथ उन लोगों ने क्या-क्या ज़्यादतियाँ की थीं?"

17. पिताजी के हाथों में मेरी डाक

छुटपन में एक समय ऐसा था जब मुझे लगता था कि पापा ने मेरा नाम अपने नाम पर 'क्लेयरेंस' रखकर मुझे हमेशा के लिए खूँटी से टाँग दिया है। जितना साहित्य मैंने पढ़ा था, वह 'क्लेयरेंस' नाम के नामाकूल लोगों से भरा पड़ा था। पर्सी नाम भी ख़ासा बुरा था, मगर इस नाम के कुछ अच्छे लड़ाके हो चुके थे। इतिहास में एक ही क्लेयरेंस का ज़िक्र आया था जिसने ट्यूक्सबरी में कोई बेहूदा हरकत की थी और जिसकी मौत अंगूरी शराब के पीपे में पड़कर बहुत उपहासास्पद ढंग से हुई थी।

कहानियों-उपन्यासों में जो क्लेयरेंस थे, उनके क़िस्से और भी बेढब थे। एक कहानी में क्लेयरेंस और फ्रैंक दो भाई थे। 'क्लेयरेंस' एक घमंडी और सड़ियल लड़का था जिसे अपने उजले कपड़ों और घुँघराले बालों का बहुत मान था। फ्रैंक बहुत ख़ुशमिज़ाज लड़का था जो हरएक के साथ खेलना चाहता था। क्लेयरेंस को खेलने का शौक़ नहीं था। वह दूसरों को देखता हुआ इधर-उधर मटकता रहता।

एक दिन जब उनकी माँ घर पर नहीं थीं, क्लेयरेंस ने फ्रैंक को 'उकसाया' कि माँ की बात टालकर वह छत पर पतंग उड़ाए। फ्रैंक की मरज़ी नहीं थी मगर क्लेयरेंस ने उसे ताने दे-देकर और कोंच-कोंचकर राजी कर लिया। छत पर पहुँचकर फ्रैंक ने तो इधर-उधर दौड़ते हुए और मोखों के ऊपर ठोकरें खाते हुए अपने कपड़े गन्दे कर लिए और क्लेयरेंस अपने उजले कपड़ों को साफ़-सुथरे रखे उसे आदेश देता हुआ एक तरफ़ बैठा रहा। मुझे ज़्यादा चोट इससे लगी कि कम्बख़्त ने बैठने के लिए फ़रशी दरवाज़े पर रूमाल भी बिछा लिया। उस पर तुर्रा यह कि माँ आई तो उसने भाई की शिकायत कर दी।

यह क्लेयरेंस कमीनेपन में इस नाम के और सब लोगों से बढ़-चढ़कर हो, ऐसी बात नहीं थी। ऐसे-ऐसे और कितने ही थे। कुछ तो इससे कहीं बढ़कर थे।

जहाँ तक मुझे पता है पापा ने न तो कभी ये कहानियाँ पढ़ी थीं और न ही उन्हें अपने नाम में कोई बुराई नज़र आती थी। वह बल्कि उलटी ही बात सोचते थे, हालाँकि बचपन में वह काफ़ी अक्खड़ लड़के थे और खूब मार-पिटाई किया करते थे। शहर की गलियों में खेला और लड़ा करते थे, दादा के तबेले में अपना कुत्ता रखे हुए थे और

ऊँची खड़खड़ाती हुई बस में सवार होकर चोरी से ग्रीन पॉइंट फेरी की तरफ़ जाया करते थे। गरमियों में वह वेस्ट स्प्रिंग फ़ील्ड में जाते थे और शैडलेन में पेड़ों के झुरमुटों में नंगे पैरों दौड़ते हुए उस घर में जाकर, जहाँ बाबा पैदा हुए थे, गौओं को घर की तरफ़ खदेड़ दिया करते थे, जैसे कि टॉम या बिल नाम का कोई लड़का करता।

मैं समझता हूँ कि बड़े होने पर उनका जैसा स्वभाव था, बचपन में भी ठीक वैसा ही रहा होगा और उन्हें ज़रा परवाह नहीं रही होगी कि लोग उनके नाम के बारे में क्या सोचते हैं। दूसरों की उनके बारे में क्या धारणा है, इस पर वह नाक-भौं भले ही चढ़ाएँ, इसे और वह ज़रा भी महत्त्व नहीं देते थे। अपने मन में उन्होंने दूसरों को लेकर कई-कई धारणाएँ बना रखी थीं, मगर वे तो उनकी अपनी धारणाएँ थीं। वह हँसमुख, आत्मविश्वासी और स्थिर-चित्त थे। कभी किसी लड़के ने उनके नाम को लेकर उनका मज़ाक उड़ाया भी होगा, तो पापा ने हँसकर टाल दिया होगा कि इस बात का कोई सिर-पैर ही नहीं है।

मैंने अम्माँ से पूछा था कि हमारे परिवार में यह नाम चला किस तरह से? उन्होंने बताया कि हमारे चकड़दादा का नाम था बेंजामिन डे। हमारे पड़दादा का नाम था हेनरी। इससे हमारे दादा को नाम दिया गया बेंजामिन हेनरी। उन्होंने अपने बड़े लड़के का नाम रखा बेंजामिन और उससे छोटे का हेनरी। इसलिए जब पापा पैदा हुए, तो परिवार का कोई नाम बचा ही नहीं था। पापा के लिए नाम चुनने का भार दादी को सौंपा गया। डे परिवार के दुर्भाग्य से उन दिनों वह एक उपन्यास पढ़ रही थीं जिसके नायक का नाम था क्लेयरेंस।

मुझे पता है कि दादी का स्वभाव कई बातों में दादा से मिलता था, मगर एक चीज़ उनमें अलग थी जिसे वह ख़ामोशी से अपने तक ही सीमित रखती थीं और वह थी भावुकता। उनके यह रूमानी नाम चुनने पर हो सकता है, दादा एक बार मुस्कराए हों, मगर वह बेलाग क़िस्म के आदमी थे और ऐसी छोटी-छोटी बातों को ज़्यादा महत्त्व नहीं देते थे। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की इन छोटी-छोटी चीज़ों का बल्कि वह अपने में मज़ा लिया करते थे। इस मामले में वैसे कुछ दोष उनका भी था, क्योंकि वह उपन्यास उन्होंने ही अपनी पत्रिका में प्रकाशित किया था।

अम्माँ यह बता चुकीं, तो मैंने उनसे पूछा कि मेरा नाम क्लेयरेंस क्यों रखा गया था?

वह बोलीं कि यह नाम उन्होंने नहीं चुना था। उन्होंने पापा को सब तरह के नाम सुझाए थे, मगर हर नाम में पापा ने कुछ-न-कुछ दोष ढूँढ निकाला था। आख़िर हारकर जब अम्माँ ने कहा कि वह फिर अपने नाम पर ही मेरा नाम रख दें, तो वह बोले कि यह सुझाव और सब सुझावों से अच्छा है—यह नाम बिलकुल ठीक रहेगा।

पापा में और मुझमें यूँ भी काफ़ी संघर्ष होता, पर इस नाम ने तो मामला और भी बिगाड़ दिया। हर बार जब मैं उनकी आशा से अधिक मूर्ख साबित होता, तो

वह मेरे मन में यह बात बिठाने की कोशिश करते कि मेरी ज़िम्मेदारियाँ बहुत ज़्यादा हैं, क्योंकि मैं उनका बड़ा लड़का हूँ—वह लड़का जिसे उन्होंने अपना नाम दिया है। मुझे लगता कि जिस लड़के का नाम पिता के नाम पर रखा जाए, उससे जाने क्या-क्या उम्मीद की जाती है। मुझे अपने भाइयों से ईर्ष्या होती कि उनसे इस बिना पर किसी तरह की उम्मीद नहीं की जाती।

जब ज़रा बड़े होने पर मेरे नाम चिट्ठियाँ आने लगीं, तब तो मेरी उनसे ईर्ष्या और भी बढ़ गई। तब यह असलियत मेरे सामने आई कि मुझे अपना नाम देकर पापा कुदरतन वह नाम ख़ुद भी रखे रहे थे। इसलिए क्लेयरेंस एस. डे के नाम से कोई भी चिट्ठी आती, तो वह खोल लेते हालाँकि उनमें कुछ चिट्ठियाँ मेरे नाम होतीं।

अगर चिट्ठियाँ क्लेयरेंस एस. डे. जूनियर के नाम से आतीं, तो भी वह खोल लेते, हालाँकि जान-बूझकर नहीं। जूनियर अगर बहुत साफ़ न लिखा हो, तो वह एस्क्वायर पढ़ा जाता था। फिर पापा को क्लेयरेंस डे के नाम की चिट्ठियाँ खोलने की इतनी आदत थी कि हर बार यह देखना उन्हें याद नहीं रहता था कि कहीं आगे जूनियर तो नहीं लिखा। इस तरह मेल और एक्सप्रेस के मामले में मेरा अपना कोई नाम ही नहीं था।

बहुत छोटा था, तो सिर्फ़ उन फर्मों की ही चिट्ठियाँ आती थीं जिनके विज्ञापन 'यूथ्स कॉम्पेनियन' में पढ़कर मैं उन्हें अपने परिपत्र भेजने के लिए लिख देता था। उन परिपत्रों में जादू के ताश, टिकट, सिक्के, ज़ेबी चाकू, नकली मकड़ियाँ और नकली उबले हुए अंडे—ऐसी-ऐसी चीज़ों के आकर्षक विवरण रहते थे और मेरे लिए वे बहुत रोचक और महत्त्वपूर्ण होते थे। मगर मुसीबत यह थी कि पापा उन्हें देखते ही खोल लेते थे। मुझे फिर वे दूसरी बार मँगवाने पड़ते। अगर दूसरी बार भी वे पापा के हाथ लग जाते, तो वे बुरी तरह झुंझला उठते। एक बार की मुझे याद है कि बार-बार नकली दाढ़ी का लुभावना सौदा करने के अनुरोध पढ़कर वह बिलकुल ही आपे से बाहर हो गए थे। उन्हें समझ नहीं आता था कि उनके पास हर डाक से ये अनुरोध क्यों चले आते हैं। इसका कारण तो मैं जानता था, मगर कई बार मैं भी नहीं समझ पाता था कि इतने परिपत्र क्यों चले आते हैं। मुझे नहीं पता था कि मेरे एक छोटा-सा पोस्टकार्ड लिखने से मेरा, या हमारा, नाम अपने-आप कई बड़ी-बड़ी मेलिंग-लिस्टों में दर्ज कर दिया जाता था।

उन दिनों मुझे अपनी ज़्यादातर डाक पोस्टमैन के बजाय पापा की रद्दी की टोकरी में मिला करती थी।

बारह-तेरह साल की उम्र में मैंने इन बचकाना चीज़ों के लिए लिखना बन्द कर दिया और एक नए क्षेत्र में पहुँच गया। मुझे या पापा को, जिसे भी डाक पहले मिलती, परिपत्रों के अलावा इस तरह के पत्र भी प्राप्त होने लगे।

"प्रिय मित्र डे!

"आपका मूल्यवान् पत्र मिला। आपने हमें अपनी एजेन्सी का पूरा सामान भेजने को लिखा है। आप हमें पोस्टेज और पैकिंग के लिए 1.49 डॉलर का पोस्टल-ऑर्डर भेज दें, तो हम आपको अधिकृत कर देंगे कि आप हमारे 'मेस्मरेज्म के गुप्त भेद सीरीज़' और 'ख़ूनी कहानियाँ' सीरीज़ के ग्राहक बनकर अपने फालतू समय में बिना मेहनत के काफ़ी धन कमा सकें।"

एक बार वसन्त के दिनों में मेरे भेजे हुए एक आवेदन-पत्र के उत्तर में, जो अपनी तरफ़ से मैंने गुप्त रूप से भेजा था, पापा को स्टेटन आइलैंड और होबोकेन में पॉप कॉर्न के लिए 'जेम होम पॉपर' बेचने का एकमात्र अधिकार प्राप्त हो गया। लिखा था, "गृहस्थ स्त्रियाँ यह चीज़ देखते ही ख़रीद लेती हैं।"

पापा बुरी तरह झल्लाकर दो-चार बार यह कष्ट सहन कर चुके, तो मेरे और उनके नाम लड़कियों के पत्र आने लगे। यह हम दोनों का सौभाग्य था कि ऐसे पत्र कम आते थे, मगर जब आते तो हम दोनों के लिए ही कष्ट का कारण पैदा हो जाता। पापा को पहले कभी पता था कि कम उम्र की लड़कियाँ कितनी मूर्ख होती हैं, तो अब वह इस बात को भूल चुके थे। मेरा लड़कियों के अटपटेपन से परिचित होने का पहला मौका था। चाहे उनकी चट्ठियाँ कितनी भी प्राइवेट और छेड़खानी से भरी हों, वे बहुत बार लिफ़ाफ़े पर नाम के साथ जूनियर लिखना भूल जातीं। पापा ऐसी कोई चिट्ठी खोल लेते तो आरम्भ से अन्त तक पूरी पढ़ जाते। कई बार दो-दो बार पढ़ते और मुँह में बड़बड़ाते रहते, "अजब आत है! मेरी कुछ समझ में ही नहीं आता। मैं जानता ही नहीं कि यह कौन है जिसने यह पत्र लिखा है। इसका सिर-पैर ही मेरे पल्ले नहीं पड़ता।" जब तक पापा को यह ध्यान आता कि यह पत्र मेरे लिए है, तब तक मेरा चेहरा शरम से लाल हो जाता और मुझे पापा से ज़्यादा गुस्सा लिखने वाली लड़की पर आता। एक बार जब उन्होंने सारे घर को चिट्ठी के कुछ वाक्य पढ़कर सुनाए, तो उसे अपनी चिट्ठी मानने में मेरे प्राण निकलने को हो गए।

और कई लोगों को मैं जानता था जिनके नाम उनके पिताओं के नामों पर थे, मगर उन्हें कभी ऐसी तकलीफ़ों का सामना नहीं करना पड़ा था। पापा-जैसा दिल और इरादे का नेक आदमी कम होता है, मगर किसी पैकेट या लिफ़ाफ़े पर अपना नाम देखकर उन्हें कभी ध्यान नहीं आता था कि कहीं वह मेरे लिए न हो। इतने वह चुस्त स्वभाव के थे कि यह मौक़ा ही नहीं आता था कि चीज़ पहले मेरे हाथ लग जाए। और हर काम एक मन से और जल्दी से पूरा करने की आदत के कारण, वह सारी डाक एक साथ खोल लेते थे और उसके बारे में जो कुछ करना होता था, करने लगते थे।

यह सिलसिला बड़े होने पर भी तब तक चलता रहा जब तक मैंने अपना अलग घर नहीं ले लिया। पापा ने मेरे मामलों में कभी दख़ल नहीं दिया, मगर अपनी आदत

भी वह नहीं बदल सके। वह मुझे कुढ़ते देखते तो दिल में इसके लिए खेद प्रकट करते। मगर उन्हें समझ नहीं आता था कि मुझे उससे झुँझलाहट क्यों होती है? उन्हें इससे आश्चर्य भी होता और मज़ा भी मिलता। मुझे गुस्सा तब आता था जब कोई ऐसी चीज़ मेरे नाम आती जो मैं नहीं चाहता था कि पापा देखें, और वह मुझे हॉल की मेज़ पर खुली हुई पड़ी मिलती। साथ ही लिखा होता, ''जूनियर के लिए!'' मगर पापा के साथ गुस्सा ज़्यादा देर नहीं रह सकता था। वह दिल के इतने साफ़ थे कि कभी जान-बूझकर किसी को चोट नहीं पहुँचाना चाहते थे।

पापा को खुद काफ़ी गुस्सा आता था, मगर ज़्यादातर लोगों पर नहीं, कुछ चीज़ों पर। लोग उन पर गुस्सा करें, इसका उन्हें ज़रा भी बुरा नहीं लगता था।

कॉलेज से आकर ज़रा ऐंठ के साथ मैं उनसे कहता कि आगे से वह इस मामले में ऐसी असावधानी न बरतें, तो वह कहते कि मुझसे ज़्यादा इस चीज़ से उन्हें तकलीफ़ होती है। कहते कि यह उनका दोष नहीं जो मुझे पत्र लिखने वालों को मेरा पूरा नाम नहीं आता। उन्हें क्या यह अच्छा लगता है कि नाश्ते के वक़्त यह देखकर वह अपनी तबीअत ख़राब कर लें कि बीटल क्रीक से किसी पागलों की कम्पनी ने उन्हें रोटी के सूखे टुकड़ों का एक डब्बा भेजा है और साथ लिखा है कि यह कूड़ा उनके हाज़मे को ठीक रखेगा? यह ठीक है क्लेयरेंस कि मैंने उसे आग में फेंक दिया, मगर बताओ मैं और क्या करता? तुम्हें वह भयानक कचरा अच्छा लगता है, तो मुझे बहुत अफ़सोस है। तुम मुझे बता दो कि यह चीज़ कहाँ से मिलती है, तो आज मैं तुम्हारे लिए दूसरा डिब्बा लेता आऊँगा। "कहो, तो तुम्हें पूरी पेटी ही ला दूँ–सिर्फ़ तुम उसे खाना नहीं।''

जिन दिनों मिसेज़ पैंकहार्ट और उनके साथी स्त्रियों के मताधिकार के लिए लड़ते हुए लन्दन में अपने को लैम्प-पोस्टों से बँधवा रहे थे, उन दिनों 'डियर क्लेयरेंस' के नाम फ्रांसिस हैंड का एक पत्र आया जिसमें उससे अनुरोध किया गया था कि वह भी उस संघर्ष में कुछ योग दे–अर्थात् एक मीटिंग में उस विषय में भाषण दे। पढ़कर पापा का चेहरा सुर्ख हो उठा। वह गरजकर अम्माँ से ओले, ''मैं इन लोगों की मीटिंग में जाकर भाषण दूँगा? क्यों नहीं? तुम मिसेज़ हैंड को लिख दो कि तुम लोगों की पेटीकोट पैरेड के बारे में अपनी राय बताकर मुझे बहुत-बहुत खुशी होगी।''

''ख़ामख़ाह ऐसी बातें मत करो,'' अम्माँ बोलीं, ''मिसेज़ हैंड बहुत अच्छी महिला हैं और यह पत्र मेरे ख़याल में क्लेयरेंस के नाम का है।''

एक बार मेरी नज़र एक सस्ते सट्टे पर थी। मैंने उस बारे में पापा की राय माँगी। उनका ख़याल था कि वह कौड़ी का भी माल नहीं। मगर मुझे सोचने पर लगा कि सौदा बुरा नहीं है। इसलिए मैंने पापा के दफ़्तर की बजाय एक और फ़र्म के ज़रिये वह माल ख़रीद लिया। महीने के आख़िर में इस फ़र्म ने मेरे सौदे का पूरा ब्यौरा

बनाकर भेज दिया। नाम के साथ जूनियर लिखना वे भी भूल गए। पापा ने लिफ़ाफ़ा खोला, तो पहले तो उन्हें लगा कि इस फ़र्म ने बिना उनके पूछे अपने यहाँ उनके नाम का खाता खोल दिया है। मैंने उन्हें अम्माँ से कहते सुना कि वह उन लोगों की गरदन तोड़ देंगे।

''यह चीज़ मेरे नाम है, पापा!'' मैंने स्थिति को समझकर कहा। हम दोनों की आँखें पल-भर मिली रहीं।

''मेरे मना करने पर भी तुमने यह माल ख़रीद लिया था?'' पापा अविश्वास के साथ बोले।

''जी हाँ।''

उन्होंने काग़ज़ मुझे पकड़ाया और कमरे से बाहर चले गए।

हम दोनों कई दिन तक एक-दूसरे से नाराज़ रहे। बाद में फिर समझौता हो गया।

कभी-कभी ऐसा होता था कि मेरे पास किसी चिट्ठी का जवाब देने का समय न होता, तो मैं अपने डेस्क से जो कोई भी काग़ज़ उठाकर—चाहे वह किताबों का सर्क्युलर हो या अख़बार का टुकड़ा या लांड्री का बिल—कुछ भी लिफ़ाफ़े में डालकर भेज देता जिससे दूसरे को शिकायत न रहे और मेरी लिखने की मेहनत भी बच जाए। मैं कई लोगों को अपनी इस आदत के बारे में बताया करता था। एक बार एक डिनर पर मैंने एलिस डी. मिलर तथा दो-एक और लेखकों की उपस्थिति में अपनी इस आदत का ज़िक्र किया। कुछ दिनों बाद एलिस ने एक पत्र में हेनरी जेम्स की आलोचना करने के बाद अन्त में मुझे लिखा कि मैं उसे अपने लांड्री के बिल न भेजूँ, क्योंकि उसे यह बरदाश्त न होगा। 'जूनियर' लिखना वह भी भूल गई।

''परमात्मा की कसम,'' पापा रूखे स्वर में बोले, ''यह तो इन्तिहा है। यह स्त्री मुझे लिखती है कि मैं 'गोल्डन बाडल' न पढ़ूँ, जैसे कि मैं पढ़ने के लिए मरा जा रहा हूँ; और फिर जाने क्यों लिखती है कि मैं उसे अपने लांड्री के बिल न भेजा करूँ।''

इन घटनाओं का लाभ यह हुआ कि पापा के साथ मेरी घनिष्ठता बढ़ती गई। और भाइयों के तो उनसे छोटे-छोटे मोर्चे ही होते थे, मेरा उनके साथ बाकायदा युद्ध चलता था। यह आपसी संघर्ष हम दोनों को ही बुरा लगता था, मगर उससे न जाने कैसे हम एक-दूसरे के बहुत निकट आते गए।

18. अन्तर्राष्ट्रीय मेला

1893 में पापा, अम्माँ और मेरे सब भाई शिकागो में अन्तर्राष्ट्रीय मेला देखने के लिए गए थे। मैं मेले में अपना पहला साल पूरा कर रहा था और मेरे घर लौटने तक वे लोग चले गए थे। पापा ने लिखा था कि मैं भी पीछे से पहुँच जाऊँ, मगर मेरे लिए यह सम्भव नहीं था। मैं अपनी ज़ेब ख़ाली कर चुका था। सितम्बर में कॉलेज खुलने तक और पैसे मिलने की सम्भावना भी नहीं थी। हालत यहाँ तक थी कि कार के किराये या तम्बाकू के लिए भी पैसे नहीं थे। मुझे इस चीज़ की या शिकागो न जा सकने की परेशानी नहीं थी—परेशानी इस बात की थी कि ज़िन्दगी में पहली बार मेरे ऊपर काफ़ी कर्ज़ हो गया था।

मुझे वार्नर डोल के सात सप्ताह के खाने के बयालीस डॉलर देने थे, डोल के भारी टर्टल-नेक स्वेटर के पैसे देने थे, डि-बसी के टाइयों के और मैन वेयरिंग एंड को. के. कमीज़ों और नोकदार जूतों के पैसे देने थे। डॉयबलिन में कुछ रातें ख़ूब मज़े से पी थी, अब उस मज़े के पैसे चुकाने थे। तम्बाकू-फरोश स्टॉडार्ड के मुझे साठ-सत्तर डॉलर देने थे, क्योंकि उससे मैं हर तरह के बढ़िया-बढ़िया पाइप ख़रीदता रहा था– उनमें एक सीरशाम बैल के सिर के आकार का था, जिसमें अम्बर के सींग लगे थे। कुल मिलाकर सब दुकानदारों के लगभग तीन सौ डॉलर देने थे। समझ में नहीं आता था कि मैंने इतनी फिज़ूलखर्ची की किस तरह और अब यह सब कर्ज चुकाऊँगा कैसे? सबसे बुरी बात यह थी कि मेरे लेनदार भी वसूली की उम्मीद छोड़ रहे थे।

मैंने बूढ़ी मारग्रेट से भाड़े के लिए एक सिक्का उधार ले लिया। वह नाश्ता बना चुकी, तो एक केला और एक सैंडविच ज़ेब में रखकर नौकरी करने के इरादे से पापा के दफ़्तर की तरफ़ चल दिया। उन लोगों के पास मेरे लिए कोई काम नहीं था और वे मुझे वहाँ चाहते भी न थे। मगर मेरे वहाँ जाने का एक अच्छा फल भी हुआ, मेरा एक लेनदार उस समय वहाँ आया हुआ था। वह अपने उधार के बिलों का बंडल बगल में लिए इस इरादे से न्यूयॉर्क आया था कि हो सके तो लड़कों के माँ-बाप से उनकी वसूली करें।

मैं चकरा गया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरा कोई लेनदार पापा के दफ़्तर में पहुँच सकता है। मुझे यह बहुत कमीनी हरकत लगी। वहाँ उस वक़्त मेरी

जगह पापा होते, तो कितनी मुश्किल पड़ती! पापा मुझसे रोज़ कहते थे, कि कर्ज़ कभी नहीं लेना चाहिए। हालाँकि मेरे अपने हवास गुम हो रहे थे, फिर भी मैं अपने लेनदार पर रौब झाड़ने की कोशिश करने लगा। मैंने ऊँची मगर काँपती हुई आवाज़ में उससे कहा कि अगर वह ऐसी हिमाकत करेगा, तो मैं ज़िन्दगी-भर उसके यहाँ से कोई चीज़ नहीं ख़रीदूँगा।

उसने कहा कि उसे अफ़सोस है। मगर लगता नहीं था कि उसे ज़रा भी अफ़सोस है। उसने कहा कि ज़माना ख़राब जा रहा है और उसके पास पैसा नहीं है। मुझे उसकी बात पर एतबार नहीं आया। आज मुझे पता है कि उन दिनों नब्बे-इक्यानवे की मन्दी शुरू हो चुकी थी और बैंक बन्द हो रहे थे। मगर तब मुझे इसका कुछ पता न था। मेरे दिमाग़ पर अपनी ही मुसीबतें छाई थीं। जब मेरे लेनदार ने चलते-चलते कहा कि इस बार मेरे पिता वहाँ नहीं हैं, इसलिए अगली बार न्यूयॉर्क आने पर वह उनसे मिलेगा, तो मुझे अपनी मुसीबतें और भी बड़ी लगने लगीं।

कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ? एक चीज़ साफ़ थी और वह यह कि उन गरमियों में मेरे पापा के दफ़्तर में काम करना ज़रूरी था। इसलिए उनके मेले से लौटते ही मैंने उनसे कहा कि वह मुझे कोई काम दे दें। मैंने कहा कि मुझे छुट्टी नहीं चाहिए, मैं इस तरह काम करके कुछ बहुमूल्य अनुभव प्राप्त करना चाहता हूँ।

विचार करने के बाद पापा ने कहा कि बारी-बारी से जो क्लर्क छुट्टी पर जाते हैं, मैं उनकी जगह काम कर लूँ। मैंने इस तरह चार डॉलर प्रति सप्ताह पर काम करना शुरू कर दिया।

दूसरी जगह काम करके शायद वेतन कुछ ज़्यादा मिल जाता, मगर उससे भी बिल तो अदा नहीं हो सकते थे। फिर मेरा मतलब थोड़े-से डॉलर और बचाना नहीं था, मतलब था अपने लेनदारों को बाहर रखने के लिए पापा के दफ़्तर में पहरा देना। मुझे किसी काम से बाहर भेजा जाता, तो मैं दौड़ता हुआ जाता और दौड़ता हुआ वापस आता। दफ़्तर में रहकर लेटर-प्रेस के लोहे के चक्के को घुमाता हुआ भी ख़ज़ानची के काउंटर के आने की जालीदार खिड़की पर निगाह रखता कि न्यू हेवन से कोई बूढ़ा बाज़ पापा से मिलने न आ रहा हो।

मगर गरमी के पिछले दिनों में मुसीबत आ खड़ी हुई। ख़ज़ानची ने पापा से कहा कि उसकी उम्मीद से कहीं बढ़कर काम करने लगा हूँ और चाहे कभी-कभी ग़लती कर जाता हूँ, फिर भी सब काम बहुत जल्दी और ठीक वक़्त से करता हूँ। सुबह तो बहुत ही जल्दी पहुँच जाता हूँ। पापा इससे इतने खुश हुए कि उन्होंने मुझे अन्दर अपने कमरे में बुलाकर सूचना दी कि मेरे काम से खुश होकर वह मुझे छुट्टी पर भेज रहे हैं।

मैंने पूरी ईमानदारी के साथ उन्हें विश्वास दिलाना चाहा कि मुझे छुट्टी बिलकुल नहीं चाहिए।

पापा मुस्कराए कि मुझे लिफ़ाफ़े बन्द करने और दवातों में स्याही भरने का कितना शौक़ है! बोले कि नहीं, कॉलेज खुलने से पहले मुझे कुछ दिन आराम करना चाहिए। मैं शिकागो चला जाऊँ और जाकर अन्तर्राष्ट्रीय मेला देख आऊँ।

मैंने कहा कि मुझे मेला देखने का शौक़ नहीं है।

पापा को यह बात अच्छी नहीं लगी। बोले, "मैंने कह दिया है कि हो आओ, इसलिए तुम्हें वहाँ ज़रूर हो आना चाहिए।" मुझे लगा कि मैं अब इन्कार करूँ तो वह समझेंगे कि उनकी आज्ञा का उल्लंघन हुआ है।

मैंने डरते-डरते आधी बात उन्हें बता दी—कहा कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, इसलिए मैं शिकागो नहीं जा सकता।

"अपने एलाउंस का तुमने क्या किया?" पापा ने हैरान होकर पूछा।

"क्या करूँ...मुझे बहुत अफ़सोस है...वह सब मुझसे ख़र्च हो गया।"

"यह तुमने ठीक नहीं किया।"

मैंने धीमी आवाज़ में कहा कि मैं ग़लती मानता हूँ।

पापा प्यार के साथ परन्तु निश्चित स्वर में बोले कि आइन्दा के लिए मुझे इस चीज़ से सबक लेना चाहिए—अपनी ज़रा-सी असावधानता से मैंने एक ऐसी चीज़ देखने का मौका खो दिया है जो शायद फिर ज़िन्दगी-भर कभी देखनी नसीब न हो। उन्होंने कहा कि उन्हें उसका बहुत रंज है।

मगर मुझे कोई रंज नहीं था। मैं जाकर लेटर प्रेस को चलाने लगा। मुझे प्लेटों को ज़माना और लोहे के रँगे हुए पहिये को घुमाना बहुत अच्छा लगता था। हम कारबन इस्तेमाल नहीं करते थे। कॉपीइंग इंक से हाथ से पत्र लिखकर, या टाइपराइटर से टाइप करके, कॉपियाँ निकालने के लिए उन्हें नीचे टिशू पेपर पर दबाते थे। यह काम ठीक से करने के लिए बहुत अभ्यास की ज़रूरत थी। टिशू कम गीला होता, तो कॉपी इतनी फीकी आती कि पढ़ी भी न जाती। ज़्यादा गीला हो जाता, तो स्याही फैल जाती और सारे पत्र पर धब्बे पड़ जाते।

अगले रोज़ मैं मज़े से यह काम कर रहा था, पापा ने फिर रुकावट डाल दी। उन्होंने शायद अम्माँ से बात की थी और क्योंकि और सब लोग मेला देख आए थे, इसलिए उन्होंने सोचा था कि मुझे भी देख आना चाहिए। पापा ने कहा कि इस बार वह मेरा लिहाज़ करके मुझे कुछ पैसे दे देंगे और पूछा कि मैंने अपने वेतन में से कितना बचाया है?

मैं अपना लगभग सारा वेतन ही बचाता रहा था। सप्ताह में एक डॉलर से ज़्यादा मैंने ख़र्च नहीं किया था। अपना लंच मैं मारग्रेट से बँधवा लाता था। इसके अलावा

बस बाल कटवाने पर, आने-जाने पर और जोड़ी कफ़ ख़रीदने पर ही जो ख़र्च हुआ था, सो हुआ था, मगर जो कुछ बचाया था, उससे न्यू हेवन में अपने लेनदारों को छोटी-छोटी किस्तें भेजता रहा था, इसलिए मेरे पास कुल अड़तालीस सेंट बचे थे।

"वाह, क्या खूब!" पापा निराश भाव से हँसे, "तुम दफ़्तर में अपना काम तो ठीक से करते रहे हो, मगर अभी तुम्हें बहुत-कुछ सीखना बाक़ी है।"

मैंने दिल में सोचा कि उन्हें क्या पता है मैं कितना कुछ सीख रहा हूँ।

पापा सिगार सुलगाकर मेरी तरफ़ देखते हुए सोचते रहे। फिर बोले, "देखो क्लेयरेंस, तुमने यह मेला देखने का अवसर खो दिया, तो मुझे ज़िन्दगी-भर इसके लिए अफ़सोस रहेगा। यह एक ऐसा शिक्षा का अवसर है जो शायद फिर कभी तुम्हें न मिल सके। इसलिए मैं शिकागो जाने के लिए तुम्हें सौ डॉलर उपहार में दे रहा हूँ।"

"मैं इसके लिए आभारी हूँ, पापा," मैंने कहा, "मगर ज़्यादा अच्छा हो अगर आप मुझे नक़द रुपये अपने पास रखने दें।"

पापा की भौंहें तन गईं।

मैं उनके डेस्क के पास खड़ा देख रहा था—सौ डॉलर से मेरा और मेरे लेनदारों का कितना उपकार हो सकता था!

उनके उत्तर ने मेरी आशाओं पर पानी फेर दिया। "जैसे तुमने पहली रक़म उड़ा दी है, उसी तरह उड़ाने के लिए मैं तुम्हें सौ डॉलर नहीं दे सकता," वह बोले, "तुम शिक्षा प्राप्त करने के इस अवसर का लाभ न उठाना चाहो, तो...।"

"मैं ज़रूर लाभ उठाना चाहता हूँ पापा," मैंने कहा। सोचा कि सौ डॉलर पाने का अगर यही रास्ता है कि शिकागो का चक्कर लगाया जाए, तो चक्कर लगा आना चाहिए। इस तरह भी बिल अदा करने के लिए कुछ-न-कुछ रक़म तो मैं बचा ही सकूँगा।

मैंने ख़ज़ानची के पास जाकर उससे प्रार्थना की कि मेरी ग़ैरहाज़िरी में वह ज़रा निगाह रखे और मेरे किसी लेनदार को अन्दर न जाने दे। उसने कहा कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा, मगर यह वह नहीं चाहेगा कि आने वालों को बहाने से बाहर रखने की कोशिश में वह पकड़ा जाए। मैंने उसे समझाना चाहा कि वे लोग पापा से मिल लेंगे, तो पापा खफ़ा होंगे और उनसे पुस्तक-एजेंटों का-सा ही व्यवहार होना चाहिए। मगर वह बोला कि हो सकता है उन लोगों की बातें बुरी होने पर भी पापा को महत्त्वपूर्ण लगें, और काम से आए हुए आदमी को लौटाना यूँ भी उसके लिए सम्भव नहीं।

यह सुनकर मन हुआ कि बिलकुल न जाऊँ। मगर अम्माँ और पापा मेरा चाव पूरा करने पर तुले हुए थे, इसलिए मन मारे मैं भी जाने में अपनी उत्सुकता दिखा रहा था।

मैंने अपने सब लेनदारों को लिख दिया कि अब जल्द ही मैं अपने बिल अदा करने लगूँगा, वे थोड़े-से दिन और इन्तज़ार कर लें।

पापा ने पूछा कि मैं किस रास्ते का टिकट ले रहा हूँ और सुझाया कि लेक शोर का रास्ता सबसे अच्छा रहेगा। मैंने उन्हें साफ़ कुछ नहीं कहा। उनकी इतनी उदारता के बाद यह मैं उन्हें कैसे बताता कि मैंने ग्यारह डॉलर में एरी स्पेशल एक्सकर्शन का शिकागो तक का रिआयती वापसी टिकट ख़रीद लिया है। उन दिनों एरी के नाम का ही लोग मज़ाक उड़ाते थे। शिकागो तक तो एरी की यात्राएँ नहीं जाती थीं, मगर दूसरी कई छोटी रेलों पर वे स्पेशल एक्सकर्शन ले जाया करते थे।

जहाँ तक मुझे याद है, गाड़ी को शिकागो पहुँचने में तीन दिन और दो रातें लगी थीं। गाड़ी हर छोटे स्टेशन पर ठहरती और कई बार घंटों साइडिंग में लगी रहती। ज़्यादातर तो मुझे पता ही नहीं चलता था कि हम कहाँ हैं। और मुसाफिर लेने के लिए एक्सकर्शन कैनेडा और अमरीका के जाने किन-किन हिस्सों में घूम रही थी। गाड़ी में खाना खाने या सोने के डिब्बे तो थे नहीं, दिन की यात्रा के डिब्बे ही थे। स्त्रियाँ, पुरुष और बच्चे उनमें भरे हुए थे। मुझसे पिछली सीट पर एक स्त्री दो छोटे बच्चों के साथ बैठी थी। अपनी सीट पर मैं एक तरह से अकेला ही था, क्योंकि जो बुड्ढा मेरे साथ था, वह अपना ज़्यादा वक़्त तम्बाकू पीने के कमरे में बिताता था। मैं वहाँ जा नहीं सकता था क्योंकि मेरे पास पीने को कुछ नहीं था।

खिड़कियाँ खुली थीं और काफ़ी गरमी थी। जिस्म पर कोयले की स्याही चढ़ी हुई थी। बाथरूम ख़राब था, इसलिए उसे ताला लगा दिया गया था। पीने के पानी की टंकी बहुत जल्दी ख़ाली हो गई थी। हममें से बहुतों के पास खाने को कुछ नहीं था और हमें बैठे-बैठे ही सोना पड़ता था, फिर भी अच्छा लगता था। थके हुए गाड़ी चलाने वालों को छोड़कर बाक़ी सब लोग मिलनसार और अच्छे स्वभाव के थे। ज्योंही गाड़ी कहीं रुकती हम सब निकलकर स्टेशन के बाथरूम की तरफ़ दौड़ते, या सैंडविच और पाई ख़रीदने की कोशिश करते और वाटर-कूलर के पास लाइन में जा खड़े होते। जो रह जाता, वह अगले स्टेशन पर फिर कोशिश करता। एक जगह स्टेशन को ताला लगा था और आसपास और कोई इमारत नहीं थी। वहाँ तक़दीर ने हमारा सबसे ज़्यादा साथ दिया क्योंकि लाइनों के पास पानी से भरा हुआ एक पीला-सा पोखर था—जो जितना चाहे पी लें। मैं वहाँ अपनी बनियान निचोड़ रहा था कि गाड़ी ने सीटी दे दी और मैं बड़ी मुश्किल से चलती गाड़ी में चढ़ पाया। एक दिन पहले एक स्टेशन पर जहाँ खाना काफ़ी अच्छा था, बहुत से मुसाफ़िर तेज़ न दौड़ सकने की वजह से गाड़ी से रह गए थे।

शिकागो में मैंने एक बोर्डिंग-हाउस ढूँढ लिया। मेले के आसपास की जगहें महँगी थीं, इसलिए मैंने दूर की जगह देखी थी। रेल रोड के पास यह एक पुराना

बोर्डिंग-हाउस था, मगर था साफ़ और अच्छा। मैंने अम्माँ को एक पोस्टकार्ड लिख दिया कि मेला बहुत ही अच्छा है और अच्छी तरह नहाकर सो गया।

दूसरे दिन मेला देखने गया। मेरा बोर्डिंग-हाउस इतनी दूर था कि मुझे गाड़ी में जाना पड़ा। मगर स्टेशन पास ही था और किराया भी कुछ नहीं था। मेले में पहुँचकर मुझे बहुत अच्छा लगा। चीज़ देखने की ही थी। बड़ी-बड़ी इमारतें, चाहे पत्थर की बनी और सौ साल टिकी रहने वाली नहीं थीं फिर भी उनकी शान देखकर आँखें नहीं भरती थीं—कम-से-कम एरी में आए हुए व्यक्ति की मासूम आँखें!

मैं कोर्ट ऑफ़ ऑनर में बैठा रहा, नक़ली झील के इर्द-गिर्द घूमता रहा और प्रदर्शनी के दो-एक हॉलों में चक्कर लगाकर वापस अपने बोर्डिंग-हाउस में चला आया।

दूसरी बार जाकर मैंने ज़रा ठीक से जाँच-पड़ताल की। पता चला कि जिस-जिस जगह मैं जाना चाहता हूँ, वही बहुत महँगी है। मिडवे प्लेसैंस—बड़ी सैरगाह जहाँ कई तरह के खेल भी दिखाए जाते थे—ख़ास तौर पर महँगी जगह थी। बेडुइन, फ़ेरिम व्हील, हवाई देश का भयानक (कैनवस का) ज्वालामुखी, बँधा हुआ विचित्र गुब्बारा और एक 'सौन्दर्य-सभा'—कितना कुछ था! दाहोमी के वनमानुषों का असली गाँव भी था। वे नाक-भौं चढ़ाते हुए पास से गुज़रते तो मैं उन्हें हाथ-बढ़ाकर छू लेता और वे अपने में कुछ बुदबुदा रहे होते तो कान लगाकर सुन लेता। वे कई बार युद्ध के नारे लगाते हुए आक्रमणकारी ढंग से नाचते भी थे। गाइड में लिखा था कि "वे अपनी कारीगरी का सामान भी बेचते हैं।" सबसे ज़्यादा जिस चीज़ की चर्चा अख़बारों में थी, वे थीं नंगे पेट नाचने वाली लड़कियाँ। पादरी लोगों को एतराज़ था कि वे बहुत असभ्य ढंग से सबके सामने अपना शरीर हिलाती हैं।

इन लड़कियों की मैंने इतनी चर्चा सुनी थी कि पैसे बचाने की बात भूलकर मैं उनके तम्बू में चला गया। जैसा सोचा था, वैसा कुछ नहीं था। न्यू हेवन में यह अनुभव मैं पहले भी प्राप्त कर चुका था।

रात को बोर्डिंग-हाउस में अपने पैसे गिने, तो पता चला कि मिडवे में जितना अच्छा वक़्त बिताऊँगा, अपने लेनदारों के साथ उतना ही बुरा वक़्त बीतेगा। जीत लेनदारों की हुई, क्योंकि उसके बाद फिर मैं मिडवे में नहीं गया।

और भी बहुत-कुछ देखने को था और वह मुफ़्त था, इसलिए मैंने सब देख डाला। पापा के शब्दों में वह सब शिक्षा देने वाला था। उन मुख्य प्रदर्शनों के आसपास, जो मानसिक विकास में सहायक थे, मैं घंटों घूमता रहा। रोचक होते हुए भी वे सब एक-से ही थे। लगता था जैसे एक-साथ सौ अजायबघरों में घूम रहे हों। नया-नया गया था, सो कुछ चीज़ें बहुत आकर्षक लगी थीं। क्रूप-बन्दूकें मिडवे की किसी भी चीज़ से अच्छी थीं। मगर उनके दिखाने का ढंग वैसा नहीं था। हर क्रूप ने

उन दिनों घोषणा की थी 'शिकागो की महान् बन्दरगाह की रक्षा के लिए' वह संसार की सबसे बड़ी तोप अमरीका को भेंट कर रहा है।

ये मुफ़्त के प्रदर्शन देखते हुए भी कई बार मेरा ख़र्च बढ़ जाता, क्योंकि भूख बहुत लग आती। 'व्हाइट हॉर्स,' इसमें बचत का ख़याल रखने में मुझे कितनी मुश्किल पड़ती थी, यह मैं ही जानता हूँ। यह एक पुरानी अंग्रेज़ी 'इन' की नक़ल थी, जिसका आकार अब बहुत फैल गया था। साथ की टेबल पर पड़ी हुई चॉप्स बहुत लुभावनी लगती थीं और स्टीक की गन्ध से मुँह में पानी भर आता था। फिर 'यातायात भवन' में जाकर जो बेहोशी तारी होती तो मुझे 'ओल्ड वियेना' नामक जगह पर जाकर बियर और पनीर से अपने को ठीक करना पड़ता।

पापा ने ख़ास तौर से कहा था कि यातायात के सब प्रदर्शन मैं ठीक से देखकर आऊँ। वे कई छोटी-छोटी रेलों के अफ़सर या डायरेक्टर थे और सोचते थे कि मैं बड़ा होकर उनकी जगह लूँगा। यह काम आसान नहीं था। अठारह एकड़ ज़मीन पर तो वह इमारत बनी थी—आकार ऐसा था जैसे गाड़ियों के कई बड़े-बड़े शेड हों। गाइड-बुक में लिखा था कि "उसका निर्माण कुछ-कुछ रोमन शैली का है," और "तीस अलग-अलग रंगों में बाहर जो सजावटी डिज़ाइन बनाए गए हैं, उनसे बेल-बूटों की कढ़ाई का आभास होता है।

बारिश होने पर मैं मेले की तरफ़ नहीं जाता था और बोर्डिंग-हाउस में रहकर पैसे बचाता था। मगर अकेले मन नहीं लगता था, इसलिए मैंने साथ के लिए एक गिरगिट ख़रीद लिया। हालाँकि साथ के लिए वह अच्छा नहीं था, मगर पूँछ कटी होने से बीस सेंट में ही मिल गया था। उसके गले में एक ज़ंजीर थी, जिसके एक तरफ़ था ताँबे का कॉलर और दूसरी तरफ़ एक पिन। मैं पिन को खिड़की के परदे में खोंसकर उसे बाँध देता था और ज़िन्दा मक्खियाँ खिलाता रहता था।

हफ़्ते-भर के बाद मन होने लगा कि अब घर चलूँ, मगर फिर सोचा कि इतनी जल्दी चला गया तो पापा कहेंगे कि सात दिन में मैं इतना पैसा कैसे फूँक आया हूँ। इसलिए मैं पन्द्रह दिन वहाँ पड़ा रहा ताकि पापा को विश्वास हो जाए कि चाहे कॉलेज में जाकर मैंने बचत नहीं की, मगर हमेशा ही मैं फ़िज़ूलख़र्ची नहीं करता।

जब मैं मेले में न जाता, तो शिकागो में घूमता रहता। शिकागो मुझे बहुत आकर्षक शहर लगता था। लगता जैसे वह शहर न्यूयॉर्क से कहीं बड़ा, कहीं व्यस्त और कहीं भरा हुआ, खुला और फैलावदार हो।

आख़िर जब मुझे लगने लगा कि अब पापा विश्वास कर सकते हैं कि मैं पूरे सौ डॉलर ख़र्च कर आया हूँ, तो मैंने अपना सूटकेस उठाया, गिरगिट को कोट के गरेबान से टाँका और फिर एरी की यात्रा पर चल पड़ा। गाड़ी में गिरगिट बेचारे का बुरा हाल हुआ और उसकी बाक़ी पूँछ भी घिस गई। फिर भी वह अच्छा ही रहा

क्योंकि पच्छिम में जाते हुए जितनी बुरी हालत हुई थी, पूरब में जाते हुए उतनी बुरी नहीं हुई।

जाते हुए मैं चिन्तित और परेशान था, मगर लौटकर आया तो फिर तन गया। पीछे से कोई लेनदार पापा के पास नहीं पहुँचा था और मैं न्यू हेवन भेजने के लिए बावन डॉलर बचा लाया था। घर में किसी के लिए मैं उपहार नहीं ला सका था, मगर अपना गिरगिट मैंने अम्माँ को उपहार में दे दिया।

पापा ने मेरे साथ बात करके यह जानना चाहा कि मुझे वहाँ क्या-क्या अच्छा लगा था। "तुम मिडवे में गए थे?" उन्होंने पूछा।

"एक बार गया था," मैंने सतर्क भाव से कहा।

"आप गए थे?"

"हाँ," वह बोले। "मैं वे गन्दे हॉटेंटॉट देखना चाहता था। समझ में नहीं आता कि लोग ऐसे बेहूदा ढंग से कैसे रह लेते हैं। इसकी तो इजाज़त ही नहीं होनी चाहिए।"

उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि मैं सिर्फ़ एक ही बार मिडवे में गया था और बाक़ी वक़्त मैंने अच्छी जगहें देखने में ही बिताया था।

"हाँ," आख़िर वह सन्तोष से सिर हिलाकर बोले, "तो मैं समझता हूँ कि तुम्हें वहाँ जाकर काफ़ी शिक्षा प्राप्त हुई है।"

"हाँ पापा," मैंने कहा, "बहुत।"

19. पुरानी पतलून

पापा को गहने का शौक़ नहीं था। उन दिनों लोग घड़ियों में बड़ी-बड़ी ज़ंजीरें लगाते थे जिनके बीच में तावीज़ लटकते रहते थे। पापा को उन ज़ंजीरों से नफ़रत थी। उनकी घड़ी में ये चीज़ें नहीं थीं—वह मज़बूत और ख़ूबसूरत मगर सादा घड़ी थी। पापा के कफ़लिंक और स्टड भी सादा होते थे—वैसे सजावटी नहीं थे जैसों का उन दिनों रिवाज था। उनकी अँगूठी ठीक सोने का एक छल्ला ही थी जिसमें चौकोर नीलम जड़ा था। हम इन सब चीज़ों को बहुत सम्मान से देखते थे। हमारी नज़र में पापा की हर चीज़ अपनी विशेषता रखती थी और हम उस विशेषता का सम्मान करते थे।

जवानी में पापा उससे हल्की अँगूठी पहना करते थे जिसका नीलम भी उससे छोटा था। मगर ज़िन्दगी में आगे बढ़ने पर पापा को वह अपने लिए पसन्द नहीं रही थी और बहुत दिन पहले वह पैंट्री में रखे सेफ़ में बन्द कर दी गई थी।

अम्माँ को अँगूठी का सालों तक यूँ बेकार पड़े रहना पसन्द नहीं था। मेरे कॉलेज छोड़ने पर उन्होंने वह मुझे पहनने को दे दी ताकि घर में उसका फिर से कुछ उपयोग हो सके। एक शाम को वह मुझे लेकर पैंट्री में गईं जहाँ कि गीले कपड़ों की-सी गन्ध फैली थी और उसे सेफ़ से निकाल लाईं।

मैं अँगूठी पहनना नहीं चाहता था, मगर अम्माँ ने यह मुझे इतने प्यार के साथ दी थी कि मेरे लिए पहनने के सिवा कोई चारा नहीं था। अँगूठी मेरी उँगली में पहनाकर उन्होंने मुझे चूम लिया। अँगूठी को देखा। नीलम बहुत सुन्दर था। सोचा, हो सकता है थोड़े दिनों में मुझे अच्छी लगने लगे। कम-से-कम उसमें टूटने और बिगड़ने वाली कोई चीज़ नहीं थी।

मगर जल्दी ही मुझे पता चल गया कि अँगूठी पहनना कितनी बड़ी मुसीबत है—कुछ पता नहीं कम्बख़्त कब खो जाए! मैंने ख़ुद पैसे देकर ख़रीदी होती, तो शायद मैं उसे पसन्द कर सकता। सद्भावनाओं के साथ दी जाने के कारण वह अब मेरे लिए एक बोझ ही थी। मेरे मन को वह हर समय कौंचती रहती। कुछ दिनों में मैंने उसे उतारकर अलग रख दिया।

अम्माँ ने मेरी उँगली ख़ाली देखी, तो झट मुझे बुला लिया। बोलीं कि मुझे अँगूठी मेज़ की दराज़ में ही रखनी है, तो उसका मेरे पास होना बेकार है। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि वह अँगूठी बहुत सुन्दर है और मुझे गर्व होना चाहिए कि वह मुझे दी गई है।

मैंने अम्माँ को बताया कि मुझे यह याद ही नहीं रहता कि मैं अँगूठी पहने हूँ–कितनी ही बार वह मुझसे किसी-न-किसी पब्लिक-वाश-स्टैंड पर रह गई थी और यह भाग्य ही था कि वहाँ से मिल गई। इससे अम्माँ डर गईं कि पापा की अँगूठी मैंने खो दी, तो यह तो बहुत ही बुरी बात होगी। अँगूठी फिर पैंट्री की पेटी में पहुँच गई।

कुछ साल बाद वह अँगूठी फिर निकाली गई और कुछ धूमधाम के साथ ज्यॉर्ज को सौंप दी गई। ज्यॉर्ज उसे लेकर मुझसे भी ज़्यादा मुश्किल में फँस गया। उसने भी फ़ैसला किया कि वह ख़ुद उसे नहीं पहनेगा, और विवाहित होने से उसने वह अपनी पत्नी को दे दी जिसे कि वह बहुत पसन्द थी। कुछ दिन तो सब ठीक-ठाक रहा, पर एक दिन अचानक अम्माँ की नज़र पड़ गई कि पापा की अँगूठी तो विल्हेमीन की उँगली में है। अम्माँ विल्हेमीन से बहुत प्यार करती थीं, परन्तु यह चीज़ उनसे बरदाश्त नहीं हुई। उनकी नज़र में उस अँगूठी का सही उपयोग एक ही था और वह यह कि पापा का कोई लड़का ही उसे पहने। उन्होंने ज्यॉर्ज से कहा कि वह विल्हेमीन से अँगूठी ले ले। ज्यॉर्ज ने चुपचाप आदेश का पालन कर दिया और अँगूठी वापस पैंट्री में पहुँच गई।

यह एक अजीब बात थी कि पापा की हर चीज़ स्थायी रूप से उनके व्यक्तित्व का ही एक भाग प्रतीत होती थी। वह जहाँ कहीं और जिस किसी हालत में हो, लगता कि पापा के व्यक्तित्व की छाप उस पर मौजूद है। अँगूठी के सम्बन्ध में तो यह चीज़ अस्वाभाविक नहीं थी, मगर उनकी पुरानी नेकटाइयों को लेकर भी स्थिति यही थी–कम-से-कम उनकी दृष्टि से तो थी ही। अम्माँ की तरह वह अँगूठी की बात से परेशान नहीं होते थे, मगर अपनी कोई पुरानी टाई या उतरी हुई पतलून वह मुझे दे देते, तो भी समझते वह उसे अपनी ही। ख़ुद भी समझते और चाहते कि मैं भी यही समझूँ। वे मुझे समझाते कि जिन चीज़ों को वे निकम्मी समझते हैं, उन्हें तो वह कोचवान को या सैल्वेशन आरमी में दे देते हैं, मगर कोई बहुत सुन्दर टाई हो जो अभी काफ़ी दिन बाँधी जा सकती हो, या ऐसी पतलून हो जो उन्हें बहुत पसन्द हो, तो उसे वह मेरे लिए रख देते हैं।

मैं जूनियर क्लास में था, तो एक क्रिसमस को उनकी एक धारीदार पतलून, जिसे पहनकर वह इतवार को गिरजे में जाया करते थे, मैं अपने साथ न्यू हेवन ले गया था। मेरे पास उन दिनों कपड़े थोड़े थे, इसलिए सोचा कि काम आएगी। मगर उसे पहने हुए मुझे ध्यान रखना पड़ता था कि कोट न उतारूँ। रात को बिलियर्ड खेलते

समय, या ऐसे ही अवसरों पर जब वह पूरी दिखाई देती, तो पीछे से बेहद फूली-फूली-सी लगती थी। उससे मुझे ऑस्बॉर्न हॉल का लोहे का गेट पार करने में भी कठिनाई होती थी। गेट दस फुट ऊँचा था और उसके सिरे पर लम्बी नोकदार सलाखें थीं। पापा की पतलून में उसे पार करना ख़ासा दिक़्क़त का काम था।

वैसे हमें पार करने की जल्दी नहीं होती थी। वास्तव में पार करने की कोई ज़रूरत ही नहीं होती थी। ऑस्बार्न हॉल में हमारे लेक्चर होते थे। और हम उसे दिन में ही इतना देख लेते थे कि रात को वहाँ जाने की कोई उत्सुकता नहीं रहती थी। यूँ, गेट को पार करके भी हम वहाँ नहीं पहुँच सकते थे, क्योंकि इधर अन्दर का दरवाज़ा ताले से बन्द रहता था। गेट और दरवांज़े के बीच की ड्योढ़ी में कुछ मिनट बिताकर वापस अन्दर सो जाने के सिवा कोई चारा नहीं होता था। फिर भी यह करतब करना हमें बहुत उपयोगी लगता था—ख़ास तौर पर जब थोड़ी शराब पेट के अन्दर हो।

ऐसी रातों को अपने बेड-रूम में आकर कपड़े उतारते हुए मेरी आत्मा को थोड़ा कष्ट होता कि पापा की पतलून को अब कैसी ज़िन्दगी बितानी पड़ रही है। कभी-कभी और समय पर भी यह विचार मेरे मन में उठने लगता। विचार की रूप-रेखा स्पष्ट तो न होती, परन्तु अपने अवचेतन में मुझे कुछ महसूस ज़रूर होता। अकसर मैं यह परवाह नहीं करता था कि मैं कौन से कपड़े पहने हूँ। परन्तु किसी ऐसी-वैसी जगह मैं अपने को उस पतलून में देखता, तो यह बात मेरे मन में चुभती ज़रूर।

एक सप्ताह मैंने यह पतलून अपने एक मित्र जेरी आइब्ज़ को दे दी। उसे एक टसी यू नाटक में मोटे आदमी का अभिनय करना था। पापा मोटे नहीं थे मगर जेरी की अपेक्षा उनका शरीर काफ़ी भरा हुआ था और उनकी पतलून में जेरी के अलावा एक तकिया भी आसानी से आ सकता था। मैंने पहले तो नहीं सोचा मगर नाटक की रात को स्टेज पर एक मज़ाकिया शराब-फ़रोश को 'चोर-चोर' चिल्लाते हुए पापा की इस इतवार को पहनने की पतलून के पीछे भागते देखा, तो मुझे मन में बहुत बुरा महसूस हुआ।

उसके बाद तो उसकी हालत काफ़ी ख़राब रही। वास्तव में कॉलेज की ज़िन्दगी के साथ उस पतलून का कोई मेल नहीं था। इस बात का पूरा एहसास मुझे उस रात हुआ जिस रात एक ऐसी लड़की, जिसे देखना पापा कभी गवारा न करते, मेरी गोद में बैठी थी और नीचे पतलून पापा की थी। पापा उस वक़्त अस्सी मील दूर अपने बिस्तर में आराम से सोए थे। मगर यह विचार मेरे मन पर छा कर इस बुरी तरह मुझे परेशान करने लगा कि मैं चुपचाप वहाँ से उठकर चला आया।

20. घर में टेलीफ़ोन

अठारह सौ सत्तानवे-अट्ठानवे तक हमारे यहाँ यह स्थिति थी कि पापा घर आकर नीचे का दरवाज़ा बन्द कर लेते, तो बाहर की दुनिया बाहर ही रह जाती थी। टेलीफ़ोन का आविष्कार हो चुका था मगर ज़्यादातर लोगों की तरह उन्होंने वह लगवाया नहीं था। जिसे हम तक अपनी बात पहुँचानी होती, उसके लिए आवश्यक था कि वह घर की ढलान चढ़कर नीचे की घंटी बजाए। रात को देर में घंटी बजती, तो पापा को खिड़की से झाँककर देखना होता कि कौन आया है। उन्हें इसमें परेशानी नहीं होती थी। जब से इन्सान घर बनाने लगा था, तभी से वह घर को बन्द रखता आया था–उन्हें यही स्वाभाविक लगता था।

साल में दो या तीन बार कोई हरकारा पापा या अम्माँ के लिए तार लेकर आता था, तार पाकर हम घबरा जाते थे, क्योंकि प्रायः उनमें कोई बुरी ख़बर ही होती थी।

पाँचवें एवेन्यू में तार के खम्भे लगाने की इजाज़त नहीं थी, मगर दूसरे सब खम्भों पर उनकी लम्बी पंक्तियाँ खड़ी थीं। हवा में फैले हुए उन तारों को देखकर बूढ़ी मारग्रेट चकाचौंध हो जाती थी। वैसे हमारे घर में भी तार थे जो घंटियाँ बजाने के लिए दीवारों के अन्दर लगाए गए थे, मगर वे पुराने ढंग के नेक और सीधे-साधे तार थे जो हाथ से खींचने का काम करते थे। उनमें बिजली नाम की ख़तरनाक चीज़ नहीं थी। यह बिजलीघर के लिए बहुत ख़तरे की चीज़ थी। मारग्रेट की और हम सब भाइयों की समझ में नहीं आता था कि वह है क्या? हमें इतना ही पता था कि इडन न्यूज़े में कुछ बिजली बैटरियाँ हैं जिनमें पच्चीस सेंट देकर धक्का दिया जा सकता है। आदमी जितने ज़ोर का धक्का बरदाश्त कर सके, उतने ज़ोर का लगवा ले। हम सबने तो इस तजरबे में सावधानी से काम किया था, मगर ज्यॉर्ज की इसमें काफ़ी गत बन गई। तार का एक सिरा दाएँ हाथ में लेकर उसने उसे वहाँ तक उठा दिया कि सूई उससे कहीं ज़्यादा–'करेंट' पर पहुँच गई जितना कि हम लोगों ने बरदाश्त किया था। इस पर भी वह इस तरह आराम से खड़ा रहा जैसे उस पर कोई असर ही न हो। तभी वहाँ की इंचार्ज स्त्री ने देखा कि ज्यॉर्ज ने दूसरा सिरा तो अपने बाएँ हाथ में लिया ही नहीं है। उसे पता ही नहीं था कि ऐसा करना है। जब उस स्त्री ने उसे बताया

कि एक-एक सिरा दोनों हाथों में लेने से ही करेंट का पता चलता है तो उसने दायाँ हाथ नीचे किए बिना ही फ़ौरन दूसरा सिरा बाएँ हाथ में ले लिया। इससे उसे वे ज़ोर के झटके लगे कि हम लोगों का मारे हँसी से बुरा हाल हो गया। वह स्त्री ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी और दूसरी महिलाओं ने आकर किसी तरह करेंट को बन्द किया।

कुछ दिनों बाद तार-कम्पनी ने पापा को इस बात के लिए राज़ी कर लिया कि वह पीछे के एक बेड़-रूम की खिड़की के पास एक बिलकुल नई आविष्कृत चीज़ लगवा लें—वहाँ उससे कोई परेशानी न होगी। वह एक धातु का बक्सा था जिसमें एक हैंडल लगा था। उससे निकला हुआ एक तार, तार के खम्भे से जुड़ा था। उस चीज़ में भी बिजली चाहे थी, मगर थोड़ी थी और तार-कम्पनी ने गारंटी दी थी कि उसमें कोई ख़तरा नहीं। हैंडल हथघंटी के हैंडल-जैसा ही था जिसे हम इस्तेमाल करते आए थे। उसे खींचने पर बक्से में भिनभिनाहट-सी होने लगती। उससे न जाने कैसे पास के तारघर में संकेत पहुँच जाता और वहाँ बैठे हुए हरकारों में से कोई एक सन्देश ले जाने के लिए हमारे यहाँ पहुँच जाता।

हमारे लिए यह 'बज़र' अल्लादीन के चिराग़ से कम महत्त्व नहीं रखता था। संकेत-पत्र में लिखा था कि कई बार खींचकर उसमें ज़्यादा भिनभिनाहट पैदा की जाए, तो उससे पुलिस के सिपाही को या आग बुझाने के इंजन को भी बुलाया जा सकता है। सिपाही कितनी देर में आता है यह जानने का तो हमें कभी मौक़ा नहीं मिला। हरकारे को आने में बीस से पैंतालीस मिनट तक लगते थे, मतलब भाग्य अच्छा हो, तो। ब्रांच ऑफ़िस हमारे घर से मील-भर दूर था और उनके पास थोड़े-से ही लड़के थे। हमारी मशीन के भिनभिनाने पर वहाँ कोई भी लड़का न रहता, तो मैनेजर के पास हमें इसकी सूचना देने का कोई उपाय नहीं था। हमें उतावली होती मगर उसे नहीं। वह लड़कों के दूसरे कामों से लौटकर आने तक आराम से बैठा रहता।

बारिश के दिनों में किसी मित्र को हमारे पास सन्देश भेजना होता, या नियत समय पर न आना होता, तो बिना मशीन को चलाए भी कई बार कोई हरकारा हमारे यहाँ पहुँचकर हमें चकित कर देता था। वह बाहर के दरवाज़े पर खड़ा होता, उसकी रबर की काली बरसाती के पीछे को लटके हुए हुड से पानी की बूँदें टपक रही होतीं और वह पैरों को झटकता और अपनी ठंडी उँगलियों पर फूँकें मारता हुआ घंटी को खींच रहा होता। हममें से कोई जाकर दरवाज़ा खोलता, तो वह एक नीली चिट्ठी हाथ में पकड़ा देता और गहरी आवाज़ में हस्ताक्षर करने और समय लिखने के लिए कहकर एक मुचड़ी हुई स्लिप आगे कर देता।

इस तरह की देर हमें बरदाश्त करनी पड़ती थी, क्योंकि और कोई चारा नहीं था। लोग हरकारों का उपयोग बहुत कम करते थे—इसमें ख़र्च पड़ता था और वक़्त भी लगता था। हम अपने सन्देश आप ही पहुँचा आते थे।

जब टेलीफ़ोन का आविष्कार हुआ तो लोग उसे लगवाने के लिए उत्सुक नहीं थे। हम सब अपने 'बज़र' से ही सन्तुष्ट थे। आदमी को परेशान करने के लिए वे हरकारे ही काफ़ी थे जो जब कभी चिट्ठी लिये जवाब लेने के लिए आ धमकते थे। मगर वे तो साल में दो-चार बार आते थे और टेलीफ़ोन हफ्ते में एक बार तंग कर सकता था। लोग यह तो समझते थे कि टेलीफ़ोन एक चामत्कारिक खोज है और हैरान भी होते थे कि वह काम किस तरह करता है, मगर उसे लगवाने के मामले में उतने ही उदासीन थे जितने एक गुब्बारा या डाइनिंग सूट खरीदने के मामले में।

यूँ काफ़ी अरसे तक टेलीफ़ोन का घरों में ख़ास उपयोग भी नहीं था। दलालों के अलावा और किसी के यहाँ वे थे नहीं, इसलिए लोग बात किससे करते? टेलीफ़ोन कम्पनी के परिपत्रों में बड़ी-बड़ी घोषणाएँ रहती थीं–लिखा रहता था कि एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर ने फ़ोन लगवा लिया है, तीन बैंकों ने अपने लिए एक-एक का ऑर्डर दिया है और कुछ नए विचारों के डॉक्टर भी लगवाने की सोच रहे हैं। मगर यह जानते हुए भी कि घर-घर में टेलीफ़ोन हो जाए तो सबको बहुत आराम हो, इस इन्तज़ार में थे कि पहले घर-घर में हो जाए, तो वह लगवाएँ।

पापा ने दफ़्तर में फ़ोन लगवा लिया था मगर उसका उपयोग स्वयं नहीं करते थे। वह उन्होंने पीछे के कमरे में लगवाया था जहाँ से बात सुनकर बुककीपर, अगर ज़रूरी हो, तो, उन्हें आकर बता जाता था। टाइपराइटर और गेलेटिन हेक्टोग्राफ़ भी वहाँ पीछे के कमरे में ही थे। ये व्यापारिक सुविधा की चीज़ें घर में लगवाने की बात बहुत बेजा लगती थी।

इस बात में अम्माँ भी पापा से सहमत थीं–उन्हें भी टेलीफ़ोन पसन्द नहीं था। उन्हें किसी मशीन पर भरोसा नहीं था क्योंकि मशीनों में इन्सान के गुण नहीं थे और वे घरड़-घरड़ करती और कभी धमाके से फट भी जाती थीं जिससे उन्हें घबराहट होती थी। क्या पता उनसे कब क्या हो जाए? टेलीफ़ोन उन्हें और उन-जैसे कुछ और लोगों को बहुत ही ख़तरनाक लगता था। उनका ख़याल था कि कभी आँधी-तूफ़ान में वे उसके पास खड़े हों तो उन पर बिज़ली आ गिरेगी। तूफान न भी हो, तो भी बिजली के तार से झटका लग सकता था। किसी होटल या दफ़्तर में टेलीफ़ोन लगा देखते, तो वह उससे दूर ही रहते या बहुत डरते-डरते उसे हाथ लगाते। बिजली का ऐसा उपयोग उनकी नज़र में स्वाभाविक नहीं था। अम्माँ तो उस विचित्र खिलौने को छूती भी नहीं थीं। वह कहतीं कि जिसका चेहरा सामने न हो, उससे वह बात नहीं कर सकतीं–यह भी कोई बात है कि उनकी बात का जवाब दीवार पर लगे हुए बक्से से आती हुई आवाज़ से मिल जाए।

धीरे-धीरे साल-दर-साल टेलीफ़ोन का रिवाज बढ़ता गया। सामान की कुछ बड़ी-बड़ी दुकानों और मार्केटों में टेलीफ़ोन लग गए–पोशाकघर में और कुछ

दवाई-फ़रोशों के यहाँ भी। कभी जब पापा को ज़ुकाम हो जाता और दफ़्तर जाना सम्भव न होता, तो उन्हें लगता कि घर पर टेलीफ़ोन का होना भी व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी है।

दस-पन्द्रह साल बाद मन में संकोच रहते हुए भी उन्होंने टेलीफ़ोन लगवा लिया। वह दूसरी मंज़िल की एक दीवार पर लगवाया गया था जहाँ से हर कोई घंटी की ऊँची आवाज़ सुन सकता था। हमें टेलीफ़ोन के लगने से ख़ुशी नहीं हुई—लगा कि यह ख़ामख़ाह का सिर-दर्द है। उसके लगते ही मुसीबत खड़ी होने लगी। फ़ोन की घंटी कभी-कभार ही बजती थी, मगर बजती हमेशा ऐसे ग़लत मौक़े पर थी जब उस मंज़िल पर जवाब देने के लिए कोई न हो। अम्माँ अपना स्कर्ट उठाए हुए 'आ रही हूँ, आ रही हूँ,' कहती हुई ऊपर को भागतीं, मगर वह, नामाकूल घंटी लगातार बजती ही जाती। पापा भी उसे बेजान चीज़ नहीं समझते थे। वह अम्माँ की तरह तो भाग-दौड़ नहीं मचाते थे, मगर उसे ख़ूब जली-कटी सुनाने लगते थे।

अब बाहर की दुनिया अपनी मरज़ी से जब चाहे अन्दर चली आती थी। इसे बरदाश्त करना और-तो-और अम्माँ के लिए भी मुश्किल था। पापा से तो यह मदाख़लत बिलकुल ही नहीं सही जाती थी। जब उन्हें तुरन्त पता न चल पाता कि टेलीफ़ोन करने वाला कौन है और काले चोंगे के अलावा और किसी पर ग़ुस्सा निकालने का बस न होता, तो वह आपे से बाहर हो जाते। वह ग़ुस्से से लाल होकर टेलीफ़ोन से कहते, "अब बोल भी, बोलता क्यों नहीं? कौन है, क्या बात है? मुझे एक शब्द भी समझ में नहीं आता, एक शब्द भी नहीं।"

अम्माँ दौड़ती हुई पास जाकर कहतीं, "क्लेयर, टेलीफ़ोन मुझे दे दो।"

"मैं तुम्हें नहीं दूँगा", पापा फ़ोन से मुँह हटाए बग़ैर ही कहते। तुम मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे पता करना है कि यह कम्बख़्त है कौन! हैल्लो! मैं कह रहा हूँ हैल्लो! सुनाई देता है? कौन बोल रहा है? हैल्लो! क्या?...आप हैं मिसेज़ निकोल्स!" यहाँ उनकी आवाज़ कुछ कम सख़्त और कई बार मित्रतापूर्ण हो जाती। "हाँ-हाँ, मिसेज़ डे यहीं पर हैं। आपके क्या हाल हैं? आप मिसेज़ डे से बात करना चाहती हैं? हाँ... हाँ...अच्छा...एक मिनट ठहरिए।" और तब कहीं वे अम्माँ को दीवार पर लगे बक्से के पास जाने देते।

जब पापा ख़ुद कोई नम्बर माँगते, तो वे 'सेंट्रल' (ऑपरेटर) पर खीझने लगते। कहते कि वह मूर्ख है, बहरी है और अपना काम ठीक से नहीं करती। वह कहती कि नम्बर ख़ाली नहीं तो पापा चिल्ला उठते, "ख़ाली नहीं है? तो मैं यहाँ सारा दिन बैठकर इन्तज़ार करूँ? ख़ाली नहीं है!"

जब भी घंटी बजती, तो पापा समझते कि उन्हीं के लिए कोई सन्देश आया है। फ़ोन अम्माँ के लिए या हममें से किसी के लिए भी आ सकता है, यह बात उनके

दिमाग़ में आती ही नहीं थी। वे ख़ुद न जाकर किसी और को फ़ोन उठाने देते तो आवाज़ें देकर पूछते रहते कि किसका फ़ोन है और बात क्या है। उनकी चिल्लाहट में हम मुश्किल से फ़ोन की बात सुन पाते। जब उनसे कहा जाता कि फ़ोन उनके लिए नहीं है, तो उन्हें विश्वास न आता—जब तक कि उन्हें पूरा ब्यौरा न दे दिया जाए।

एक दिन मेरी एक परिचित लड़की का फ़ोन आया। वह किसी तंग बस्ती के एक सेटलमेंट हाउस में रहने चली गई थी और अपने कुछ रूसी मित्रों के साथ लंच खाने के लिए मुझे बुलाना चाहती थी। फ़ोन पापा ने उठाया। "हाँ-हाँ, मैं मिस्टर डे बोल रहा हूँ। क्या बकवास है! अब यह कुनमुन-कुनमुन मत करो और ठीक से बात करो। कौन हो तुम?...क्या?...लंच के लिए आऊँ? मैं लंच खा चुका हूँ...अगले शुक्रवार?....मगर मैं अगले शुक्रवार को तुम्हारे साथ लंच खाने क्यों आऊँ?...नहीं।...कहाँ? अगले शुक्रवार को तुम्हारे साथ लंच खाने क्यों आँ?...नहीं।...कहाँ? कहाँ कहाँ?...रैविंग्टन स्ट्रीट में? मेरी तौबा! हाँ-हाँ, मेरा ही नाम क्लेयरेंस डे है, मैं तुम्हें बता चुका हूँ। फिर से मत कहना...रैविंग्टन स्ट्रीट में तुम्हारे साथ लंच? आज तक मैंने किसी से ऐसी बात नहीं सुनी!...रूसी? मैं किन्ही रूसी लोगों को नहीं जानता!...न, मैं जानना चाहता भी नहीं।...नहीं मैं नहीं बदला, मैं कभी नहीं बदलता...क्या?...गुडबाई मैडम!"

"मेरा ख़याल है पापा यह मेरी एक मित्र का फ़ोन है," मैंने कहा।

"तुम्हारी मित्र!" वे चिल्लाए। मुझे तो लग रहा था कि यह किसी गुस्ताख़ फेरी वालों की बीवी बोल रही है और चाहती है कि एक गन्दी बस्ती में कहीं मैं उसके साथ खाना खाने आऊँ। ये चीज़ें मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। मैं इस नामुराद चीज़ को कल ही यहाँ से उखड़वा दूँगा।

21. जहन्नुम में जाओ!

पापा जब छोटे थे, तो लड़कों को संगीत की शिक्षा देने का रिवाज नहीं था। उनके पापा ने उन्हें संगीत नहीं सिखाया था। पुरुष प्यानो नहीं बजाते थे। युवा लड़कियाँ 'पॉलिश' के लिए प्यानो पर कोमल धुनें बजाना सीख लेती थीं—इससे ज़्यादा नहीं। शास्त्रीय संगीत सीखने की इच्छा बहुत कम लोगों को होती थी।

बड़े होने पर जब पापा को व्यापार में सफलता मिलने लगी, तो उनके मन में संगीत का शौक़ भी जाग आया। उन्होंने एक प्यानो ख़रीद लिया और सिखाने के लिए एक मास्टर रख लिया। उन्हें उन याचना-भरे प्रेम-गीतों में रुचि नहीं थी जिनका उन दिनों रिवाज था और न ही उन्हें 'मार्चिंग थ्रू ज्यार्जिया'-जैसे देशभक्ति के गीत पसन्द थे। वेदना के गीतों से उन्हें विशेष रूप से चिढ़ थी—उन्हें सुनते ही उनका दिमाग़ गरम हो उठता था। उन्हें संगीत से वैसा ही लगाव था जैसा एक अच्छी शराब या घोड़े पर सैर से था।

पापा के साथियों में कोई ऐसा नहीं था जिसे इन चीज़ों का शौक होता और ऐसे शौक़ के लोगों से जो लम्बे-लम्बे बाल रखते थे, पापा को चिढ़ थी। इसलिए उन्हें बढ़ावा देने वाला कोई नहीं था और अपने रास्ते पर वे अकेले ही चल रहे थे। मगर पापा बढ़ावे की परवाह करने वाले कब थे? अपनी लम्बी मज़बूत उँगलियों से पूरी लगन के साथ अभ्यास करते हुए उन्होंने यथासम्भव बीथोवन और बाख का संगीत बजाना सीख लिया।

संगीत के लिए उनके मन में अधिक भावना नहीं थी, परन्तु जितनी थी काफ़ी गहरी थी। इसलिए विवाह के बाद भी उनका अभ्यास चलता रहा और व्यस्त जीवन के उन वर्षों में भी जब वे लड़कों से अपने परिवार को सम्पन्न कर रहे थे, वे वाद्य संगीत की सभाओं में नहीं जाते थे। वागनर उन्हें ज़रा पसन्द नहीं था परन्तु अपना लेखा भरते हुए वे ब्राह्मस का संगीत गुनगुनाते रहते, या डिनर के बाद मोज़ार्ट और चोपिन का संगीत बजाने लगते। इससे उन्हें सम्पन्नता की अनुभूति प्राप्त होती।

अम्माँ को भी संगीत का शौक़ था। हम प्रायः शाम को उन्हें अपनी धीमी मधुर आवाज़ में पुराने गीत गाते सुना करते। कभी उन्हें कहीं से कुछ भूल जाता, तो वे

झट-से उसकी जगह अपनी ओर से कुछ जोड़ देतीं जिससे तान चलती रहे और उसका जादू कम न हो।

पापा इस तरह नहीं चलते थे। वे कहीं अधिक भव्य निर्माण में व्यस्त थे, इसलिए कहीं एक सुर भी ग़लत हो जाता, तो वे वहीं रुक जाते। उस सुर को अलग करके वे एक-एक तान बजाते और ठीक ढंग से बार-बार बजाते रहते। इससे अम्माँ बौखला उठतीं और 'ओह-ओह' करती हुई कमरे से भाग जातीं।

उनका संगीत सम्बन्धी दृष्टिकोण बिलकुल दूसरा था। वे पापा की तरह संगीत से अपने ही लिए एक निश्चित सुख प्राप्त नहीं करती थीं। उनके लिए यह एक सामाजिक प्रक्रिया थी जिसका नृत्य और नीति से सीधा सम्बन्ध था। वे गाती या बजाती थीं, तो केवल एक आमोद के रूप में, या मन से उदासी दूर रखने के लिए, या फिर दूसरों को सुख देने के लिए।

सरदियों में हर बृहस्पतिवार को अम्माँ घर में अतिथियों को बुलाती थीं। बहुत से लोग उन्हें मिलने के लिए आते थे जिन्हें वे चाय के साथ केक खिलाती थीं। उन्हें अतिथि-सत्कार का शौक़ था और बृहस्पतिवार की मजलिस को अधिक आकर्षक बनाने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार रहती थीं।

उन्हीं दिनों अम्माँ की चहेती भतीजी कज़िन जूली बोर्डिंग-स्कूल में पूरी तरह 'शिक्षित' होकर अपने ट्रंक, हैट बॉक्स और गिलट की एक बीन लिये हमारे यहाँ रहने के लिए चली आई। अम्माँ ने घर के भरे हुए पार्लर में तुरन्त उस सुन्दर बीन के लिए जगह बना दी और कज़िन जूली को आते ही पता चल गया कि हर बृहस्पतिवार को उसे अतिथियों के सामने वह बजानी होगी। जूली को अपनी बीन बहुत प्रिय थी, पर लोगों के सामने बजाने से वह कतराती थी—उसमें उसे डर लगता था। ज़रा-सी गड़बड़ होते ही वह एकदम घबरा जाती थी। मगर अम्माँ ने उसका हौसला बढ़ाया कि उसे इस तरह घबराना नहीं चाहिए। अम्माँ का बात करने का ढंग एक दृढ़ परन्तु दयालु इम्प्रेसारियों-जैसा था।

वे शाम की सभाएँ बहुत मनोरंजक होती थीं, परन्तु अम्माँ उनमें और भी कुछ करना चाहती थीं। एक शाम अपने सामाजिक ऋणों की बात सोचते हुए अचानक उन्होंने पापा से, जो उस समय आग के पास अधनींदें से बैठे 'गिबन' पढ़ रहे थे, कहा, "क्यों क्लेयर, हम बार-बार डिनर का आयोजन करने की बजाए एक संगीतोत्सव करें तो कैसा रहे?"

उनकी बात किसी तरह पापा की समझ में आई तो वे बोले कि उन्हें इस बात की खुशी है कि वे डिनर देने के अपने आयोजन छोड़ने की सोच रही हैं, बेहतर होगा कि इसके साथ ही वे संगीतोत्सवों की बात भी मन से निकाल दें। कहने लगे एक अच्छे ' स्ट्रिंग-कवार्टेट' में बहुत पैसे लगते हैं और वे पैसे के बने हुए नहीं हैं। अम्माँ

बीच में कुछ कहने लगीं, तो आवाज़ ऊँची करके बात को वहीं समाप्त करने के लिए उन्होंने कहा, ''मैं अपने शान्त घर को रोमन थियेटर नहीं बनाना चाहता कि लम्बे-लम्बे बालों वाले वादक यहाँ मेरी नींद हराम करते फिरें।''

''इस तरह ताव में आने की क्या बात है?'' अम्माँ बोलीं। ''मैंने लम्बे बालों वाले वादकों की बात कब कही है? पता नहीं तुम अपने मन से ये सब बातें कैसे सोच लेते हो? एक सुन्दर-सी लड़की को मैं जानती हूँ जो मिसेज़ स्पिलर के यहाँ थी और वह बहुत थोड़े पैसे लेकर आ जाएगी।''

''और यह सस्ता नमूना साज़ कौन-सा बजाता है?'' पापा ने बनावटी हँसी के साथ पूछा।

''वह साज़ नहीं बजाती क्लेयर, सीटी बजाती है।''

''सीटी बजाती है!'' पापा बोले। ''तौबा!''

''अच्छी बात है,'' अम्माँ थोड़ी बहस के बाद बोलीं। ''तो मैं उसकी जगह जूली से काम चला लूँगी। मिस क्रेगमन उसकी सहायता कर देगी। प्यानो के लिए मैं सैली ब्राउन या और किसी को बुला लूँगी।''

''मिस क्रेगमन!'' पापा ने नाक सिकोड़ ली। ''मुझे तुम इस सारी चीज़ से दूर ही रहने दो, तो अच्छा है।''

अम्माँ और क्या चाहती थीं? पापा पैसे दे देते, तो वे सब कुछ ज़रा धूमधाम के साथ करतीं, मगर थोड़े-से पैसों से एक अच्छी पार्टी करने में भी मज़ा तो था ही। विवाह से पहले अपने भाई एल्डेन के संगीतोत्सव उन्हें बहुत प्रिय थे। वे अपने यहाँ भी वैसा ही उत्सव करना चाहती थीं। अन्तर केवल एक ही था कि चचा एल्डेन के उत्सवों में विख्यात संगीतकार आया करते थे और हमारे यहाँ उनका स्थान किज़न जूली को लेना था। परन्तु संगीत किस स्तर का होगा, यह सवाल अम्माँ को नहीं सता रहा था और वे जानती थीं कि उनके अतिथियों में भी कोई इस ओर ध्यान देने वाला नहीं होगा। कम-से-कम फूल सुन्दर होंगे—वे जानती थीं कि किस फूलदान में उन्हें क्या लगाना है। (पार्लर में कई बड़े-बड़े फूलदान पड़े थे।) वे ख़ास तरह के केक तैयार कराने की भी सोच रही थीं जो उन्हें विश्वास था कि सब लोगों को बहुत पसन्द आएँगे।

परन्तु कलाकार कैसे भी हों, गृहस्वामिनी को उनके साथ कुछ-न-कुछ कठिनाई का सामना करना ही पड़ता है और अम्माँ जानती थीं कि उन्हें घर के माल के साथ भी काफ़ी सख़्ती बरतनी पड़ेगी। जूली और उसकी सहपाठिनी सैली ब्राउन दोनों अम्माँ को बहुत चाहती थीं, फिर भी इस प्रयोग के सिलसिले में वे दोनों बहुत ढीली हो रही थीं। संगीतोत्सव में भाग लेने से बचकर शैली और कुछ भी करने को तैयार थी और लोगों के सामने साज़ बजाने की कल्पना से ही जूली के हाथ-पैर ठंडे हो रहे थे।

मगर अम्माँ की परेशानी जूली की शिक्षिका मिस क्रेगमन को लेकर थी। उसके पास अपनी बीन थी और वह उत्सव में काफ़ी रौनक़ ला सकती थी, मगर अम्माँ को लगता था कि वह कुछ बदनुमा-सी लगेगी। वह एक सादा-सी स्त्री थी जिसकी हड्डियाँ निकली थीं और बीन बजाने में तो वह बहुत ही अजीब-सी लगती थी।

पापा का भी ख़याल था कि वह देखने में अच्छी नहीं, इसलिए वे बोले, ''मैं तो आने से रहा।'' वे संगीतोत्सवों को वैसे भी घटिया चीज़ समझते थे। ''पीं-पीं और हीं-हीं के सिवा उनमें होता ही क्या है?''

''तुम्हें आने को कहा किसने है?'' अम्माँ रूखे स्वर में बोलीं। उन्हें बल्कि यह जानकर ख़ुशी ही हुई थी। यह डिनर तो था नहीं जहाँ पास में पापा की ज़रूरत पड़ सकती थी। वे ख़ुद नहीं चाहती थीं कि पापा संगीतोत्सव में आएँ।

''मैं यही चाहूँगी,'' उन्होंने आगे कहा, ''कि एक दिन तुम डिनर बाहर खा लो। यहाँ कार्यक्रम पूरा होने में कम-से-कम छह बजेंगे और तुम अपना खाना क्लब में खा लो, तो मुझे बहुत सुविधा रहेगी।''

पापा बोले कि यह बिलकुल बे-सिर-पैर की बात है। ''मैं कभी क्लब में खाना नहीं खाता। न ही खाऊँगा। जिस दिन मुझे अपने घर में खाना न मिलेगा, उस दिन मैं यह घर बेच दूँगा। मुझे ये पार्टियाँ और यह शोर क़तई पसन्द नहीं,'' उन्होंने चिल्लाकर कहा। ''अगर मैं यहाँ शान्ति से नहीं रह सकता, तो मैं इसी समय यह घर बेचने को तैयार हूँ। हम सब जाकर नारियल के पेड़ के नीचे रहेंगे और अचार के साथ ब्रेडफ़्रूट खाया करेंगे।''

संगीतोत्सव के दिन नाश्ते के समय से ही बर्फ़ पड़ने लगी। पापा भूले हुए थे कि वह कौन-सा दिन है। उन्हें इसकी परवाह भी नहीं थी। उनका ध्यान इसी बात पर था कि अम्माँ को उनकी वास्कट दरज़ी के पास ले जानी है। जब उन्होंने अम्माँ को सीढ़ी लगाकर इश्कपेचा की बेल को ठीक करते देखा, तो उन्हें कुछ हैरानी हुई। पास जाकर बोले, ''यह रही मेरी वास्कट।'' इस नई आफ़त से अम्माँ कराह उठीं। पापा परेशान होकर बोले, ''क्या बात है, विनी? तुम वहाँ सीढ़ी पर चढ़कर क्या कर रही हो? यह मेरी वास्कट है और मैं कह रहा हूँ कि यह अभी दरज़ी के यहाँ पहुँच जानी चाहिए।'' वे अड़े रहे कि वास्कट अम्माँ के हाथ में ही देंगे और जाते हुए दरवाज़ा ज़ोर से बन्द कर गए।

दोपहर के बाद बर्फ़ की जगह पानी पड़ने लगा। सड़कों पर गहरा कीचड़ हो गया। हम सब भाई पूर्व में अड़तालीसवीं स्ट्रीट के रेलवे ब्रिज पर से नीचे को फिसलना छोड़कर अपने स्लेज लिये हुए घिसटते क़दमों से घर पहुँच गए। ऊपर खेलने के कमरे में जाने से पहले हमने पार्लर में देखा कि वहाँ बहुत-सी फ़ोल्डिंग कुरसियाँ रखी हैं। कढ़ी हुई पीठ वाली सागवान की बड़ी-बड़ी आरामकुरसियाँ कोने में घुसेड़ी हुई थीं

और फूलों वाली नीली मख़मली चौकी तो दिखाई ही नहीं देती थी। रबड़ का पेड़ खिड़की से हटाकर ऐसी जगह पर रख दिया गया था कि मिस क्रेगमन जब बीन बजाए तो बीन तो पूरी दिखाई दे, मगर स्वयं मिस क्रेगमन दिखाई न दे।

हम ऊपर जा रहे थे, तो जूली नीचे आ रही थी। उसके होंठ नीले पड़ रहे थे और चेहरा ज़र्द हो रहा था। वह स्थिर आँखों से जैसे कुछ न देखती हुई हमारे पास से निकल गई। मैंने उसका हाथ छुआ, तो वह ठंडा था।

ऊपर ज़ीने के जंगले से हमने मिस क्रेगमन को रबड़ के जूते पहने आते देखा। सैली ब्राउन, जो रोज़ चहका करती थी, कुछ देर बाद ख़ामोश-सी आती दिखाई दी। मिस क्रेगमन बहुत कष्ट के साथ रबड़ के पेड़ के पीछे जा बैठी और अपनी सुनहरी राजसी बीन को साधने लगी। अम्माँ केक और सैंडविच की कई एक ट्रे सजा रही थीं और फूलों को आख़िरी बार ठीक कर रही थीं। हमें ऊपर उन्हीं की उत्तेजित आवाज़ सुनाई दे रही थी—और सब बिलकुल ख़ामोश थे।

इस नरमेध के लिए निश्चित समय पर महिलाएँ अपनी लम्बी घेरदार पोशाकों से ग़ालीचे पर कीचड़ बिखेरती हुई अन्दर आने लगीं। शीघ्र ही पार्लर पूरा भर गया। मैं सोच रहा था कि सैली बेचारी इस तरह सुन्न हो रही होगी, कि उसे प्यानो के सुरों का ही पता न चलता होगा और जूली की सर्द उँगलियाँ तारों को हिलाने का असाध्य प्रयत्न कर रही होंगी। अम्माँ ने ताली बजाई तो शोर बन्द हो गया। धीरे-धीरे संगीत का संकोचपूर्ण स्वर आरम्भ हुआ। तभी किसी ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

शाम को हम नीचे खाना खाने पहुँचे, तो हमें कई अच्छी और बुरी ख़बरें सुनने को मिलीं। आयोजन एक तरह से सफल ही रहा था। जूली और सैली दोनों ने अपने साज़ बहुत अच्छी तरह बजाए थे और आई हुई स्त्रियों को बीनें और केक बहुत पसन्द आए थे—केक वे सब-के-सब खा गई थीं। परन्तु दो दुर्घटनाएँ भी हुई थीं। एक तो यह कि मिस क्रेगमन स्वयं चाहे लोगों की आँखों से छिपी रही थीं, पर हरएक की आँखें उसके पैरों पर जमी रही थीं जोकि रबड़ के पेड़ से आगे आकर इस तरह हिल रहे थे जैसे पैडल चला रहे हों—इसमें सबसे बुरी बात यह थी कि मिस क्रेगमन अपने रबड़ के जूते उतारना भूल गई थी। दूसरे यह कि जब एक मीठी-सी लोरी चल रही थी, तो पापा घर लौट आए थे और स्त्रियों ने साफ़ सुना था कि अपने कमरे की तरफ़ जाते हुए उन्होंने मुँह में कहा, "जाओ जहन्नुम में।"

22. बटन लगाना

हमारे घर में कपड़ों को ठीक रखने का ख़ासा काम रहा होगा। पापा के अलावा चार लड़के मरम्मत का काम पैदा करने को थे और यह काम करने के लिए ख़ास कोई व्यक्ति था नहीं। बेबी की नर्स कुछ सी-सिला देती थी और जब कज़िन जूली आई रहती तो वह भी काफ़ी कुछ कर देती थी। मगर ज़्यादातर यह काम अम्माँ के ज़िम्मे ही पड़ता था और उनकी टोकरी हर समय ऊपर तक भरी रहती थी।

अब उन दिनों की बात सोचता हूँ, तो आश्चर्य होता है कि वे यह सब करती कैसे थीं। मुझे याद है कि डिनर के बाद या जब भी समय ख़ाली होता, वे हम लोगों के साथ बैठने की बजाए अपने कमरे में जाकर नियम से कुछ सिलाई-इलाई किया करती थीं। मैं लड़कपन में सोचता था कि यह भी पहेलियाँ भरने जैसा एक मनोरंजन, या एक स्त्री के लिए समय बिताने का साधन ही है।

घर में सबसे ज़्यादा बात पापा की कमीज़ों और मोज़ों को लेकर होती थी। बात करने वाले भी पापा ही थे। उनकी चीज़ें कई-कई दिन आँखों से दूर रहें, यह उन्हें बरदाश्त नहीं था। वे चाहते थे कि उनकी सब चीज़ें जल्दी से वापस उनकी अल्मारी के दराज़ में अपनी जगह पर पहुँच जाएँ—ख़ास तौर पर उनके मनपसन्द मोज़े—शाम को पहनने के सफ़ेद और सादा मोज़े नहीं क्योंकि वे सब तो एक-जैसे ही थे, मगर वे रंगीन मोज़े जो वे पेरिस के एक अंग्रेज़ बिसाती से मँगवाते थे।

पापा के लिए यह एक धर्म ही था कि हर चीज़ ठीक और दुरुस्त हो—मगर उनके रंगीन मोज़े उनके अन्दर की किसी विपरीत भावना को व्यक्त करते थे। उन दिनों लोग गहरे रंगों के सूट पहनते थे और सादा नेकटाइयाँ लगाते थे। मोज़े भी उन्हीं के मेल में गहरे गम्भीर रंगों के ही पहनते थे। मगर पापा के मोज़े, उनकी पतलून और ऊँचे बटनों के जूते के कारण चाहे पूरे छिपे रहते थे, पर होते थे ख़ूब शोख़ और भड़कीले। उनका चुनाव सुरुचिपूर्ण होता था, परन्तु फ्रांसीसी दृष्टि से ही। विल्हेमीन उन्हें यह कह चिढ़ाया करती थी कि वे उनकी 'गुप्त रंगीनियाँ' हैं।

पापा के मोज़े हमारी जुराबों से कहीं जल्दी फट जाते थे। उनके पैरों के अँगूठे काफ़ी बड़े-बड़े थे और जब वे सोफ़े पर लेटकर सिगार पीते हुए कुछ पढ़ रहे होते

या किसी से बात कर रहे होते, तो उनके अँगूठे अपने आप एक विचित्र ढंग से हिलना और कसरत करना आरम्भ कर देते जैसे कि उन्हें अलग से अपना जीवन जीने का मौका मिल गया हो। पापा न जाने किस विषय में मुझे हिदायतें दे रहे होते और मैं उन्हें सुनने की बजाए मुग्ध होकर उनके अँगूठों को धीरे-धीरे मुड़ते और घूमते देखता रहता। जल्द ही पहले एक और फिर दूसरा स्लीपर नीचे आ गिरता। पापा को हैरानी होती, मगर उनकी बात उसी तरह चलती रहती। थोड़ी देर में उनका महान् अँगूठा, अपना काम करता हुआ, मोज़े के एक नए सूराख़ में से मेरी तरफ़ झाँकने लगता।

मरम्मत और सिलाई को एक स्त्री का काम समझते हुए भी अम्माँ इस काम से घृणा करती थीं। रेशमी परदों की कढ़ाई वे दिलचस्पी के साथ करतीं—उसमें उन्हें लगता कि एक स्त्री अपनी निपुणता का परिचय दे सकती हैं। मगर पापा के मोज़े रफ़ू करना न तो उन्हें पसन्द था और न ही वे यह काम ठीक से कर पाती थीं। वे कहतीं कि उस ढेर को देखकर उनकी गरदन में दर्द होने लगता है।

पापा की गाढ़े कलफ़ वाली कमीज़ों की भी एक समस्या थी। पहनते वक़्त पापा उसमें अपना सिर डालकर बाँहों की तलाश में दाएँ-बाएँ बेतहाशा हाथ पटकने लगते। एक नई कमीज़ तो बिना फटे यह भार बरदाश्त कर जाती, मगर पापा के पास रहकर जल्दी ही उसकी हालत ख़स्ता हो जाती। पापा भी जानते कि अब इसके दिन पूरे होने को हैं। उन्हें इससे चिढ़ होती क्योंकि किसी तरह की कमज़ोरी उन्हें पसन्द नहीं थी, वह आदमी में हो या चीज़ में हो। बाँह तक पहुँचने की कोशिश में वे हाथों को और ज़ोर से अन्दर घुसेड़ने लगते। तभी ज़ोर से चर्र्र्र की आवाज़ से कमीज़ फट जाती और साथ ही अम्माँ चिल्ला उठतीं।

पापा के ख़्याल में सबसे ज़्यादा मुसीबत उनके बटनों की थी। फटी हुई कमीज़ें और सूराख़दार मोजे तो फिर भी पहने जा सकते थे, मगर बिना बटन के जाँघिए नहीं पहने जा सकते थे। जिस जल्दबाज़ी में वे कपड़े पहनते थे, उससे बटन बेचारे हतोत्साह होकर उनकी सेवा से अलग हो ज़ाते थे। और कुछ ऐसा था कि वे हमेशा ग़लत मौक़े पर और अचानक ही टूट जाते थे।

पापा ऐसे मौक़े पर चाहते थे कि कोई उनका बटन लगा दे और तुरन्त लगा दे। वे एक हाथ में अपनी वास्कट और दूसरे हाथ में उस अवज्ञाकारी बटन को लिये अम्माँ के दरवाज़े पर पहुँच जाते कि वह बटन उसी समय लगा दिया जाए। अम्माँ कभी कह देतीं कि वे उसी वक़्त वह काम नहीं कर सकतीं, तो पापा की हालत ऐसी हो जाती जैसे कि वे दरिया में डूब रहे हों और रक्षक ने उन्हें सूचना दी हो कि वह उन्हें कल बचा सकेगा।

जब उनका पारा इतना चढ़ जाता कि उनका अपने पर बिलकुल वश न रहता, तो वे सख़्त आवाज़ में कहते, ''तो ठीक है, मैं अपने आप लगा लूँगा।'' और सूई-धागे

की माँग पेश करते। उनकी यह माँग एकदम घबराहट पैदा कर देती। अम्माँ इसका मतलब अच्छी तरह समझती थीं। वे उनसे प्रार्थना करतीं कि अपना वास्कट वे टोकरी में छोड़ जाएँ, वे अगले दिन उसे ठीक कर देंगी। मगर पापा टस-से-मस नहीं होते थे। उनका हठ तब और भी बढ़ जाता, जब वे देखते कि भरी हुई टोकरी में उनके कितने मोज़े शरण लिये हैं और निराश भाव से अपनी बारी आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"मैं महीने-भर से अपने उन चित्तीदार मोज़ों को ढूँढ रहा हूँ," एक रात डिनर से पहले वे गुस्से के साथ बोला। "इस घर में आदमी का कोई काम कभी होता है? मुझे अपने बटन तक अपने हाथों से लगाने पड़ते हैं। अपना सूई-धागा मुझे दो।"

अम्माँ ने डरते-डरते दोनों चीज़ें उन्हें दे दीं। वे वहाँ से चल दिए और अपने बेडरूम में बीच के सोफ़े के एक कोने पर बैठकर काम करने के लिए तैयार हो गए। उनके ड्रेसिंग टेबल के पास गैस की रोशनी ज़्यादा थी, मगर वे कुरसी पर बैठकर ऐसा काम नहीं कर सकते थे, क्योंकि वहाँ ज़्यादा जगह नहीं थी। उन्होंने कैंची, धागे की गोली और अपनी वास्कट सब चीज़ें सोफ़े पर पास में रख लीं, उँगलियों को गीला किया, सूई को आगे को करके काफ़ी ऊँचा उठा लिया और उसके सूराख में धागा डालने लगे।

हर सेनानायक की तरह पापा चाहते थे कि उनकी सेना ट्रेंड हो और उनकी इच्छा का पालन तुरन्त किया जाए। सूई के विरोध और धागे की बार-बार टूटती हुई कमर को देखकर वे झुँझलाने लगे। सूई को सोफ़े में लगाकर उन्होंने फिर से उँगलियों को नीची किया और धागे की कमर सीधी की। अब सूई को टटोलने लगे तो वह न मिली। वे इधर-उधर चारों तरफ़ ढूँढने लगे, धागे को सीधा पकड़े हुए खड़े हो गए और घूमकर सोफ़े की तरफ़ मुँह करके देखने लगे कि वह कहाँ चली गई है। इस कोशिश में गोली झटककर नीचे जा गिरी और उसका बहुत-सा धागा खुल गया।

अम्माँ की दो सहेलियों के पति मृगी रोग से परलोकवासी हुए थे। पापा की कुछ वैसी ही हालत का अनुमान करके वे घबरा उठीं। पापा के चिल्लाने की आवाज़ सुनकर वे भागती हुई आ गईं। जैसा कि उन्हें डर था, पापा फ़र्श पर पड़े थे और किसी को कोसते हुए अपना सिर सोफ़े के नीचे ले जाने की कोशिश कर रहे थे। उनका चेहरा इस तरह स्याह हो रहा था और आँखें इतनी लाल थीं कि अम्माँ के हाथ-पैर फूल गए। उन्होंने पापा को रोकना चाहा, तो पापा और भी हाथ-पैर पटकने लगे। बोले कि चाहे जो हो, वे उस चीज़ को छोड़ेंगे नहीं। थोड़ी देर में वे उठ खड़े हुए—बेहाल मगर विजयी। धागे की गोली उन्होंने ढूँढ ली थी। अम्माँ जल्दी से जाकर दूसरी सूई ले आईं और उसमें उन्होंने धागा डाल दिया। पापा आख़िर बटन लगाने लगे।

बटन लगाने में भी पापा की ज़बरदस्ती चलने लगी—कभी उसे झिंझोड़ रहे हैं, कभी झटका दे रहे हैं। अम्माँ से न तो वह देखा जा रहा था और न ही वे कमरे से जा सकती थीं। वे स्तम्भित भाव से एकटक पापा को देखती हुई खड़ी थीं और दोनों तनकर आपस में बातें कर रहे थे। तभी अनिवार्य दुर्घटना हो गई। सूई ने एक झटके के साथ वास्कट को पार किया मगर बटन पर आकर अटक गई। पापा ने उसे झटका, तो वह सूराख में से होकर पापा की उँगली में आ लगी।

पापा चीख़कर उछल पड़े। यह शल्यवेध भड़क उठने की बात ही नहीं, उनकी हतक भी थी। अपनी उँगली को पकड़े हुए ग़ालीचे पर इधर-उधर चलते हुए वे मेरी तरफ़ मुड़कर ग़ुस्से के साथ बोले, "यह सब तुम्हारी अम्माँ का काम है।"

"मेरा कैसे है?" अम्माँ चिल्लाईं।

"तुम लगातार बकझक जो कर रही थीं," पापा भी चिल्लाकर बोले। "ऐसे में आदमी का ध्यान काम में रह सकता है? कानों में यह गुनगुन-भिनभिन पड़ रही हो, तो आदमी बटन ख़ाक लगाएगा? अब यह देखो अपनी करनी!" और फिर साथ ही बोले, "इतनी अच्छा वास्कट है, सारा ख़ून लग गया। लो, अब इसे ले जाओ। मुझे एक रूमाल दो जिससे मैं अपनी उँगली बाँध लूँ। और विच-हेज़ल कहाँ है?"

23. धर्मयोद्धा की तीसरी पत्नी

एक बात में पापा और अम्माँ दोनों बिलकुल एक-से थे—दोनों को अच्छा समय बिताने का शौक़ था। किसी डांस या डिनर में उनका अच्छा मनोरंजन हो जाता, तो वे तरोताज़ा होकर बहुत ख़ुशी-ख़ुशी और उत्साह के साथ घर लौटते।

परन्तु एक अन्तर था। अम्माँ हमेशा जाने के पक्ष में होती थीं, पापा विपक्ष में। अम्माँ को अपनी उत्सुकता से पहले से ही लगने लगता कि वहाँ जाकर उन्हें ख़ुशी होगी। पापा कहते कि अम्माँ का यह सिर्फ़ रूमानी ख़्याल है सब पार्टियाँ अच्छी होती हैं, वे स्वयं स्थिति को ज़्यादा जानते हैं। कहते हैं कि उन्हें पार्टियों से नफ़रत है। सब पार्टियों से। वे कहीं भी नहीं जाना चाहते। अम्माँ उनसे इसका या उसका निमन्त्रण स्वीकार करने को कहतीं, तो वे कहते कि वे तो नहीं जाएँगे, अम्माँ जाना चाहें, तो चली जाएँ। अपनी कुरसी पर जमकर बैठे हुए वे कहते, "परमात्मा का शुक्र है कि मुझे घर पर बैठना आता है।"

मगर अम्माँ उनके बग़ैर किसी डांस या डिनर पर नहीं जा सकती थीं—उन दिनों यह बात असम्भव थी। कोई ऐसे नहीं करता था। इसलिए अम्माँ सब लोगों के निमन्त्रण स्वीकार कर लेतीं और पापा को जाने के वक़्त तक इसका पता न देतीं। पापा को जितना वे चाहते थे, उससे कहीं ज़्यादा बाहर जाना पड़ता। मगर वे पहले कुछ कहा-सुनी करते, तब जैसे ज़बरदस्ती घर से ले जाए जाते। हर बार जब अपने मित्रों के यहाँ जाने के लिए वे गाड़ी में सवार होते, तो कुढ़ रहे होते कि उनके साथ ज़्यादती की जा रही है, जबकि अम्माँ थककर चूर हो चुकी होतीं।

मगर हैरानी की बात यह थी कि इसके बाद भी वहाँ जाकर दोनों अच्छी तरह मज़े से समय बिताते थे। दोनों में अद्भुत शक्ति और गुस्से को भूलने की क्षमता थी। अम्माँ रुआँसी-सी गाड़ी से उतरतीं, मगर इस विश्वास के साथ कि अन्दर जाकर वह अपना पूरा मनोविनोद करेंगी। पापा का ग़ुस्सा तो ज़्यादा देर रहता ही नहीं था—उनके मन पर जगमग करती ड्योढ़ी में दाख़िल होते ही प्रसन्नता छाने लगती। खाने की मेज़ या बॉलरूम में पहुँचने तक दोनों ही चहक रहे होते।

"अब शरम तो नहीं आती होगी," अम्माँ कहतीं। "आने में क़ितनी हील-हुज्जत कर रहे थे!"

मगर तब तक वह बात ही भूल चुके होते और कहते कि वे क्या बे-सिर-पैर की बात कर रही हैं।

मेज़ पर पापा के साथ कोई सुन्दर-सी स्त्री बैठी होती, तो वे सहसा खिल उठते और बहुत रुचि और उत्साह के साथ बातें करने लगते। उनमें एक आकर्षण था और स्त्रियाँ उन्हें पसन्द करती थीं। परन्तु शराब अच्छी न हो, या मुख्य डिशें अच्छी न बनी हों, तो पापा इस तरह चिड़चिड़े हो उठते थे कि स्त्रियों की रुचि भी अपनी जगह पर ही रह जाती थी। मगर मेज़बानी ठीक होती, तो वे उनसे बहुत प्रसन्न और उदार होकर बातें करते—यह भूल जाते कि घर लौटते हुए रास्ते में अम्माँ उनकी खोपड़ी का क्या हाल करेंगी।

''क्लेयर, तुम मिस रैमसन से इस तरह बेवक़ूफ़ी की बातें क्यों कर रहे थे? वह सारा वक़्त तुम्हारी हँसी उड़ा रही थी।''

''तुम किसकी बात कर रही हो?'' पापा मुस्कराते—यह याद करने की चेष्टा करते हुए कि मिस रैमसन कौन-सी थी। उन्हें नाम अकसर भूल जाते थे और सुन्दर स्त्रियाँ सब उन्हें एक-सी ही लगती थीं। वे बहुत नम्रता और ध्यान से उनसे बातें करते थे। अम्माँ को लगता था जैसे वे उनकी ख़ुशामद कर रहे हों हालाँकि उससे बात आगे बढ़ने लगती, तो सबसे ज़्यादा हैरानी पापा को ही होती। उनकी नज़र में विवाह जीवन का एक निश्चित सत्य था। कोई स्त्री सचमुच उन पर डोरे डालना चाहती, तो वे उसकी जान आफ़त में कर देते। वे अपने व्यापार में और अपने क्लब के मित्रों में इस तरह उलझे रहते थे और अम्माँ इस तरह उनके मन पर छाई रहती थीं कि उनकी आँखें सिर्फ़ अम्माँ पर ही लगी रहती थीं। उन्हें सुन्दर स्त्रियों के साथ बैठना उसी तरह अच्छा लगता था जैसे सिगार पीना और फूल सूँघना। अब अगर सिगार और फूल भी उन पर अपना हक ज़माने लगते, तो वे बेचारे क्या करते?

अम्माँ की पार्टियों में क़िसी महत्त्वपूर्ण और अभिमानी पुरुष से भेंट हो जाती, तो वे उत्साहित हो उठतीं—विशेष रूप से यदि वह पुरुष उनसे दो मीठी बातें कर लेता। सुसंस्कृत पुरुषों के लिए उनके मन में सदा आदर का भाव रहता था। वे उन पर नुक़्ताचीनी भी करती थीं—उन्हें वही लोग अच्छे लगते थे जिनमें मानवीय गुण हों। यूँ गुब्बारों की फूँक निकालने में वे बहुत तेज़ थीं। कोई ऐसा व्यक्ति न होता जिसकी वे क़द्र कर सकें, तो वे ऐसे व्यक्तियों का साथ पसन्द करतीं जो तेज़ और ख़ुशमिज़ाज होते—अच्छा नाचते और अच्छी बातें करते। उनमें से कोई उनसे प्रेम करने लगे, इससे उन्हें निराशा होती थी। तब वही व्यक्ति उन्हें मूर्ख लगता। वे औरों से ही नहीं, उस व्यक्ति से भी यह बात कह देतीं। "अपना होश करो जॉनी बेकर," वे उसे डाँट देतीं। ''ऐसी मूर्खता तुम्हें शोभा नहीं देती।''

जॉनी बेकर को चाहिए था कि वह अपनी पत्नी से ही प्रेम करे, और यह बात न जानना उसकी मूर्खता थी। अम्माँ को मूर्खता से चिढ़ थी। उनका सिद्धान्त था कि

हर पुरुष किसी-न-किसी स्त्री की सम्पत्ति है। वह कुँआरा हो तो उसका फ़र्ज़ है कि वह अपनी माँ या बहन के अधिकार में रहे। विधुर हो, तो उसे चाहिए कि अपनी दिवंगत पत्नी के अधिकार को स्मरण रखे।

अम्माँ का एक आख़िरी सिद्धान्त और भी था जिसे वे पापा पर भी लागू करना चाहती थीं। पापा उनके बाद जीवित रहने का इरादा रखते थे और वे यह बात जानती थीं। वे कहते कि अपने दिल के प्यार की वजह से ही वे ऐसा सोचते हैं—उनके बग़ैर वे भला रह ही कैसे सकती हैं। इसलिए उनका फ़र्ज़ है कि वे अन्त तक अम्माँ की रखवाली करें। अम्माँ उनकी इस उदार दृष्टि से चिढ़ती थीं। वे कहतीं कि वे बहुत अच्छी तरह रह सकती हैं, मगर यह ठीक है कि उनका प्राणान्त पापा से बहुत पहले हो जाएगा। उन्हें चिन्ता थी तो यही कि उनके बाद पापा कोई ऐसी-वैसी हरकतें तो नहीं करेंगे।

एक बार ऑक्सफ़ोर्ड के पास एक पुराने गिरजे में पापा और अम्माँ को एक मक़बरा दिखाया गया जहाँ एक महान् धर्मयोद्धा को दफ़नाया गया था। वहाँ ऊपर उसका पुतला भी बना था। अम्माँ पहले तो बहुत प्रभावित हुईं, मगर जब वर्जर ने उसके साथ की आकृति की ओर संकेत करके बताया कि वह उसकी तीसरी पत्नी थी, तो अम्माँ तुरन्त कब्र पर अपनी छतरी से आघात करके बोल उठीं, ''पर बुडढे, तेरी पहली पत्नी कहाँ है?''

वर्जर को इससे इतनी चोट पहुँची कि उसने उन्हें बाक़ी गिरजा दिखाने से इन्कार कर दिया। अम्माँ देखना भी नहीं चाहती थीं। उन्होंने वर्जर से कहा कि इस तरह के बूढ़े चांडाल का मक़बरा दिखाने के लिए उसे शरम आनी चाहिए, और यह सोचकर कि पापा का ऐसी जगह पर ठहरना ठीक नहीं, वे तुरन्त वहाँ से चली आईं।

24. ताड़ के गमले

अम्माँ के साथ दूसरों के यहाँ पार्टी में जाकर चाहे पापा को कितना भी अच्छा लगता, अपने घर में पार्टी देने की बात से वे एकदम भड़क उठते थे। ज़्यादा-से-ज़्यादा इतना सहन कर सकते थे कि कुछ पुराने मित्रों को घर डिनर पर बुला लिया जाए। इससे ज़्यादा करने पर उनका ख़याल था कि अम्माँ सारे घर की व्यवस्था बिगाड़ देती हैं। उन्हें यह स्वीकार नहीं था कि इस तरह उन्हें अपने सुख से वंचित किया जाए।

पापा घर में सुख को सबसे बड़ी चीज़ मानते थे; कहते कि झंझट तो उन्हें दफ़्तर में ही बहुत उठाने पड़ते हैं। मगर अम्माँ हमेशा पुराने मित्रों की ही दावत करने से उकता जाती थीं। वे नए-नए घर देखना और नए-नए लोगों से मिलना चाहती थीं। नवीनता की खोज उनका स्वभाव ही था।

वे जानती थीं कि यह खोज घर बैठे सम्भव नहीं, इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को नए-नए लोगों के यहाँ से निमन्त्रण मिलें; और निमन्त्रण पाने के लिए ज़रूरी है कि वे दूसरों को—सब तरह के लोगों को—निमन्त्रण दें; उससे पापा के घर की व्यवस्था का चाहे जो हो और उन्हें यह बात पसन्द आए या न आए।

पापा के विरोध का पहले से मुँह बन्द करने के लिए वे एकाध ऐसे दम्पति को भी बुला लेतीं जिन्हें पापा जानते हों ताकि मेज़ के इधर-उधर नज़र दौड़ाने पर एक-दो परिचित चेहरे भी नज़र आ जाएँ। बाक़ी लोगों को बुलाने में उनकी प्रयोजन-बुद्धि काम करती। पापा पूछते कि कौन-कौन आ रहा है, तो वह कहतीं, "बेकर्ज़ आएँगे और कुछ और लोग आएँगे।" इससे पापा डिनर की रात तक सन्तुष्ट हो रहते। मगर घर आने पर जब हॉल में उन्हें पापा के गमले दिखाई देते तो बात उनके बस के बाहर की होती।

'बेकर्ज़ तथा कुछ और लोगों' के डिनर में अम्माँ ने दस लोगों को बुलाया था। मुख्य अतिथि ऑरमॉटन थे। अम्माँ उन लोगों से मिलने के बाद से ही उन्हें बुलाना चाह रही थीं। वह कैसे लोग हैं, यह वह अभी नहीं जानती थीं, हाँ देखने में वे उन्हें काफ़ी प्रभावशाली लगे थे।

डिनर से एक सप्ताह पहले एक रात हमारे दरवाज़े की घंटी बजी। लगभग सात बजे थे। हम छह बजे का खाना बस समाप्त ही कर रहे थे। अम्माँ 'हार्स शो' से बहुत लेट आई थीं और उन्होंने ड्रेस पहनने का तरद्दुद नहीं किया था; अपना फ्रॉक बिस्तर पर डालकर और रैपर ओढ़कर ही चली आई थीं। हमारी वेटरेस ब्रिजेट नीचे दरवाज़ा खोलने गई। वह ऐसी भौंडी-सी लड़की थी कि संकट के समय उसका मुँह पूरा खुल जाता था।

हमने उसके दरवाज़ा खोलने की आवाज़ सुनी। फिर ख़ामोशी में किसी के ज़ीने से ऊपर जाने की आवाज़ सुनाई दी। हम आश्चर्य से एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे। केवल डिनर के लिए आए हुए अतिथि ही अपने-आप ऊपर जाया करते थे क्योंकि उन्हें अपने कोट और रैप वग़ैरह ऊपर के बेड-रूम में उतारने होते थे।

अम्माँ कुरसी से उछलीं और भागकर हॉल में पहुँच गईं। उन्हें पता चल गया था क्या माजरा है। ब्रिजेट वहाँ निरुपाय-सी मुँह बाए खड़ी दो गौरवशाली आकृतियों, अर्थात् ऑरमॉटन्ज़ को रोब के साथ ऊपर जाते देख रही थी।

ज़ीना चढ़ते ही अम्माँ का बेड-रूम था जहाँ सब-कुछ इधर-उधर बिखरा हुआ था। एक क्षण और बीत जाता, तो मिसेज़ ऑरमॉन्टन अपने रैप उतारने वहाँ पहुँच जाती। ''मिसेज़ ऑरमॉटन,'' अम्माँ ने आतंकित स्वर में आवाज़ दी, ''आपसे थोड़ी ग़लती नहीं हो गई?''

ऊपर जाती हुई गौरवशाली आकृतियाँ ठिठककर गम्भीरतापूर्वक बैनिस्टर्स के ऊपर से नीचे देखने लगीं।

''आपको अगले मंगल को डिनर के लिए आना है,'' अम्माँ ने अपने रैपर को नोंचते हुए हताश भाव से कहा।

मिस्टर ऑरमॉन्टन क्षण-भर अप्रीतिकर दृष्टि से अम्माँ की ओर देखते रहे। जब बात उनकी समझ में आई, तो उनकी आँखें फैल गईं और होंठ काटते हुए अपनी पत्नी की ओर देखकर उन्होंने भौंहें चढ़ाईं। उनकी पत्नी ने डरकर उनकी तरफ़ देखा और नरम चरबी की मोमबत्ती की तरह एकदम ढह गईं।

''अगले मंगल को,'' अम्मा ने धीरे-से कहा।

ऑरमॉन्टन किसी तरह स्थिर होकर आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरने लगे।

हॉल में आकर वे हैट-रैक के पास असहाय-से खड़े हो गए। अपनी गाड़ी वे भेज चुके थे, इसलिए हमारे घर से जाने का उनके पास कोई उपाय नहीं था। पूरी ईवनिंग ड्रेस पहने हुए एक ऑरमॉन्टन का बाज़ारू गाड़ी में जाना असम्भव था। उन्हें कैब के बुलाए जाने तक इन्तज़ार करना ही था—उसमें आधा घंटा तो लगता ही, ज़्यादा भी लग सकता था।

जो कुछ बना था, वही हम उन्हें थोड़ा-सा खिला सकते तो वे इस प्रस्ताव का स्वागत करते। मगर हम भाई आख़िरी टुकड़े तक पूरी सफ़ाई कर चुके थे, और अम्माँ

को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें? वह उन लोगों से इतनी घनिष्ठ नहीं थीं कि भौंडी ब्रिजेट से उनके लिए ठंडा गोश्त, दूध का गिलास और बासी पाई का टुकड़ा लाने के लिए कह देतीं। वे बेचारे अपने शानदार कपड़ों में भूखे, खिन्न और परेशान बैठे रहे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें खुश होने पर भी मज़ाक करना या सहना नहीं आता, उस समय हमारे पार्लर में बैठे हुए तो वे लोग ज़िन्दादिली से कोसों दूर थे। अम्माँ को लगभग आठ बजे तक अपने रैपर में बैठे हुए उनसे बातें करनी पड़ीं। मिस्टर ऑरमॉन्टन बिलकुल ख़ामोश रहे। वह अपने साथ हुई ज़्यादती की वजह से बहुत ख़फ़ा थे। पापा ने अन्दर पहुँचकर उन्हें सिगार पेश किया। उन्होंने रूखे ढंग से मना कर दिया।

अगले सप्ताह जब उन्होंने फिर आकर घंटी बजाई, तो वे पहले से ज़्यादा रूखे नज़र आ रहे थे। मगर तब तक हमारे आरामपसन्द घर में आमूल परिवर्तन हो चुका था। ब्रिजेट की कुहनियों की जगह एक बटलर के विनम्र हाथों ने उन्हें दरवाज़ा खोला। हॉल में बड़े-बड़े पाम के गमले रखे थे। इससे ऑरमॉन्टन का तनाव कुछ दूर हो गया।

वे अनुमान नहीं लगा सकते थे कि अम्माँ ने उस तैयारी में कितना ख़र्च किया था। पहले तो वह एलिवेटिड के नीचे छठे एवेन्यू में एक छोटी-सी दुकान पर गई थीं जहाँ की स्वादिष्ट आइसक्रीम, फ्रेंच पेस्ट्रियाँ और बॉन-बॉन बहुत मशहूर थे। वह दुकान लुई शेरी नाम का एक मिलनसार और उत्साही नवयुवक चला रहा था। उसी ने हमारे यहाँ उस दिन बटलर का काम करने के लिए जॉन नामक एक बूढ़े वेटर को भेजा था, और बावर्चीखाने के प्रबन्ध के लिए एक युवा ख़ानसामा को भेजा था जो बहुत लिजलिजा और कुढ़ियल स्वभाव का था। वे लोग अपने साथ ढकी हुई टोकरियाँ लेकर आए थे जिन्हें वे हम लड़कों को हाथ नहीं लगाने देते थे।

अम्माँ बूढ़े जॉन के साथ डाइनिंग-रूम में बहुत व्यस्त रही थीं। उन्हें चाँदी के अस्त्र-शस्त्र मेज़ पर एक-एक जगह रखने थे, अखरोट वाली मेज़ पर पत्ते लगाने थे, फलदानों में फूल सजाने थे और नमकीन बादामों और चॉकलेटों की तश्तरियाँ और न जाने क्या-क्या कहाँ-कहाँ रखना था। पार्लर के फ्लश के फ़रनीचर की जगह बदली जानी थी, पैंट्री के ऊपरी शेल्फ़ से ख़ास प्लेटें उतारी जानी थीं और चादरों के ख़ाने से बढ़िया कढ़ाई के काम के मेज़पोश और नेपकिन निकाले जाने थे। सारा दिन भाग-भागकर यह सब काम कर चुकने के बाद अम्माँ ने अपनी पोशाक और स्लीपर निकाले थे, अपने बाल सँवारे थे और अन्त में किसी तरह वह काम भी कर डाला था जो सबसे मुश्किल था—अर्थात् अपने बेड-रूम को सहेज लिया था।

उस कमरे की आदत इतनी बिगड़ी हुई थी कि अम्माँ की जब-तब की कोशिश के बावजूद वह कभी उनकी इच्छा के अनुसार साफ़ और सुथरा नहीं बन पाता था।

इसके विपरीत वह मज़े से एक अस्त-व्यस्त स्थिति में बना रहता था। अम्माँ जब भी डिनर का आयोजन करतीं, उनके मन का चोर यह सोचता कि आने वाली स्त्रियाँ वहाँ अपने रैपूस उतारती हुई अपनी बरमी की-सी आँखों से सब-कुछ देख लेंगी। इसलिए वह हर चीज़ को सामने से हटाने की कोशिश करतीं। वह हर चीज़ को इस तरह सफ़ाई के साथ रखना चाहतीं कि आने वाली छिद्रान्वेषी महिलाएँ जो भी दराज़ खोलें, वही उन्हें ठीक से व्यवस्थित मिले। मगर इतना उनके पास समय नहीं होता था। पहले दो-तीन दराज़ों को ऊपर-ऊपर से ठीक कर चुकने पर बाक़ी दराज़ों में वे चीज़ें जिस किसी तरह भरकर उन्हें ताला लगा देतीं। ड्रेसिंग टेबल से वह चिट्ठियाँ और डोरियाँ हटातीं, मैंटल से दवाइयाँ और रेज़गारी उठातीं और ब्यूरो से फ़ीतों के टुकड़े, पेंसिलें, गिलाफ़ और पुराने मकरून करतीं। उनमें से कुछ चीज़ें तो ख़ानों में पहुँचाई जातीं हालाँकि वे पहले ही इतने भरे होते कि उन्हें बन्द करना मुश्किल होता। कुछ हैट के बक्सों में छिपा दी जातीं और कुछ बरतनों की अलमारी के अँधेरे शेल्फ़ों में ठूँस दी जातीं। इस तरह छिन्न-भिन्न हुई चीज़ों में कुछ ऐसी भी होतीं जिनकी चार दिन बाद ही ज़रूरत पड़ जाती। मगर तब तक अम्माँ को खुद याद न रहता कि उन्होंने वे चीज़ें रखी कहाँ हैं और उस गुमशुदा दस्ताने या चाबी को ढूँढने में वह घंटों परेशान रहतीं। ख़ैर, तो जब बेड-रूम बिलकुल सँवर जाता, तो वह बहुत बेगाना-सा लगने लगता। बिस्तर पर एक सुन्दर पलंगपोश बिछा दिया जाता। गाव तकिये और दूसरे तकियों पर इस तरह नए गिलाफ़ चढ़ा दिए जाते जैसे उन पर कोई सोता ही न हो। एक बड़ा-सा चीनी का कैरोसीन लैम्प और कुछ गुलाबी रंग की मोमबत्तियाँ जला दी जातीं। और तब अम्माँ, थकी-हारी, अपने तंग गाउन के फ़ीते बँधवाने लगतीं।

पापा के कमरे में ऐसा कोई काम करने को नहीं होता था। दरअसल, उनके लिए कोई भी काम करने को नहीं होता था। डिनर का ड्रेस वे हर रात को पहनते थे और उनका कमरा हमेशा ठीक रहता था। उन्होंने अपनी हर चीज़ के लिए एक निश्चित जगह बना रखी थी और अपने कपड़ों को कभी इधर-उधर नहीं बिखरने देते थे। दो दराज़ उनकी कमीज़ों के लिए थे, और एक मोज़ों के लिए था। उनका हजामत का सामान खिड़की के पास उनके इंग्लिश शेविंग स्टैंड पर रखा रहता था। उनके ब्यूरो पर दो मिलिट्री हेयर ब्रश, कंघियाँ और वेम रम की एक शीशी—बस इतना ही सामान रहता था। उनके शेल्फ़ों में हर पुस्तक का अपना एक निश्चित स्थान था। हर शेल्फ़ और दराज़ में कुछ जगह ख़ाली भी रहती थी। घिचपिच कहीं नहीं होती थी।

सोने से पहले जब वे कपड़े उतारते तो ज़ेबों से चीज़ें निकालकर एक निश्चित दराज़ में रख देते। अपना सूट क्लोज़ोट की एक निश्चित खूँटी पर टाँग देते और जाँघिया मैले कपड़ों की टोकरी में डाल देते। कोई भी चीज़ वह कुरसियों पर न पड़ी

रहने देते। वे सारा काम इतनी फुरती से करते थे कि कपड़े पहनने या उतारने में उन्हें दस मिनट से ज़्यादा नहीं लगते थे। गैस बुझाकर जब वह अपनी बड़ी खिड़की खोल लेते, तो उनका कमरा एक जनरल के कमरे से कम साफ़ न लगता।

डिनर की रात को पापा वक़्त पर घर पहुँचे और पाम के गमले लगे देखकर झल्लाते हुए जॉन को साथ लेकर नीचे कोठरी से अपेक्षित मदिराएँ लाने के लिए चले गए। वहाँ से आकर ज़रा ऊँघने के लिए अपने कमरे में चले गए क्योंकि डिनर रोज़ के समय से कुछ देर बाद था। अतिथियों के आने से पन्द्रह मिनट पहले वह उठे, हजामत बनाई, कपड़े पहने, स्टड लगाए, एक झटके से अपनी सफ़ेद टाई को ठीक गाँठ दी और आराम से नीचे पार्लर में पहुँच गए। वहाँ अम्माँ को एक धुआँ देते हुए लैम्प को ठीक करते देखकर बोले कि मैं यहाँ खड़ा नहीं रह सकता—पहले ही अनचाहे लोगों से मिलने की बात से मेरा मन परेशान हो रहा है। फिर कहने लगे कि लोग समय पर न आए, तो मैं उनकी प्रतीक्षा नहीं करूँगा—मुझे भूख लग रही है।

मगर शीघ्र ही अतिथि लोग अपनी-अपनी ब्रूम में सड़क के रोड़ों पर से होते हुए हमारे दरवाज़े के पास उतरने लगे। पापा पुरुषों की ओर मुस्कराकर देखते और सुन्दर स्त्रियों से हाथ मिलाते और इत्मीनान से एक के नाम से दूसरे को सम्बोधित किए जाते। आख़िर जॉन ने छोटे-से डाइनिंग-रूम का दरवाज़ा खोल दिया और सब लोग अन्दर खाना खाने पहुँच गए।

बाक़ी शाम पापा के लिए रोज़ के डिनर की तरह ही थी। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था एक क्लेपरेट की जगह उन्होंने शेरी और शैम्पन पी और एक अच्छे ख़ानसामा का बनाया हुआ खाना खाया। मगर अम्माँ आख़िरी शाम तक व्यस्त रहीं—कभी वह आई हुई सामाजिक सामग्री पर आलोचनात्मक दृष्टि डालतीं और कभी अपने यहाँ की खाद्य-सामग्री पर। सामाजिक सामग्री चाहे कितनी भी निर्जीव और बेतकल्लुफ़ थी, उसमें प्राण फूँककर वातावरण को सजीव रखना उनका कर्तव्य था। प्रायः अपनी खुशदिली और मिलनसारी के कारण वह अपने प्रयास में सफल रहती थीं, परन्तु इस विशेष अवसर पर आए हुए कुछ अतिथि ऐसे थे कि उनकी गरदन में ख़म लाना असम्भव ही था।

परन्तु पापा को न तो वह लोग निर्जीव लग रहे थे और न ही उन्हें निराशा हो रही थी। अच्छा खाना सामने और अच्छी शराब पेट में हो, तो वह हर हवा में मस्त रह सकते थे। उनके मन में जो भी बात आ जाती, वही वह दूसरों से करने लगते थे, बिना यह चिन्ता किए कि दूसरा सुनता या जवाब देता है या नहीं।

ब्रिजेट की ड्यूटी थी कि एक तो वह पैंट्री में जॉन की सहायता करे और दूसरे, ख़ामोश रहे। पहली बात का तो उसने ठीक से पालन किया, मगर दूसरी बात उससे नहीं बन सकी। जब भी कोई चीज़ उसके हाथ से गिर जाती तो हर बार वह ज़ोर

से 'हाय' कर उठती। जॉन अपनी कटु-गम्भीर मुद्रा में इसकी उपेक्षा कर देता परन्तु और सबका ध्यान उस ओर चला जाता—केवल पापा को छोड़कर। वह अपनी बात कहने-सुनने में इतने व्यस्त थे कि इन बाधाओं की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया और अम्माँ ने शुक्र किया कि उन्हें किसी भंद्दी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा।

मगर मीठा परोसने के समय बात हद तक जा पहुँची। तब तक ब्रिजेट इस हद तक घबरा गई थी कि सब-कुछ भूलकर उसने स्क्रीन के पीछे से सिर निकालकर अपनी फटी हुई आवाज़ में फुसुसाते हुए जॉन से न जाने क्या बात पूछी। मेज़ पर असह्य चुप्पी छा गई। पापा को भी और लोगों की तरह आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने आश्चर्य को छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं समझी पीछे की तरफ़ घूमकर उन्होंने सवाल किया, "यह शोर कम्बख़्त कैसा है?"

पापा के सहज भाव पर मिस्टर ऑरमॉन्टन भी मुस्करा दिए। अम्माँ को आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी कि इसमें सारा तकल्लुफ़ जाता रहा और एक हँसी-खुशी का वातवरण पैदा हो गया। पापा को पता तक नहीं था कि इसके कारण वही हैं।

25. जब उन्हें नींद नहीं आई

सरदियों में एक दिन सुबह पापा राइडिंग क्लब से निकलकर ईस्ट फ़िफ़्टी एट्थ स्ट्रीट से आ रहे थे कि घोड़े समेत गिर पड़े। वह मूर्ख पशु गिरा ही नहीं, उसने पापा का पैर भी नीचे रौंद दिया।

पापा ने उसके नीचे से पैर निकाल, घोड़े को उठाया, और सैर के लिए पार्क में चले गए। मगर बाद में उन्हें पता चला कि उनके पैर की एक उँगली मुड़ गई है और सीधी नहीं होती।

पापा को तकलीफ़ से ज़्यादा हैरानी हुई। दुर्घटनाओं से लोगों के हाथ-पैरों में चोटें आ जाती हैं, यह वह जानते थे, मगर उनका विश्वास था कि और लोगों के शरीर ख़स्ता हैं। उनका अपना शरीर मज़बूत है। वह ऐसे बने हैं कि उनके शरीर का कुछ नुक़सान हो ही नहीं सकता। उस समय भी उनका यही ख़याल था। मगर यह सच था कि एक उँगली मुड़ गई थी।

वह उँगली कभी सीधी नहीं हुई और पापा अकसर उसकी बात करते रहते थे। उनका ख़याल था कि यह एक बहुत विचित्र अनुभव था जैसे कि वह चीज़ कुदरत के नियमों के ख़िलाफ़ हो, और वह उम्मीद करते थे कि सुनने वालों पर उस कहानी का काफ़ी असर होना चाहिए। जब उन्हें लगता कि असर नहीं हुआ, तो वह कहानी फिर से सुनाते।

हमें साल-के-साल वह कहानी सैकड़ों बार सुननी पड़ती थी। "अब बहुत हो चुकी उँगली की बात क्लेयर," अम्माँ चिल्लाकर कहतीं, "लोगों को तुम्हारी उँगली में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

मगर पापा का ख़याल था कि लोगों को दिलचस्पी होनी चाहिए। वह क्लब में अपने सब दोस्तों से कहते, "आपको पता है मेरे साथ क्या हुआ? सैम बैबकॉक से मैंने जो लाख के रंग का टट्टू ख़रीदा था, वह एक दिन सुबह रास्ता ठंडा ज़ख़ होने से फिसल गया। गिरा मेरे पैर की उँगली पर और उँगली मुड़ गई। ज़िन्दगी में मेरे साथ कभी ऐसी घटना नहीं हुई। उँगली मुड़ ही गई! अब उस पर गट्टा बन गया है, यहाँ सिरे पर। मेरा मोची कहता है कि वह इसे नाप में नहीं ले सकता। उस टट्टू के बाद सबसे मूर्ख ये मोची लोग हैं।"

बीमारियों से पापा को पहले चिढ़ थी। इसके बाद में उन्हें दुर्घटनाओं के विवरण सुनने से भी चिढ़ होने लगी। उन्हें लगता कि कहीं वैसी दुर्घटना उनके साथ भी न होने लगे।

एक बार देहात में पापा ने हेरिमन स्टेशन से गाड़ी पकड़ी तो एक डिब्बे में उन्हें हमारी सुन्दर पड़ोसिन मिसेज़ वेनराइट अपने लड़के के साथ बैठी दिखाई दे गई। यह सोचकर कि रास्ते में उससे बात करते जाएँगे, पापा ने उसे अभिवादन किया। परन्तु अभिवादन का उत्तर देते हुए मिसेज़ वेनराइट ने कहीं कह दिया, "मैं लड़के को दन्दानसाज़ के पास ले जा रही हूँ। बेचारे के साथ बहुत बुरी दुर्घटना हुई है। आगे के दो दाँत टूट गए हैं।"

लड़का मुस्कराया, तो पापा को उसके टूटे हुए दाँत नज़र आ गए। इससे वह एकदम अस्थिर हो उठे और उनका चेहरा सिकुड़ गया। "ओह! ओह!" कहते हुए वह जल्दी से उन लोगों के पास से हट आए और दूसरे डिब्बे में जा बैठे। उस दिन घर पहुँचकर वह इस बारे में शिकायत करते रहे और मिसेज़ वेनराइट को कोसते रहे कि उसका क्या मतलब था कि उन्हें वह अपने घर की तकलीफ़ें दिखाए।

अगले सप्ताह मिसेज़ वेनराइट अम्माँ से मिलीं, तो बोलीं, "मिसेज़ डे, आपके पति कितने कोमल दिल के हैं! उस दिन मेरे बच्चे को देखकर बेचारों को बहुत ही तकलीफ़ हुई।"

लगभग एक साल के बाद पापा को फिर एक ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा। मेरी एक टाँग पर फोड़ा-सा हो गया था जिसका ऑपरेशन होना था। उससे भी बुरी बात यह थी कि किसी वजह से मुझे अस्पताल नहीं ले जाया जा सकता था, इसलिए ऑपरेशन घर पर ही करना पड़ा।

मेरी टाँग में प्लास्टर लगाकर डॉक्टर चले गए, तो मैं काफ़ी आराम महसूस कर रहा था। मगर अम्माँ इससे बहुत चिन्तित और परेशान थीं। पापा के आने पर जब वह अपना मन उनके सामने हल्का करने लगीं, तो पापा के लिए बैठना मुश्किल हो गया।

मगर इस बार उनके पास कोई चारा नहीं था। कोई दूसरा डिब्बा नहीं था जहाँ चले जाते। परेशानी से उनका चेहरा सिकुड़ गया। अपना कोट और हैट क्लोनेट में फेंक आख़िर अम्माँ से बोले कि उन्हें मेरी तकलीफ़ का दुःख है, मगर अच्छा हो यदि अम्माँ उन्हें यह दुःख अकेले में सहने दें। "घर सिर पर मत उठाओ और मुझे मेरा खाना दे दो।"

मगर खाना उनसे ठीक से नहीं खाया गया। सिगार भी उन्होंने रोज़ की तरह मज़े से नहीं पिया। उन्हें गुस्सा आ रहा था मगर वह उसे प्रकट नहीं करना चाहते थे। वह बिना वजह अम्माँ पर झल्लाते और उन्हें कोसते रहे। अम्माँ यह कहकर कि वह तो पत्थर के बने हैं, सोने चली गईं।

मेरे कष्ट की बात से उन्हें कष्ट हो रहा था और कष्ट उठाना उन्हें पसन्द नहीं था। उन्हें तकलीफ़ों की ज़्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए वह अव्यवस्थित हो रहे थे। वह इधर टहलते हुए कहने लगे कि लोगों को चाहिए कि वे उनकी तरह अपना ख़याल रखें और ठीक-ठाक रहें और ख़ामख़ाह उन्हें परेशान न करें। फिर एक नया सिगार सुलगाकर पढ़ने के लिए बैठ गए ताकि इस बात को मन से निकाल दें। मगर उस मनःस्थिति में उनसे कुछ पढ़ा भी नहीं गया और वह अपना गुस्सा पुस्तक पर निकालते रहे।

अम्माँ ने उन्हें मेरे पास आने से मना कर दिया था, मगर उनसे ज़्यादा देर रहा नहीं गया। ऊपरी मंज़िल पर आकर अँधेरे में टटोलते हुए उन्होंने मेरा दरवाज़ा खोल लिया। "क्या हाल है लड़के?" उन्होंने पूछा।

उनकी आवाज़ में परेशानी भी थी, कोमलता भी।

मैंने कहा, "हलो पापा!"

इससे थोड़ा स्वस्थ होकर उन्होंने आशापूर्ण स्वर में पूछा, "क्या हाल है?"

मैंने चेष्टा करके उत्तर दिया, "मैं ठीक हूँ।"

"ओह!" उन्होंने कहा और नीचे लौट गए।

मुझे पता था मैंने ग़लत बात कही है। मैं अपनी टाँग पर और ईश्वर पर झल्ला रहा होता, तो उन्हें तसल्ली हो जाती। वह चाहते थे कि आदमी मुसीबत का सामना करे, मगर ज़रा अच्छी तरह ज़ोर-शोर के साथ। यह नहीं कि चुपचाप मुँह बन्द किए पड़ा रहे और तकलीफ़ होने पर भी कहे कि मुझे तकलीफ़ नहीं है।

वह रात को देर तक जागकर सिगार पीते, पढ़ते और फ़र्श पर टहलते रहे। सोए तो उन्हें ठीक से नींद नहीं आई। यह इन्तिहा थी। वह उठकर घर के पिछवाड़े के ख़ाली कमरे में चले गए। मेरा कमरा ठीक उसके ऊपर था। मुझे वहाँ से उनके अकेले में झल्लाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी कि चादरें कैसी बुरी तरह से तह की गई हैं। चादरों को ठीक करके भी उनका मन शान्त नहीं हुआ। कभी करवट बदलते, फिर उठकर पानी पीते, कहते कि गरमी बहुत है, फिर थोड़ा ऊँघ लेते, फिर जाग उठते, स्विच ढूँढकर बत्ती जलाते और कराहने लगते। वह कोई भी काम ख़ामोशी से नहीं कर सकते थे, इसलिए ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से कराहते थे और यह आवाज़ ऊँची से और ऊँची होती जाती।

मुझे अपनी टाँग में तब तक काफ़ी आराम महसूस हो रहा था। ख़ास दर्द नहीं था, इसलिए पापा जितनी नींद लेने देते, उतनी ले लेता था। पापा से नीचे के कमरे में अम्माँ कानों में रुई दिए सो रही थीं। मगर उस ख़ाली कमरे की खिड़की पीछे को ख़ामोश अहाते में खुलती थी और पड़ोसी क्योंकि पास में रुई रखकर नहीं सोए थे, इसलिए उनकी नींद ज़रूर हराम हो रही थी।

अगले दिन अम्माँ अपने से दो-चार घर छोड़कर मिसेज़ क्रेन से मिलने गईं और उन्हें मेरे ऑपरेशन के विषय में बताने लगीं, तो मिसेज़ क्रेन ने उन्हें टोक दिया।

''हाँ-हाँ मिसेज़ डे,'' वह बोलीं, ''हम माँ-बेटी सोच ही रही थीं कि कुछ-न-कुछ बात ज़रूर हुई है। बेचारे को बहुत तकलीफ़ होगी। हमें बहुत हमदर्दी हो रही थी। सारी रात बेचारा तड़पता रहा। तुम्हें तो बहुत ही परेशानी हुई होगी। हम माँ-बेटी तो सुबह के क़रीब थोड़ा-सा सो गई थीं, मगर तुम तो रात-भर जागती रही होगी।''

घर लौटते हुए अम्माँ को एक और पड़ोसिन मिसेज़ रॉबिन्स मिल गईं। वह हमारे ब्लाक के पिछली तरफ़ दूसरी गली में रहती थीं और उनके पीछे के बेड-रूम हमारी तरफ़ को खुलते थे। मिसेज़ रॉबिन्स भी इस विषय में जानती थीं।

''मेरा कमरा आगे की तरफ़ है,'' वह बोलीं, ''इसलिए मुझे रात को पता नहीं चला। सुबह के वक़्त मिस्टर रॉबिन्स ने मुझे बतलाया। उन्होंने तो सारा समय और कोई बात ही नहीं की। उन्हें विश्वास ही नहीं आ रहा था कि मैंने...अ...अम्...बेचारे लड़के की चीख़ें सुनी ही नहीं।''

उस दिन अम्माँ ने पता नहीं किस तरह पापा के घर लौटने तक इन्तज़ार किया। उनके आते ही वह उन पर टूट पड़ीं, ''ओह, क्लेयर!'' वह बोलीं, ''मुझे तो सोचकर भी शरम आती है। तुम तो दिन-ब-दिन बदतर हुए जा रहे हो। आज मिसेज़ क्रेन और मिसेज़ रॉबिन्स से मुझे रात की बात का पता चला है। मेरा ख़याल है कि हमारा कोई पड़ोसी एक पल भी नहीं सो सका।''

''ठीक है,'' पापा बोले, ''मैं भी तो नहीं सो सका।''

''मगर क्लेयर,'' अम्माँ उनके कोट का गरेबान पकड़कर उन्हें झिंझोड़ने की चेष्टा करती हुई चिल्लाकर बोलीं, ''चिल्ला तो तुम रहे थे और लोग समझ रहे थे कि क्लेयरेन्स चिल्ला रहा है।''

''मुझे उसकी रत्ती-भर परवाह नहीं कि लोग क्या समझ रहे थे!'' पापा बोले, ''मैं खुद सारी रात परेशान रहा हूँ।

26. पापा के दूसरे रूप

जो लोग पापा-जैसे न हों, उनके साथ पापा का व्यवहार देखकर मुझे आश्चर्य होता था। वे बिलकुल डिक्टेटर की तरह बात करते थे। 'जियो और जीने दो' की उनके साथ कोई गुंजाइश ही नहीं थी। इससे भी कहीं बुरी बात यह थी कि दूसरों को घायल करने के बाद उन्हें मन में पश्चाताप भी होता था। बल्कि वह समझते थे कि लोगों को उनकी दी हुई शिक्षा के लिए उनका आभार मानना चाहिए।

परन्तु बड़े होने पर मुझे समझ में आने लगा कि यह उनके स्वभाव का एक पक्ष ही था। बचपन में मैंने उन्हें जितना जाना था, उससे कहीं ज़्यादा बड़े होने पर जान सका। वह बहुत ही खुशमिज़ाज और मिलनसार आदमी थे। क्लब में जाकर वह ख़ूब मज़े में समय बिताते थे। वहाँ आने वाले ज़्यादातर लोग उन्हें अच्छे लगते थे और वे लोग भी उन्हें पसन्द करते थे। वहाँ से कोई-न-कोई उनके साथ घर तक चला आता था और बाहर दरवाज़े के पास खड़ा उनसे बातें करता रहता था। दोस्तों के साथ, पार्क में घुड़सवारी करते समय या किसी बजरे में जलयात्रा के लिए निकलने पर, या किसी रेल-कम्पनी के साथी डायरेक्टरों के साथ हफ्ते-भर के इन्सपेक्शन के दौरे पर जाने पर वह ख़ूब चहकते हुए घर लौटते थे।

परन्तु यह उन्हीं लोगों के साथ सम्भव होता, जो पापा-जैसे ही हों। उनके साथ वह आत्मीयता का अनुभव करते थे। उन सबको उन दिनों अपनी अधिकार-शक्ति का बहुत एहसास और गुमान था। उनमें झगड़ा होता, तो वह भी ज़ोरों का होता, मगर उससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता था। दिल में वे सब एक-दूसरे को पसन्द करते और एक-दूसरे का सम्मान करते थे।

परन्तु जो लोग पापा को पसन्द न आते, उनसे पापा का व्यवहार बहुत उपेक्षापूर्ण होता था। उनमें से कोई पापा को तंग या परेशान करे, तब तो वह बैल की तरह हुँकार उठते थे।

लड़कपन में मैं इस बात पर बहुत खीझता था। यह तो मुझे स्वाभाविक लगता था कि एक आदमी अपनी बीवी, बच्चे और सम्बन्धियों के व्यवहार पर नाक-भौं चढ़ाए। वह अपने नौकरों को अपनी इच्छा से चलने पर मजबूर करे यह भी

स्वाभाविक लगता था। ऐसी बातें उन दिनों सब जगह होती थीं, इसलिए मुझे इन पर एतराज़ नहीं था। मगर पापा यहीं तक नहीं जाते थे, वह तो चाहते थे कि संसार का हर व्यक्ति, उनकी इच्छा के अनुसार चले—जिन लोगों के बारे में वह अख़बारों में पढ़ते थे, वे भी। यहाँ तक कि ऐतिहासिक चरित्र भी। जहाँ भी किसी का कार्य उनकी इच्छा के विपरीत होता, वे उसकी निन्दा किए बिना न रहते।

सडक से गुज़रते हुए लोगों के बारे में भी उनका यही रवैया था। कभी-कभी घोड़ागाड़ी में यात्रा करते हुए वह अपने सहयात्रियों पर ऐसे दृष्टि डालते जैसे एक कर्नल अपने फूहड़ सिपाहियों का जायज़ा ले रहा हो। उन्हें लगता कि वहाँ सब बैंक मैनेजर, वकील और क्लब जाने वाले लोग ही चाहे न हों—हालाँकि हों तो और भी अच्छा है—पर कम-से-कम उजले और साफ़ तो हों। उनमें आत्म-सम्मान तो हो। उनकी अपनी तरह। किसी के वास्कट के बटन खुले हों, या टाई ढीली हो, या वैसे ही वह देखने में ढीला-ढाला नज़र आता हो, तो पापा इस तरह घूरकर उसे देखते जैसे उसे फाँसी पर लटका देना चाहते हों। कहते कि मुझे फूहड़ लोगों से चिढ़ है, मैं उन्हें बरदाश्त नहीं कर सकता।

"आपको इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है, पापा?" मैं पूछता। वह कुछ भी उत्तर न देते। उन्हें साफ़ और चुस्त रहना पसन्द था, इसलिए वह मन में ऐसे लोगों को नापसन्द करते, तो और बात थी। मगर वह इस तरह गरम क्यों हो उठते थे?

एक दिन मेरी नज़र किसी पत्रिका में एक लेख पर पड़ी, जिसमें उसी विषय को उठाया गया था। उसमें लिखा था कि किसी का भी 'अहं' अपने अकेले व्यक्ति तक सीमित नहीं होना चाहिए, उसे दूसरों को भी अपने ही 'अहं' का अन्य रूप समझना चाहिए। मैं दूसरों को बिलकुल और नज़र से देखता था। मैं समझता था कि सब लोग मुझसे भिन्न हैं। कोई मेरे जैसा हो तो मुझे आश्चर्य होता था। उस लेखक का कहना था कि ऐसी बात असामाजिक प्राणी ही सोचते हैं। उससे कम-से-कम मुझे पापा का रवैया समझ में आने लगा। वह दूसरों को अपने ही व्यक्तित्व का अन्य रूप समझते थे, इसलिए स्वाभाविक था कि उन लोगों के व्यवहार की न्यूनता से वह भड़क उठें।

हर सुबह डाइनिंग रूम की खिड़की के पास बड़ी आरामकुरसी पर बैठकर पापा अखबार पढ़ते और देखते कि पिछले चौबीस घंटों में उनके व्यक्तित्व के अन्य रूप क्या कुछ करते रहे हैं। किसी ने कुछ न किया होता, तो वह आर्थिक सूचनाओं का पन्ना पढ़कर दो-एक सम्पादकीय टिप्पणियाँ देख डालते। दो-एक से ज़्यादा वह नहीं पढ़ पाते थे, क्योंकि वह सब उनकी नज़र में नीरस थीं। परन्तु महापौर ने पापा के आदर्शों का उल्लंघन किया होता, या टैमेनी हाल ने अच्छा-बुरा कुछ किया होता, तो पापा अम्माँ और हम लोगों के सामने ज़ोर-ज़ोर से उन्हें भला-बुरा कहने लगते।

एक अरसे तक तो हम लोग उनके राजनीतिक भाषणों में कोई दखल नहीं देते थे। उन्हें यह ठीक भी लगता था। उन्हें पसन्द नहीं था जब वह अपना गुबार निकाल रहे हों, तो कोई उनकी बात को टोक दे, या उसका समर्थन करे। मगर कुछ दिनों बाद अम्माँ हर मंगल को तत्कालीन जीवन-सम्बन्धी एक क्लास में जाने लगीं। यह क्लास एडना गुलिक नाम की एक मेहनती युवती चला रही थी। ज़्यादातर मिस गुलिक सामाजिक, साहित्यिक और संगीत-सम्बन्धी विषयों को ही लेती थी। राजनीतिक और औद्योगिक विषयों की तह में न जाकर वह उनकी सतही चर्चा ही करती थी। मगर यह चर्चा करती इस कुशलता से और ऐसी चुस्ती और रंगीनी के साथ कि अम्माँ को कठिन-से-कठिन और गम्भीर-से-गम्भीर समस्याएँ भी बहुत स्पष्ट समझ में आ जातीं, जैसे कि वे बच्चों का खेल हों।

एक दिन पापा पूरे ज़ोर-ज़ोर से प्रेज़िडेंट बेंजामिन हैरिसन और विलियम मैकिनले नामक एक व्यक्ति पर बरस रहे थे कि नए महसूल की स्वीकृति लेकर वे लोग देश का नाश करने जा रहे हैं। अम्माँ उससे पहले रोज़ की क्लास से होकर आई थीं। वह साहस के साथ बीच में बोल पड़ीं कि प्रेज़िडेंट का विचार बिलकुल ठीक है, केवल उसे पेश करने का उनका ढंग ठीक नहीं है।

पापा के माथे पर बल पड़ गए और उन्होंने अखबार हाथ से रख दिया। "तुम्हें इन चीज़ों का क्या पता है?" वह बोले।

"मिस गुलिक को इस बात का पक्का पता है," अम्माँ दृढ़तापूर्वक बोलीं, "वह कहती है कि प्रेज़िडेंट सही निर्देशन पाने के लिए हर रोज़ ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और यूँ भी दिल के बहुत नेक हैं।"

"प्रेज़िडेंट बिलकुल गावदी आदमी हैं," पापा बोले, "और मुझे तो सख़्त शक है कि वह बहुत बदमाश हैं। जिन बातों का तुम्हें रत्ती-भर पता नहीं, उनमें ख़ामख़ाह अपनी टाँग मत अड़ाया करो।"

"मुझे पता क्यों नहीं है?" अम्माँ उबल पड़ीं, "मिस गुलिक कह रही थी कि इस महसूल-वहसूल, पूँजी और श्रम तथा ऐसी सब बातों के बारे में हर समझदार स्त्री की अपनी राय होनी चाहिए।"

"मेरा सिर!" पापा आश्चर्य के साथ बोले, "मैं जान सकता हूँ कि मिस गुलिक कौन है?"

"वही आज के जीवन वाली स्त्री जिसके विषय में मैंने बतलाया था," अम्माँ बोलीं, "हर मंगल को वहाँ टिकट का एक डॉलर लगता है।"

"तुम्हारा मतलब है कि कुछ निठल्ली औरतें एक-एक डॉलर देकर आज के जीवन के सम्बन्ध में एक और औरत की बकवास सुनने जाती हैं?" पापा ने पूछा। "आज के जीवन के सम्बन्ध में कुछ जानना हो, तो तुम्हें मेरी बातें सुननी चाहिए।"

"मगर क्लेयर डियर, तुम तो इस तरह झुँझलाते हो और इतनी ऊँची आवाज़ में लम्बी-लम्बी बातें करते हो कि मेरी कुछ समझ में ही नहीं आता कि तुम कह क्या रहे हो। महसूल कैसा है और हड़ताल क्यों हो रही है।"

"यह मेरा नागरिक कर्तव्य है," पापा ओवरकोट पहनते हुए बोले, मगर अम्माँ भी साथ बोलती गईं।

"मिस गुलिक जो हमें अच्छी लगती है, इसकी एक और भी वजह है," उन्होंने कहा, "वह कहती है कि नम्रता से बात कहना बहस करने से ज़्यादा अच्छा है। और कहती है कि हड़ताल की बात पढ़कर उसे बहुत दुःख होता है क्योंकि मज़दूर और पूँजीपति एक-दूसरे से सद्भावना रखकर रह सकते हैं।"

पापा ने ज़ोर से दरवाज़ा बन्द किया और तिलमिलाते हुए घर से निकल गए। कोट के बटन भी घर के ढलान पर पहुँचकर पूरे बन्द किए। ख़ामोश मैडिसन एवेन्यू में रास्ता चलते लोगों से, जोकि चकित होकर उन्हें देख रहे थे, उनके यह कहने की आवाज़ मुझे सुनाई दी, "इस दुनिया का पता नहीं क्या होने जा रहा है!"

27. घर आए मेहमान

पापा मिलनसार आदमी थे। घर में हमसे और क्लब में अपने दोस्तों से बातें करना उन्हें अच्छा लगता था। गरमियों में देहात में कुछ मेहमान हमारे यहाँ ठहर जाएँ, इसमें उन्हें आपत्ति नहीं थी क्योंकि यहाँ जगह काफ़ी रहती थी और उन्हें अकेलापन कभी-कभी अखरता भी था। लेकिन शहर में कोई मेहमान देर तक घर में रहे, यह उन्हें अपनी कमज़ोरी जान पड़ती थी। उनका ख़याल था कि शहर में वह अगर आने वाले मेहमानों के साथ ढील बरतें तो घर मेहमानों का अड्डा बन जाएगा। कोई आए और चाय की प्याली पीकर चला जाए, यहाँ तक तो ठीक था, मगर कोई मेहमान साथ में हैंडबैग, या उससे भी आगे ट्रंक लेकर चला आए तो पापा कहते कि यह गले पड़ने वाली बात है।

उलझन इसलिए बढ़ जाती थी कि आकर ठहरने वाले मेहमान ज़्यादातर अम्माँ के ही सम्बन्धी होते थे। पापा के सब सम्बन्धी न्यूँयार्क में रहने से नियमित जीवन बिताते थे। पापा अम्माँ से कहते कि उनके सम्बन्धियों को भी यह शिक्षा लेनी चाहिए।

पापा को इस चीज़ से बहुत चिढ़ थी और वह इस बात को लेकर आसमान सिर पर उठा लेते थे। वह घर आते और अम्माँ डरते-डरते उनसे कहतीं कि ऊपर तीसरी मंज़िल के ख़ाली कमरे में उन्होंने अपने कुछ सम्बन्धियों को टिका रखा है, तो नीचे जो घटना होती, उससे वे सम्बन्धी एक बार चौंक उठते होंगे। अम्माँ जल्दी से दरवाज़ा बन्द न कर देतीं, तो पापा की यह क्रोधपूर्ण गरज उनके कानों में जा पड़ती कि इन फ़सली टिड्डियों को उनके सिर पर न बिठाकर वापस मिस्र में भेज देना चाहिए।

ज़्यादातर मेहमान बहुत साफ़ दिल लेकर आते थे। उन्हें यही बताया जाता था कि पापा उन्हें बहुत चाहते हैं। खुद मेहमान-नवाज़ होने से वे दिल से चाहते थे कि पापा भी उनके यहाँ आकर रहें और उन्हें ज़रा भी सन्देह नहीं होता था कि उन दबी हुई चीख़ों की वजह वे ही हैं। उन्हें खेद होता कि बेचारे पापा को किसी चीज़ की तकलीफ़ है। अम्माँ इस धारणा को बढ़ावा देती थीं। वह उनसे कहतीं कि पापा किसी वजह से परेशान हैं और उन लोगों को यह ज़ाहिर नहीं करना चाहिए कि

उन्होंने कोई आवाज़ सुनी है। डिनर के वक़्त पापा चुपचाप मेज़ के उस तरफ़ ताकते रहते, तो उन लोगों को पापा से और भी सहानुभूति होती। आंट एमा, जो दिल की बहुत कोमल थीं, एक बार उनसे बोलीं कि उन्हें डाइसर की सिर-दर्द की टिकियाँ आज़मानी चाहिए; वे थकान के लिए और एनीमिया के लिए बहुत अच्छी हैं। पापा ने उन्हें यह बताने-बताने में कि उन्हें एनीमिया नहीं है, अपनी ख़ून की एक नली लगभग फाड़ ली।

मेहमानों के आने में पापा को सबसे ज़्यादा चिढ़ इस बात की थी कि वे अचानक ही चले आते थे। उनका यही ख़याल था कि वे लोग आने से पहले सूचना नहीं देते। अम्माँ उन्हें पहले से इसलिए नहीं बताती थीं कि उससे विस्फोट दो-दो बार होता—एक बार पापा कहते कि वे लोग क्यों आ रहे हैं और दूसरी बार कि वे लोग क्यों आ गए हैं?

पापा बार-बार कोशिश करते थे कि मेहमानों के बारे में उनका दृष्टिकोण अम्माँ की समझ में आ जाए। वह अम्माँ को बताते कि इन नामुराद लोगों में दो आदतें होती हैं। एक तो उन्हें यह पता नहीं होता कि इन्सान होटलों में भी ठहर सकता है। न्यूयॉर्क में ऐसी हज़ारों जगहें हैं जो केवल इसी उद्‌देश्य से बनाई गई हैं कि ये जोंकें वहाँ ठहर सकें। अगर उनका होटलों में मन नहीं लगता, तो उन्हें तुरन्त वापसी गाड़ी में बिठाकर किसी बड़े-से ख़ाली रेगिस्तान की तरफ़ रवाना कर देना चाहिए। उन जिप्सियों को घूमना ही अच्छा लगता है, तो उनकी यही मदद कर सकते हैं कि उन्हें घूमने दें।

मगर उन लोगों की इससे भी ज़्यादा दुःखदायक आदत यह है, वह कहते कि वे अपनी आवभगत भी चाहते हैं और हरेक यह फर्ज़ उनके कन्धों पर लाद देता है। आते ही वे लोग घर के सब नियम तोड़ देंगे—मिनट-मिनट पर घंटी बजा रहे हैं, नहाने के टब में बैठे हैं तो बैठे ही हैं। और उन लोगों के लिए इतना ही काफ़ी नहीं—कभी उन्हें खींचकर अपने साथ इस या उस रेस्तराँ में ले जा रहे हैं और कभी कोई बड़े-बड़े भाषणों वाला नाटक देखने ले जाकर उन्हें उनके डिनर के बाद के सिगार से वंचित कर रहे हैं। ''तुम्हें यह समझ रखना चाहिए,'' वह अम्माँ से कहते, ''कि मैं कोई पहाड़ी गाइड नहीं हूँ। मैं क्यों रात को जाकर अपरिचित लोगों को शहर में इधर-उधर घुमाता फिरूँ? तुम एमा से कहा दो कि मैं अपने घर में शान्ति से रहना चाहता हूँ। मुँह फाड़े गँवारों को खुश करने के लिए मैं घर में सारा साल मार्दी ग्राम (एक त्यौहार) नहीं मना सकता।''

मेहमान कभी-कभी आते थे, फिर भी हमने एक कमरा ख़ाली रखा हुआ था। उसमें छोटी-सी गोल अँगीठी बनी थी जिसकी जाली बाहर को उभरी हुई थी। ऊपर सफ़ेद संगमरमर का मैंटल था। यह मैंटल वैसे बहुत सर्द और एक मक़बरे-जैसा

लगता, मगर उसके किनारे पर छह इंच चौड़ा लाल मखमल का टुकड़ा लगा था जिसके नीचे सुनहरा लहरिया बॉर्डर था। मैंटल पर गिल्ट में जड़ा हुआ एक बुलाबी प्रोसिलेन क्लॉक था, जिसकी घंटी मीठे फ्रांसीसी सुर की थी। दोनों तरफ़ दो सुराही की शक्ल के ख़ूबसूरत गुलाबी फूलदान रखे थे। घड़ी के दोनों तरफ़ एक-एक बड़ी ड्रेस्डेन की मूर्ति रखी थी। एक तो थी अभिवादन करती हुई गड़रिया लड़की—पतली कमर और हरा-गुलाबी पेटीकोट। दूसरी तरफ़ था एक नाचता हुआ छबीला गड़रिया—पाइप बजाता हुआ—जिसकी एक बाँह टूट गई थी।

दरी और दीवारें गहरे रंग की थीं। हर खिड़की पर दो तरह के परदे लगे थे—एक फ़ीते वाले सफ़ेद और दूसरे मोटे रेशमी ब्रॉकेड के। बाँधने की डोरियाँ बड़े-बड़े फुँदनेदार तुकमों की थीं।

फ़रनीचर में मुख्य चीज़ें थीं, एक काला ठोस महोगनी की लकड़ी का ब्यूरो, ख़ूब ऊँचा और नक्काशीदार और उसी तरह का पलंग जो इतना चौड़ा कि एक साथ कितने ही मेहमान उस पर सो सकते थे। पलंग के पास ही एक काला चौकोर कमोड पड़ा था जिसका ढकना सफ़ेद संगमरमर का था।

यह कमरा गम्भीर-सा होते हुए भी अपने अन्दर मनुष्य का निवास चाहता था—अपने गम्भीर ढंग से वह अतिथियों का स्वागत करता-सा जान पड़ता था। मगर जब अतिथि वहाँ पहुँचकर जाँच-पड़ताल करता तो उसे पता चलता कि यह एक धोखा ही था। ब्यूरो के ऊपरी हिस्से को छोड़कर वहाँ चीज़ें रखने की कोई जगह ही नहीं थी। हर दराज़ दूसरे कमरों के बचे-खुचे सामान से भरी पड़ी थीं। दो बड़ी आलमारियों में से एक को ताला लगा था। दूसरी में बॉल की पोशाकें, छाता स्टैंड, पत्रिकाओं के ढेर, एक छोटा पायदान, कितने ही पुराने बॉनेट और बुड्ढे मिस्टर ही की एक पेंटिंग रखी थी। उस आलमारी में अच्छी तरह नज़र डालने के बाद मेहमान अपना सामान खोलने का इरादा छोड़ देता और चुपचाप जिस किसी तरह वक़्त काटने के लिए अपने को तैयार कर लेता।

मेहमान को इन छोटी-मोटी असुविधाओं के विषय में सोचने का ज़्यादा समय नहीं मिलता था क्योंकि शीघ्र ही उसका मन हमारे घरेलू-जीवन के नाटक की ओर खिंच जाता था। हमारे यहाँ जो सरे-आम भावनाओं का प्रदर्शन चलता था, उसमें पैदा हुई घबराहट उसे पूरी तरह छा लेती थी।

हमारा दैनिक जीवन और लोगों से किसी तरह भिन्न है, इसका पता मुझे तब तक नहीं चला, जब तक मैं स्वयं लोगों के यहाँ नहीं आने-जाने लगा। जेफ़ बेरी के घर में मैं उनके गम्भीर बूढ़े माता-पिता को बहुत कोमलतापूर्वक एक-दूसरे से बात करते सुनता, तो मुझे लगता कि वे दोनों मुश्किल से अपने को रोके हुए हैं और अभी उनमें से एक या दूसरे का बाँध टूट जाएगा। मगर ऐसी स्थिति पैदा न होने से मुझे

अच्छा भी लगता और मन उदास भी हो जाता। वे दोनों इतने सभ्य थे और ऐसे ख़ामोश रहते थे कि मुझे लगता जैसे इनमें जीवन ही न हो।

मैकमिलियन परिवार में जाने पर मेरे मन को यह जानकर चोट लगी कि पति-पत्नी एक-दूसरे से इतना कमीना व्यवहार भी कर सकते हैं। उनके बच्चे भी तीखी व्यंग्यपूर्ण बातें करते थे जैसे अन्दर-ही-अन्दर एक-दूसरे पर नश्तर चला रहे हों। हम लोग भी अपने घर में एक-दूसरे को चोट पहुँचाते थे, मगर जान-बूझकर नहीं। हमारे झगड़े खुले तौर पर और ताव में ही होते थे। हम सबके बाल सुर्ख़ थे और गुस्सा आने में हमें एक सेकेंड नहीं लगता था, मगर दो-एक मिनट में ही सब ठीक हो जाता था।

जॉनी क्लार्क के परिवार का रंग-ढंग भी मुझे अजीब लगता था। जॉनी के पिता फ़ेसर क्लार्क गुस्सा चढ़ने पर बात ही नहीं करते थे। पहली तारीख़ को जब बिल आते, तो वह डिनर का सारा समय अपनी प्लेट पर नज़र गड़ाए चुप बैठे रहते। हम लोग कमरे से निकल आते, तो मिसेज़ क्लार्क याचना-भरे स्वर में पूछतीं कि वह क्या करें—मिस्टर क्लार्क खुश रहें तो वह तम्बू तानकर भी रह सकती हैं। मिस्टर क्लार्क चुपचाप उनकी बात सुनते रहते और फिर उठकर अपनी स्टडी में चले जाते।

मुझे यह स्थिति भयानक लगती थी। हमारे घर में भी कई बार स्थिति असह्य हो उठती थी, मगर ऐसी मुर्दनी हमारे यहाँ कभी नहीं छाती थी। हमारे घर के तूफ़ान में एक ज़िन्दगी होती थी। उसका एक अपना मज़ा था। जब पापा को रंज होता, तो वह यह कहे बिना न रहते। अपना रंज वह इस ज़ोर-शोर से बाहर निकालते कि जल्द ही हवा साफ़ हो जाती।

पापा में अगर कोई छोटापन होता, तो वह उसे छिपाने की कोशिश करते, वह तो इतने खुले दिल और गरम ख़ून के आदमी थे कि अपनी भावनाओं को छिपाने का उन्हें कोई कारण ही नज़र नहीं आता था। वैसे अपनी तीव्रता के कारण वे छिपाई जा भी नहीं सकती थीं।

एक दिन जिस समय पापा दफ़्तर गए हुए थे, आंटी गुसी और कज़िन फ्लॉसी आ गईं। अम्माँ उसी समय उन्हें डिनर के लिए वालडोर्फ़ में ले जाने की तैयारी करने लगीं। फिफ्थ एवेन्यू की थर्टी थर्ड स्ट्रीट में यह नया होटल खुला था और उसकी उन दिनों बहुत चर्चा थी। अम्माँ वह जगह देखना चाहती थीं। यह जानते हुए भी कि पापा को बात पसन्द नहीं आएगी, उनका ख़याल था कि वहाँ पहुँचकर तो वह मज़े से खाएँ-पिएँगे ही, इसलिए वह उन्हें सँभाल लेंगी।

पापा घर पहुँचे तो अम्माँ उनके बेड-रूम में उन्हें यह खुशख़बरी सुनाने जा पहुँचीं कि घर पर खाना खाने की बजाय वे लोग एक छोटी-मोटी पार्टी पर बाहर जा रहे हैं। अम्माँ ने सोचा था कि बात तरीक़े से कहेंगी, मगर आदमी को फुसलाने या अपनी

बात मनवाने की कला में वे निपुण नहीं थीं। होतीं भी तो पापा आसानी से मानने वाले कब थे? जब भी अम्माँ उन पर घेरा डालने लगतीं, तो उनकी आवाज़ ही पापा को सावधान कर देती। वह उस वक़्त उतावली हो उठती थीं, जैसे कि उनकी सारी योजना की यह इच्छा ही हो कि पापा किसी तरह मान जाएँ। सो इस बार ज्यों ही वह कोशिश करने लगीं कि पापा को ज़रा अच्छे मूड में ले आएँ, पापा का मूड एकदम बिगड़ गया। अम्माँ को सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए उन्होंने कहा, ''मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है।''

''तुम्हें ज़रा बाहर घूम आना चाहिए,'' अम्माँ बोलीं, ''उससे तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी। आज गुसी भी आई हुई है और वह चाहती है कि हम उसे वॉलडोर्फ में खाना खाने ले जाएँ।''

पापा को अप्रत्याशित आक्रमण अच्छे नहीं लगते थे। वह कितने भी शान्त हों, ऐसे आक्रमण से एकदम गरम हो उठते। एक सैकेंड के अन्दर-अन्दर वह वॉलडोर्फ की धज्जियाँ उड़ाने लगे और बताने लगे कि वहाँ खाना खाने की इच्छा रखने वाले कौन लोग होते हैं!

मगर अम्माँ पहले से ही तैयार थीं कि शुरू मे वह ज़रूर भला-बुरा कहेंगे। उनके चिल्ला-चिल्लाकर मना करने की तरफ़ उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। बोलीं कि वॉलडोर्फ बहुत अच्छी जगह है और बाहर जाकर उनकी तबीयत को आराम मिलेगा और घर में तो खाना बना ही न था, इसलिए और किया भी क्या जा सकता था?

स्थिति पापा की समझ में आ गई, तो उन्होंने कपड़े उतारकर नाइट-शर्ट पहन ली। चिल्लाकर अम्माँ से बोले कि उनके सर में सख़्त दर्द है। घर में खाना होने-न-होने से उन्हें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वह तो एक कौर भी नहीं खा सकते। खाना जाए जहन्नुम में। उन्हें सिर्फ़ आराम चाहिए। डगमगाते क़दमों से चलकर अपने कपड़े सहेजने के बाद पापा ने बत्ती बुझा दी और अपने बिस्तर में दाखिल हो गए। फिर चादर ओढ़कर लगे ऊँचे-ऊँचे कराहने।

थोड़ी-थोड़ी देर में पैदा होते हुए इन धमाकों से आंटी गुसी चौंककर डर गईं। वह जल्दी से सहायता करने नीचे पहुँचीं, तो अम्माँ ने बिगड़कर उन्हें वापस लौटा दिया।

उसके बाद बस आंटी को अम्माँ की यह आवाज़ ही पहुँची कि वह नीचे इन्तज़ार कर रही हैं। अम्माँ पापा को झिड़कने और बिस्तर में निकालने की कोशिश से बेज़ार आ चुकी थीं और उन्होंने तय कर लिया था कि पापा के बग़ैर ही वॉलफोर्ड में खाना खाने जाएँगी। वह, आंटी गुसी और फ़्लॉसी अकेले ही निकल पड़ीं। लेकिन तुरन्त ही उन्हें लौट आना पड़ा, क्योंकि अम्माँ के पास ज़्यादा पैसे नहीं थे। जब अम्माँ ने पापा के बीमार घर में पहुँचकर गैस जलाई और उन्होंने उठाकर उनसे दस डॉलर लिए तो दर्द के मारे पापा का कराहना सुना नहीं जाता था।

उन लोगों के चले जाने के बाद पापा के कराहने की आवाज़ धीमी पड़ने लगी और थोड़ी देर में ख़र्राटों की आवाज़ में बदल गई। वह ख़ूब गाढ़ी नींद सोए। उठे, तो काफ़ी खुश थे। बोले कि अब सर में दर्द नहीं है। ड्रेसिंग-गाउन और स्लीपर पहने हुए नीचे आकर उन्होंने दूध-डबलरोटी की माँग की। उसके कई कटोरे वह मज़े से चढ़ा गए और आराम से एक सिगार पीकर अम्माँ के लौटने के वक़्त तक फिर बिस्तर में पहुँच गए और किताब पढ़ने लगे।

28. अपनी पसन्द का ग़ालीचा

गरमियाँ देहात में काटने की आदत हो जाने से पापा को वहाँ जाना अच्छा लगता था, मगर इससे हर साल उनकी ज़िन्दगी में दो बड़े भूचाल आते थे। एक तो बसन्त में जाने के दिनों में और दूसरा बरसात उतरने पर लौटने के समय। सामान बाँधना एक ऐसी चीज़ थी जिससे पापा को बहुत नफरत थी। उन-जैसे तरतीब-पसन्द आदमी को यह घपला बुरा लगता था। हफ़्ताभर पहले से ही इस चीज़ को सोचकर उनका दिल बैठने लगता। उन्हें सिर्फ़ कुछ कपड़े दराज़ों से निकालकर एक ट्रंक में डालने होते थे, मगर यह एक ख़ास तरीके से करना होता था। यह काम और कोई नहीं कर सकता था—और किसी को वह तरीका आता ही नहीं था। अम्माँ इतना ही कर सकती थीं कि उनका ट्रंक उनके कमरे में पहुँचा दें। जब वह उस ट्रंक को कोने में मुँह फाड़े हुए देखते, तो उनकी हाय-तौबा शुरू हो जाती। वह इधर-उधर जाते हुए पहले अपनी कमीज़ें रखते, फिर कपड़े और जाँघिये रखते। फिर खींच-खींचकर कुछ कपड़े सूटकेस में रखने के लिए निकालते। फिर तय करते कि पैक किए हुए कपड़ों में से कुछ वहीं छोड़ जाने चाहिए। इन सब उलझनों में वह ज़ोर-ज़ोर से अपने से बात करते रहते।

पहले-पहल उनके कमरे से हल्की कराह सुनाई देने लगती कि यह क्या बबाल है। फिर ज्यों-ज्यों हाथ के काम की उलझन बढ़ती जाती, वह कभी पैर पटकते और कभी अपने कपड़ों को भला-बुरा कहते। हम उनके दरवाज़े से झाँकते, तो देखते कि वह कमरे के बीचों-बीच हाथ में अपना नहाने का गाउन लिये खड़े हैं। एक बार ट्रंक में और दो बार सूटकेस में रखने के बाद अब वह फिर उसे ट्रंक में रखना चाहते थे, क्योंकि सूटकेस में जगह नहीं थी। बाद में वह फिर सूटकेस में ही रखा जाना था, ताकि उन्हें जल्दी से मिल सके। उनका चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था और वह दिल से कह रहे थे, "लानत है!"

अम्माँ इससे बहुत पहले ही अपना काम शुरू कर चुकी होतीं। पापा सिर्फ़ अपने कपड़े ही रखते थे, बाक़ी सब कुछ अम्माँ सँभालती थीं। हाँ, भारी काम में कोई-न-कोई उनका हाथ बँटा देता था। लौटने के दिनों में देहात में जेरोम नामक

व्यक्ति इस काम के लिए आ जाता था। वह बहुत ख़मोश और दिल से काम करने वाला आदमी था। इस काम में वह इतना कुशल था और ऐसी फुरती से काम करता था कि सब काम वक़्त से पहले ही पूरा हो जाता था। अम्माँ को यह सोचने में उलझन होती थी कि जेरोम को अब क्या काम बताएँ। उसे ख़ाली देखकर भी उन्हें उलझन होती थी, क्योंकि उसे रोज़ के हिसाब से पैसे दिए जाते थे।

मगर अम्माँ को सबसे बड़ी समस्या पापा की रहती थी। पापा कहते कि घर से जाना तो ठीक है, मगर यह रद्दोबदल उन्हें पसन्द नहीं। उदाहरण के लिए, वह कहते कि जब तक वह अपने सामान के साथ घर से न चले जाएँ, तब तक कोई ग़ालीचा नहीं उठाया जाना चाहिए। मुझे यह बात ग़लत लगती। मैं कहता कि कुछ ग़ालीचे उठाकर काम तो शुरू कर देना चाहिए। अकेले में वह मान भी जाते कि शायद बात कुछ ठीक ही है, मगर कहते कि मुसीबत यह है कि एक बार अम्माँ को छूट दे दी जाए, तो वह सब-कुछ हटाकर ही दम लेंगी। ''तुम्हारी अम्माँ को जब घर बन्द करना होता है,'' वह कहते, ''तो उन्हें और कुछ होश नहीं रहता। न उन्हें मेरे आराम का ख़याल रहता है, न अपने। मेरा तजुरबा है कि मैं इस मामले में ज़रा भी टस-से-मस हो जाऊँ, तो सारा घर एकदम उलट-पलट हो जाता है।'' वह कहते कि पूर्ण व्यवस्था पर वह ज़ोर इसलिए देते हैं कि दूसरी तरफ़ यहाँ पूर्ण अराजकता छा जाती है और काम अगर ठीक से किया जाए, तो हर चीज़ ढंग से क्यों नहीं हो सकती। अगर नहीं होती, तो यह उनका दोष नहीं और वह इसके लिए कष्ट भोगना नहीं चाहते।

दूसरी तरफ़ अम्माँ कहतीं, ''हम हवा की तरह तो घर से निकल नहीं सकते। जब कुछ परिवर्तन करना हो क्लेयर डियर, तो चीज़ें कुछ तो ऊपर-नीचे होती ही हैं। अगर कुछ ज़्यादा हो जाएँ, तो मैं क्या कर सकती हूँ? अच्छा हो अगर तुम मुझे परेशान न करो।''

इस मतभेद से हर बरसात ग़ालीचों को लेकर लड़ाई हो जाती। चलने से दो-तीन सप्ताह पहले अम्माँ हॉल का बड़ा ग़ालीचा उठवा देतीं—पापा से कहतीं कि हॉल में दो ग़ालीचों की कोई ज़रूरत नहीं है।

''यह नहीं होगा,'' पापा कहते। ''यह घर है, बैठक नहीं।''

''मगर हम जा रहे हैं,'' अम्माँ हुज्जत करतीं, ''हमें घर बन्द करना है।''

''तो तरीके से बन्द करो न! हर चीज़ का ढंग होता है; यह उलट-पलट कोई ढंग नहीं है।'' और वह लाइब्रेरी में जाकर आग तापने लगते, जब कि अम्माँ बेचारी शाल ओढ़े ठंडे हॉल और कमरों में इधर-से-उधर घूमती फिरतीं।

लाइब्रेरी के फ़रनीचर में दो भारी चीज़ें थीं—एक बड़ा प्यानो और एक डेस्क-जैसी बड़ी मेज़ जो काग़ज़ों और किताबों से लदी रहती थी। यह मेज़ कमरे के बीचों-बीच

एक ग़ालीचे के ऊपर रखी रहती थी। उस मेज़ को उठाकर नीचे से ग़ालीचे को निकालना आसान काम नहीं था।

हर साल इस काम को हाथ में लेने से पहले अम्माँ रात को इस बारे में सोचती रहतीं। यूँ यह ज़रा भी ज़रूरी नहीं था कि उस ग़ालीचे को वक़्त से पहले हटाया जाए, मगर अम्माँ उस काम को किसी तरह खत्म कर लेना चाहती थीं जिससे वह आराम से सो सकें। मगर पापा के लिए उस ग़ालीचे का वहाँ रहना ज़रूरी था, क्योंकि उन्हें लाइब्रेरी में बैठना अच्छा लगता था। वह जाने से पहले किसी को उस ग़ालीचे को हाथ नहीं लगाने देना चाहते थे।

मगर हर वक़्त वह रखवाली भी नहीं कर सकते थे। कभी तो उन्हें बाहर जाना ही पड़ता था बल्कि जिस-किसी तरह बाहर भेज दिया जाता था हालाँकि इसका उन्हें पता नहीं रहता था। दोपहर के बाद यह सोचकर कि दिन का काम अब ख़त्म हुआ, वह लाइब्रेरी से बाहर निकलते और मोटर में बैठकर घूमने चल देते—ज़्यादा दूर तक नहीं, सिर्फ़ अखबार की दुकान तक जोकि पास ही थी। मन में वह शान्त होते। निश्चित ही उनकी अनुपस्थिति में कुछ नहीं किया जा सकता। मगर बाहर निकलते हुए कोई-न-कोई काम उन्हें सौंप दिया जाता कि अगले कस्बे से कुछ सामान ख़रीदते लाएँ, या कोई किताब एक मित्र के यहाँ छोड़ आएँ। जब डर होता कि इससे वह शक न करें, तो उन्हें चलते हुए कुछ न कहा जाता और शोफ़र को हिदायत दे दी जाती कि वह अखबार ख़रीद चुकें, तो उनसे क्या कहना है।

"गाड़ी में कुछ फूल रखे हैं, सर! मिसेज़ डे ने कहा था कि...।"

पापा अखबार से सिर उठाकर निगलती हुई-सी नज़र से चश्मे के अन्दर से उसे देखते। "क्या बात है?" वह कहते, "क्या कह रहे हो?"

शोफ़र धीरे से बात दोहरा देता, "मिसेज़ डे ने कहा था कि वे गिरजे में पहुँचाने हैं।"

"जहन्नुम में जाए गिरजा!" कहकर पापा फिर मार्केट की रिपोर्ट पढ़ने लगते। यह नहीं कि वह गिरजे के खिलाफ़ थे। उसमें उन्हें पूरा विश्वास था, मगर वह चाहते थे गिरजा. गिरजे की जगह पर रहे, उनकी सैर में दख़ल देने न आए। मगर वह अख़बार देखते रहते और मना न करते। शोफ़र उन्हें मौक़ा ही न देता और गाड़ी को मोड़कर पोस्टर रोड से होता हुआ राई का तरफ़ चलता।

घर लौटकर पापा सरद हॉल में अपना ओवरकोट लटकाते और शाम का अखबार लिये हुए लाइब्रेरी में आग तापने चल देते...।

इस बीच सब-कुछ ज्यों-का-त्यों नहीं रहता। अम्माँ ने बड़ी मेज़ उठवाकर ग़ालीचा निकलवा लिया होता और जेरोम इसे झाड़ने के लिए लांड्री यार्ड में खींचकर ले गया होता। उसे आदेश मिला होता कि उसके बाद वह उसे गोल करके लपेट दे

और हटाकर रख दे। इस काम में उसे समय लगता। अम्माँ उसे काम करते छोड़कर शुक्र मनाती हुई चीनी के सामान वाले कमरे में जाकर कुछ प्यालियाँ सँभालने लगतीं। जेरोम को काम में लगाकर उनका मन अपेक्षतया शान्त हो जाता...।

कुछ देर बाद जब वह दिन में पहली बार पल-भर के लिए अपने कमरे में जाकर बैठतीं और मुँह में कुछ गुनगुनाती हुई चादरें वगैरह ठीक करने लगतीं, तो दरवाज़े पर खट्खट् सुनाई न देती।

अम्माँ जल्दी में सीधी जातीं। उनका अंग-अंग फिर सचेत हो जाता, "कौन है?"

बाहर से अपराधी की-सी खाँसी और फिर जेरोम की आवाज़ सुनाई देती, "बात यह है...अम्...मिसेज़ डे हैं न?"

"क्या बात है जेरोम?" अम्माँ चीख़ पड़तीं। सोचतीं कि जब वह इसे काफ़ी काम सौंप आई हैं, तो वह फिर क्यों उनका सिर खाने चला आया है। "अब क्या काम है?" वह हताश स्वर में कहतीं, "वह काम पूरा हो गया?"

"जी नहीं," जेरोम जैसे आश्वासन देता, "वह अभी पूरा नहीं हुआ।" फिर रुककर वह थोड़ा और खाँसता। उसे पता होता कि वह अच्छी ख़बर सुनाने नहीं जा रहा। "मिस्टर डे...वह उधर लाइब्रेरी में...बहुत शोर मचा रहे हैं।"

"क्यों? क्या हुआ है उन्हें?"

जेरोम जानता था कि वह अच्छी तरह जानती हैं क्या हुआ है। "जी हाँ..." वह मशीने ढंग से कहता और फिर जैसे चिन्तित स्वर में अपने से कहता, "वह उस ग़ालीचे के लिए बुलर कर रहे हैं।"

अम्माँ को उसके मुँह से 'शोर मचा रहे हैं', यह सुनना पसन्द नहीं था। वह सम्मानपूर्ण नहीं था। मगर अपनी चुभन में भी यह शब्द वास्तविकता के इतने निकट पड़ता था कि और कोई शब्द उसका स्थान नहीं ले सकता था। अम्माँ चादरें रख देतीं। मेरी समझ में नहीं आता था कि वह पापा के शान्त होने तक आराम से कमरे में क्यों नहीं बैठतीं और उन्हें शोर मचाने से क्यों रोकती हैं। मगर वह लड़ाई लड़नी अम्माँ को होती थी और मेरा उसमें कोई दख़ल नहीं था। वह हथियार सँभाले ऊपर के बड़े हॉल में निकल आतीं और तुरन्त आक्रमण आरम्भ कर देतीं। उनका प्रत्याघात ज़ोर-शोर से सीढ़ियों के जंगले से आरम्भ होता। वह चिल्लाकर पापा से कहतीं कि वह शोर बन्द करे और ख़ामोश हो जाएँ। वह काम कर-करके अपनी जान दे रही हैं, तो उसमें इस तरह अड़चनें डालते पापा को शरम आनी चाहिए। पापा लाइब्रेरी में अपनी सुरक्षित जगह से जवाब में ज़ोर का वार करते। लगता जैसे दो तरफ़ बमबारी हो रही हो। दोनों पक्ष एक-दूसरे को देख नहीं पाते थे, मगर अपनी-अपनी तोप से पूरे ज़ोर से दाग़ते जाते थे और लगता था कि दोनों ही अब डटे रहेंगे।

जेरोम एक ओर खड़ा सम्मानपूर्वक प्रतीक्षा करता रहता कि देखें इसका क्या परिणाम निकलता है। आदान-प्रदान इतना तेज़ होता था कि उसे कुछ अनुमान नहीं होता था कि कौन-सा पक्ष जीतेगा। परन्तु योद्धाओं को इसका पता रहता था। अम्माँ जल्द ही समझ जातीं कि वह हार रही हैं। पापा की गरज का पहले ही गहरा स्वर, या अपनी ही थकान उनका हौसला तोड़ देती। वह हार मान जातीं।

अब वह जोरोम की तरफ़ देखतीं। जेरोम को पता चल जाता कि वह कुछ-न-कुछ व्यवस्था करने जा रही हैं। तो क्या वह पुराना बड़ा ग़ालीचा उसे फिर धकेलकर लाइब्रेरी में ले जाना होगा?

''जेरोम, नीले कमरे में जो कम चौड़ाई के दो लम्बे सफ़ेद फ़र वाले ग़ालीचे हैं, उनमें से एक मिस्टर डे को दे दो। पता है न मैं कौन-सा ग़ालीचा कह रही हूँ?''

''हाँ मैम!'' जेरोम थोड़ा आश्वस्त होकर कहता, ''उसे डेस्क के नीचे बिछा दूँ?''

''नहीं, डेस्क और अँगीठी के बीच में, मिस्टर डे की कुरसी के पास। बस इतना ही करना है। उन्हें पैरों के नीचे कोई-न-कोई चीज़ चाहिए।''

मगर फ़र वाला सफ़ेद ग़ालीचा लिये हुए पापा के कमरे में पहुँचने पर जेरोम को पता चलता कि उन्हें क्या चाहिए, इस बारे में पापा का ख़याल कुछ दूसरा ही है। इस ग़ालीचे को देखकर उन्हें इतनी हैरानी होती कि उन्हें गुस्सा करने की भी याद न रहती। वह समझ रहे होते कि उन्होंने लड़ाई जीत ली है और अम्माँ के हथियार छुड़ा दिए हैं। वह तो अपना पारा उतारकर अपनी विजय का फल चखने की अर्थात् अपना बड़ा चौकोर ग़ालीचा वापस पाने की राह देख रहे होते और जेरोम पहुँच जाता उसकी जगह वह लम्बूतरी रोएँदार नहूसत लिये हुए।

''यह क्या है?'' वह तनकर पूछते।

जेरोम लड़खड़ाता हुआ वह नहूसत उन्हें खोलकर दिखा देता। एक निराशावादी सेल्समैन की तरह, जिसे अपने माल पर भरोसा न हो, उसका दिल अन्दर से बैठ रहा होता।

''यह चीज़ यहाँ अन्दर किसलिए लाए हो?''

''जी-जी, हाँ मिस्टर डे! मिसेज़ डे ने यह आपके पैरों के नीचे बिछाने को कहा है।''

पापा नए सिरे से अपने बम छोड़ने लगते। मगर उनकी तोप तब तक ठंडी पड़ चुकी होती। उन्हें परेशानी और झुँझलाहट तो बहुत होती, मगर गुस्सा उतना न आता। बहरहाल, जो भी मसाला होता, वह जेरोम पर ख़ाली कर देते, जो चुपचाप खड़ा सुनता रहता। फ़र के उस मनहूस ग़ालीचे को ठोकर मारकर वह कहते कि उन्हें वह नहीं चाहिए। मगर इस बार उन्हें हवा सूँघकर पता चल जाता कि वह हार चुके हैं। जेरोम तक को इसका पता चल जाता और वह थोड़ी देर के लिए ग़ालीचा उनके

पैरों के नीचे बिछा देता। पापा अखबार पढ़ने की कोशिश करते हुए कुढ़ते और दाँत काटते रहते। सफ़ेद ग़ालीचे से उन्हें ख़ास तौर पर चिढ़ होती क्योंकि पिछले साल भी उनका उससे साबिक़ा पड़ चुका होता।

अम्माँ फिर चादरों में लग जातीं। घर में शान्ति छा जाती। केवल लांड्रीयार्ड से जेरोम की थपथप ही सुनाई देती। बाड़ की ओट में वह अपने हाथ के माल को झाड़ और बुहार रहा होता।

लाइब्रेरी में आग के पास बैठकर पापा अख़बार के पन्ने पलटते हुए सफ़ेद ग़ालीचे को घूर रहे होते और ऊँची आवाज़ में अपने से कह रहे होते, ''मुझे इससे नफरत है।'' और उस ज़बरदस्ती के मेहमान को वह ठोकर मार देते। ''यह ऊनी नहूसत! मुझे अपना ग़ालीचा चाहिए।''

29. फ्रांसीसी दरबार

कुछ लोग बुढ़ापे में अपने से दबने लगते हैं। आख़िरी दिनों को छोड़कर, जब कि पापा थोड़ा डाँवाडोल होने लगे थे, उनके साथ ऐसा नहीं हुआ। जब तक नज़र धोखा नहीं देने लगी, वह बिलियर्ड्स खेलते रहे और ज़ोर के शॉट्स का मज़ा लेते रहे। सॉलिटेयर में भी वह जमकर अपने को हराते रहे। गाड़ी में हवाखोरी का भी तब तक मज़ा लेते रहे जब तक मोटरों के आ जाने से सड़कों पर भीड़-भड़क्का नहीं होने लगा। लड़ाई में उतरने की तरह वह सुबह के अखबार से भी दो-चार होते रहे। जब कभी प्रेज़िडेंट की कही या की हुई किसी बात का ब्यौरा मुखपृष्ठ पर छपता, तो पापा या तो आश्चर्यचकित होकर उसकी प्रशंसा करते कि इस बार पट्ठे ने क्या दम दिखाया है, या फिर कहते कि वह नम्बरी बदमाश है और उसे ठोकर मारकर गद्दी से उतार देना चाहिए। वह ताव के साथ कहते, "मेरा मन होता है कि खुद वहाँ जाकर उसे ठोकर मारूँ।" प्रेज़िडेंट विलसन की दोनों अवधियों में तो वह अकसर ही यह कहा करते। बुडरो विलसन में न जाने क्या ऐसी बात थी कि पापा का ख़ून हर समय खौलता रहता था।

उन दिनों दन्दानसाज़ ने पापा के दस आने के एक दाँत के टूट जाने पर उसकी जगह नया जोड़ बनाकर दिया था। पापा उसे उसके पास वापस ले गए। "क्या बात है मिस्टर डे?" डॉ. व्यॉट ने कहा, "क्या मुँह बन्द करने पर दाँत ठीक से निचले दाँत में नहीं मिलता?"

"नहीं," पापा बोले, "इसमें ख़राबी यह है कि यह अन्दर जमकर नहीं रहता।"

डॉ. व्यॉट की समझ में बात नहीं आई। "आपका मतलब है कि आप खाना खाने लगते हैं तो दन्त-पंक्ति ढीली पड़ जाती है?"

"नहीं," पापा बोले, "खाने के समय तो यह जमी रहती हैं और बात करने में भी नहीं हिलती। मगर सुबह अखबार पढ़ते समय मैं उस विलसन नाम के आदमी के बारे में अपने मन का गुबार निकालने लगता हूँ तो यह झट कूदकर नीचे आ गिरती है।"

तो बुढ़ापे में भी पापा ज़िन्दगी से ऊबे नहीं थे। वह बल्कि तब ज़्यादा किताबें पढ़ने लगे थे, जिनमें से ज़्यादातर नए और पुराने राजनीतिक झगड़ों के बारे में होती

थीं। उन झगड़ों में वह किसी-न-किसी का पक्ष ले लेते थे। उनका पक्ष जीतता तो वह चाहते कि उस विजय को ही फ़ैसला समझा जाए। दूसरा पक्ष जीतता, तो वह उसे अपनी विजय को आख़िरी फ़ैसला मानने का अधिकार न देते। जितना ज़्यादा पापा के मन पर दबाव पड़ता उतना ही उनका क्रोध और निश्चय बढ़ जाता। मैं कहने जा रहा था कि उतनी ही उनकी ख़ून की प्यास बढ़ जाती। मगर वह तो उनमें सदा ही एक-सी रहती थी, विजय हो चाहे पराजय। इस तरह पढ़ना उनके लिए समय बिताने का एक सक्रिय और उत्तेजना देने वाला रास्ता था।

उन्हें जासूसी कहानियों का शौक नहीं था, उनके चरित्र उन्हें भड़कीले लगते थे। साधुओं की तरह गुंडों की कहानियाँ भी उन्हें नहीं आती थीं। कहानियाँ पढ़नी होतीं, तो वह डिकेन्स, ड्यूमा या थैकरे की रचनाएँ ही उठाते। तैंतालीस-चवालीस की उम्र में गाड़ी में सफ़र करते हुए वह अकसर कागज़ की जिल्द की किताबें ख़रीद लेते थे—डब्ल्यू क्लार्क रमेल की समुद्री कहानियाँ, आर. एल. स्टीवेन्सन नाम के नए लेखक के उपन्यास, जोकिं उन दिनों निकल ही रहे थे। उनमें से कुछ की कीमत पचास सेंट होती थी, कुछ की पच्चीस। उन्हें घोड़ों से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तकों का भी शौक था, बशर्ते कि उनमें भावुकता की बातें न हों। परन्तु समस्या-प्रधान उपन्यास, विशेष रूप से मिसेज़ इम्फ़े वार्ड के लिखे हुए, उन्हें बकवास लगते थे। यही हाल तिकोन वाली और उन हेमलेट-जैसे लोगों की कहानियों का था। पापा को उन्हीं लोगों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता था जो मन के मज़बूत हों।

उन्हें इंग्लैंड का इतिहास पसन्द था, मगर विशेष रूप से क्रामवेल से पहले का। 1630 के बाद वह अमरीका के औपनिवेशिक दिनों के इतिहास में चले जाते थे जैसे कि उनके अन्दर से उनका कोई पूर्वकालिक व्यक्तित्व उनका रास्ता मोड़ देता हो।

एक दिन एक किताबों की एजेंट ख़ूब बढ़िया कपड़े पहने हुए आई और उसने अम्माँ को किस्तों पर 'मेमॉयर्ज़ आफ़ द फ्रेंच कोर्ट' का सेट ख़रीदने के लिए राज़ी कर लिया। अम्माँ ने उन किताबों को कभी नहीं पढ़ा—उन्हें न तो उन दिनों की व्यंग्यात्मक शैली पसन्द थी, और न ही पसन्द थीं वे दुष्ट स्त्रियाँ जो बेचारी रानियों के बुडढे खूसट पतियों को उनसे छीन लेती थीं। हर बार किस्त अदा करने का समय आने पर अम्माँ निराशा और पश्ताचाप से व्याकुल हो उठती थीं। हर महीने दस-दस डॉलर की दो जिल्दों का एक पैकेट आ पहुँचता था। अम्माँ बीस डॉलर इकट्ठे करने के लिए अपना बटुआ और ब्यूरो की सब दराज़ें छान डालतीं। 'आलटर सोसाइटी' के पैसे को वह हाथ नहीं लगाती थीं। (उस पवित्र रकम को छूना पाप था, हालाँकि वह सामने ही पड़ी उनकी तरफ़ घूर रही होती।) "ओह डियर!" वह चिल्ला उठतीं। "ये मनहूस फ्रांसीसी रचनाएँ! ये इतनी जल्दी-जल्दी आ पहुँचती हैं कि मैं बरदाश्त

नहीं कर सकती। मैंने सोचा था कि कम-से-कम इस महीने ये नहीं आएँगी। अगर ये इसी तरह आती रहीं तो जाने मैं क्या कर बैठूँगी!''

संकोच के मारे उन्होंने पापा को उस विषय में नहीं बताया था। वह उन किताबों को पापा की नज़र से बचाकर रखती थीं। मगर जल्द ही हर महीने बीस डॉलर देना उनके लिए असम्भव हो गया। एक दिन वह उफनती हुई पापा के पास जा पहुँचीं और पूरा फ्रांसीसी दरबार उनकी लाइब्रेरी की मेज़ पर पटककर बोलीं कि यह एक उपहार है जो उनके लिए ख़रीदती रही हैं और वह आशा करती हैं कि पापा उसे पसन्द करेंगे।

पापा एकदम चौंक उठे। सन्देह के साथ अपना चश्मा चढ़ाते हुए बोले, ''यह सब क्या है?''

''ओह क्लेयर!'' अम्माँ ने उन्हें हिलाकर बेसब्री से कहा, ''बेवकूफ़ी की बात मत करो। मैं कह रह हूँ यह फ्रांसीसी दरबार है। मैं तुम्हें यह उपहार दे रही हूँ।''

'''मुझे यह नहीं चाहिए,'' पापा बोले।

''तुम्हें चाहिए, ज़रूर चाहिए,'' अम्माँ चिल्लाईं, ''तुमने आँख उठाकर देखा तक नहीं, और मैंने इस पर इतने पैसे ख़र्च कर दिए हैं। यह बहुत अच्छा उपहार है।''

इससे पहले कि पापा फिर इन्कार करें, वह झट से मुड़कर सीढ़ियाँ चढ़ आईं। पापा सोचते ही रह गए कि यह माजरा क्या है?

पता पापा को अगले महीने चला। जब दो नई जिल्दें आ पहुँचीं, तो अम्माँ ने उनसे कहा कि उनके बीस डॉलर देने हैं। पापा इसी वक़्त बरसने लगे।

''मगर हरकारा बाहर हॉल में इन्तज़ार कर रहा है,'' अम्माँ चिल्लाईं।

''उसे कहो जाकर हेड्स में इन्तज़ार करे। मुझे उम्मीद है कि वह सीज़िल भी करेगा।''

''क्लेयर, तुम्हारी आवाज़ उस तक जा रही है,'' अम्माँ विनयपूर्वक बोलीं। ''प्लीज़ क्लेयर! अब बात मान लो।'' और लड़ाई ख़त्म होने पर पापा के बीस डॉलर निकल गए।

बाद में वह अम्माँ से बोले, ''तुम तो कहती थीं कि ये किताबें तुम उपहार में दे रही हो।''

''सारी थोड़े ही?'' अम्माँ ऐसे चिढ़कर बोलीं जैसे कि वह बहुत लालच दिखा रहे हों। ''जो मैंने दी थीं, वह उपहार में थी। बाक़ी के पैसे तुम्हें देने होंगे।''

पापा ने अम्माँ को सख़्त चेतावनी दे दी कि आगे से वह ऐसी बेहूदा हरकत न करें और फ्रांसीसी दरबार से अपने पैसे की क़ीमत वसूल करने में वह लग गए। जब तक उनसे बन पड़ा, वह उसके लिजलिजे षड्यन्त्रों में से गुज़रते रहे, मगर आख़िर हताश होकर उन्होंने छोड़ दिया। एक जम्हाई लेकर उन्होंने राजाओं, रानियों और

दरबारियों को तरतीब से एक क़तार में रख दिया। वह उनके लिए परदेसियों का एक झुंड था। उनका अपना पूर्वकालिक व्यक्तित्व उनमें नहीं था।

एक बात मैं छोड़ गया हूँ। हर जिल्द में ख़रीदने वाले का मोनोग्राम बना रहता था। जब एजेंट ने अम्माँ के मन को लुभाया था, तो इस वजह से भी उन्हें वह सेट बहुत क़ीमती जान पड़ा था। मगर अम्माँ के मन में भी फ्रांसीसी दरबार को लेकर सन्देह था कि जाने वहाँ के लोग कैसे-कैसे रहे होंगे। यह चाहते हुए भी कि वे लोग अच्छे ही निकलें, उन्होंने उन किताबों पर अपना मोनोग्राम देना ठीक नहीं समझा। इसलिए उन्होंने एजेंट से पापा का मोनोग्राम देने को कह दिया था। बाद में यह एक दलील बन गई कि वह तो शुरू से ही वह सेट पापा को उपहार में देने के लिए ख़रीद रही थीं। पापा ने इस बात पर एक क्षण के लिए भी विश्वास नहीं किया। मगर सबूत तो सामने था!

"मैं विनी को आज तक नहीं समझ सका," मैंने उन्हें मोनोग्राम पर नज़र गड़ाए मुँह में बड़बड़ाते सुना।

तब उनकी शादी को लगभग पचास साल हो चुके थे।

30. कौर्नवाला प्लॉट

एक दिन पापा, अम्माँ और मैं लाइब्रेरी में बात कर रहे थे, तो डॉक्टर के निर्देशानुसार एक ट्रेंड नर्स अम्माँ का ब्लड-प्रेशर लेने आई। अम्माँ के जीवन में यह नई चीज़ थी। वह डर गईं। उन्होंने पापा की तरफ़ देखा, जैसे कि हर मुसीवत में वह देखती थीं।

''क्लेयर,'' वह अनुरोध के साथ बोलीं, ''तुम भी अपना ब्लड-प्रेशर दिखा लो।''

पापा ने भौंहें सिकोड़कर नर्स को देखा। उन दिनों ब्लड-प्रेशर की चर्चा ज़रूरत से ज़्यादा ही उनके कानों में पड़ रही थी। उनकी सत्तरवीं वर्षगाँठ अभी होकर चुकी थी। उनके बहुत से पुराने मित्र गुज़र चुके थे और अब अकसर ही जब एक या दूसरे के जनाज़े पर वह अपनी उम्र के बचे-खुचे लोगों से मिलते, तो वहाँ 'ब्लड-प्रेशर' के बारे में कुछ फुसफुसाहट उनके कानों में पड़ जाती थी। पापा को गुस्सा इस बात पर आता था कि उस बीमारी से अच्छे तन्दुरुस्त लोग चल बसते थे—ऐसे-ऐसे लोग जिनके बारे में उनका विश्वास होता कि अभी वे कम-से-कम बीस साल और जिएँगे, जैसे कि वह स्वयं। आज शाम को क्लब में बिलियर्ड खेलने के बाद वह एक आदमी से कुछ देर गप करते हैं और अगले हफ्ते अखबार उठाने पर पता चलता है कि वह चलता हुआ।

पापा कहते कि हमेशा की तरह कभी-कभार कोई आदमी मरता रहे, तो कोई बात नहीं। आख़िर हरेक को ही मरना होता है—शायद। मगर आजकल लोगों को जाने क्या हुआ था? हर महीने कोई-न-कोई मर जाता था और मरता भी जॉन एलडरकिल-जैसा कोई पुराना सूखा हुआ अखरोट नहीं, अच्छा-ख़ासा तन्दुरुस्त आदमी चल बसता था। इसकी क्या वजह थी? क्लब में अपने दोस्तों से पूछने पर भी उन्हें इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिलता। वहाँ भी लोग बस ब्लड-प्रेशर की ही बात करके रह जाते थे।

पापा कहते कि उन्हें इन जनाज़ों से नफ़रत होती जा रही है। वहाँ जाकर मन ख़राब ही होता है। जनरल एंडर्सन मुँह बिचकाकर बोले कि जाना उनका फर्ज़ है। ''अगर तुम दूसरों के जनाज़ों में नहीं जाओगे,'' उन्होंने बहुत सर्द ढंग से पापा से कहा, ''तो तुम्हारे जनाज़े में कौन आएगा?'' मगर पापा बोले कि जहाँ तक बन पड़े,

उनका तो मरने का इरादा ही नहीं है, इसलिए उनके जनाज़े में किसी को नहीं आना पड़ेगा।

"कोई मरता है, तो उसे चाहने वाले लोग उसे विदा देने जाते हैं," अम्माँ कहतीं, "मैं किसी के जनाज़े पर जाऊँ, तो मुझे तो यही लगता है। पहले तो तुम जाने से नहीं कतराते थे, क्लेयर!"

"देखो विनी," पापा कहते, "तब मैं छोटा था। मगर अब मुझे उन पादरियों से चिढ़ होती है। जब भी मैं वहाँ जाता हूँ, तो वह अपनी एक किताब निकालकर उसमें से पढ़ने लगते हैं कि आदमी की ज़िन्दगी कुल साठ जमा दस साल की है। मैं सत्तर का हूँ, मगर मेरी सेहत तो वैसी ही है जैसी हमेशा थी। मैं यह साठ जमा दस की बात सुनते-सुनते तंग आ गया हूँ। मेरा तौबा!"

ट्रेंड नर्स पास खड़ी इन्तज़ार कर रही थी। पापा ने ब्लड-प्रेशर के आले को घूरकर देखा और नर्स से बोले कि वह उसे ले जाए। "मुझे नहीं पता यह क्या है," वह बोले, "और न ही मैं जानना चाहता हूँ। मुझे इस ब्लड-प्रेशर से कोई मतलब नहीं है।"

"ब्लड-प्रेशर तो हरएक के होता है, मिस्टर डे!" नर्स बोली।

"कई लोगों के होता है," पापा बोले, "मगर मेरे नहीं है। न ही होगा।"

"आपका ब्लड-प्रेशर ठीक हो तो इस आले से उसका भी पता चल जाएगा।"

अम्माँ बोलीं, "प्लीज़ क्लेयर! जब चीज़ घर पर आ गई है और किसी डॉक्टर को पैसे देकर नहीं दिखाना है, तो दिखा क्यों नहीं देते? मिस बेसेंट का हम पर कितना ख़र्च पड़ रहा है, वह किसी तरह वसूल तो करना चाहिए।"

"फू!" पापा बोले, "तुम्हारी सनक है, तो तुम पूरी कर लो।"

मिस बेसेंट ने उनकी बाँह पर स्ट्रैप बाँध दिया। वह विश्वास के साथ सुर्ख़ चेहरा लिये बैठे रहे। नर्स ने आले को देखा। कुछ ब्लड-प्रेशर नहीं था।

पापा हँस दिए।

नर्स ने आले को फिर देखा तो उसे पता चला कि वह तो चला ही नहीं। उसने उसे फिर से ठीक किया। ब्लड-प्रेशर बहुत ही ऊँचा था।

"फू!" पापा बोले, "इससे क्या होता है? सब बकवास है!"

"नहीं मिस्टर डे," नर्स बोली, "हालत सचमुच ख़तरनाक है।"

पापा का चेहरा कुछ सख़्त हो गया। मज़ाक छोड़कर वह दुविधा और परेशानी के साथ उठ खड़े हुए और दूर चले गए। फिर गुस्से को किसी तरह दबाए हुए बोले कि उन्हें इस बात पर ज़रा भी विश्वास नहीं।

"आपको एकोनाइट लेनी चाहिए मिस्टर डे!" नर्स ने कहा।

"छिः! कभी नहीं," पापा बोले।

वह चाहते थे कि उस बात को भुला दें, मन से निकाल दें। मैंने अपनी ज़ेब से कुछ पक्के एकाउंट्स निकाल लिये, जिनकी मैं उनकी तरफ़ से देखभाल कर रहा था। उन्हें मेरे साथ मिलकर उनकी जाँच करने से चिढ़ थी। फिर भी मैंने कहा, ''पापा, मैं इस बारे में कुछ पूछ लूँ?''

वह आभारपूर्वक डेस्क पर बैठकर एक-एक रक़म को देखने लगे। जब तक यह काम पूरा हुआ, तब तक वह अपने मन की स्लेट स्पंज से साफ़ कर चुके थे।

उनकी अँतड़ियाँ तब कमज़ोर पड़ने लगीं थी। उनकी मशीनरी में कई चीज़ें डॉक्टरों के अनुकूल नहीं रही थीं। दाँत या आँख दिखाने जाने से वह चिढ़ते थे। उनके मेदे को लगातार न जाने कितने ख़ाने का बोझ सहना पड़ता था। मगर यह बोझ ही शायद उस मशीनरी को चालू रखता था। इसीलिए शायद उन्हें भूख भी ख़ूब लगती थी। वह अपनी मशीनरी को सन्देह का अवसर नहीं देते थे—मतलब अपनी शक्ति पर सन्देह था।

अम्माँ का स्वभाव और दृष्टिकोण उससे बिलकुल उलटा था। वह स्वास्थ्य-रक्षा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ा करतीं और स्वास्थ्यकर भोजन किया करतीं। विज्ञापनदाताओं की चेतावनियाँ उन्हें बुरी तरह डराए रखतीं। परन्तु वह और पापा दोनों अच्छी हृष्ट-पुष्ट नस्ल के दीर्घजीवी परिवारों में से थे, इसलिए दोनों ने खूब लम्बी उम्र पाई और अन्त तक चुस्त बने रहे।

अम्माँ बुडलान की सिमेट्री में बहुत-बहुत से फूल लेकर जाया करतीं और किसी मृतात्मा की याद में उन सुन्दर फूलों को कब्र पर चढ़ा दिया करतीं। कुछ दिनों बाद उन्होंने ढले हुए लोहे की एक कुरसी ख़रीदकर वहाँ अपने पारिवारिक प्लॉट में रखवा दी ताकि फूलों को सजाने में ज़्यादा समय लग जाए, तो वह वहाँ विश्राम कर सकें। इससे सुविधा के साथ-साथ परेशानी भी होने लगी क्योंकि इधर-उधर की कब्रों के पास आने वाले कुछ भुलक्कड़ लोग वह कुरसी उधार लेने लगे। वे उस पर बैठकर अफ़सोस करने के लिए उसे घास पर घसीटते हुए उस तरफ़ ले जाते और वापस रखना भूल जाते। अम्माँ को चारों तरफ़ तलाश करके उसे वापस लाना पड़ता जिससे वह क्षुब्ध हो उठतीं, और जिस मूड में वह वहाँ आई होतीं, वह मूड बिगड़ जाता। उन्हें यह बहुत बुरा लगता।

एक इतवार की बात है। अम्माँ तब सत्तर की हो चुकी थीं और पापा अपने ब्लउ-प्रेशर और दूसरी बीमारियों के बावज़ूद अस्सी को पहुँच रहे थे। अम्माँ ने उनसे पूछा कि क्या वह उनके साथ गाड़ी में बुडलान तक चलना चाहेंगे? अम्माँ को किसी के लिए फूल नहीं ले जाने थे, मगर उन्हें अपनी कुरसी का ध्यान आ रहा था हालाँकि यह बात उन्होंने पापा से नहीं कही। पापा से उन्होंने इतना ही कहा कि दिन बहुत अच्छा है और बाहर निकलकर उनकी तबीयत में ताज़गी आ जाएगी।

पापा ने कहा, "नहीं जाएँगे, बिलकुल नहीं।" फिर ज़ोर से मेरी तरफ़ आँख मारकर अम्माँ से बोले, "अब तो जल्दी ही मुझे ख़ुद वहाँ जाना होगा।"

अम्माँ कहने लगीं कि उन्हें ज़रूर चलना चाहिए; एक क़ब्र का सिरहाने का पत्थर बैठ रहा है और वह उनकी राय जानना चाहती हैं कि क्या उसकी मरम्मत कराना ज़रूरी है?

पापा ने पूछा कि वह किसकी क़ब्र के सिरहाने का पत्थर है? अम्माँ ने बताया तो बोले, "बैठता है बैठने दो। मुझे तो उस दोज़ख़ी भीड़ के बीच में दफ़न होना ही नहीं है।"

अम्माँ जानती थीं कि अपने परिवार के कुछ लोगों से उन्हें कितनी चिढ़ है, पर सोचतीं थी कि खेल ख़त्म होने के बाद पापा को इस बात की चिन्ता नहीं रहेगी।

पापा बोले कि ज़रूर रहेगी। इस विषय में सोचते हुए वह इतने भड़क उठे कि कहने लगे सिमेट्री में वह एक नया प्लॉट ख़रीद रहे हैं–सिर्फ़ अपने लिए। "और ख़रीदूँगा भी कोने का प्लॉट।" वह उन्होंने गर्व के साथ घोषणा की, "ताकि वहाँ से मैं बाहर निकल सकूँ।"

अम्माँ चौंक गईं, मगर प्रशंसा-भरी नज़र से उन्हें देखती हुई मेरे कान में फुसफुसाकर बोलीं, "मुझे तो लगता है कि इनके लिए यह भी असम्भव नहीं।"

हिरोशिमा के फूल

एक

हे ईश्वर! पाँच बज भी गए। वक़्त बीतते पता चलता है? लगता है अपने नए किरायेदार के लौटने तक न तो मैं फ़ूयुसुमा (लकड़ी का सरकने वाला पर्दा) लगा सकूँगी, न ही बिस्तर की चादर सी सकूँगी। पर उस भले नवयुवक को मैं निराश नहीं करना चाहती। उसे यहाँ रहकर अच्छा लगा तो तोक्यो में अपने परिचितों से वह हमारी सिफ़ारिश नहीं करेगा? लगता है...लगता है कि हमारे दिन अब फिरने वाले हैं। (बी बुलबुल, अपने पिंजरे में इस ऊँची आवाज़ में न गाओ। डार्लिंग, तुम मेरा ध्यान बँटाकर मुझे पागल बना देती हो।)

पता नहीं...हमारा अमरीकन मेहमान धान वाले तकिये से चिढ़ेगा तो नहीं? बिस्तर ज़मीन के बराबर पाकर नाराज़ तो नहीं होगा? नाराज हो भी, तो गुज़ारा उसे इसी से करना पड़ेगा। अब और देर न करूँ—चादर जल्दी से पूरी कर डालूँ। कपड़ा इसका काफ़ी अच्छा है—पालक-जैसा हरा। ऊपर डिज़ाइन है नारंगी रंग की शाखाओं की। एकदम नए ज़माने का। नहीं तो नारंगी रंग की शाखा भी कहीं होती है? इसी से तो यह इतना नया है, इतना अलग।

कितना अच्छा लगता है फ़र्श पर घुटनों के बल बैठकर इस तरह सीना, जबकि पास अँगीठी पर चाय का पानी बुलबुला रहा हो! मुझे अपने घर से प्यार है—अपने घर के लिए, अपने पति के लिए, अपने गदराये हुए हँसते बच्चों के लिए और अपनी दुबली-सी छोटी बहन के लिए मेहनत करने से प्यार है। अब साथ मुझे एक किरायेदार का भी ख़याल रखना है, इसलिए सूरज निकलने से चाँद निकलने तक मुझे काम करना होगा। इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती है!

पर छोटी बहन ने तो यह अमोल मेहमान हाथ से गँवा ही दिया था। अब यह क्या हो रहा है, बी बुलबुल? अभी तो तुम्हें सलाद का पत्ता दिया है। उसे पिंजरे से बाहर गिरा दिया? बुरी बात है, बी रानी! ठहरो, अभी उठाकर देती हूँ। अच्छा ही है जो मेरे पैर इतने हल्के हैं। दिन में सौ-सौ बार उचककर खड़ी होती हूँ, और घुटनों के बल बैठती हूँ। फिर खड़ी होती हूँ, फिर बैठती हूँ। लो, यह रहा तुम्हारा पत्ता। अब तो मुझे शान्ति से सीने दोगी?

मैं क्या सोच रही थी? हाँ, अपने अमरीकन मेहमान और ओहात्सू के बारे में। मैं और छोटी बहन बाहर बाँस के फाटक के पास खड़ी बातें कर रही हैं और भूरे बिखरे बालों वाला यह लम्बा लड़का हमारे पास रुककर हमसे रास्ता पूछता है। पुरानी जीन्ज़ और फीके नीले रंग की रुई की जरसी पहने है। उसकी आँखें अच्छी लगती हैं। जरसी जैसे ही हल्के रंग की। आवाज़ भी अच्छी है। अधिकांश विदेशियों की तरह चिल्लाकर नहीं बोलता। उलटे छोटी बहन उससे रूखे ढंग से पेश आती है।

''जी आपका जूता इस टिड्डे के बिलकुल पैरों पर है।''

साथ वह मुस्करा देती है, यही खुशी की बात है। गुस्से में काँपती हुई (ओहात्सू पश्चिम के लोगों से नफ़रत करती है) वह ज़्यादा ही खिलकर मुस्कराती है, और हरे कीड़े को झपटकर घर के अन्दर भाग जाती है। बहन अपने गुस्से पर क़ाबू न पा सकी, इसका रंज मिटाने के लिए ही जैसे मैं विदेशी युवक की सहायता करने बढ़ आती हूँ।

''जी, शायद मैं आपको रास्ता बता सकूँ।''

पर उसकी आँखें केवल ओहात्सू पर टिकी हैं। वह ताड़ की तरह लम्बा तो है ही, गरदन भी उसकी जिराफ़-जैसी है, जो कहना होगा कि उस समय काफ़ी काम आती है। सुन्दर ओहात्सू बाग़ का छोटा-सा टुकड़ा पार करने के लिए अपने उड़ते लम्बे किमोनो में दौड़ी जा रही है, और वह अपनी लम्बी गरदन फैलाए उसे ताक रहा है।

''आप छोटी बहन की बात का बुरा न मानें। उसे...उसे टिड्डों से बहुत प्यार है।''

बात सुनने में सच नहीं लगती। मतलब, बिलकुल अटपटी जान पड़ती है। पर एक अजनबी को, ख़ासतौर से एक अमरीकन को, मैं कैसे बताऊँ कि ओहात्सू को हर ज़िन्दा चीज़ से—जिसमें कि ट्रिडडे भी शामिल हैं—क्यों इतना प्यार है?

''अरे! वह सुन्दर लड़की आपकी बहन है? बहुत ही सुन्दर लड़की है।'' विदेशी ऊँची आवाज़ में कहता है।

साथ ही उसके गाल लाल हो उठते हैं—निःसन्देह, उसे लगता है उसने कुछ बुरी बात कह दी है। मैं हँस पड़ती हूँ, तो उसे आश्चर्य होता है। पर सारी घटना इतनी हास्यपूर्ण है—पैर पटकता हरा टिड्डा, शरमाता विदेशी, गुस्से से बेकाबू ओहात्सू—पर शिष्टाचार का ध्यान आ जाने से मैं मुँह पर हाथ रखकर तुरन्त ही अपने को सँभाल लेती हूँ।

''देखिए, मैं अपना सूटकेस न्यू हिरोशिमा होटल में डाल आया था, पर कम्बख़्ती की मार कि अब वहाँ का रास्ता ही मुझे नहीं मिल रहा'', विदेशी खुलकर बात करता है। ''होली टोलेडो! लोग जापान में कोई भी जगह कैसे ढूँढ़ लेते हैं?''

मैं फिर बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी दबाती हूँ। सच क़ुदरत ने मुझे बनाया था हँसने के लिए ही। गोल चेहरा, ऊपर को उठता मुँह और गालों में पड़ते दो गड्ढे। मुझे कोई चीज़ हँसा सकती है—जैसे यह 'होली ओलेडो' (इसका मतलब क्या होगा?) और विदेशियों का हमारे देश में आकर गुम हो जाना, जहाँ न गलियों के कोई नाम हैं, न घरों के नम्बर। वह विदेशी युवक भी मज़ा लेता जान पड़ता है।

"तोक्यो में मैंने काम करने में उतना वक़्त नहीं बिताया जितना पते ढूँढने में।" वह खुलकर मुस्कराता है। साथ ही फिर से शरमा जाता है—शायद मेरे देश की आलोचना करने के कारण। ऐसा डील-डौल, फिर भी अन्दर से वह कितना कोमल होगा—उसका दिल कितने महीन रेशों से बुना होगा! मैं जल्दी से उसे तसल्ली देना चाहती हूँ।

"मैं भी तोक्यो गई हूँ। मैं आपका मतलब समझ सकती हूँ।"

"समझ सकती हैं न? तो बताइए वहाँ जगह ढूँढने का क्या तरीका है?

(अरे-रे-रे! चाय के पानी, तुम्हें भी अभी उबलना था? मुझे सोचने में इतना मज़ा आता है! एक-एक शब्द, एक-एक पग, पूरे दिन की बातों को मन-ही-मन दोहराने में। बीच में किसी तरह की बाधा मुझे पसन्द नहीं। लो, अब तो सुलगते कोयलों पर से तुम्हें उठा लिया न? फिर भी अभी केतली के पेट में बड़बड़ाये जा रहे हो? तुम्हारी बदतमीज़ टोंटी मेरे हाथों पर जलता पानी डाल रही है? मेहरबानी करके मुझे अब उसकी चादर सी लेने दो!)

पर मेरे विचारों का सिलसिला टूट गया। अच्छा, हटाओ। संक्षेप में यह कि विदेशी युवक अपना रिज़र्व कमरा छोड़कर हमारे यहाँ चले आने का फ़ैसला कर लेता है। (मैंने हल्के-से उसे बता दिया है कि हमारे पास एक कमरा ख़ाली है।) अब येन की आमदनी के ख़याल से मेरा मन बहुत हल्का हो रहा है, और मेरा फिर हँसने को जी चाह रहा है। हम मज़े से बात करते खड़े हैं, और कुछ ही देर में मैं उस नवयुवक के बारे में सब-कुछ जान जाती हूँ। वह सीटल की एक जहाज़-कम्पनी की तरफ़ से जापान में व्यावसायिक दौरे पर आया है। उसका सौतेला बाप जहाज़-कम्पनी का हिस्सेदार है। इसी से इतनी छोटी उम्र में सैम-सान तिकड़म से इस दौरे पर चला आया है। कितने सालों से वह जापान आने के सपने देखता रहा है।

"कभी एक जापानी लड़की से मेरा परिचय था—वहाँ सीटल में।" वह मुझे अपने दिल की बात बताने लगता है। "मेरा असली घर सीटल में है। वह लड़की—तोशो हमादा हमारे हाई स्कूल की सबसे सुन्दर लड़की थी।"

बात करते हुए उसकी आँखें 'शोजी' से नहीं हटतीं, जिसके पीछे जाकर ओहात्सू ग़ायब हो गई है। मैं दो और दो जोड़ती हूँ। ओहात्सू, तोशो हमादा! तो यह वजह है जो सुन्दर न्यू हिरोशिमा होटल छोड़कर यहाँ चला आना चाहता है।

'वह लड़की, जिसकी मैं बात कर रहा था, उसे मैं ज़्यादा अच्छी तरह नहीं जानता था। मगर उफ़! मुझे तोशो हमादा हमेशा याद रहेगी। मैं बिलकुल बच्चा था, फिर भी मुझे लगता है मैं उससे प्यार करता था। यहाँ तक कि मैं उस पर कविता लिखा करता था।' वह अपने ख़ास अन्दाज़ में मुस्कराता है। 'तोक्यो में मैंने बहुत ढूँढा, पर वहाँ वह मुझे नज़र नहीं आई। मेरा मतलब है तोक्यो की लड़कियाँ अपनी तरह से ख़ूबसूरत हैं, मगर...।' अमरीकन युवक हमारे शान्त बाग़ की तरफ़ देखता है जिसमें चेरी का एक पेड़ और अलसाया-सा एक तालाब है। शायद वह सोच रहा है कि तोशो हमादा का बाग़ भी ऐसा ही लगता होगा। ''सच, यहाँ आपके पास रहने में बहुत मज़ा आएगा,'' वह कहता है।

मैं मुस्कराती हूँ। मेरा हाथ बाल ठीक करने के लिए ऊपर उठता है, पर साथ ही दिल धक् से रह जाता है। किमोनो की बाँह ऊपर उठ जाने से पल-भर के लिए मेरी कलाई उघड़ आती है। उफ़! कहीं मेरे दाग़ तो उसने नहीं देख लिये? खुशक़िस्मती से तभी कोई मेरा नाम लेकर पुकार लेता है।

''युका! युका-सान!''

''जी, माफ़ कीजिएगा।''

''देखो मेरा नाम सैम है। सैम विलोबी। पर यह बोलने में मुश्किल पड़ता है... इसलिए सिर्फ़ सैम।''

''जी, शुक्रिया! अब मुझे ज़रा जाना होगा।''

गली के निचले हिस्से से बूढ़ी मिसेज़ नाकानो अब भी मुझे आवाज़ दे रही है। मैं और विदेशी युवक दोनों इस तरफ़ देखते हैं। अरे! मैं नाकानो-सान को अचानक उसकी नज़र से देखने लगती हूँ। मैं नाकानो-सान और उसके झोंपड़े में रहने वाली दूसरी बुढ़िया से प्यार करती हूँ। पर एक पश्चिम के व्यक्ति की नज़र से उन्हें देखते हुए मुझे लगता है कि वे कितनी गँदली, कितनी घुन खाई हैं! उनकी हालत दर्दनाक नज़र आती है—हिरोशिमा-विस्फोट से ज़िन्दा बचे सभी लोगों की तरह।

''मैं अपने इन दोनों पड़ोसियों को रोज़ इस वक़्त शौचालय में ले जाती हूँ—मतलब खुले मैदान में।'' मैं अमरीकन नवयुवक से कहती हूँ। वह दूसरी तरफ़ देखने लगता है। (विदेशियों के तौर-तरीक़े कितने अजीब होते हैं!)

''देखो...।'' वह कहते-कहते रुक जाता है, क्योंकि ओहात्सू जैसे पंख फड़फड़ाती हमारे रूमाल जैसे बाग़ में चली आई है। धीरे से वह चेरी के पेड़ के नीचे बेंच पर बैठ जाती है। ''तो मैं भागकर अपना बेग उठा लाऊँ?'' विदेशी युवक ऊँची आवाज़ में कहता है। ''पाँच बजे तक लौट आऊँ, ठीक है?''

''किसी भी वक़्त आ जाओ।''

''युका! युका!'' नाकानो-सान चिल्लाती है।

"तो मैं अब भागूँ। पाँच बजे यहाँ सब-कुछ तैयार रहेगा। मैं फ्यूसुमा लगवा रखूँगी, और..."

"फ्यूसुमा?"

न, मैं अपने अनमोल मेहमान को नहीं बताऊँगी कि हमारे पास केवल दो छोटे-छोटे कमरे हैं जिनमें से एक में सरकने वाले तख़्ते लगाकर मुझे उसके दो हिस्से करने हैं। कितनी ही चीज़ें हैं जो मैं अपने विदेशी मेहमान को नहीं बताना चाहती—कि कहीं ऐसा न हो कि जो वह और किरायेदारों को हमारे यहाँ भेजे ही नहीं। हमें कितनी ज़रूरत है किरायेदारों की! चाहे जितनी भी होशियारी या चालाकी बरतनी पड़े—मैं उसे पता नहीं चलने दूँगी कि वह कैसे घर में रहने आया है।

आख़िर, अपने लम्बे किमोनो में जितनी जल्दी चला जा सकता है, मैं वहाँ से चल पड़ती हूँ। ध्यान रखती हूँ कि गली में जगह-जगह पड़े गहरे गड्ढों में किसी एक में पाँव न पड़ जाए। गली ऐसी तंग और चक्करदार है जैसे एक चबाया हुआ तार हो। सोचती हूँ क्या विदेशी नवयुवक को इस पिछवाड़े की गली में रहना स्वाभाविक लगेगा—तोशो हमादा के बावज़ूद? बच्चों के चीख़ने-चिल्लाने से उसके कान तो नहीं फट जाएँगे? साथ एक गले-सड़े घर से दूसरे घर में आवाज़ लगाती उनकी माँओं के शोर से? फिर यहाँ कई तरह की बू भी तो है—जहाँ-तहाँ बिखरा थूक और पंजों से नोचती बिल्लियाँ। सड़ी मछली के एक ढेर से ठोकर खाकर मैं धचपच पानी में गिरते-गिरते बचती हूँ और किसी तरह नाकानो-सान और बूढ़ी तामुरा-सान के पास जा पहुँचती हूँ। वह मेरी बाँहें पकड़ लेती है और हम तीनों ख़ाली मैदान की तरफ़ चल देती हैं।

मैं घूमकर देखती हूँ। अमरीकन युवक हैरान होकर अधमीची आँखों से हमें ताक रहा है। ध्यान उसका मेरी दोनों मित्रों के सिर की तरफ़ है। मुझे हैरानी नहीं होती, क्योंकि नाकानो-सान और तामुरा-सान के सिर पर एक भी बाल नहीं है—कहने को भी नहीं। उन दोनों की ठंडी-बूढ़ी बाँहों को अपने गरम शरीर से सटाए (सच मुझे दोनों से कितना प्यार है!) मैं उस युवक की तरफ़ मुस्कराकर देखती हूँ। फिर हम तीनों पैर मारती गली की नुक्कड़ में घूम जाती हैं।

चलो, यह आख़िरी तोपा भी लग गया। अब तुम्हें किस चीज़ की मार पड़ गई बी-बुलबुल? ज़ीरे का दाना चाहिए? ठहरो अभी देती हूँ। बाहर पैरों की आहट सुनाई दे रही है—कोई विश्वास से लम्बे डग भरता आ रहा है। पश्चिमी ढंग से। यह आवाज़ जापानी 'गेता' की हल्की खट्खट् की तरह नहीं है। मेरा किरायेदार आ गया है। बी-बुलबुल, जल्दी से अपना ज़ीरे का दाना निगल लो डार्लिंग! तकल्लुफ़ में पड़ने की ज़रूरत नहीं। अरे! अभी फ्यूसुमा तो मैंने लगाया ही नहीं।

दो

''छोटी बहन, यह अमरीकन नवयुवक कुछ दिन हमारे यहाँ रहेगा।'' मैंने इन शब्दों में ओहात्सू को सूचना दी, तो वह भड़क उठी, हालाँकि कहा उसने कुछ नहीं। छोटी होने के नाते कुछ कहने का उसे अधिकार ही नहीं था। पर ग़ुस्सैल बच्चों की तरह उसके गाल ग़ुब्बारों-जैसे फूल गए और मेरी बात सुनते हुए वह सारा वक़्त अपनी साँस वहीं रोके रही। (बाहर निकालने से तो यह अच्छा ही है न?—ख़ासतौर से जब कि सख़्त बातें ही मुँह से निकलनी हों?)

''देखो तुम उससे अच्छी तरह पेश आओगी, समझीं?'' मैं कहती रही। ''उसे यहाँ अच्छा लगा तो हो सकता है और भी विदेशियों से हमारी सिफ़ारिश करे। रात के खाने के बाद तुम उसे बाग़ में ले जाकर उसका दिल बहलाना। समझीं?''

''दीदी, मुझे यह हैरो-सान अच्छे नहीं लगते।''

''तुम्हें इस बेहूदा ढंग से उसका ज़िक्र नहीं करना चाहिए,'' मैं उसे झिड़क देती हूँ। पर साथ ही मेरे मुँह पर मुस्कराहट आ जाती है, क्योंकि मैं भी हमेशा मन में अमरीकनों को हैरो-सान ही कहती हूँ। यों यह एक बेहूदा शब्द है—युद्ध के साथ आए सभी शब्दों की तरह। अमरीकन हर वक़्त 'हैलो-हैलो' करते रहते हैं, इसी से उन्हें हैलो-सान या हैरो-सान (क्योंकि ल का उच्चारण यहाँ हम नहीं कर पाते) कहने लगना, कहाँ तक उचित है? ''तुम्हें वे लोग अच्छे लगते हों या न लगते हों। पर तुम्हें इस आदमी से अच्छा सलूक करना है,'' मैं डाँटकर कहती हूँ।

''वह मैं करूँगी बड़ी बहन,'' ओहात्सू कहती है। मेरी आँखों में शरम से आँसू आ जाते हैं। ओहात्सू जानती है कि मैं उसकी सुन्दरता चारे के तौर पर इस्तेमाल कर रही हूँ। हम दोनों में इतना स्नेह न होता तो शायद वह इस वजह से मुझसे घृणा करने लगती।

ख़ैर वह अप्रीतिकर क्षण निकल गया—और अब मैं ख़ामोशी से फ़र्श पर बैठी सिलाई कर रही हूँ। बाहर बाग़ की बेंच पर ओहात्सू किरायेदार से बातें कर रही है। रात गहरी हो चली है, पर हमारी पत्थर की लालटेन की हल्की रोशनी उनके चेहरों पर पड़ रही है। पास लकड़ी की मेज़ पर मेरी साके की झारी रखी है। ओहात्सू बहुत कोमलता से सैम-सान का प्याला भर देती है।

"दो ज़ो।"

हर बार जब वह उसका प्याला भरती है तो साथ अपनी पतली कमर झुकाकर फुसफुसाती है। "कृपया।" छोटी बहन की आवाज़ वैसी ही रेशमी है जैसे बेंत के पिंजरे में सोती मेरी इस बुलबुल की साँस। 'शोजी' की एक दरार में से मैं अपने मेहमान को खुशी से उसे ताकते देख सकती हूँ। सच 'शोजी' कितनी अच्छी चीज़ है—खुलने-बन्द होने में ज़रा आवाज़ नहीं करती। इससे कितनी मदद मिलती है! सैन-सान उसाँस भरता है।

"आप उसाँस क्यों भर रहे हैं?" ओहात्सू चिन्तित स्वर में पूछती है। और मैं सोचती हूँ कि कहीं युवक हैरो-सान उसके उच्चारण पर हँसेगा तो नहीं।

"मैंने उसाँस भरी है? हाँ-आँ.... वह मन के सन्तोष के कारण," मेहमान कहता है। उसकी आवाज़ अच्छी है—स्पष्ट और भरी-भरी, जिससे उसके पूरे स्वभाव पर प्रकाश पड़ता है। "तुम्हें पता है मुझे यहाँ से जाना—जापान से जाना—अब अच्छा नहीं लगेगा?" वह उससे कहता है।

"ऐसा क्यों? जापान अमरीका से ज़्यादा अच्छा है? सुन्दर लगता है?"

"अमरीका से ज़्यादा अच्छा?" मेहमान की भूरी भौंहें ऊपर उठ जाती हैं। "तुम मज़ाक कर रही हो? बात यह है कि वहाँ अमरीका में मेरी ज़िन्दगी का एक साँचा-सा बन गया है। मुझे वह साँचा बहुत नागवार लगता है।"

मेहमान ख़ामोश हो जाता है। एकाएक उसके मुँह पर आए तनाव को देखकर मुझे आश्चर्य होता है। उसके चिकने माथे और सपने में डूबी बड़ी-बड़ी आँखों से यह भाव मेल नहीं खाता। वह आगे बात करता है तो उसकी आवाज़ में एक चुभन महसूस होती है।

"यह जो जहाज़-कम्पनी की नौकरी है न—मैं अपने लिए ऐसी नौकरी नहीं चाहता था। दरअसल मेरे सौतले पिता ने किसी तरह मुझे राज़ी कर लिया। मेरे अपने पिता सीटल के पास देहात में डॉक्टरी करते थे।"

"जहाज़-कम्पनी में बहुत मेहनत करनी पड़ती? शाम को अरुबीत करना पड़ता?"

"अरुबीत? मतलब शाम को दूसरा काम? जैसे यहाँ जापान में हम लोग करते हैं। यह जर्मन शब्द से निकला शब्द है।"

"अरे नहीं।" सैम-सान हँसता है। "रोज़ की चक्की पीसने के बाद दूसरा काम नहीं करना पड़ता।"

"तो शाम को पढ़ने जाते हैं?" ओहात्सू पूछती है।

"तुम्हारी क़सम, बिलकुल नहीं।" अमरीकन युवक को इस बात से ख़ासा धक्का लगता है। "मैं उस वक़्त मन-बहलाव के लिए निकल जाता हूँ। अगर अच्छी शाम हो तो हम कुछ लोग एक कार लेकर ड्राइव पर निकल पड़ते हैं।"

''कहाँ जाने के लिए?''

''जाने के लिए? जाने के लिए कहीं नहीं। बस जिधर मन आया उधर गाड़ी घुमा ली। कभी सिनेमा देख लिया या दो बियर पी लीं। कभी जाकर किसी लड़की को साथ ले आए...।''

'शोजी' की दरार से मुझे ओहात्सू का भौंचक्का चेहरा नज़र आता है। वह क्या, मैं खुद भौंचक्की हो रही हूँ। हैरो-सान ने भी ज़रूर यह भाँप लिया होगा, क्योंकि वह उसे यह बताना छोड़ देता है कि पच्छिम के लोग किस तरह अपना मन-बहलाव करते हैं। वह ओहात्सू से पूछता है कि वह अपनी शाम कैसे बिताती है। वह उसे बताती है कि वह एक नौकरी करती है टेलीफ़ोन ऑपरेटर की—जिसमें उसकी ज़्यादातर शामें चली जाती हैं। इस बार हैरो-सान भौंचक्का हो उठता है।

''तुम तो इतनी दुबली हो कि पता नहीं साँस कैसे लेती हो! तुमसे रात की ड्यूटी कैसे दी जाती है?'' उसकी आँखें ओहात्सू के चेहरे पर टिक जाती हैं। ''तुम्हें एक बात बताऊँ? हाथों में पैन्ज़ी के सफ़ेद फूल लिये, इस सफ़ेद किमोनो में तुम बिलकुल एक छोटी-सी रूह की तरह नज़र आती हो।''

''रूह की तरह?'' ओहात्सू अपने हाथ के फूलों को देखती है जो उसने अभी-अभी बाग़ से तोड़े हैं। (तक़दीर की मार! छोटी बहन रूह का या किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र बर्दाश्त नहीं कर सकती, जिसका सम्बन्ध मौत से हो) ''इससे आपका क्या मतलब है?'' वह काँपती आवाज़ में पूछती है।

''यही कि तुम इतनी दुबली और पीली-सी हो कि लगता है एक रूह की तरह आसमान की रहने वाली हो।'' मेहमान के इस तरह व्याख्या करने से ओहात्सू के चेहरे पर आई मुस्कराहट की चमक सितारों की रोशनी में साफ़ दिखाई देती है। (उसके लुभावने ढंग से मुस्कराने का मतलब है कि मन में उसे इस नवयुवक से बहुत-बहुत नफ़रत है) हैरो-सान उसकी नफ़रत को मैत्री का भाव समझ बैठता है। वह बेंच पर उसके नज़दीक सरक जाता है।

''सच कहता हूँ ओहात्सू-सान,'' वह कुछ रंगीनी के साथ कहता है। ''तुम्हारा नाम बहुत ही प्यारा है। जापान में क्या बहुत-सी लड़कियों का नाम ओहात्सू होता है?''

ओहात्सू उसे अपने नाम की पौराणिक जापानी लड़की असली ओहात्सू के विषय में बताने लगती है, जिसने प्यार की रूमानियत में आत्म-हत्या कर ली थी। अपनी इस प्रतिष्ठा के कारण ही सदियों से उसका सम्मान किया जाता है।

''प्यार में अपनी जान ही दे दी? यह जापान में ही हो सकता है।'' हैरो-सान कह उठता है। ''अच्छा बताओ ओहात्सू, तुम भी ऐसा कर सकती हो? प्यार में अपनी जान दे सकती हो?''

"ज़रूर-ज़रूर दे सकती हूँ।" छोटी बहन आवेश के साथ कहती है।

अरे रे! मैं 'शोजी' की दरार से माथा सटाकर ओहात्सू के चमकते चेहरे को देखती हूँ। इसे हुआ क्या है? लगता है इस लड़की पर किसी के प्यार का जादू चल चुका है। नहीं, नहीं, यह उस जादू के लिए सिर्फ़ तैयार है, बस। किसी के प्रति समर्पित होने को वैसे ही उत्सुक जैसे कि पका आलूचा सितम्बर की सुबह को डाल से तोड़े जाने के लिए। मेरी साँस रुकी रहती है—ख़तरे के एहसास से, और साथ ही खुशी से।

पर हैरो-सान को यही लगता है कि वह उसे लुभाना चाह रही है। वह अपनी एक उँगली फैलाकर ओहात्सू के हाथ के गुलदस्ते में से एक सफ़ेद पैन्जी की ठोड़ी हल्के से ऊपर उठा देता है। फूल के भावपूर्ण चेहरे को गहरी आँखों से देखते हुए धीमे स्वर में पूछता है, "ओहात्सू-सान, ये फूल तुम मुझे दे सकती हो...यादगार के तौर पर?"

कैसी ग़लती कर दी इसने! छोटी बहन इस तरह संत्रस्त आँखों से उसकी तरफ़ देखती है जैसे कि उसने पैन्ज़ी की पंखुड़ी को न सहलाकर उसके अपने कोमल दिल को ही उँगली से मसल दिया हो। गुच्छे परे हटाकर वह अपनी छाती से लगा लेती है, फिर अचानक खड़ी होकर (साथ ही मैं भी उठ खड़ी होती हूँ) तेज़ी से घर की तरफ़ भाग आती है और अँधेरे में मुझसे टकरा जाती है।

"ओहात्सू!"

"मुझसे कुछ मत कहो, बड़ी बहन!" वह रुआँसी हो रही है।

दौड़ती हुई जाकर वह दीवार के आले से अपना बिस्तर खींचती है और उसे फ़र्श पर पटककर सुबकती हुई अपने कम्बल में जा छिपती है। आंट मात्सुई कहा करती है कि जब और कुछ समझ में न आए तो आदमी को और साके निकाल लेनी चाहिए। उस चतुर महिला का ख़याल है कि साके ने अनन्त स्थितियों को बिगड़ने से बचाया है और आगे भी रहते समय तक बचाती रहेगी।

मैं गरम पानी में से साके की नई झारी निकालकर बाग़ में आ जाती हूँ। उसे मेज़ पर रखकर (उँगलियाँ जल जाने के बावज़ूद मुस्कराते हुए) मैं धीमे और कोमल स्वर में ऐसे ही कोई बात करने लगती हूँ। आंट मात्सुई ने मुझे सिखाया है कि सम्भ्रांत अतिथियों, विशेषतया पुरुषों के साथ ऐसा ही करना चाहिए।

"सितारों की रोशनी में झींगुरों की आवाज़ बहुत प्यारी लगती है।"

"देखो, युका-सान, तुम्हारी बहन क्या मुझसे नाराज़ हो गई है?"

उस वक़्त हैरो-सान के लिए झींगुरों की आवाज़ और सिलाई की मशीनों की घर्र-घर्र में कोई फ़र्क़ नहीं। न ही सितारों की रोशनी और निआन की बत्तियों की चमक में। लगता है एक बहुत नाजुक स्थिति मुझे सँभालनी है। इतनी मुश्किल से मिला किरायेदार आँख झपकते जा भी सकता है। जब मेरा कोई बच्चा कुनमुनाने

लगता है तो मैं उसके मुँह में लालीपॉप दे देती हूँ। उसी तरह इस वक़्त मैं हैरो-सान के मज़बूत हाथों में साके का प्याला पकड़ा देती हूँ। वह पीने लगता है क्योंकि कुछ भी हाथ में दे देने पर आदमी अनजाने ही उसे पीने लगता है। मैं झट से उसका प्याला फिर भर देती हूँ।

"छोटी बहन को ज़रा-ज़रा-सी बात चुभ जाती है। आप उसका ख़याल न करें," मैं कहती हूँ।

"ख़याल न करूँ? मुझे बिलकुल उसकी किसी बात का ख़याल नहीं।" हैरो-सान सिर हिलाता है। "पर शैतान का क़हर! मुझे लगता है मैंने किसी बात से उस नाराज़ कर दिया है। मैंने उसके हाथ के गुलदस्ते को छुआ ही था कि..."

वह बात को मन में दोहरा रहा है और उसके माथे पर एक सलवट पड़ गई है।

"नहीं, नहीं, आप ख़ामख़ाह परेशान न हों।" मैं उसकी बात काट देती हूँ। मन इस डर से बर्फ़ हो रहा है कि वह कहीं ओहात्सू के गुच्छे के बारे में न पूछ ले! "ओहात्सू को नींद आ रही थी बस, इतनी ही बात थी। ऐसा है कि जापान में हर एक को सुबह बहुत जल्दी उठना पड़ता है। क्योंकि हमें एक ही जगह दो-दो काम करने होते हैं जिससे...।" (अरे रे! मेरे मुँह से निकला जा रहा था 'जिससे हम रोटी खा सकें।...जिससे ठीक से गुज़ारा कर सकें।' मैं ढंग से कह देती हूँ।)

"मुझे पता है," हैरो-सान हँसता है। अरुबीत। यह मेरी ख़ुशक़िस्मती है कि तुम लोगों को दूसरे काम की ज़रूरत पड़ती है। नहीं तो मुझे कभी यहाँ जगह न दी जाती। मुझे खुशी है कि ऐसा है, वरना इस वक़्त मैं आडम्बर-भरे पश्चिमी होटल में टूरिस्टों की किसी टोली के साथ बैठा होता। मैं उस सबके लिए जापान नहीं आया—मेरी दिलचस्पी यहाँ के लोगों में है। अच्छा व्यापारी हूँ न मैं!" सैम-सान हँसता है, पर उसके चेहरे पर तनाव की रेखाएँ फिर झलक जाती हैं।

वह हाथ के साके के प्याले को लगातार घुमाता हुआ उसमें देखता रहता है। चावल की पीली शराब छलक-छलक पड़ती है। प्याले के तले पर बने चमकते पैगोड़ा को देखता हुआ वह जाने क्या सोच रहा है।

"मेरे पिता दिन में चौबीस घंटे अपने मरीज़ों को देखने के लिए देहात में चक्कर काटते रहते थे हालाँकि उनमें से आधे उनकी फ़ीस भी नहीं दे पाते थे। उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उनकी दिलचस्पी थी सिर्फ़ लोगों में। मेरा ख़याल है इसीलिए डॉक्टर का पेशा उन्हें पसन्द था।"

"तुमने कभी डॉक्टर बनने की नहीं सोची?

"ख़याल यही था। मेडिकल स्कूल में दो साल पढ़ा भी। पर तभी डैडी की मौत हो गई और...मेरा ख़याल है बहुत-से मरीज़ों ने उनके पैसे नहीं दिए थे। मेरी माँ ने दूसरी शादी कर ली तो सौतेले पिता ने मुझसे कहा कि मैं उनकी जहाज़-कम्पनी में यह

डेस्क का काम कर लूँ। वैसे ठीक ही है। पर कभी-कभी लगता है कि पढ़ाई पूरी कर लेता तो अच्छा रहता। डैडी की तरह शायद मुझे भी डॉक्टर ही बनना चाहिए था।"

सैम-सान के माथे पर सलवटें गहरी हो जाती हैं, पर तभी वह हँस देता है।

इस नौकरी की एक अच्छी बात यह है कि इसकी वजह से जापान चला आया। अपने ईंधन से आना होता तो पचास की उम्र से पहले यहाँ न पहुँचता। जापान मेरे लिए सही जगह है, वैसी ही जैसी मैं सोचता था—बल्कि उससे कुछ ज़्यादा ही।

फीकी-नीली जीन्स में अपनी लम्बी टाँगें फैलाकर वह बेंच की पीठ से टेक लगा लेता है। उसकी नज़र हमारे घर की परों-जैसी छत से होती हुई ओहात्सू की सफ़ेद पैन्जी की क्यारी पर आ टिकती है। फिर अँधेरे में चमकती—हमारे पुरखों के ज़माने की पत्थर की लालटेन की तरफ़ चली आती है।

"हाँ बिलकुल वही सब-कुछ है यह।" वह धीमे स्वर में कहता है। "यह तालाब। यह चेरी का पेड़। सब-कुछ जैसा होना चाहिए। यह बात मैं अपने ज़हन में बिठा ही नहीं पाता कि यही वह जगह है जहाँ चौदह साल पहले एटम-बम गिरा था। और फिर यह कि उस समय तुम और ओहात्सू यहीं पर थीं। तुम दोनों ख़ुशक़िस्मत रहीं। क्यों?"

"सचमुच," मैं कहती हूँ। हम बहुत ही खुशक़िस्मत रहीं।"

सैम-सान कुछ चौंककर मुझे देखता है। क्या मेरी आवाज़ में उसे कोई अखरने वाली ध्वनि सुनाई दे गई है? पर मैं ठीक से शिक्षित हूँ। मेरे चेहरे के नक्श मुस्करा रहे हैं। मैं उसकी तरफ़ झुकती हूँ और सितारों की रोशनी में हैरो-सान जो देख पाता है वह एक ख़ुशक़िस्मत लड़की का चेहरा ही है।

तीन

पके भात के ढेर पर तिरछी, एक-दूसरी के ऊपर रखी छोटी-छोटी मछलियाँ कितनी सुन्दर लगती हैं! मैं अपने पति के लिए लंच का डब्बा लेकर आई हूँ और वार्निश किया ढक्कन हटाकर यहाँ बैठी खाना रखने के सुरुचिपूर्ण ढंग को प्रशंसा-भरी आँखों से देख रही हूँ। जब तक फ़्यूमियो अपने बॉस से बातचीत समाप्त नहीं कर लेता, मुझे इसी तरह बैठे रहना है। (कार्यालय के शीशे की खिड़की से मैं उन दोनों को खड़े-खड़े बात करते देख सकती हूँ।) फूस की चटाई के टुकड़े पर घुटनों के बल बैठी मैं प्रतीक्षा करती रहूँगी, चाहे कितनी भी देर लगे। सहसा मुझे लगता है कि मैंने फ़्यूमियो के साथ रहकर उतना समय नहीं बिताया जितना उसकी प्रतीक्षा में। पर यह भाग्य केवल मेरा ही नहीं। युद्ध और युद्ध के बाद की नस्ल में लाखों-करोड़ों युवा जापानी पत्नियों का यही भाग्य है।

गराज में बैठे हुए सिर चकराने लगता है। यहाँ के शोर, यहाँ की गन्ध, और यहाँ की ठंडक के मारे। पर आँखें मूँदकर मैं अपनी दुनिया में फिसल जाती हूँ—जहाँ कि उसाँस और मुस्कराहट साथ-साथ अठखेलियाँ करती हैं। आस-पास के वातावरण को भूलकर, ज़रूरत पड़ने पर मैं घंटों इन्तज़ार कर सकती हूँ। मेरे ईश्वर! फ़्यूमियो को जब फ़ौज में ले लिया गया था तब क्या कभी-कभी मैं पूरा दिन इन्तज़ार नहीं करती थी? जब वह बैरकों में था, तो हर इतवार को हमें हिरोशिमा रेलवे स्टेशन पर मिलने की इजाज़त दी जाती थी। और भी बीसियों—बल्कि सैकड़ों—पति-पत्नी इसी तरह वहाँ मिलते थे। मुझे याद है...

"नाकामुरा-सान, तुम्हें अख़बार पढ़ने को ला दूँ?"

यह हेड-मेकेनिक है जो हमेशा इसी तरह मुझसे आदर से बात करता है। मैं नीचे तक झुककर कोमाको-सान से कहती हूँ कि उसे परेशान होने की ज़रूरत नहीं। हाँ, तो मैं क्या सोच रही थी? चाहती हूँ उसने बीच में बाधा न डाली होती। अरे हाँ, मैं सोच रही थी रेलवे स्टेशन की बात, कि फ़्यूमियो को बड़े-बड़े फ़ौजी बूट पहने देखकर मुझे कितना अफ़सोस होता था। बूट इतने बड़े थे कि उसके दोनों पैर एक ही में आ सकते थे। तुरन्त एक आँसू मेरी आँख में भर जाता। पर तभी मेरी हँसी फट पड़ती,

क्योंकि मेरा स्वभाव ऐसा ही है। मैं पूछती कि उसे बूट का दूसरा जोड़ा क्यों नहीं मिल सकता, तो फ़्यूमियो उत्तर देता, ''फ़ौज बूट को पैरों में फिट नहीं करती, पैरों को ही बूट में फिट होना चाहिए।'' इस पर हम कितना हँसते थे! और फिर उसे जल्दी ही युद्ध के लिए लौट जाना होता था।

टन-टन-टन्।

गराज की दीवार-घड़ी ने घरघराकर तीन बजा दिए हैं। इतनी देर से वे दोनों फ़्यूमियो के छोटे-से दफ़्तर में क्या बात कर रहे हैं। ताज़ा रोग़न हुए दो ट्रक आगे के अहाते से बाहर जा रहे हैं। फ़्यूमियो का मोटा बॉस भी यही भला काम क्यों नहीं करता? मुटका अपनी बक-झक से मेरे घरवाले को थका-थकाकर उसकी जान सुखा रहा है।

फ़्यूमियो का चेहरा कितना ज़र्द है! क्या यह मेरी कल्पना ही है कि वह आज, कल से भी मुरझाया हुआ नज़र आ रहा है? कि कल वह परसों से ज़्यादा मुरझाया हुआ था? न, मुझे यह तनाव मन में नहीं लाना चाहिए। इससे नसें उसी तरह फटने को हो जाएँगी जैसे युद्ध के दिनों में, जबकि मेरे पेट में बच्चे ठहरते ही नहीं थे। मैं बच्चों को तभी जन्म दे सकी जबकि ज़िन्दगी फिर से सामान्य स्थिति पर लौट आई—या कम-से-कम लगने लगा कि लौट आई है। चिन्ता अब फिर मेरे दिल को जकड़ रही है और मैं परेशानी के साथ हेड मेकेनिक की तरफ़ देखती हूँ।

''कोमाको-सान, क्या आज सुबह मेरे पति ने नाश्ता ठीक से कर लिया था? फली का सूप सारा पी लिया था?''

कोमाको-सान काग़ज़ों का बड़ा पुलन्दा मेरे पति के दफ़्तर की तरफ़ ले जाता हुआ रुक जाता है, पर मेरे सवाल का जवाब नहीं देता। मैं उसकी तरफ़ देखकर खुशदिली से मुस्कराती हूँ (कन्फ्यूशियस का कहना है कि हमें—विशेष रूप से स्त्रियों को—निजी दुःख दूसरों पर नहीं लादने चाहिए)। कुछ ख़ुशामदी स्वर में कहती हूँ, ''थोड़ा-सा तो नाश्ता उसने लिया ही होगा। नहीं? थोड़ा-सा चावल—थोड़ा-सा फली का सूप?''

घड़ी के पेंडुलम की तरह कोमाको-सान का सिर एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ को हिल जाता है।

''गराज में इतना शोर रहता है कि एकाउंटेंट-सान को रात को ठीक से नींद नहीं आती। इसी से सुबह उसे भूख नहीं लगती,'' हेड मेकेनिक हाथ आगे करके बहुत कोमल ढंग से मुझसे बात करता है। वह पच्छिमी ढंग की चमड़े की जैकेट पहने है, सिर पर अमरीकन टोपी है, पर तौर-तरीक़े उसके बिलकुल जापानी हैं। इससे मुझे अच्छा लगता है। (मैं यह सोचे बग़ैर नहीं रह सकती कि हमारे जापानी तौर-तरीक़े ज़्यादा अच्छे हैं, हालाँकि मेरी जिस मित्र ने मुझे अंग्रेज़ी सिखाई थी उसका कहना था

कि वे ज़्यादा अच्छे नहीं हैं, सिर्फ़ अलग तरह के हैं। मेरी मित्र, जोकि बहुत घूम चुकी है, कहा करती थी कि इस तरह की तुलना करना मूर्खता है।)

कोमाको-सान नीचे तक झुकता है और हाथ उसी तरह मुँह के आगे रखे कोमल ढंग से अपनी बात जारी रखता है। यह बात मेरे कहने की नहीं है, पर एकाउंटेंट सान को ज़्यादा रातें इस तरह दफ़्तर में नहीं रहना चाहिए। ठीक है बहुत-सा काम यहाँ पड़ता है। यह भी ठीक है कि अब वह उतनी तेज़ी से काम नहीं कर सकता, फिर भी....।''

ओह, अगर सच्चाई इतनी ही होती—कि फ़्यूमियो ज़्यादा काम की वजह से ही दफ़्तर में सो रहा होता! पर अफ़सोस कि सच्चाई यह नहीं। ठीक है मेरा पति बहुत मेहनती और जी-जान से काम करनेवाला आदमी है—जापान में सभी तो ऐसे हैं—पर जो वह अकसर रात को इस दम घोटने वाले सुरक्षित स्थान में पड़ा रहता है, उसका कारण काम का उत्साह नहीं है। कारण मैं जानती हूँ—हालाँकि मैं मरते दम तक किसी को बता नहीं सकती—और वह है मुझसे प्यार कर सकने में उसका निरन्तर असमर्थ होते जाना। ऊपर से तो यही लगता है कि वह अरुबीत की वजह से रात को बाहर रह जाता है। पर असली वजह यही रहस्यमय दुविधा है जिसे वह मुझसे भी छिपाए रखना चाहता है। सच हम दोनों ही एक विचित्र स्थिति में हैं। चाहती हूँ मुझे इतना प्यार चाहने वाला शरीर न मिला होता!

ओह! आख़िर मुटका बाहर निकल आया। अब वह जा रहा है। नहीं, उसका मन बदल गया है। अपने फूले हुए ब्रीफ़केस से कुछ और मुचड़े हुए काग़ज़ निकालकर वह वापस फ़्यूमियो के दफ़्तर में चला गया है और मेरा पति बार-बार झुकता-मुस्कराता छिपे-छिपे अपनी पिचकी हुई कनपटियों का पसीना पोंछ रहा है। हमें हमेशा ख़तरा बना रहता है कि कहीं उसकी नौकरी छूट न जाए—यह एक ऐसा संकट है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरा पति बहुत आदर-भाव से बात सुनता जाता है और मैं आँखें मूँदकर अपने को और प्रतीक्षा के लिए तैयार कर लेती हूँ।

बड़े लोगों को क्या हमेशा इस तरह वक़्त लेना अच्छा लगता है—हमेशा अपने से नीचे के लोगों को परेशान रखना, और स्वयं मुग्ध होकर अपनी आवाज़ सुनते जाना? चार साल जापानी 'ब्रास' ने फ़्यूमियो को अटैन्शन रखा था। (अमरीकन लोग फ़ौजी अफ़सर को 'ब्रास' और बड़े आदमी को 'बिग-शॉट' कहते हैं। मैंने ये शब्द अमरीकन फ़िल्मों से सीखे हैं।) उसके बाद जब उस बेचारे को बैंक में पहली नौकरी मिली तो वैसा ही उसके साथ बैंक के मैनेजर ने किया।

मेरे मन में कितना विद्रोह उठता था! बैंक की इमारत के बाहर डरी-सी खड़ी फ़्यूमियो का इन्तज़ार किया करती थी और मन-ही-मन उबलती रहती थी। बेचारा

फ़्यूमियो! लाखों जापानी युवक सिपाहियों की तरह वह भी अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाया था। सो पास में डिग्री न होने से वह अपने पिता की तरह कोई इज़्ज़त का धन्धा नहीं कर सकता था। वह जापान के उन युवकों का सही उदाहरण है जिन्हें जीवन में अपने लिए कोई अवसर नहीं मिला, जिन्हें कभी ऐसे बूट नहीं मिले जो उनके पैरों में फिट आ सकें। चाहे फ़्यूमियो से मेरी शादी रूढ़िगत ढंग से एक बीच की औरत ने तय कराई थी, फिर भी वह जिस साहस के साथ अपने जीवन के हीन स्तर को स्वीकार किए है, उसके लिए मैं मन से उसकी प्रशंसा करती हूँ। कहीं अन्दर उसमें अभिमान की एक परत है—उसी से फ़्यूमियो फ़्यूमियो है।

घुटनों से अचानक मैं पैरों पर खड़ी हो जाती हूँ।

''कोई मिलने वाला—एक हैरो-सान गराज के बाहर तुम्हें पूछ रहा है।'' कोमाको-सान हाथ आगे किए मुझसे कहता है।

''कोई विदेशी मुझे पूछ रहा है?'' मैं ऊपरी हैरानी दिखाती हूँ। मैंने कोमाको-सान को नहीं बताया कि मैंने एक विदेशी को घर में किरायेदार रख लिया है। हिरोशिमा में ऐसी बात अच्छी नहीं समझी जाती। घर में किरायेदार रखने की बात से ही हेड मेकेनिक सोचने लगता कि हमें आगे बुरे दिनों की आशंका है। कोमाको-सान अगर यह रहस्य बॉस के सामने खोल देता तो अँधेर न हो जाता?

''ज़रा देखना युका-सान।''

स्वयं हैरा-सान सामने खड़ा है। मैं इसके व्यवहार की बेतकल्लुफ़ी की आदी नहीं हो पाई। पर यह मुझे ज़ाहिर नहीं होने देना है कि मुझे चोट पहुँची है। जिस मित्र ने मुझे अंग्रेज़ी सिखाई थी उसका कहना था कि इटली में रहो तो वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि उनकी राजधानी के लोग करते हैं। अब इस अमरीकन नवयुवक के साथ हूँ, तो मुझे ऐसे ही व्यवहार करना है जैसे कि न्यूयार्क की कोई महिला करती। सो मैं ऊँचे स्वर में आवाज़ देती हूँ, ''हैलो सैम-सान!''

''मिस्टर यामोमोतो के साथ कुछ व्यापारिक बात करनी थी, बस वहीं से चला आ रहा हूँ,'' हैरो-सान दूधिया रूमाल से अपना माथा पोंछता हुआ कहता है। वह 'सिअर सकर' का सूट पहने है और पहले से उजला नज़र आ रहा है। बालों में भी उसने कंघी की है। ''होली, टोलेडो!'' वह कहता है। ''यह व्यापार का काम मुझे ज़रा पसन्द नहीं। न ही इस काम को मैं पसन्द हूँ। उस रंगीन यामोमोतो की मेरे बारे में कोई अच्छी राय नहीं बनी—यही हाल सीटल में मेरे सौतेले पिता का है...'' बात बीच में ही छोड़कर वह विषय बदलने के लिए इधर-उधर देखने लगता है। ''युका-सान, इस गराज में कितनी पुरानी छकड़ा गाड़ियाँ जमा हैं!'' वह चहककर कहता है।

मुझे हँसी आ जाती है। कोई साथ हँसने हो हो, यह अनुभव नया-सा है और कितना अच्छा लगता है।

''हाँ, ये दौड़ नहीं जीत सकतीं,'' मैं सिर हिलाती हूँ। ''पर इनमें जो एक नम्बर है वह तो तुमने अभी देखी ही नहीं। उसकी रिहायश अहाते में है, उसका नाम है 'बेनरेबल डक' और वह झूमती भी है। कभी-कभी बॉस की इजाज़त से हम उसे पिकनिक या सैर के लिए ले जाते हैं—तभी एक बात मेरे ध्यान में आती है और झट से मैं वह कह भी देती हूँ। ''समय क़ीमती चीज़ है, यह इस बात पर ख़ासतौर से लागू होता है। तुम इतवार तक रुककर हमारे साथ मिआज़िमा क्यों नहीं चलते? वह चेरी देखने का दिन है—सब लोग उस दिन वहीं होंगे।''

पर सैम-सान सिर हिला देता है।

''मैं नहीं जा सकूँगा। मेरी यहाँ दो मीटिंगें और हैं। काम ख़त्म हो जाने पर हिरोशिमा में और रुकने की कोई वजह नहीं रहेगी। वापसी का हवाई जहाज़ पकड़ने से पहले मैं नारा और क्योतो में भी थोड़ा घूमना चाहूँगा।''

''बहुत अच्छा ख़याल है,'' मैं अपनी निराशा को छिपाने के लिए खुशी से मुस्करा देती हूँ। सूमो पहलवान जैसा एक मोटा-तगड़ा आदमी टहलता हुआ पच्छिमी ढंग से मेरी तरफ़ सिर हिलाकर पास से निकल जाता है। आख़िरकार!

''मेरा पति अब ख़ाली है। आओ यहाँ दफ़्तर में एक बार उससे मिल लो,'' मैं हैरो-सान से कहती हूँ।

अरे! फ़्यूमियो कहाँ गया? उसका दफ़्तर असल में एक गली-सी है जिसके अँधेरे अहाते में एक छोटी-सी खिड़की से रोशनी आती है। वहाँ उसके कामचलाऊँ बिस्तर के अलावा ढेर-सा गराज का कचरा पड़ा रहता है—टायरों के ढेर, रस्सियों के लच्छे और पेट्रोल के कनस्तर। पहले तो मैं वहाँ अपने पति को देख ही नहीं पाती। अरे, वह रहा। उस अँधेरे सुरक्षित ग़ार के परले सिरे पर दरार-जैसी खिड़की के नीचे खड़ा फ़्यूमियो अपने हाथों की किसी चीज़ को देख रहा है। यह चीज़ क्या है? वह कोई चिट्ठी पढ़ रहा है या मुटका जाते हुए कोई बीजक उसे दे गया है?

मैं अपना हाथ मुँह पर रख लेती हूँ। फ़्यूमियो कोई बीजक या हिसाब का काग़ज़ नहीं देख रहा—अपनी ही गरदन को देख रहा है। हाथ में ज़ेबी शीशा लिये वह इतने ग़ौर से अपनी गरदन के बाएँ हिस्से को देख रहा है कि हमारे दहलीज़ पर आ पहुँचने का उसे पता ही नहीं चलता।

मैं थोड़ा खाँसती हूँ। फ़्यूमियो घूमकर पीछे देखता है। उस एक ही क्षण में मैं देख लेती हूँ कि उसका चेहरा चिन्ता से विकृत है और आँखों में वीरानगी भरी है। पर तुरन्त ही वह अपने को सँभाल लेता है। (प्रिय फ़्यूमियो, मुझे तुम पर कितना गर्व है!) अपने युवा मेहमान को अभिवादन करने तक उसका भाव हमेशा की तरह शान्त और प्रसन्नतापूर्ण हो जाता है। मैं लंच का डिब्बा फ़्यूमियो के हाथ में दे देती हूँ, पर वह उसे अनमने ढंग से स्पार्क प्लगों के डब्बे के पास मेज़ पर रख देता है। सहसा मेरा

मन होता है कि अपने मेहमान को जल्दी से उस कमरे से बाहर ले आऊँ। वह जेबी शीशा, यह अनचाहा खाना—मुझे लगता है इससे हमारा सब भेद खुल जाएगा...

"चलो सैम-सान, मैं तुम्हें अपनी 'बेनरेबल डक' दिखाऊँ।" मैं ऊँचे स्वर में कहती हूँ। मुझे खुशी है कि विदेशी होने से वह मेरी बातचीत के आकस्मिक उतार-चढ़ाव को नहीं पकड़ पाया। पर अपनी घबराहट में मुझे सब तौर-तरीक़े भूल जाते हैं, और मैं उन दोनों से आगे कमरे से बाहर निकल आती हूँ।

धूल-भरी पुरानी ब्यूक मुसाफ़िरों से लदी है। मैं ड्राइवर को बाँहों में उठाकर उसके भरे-भरे गालों को चूम लेती हूँ, और फिर उसे ज़मीन पर खड़ा करके पीछे से उसके सिर पर हल्की-सी चपत लगाती हूँ कि उसे शिष्टाचार के नाते झुककर अभिवादन करना चाहिए।

"सैम-सान, यह तादेओ है और वह इसकी छोटी बहन मिचिको," कहते हुए मैं पिछली सीट पर बैठी अपनी छोटी बच्ची की तरफ़ सिर हिलाती हूँ।

"खुशी हुई," हैरो-सान अपने पुष्ट शरीर को जापानी अभिवादन के ढंग से झुकाकर कहता है। "और ये जो बाक़ी आधे दर्जन हैं, ये सब भी तुम्हारे ही हैं?"

"नहीं, सिर्फ़ इनके मित्र हैं।"

हम सब हँसते हैं—फ़्यूमियो भी, जिससे कि उन दोनों के बीच की चुप्पी टूटती है। मेरा लड़का और लड़की संसार के सबसे अद्‌भुत बच्चे हैं। यह मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ। वे दोनों मिकी-माउस डिज़ाइन की लाल किमोनो पहने हैं। सैम-सान गाड़ी में घुस जाता है (बिलकुल पच्छिमी ढंग से, जैसे ये लोग फ़िल्मों में करते हैं। सब कितना अच्छा लगता है!) अन्दर पुराने फटे गद्‌दे से उसका शरीर छूते ही धूल का एक बवंडर ऊपर उठ आता है। खाँसी के मारे उसका बुरा हाल हो जाता है। मुझे बहुत मनोरंजक लगता है।

मेरी हँसी अभी रुकी नहीं कि...अरे, फ़्यूमियो फिर अपनी गरदन को देख रहा है! वह ड्राइवर की सीट पर जा बैठा है, और छिपे-छिपे विंड-स्क्रीन में नज़र डाल लेता है। उसकी आँखों में फिर वही वीरानगी भर गई है। इस सबमें एक सेकेंड से अधिक समय नहीं लगता, पर मेरे दिल को जैसे बर्फ़ीली उँगलियों में जकड़ लेता है। मैं अपने कन्धे को ढीला छोड़ देती हूँ। क्षण-भर के लिए लगता है जैसे मेरी साँस रुक रही हो। मैं मुँह खोलकर हवा अन्दर खींचती हूँ।

"इसका थोड़ा मज़ा लेना चाहिए," हैरा-सान कहता है। मैं नहीं सोच पाती कि उसने कुछ नहीं देखा, या—मन को सालता विचार—ज़रूरत से ज़्यादा देख लिया है। "आओ सब लोग—बैठो," वह कहता है। "हम लोग सैर के लिए चल रहे हैं। इतवार को 'चेरी-उत्सव' पर चलना है, तो उससे पहले इस पुराने छकड़े को एक बार आज़मा लेना चाहिए।"

यह बात वह बिना मुस्कराए सरसरी तौर पर कहता है। ओह, यह विदेशी युवक कितना संवेदनशील और चतुर है! मन में समझकर भी कि मेरी इच्छा है कि वह कुछ दिन और हमारे यहाँ रहे, जता ऐसे रहा है जैसे रुकने में उसे उतनी ही खुशी है जितनी मेरी नज़र से होनी चाहिए। कितना सुन्दर संकेत है! मैं इसे कभी नहीं भूलूँगी।

जल्दी से हम लोग बैठ जाते हैं—वैसे ही जैसे फ़िल्मों में। मैं पिछली सीट पर आ गई हूँ और इससे पहले कि मुझे कुछ भी पता चल सके, फ़्यूमियो गाड़ी स्टार्ट कर देता है। युवा हैरो-सान 'बेनरेबल डक' की खिड़की से बाहर देखने लगता है। गाड़ी कूल्हे मटकाती सड़क की तरफ़ बढ़ चलती है।

"सायोनारा, बच्चो!" वह चिल्लाकर कहता है।

धूप उसके सुनहरे बालों पर चमकती है। ज़िन्दगी उसके अन्दर से छलकी पड़ती है। हेड मेकेनिक के गिर्द जमा बच्चे उत्तर में हाथ हिलाते हैं। सब लोग हाथ हिलाते हैं—यहाँ तक कि तादेओ और मिचिको के किमोनो पर बने मिकी-माइस भी हाथ हिलाते हैं। ज़िन्दगी में हमेशा ज़्यादा खुशी नहीं रहती, इसीलिए मैं बच्चों के किमोनो के लिए ऐसी विनोदपूर्ण डिज़ाइन चुनती हूँ। डिज़्नी-सान का चूहा कितना प्यारा और विनोदपूर्ण प्राणी है! क्यों?

चार

कब सोचा था कि अचानक इस तरह मेरी तफ़रीह हो जाएगी? बिना वजह ऐसी मज़ेदार सैर! मैं अपने को इसकी हक़दार नहीं समझती।

फ़्यूमियो हिचकोले खाती पुरानी छकड़ा-गाड़ी को सड़क पर लिये चलता है और मैं आराम से धूल-भरे गद्दे की पीठ से टेक लगा लेती हूँ। हार्न बजाते हुए हम फिर से बने हिरोशिमा की बिना कोलतार की सड़कों पर बढ़े चलते हैं।

दोपहर को यहाँ कितनी हलचल रहती है! लोग दो कौर निगलने के लिए दफ़्तरों से आ रहे हैं या लंच के ख़ाली डब्बे बग़ल में दबाए जल्दी-जल्दी वापस जा रहे हैं। बहुत गहमा-गहमी है। मोड़ मुड़ते हुए हम सड़क पार करती दो स्त्रियों से लगभग टकरा जाते हैं। बचाव हो जाने पर वे गिलगिली हँसी हँसती हैं। मैं मित्र-भाव से उनकी तरफ़ हाथ हिलाती हूँ, पर मेरी आँखें स्पर्धा से उनके किमोनो के चुस्त कपड़े पर टिकी रहती हैं जोकि ख़ास इस बसन्त के मौसम के लिए ही हैं। तभी एक परेशान करने वाली बात मेरे दिमाग़ में आती है, जैसे कभी-कभी एक कंकड़ जूते में आ घुसता है। अगले रविवार मिआज़िमा के चेरी-उत्सव में मैं क्या पहनूँगी?

सैम-सान के आने की बात से पहले मन में सोचा था कि हरे रंग की पश्चिमी पोशाक पहनूँगी, जो मुझे अंग्रेज़ी सिखाने वाली मेरी मित्र ने तोक्यो से भेजी थी। पर दुर्भाग्य कि उसकी बाँहें छोटी हैं। मेरी मित्र केइ को वह बात भूल गई होगी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती—कि मेरी बाँहों के दाग़ मेरी कहानी सबको सुना देते हैं। वे गन्दे धब्बे, जो किमोनो में अपने-आप ढँक जाते हैं, बाहर दिखाई दें, इससे तो मेरी सारी खुशी समाप्त हो जाएगी।

मैं इस समस्या को ज़बरदस्ती मन से निकाल देती हूँ। अपने से कहती हूँ कि मेरे अच्छी-बुरी लगने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, क्योंकि मैं अब इकत्तीस की हो चुकी हूँ, और एक पत्नी और एक माँ भी बन चुकी हूँ। अब तो ओहात्सू का वक़्त है, और मुझे यही देखना है कि वह उस दिन हैरो-सान को सुन्दर नज़र आए। दिमाग़ में एक ख़याल आता है। क्यों न मैं बालों पर लगाने की अपनी चाँदी की सुइयाँ गिरवी रखकर कपड़ा ख़रीद लूँ और अपनी दर्ज़िन फ़्युकुदा-सान से कहूँ कि वह जल्दी से ओहात्सू

के लिए एक किमोनो सी दे। फ़्युकुदा-सान एक अच्छी पड़ोसिन है और मुझे विश्वास है कि वह मुझे इन्कार नहीं करेगी।

''क्या सोच रही हो युका-सान? बता दो, तो तुम्हें एक पेनी...।''

सैम-सान अगली सीट से मुझे देखकर खुले मुँह मुस्करा रहा है। मैं भी चुपचाप बिना कुछ कहे मुस्करा देती हूँ। एक पेनी मिले या दस लाख येन–भला अपने मन की बात कोई किसी को क्यों बताएगा? जब छोटी-सी बच्ची थी, तब जो भी मन में आता फटाक् से मुँह से निकाल देती थी। लेकिन छह साल की होने के पहले ही मेरी मामाजान ने मुझे शिष्टाचार सिखा दिया था। मैं अब भी इस दुविधा में हूँ कि कौन-सी बात बेहतर है–पच्छिमी ढंग से सब-कुछ मुँह से कह देना या कि पेट में रखे रहना? मुँह से सब-कुछ कह देना आदमी को छोटा बना देता है, लेकिन अपने विचारों को हज़म कर लेना कभी-कभी पेट में दर्द भी कर सकता है।

इस हमारी मोटरनुमा बत्तख को क्या हो गया है? यह इतनी तेज़ी से मटकती चल रही है कि हम वास्तव में ही एक साइकिल को पीछे छोड़ आगे निकल रहे हैं। फ़्यूमियो घूमकर मुझे 'विजय' की एक विशेष मुस्कराहट से देखता है। प्यारा फ़्यूमियो! धूप उसके मज़बूत सफ़ेद दाँतों पर चमकती है और वह बिलकुल सैम-सान जैसा पुष्ट नज़र आ रहा है। मैं प्रसन्नतापूर्वक अपने से कहती हूँ कि अब निश्चित रूप से सब-कुछ ठीक चलता जाएगा।

''हम लोग किधर जा रहे हैं?'' विदेशी पूछता है। ''मैंने अभी हिरोशिमा का कुछ भी तो नहीं देखा। जहाज़ के उन लोगों ने पूरी सुबह मुझे गरदन से पकड़े रखा। यह शहर भी तोक्यो की तरह फिर से बना लगता है।'' वह अपने चारों तरफ़ देख रहा है। ''युद्ध के बाद तुम लोगों ने यह बहुत ही चमत्कार का काम किया है।''

''हाँ,'' मैं जल्दी से कहती हूँ। ''सब-कुछ फिर से बना है। सब-कुछ नया है।''

कुछ भी हो, मैं हैरो-सान को यह नहीं जानने देना चाहती कि पुराना हिरोशिमा भी जीवित है, क्योंकि हमारा पुरानी आबादी का शहर मलबे पर स्थित एक टूटा, जला और गन्दा कूचा है, जिसे बहुत कम विदेशी देख पाते हैं।

फ़्यूमियो अंग्रेज़ी नहीं जानता, लेकिन उसने सैम-सान के शब्दों का मतलब समझ लिया है। अपने सिर को बिना मोड़े, वह अपने अँगूठे से मोटर के पिछले थैले की तरफ़ इशारा करता है। मैं उसमें से एक फटी हुई गाइड बुक निकालती हूँ और उसमें से पढ़ने लगती हूँ।

"हिरोशिमा एक नदी-मुख भूमि पर स्थित है, जहाँ पाँच धाराओं में नदी ओथा अपने को जापान के भीतरी समुद्र में ख़ाली करती है।...क्या तुम सुन रहे हो सैम-साम?'' मैं भीड़ के शोरगुल से भी ऊँचे चिल्लाती हूँ।

''किसी लाउडस्पीकर का इन्तज़ाम करो गाइड,'' वह जवाब देता है।

''6 अगस्त 1945 तक, हिरोशिमा तीन सौ साठ हज़ार की आबादी का एक सम्पन्न समुद्री बन्दरगाह था। लेकिन उस दिन की सुबह यह महानगर धरती की सतह से अदृश्य हो गया...''

उफ़्! यह गाइड का काम मेरी हिम्मत से बाहर का है। गाइड बुक कहती है कि एक ही मिनट में—आठ-पन्द्रह से आठ-सोलह के बीच साठ हज़ार घर जलकर रख हो गए और एक लाख आदमी झुलस गए या चिथड़े हो गए। मुझे आँकड़ों से नफ़रत है। एक-एक संख्या के पीछे से दर्द-भरे इन्सानी चेहरे मुझे घूरते नज़र आते हैं। मैं पढ़ना बन्द कर देती हूँ।

''इस शोर में पढ़कर सुनाना मुश्किल है,'' मैं जल्दी से झूठ बोल जाती हूँ। ''तुम इसे घर चलकर देख सकते हो।''

शुक्र है मेरा इससे पीछा छूटा। मैं किताब फटे हुए थैले में वापस डाल देती हूँ। लेकिन इससे पहले कि मैं अपनी सीट पर सीधी हो पाऊँ, एक नई मुसीबत सामने आ जाती है। अब हम 'एटम बम अजायबघर' के सामने से निकल रहे हैं, जहाँ पर दो दृश्य-दर्शक गाड़ियाँ रुकी हुई हैं। टूरिस्ट, अपने कैमरे लटकाए, यहाँ के ध्वंसावशेषों और उनकी तस्वीरों का संग्रह देखने के लिए उनसे बाहर निकल रहे हैं। ओह! सैम-सान, जोकि यह नहीं जानता कि यह किसी क़िस्म का अजायबघर है, यहाँ रुककर अन्दर जाना चाहता है।

''तुम कल सुबह आकर देख लेना। मैं उसे समझाना चाहती हूँ। इस समय यहाँ बहुत भीड़ है।''

लेकिन इससे हैरो-सान का चेहरा उतर जाता है तो उसकी बात रखने के सिवा कोई चारा नज़र नहीं आता—चाहे इससे हम लोगों की दोपहर ख़राब क्यों न हो जाए। आख़िर सैम-सान हमारा सम्मानित अतिथि है।

''रुको, दोजो, फ़्यूमियो, रुको ज़रा,'' मैं जापानी भाषा में कहती हूँ।

पर रुकने की बजाय, हमारी 'बेनरेबल डक' तेज़ी से आगे बढ़ चलती है। फ़्यूमियो का पाँव नीचे ऐक्सलेरेटर को दबा रहा है, और उसका चेहरा शीशे में गम्भीर नज़र आ रहा है। बात हैरानी की नहीं। (जैसे कि हम बचे हुए लोगों में से एक ने कहा था—उस अजायबघर में जाना अपने क़ब्रिस्तान में घूमने की तरह है।) हमारी 'डक' ज़ोर से पहिये खड़खड़ाती तेज़ी से नदी की तरफ़ बढ़ती जाती है। मुझे एक भयानक चीख़ को पी जाना पड़ता है। यदि मेरे पति को स्त्रियों का पच्छिमी ढंग से बात करना बुरा न लगता, तो मैं ज़रूर उसे धीरे चलाने के लिए कहती। इसी से मैं होंठ चबाती अपनी सीट से जुड़ी रहती हूँ।

चीं-चीं, घर्र-घर्र, और एक कर्कश आवाज़! हमारी पुरानी 'डक' फिसलती-झूलती पुल तक जा पहुँचती है, और फिर एकाएक ठंडी पड़ जाती है। हम बाहर कूद आते हैं।

"यह हुई सैर।" हैरो-सान हँसता है। वह जल्दी से गाड़ी के आगे जाता है, लेकिन मेरे पति ने पहले से ही गाड़ी का बॉनेट खोल दिया है और उसके अन्दर झाँक रहा है। वह मुझे बेचैनी की नज़र से देखता है। "इसे हटा ले जाओ!" यह अनुरोध मैं उसकी आँखों में पढ़ती हूँ।

"क्या तुम नदी देखना चाहोगे, हैरो-सान?" मैं पूछती हूँ और बिना उसके जवाब का इन्तज़ार किए उसे नदी के ढलवाँ किनारे पर ले जाती हूँ। मैं फिसलकर लगभग गिर जाती हूँ। (जान-बूझकर) और ज़ोर से हँसती हूँ, ताकि उसे लगे कि सब-कुछ ठीक है। यदि सैम-सान जापानी होता तो ज़रूर मेरी हँसी को सही अर्थ में लेकर मुझसे ज़्यादा ज़ोर से हँसता। पर बजाय इसके वह असमंजस में मेरी नज़र से फ़्यूमियो की तरफ़ देखता है, जो मोटर की ठोंक-पीट कर रहा है।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा," वह कहता है। "इस आदमी को हो क्या गया था? इसने गाड़ी इस तरह से क्यों चलाई? अब यह मुझे अपनी सहायता क्यों नहीं करने देता? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"घबराओ नहीं सैम-सान!"

मैं बिना प्रयत्न अपनी प्रसन्नता के दिखावे को बनाए रखती हूँ। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि सैम-सान के पहले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता। जहाँ तक दूसरे का सवाल है, क्या यह अमरीकन नहीं समझ पा रहा कि फ़्यूमियो शरमिन्दा महसूस कर रहा है? ताव में आकर गाड़ी चलाने से वह उसे तोड़ बैठा है, और अब अपने मन में परेशान हो रहा है? इतना तो एक विदेशी को भी समझ जाना चाहिए।

"देखो! नदी में वे लड़कियाँ सुन्दर नहीं लग रहीं?" मैं खुशी से चिल्लाती हूँ। क्योंकि पुरुष, बच्चों की तरह, उसी समय सब-कुछ भूल जाते हैं जब उनके सामने कोई नई चीज़ ले आई जाए।

हैरो-सान अभी तक माथे पर त्यौरी चढ़ाए हुए है। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र सामने चप्पू वाली नाव पर पड़ती है उसका भाव नरम पड़ जाता है। ताज़ा पत्तियों जैसी सुन्दर तीन लड़कियाँ नाव के ऊपरी हिस्से में फूस की चटाइयों पर घुटने टेके तामिसेन के स्वर पर गा रही हैं। कितना दुःख-भरा गाना है!

"ये सब एक-सी पोशाक क्यों पहने हैं?" सैम-सान पूछता है।

"क्योंकि ये अनाथ हैं। यह अनाथ-आश्रम की पोशाक है," मैं जवाब देती हुई मन में आशा करती हूँ कि मेरा किरायेदार मुझसे ऐसे पेचीदा सवाल नहीं पूछेगा।

"वह गुलदस्ता वहाँ नदी में कैसे है, युका-सान?"

"गुलदस्ता?" मेरा चेहरा फ़क पड़ जाता है। "नहीं, वे कुछ पुराने फूल हैं जो किसी ने पानी में फेंक दिए हैं," मैं कहती हूँ। लेकिन सैम-सान अपनी आँखें गुलदस्ते से नहीं हटाता। ठोड़ी की नोक बाहर निकालकर, वह सफ़ेद पैन्ज़ी के गुच्छे को देखता

रहता है, रुपहली लहर पर उछल रहा है। कितनी बदकिस्मती की बात है कि यह बिलकुल सामने आ पड़ा है!

"तुम ग़लत कहती हो," आख़िर वह कहता है। "यह वास्तव में एक गुलदस्ता ही है! तुम देख नहीं रहीं कि उसकी इन्द्रियाँ नीम की हरी छाल से बँधी हैं!" हैरो-सान की ठोड़ी थोड़ी और बाहर को निकल आती है। "मैं तुम्हारे साथ कुछ भी शर्त लगा सकता हूँ कि किसी ने गुच्छा वहाँ डालकर उसे बड़े पत्थर के पीछे फँसा दिया है।"

वह मेरी तरफ़ प्रश्न-भरी नज़र से देखता है, और मैं सूनी नज़र से उसे देखती हूँ। लड़कियाँ अपनी नाव में धीरे-धीरे हमारे सामने से गुज़र रही हैं। जैसे ही वे इस बहते गुलदस्ते को देखती हैं, नाव खेने वाली लड़की बड़ी सावधानी से अपने चापुओं को ऊँचा उठा लेती है, जिससे वे उससे छुए नहीं। छोटी-छोटी पानी की बूँदें फूलों पर गिर जाती हैं, जो छलकते आँसुओं-सी नज़र आती हैं। लड़कियाँ अपनी आवाज़ें धीमी कर लेती हैं और उनके गीत का स्वर और भी उदास हो जाता है।

"अरे!" मेरा किरायेदार अचानक चिल्लाता है। "फ़्यूमियो को क्या हो गया है?"

मैं सिर घुमाकर देखती हूँ, कि फ़्यूमियो जैसे लँगड़ा गाड़ी के खुले बॉनेट पर झुका है। मैं बेचैन क़दमों से किनारे से ऊपर आती हूँ।

"फ़्यूमियो, क्या बात है?" मैं चीख़ती हूँ। "जवाब दो न?"

लेकिन हमारे किरायेदार ने पहले ही मेरे पति को उस विश्वस्त पच्छिमी ढंग से अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया है, जो ढंग मुझे बहुत प्रिय है। वह उसे पुरानी ब्यूक के बाहरी बोर्ड पर बिठा देता है।

"मेरे रूमाल को नदी से भिगो लाओ, युका-सान! जल्दी करो!"

विदेशी के बड़े-से रूमाल को गीला करने के लिए कठिनाई से उस ढलान पर से उतरते हुए भी मेरे पास समय है कि मैं प्रशंसापूर्वक सोच सकूँ कि वह कैसे स्थितियों को सँभाल लेता है, वह सही माने में एक पुरुष है जिसके मन में एक सहजीवी की तकलीफ़ के लिए सच्ची सहानुभूति है। लेकिन एक क्षण में ही वह मेरे मन से बाहर चला जाता है। जब मैं वापस मोटर की तरफ़ चढ़कर आती हूँ, तो मैं ऊपर से नीचे तक काँप रही हूँ। क्या यह वह चीज़ तो नहीं? यह प्रश्न मुझे घेर लेता है। नहीं, नहीं, यह तो सिर्फ़ मई महीने की आकस्मिक गरमी से हुआ है—और इसलिए कि फ़्यूमियो ने अपने को जी-तोड़ उस पुरानी क्रूर मोटर को ठीक करने में लगा दिया था।

"मैं तुम्हें बताता हूँ क्या हुआ है। मुझे यकीन है कि इसे लू लग गई है।" फ़्यूमियो को गाड़ी की पिछली सीट पर बिठाकर हम चल देते हैं, तो सैम-सान कहता है, "हाँ साहब, यहाँ की दोपहर की धूप बहुत ही जान-लेवा है। मैं इसे सीधा अस्पताल से ले चल रहा हूँ।

"नहीं।"

फ़्यूमियो ने शब्द 'अस्पताल' समझ लिया होगा, इसी से पूरे ज़ोर से विरोध कर रहा है। यह बात एक घंटे में ही हमारे पूरे मोहल्ले में फैल जाएगी कि फ़्यूमियो अस्पताल गया है। फ़्यूमियो का बॉस भी जान जाएगा और हमारा दुष्ट मालिक-मकान तो सुनेगा ही। फिर हम लोगों का क्या होगा?

"हमें घर ले चलो, सैम-सान!" मैं अपने पति की बर्फ़ीली उँगलियों को तसल्ली देने के लिए दबाकर कहती हूँ।

"अस्पताल नहीं?"

"नहीं, कृपया घर, सैम-सान!"

"ठीक है, घर ही सही," हैरो-सान कहता है। साथ ही सिर घुमाकर यह भी देख लेता है कि फ़्यूमियो गाड़ी की पिछली गद्दी पर, जिसके स्प्रिंग बहुत साल पहले टूट गए थे, सुविधापूर्वक तो है। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें थोड़ी मिच जाती हैं और मुझे विश्वास है कि वह अपने से कह रहा है, 'मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है।'

ओह! यहाँ हिरोशिमा में बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें मैं चाहती हूँ कि तुम न समझो, प्रिय सैम-सान! अचानक मैं अपने-आपको तुमसे सौ साल बड़ी महसूस करने लगी हूँ। तुम इतने सीधे हो...तुमने अभी तक हमारी दीवार के, हमारी बाड़ के, उस तरफ़ नहीं देखा है। मैं तुम्हारे लिए ही चाहती हूँ कि तुम भी हिरोशिमा के बारे में उतना ही जानकर लौटो जितना कि अन्य लोग जान पाते हैं...जोकि सच बहुत ही थोड़ा है।

पाँच

यह फ्युकुया का स्टोर कितना प्यारा है! हम लोग कितना अच्छा समय बिता रहे हैं! यह जानकर, जैसा कि सैम-सान ने कहा था, कि फ़्यूमियो की तकलीफ़ लू लगने के सिवा कुछ नहीं है, मैं निश्चिन्तता से घूम रही हूँ। यह ठीक है कि हमने किसी डॉक्टर को नहीं बुलाया (क्योंकि उससे लोग बातें बनाते), लेकिन हमने उस छोटे-से मेडिकल विद्यार्थी हाशिमोतो-सान से अवश्य परामर्श लिया था, जो हमारी गली में ही रहता है। वह नेक युवक भी इस बात से सहसा सहमत हो गया कि फ़्यूमियो ज़रूर धूप खा गया है। इसलिए अब हम सब ख़ुश हैं। जो पैसा मुझे अपनी चाँदी की सुइयों से मिला है उससे मैं ओहात्सू के लिए बसन्त के उपयुक्त एक जोड़ा ख़रीदने फ्युकुया स्टोर में गई हूँ।

यह बहुत ही असाधारण स्थिति है कि मुझे कोई चीज़ ख़रीदने का मौक़ा मिले, हालाँकि सुनने वाले को यह विचित्र लग सकता है। पर मैं बहुत ग़रीब हूँ। यही कारण है कि मैं इसका बहुत आनन्द ले रही हूँ। बार-बार मैं अपने किरायेदार को अपनी तरफ़ एक अजीब-सी मुस्कान के साथ देखते पाती हूँ। हो सकता है अपने भोलेपन में मैं अपनी ख़ुशी छिपा नहीं पा रही। लेकिन मैं मजबूर हूँ। सैम-सान नहीं जानता कि अपनी पूरी ज़िन्दगी में कितनी कम बार इतनी बड़ी दुकान में आई हूँ। यह भी नहीं कि मैंने इसी दुकान को इसके सारे सामान के साथ गारा होते देखा है, और इन्सान की हड्डियों को इसके मलबे में मिलते देखा है। एक के बाद एक चमकते काउंटर की तरफ़ उत्सुकता से देखते हुए मुझे महसूस होता है कि उसने मेरी बाँह को दबाया है। मैं उसकी तरफ़ देखकर मुस्करा देती हूँ, और हम नया मैदान फ़तह करने आगे बढ़ते हैं। इस बार हम उस आकर्षक विभाग में जाते हैं जहाँ पर सस्ता नक़ली रेशम बिकता है।

''हे...'' सैम-सान बात शुरू करता है और मेरी हँसी फिर फूटने लगती है। सैम-सान के बात करने के कुछ ख़ास अन्दाज़ हैं और मैं उन सबको पसन्द करने लगी हूँ। मैं उसे उसके 'हे' और 'जी' पर छेड़ने भी लगी हूँ। कितना अच्छा लगता है इधर से उधर आग की तेज़ी से लपकना! (यह मसख़रेपन की कहावत भी मेरी

उस मित्र ने याद कराई थी जिससे मैंने अंग्रेज़ी सीखी थी।) 'हे-क्या बात है!' मैं शरारत से उसे फूँकती हूँ।

"ओहात्सू को नीचे के दो किमोनो क्यों चाहिए? मई का महीना है। बेचारी ज़िन्दा भुन जाएगी।"

मेरे मुँह से बात बेतुके ढंग से निकलती है। हँसते हुए मैं अपनी बेतुकी खुशी का कारण उस छोटे-से झुंड को समझाती हूँ जो हमारे पीछे-पीछे एक काउंटर से दूसरे काउंटर पर आ रहा है। वे सब धीमे स्वर में हँसते हैं (हाथ आगे करके जिससे कि विदेशी घबरा न जाए)। मैं अपने किरायेदार को बताती हूँ कि शताब्दियों से जापान की लड़कियाँ एक साथ नीचे कई-कई किमोनो पहनती आई हैं—कई अवसरों पर दो से कहीं ज़्यादा।

"नए फुर्तीले देशों में, जैसे कि तुम्हारा देश है, फ़ैशन रात-भर में बदल सकते हैं," मैं उससे कहती हूँ, "पर यहाँ तो शताब्दियाँ लग जाती हैं। मिसाल के तौर पर, नीचे के किमोनो में से एक तो उसी रंग का होना चाहिए जिस रंग की ऊपर के किमोनो की डिज़ाइन हो; जैसे हमें जामुनी रंग का चाहिए।

"ना, जी!"

यह 'ना जी' सैम-सान ने नहीं, सस्ते नकली रेशम विभाग के छोटे मैनेजर ने कहा है। वह थोड़ी अंग्रज़ी जानता है और सम्भव है कि उसने यह ढंग फ़िल्मों से सीखा है, जो अच्छी आधुनिक भाषा सीखने का सबसे उपयुक्त साधन है।

"मुझे अफ़सोस है जामुनी रंग की इस बसन्त में बहुत माँग है," वह कहता है। "औरतें सिर्फ़ जामुनी रंग—जामुनी रंग—जामुनी रंग ही माँगती हैं! वह सस्ता जामुनी नक़ली रेशम अब ख़त्म हो गया है।" वह सोच में डूबा अपने ख़ूबसूरत सोने के दाँत को अपने बाल पाइंट पेन से सहलाता धूर्तता के साथ मुस्कराकर कहता है, "उसकी जगह राई का-सा पीला रंग कैसा रहेगा? वह हमारे पास काफ़ी है!"

"क्योंकि कोई उसे चाहता नहीं है।"

"ओह, यह हैरो-सान जो कुछ सोचता है वह सब मुँह से बाहर क्यों निकाल देता है? हज़म कर जाने से जो पेट-दर्द होता है उससे बचने के लिए? लेकिन दुकानदार बहुत चतुर होते हैं, नहीं तो वे भूखों मर जाएँ..." और उस सस्ते नकली रेशम विभाग का छोटा मैनेजर अपना सोने का दाँत उघाड़कर मुस्कराता हुआ पूछता है कि जिस नवयुवती के लिए हम यह ख़ूबसूरत चीज़ ख़रीद रहे हैं, वह सम्मानित विदेशी की मँगेतर तो नहीं!

"मैं कितना चाहता हूँ कि वह हो! जी हाँ, मैं ज़रूर चाहता हूँ कि वह हो सके।" सैम-सान हँसते हुए कहता है।

और मैं भी कितना चाहती हूँ कि वह हो सके। मेरी कमसिन, सुन्दर युवा छोटी बहन की ज़िम्मेदारी सैम-सान जैसे नर-युवक के ऊपर हो, यह मेरी भी हार्दिक इच्छा

है। (मेरी मित्र ने, जिसने मुझे अंग्रेज़ी सिखाई थी, बताया था कि नर-युवक उसे कहते हैं जिसकी नसों में तेज़ ख़ून दौड़ता हो; और मैं उस विदेशी की स्वस्थ चमड़ी के नीचे लाल ख़ून की बड़ी-बड़ी नदियाँ कई छोटी-छोटी नदियों के साथ बहते देख सकती हूँ।) उफ़्! ओहात्सू को अपने ख़यालों में भी उस विदेशी के साथ ब्याहने पर वह मुझसे लड़ेगी। सुसंस्कृत होते हुए भी छोटी बहन में मनमानी करने की बड़ी आदत है—अपने ही मन की करने की तीव्र लालसा, जो कभी-कभी मुझे डरा भी देती है। अनेक हिरोशिमा-वासियों की तरह, जिन्होंने छोटी उम्र में ही भयानक दुर्घटनाएँ झेली हैं, वह लगभग हिस्टीरिया के स्तर पर जीती है।

अब एक अजीब-सा छोटा आदमी आगे बढ़कर मैनेजर से बहस करने लगता है। यह ठिगना, झुका-सा आदमी देहाती ढंग के कपड़े और माथे तक आई बड़ी-सी ऊनी टोपी पहने घंटे-भर से एक काउंटर से दूसरे काउंटर तक हमारा पीछा कर रहा है। असल में हमसे ज़्यादा इस आदमी ने हमारी ख़रीदारी में रुचि ली है। वह गरम होकर छोटे मैनेजर से उस सरसों-जैसे पीले कपड़े की बात पर झगड़ने लगा।

हे ईश्वर! छोटे मैनेजर की तो गत बनने जा रही है। जैसे-तैसे मुझे उस किसान का ध्यान बँटाना चाहिए। आख़िर छोटा मैनेजर उस सस्ते नक़ली रेशम विभाग में दूसरे ऊँचे पद पर है; और ऊँचा कर्मचारी होते हुए भी उसने हमारे साथ दस मिनट लगाए हैं। मैं झुककर उस ठिगने किसान से पूछती हूँ कि वह कहाँ से आया है। वह अभी उत्तर में झुकता है, शालीनता से साँस खींचकर मुझे बताता है कि वह हिरोशिमा के बाहर रेशमी कीड़ों के खेत में काम करता है। वह शहर में एक दिन के लिए घूमने आया है और क्योंकि फ्युकुया स्टोर अपने चमत्कारिक एक्सेलेरेटर के कारण नए हिरोशिमा का ख़ास आकर्षण है, इसलिए वह अपना पूरा दिन यहीं बिता रहा है। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र हैरो-सान के गगनचुम्बी शरीर और सुन्दर बालों पर पड़ी है, उसकी सारी रुचि उसमें केन्द्रित हो गई है। उसने अपने-आपको हैरो-सान के साथ इस तरह जोड़ लिया है, मानो वह ऊँचा विदेशी एक लिफ़ाफ़ा हो और वह ठिगना रेशमी कीड़ों का किसान डाकघर का टिकट।

"वह सरसों-सा पीला कपड़ा...", वह उस विषय पर हठ के साथ लौटकर मुझसे कहता है, "मत ख़रीदना उसे! वह रंग तो..."

हमारे छोटे-से झुंड के मर्द अपने हाथ और स्त्रियाँ अपने नए वासन्ती पंखे मुँह के आगे करके हँस देती हैं।

"इसमें मज़ाक क्या है, युका-सान? मैं मज़ाक न समझकर मुँह ताकता रहूँ, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" हैरो-सान शिकायत करता है।

"यह ऐसी भद्दी बात है जो समझाई नहीं जा सकती," मैं उससे कहती हूँ।

मेरी मित्र ने, जिसने मुझे अँग्रेज़ी सिखाई थी, समझाया था कि पच्छिम के लोग खुले भी बहुत होते हैं, पर बनते भी बहुत हैं, जिससे मैं रेशमी कीड़ों के किसान के देहाती मज़ाक का मतलब उसे नहीं बताना चाहती। ख़ैर, सैम-सान का ध्यान पहले ही किसी और चीज़ की तरफ़ चला गया है—उसके अस्थिर अमरीकी स्वभाव के कारण।

"देखो, मैं ज़रा भी नहीं..."

"अब तुम्हें क्या नहीं समझ आ रहा?" मैं उसे मज़ाक में कोहनी मारती हूँ, क्योंकि यह बात बार-बार उसकी ज़बान पर आती है। सैम-सान मुझे देखकर मुस्करा देता है। वह बताता है कि वह यह नहीं समझ पा रहा कि लोग उनका पीछा एक काउंटर से दूसरे काउंटर तक क्यों कर रहे हैं, "हमने तो इन्हें भीड़ों की तरह इकट्ठा कर लिया है," वह कुढ़ता है।

स्कूल की तीन लड़कियाँ आपस में हाथ पकड़े हमारे साथ चिपककर खड़ी हैं। ऐसे ही एक युवा जोड़ा—जो अपने चमकते चेहरे से नव-विवाहित नज़र आता है। एक मोटी औरत, जोकि तेज़ी से अपने को पंखा झल रही है, हमारी ख़रीदी हर चीज़ को उत्सुक उँगलियों से छूकर देख रही है। वह ठिगना रेशमी कीड़ों का किसान हर क्षण बिलकुल हमसे सटकर खड़ा रहता है।

"जब हमने ओहात्सू के लिए चप्पल ख़रीदी, उस समय सिर्फ़ स्कूल के बच्चे थे," सैम-सान कहता है। "नव-विवाहित जोड़ा जब आया जब हमने उसके लिए रूमाल ख़रीदा—और शेष सब छतरी वाले काउंटर से साथ हैं। अब हम पूरे दस आदमी हैं—दुकानदार को और हमें मिलाकर। हे ईश्वर! ये लोग हमें अकेला क्यों नहीं छोड़ते?"

अजीब विदेशी है! छह फुट से ज़्यादा ऊँचा, लेकिन अक्ल सिर्फ़ भौंरे-जितनी। क्या यह मुझसे यही उम्मीद करता है कि मैं इन लोगों को ऐसे भगा दूँगी जैसे कोई ताली बजाकर चूज़ों के झुंड को छितरा देता है? जापान के ग़रीब ख़रीदार केवल आँखों से ही चीज़ें ख़रीदते हैं—क्या युवा अमरीकन यह नहीं समझता? बड़ी नम्रता से वे ख़ुशक़िस्मत लोगों की ख़रीदारी में मज़े से हिस्सा लेते हैं। और इसमें बुराई भी क्या है? पच्छिमी लोग कई बार कितने अजीब लगते हैं! वे मिल-जुल कर रहने की पहली सीढ़ी भी नहीं जानते—बिलकुल भी नहीं।

"अरे! क्या यह पागल है?"

वह नम्र, छोटा मैनेजर मेरे हाथों में लिफ़ाफ़ों का ढेर पकड़ा रहा है, और विदेशी की भौंहें आश्चर्य से खिंच गई हैं। जल्दी से मैं फुसफुसा देती हूँ कि वह बीच में न पड़े और सैम-सान अपने चौड़े कंधों को झूठी हताशा से झटका देता है।

"तो अच्छा है तुम भद्दी बन जाओ, अगर यही जापान का रिवाज है! न रोकने दो मुझे," वह अपना सिर झटकता है। "अब हम यहाँ से घर जा रहे हैं?"

"घर।" मैं जवाब देती हूँ। सैम-सान को 'घर' कहना कितना अच्छा लगता है! ओह, मैं जानती हूँ कि मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। अपने साथ एक खुश-दिल साथी का होना मेरे लिए इतनी नई बात है कि इसने मेरा सिर ही फिरा दिया है।

लेकिन सैम-सान ज़िद करता है, "नहीं, अब हम लोग तुम्हारे लिए भी कुछ ख़रीदेंगे युका-सान!"

"हाँ-हाँ, ज़रूर ख़रीदें।"

नवविवाहित जोड़ा अंग्रेज़ी समझता है और एक बार फिर सैम-सान की भौंहें तन जाती हैं। वह उनकी तरफ़ घूरता है। फिर समझदारी की मुस्कान उसके पूरे चेहरे पर फैल जाती है।

"लगता है अब मुझे समझ आने लगी है।"

"कौन सी बात?" मैं पूछती हूँ। यह अमरीकन ज़्यादा घुलने-मिलने वाला नहीं है। वह अपनी हल्के रंग की आँखों को उस झुंड पर दौड़ाता है और हल्के-से सिर हिला देता है। क्या इसका मतलब यह है कि जापानी सहयोगिता का अर्थ उसकी समझ में आने लगा है?

सहसा मुझे पिछली शाम की बातें याद हो आईं—उसका मुझे यह बताना कि घर पर वह कभी-कभी कितना अकेला महसूस करता था, हालाँकि वह कभी अकेला नहीं होता था। सम्भव है हमारे साथ रहकर उसे अपने पिता का अपने मरीज़ों के साथ सम्बन्ध याद हो आया हो, जिसमें कि पैसे की जगह को कभी-कभी कृतज्ञता और मित्रता ही भर देती थी। क्या इसी की तो सैम-सान खोज नहीं कर रहा? क्या अनजाने में ही अपने पिता के रहने के ढंग का ही तो अनुसरण नहीं कर रहा?

हैरो-सान मेरी दुविधा को बुहार देता है। वह मेरी बाँह पकड़ लेता है।

"सुनो, तुम्हें वह जापानी सुइयों का जोड़ा ख़रीद दूँ, कैसा ख़याल है? वे जो लॉलीपॉप-जैसी दीखती हैं।"

"ओह! बुयेन्स!" मेरा ख़याल सैम-सान से हटकर अपने पर आ जाता है। मैं जानती हूँ कि एक विवाहिता स्त्री का उपहार स्वीकार करना बिलकुल उचित नहीं है, लेकिन मैं क्या करूँ? मेरा मिआज़िमा में नए बुयेन्स पहनने का मन है!. "कितना अच्छा रहेगा," मैं अपनी निर्लज्ज आवाज़ सुनती हूँ। "तुम्हें पता है मेरे पास अपनी चाँदी की थीं जो मैंने...।"

मैं सहसा रुक जाती हूँ, बिलकुल सहसा। सैम-सान ने सब-कुछ भाँप लिया है। मैं उसके देखने के ढंग से समझ जाती हूँ कि उसने जान लिया है, मैंने छोटी बहन की वासन्ती पोशाक ख़रीदने के लिए कैसे पैसा प्राप्त किया है।

"हम किसी और दिन ख़रीद लेंगे," मैं घबराकर कहती हूँ। "अब हमें चलना चाहिए, बहुत देर हो गई है।"

लेकिन हैरो-सान वहीं खड़ा है। वह मुझे अजीब ढंग से देख रहा है। और मैं असह्य आकुलता का अनुभव करती हूँ। आख़िर मैं एस्केलेटर की तरफ़ मुड़ती हूँ। झुंड के पीछे होने से मैं इतना घबरा जाती हूँ कि नीचे की बजाय ऊपर जाती सीढ़ियों पर हो लेती हूँ। आकाश की तरफ़ सरकते हुए मैं अपनी छाती में एक मीठा-सा दर्द महसूस करती हूँ। यह बात अनुचित गर्व की है, लेकिन मुझे हैरो-सान बहुत पसन्द है, और इस बात की खुशी है कि हैरो-सान भी मुझे पसन्द करता है। मुझे लग रहा है कि एस्केलेटर धीमी चाल चलता एक पक्षी है जिसके पंखों पर बैठकर ऊँची उड़ती हुई मैं एक नई और अधिक प्रसन्न दुनिया की ओर जा रही हूँ।

ऊपर पहुँचकर मैं कूदकर उतर जाती हूँ। हमारा छोटा-सा बाक़ी झुंड भी उतर आता है, और वे सब विदेशी नवयुवक को देखकर स्नेह से हँसते हैं।

एस्केलेटर नीचे रेशमी कीड़ों के उस किसान की तरफ़ जा रहा है, जोकि मुँह में उँगली दबाए हमारी तरफ़ देख रहा है, मानो वह एक छोटे लड़के की तरह किसी खेल में से बाहर छूट गया हो। देहाती किसान ने अपनी ज़िन्दगी में कभी ज़ीना ही नहीं देखा था, एस्केलेटर की तो बात ही क्या! वह चढ़ने को तरस रहा है, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ती।

ओह! मेरा किरायेदार, अपनी पच्छिमी तेज़ी से, रेशमी कीड़ों के किसान को बाँह से पकड़कर इशारों से समझा रहा है कि कैसे वह अपने दोनों पाँव एक ही सीढ़ी पर रखकर स्थिर खड़ा रहे और कैसे वह रेंगता यन्त्र उसे ऊपर ले जाएगा। वह ठिगना आदमी ख़ुशी से अपने दाँत निकालकर हँसता है। जैसे ही वह अद्‌भुत जोड़ा—एक फ़्यूजी पहाड़-जैसा ऊँचा, और दूसरा अपने ही रेशमी कीड़ों के घर-जैसा छोटा और गोल—ऊपर पहुँचता है, वह किसान सैम-सान को नीचे जाने वाले एस्केलेटर की तरफ़ खींचता है। वे फिर ऊपर नज़र आते हैं, फिर नीचे जा रहे हैं। हमारा छोटा झुंड खुश होकर अपने पंखों के पीछे दबी हँसी हँसता है। फिर वे मेरी ओर झुकते हैं और अपने रास्ते चले जाते हैं।

रेशमी कीड़ों का किसान और हैरो-सान एस्केलेटर से फिर ऊपर आते हैं। इस बार अमरीकन मेरे साथ हो जाता है, जबकि देहाती अपने प्रिय एस्केलेटर की ओर जल्दी से लौटने से पहले कई बार हमारी तरफ़ झुकता है। उसने तरकीब सीख ली है, और वह तब तक ऊपर से नीचे जाता रहेगा जब तक कि सूर्यास्त के समय दुकान बन्द नहीं हो जाती।

"वाह! क्या आदमी है?" सैम-सान हँसता है। "लेकिन तुम्हारे ख़याल में उसके सिर में क्या ख़राबी है? क्या तुमने किसी चीज़ पर ग़ौर किया है युका-सान—मेरा मतलब है, उसकी ऊनी टोपी के नीचे?"

हम 'नवल-वस्तु विभाग' की ओर चल रहे हैं, और उस जल्दबाज़ी करती भीड़ में यह बहाना बनाना आसान है कि मैंने बात सुनी ही नहीं। हमारी यह ख़ुशनुमा तफ़रीह ख़राब हो, इसका कोई कारण नहीं पैदा होना चाहिए।

"उसने वह ऊनी टोपी अपने सिर से कानों तक खींचकर पहन रखी है," हैरो-सान अपनी बात से नहीं टलता। "तुम जानती हो क्यों? इसलिए कि उसके कान नहीं हैं। हाँ, यह सच बात है कि उस भले आदमी के कान नहीं हैं। तुम जानती हो युका-सान, ऐसा क्यों है? उसकी गरदन पर नीले-पीले निशान हैं, जैसे वह बहुत गहरा जला हो। या फिर किसी जानवर ने उसे नोचा हो।"

मैं अस्पष्ट ढंग से सिर हिलाती हूँ। क्योंकि उसने असलियत नहीं बूझी, इसी से बात यहीं तक रहनी चाहिए। उसे क्यों बताएँ कि वह किस प्रकार का जानवर था जिसने अपने पंखों के निशान हिरोशिमा पर छोड़े—जिसने कि रेशमी कीड़ों के किसान के कान नोच लिये और मेरी बाँह हड्डी के अन्दर तक नोच ली? जितनी अच्छी तरह मैं सैम-सान को जान गई हूँ उससे मुझे पता है कि वह कितना संवेदनशील है...बहुत ही संवेदनशील है वह! वह यह बात जानकर क्यों दुखी हो कि हमारे देश में चौदह साल पहले क्या हुआ था?

"देखो, ये हैं वे...," मेरे स्वर में उस स्थिति से उबरने का भाव स्प्ष्ट है। "बुयेन्स! लॉलीपॉप!"

सैम-सान ग़ौर से काउंटर पर रखे प्लास्टिक के केश-आभूषण को देखता है। वे दर्जनों में हरे रंग और नाप के वहाँ रखे हैं, लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझ पर कौन-से जँचते हैं—और मैं किन्हें जँचती हूँ। क्षण-भर बाद ही सैम-सान फ़ाख़्ता-जैसे भूरे रंग के सिरे वाली 'बुयेन्स' मेरे बालों में लगा रहा है। कैसा भाग्य है कि उसने भी वही चुने! अच्छा है, हमारी रुचि एक-सी है।

"होली टोलेडो!"

"क्या बात है?"

"युका-सान...तुम बहुत सुन्दर हो।"

मैं जानती हूँ कि मैं शरमा रही हूँ। बिना इसका इन्तज़ार किए कि सैम-सान पैसे चुका दे, मैं वहाँ से चल पड़ती हूँ। और फिर मैं अपने को जलपान-काउंटर के पास खड़ी पाती हूँ, जहाँ कई जोड़े हँसी-मज़ाक कर रहे हैं और पहाड़-जैसी ऊँची फेंटी हुई आईसक्रीम और चिकनी 'बनाना स्प्लिट' खा रहे हैं।

"क्या लोगी?" सैम-सान मेरे पास आकर पूछता है।

ऊँचे स्टूल पर बैठती हुई मैं अपने को एक अमरीकी फ़िल्म की पात्र-सी महसूस करती हूँ। असिस्टेंट आर्डर लेने आता है। सब-कुछ कितना अच्छा लग रहा है! जैसे ही हम पारदर्शी नालियों में से ठंडा हरा पानी धीरे-धीरे अपने मुँह में चढ़ाते हैं, सैम-सान की और मेरी आँखें टकराती हैं। हम दाँत उघाड़कर एक-दूसरे की तरफ़ हँसते हैं और मैं निश्चित रूप से जान जाती हूँ कि हम दोनों दोस्त बन गए हैं।

छह

ज़रा-सा चूक गई। और यह स्थिति मेरी थोड़ी-सी सावधानी से बच सकती थी। किसी तरकीब से मैं अपने किरायेदार को थोड़ा समय और बाहर रख लेती, तो मैं उसे अपने पुराने कलाकार मित्र माएदा-सान से मिलने से बचा सकती थी। लेकिन आजकल मैं एक भँवर में जीती हूँ। अपने हैरो-सान के लिए चीज़ें ठीक करने में व्यस्त, मैं भोर के वक़्त अपना फ़्युसुमा खोलने से लेकर रात को अपना फ्युटोन पहनने तक अपने पैरों पर ही रहती हूँ। इसी से मेरा टाइम-टेबल गड़बड़ा गया है।

उफ़! कभी-कभी मैं अपने से बड़ी हताश हो जाती हूँ। विवेक और बुद्धि हम जापानी स्त्रियों के बुनियादी गुण हैं, लेकिन मैं अपनी मामा की तरह या झट सोच सकने वाली आंट मात्सुई की तरह समझदार नहीं हो पाई। क्या इसलिए कि मैं स्वभाव से बहुत विनोदप्रिय हूँ? मुझे बहुत शौक है, बातें करने का, गाने का, सामिसेन बजाने का! उफ़! अपनी इस ग़लती से शायद मुझे अपने आगे के किरायेदारों से हाथ धोना पड़े।

जैसे ही मैंने अपना गेट खोला, देखा कि माएदा-सान मेरी तीन पड़ोसिनों के साथ एक क़तार बनाए हमारे स्नान-गृह की बेंच पर बैठा है। मुझे याद आया कि आज बुध की शाम है, नहाने की शाम। हमारा लकड़ी का दरवाज़ा दिन-भर की धूप से अभी तक गरम है, लेकिन वह मुझे ठंडा महसूस हो रहा है। ख़ैर, सिवाय इसके कुछ नहीं किया जा सकता कि उन्हें झुककर अभिवादन करूँ, मुस्कराती हुई आगे बढ़ूँ, और वही नपी-तुली बातें नम्रतापूर्वक दोहराऊँ जिनकी कि परिचय कराते समय उपेक्षा की जाती है। हालाँकि मैं अपने किरायेदार को अन्दर चलने के लिए आँख से इशारा करती हूँ, पर मेरी कोशिश तुरन्त असफल हो जाती है। माएदा-सान उसी समय, अपनी अतुलनीय मुस्कराहट होठों पर लिये विदेशी की ओर देख लेता है।

''अपनी मित्र के सम्मानित मेहमान से मिलकर बड़ी खुशी हुई।''

माएदा-सान एक कर्कश फुसफुसाहट में ही बोल सकता है लेकिन उसका देखने का भाव जो उसके शब्दों को ढँक लेता है, किसी को भी उसकी गले की टूटी-फूटी आवाज़ की बात भुला देता है। एक कोमल, भद्र व्यक्ति में क्या होता है, जो किसी

को एकदम आकर्षित कर लेता है? मेरा पुराना मित्र माएदा-सान अपने को एक बाग़ीचा समझता है, एक छोटा-सा बाग़ीचा, जिसमें लगातार बाग़बानी की जा रही हो। रोज़ वह अपने अन्दर का एक चप्पा निख़ारता है—उसे खोदता है, साफ़ करता है और पानी देता है, नई खाद में नए बीज बोता है। अपने नम्र और प्रभावशाली ढंग से उसने मुझे भी ऐसा ही करने की राय दी है। नहीं तो, माएदा-सान के विचार में, आदमी के अन्दर बंजर भूमि रह जाती है—ज़हरीले साँप और दुर्गन्धित घास-फूस वाली भूमि जोकि हर चीज़ का दम घोट देती है।

हमारी हरी बेंच पर से धूल झाड़ते हुए वह हमारे किरायेदार को वहाँ बैठने के लिए आमन्त्रित करता है और मैं एकाएक महसूस करती हूँ कि माएदा-सान के व्यक्तित्व ने उस नवयुवक को आकर्षित कर लिया है। अवश्य ऐसा है। मेरा मतलब है सैम-सान व्यक्ति ही ऐसा है जो जानना चाहेगा कि माएदा-सान कौन है—उसकी कर्कश, अप्रिय आवाज़ और उसके झुलसे हुए मांस के बावजूद हैरो-सान उत्सुकता से बैठ जाता है और एक बार और भद्रतापूर्वक झुकने के बाद माएदा-सान भी उसका साथ देता है। तीनों औरतें उचित फ़ासले पर हरी घास पर घुटनों के बल बैठ जाती हैं। अपनी आशंका को अत्यधिक उज्ज्वल मुस्कराहट में छिपाती मैं मकान की तरफ़ चल देती हूँ।

"मैं क्षमा चाहती हूँ। मुझे अपने मेहमान के लिए खाना बनाना है।" मैं कहती हूँ।

पर मैं रसोई की तरफ़ नहीं जाती। (मेरा क़तई वैसा इरादा नहीं था।) एक कुशल स्त्री को किसी स्थिति को अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहिए, आंट मात्सुई ने मुझे यह सिखाया है, इसी से मैं शोजी के पीछे खड़ी सुनती रहती हूँ—इसके लिए तैयार कि अगर माएदा-सान ने अधिक खुलकर बात करनी चाही, तो अपने किरायेदार को झपट्टा मारकर वहाँ से ले जाऊँगी। कहने का मतलब कि मैं बहुत बेचैन हूँ। प्रारम्भ में सब-कुछ ठीक चलता लगता है। माएदा-सान सिर्फ़ उन्हीं शिष्टाचार की बातों तक सीमित रहता है जोकि सभ्य व्यवहार के लिए ज़रूरी मानी जाती हैं।

"यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि आप इतवार को मिआज़िमा चल रहे हैं। मैं भी अपने अन्य दोस्तों के साथ जा रहा हूँ। आशा है आपसे वहाँ मुलाक़ात होगी, मिस्टर विलोबी!"

(मेहरबानी करके चुप रहो बी बुलबुल! माएदा-सान की आवाज़ इतनी कर्कश है कि मुश्किल से कुछ सुन पा रही हूँ। तुम्हारे इतने ऊँचे गाने से मुझे छिपकर सुनने में कितना ज़ोर पड़ता है! डार्लिंग! तुम मेरे कान तो नहीं फाड़ देना चाहतीं? क्यों?)

"वाह, यह तो बहुत अच्छा रहेगा!"

मेरे किरायेदार की आवाज़ ऊँची और उत्साह-भरी है। (माएदा-सान की घुटी फुसफुसाहट से कहीं भिन्न) और वह मेरे मित्र के चेहरे से नज़र नहीं हटा पा रहा। अपने भूरे किमोनो के गरेबान में उस बूढ़े कलाकार ने प्रथानुसार फूल लगा रखा है और उसके चेहरे पर नम्र मुस्कान है, जो उसकी नुकीली ठोड़ी और लम्बी प्यारी नाक का ही एक हिस्सा है।

"तुम ओफ्युरो के शौकीन हो?" माएदा-सान पूछता है। और मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि उसने ऐसा सुरक्षित विषय चुना है। जब मेरा किरायेदार यह बताता है कि उसे अभी तक जापानी स्नान लेने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ, तो मेरा पुराना मित्र उससे पूछता है कि क्या वह इस संस्कार की दीक्षा लेना पसन्द करेगा?

"हाँ, अवश्य मैं आपके असाधारण देश के बारे में सब-कुछ जानना चाहूँगा।" हैरो-सान उत्साहित होकर कहता है, जिसका कि उसके विदेशी अन्दाज़ में अपना ही एक आकर्षण है। माएदा-सान, जोकि लोगों को कम ही पसन्द करता है, उससे खुश है। तो तीन तालियाँ...जैसा कि पच्छिम में कहा जाता है।

"ख़ैर, जापानी लोग गरम पानी के लिए पागल रहते हैं।" माएदा-सान समझाता है। "जैसे हर अमरीकन काकटेल के लिए और अंग्रेज़ चाय के लिए, वैसे ही हर जापानी..."

"दुनिया-भर में आप लोग स्नान के बारे में बहुत सचेत माने जाते हैं," सैम-सान बात पूरी करता है। "और सबसे सुथरे!"

"निस्सन्देह यह सच है," माएदा-सान सच्चे गर्व से कहता है। "तो, मेरे दोस्त, हमारे ओफ़्युरो के बारे में सबसे विशेष बात यह है कि यह स्नान का पानी नहाने के लिए नहीं होता।"

"नहाने के लिए नहीं होता?"

"नहीं। नहाओ बाहर। पानी का बड़ा टब सिर्फ़ इसलिए होता है कि जिस्म को गरमाया जा सके, आराम और सुख दिया जा सके। देखो, स्नान-प्रक्रिया इस तरह चलती है। पहले घर का सबसे बड़ा व्यक्ति भाप छोड़ते बाथ में दाख़िल होता है। वह बाहर निकलता है। फिर बेटा दाख़िल होता है। वह बाहर आता है। फिर मामा-सान दाख़िल होती है और बाहर आती है...।"

"मतलब कि माँ बेटी के बाद स्नान करती है?" सैम-सान अचकचाया-सा पूछता है और मैं अपने को शोजी के पीछे शरमाती महसूस करती हूँ। मेरा मित्र उस अमरीकन के विचित्र प्रश्न से कैसा महसूस करेगा? अपने नवयुवक किरायेदार को मैं इतना पसन्द करती हूँ कि चाहती हूँ भागकर बाहर चली जाऊँ और दूसरों के मन में आते ग़लत विचारों से उसकी रक्षा करूँ।

"बेशक!" माएदा-सान उसे उत्तर देकर चतुरता से बात आगे बढ़ाता है। "फिर लड़कियाँ खौलते गरम बाथ में उतरती हैं—और बाहर आती हैं। फिर विनम्र नौकर,

अगर कोई हो। घर में कोई छोटा पालतू कुत्ता हो, तो वह सबसे अन्त में स्नान करता है।''

''यही एक बात है मेहरबानी की!''

''जी!''

''नहीं, कुछ नहीं,'' सैम-सान लज्जित हो सकता है।

ओह! कितना प्यारा है यह हमारा हैरो-सान! रेशमी बालों की एक लट उसके कान के आगे-पीछे झूल रही है। मेरी बहुत इच्छा हो रही है कि उसे अपनी उँगली से छुऊँ। मैं अपने को याद दिलाती हूँ कि मनुष्य को ऐसे ख़यालों को तभी दबा देना चाहिए जबकि वे अभी पनप रहे हों।

माएदा-सान अदा से अपना हाथ उठाता है, रंग के निशानों से भरा, जैसे कि मेरे ख़याल में हर कलाकार के हाथ होते हैं।

''एक बात और।'' वह कहता है, ''स्नान करने से पहले मेरे दोस्त, हमेशा याद रखो कि अपने परिवार की तरफ़ नीचे झुककर कहो, 'हो फ़्युरोनी...मैं स्नान करने लगा हूँ।' जब बाहर निकलो तो झुककर कहो, 'हो फ़्युरो माशिता, मैंने स्नान कर लिया है।' समझे?''

''हो फ़्युरोनी!'' हमारा उतावला अमरीकन अपनी लम्बी टाँगों पर उछलकर चिल्लाता है। वह ख़ुश नज़र आता है, जैसे वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ हो, जो उसे सचमुच पसन्द है। ज़रा बताना, मैं स्नान-प्रक्रिया में कौन-से स्थान पर आता हूँ? कुत्ते के बाद?''

माएदा-सान मुग्ध और रसिक ढंग से मुस्कराता है।

''यह देखते हुए कि तुम हमारे सम्मानित मेहमान हो, तुम्हें अवश्य सबसे पहले स्थान देंगे। दरअसल हम सब लोग यहाँ पानी गरम होने का इन्तज़ार कर रहे हैं। ये तीन स्त्रियाँ, मेरी ही तरह सन्ध्या-स्नान के लिए आई हैं।'' माएदा-सान मेरी पड़ोसिनों की तरफ़ इशारा करता है, जोकि चिकनाहट के धब्बों वाली मोम्पो पहने घास पर घुटनों के बल बैठी हैं। (उफ़्! उनकी घटिया पुरानी काम करने की पैंटें देखने लायक हैं!)

''तुम्हें मालूम है,'' वह कहता जाता है, ''साधनों की कमी के कारण ये औरतें अपने टब नहीं ख़रीद सकतीं। इसी से युका-सान और मैं सप्ताह में दो बार इन्हें अपने-अपने घर निमन्त्रित करते हैं। युद्ध से पहले बात बिलकुल दूसरी थी। अब हम शहर के पब्लिक बाथ में सम्मिलित नहीं हो सकते। इसलिए...''

''नहीं हो सकते?''

ओह! मैं जानती थी! जिस क्षण से मैं डरती थी, वह आ गया। ऐसे क्षण आए बिना नहीं रहते।

"चाय तैयार है।" अपनी शोजी के पीछे से बाहर आकर मैं चहकते स्वर में कहती हूँ, "कृपया अन्दर चलो, सैम-सान!"

मुझे पहले से जानना चाहिए था। सैम-सान की हठी प्रकृति, जिसकी कि मैं बहुत प्रशंसक हूँ, इस समय ज़िद में बदल जाती है। वह मेरी और चाय की अवहेलना कर देता है।

"क्यों सम्मिलित नहीं हो सकते?" वह आग्रह के साथ अपनी बात दोहराता है।

"अपने चकत्तों के कारण," मेरा मित्र कोमल ढंग से जवाब देता है। "विस्फोट से पैदा हुए चकत्तों के कारण। तुम्हें शायद मालूम नहीं मेरे दोस्त कि तुम एक एटम-बम से आहत व्यक्ति के साथ बात कर रहे हो।"

उफ़! अब तो माएदा-सान ने सारा भेद ही खोल दिया—जैसा कि अमरीकन फ़िल्मों में कहा जाता है। मेरे ख़याल में यह उसने जान-बूझकर कहा है। इससे ज़्यादा बुरा क्या हो सकता है? उस-जैसा चतुर व्यक्ति बिना किसी ठोस वजह के एक मेहमान को भौंचक नहीं कर सकता।

"हम लोग—यका-सान और हम सब—एटम-बम से बच रहे एक लाख व्यक्तियों में से सिर्फ़ पाँच हैं।" माएदा-सान बात जारी रखता है, "हममें से कई बुरी तरह जल गए—इस बात को छोड़ दो कि उनके अन्दर कितने गहरे ज़ख़्म हुए! यही कारण है कि हृष्ट-पुष्ट हिरोशिमावासी, जो युद्ध के बाद यहाँ आए हैं, हमसे कन्नी काटते हैं। एटम-बम से बचे लोगों के चकत्तों को, उनके खुरदरे घृणित ज़ख़्मों को, स्नान-गृह में देखकर उन्हें उबकाई आती है।

पहली बार मुझे अपने प्रिय मित्र माएदा-सान पर गुस्सा आता है। मेरे युवक किरायेदार के बारे में सबसे पहली बात यह है कि वह बहुत संवेदनशील है। यह सच है कि उसका ऊँचा कद्दावर जिस्म बहुत पुष्ट है। लेकिन माएदा-सान को, जोकि मानव-प्रकृति के बारे में सब-कुछ जानता है, यह भाँप लेना चाहिए था कि यह अमरीकन अन्दर से कितना कोमल है। फिर क्यों नहीं वह अपनी सहज कोमलता से उसके साथ व्यवहार करता? मुझे स्थिति को सँभालने की कोशिश करनी चाहिए।

"क्या मैं चाय यहीं ले आऊँ?" मैं हताश भाव से पूछती हूँ।

कोई भी जवाब नहीं देता। लेकिन् मैं जल्दी से घर में वापस चली जाती हूँ, और ट्रे लेकर भागती हुई वापस आ पहुँचती हूँ। हरी चाय लाल पालिश वाले मेरे ख़ूबसूरत कटोरों में प्यारी लगती है। यद्यपि मेरे ओफ्युरो के लिए आए मेहमान चाय स्वीकार करते समय मेरी ओर प्रसन्न भाव से झुकते हैं, फिर भी वे तनाव से बाहर नहीं निकल पाते। मैं माएदा-सान की आँखों में देखकर उसे सचेत करने की कोशिश करती हूँ। मैं सफल भी हो जाती हूँ, और अपनी उँगलियाँ होठों पर रख लेती हूँ। लेकिन आश्चर्य की बात कि वह अपना सिर हिला देता है। उस क्षण मैं महसूस करती हूँ कि

माएदा-सान का तरीक़ा मुझसे भिन्न है। यह बात साफ़ है कि वह स्थिति अपने हाथ में लेना चाहता है। एकाएक मुझे लगता है कि मैं उससे नाराज़ नहीं हूँ। मैं स्वयं बहुत हल्की महसूस करती हूँ।

"यह हरादा-सान एटम बम के शिकार लोगों का एक सही उदाहरण है," बूढ़ा कलाकार कहता जाता है और हमारी तीन मित्रों में से एक से नज़र मिलाता है जो पीछे घास पर घुटने टेके बैठी है। "इसने मुझसे कहा था कि आपसे कहूँ कि उसके बदसूरत चेहरे को देखकर आप घबरा न जाएँ। वह महसूस करती है कि उसका चेहरा बहुत सपाट है। ख़ुशक़िस्मती से उसके ऊपर रेलवे स्टेशन आ गिरा था। मैं इसे ख़ुशक़िस्मती कहूँगा, क्योंकि उसके सीमेंट ने हरादा-सान को घातक प्रकाश से बचा लिया। उफ़! मेरी मित्र हरादा-सान ने कितनी मुसीबतें झेली हैं। उसका फूल सजाने का एक अच्छा-सा स्कूल था, जो उसने खो दिया। प्यारे-से लड़के थे—वे खो दिए। अगस्त के उस विख्यात दिन एक मिनट में ही इसने पति, स्वास्थ्य और सुन्दरता सब-कुछ खो दिया। अब अन्य बचे हुए ग़रीब लोगों की तरह इसने अपना नाम म्यूनिसिपल दफ़्तर में दिन के मज़दूरों में दर्ज करा रखा है और सड़कें कूटती है।"

सैम-सान अपनी हल्की भूरी चमड़ी के नीचे पीला पड़ गया है। वह एक नज़र हरादा-सान को देख लेता है। फिर यह निश्चय नहीं कर पाता कि अपनी नज़र कहाँ टिकाये।

"अब हरादा-सान आधी रात को उठती है और अपनी सूजी टाँगों पर मीलों चलकर जाती है," माएदा-सान बोलता जाता है। "दिन-भर गधों की तरह काम करने के बाद घिसटती हुई समुद्र के किनारे से खाने लायक नरम सीपियाँ चुनने जाती है, या फिर पहाड़ियों से बूटियाँ ढूँढने। इतना कम पैसा मिलता है कि जीते रहने के लिए चावल भी नहीं ख़रीद सकती। अभी 'अरुबीत' भी करती है—थोड़े-से और येन कमाने के लिए पूरी रात जागकर दूसरा काम करती है। अपनी उँगलियों से मछली फाड़कर होटलों के लिए छोटे-छोटे टुकड़ों में काटती है। अँधेरी रात में अकेले बैठकर मछली के टुकड़े काटना बड़ी मेहनत का काम है। इस काम में भी कई हज़ार में से—या दस हज़ार में से एक है। मेरे दोस्त, एक मुद्दत हो गई हरादा-सान को दिल खोलकर हँसे हुए।"

माएदा-सान बोलते-बोलते चुप कर जाता है और मैं जल्दी से हैरो-सान की तरफ़ देख लेती हूँ। उफ़! वही निराशा की झलक—जोकि मैं जानती थी कि हमारी और हमारी गली की असलियत मालूम होने से उस पर छा जाएगी। लेकिन तभी मेरी नज़र हरादा-सान की तरफ़ चली जाती है और मुझे हैरो-सान को लेकर इतना दुःख नहीं रहता। कितनी अजीब बात है—हालाँकि जब से यह आया है मैं भरसक कोशिश करती रही हूँ कि उसे पता न चले।

मैं आहिस्ता से चलकर ताज़ा घास पार करती हुई हरादा-सान की तरफ़ जाती हूँ। अपनी रंगीन ट्रे के साथ उसके सामने झुकती हूँ।

"चा," मैं कहती हूँ। "दोज़ो!"

हरादा-सान चाय का गोल लाल कटोरा, जो मैं उसकी तरफ़ बढ़ाती हूँ, मेरे हाथ से ले लेती है। जैसे ही हमारे हाथ एक-दूसरे से पल-भर के लिए छूते हैं, हमारे बीच मित्रता की एक चिनगारी सुलग जाती है। मेरा मन करता है कि मैं हरादा-सान को अपनी बाँहों में भींच लूँ, जैसे कि मैंने एक बार दो पच्छिमी औरतों को रेलवे स्टेशन पर एक-दूसरे को आलिंगन करते देखा था। लेकिन जापानियों का दुःख हमेशा अन्दर ही बन्द रहना चाहिए। हमारी दो जोड़ी आँखें फिर भी सब-कुछ कह देती हैं और गरम चाय से उठती भाप कृपापूर्वक हरादा-सान के बदसूरत नक्शों को ढक लेती है।

तभी एक असाधारण घटना होती है। मेरी जैसे अन्दर की आँख खुल जाती है। उस भाप के पर्दे के पीछे मुझे वह हरादा-सान नज़र आती है जिसका चेहरा अभी एटम-बम ने विकृत नहीं किया था—उसका युवा, सुन्दर और प्यार-भरा चेहरा। हरादा-सान साँस खींचती है। कोमल भाव से आगे झुकती है। मेरी आँखों की पुतलियों में वह अपना सही रूप देखती है, और उसका भद्दा चेहरा आभार की मुस्कराहट से फैल जाता है। एक गूँजती-सी युवा हँसी उसके गले से बाहर आती है।

'आरिगोतो' वह फुसफुसाती है और चाय ले लेती है। 'धन्यवाद!' हरादा-सान के कन्धों के ऊपर से मैं सैम-सान का चेहरा देख सकती हूँ। उसकी आँखों में कितनी व्यथा है! वह असलियत जान गया है। क्या अब वह हमारे दुखों से दूर भाग जाएगा और अपने दोस्तों से हमारी सिफ़ारिश नहीं करेगा? बहरहाल, यदि वह हमें छोड़कर जाना ही चाहेगा तो चला जाए, क्योंकि ये मेरे लोग हैं। मेरा पूरा ध्यान, मेरा पूरा प्यार, अब हरादा-सान की ओर मुड़ गया है। मेरी आँखों के आईने में अपने बेदाग़ चेहरे की परछाईं देखकर वह अब भी मुस्करा रही है और मैं भी अपनी मित्र की तरफ़ देखकर मुस्करा रही हूँ—उस भाप के पीछे से जोकि चाय के लाल प्याले से उठ रही है।

सात

यदि सैम-सान जापानी होता तो वह भी यही जताता जैसे कुछ हुआ ही न हो। ख़ैर, वह जापानी नहीं है। हिरोशिमा के बाहरी खोल के भीतर की पहली झलक ने ही उसे बुरी तरह विचलित कर दिया है और वह नहीं जानता कि इसे कैसे छिपाये। उसके होठों के कोने सख़्त हो रहे हैं और वह शेष मेहमानों के जाने के बाद बाग़ में चक्कर काट रहा है। हैरो-सान जैसे हैरो-सान रह ही नहीं गया है।

मैं चुपके से घर के अन्दर चली जाती हूँ, क्योंकि यह स्पष्ट है कि हमारा किरायेदार एकान्त चाहता है। रसोईघर में मैं अपने मिट्टी के बरतन में चावल डालकर ऊपर से पानी बहने देती हूँ। मेरा प्यारा रसोईघर! मैं इसे कितना प्यार करती हूँ! यह जगह छोटी-सी, ख़ाली और हर आधुनिक सुख से रहित है, फिर भी यहाँ मैं हर जापानी स्त्री की तरह कितनी सुखी महसूस करती हूँ! अपने रसोईघर में अकेली बैठकर हम अपने घुटे दुखों को बाहर निकाल सकती हैं और अपनी उन चिन्ताओं को अपने से स्वीकार कर सकती हैं, जो हर समय हमें दवाए रखनी होती हैं। खड़े होकर समुद्री सेवार में मांस मिलाकर बनाते हुए मेरा ध्यान फ़्यूमियो की तरफ़ चला जाता है और एक काले बाज़ की तरह भय मुझ पर छा जाता है।

टन्-टन्। मैं घंटे गिनती हूँ। पता चलता है कि आठ बज गए हैं। हर शाम फ़्यूमियो गराज से घर पहुँचने में देर लगाता है और हर रात जब वह पहुँचता है तो पहले से ज़्यादा थका हुआ लगता है। (जिस फ़्यूमियो से मैंने शादी की थी वह तो पूरा रास्ता भागते हुए दस मिनट में तय कर लेता था—अपने से बड़े नाप के फ़ौजी बूटों में भी!) मैं इतनी उत्सुक हूँ कि जब आग जलाने जाती हूँ, तो मेरी काँपती उँगलियों से माचिस गिर जाती है जिससे जलकर मेरे युकाता में एक छेद हो जाता है।

एक ठहाके की आवाज़ हमारे घर को हिला देती है। जल्दी से मैं 'शोजी' की दरार में से झाँकती हूँ और देखती हूँ कि सैम-सान बच्चों के साथ ज़मीन पर बैठ चुका है। सैम-सान उन्हें बता रहा है कि उसकी ज़ेब का रूमाल एकाएक तीखे कानों वाला ख़रगोश बन सकता है। वे अन्दर बहुत सुख से समय बिता रहे हैं। कितना प्यारा,

कितना सहज यह युवा अमरीकन है—बिलकुल ऐसा जैसे कि हमारे परिवार का ही एक सदस्य हो, हालाँकि तीन दिन पहले तक हमने इसे कभी देखा भी नहीं था। उसने यहाँ रहना, ज़मीन पर सोना और हर प्रकार की असुविधा सहना पसन्द किया है और वह हमारे छोटे-से घर के वातावरण में ख़ुश है। बहुत प्रसन्न चित्त से मैं खाना बनाने लौट आती हूँ।

आह! मैं बाग़ में अपने पति के क़दमों की आहट और लकड़ी के दरवाज़े के खुलने और बन्द होने की आवाज़ सुनती हूँ। इस संकेत पर मैं लकड़ी के पतीले में चावल और रोग़न किए सुन्दर फूलदार डूँगों में समुद्री सेवार में मिला मांस डाल देती हूँ। मैं दूसरे कमरे में उन्हें एक-दूसरे को 'हेलो' करते और मिचिको को 'कोनिचिवा पापा सान्' कहते सुन सकती हूँ। मैं निश्चय करती हूँ कि यह शाम बहुत ख़ुशनुमा ढंग से बिताऊँगी जिससे सैम-सान उन दुःखदायी बातों के बारे में, जो उसने सुनी हैं, और न सोचे। कितने अफ़सोस की बात है कि ओहात्सू 'अरुबीत' पर गई है। उसका सुन्दर चेहरा (जो सम्भवतः सैम-सान को तोशो हामादा की याद दिलाता है) हमेशा उसे प्रसन्नचित्त रखता है।

''तुम लोग कितने ख़ुश नज़र आ रहे हो!'' 'शोजी' खोलते ही उन्हें नीची खाना खाने की चौकी के इर्द-गिर्द बैठे देखकर मैं कहती हूँ। चौकी के नीचे से अँगीठी की सुखदायक आँच आ रही है। मिचिको हैरो-सान को बड़ी गम्भीरता से चाप स्टिक का प्रयोग सिखा रही है।

''दोज़ो,'' मेरी हीरे-सी बच्ची धीरज के साथ कहती है। इस तरह ''सैमी!''

''मिचिको!'' मैं आश्चर्य से चीख़ती हूँ।

''मैंने ही इससे कहा है कि मुझे सैमी कहकर बुलाए,'' मेरा किरायेदार समझाता है और मेरी ओर देखकर उसी तरह मुस्कराता है। वह अपनी बाँह मिचिको के गिर्द डालकर उसे छाती से सटा लेता है। ''तुम मिचिको को मत डाँटो यूका-सान! यह मेरी लड़की है।''

मैं चावल का डूँगा चौकी के बीचों-बीच रख देती हूँ। जैसे ही मैं उसका ढक्कन उठाती हूँ, भाप का एक सुखद झोंका ऊपर उठ आता है। सैम-सान अपनी हाथी दाँत की चाप स्टिक्स को बड़े हास्यास्पद ढंग से चलाने लगता है।

''भद्दे छुरी-काँटों का इस्तेमाल करने की ज़रूरत ही क्या है? मैं आज से चाप स्टिक्स ही इस्तेमाल किया करूँगा।'' वह कहता है और फ़्यूमियो दाँत निकालकर मुस्कराता है। ओह, मेरे प्यारे पति, तुम्हारे पीले होठों को ऊपर उठते देख मुझे कितनी ख़ुशी होती है! इन दिनों यह चीज़ बहुत ही दुर्लभ हो गई है। मैं शरमाकर मुस्कराती हुई उसे देखती हूँ। फिर अपनी आँखें झुका लेती हूँ, यहाँ तक कि अपनी पलकें मुझे गालों को छूती महसूस होती हैं। यह फ़्यूमियो को घबरा देता है कि मैं उसके अपने

प्रति भावों को लोगों के बीच प्रकट करूँ, लेकिन स्नेह की एक लहर मेरे और मेरे पति के बीच दौड़ जाती है।

मैं सैम-सान के पास घुटनों पर झुककर उसके आगे सूप का डूँगा रख देती हूँ। उसके ऊपर से ढक्कन हटा देती हूँ जिस पर एक पीले मेंढक को खाती बत्तख का डिज़ाइन बना है।

"मुझे उम्मीद है तुम्हें हमारा समुद्री सेवार में मिले मांस का सूप पसन्द आएगा, सैम-सान! इसमें उन फूलों का इत्र पड़ा है जिन्हें ओहात्सू ने बाग़ में उगाया है।" इसे वह पसन्द आ जाए, इसीलिए मैं धीरे से जोड़ देती हूँ।

"ओहात्सू ने उगाया है?"

हमारा किरायेदार हैरान हो जाता है कि ओहात्सू-जैसी नाज़ुक लड़की क्या सच ही एक बाग़ की देखभाल कर सकती है। सूप को बिना चखे ही वह कहता है, "बहुत स्वादिष्ट है।" फिर एक स्नेह-भरी नज़र हमारे कमरे पर डाल लेता है। "यहाँ निःसन्देह बड़ा अच्छा लगता है।" वह खुशी से कहता है और मुझे लगता है कि वह अपने पुराने ढंग पर लौट आया है।

मैं भी कमरे में चारों तरफ़ देखती हूँ। विदेशी की दृष्टि से देखने पर मुझे भी वह नया-सा लगता है। यह कितना साफ़ और सुखदायक है! हमारी चित्रांकित दीवार पर फूलों का एक गुच्छा माएदा-सान ने बनाया है। उसके नीचे प्राचीन जापानी शब्द लिखे हैं : "जब तुम्हारे मन में फूल खिलेंगे तो सारी दुनिया उनकी ख़ुशबू से महक उठेगी।" बेल-बूटों के नीचे फूलों की वास्तविक व्यवस्था इतनी विनीत है कि देखने वालों के मन में वह नम्र विचार भर देती है। यही मेरे ख़याल में फूलों का असली उद्देश्य है। (तीन सफ़ेद नलिनी के फूल, जो ख़ुद कुछ नहीं चाहते, केवल दुखी दिलों के लिए शान्ति माँगते हैं, एक सफ़ेद फूलदान में से बाहर निकल रहे हैं।) फिसलते दरवाज़ों की दरार में से मैं अपने पुराने पत्थर के लैम्प के आकार का अन्दाज़ा लगाती हूँ। वह हमारे पीले चेरी के पेड़ पर धीमी रोशनी डालता है। उस पेड़ की कलियाँ अभी अपने-अपने शिशु-वस्त्रों में लिपटी सो रही हैं।

"यह है घर," हैरो-सान एहसास के साथ कहता है। "तुम जानती हो युका-सान कि एक मकान को घर बनाने के लिए तुम्हारी-जैसी लड़की की ज़रूरत होती है—एक आदमी को पति बनाने के लिए और बच्चों को—उन्हें तुम-खुद ही देख लो।"

मैं घबराहट में घिर जाती हूँ। मेरी-जैसी तीस साल की विवाहिता स्त्री पर प्रशंसाओं की इतनी बौछार! न जानते हुए कि अपनी नज़र कहाँ रखूँ, मैं अपना लजाता चेहरा मिचिको के बालों में छिपा लेती हूँ। वह अपनी बाँहें मेरी गरदन में डाल देती है। सच, ज़िन्दगी कितनी प्यारी है! मैं आभार से इस तरह फट पड़ना चाहती हूँ जैसे तेज़ धूप में नारंगी। अपनी ख़ुशी को छिपाने के लिए मैं रसोईघर में जाकर

स्वादिष्ट, कच्ची, पीली-सफ़ेद मछलियाँ और कटी गाजर का अचार ले आती हूँ। इस विशेष खाने के चखे जाने के बाद, जिसे कि मैं हैरो-सान के लिए विशेष रूप से ख़रीदकर लाई थी, मैं साके उँड़ेलती हूँ। अपने पैरों की उँगलियों को मोड़ती हुई ख़ुशी से मैं पीछे हटकर बैठ जाती हूँ और अपने परिवार को खाते और गप करते देखती रहती हूँ।

मेरे प्रिय लोग! मेज़ के नीचे पाँच जोड़ी पैर गरम हो चुके हैं और वह गरमी ऊपर हमारी पाँच जोड़ी टाँगों तक, जोकि मुलायम रूई-भरे कपड़े से ढकी हैं, फैल रही हैं। पाँच जोड़ी कुहनियाँ चौकी के ऊपर टिकी हैं। पाँच प्रसन्न चेहरे खाने का गन्धमय धुआँ ले रहे हैं। चाप-स्टिक्स लगातार चल रही हैं।

प्याले साके से भरे हुए हैं। जैसे ही वह चावल की पीली शराब हमारे गले से नीचे उतरकर पेट में पहुँचती है, पेट भी हमारी ही तरह ख़ुश और गरम हो उठता है। अँगीठी तथा खाने और शराब की गरमी हमें सन्तोष का अनुभव करा रही है।

ओह, मैं तो आपे से बाहर हुई जा रही हूँ—इस बात को महसूस करते हुए कि मैं अपने घर और परिवार को कितना प्यार करती हूँ! मैं एकदम झेंप जाती हूँ। सालों से मैंने यही सोचा है कि कैसे अपने घोंसले को फिर से ठीक करूँ, उसे मुलायम परों से सुखद बनाऊँ और अपने छोटे बच्चों के लिए चोग़ा जुटाऊँ। ओह, मैं बहुत स्वार्थी रही हूँ, 'अपने' और 'मेरे' के बीच में ही व्यस्त! मेरे इस शहीद हुए शहर में करने को बहुत-कुछ है, हमारे उन गिरोहों को ही सहायता की इतनी आवश्यकता है जो विध्वस्त लोगों के लिए काम कर रहे हैं। माएदा-सान मुझसे कहता है कि मुझे उन्हें भी कुछ समय और स्नेह देना चाहिए। लेकिन क्या माएदा-सान लोगों से बहुत ज़्यादा की अपेक्षा नहीं करता?

''ज़रा मेरी तरफ़ ध्यान दीजिए, युका-सान, फ़्यूमियो-सान!''

मैं उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर झुकती हूँ और फ़्यूमियो भी नम्रता से झुकता है।

''मैं संसार के सबसे अच्छे जोड़े से मिलने की खुशी में पीना चाहता हूँ।'' हैरो-सान कहता है। ''तुम दोनों को सुखी लम्बी आयु मिले। तुम्हारे बच्चों को सुखी जीवन मिले। और, यह देखते हुए कि यह जापान है, तुम्हारे सब आदरणीय पोते-पोतियों को भी!' सैम-सान हँसता है।

उसे थोड़ी चढ़ गई है, फिर भी वह कितना प्यारा है!

वह अपना प्याला ख़ाली कर देता है और फिर से भरने के लिए आगे बढ़ा देता है।

''और अब,'' सैम-सान ज़ोर से कहता है, ''हमें सबकी ख़ुशहाली के लिए पीनी चाहिए।''

मैं फ़्यूमियो को अनुवाद करके समझाती हूँ। फिर बच्चों के लिए थोड़ी और शराब उँडेल देती हूँ। मैं अपना ख़ूबसूरत प्याला उठाती हूँ, जिसके अन्दर लाल बेरी का चित्र बना है। मैं अपने मेहमान की तरफ़ झुकती हूँ, फिर अपने पति की तरफ़, फिर अपने बेटे की तरफ़ और सबसे अन्त में अपनी लड़की की तरफ़। उसके बाद मैं अपने पति की तरफ़ फिर मुड़ती हूँ और—उफ़्! गरम शराब मेरे हाथ पर गिर जाती है। जैसे ही मैं फ़्यूमियो की तरफ़ देखकर मुस्कराती हूँ, हमारी आँखें टकराती हैं, वैसे ही उसकी काली युवा आँखों में मैं क्या देखती हूँ—निराशा! वे दुःख से धधक रही हैं। दो आँसू उसकी लम्बी बरौनियों में पल-भर काँपते हैं, फिर गालों से नीचे ढुलक आते हैं।

एक सर्द हाथ जैसे मेरे दिल को जकड़ लेता है। मुझे अपनी चीख़ दबानी पड़ती है। अब मुझे पता चलता है कि फ़्यूमियो को जो हुआ था, वह लू लगना नहीं था। इस डर से कि मैं अपना संयम न खो बैठूँ, मैं अपने पैरों पर उचककर पीछे फ़्युसुमा की तरफ़ बढ़ती हुई बुदबुदाती हूँ, "कृपया मुझे क्षमा करें।" मैं देखती हूँ कि हैरो-सान चिन्ता से पहले मुझे और फिर फ़्यूमियो को देखता है। मुझे लगता है कि इस समय बहाना करना उचित ही था।

"मेरे हाथ ने अपने को साके से जला लिया है। फूहड़ हाथ!" मैं सज़ा के तौर पर उसे एक चपत लगाकर ज़ोर से कहती हूँ। ख़ूब! मैंने सैम-सान को हँसा दिया, अपने बच्चों को भी हँसा दिया। वे भी अपने छोटे पंजों को ज़ोर की चपतें लगाने लगते हैं, तो मैं कमरे से खिसक आती हूँ।

ख़ैर, मैंने किसी तरह निभा लिया। मेरी आँखें जल रही हैं और पूरा शरीर दर्द कर रहा है। मैं फ्युसुमा बन्द कर देती हूँ। अपना सिर दीवार पर टँगे प्लास्टिक के थैले के अन्दर (जोकि मेरी अंग्रेज़ी सिखाने वाली मित्र ने मुझे तोक्यो से भेजा था) डाल देती हूँ और अपने को फफकने देती हूँ। मैं धीरे-धीरे रोती हूँ। अपने होठों को इस तरह ज़ोर से काटती हूँ कि ख़ून का स्वाद मुँह में आ जाता है। मुझे ज़रा भी आवाज़ नहीं करनी, हालाँकि मैं हिचकियों से हिले जा रही हूँ। फ़्यूमियो! ओह फ़्यूमियो!

मैं अपने-आपको रोते सुन सकती हूँ, लेकिन बहुत धीमे। मेरा एक पाँव ऐंठन से ऊपर को उठ गया है और ज़ोर-ज़ोर से फ़र्श के साथ टकरा रहा है। रुलाई से मैं दोहरी हुई जा रही हूँ। मेरा पाँव पीड़ा के मारे अपनी साफ़-सफ़ेद ताबी से फ़र्श को लगातार पीटे जा रहा है। मेरे आँसू उस प्लास्टिक के थैले को एक छोटी-सी झील की तरह भरे जा रहे हैं।

आधा मिनट गुज़र गया होगा। मेरे मन के भीतर कहीं आ रहा है कि अब मुझे जल्दी लौटना चाहिए। हमारा किरायेदार आश्चर्य कर रहा होगा कि मुझे क्या हुआ है। मेरा पाँव अपने को चोट पहुँचाता ज़मीन को पीटे जा रहा है और मैं तड़पती हुई

सुबकती जा रही हूँ, मानो मुझे उबकाई आ रही हो। पर अचानक मैं अपने सिर को झटका देकर तोक्यो से आए सुन्दर बैग में से सिर निकाल लेती हूँ और अपनी आख़िरी हिचकी को भी वहीं रोक देती हूँ। अपने लम्बे बालों को सहेजती हूँ—वे स्नान के बाद अभी तक गीले हैं—और होठों के कोनों को ठीक करती अपना चेहरा भी सहेज लेती हूँ। जल्दी-जल्दी! मैंने चमकते हरे आलूचों का एक डूँगा तैयार कर लिया है। उसे ऊँचा उठाकर अपने आगे किए मैं सबके बीच वापस पहुँच जाती हूँ।

आठ

''फूलों के कीड़े! ओह, मैं कोई ऐसी दुनिया चाहती हूँ जिसमें ये कीड़े न हों।''

ओहात्सू अपनी फूलों की क्यारी में घुटनों के बल बैठकर एक सफ़ेद पैन्ज़ी से कीड़ा निकालती है और फूल के विकृत चेहरे को चिन्तित दृष्टि से देखती है।

''मैं इन गन्दे कीड़ों से निजात पाना चाहती हूँ।'' छोटी बहन आवेश के साथ कहती है। उसकी आवाज़ दुःख से भरी है। उफ़्! मैं चाहती हूँ कि ओहात्सू जो कुछ भी कहा या किया करे, उसमें इतनी भावुकता न भर दिया करे। वह फूलों को बहुत चाहती है। उन्हें लेकर बहुत परेशान भी होती है। जैसे ही वह उस कीड़े को अपने आगे की उँगली और अँगूठे के बीच पकड़ती है, उसके भूरे सींग डर के मारे आगे-पीछे को हिलने लगते हैं। तभी ओहात्सू की व्याकुल सहानुभूति उसकी ओर घूम जाती है।

''क्या इसे दर्द महसूस होता है जबकि इसे...तुम्हें मालूम है? तुम्हारे ख़याल में होता है?''

वह शब्द 'मसला' का प्रयोग नहीं कर पा रही, इसी से अपनी आँख के कोने से एक प्रश्नात्मक दृष्टि मुझ पर डालती है। हम घुटने टेके साथ-साथ निराई कर रही हैं। मई की हरी-सी रात इतनी कोमल है कि ओहात्सू उसकी शान्ति भंग नहीं करना चाहती। इसलिए वह मेरे साथ फुसफुसाकर बात कर रही है। उसका हर जीव-जन्तु के लिए परेशान होना छूत की बीमारी की तरह है। अचानक मुझे हिरोशिमा के पशुओं का मिमियाना, रम्भाना और हताशा से भौंकना याद हो आता है—वह सब-कुछ जो उन्होंने इस महाबलि के दिन सहा और झेला था। हाँ, मैं समझती हूँ कि हर कोई दुःख सहता है—एक कीड़ा भी। मैं ओहात्सू को इशारा करती हूँ कि वह उस कीड़े को खुला छोड़ दे। जैसे ही वह कीड़ा अपने ऐंठे सींगों को सुख से मरोड़ता चलने लगता है, ओहात्सू और मैं एक-दूसरी की तरफ़ देखकर मुस्करा देती हैं।

छोटी बहन के साथ फूल की क्यारी में घुटने टेककर बैठना मुझे अच्छा लगता है। सिर के ऊपर पेड़ के छेद में से झींगुरों को पर पटकते एक साथ सुनना अच्छा लगता है। खट्टी घास की सुगन्ध लेना अच्छा लगता है। ओहात्सू के साथ बिलकुल अकेले होना बहुत भला लगता है।

"बड़ी बहन!"

"हाँ।"

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ।"

"किस बारे में?"

"प्यार के बारे में!"

ओह! मुझे हल्की-सी हँसी आ जाती है। लेकिन फिर एक नज़र ओहात्सू पर डालकर मैं गम्भीर हो जाती हूँ। उसकी साँस तेज़ चल रही है–सिर्फ़ इसलिए कि उसने 'प्यार' शब्द का प्रयोग किया है–इस जादू-भरे शब्द का। उसकी छाती ऊपर-नीचे होती है। यह स्पष्ट है कि ओहात्सू केवल उस बड़ी घटना के लिए तैयार ही नहीं है–उसके लिए उत्सुक भी है। भौंचक, मैं उससे पूछती हूँ कि वह क्या जानना चाहती है।

"क्या तुम पहली नज़र के प्यार में विश्वास करती हो, बड़ी बहन?"

ओह, तो यह हैरो-सान को लेकर ही होगा, हालाँकि मुझे यह सच महसूस नहीं होता। सोचने को और समय लेने के लिए मैं एक तीली ज़मीन से उखाड़ लेती हूँ। मेरे ख़याल एक बिलकुल ही नई दिशा ले रहे हैं। ओहात्सू के लिए एक अमरीकन पति। ख़ैर, यदि सैम-सान चाहे तो क्यों नहीं? सम्भव है मेरी दुबली बहन उसके समृद्ध देश में जाकर, जहाँ कोई अभाव नहीं है, थोड़ा-सा वज़न बढ़ा सके। सम्भव है उस आदमी की भुजाओं में, जिसके लिए मुसीबतें अजनबी हैं, वह शान्ति की नींद सो सके–ऐसी नींद कि जिसमें उसे चीख़कर कभी जागना न पड़े। अपनी कमसिन सुन्दर युवा बहन को सैम-सान जैसे व्यक्ति के साथ ब्याहना कितना सुरक्षित होगा! ओहात्सू ऊपर से ज़रूर कोमल और बेदाग़ है, लेकिन उसका मन खुरदरे दाग़ों से भरा है। उसका दिल छोटी उम्र के दुःख से टूट-फूटकर विकृत हो चुका है।

"तुम विश्वास करती हो, बड़ी बहन?"

"पहली नज़र के प्यार में? हाँ बिलकुल!" मैं झूठ कहती हूँ, लेकिन तभी मेरी आत्मा मुझे छीलती है।

असलियत यह है कि मैं पहली नज़र के प्यार में विश्वास नहीं करती! सच्चा प्यार एक पेड़ की तरह बढ़ता है। लेकिन इस ख़याल से कि छोटी बहन ने अपनी दुखी जीवन के लिए एक हल ढूँढ लिया है, मैं सुख की साँस लेती हूँ। ओहात्सू मेरे मन की बात भाँप लेती है।

"तो फिर तुम मुझे उससे शादी करने दोगी जिससे मैं ख़ुद करना चाहूँ? तुम नाकादो द्वारा तो मेरा ब्याह तय नहीं कर दोगी?" वह अपनी रेशमी उँगलियों को मेरी उँगलियों में डालती एक ही साँस में पूछ लेती है।

शर्मीली ओहात्सू का मुझे इस तरह पुचकारना नई बात है और मैं उसके कोमल स्पर्श से पिघल जाती हूँ। मैं इतनी कमज़ोर हो जाती हूँ कि उसके इस आग्रह का, कि मध्यस्थ द्वारा ब्याह तय नहीं करेंगे, विरोध नहीं कर पाती।

''निश्चय ही तुम जिसके साथ चाहो, विवाह कर सकती हो, छोटी बहन!''

इससे वह अपने पैरों पर कूद पड़ती है। अपने छोटे हाथों से अपनी छाती को दबाती है—यह ओहात्सू की सबसे मोहक भंगिमा है—और आवेश के साथ मुझे धन्यवाद देती है।

''याद रखना, अब तुम अपनी बात नहीं मोड़ सकतीं! तुमने मुझसे वायदा किया है।'' ओहात्सू ऊँचे स्वर में कहती है। फिर दाँत निकालकर अपने ही भोलेपन से हँसती है।

हमारे बाग़ में अँधेरा हो रहा है। साँझ में ओहात्सू के सफ़ैद पैन्ज़ी सुरमई-से हो गए हैं। आख़िर हम अपनी टोकरियाँ उठाकर घर के अन्दर जाने की तैयारी करती हैं। 'शोजी' को धक्का देकर खोलने से पहले ओहात्सू सिर घुमाकर कतारों में फूली अपनी पीली पैन्ज़ी की क्यारी को देखती है और अपनी सफ़ेद आइरिस को, जिसने अभी अपनी तीखी नोकें निकाली हैं। इस साल ओहात्सू ने सिर्फ़ सफ़ेद फूल बोये हैं। सफ़ेद आइरिस के बाद दूधिया सफ़ेद ज़िन्निया फूलेगी और ज़िन्निया के बाद बर्फ़ रंग के तारा फूल। आख़िर में जापानी गुलदाऊदी अपने पूर्ण सौन्दर्य में फूलेगी।

''सफ़ेद रंग उसे प्यारा था। मुझे विश्वास है कि इस साल उसे सफ़ेद गुलदस्ते अच्छे लगेंगे।'' ओहात्सू मुझसे कहती है। एक क्षण से दूसरे क्षण के बीच ही उसकी आवाज़ कस गई है।

''अब छोड़ो डार्लिंग!''

मैं ओहात्सू के एकाएक तनते जिस्म के गिर्द अपना हाथ डाल देती हूँ और उस झुटपुटी शाम में अपने घर के अन्दर जाते हुए अपनी बहन के लिए चिन्तित हो उठती हूँ। वह अपने बचपन की बातों में बहुत जीती है—उस बचपन की, जोकि उसे नहीं मिला। एटम बम गिरने के दिन का अनुभव इस तरह उस पर हावी है, जैसे एक कोमल देवदार की नाज़ुक टहनियों पर छोटी उम्र में ही ढेर-सी बर्फ़ गिर गई हो। ओह! हिरोशिमा में ओहात्सू-जैसे युवा लोग भरे पड़े हैं। बाहर से अच्छे-भले लेकिन अन्दर से टूटे हुए और अपाहिज।

''चलो अपना बक्सा देखें, बड़ी बहन!''

मैं जानती थी, वह इस समय व्याकुल मनःस्थिति में है। अपनी मरी हुई माँ के बारे में सोचती, वह अतीत में खो गई है। अपना बक्सा ही है जिसके पास ऐसे वक़्त वह हमेशा जाना चाहती है। पुरानी यादों वाला हमारा बक्सा ही एक ऐसी चीज़ है जो उसके जख़्मों को सहला देती है।

हम घर में आ जाती हैं और ओहात्सू जल्दी से बक्सा लाने चली जाती है। बत्ती जलाए बिना हम घुटनों के बल साथ-साथ तातामी पर बक्से के सामने बैठ जाती हैं। ओहात्सू अपने हाथ इतनी उत्सुकता से रोग़न वाले बक्से की चीज़ों में डालती है, मानो वह उन्हें पहली बार देख रही हो।

"ओह–घंटी! ज़रा इसे सुनो, बड़ी बहन!"

टन्-टन्-टन्।

ओहात्सू हमारे अँधेरे कमरे में उस चाँदी की घंटी को आगे-पीछे हिलाती है। वह हमारी मामा-सान की बहन ने उसे उसके तीसरे जन्म-दिन पर दी थी। हमारे बक्से की सभी चीज़ों आंट मात्सुई के लिए जन्म-दिन के उपहार हैं। उनकी दो बहुमूल्य चीज़ों को हम उन्हीं के घर में सँभालकर रखती थीं। (यह आंट मात्सुई की ही राय थी, ताकि हम उन खिलौनों को हफ़्तावार उनके घर जाने के दिन इधर से उधर न ढोती फिरें।) ओह, यह तरकीब कितनी कामयाब रही! जो खिलौने हमने आंटी के देहाती घर में रखे थे, वे अच्छी तरह सँभले रहे, जबकि हमारे घर की हर चीज़ राख बनकर हवा में उड़ गई।

"मेरी शीशे की बत्तख!" ओहात्सू खुशी से चीख़ती है, "और देखो! मेरी गुड़िया की चाप स्टिक्स। ओह, मुझे कितना प्रिय है यह बक्सा, बड़ी बहन!"

"मुझे भी, मेरी रानी!"

मुझे अपने बक्से में सबसे प्रिय है एक चिथड़ा गुड्डा। मैं उसे बाहर निकालकर उसके मुचड़े किमोनो को ठीक करती हूँ। उसके ओबी का नीला कपड़ा बिलकुल फट गया है और उसकी ताबी सारी तिरछी हो गई है। ओह चिथड़ा गुड्डा कितना भद्दा लग रहा है! कितना फटा हुआ! मैं उसे अपनी बाँह के जोड़ में आराम से लिटा लेती हूँ और झुलाने लगती हूँ।

प्यारे चिथड़े गुड्डे! तुम इतने दुबले और थके क्यों नज़र आ रहे हो? तुम इतने पराजित क्यों लग रहे हो? क्या तुम जानते हो चिथड़े गुड्डे कि तुम कुछ-कुछ फ़्यूमियो-जैसे दीखने लगे हो? या फ़्यूमियो तुम्हारी तरह लगने लगा है? आजकल जब वह मेरी बाँह में अपना सिर रखकर लेटता है–कितना शिथिल और थका हुआ लगता है–ओह!

"चिथड़ा गुड्डा कितना कमज़ोर नज़र आ रहा है! तुम्हारा क्या ख़याल है, ओहात्सू?"

"यह हमेशा से कमज़ोर रहा है, बड़ी बहन!" ओहात्सू साँझ की धुँधली रोशनी में चाँदी की घंटी टुनटुनाती मस्त मुस्कान के साथ कहती है।

"पर ऐसा कमज़ोर नहीं। यह सब उस तरह दीखने लगा है जैसे..."

मैं वक़्त पर रुक जाती हूँ। मुझे भयभीत करनेवाले विचारों से अपने को बचाना चाहिए! मुझे अपनी नाजुक बहन को यह नहीं जानने देना चाहिए कि मैं फ़्यूमियो

के बारे में कितनी चिन्तित हूँ। इससे पहले कि वह मुझसे पूछे कि मेरा मतलब क्या है, सौभाग्य से हमारा ध्यान बँट जाता है। हमें बाहर से पैरों की आहट सुनाई देती है और हमारा लकड़ी का गेट धीरे से खुलता और बन्द होता है।

"दोज़ो! प्रिय लोगो, तुममें से कोई घर पर है?"

कुछ आवाज़ें आती हैं जो आदमी की चमड़ी सिकोड़ देती हैं या उसे सतर्क कर देती हैं। जो मधुर आवाज़ मुझे सुनाई दी है, उसका असर मुझ पर बचपन से ही इस तरह होता आया है। लेकिन बूढ़ी नागा-सान बेढब तरीके से कमरे में घुसती है तो मैं उसे अत्यधिक नम्रता से मिलती हूँ। पहली बात कि वह मेरी दूर की रिश्तेदार है जिसके कारण मुझे उसके प्रति अधिक शिष्ट होना चाहिए। दूसरे वह धन्धे से नाकादी है, जिसका उसे अलग से सम्मान प्राप्त है। यह सच है कि नागाई-सान ने ही मेरी भी शादी फ़्यूमियो से तय कराई थी। मैं निर्धारित नम्र बातों की एक साथ झड़ी लगा देती हूँ—उस अनचाही मेहमान को यह जताते हुए कि उसका कितना-कितना स्वागत है।

"ओह, नागाई-सान, तुमसे मिले तो महीनों हो गए! आज कितनी अचानक मुलाक़ात हुई! ओहात्सू, कृपया नागाइ-सान के लिए चाय लाओगी? इतने में मैं यहाँ रोशनी कर दूँ। अब बताओ नागाइ-सान, तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहा? कौन-सा सौभाग्य-नक्षत्र इस शाम तुम्हें यहाँ हमसे मिलने ले आया है?"

लेकिन मुझे नहीं पूछना चाहिए था। जैसे ही ओहात्सू रसोईघर की तरफ़ मुड़ती है, बुड्ढी मध्यस्थ की नज़र मेरी बहन के जिस्म से रेंगती उसकी प्यारी गरदन के पिछले हिस्से पर जा टिकती है।

"कितनी सुन्दर लड़की है! सचमुच कितनी सुन्दर!" वह मेरे पास ज़मीन पर घुटनों के बल बैठती, अपने नसवारी रंग के रेशमी पंखे के पीछे से फुसफुसाती है। (कितनी अच्छी तरह मुझे उन दिनों की इस पंखे की याद है जब वह यहाँ फ़्यूमियो के साथ मेरी शादी की बातें तय करने आया करती थी।) कोई आश्चर्य नहीं है कि नवयुवक—वह एक नवयुवक ख़ास तौर से...

"मुझे अफ़सोस है कि आपको ग़लतफ़हमी हुई है, नागाइ-सान! ऐसा कोई नवयुवक नहीं है।"

"तुम्हें कुछ मालूम नहीं है। परिवार को सबसे अन्त में पता चलता है। लेकिन यक़ीन रखो कि ऐसा एक नवयुवक है और प्रेम-विवाह का आजकल ऐसा प्रचलन है कि तुम्हें एक दिन पता चलेगा कि तुम्हारी चिड़िया उड़ चुकी है।"

मैं दाँत निकालकर इस तरह आदरपूर्वक हँसती हूँ मानो नागाइ-सान ने मज़ाक किया हो। लेकिन तभी मुझे उसी शाम ओहात्सू का अनुमति माँगना याद आया कि क्या वह जिसके साथ चाहे, शादी कर सकती है। उफ़्! इस बुढ़िया जादूगरनी ने

सचमुच गुप्त रूप से कुछ जान तो नहीं लिया? मेरी आंट मात्सुई हमेशा मुझे लम्बी नाकवाली औरतों से ख़बरदार रहने को कहा करती थीं और नगाइ-सान की नाक, हर मध्यस्थ की तरह, ख़ासतौर से लम्बी है, उसकी चोंच हमेशा इस तरह हिलती है, मानो वह कोई खुशबू सूँघ रही हो।

वह घुटनों के बल मेरे और पास सरक आई है। अब भी अपने पंखे के पीछे से फुसफुसा रही है।

"सच बताऊँ तो आज मैं केवल तुम्हारे साथ ओहात्सू की बात करने ही आई थी। हमें उसकी शादी करने में ज़रा देर नहीं करनी चाहिए। हाँ, आदमी ठीक होना चाहिए। एक बहुत ही भला आदमी है जिसे मैं जानती हूँ—बहुत ही सम्मानित भला आदमी।"

"आपका गठिया कैसा है नागाइ-सान?" मैं बीच में ही पूछ लेती हूँ।

"तुम्हारा मतलब है मेरी कमर का गठिया," नागाइ-सान बुरा मान जाती है। "उसका और भी बुरा हाल है। ख़ैर, मैंने इस सम्मानित व्यक्ति को ओहात्सू के बारे में थोड़ा-बहुत बताया है और..."

"हमारे बारे में इतनी तकलीफ़ करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, नागाइ-सान! कमर के गठिया और शेष सब तकलीफ़ों के रहते आपको इतनी मेहनत नहीं करनी चाहिए। छोटी बहन के लिए आप इतनी तकलीफ़ न उठाएँ।"

(तकलीफ़! जैसे कि वह उस सम्मानित व्यक्ति से पैसों के रूप में 'धन्यवाद' पाने की ताक में न हो।) उसकी लालची आँखें झपकती हैं। फिर भी वह मीठे स्वर में समझाती है कि वह तो केवल अपना 'कर्तव्य' निभा रही है।

"मैंने तुम्हारी भी शादी तय कराई थी, कराई थी कि नहीं? और सोलह साल की उम्र मैं। अब मैं तुम्हारी छोटी बहन का भी प्रबन्ध करूँगी। लेकिन हमें देर नहीं करनी चाहिए। यह सम्मानित व्यक्ति जल्दी में है। वह...वह...ऐसा है कि वह अपनी पहली जवानी में नहीं है। वह ज़्यादा समय के लिए रुक नहीं सकता...।"

तड़ाक्!

रसोईघर की फ़र्श पर गिरकर एक प्याला टूट गया है। हम दोनों जानती हैं कि किसने उसे तोड़ा है। ओह, यह नहीं चलेगा। नाकादो को अपने विरुद्ध कर लेना हमारे लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। जो ज़हर यह उगलेगी वह हर कोने और दरार में जा पहुँचेगा। वह हमें बरबाद भी कर सकता है।

"कृपया मुझे एक मिनट के लिए क्षमा करें, नागाइ-सान," मैं जैसे ध्यान बँट जाने से कहती हूँ।

मैं तेज़ी से रसोईघर की तरफ़ जाती हूँ, लेकिन वहाँ ओहात्सू का कहीं पता नहीं है। यह पहली बार नहीं है कि वह अपनी उत्तेजित भावनाओं को सहन न कर पाने

से भाग खड़ी हुई हो और हर बार मैं डर से काँप जाती हूँ। क्या वह अँधेरी सड़कों पर छाती पर हाथ रखे भागी जा रही है? या उसी जगह नदी-किनारे घुटने टेके बैठी है जहाँ हमारी मामा-सान...? या वह उन्हीं का पीछा...?

"युका!" मध्यस्थ की आवाज़ आती है। "मेरे पास थोड़ा ही समय है। मेरी लड़की, तुम्हें क्या चीज़ रोके हुए है?"

"मैं आ रही हूँ, नागाइ-सान!"

मैं ट्रे में कुछ जलपान का सामान रखकर भागती हुई वापस उस कमरे में आती हूँ। चिन्तित-सा भाव बनाए मैं क्षमा-याचना के लिए झुकती हूँ।

"ओहात्सू को किसी ने बुला लिया है। हमारी पड़ोसिन की छोटी लड़की अभी-अभी कुएँ में गिर गई है।" (कितना बेतुका झूठ है) "आप हरी चाय लेंगी, नागाइ-सान? मैं सड़क-पार की मछली की दुकान से भागकर आपके लिए थोड़ी सुचि ले आऊँ?"

"तुम कहती ही हो तो थोड़ी चाय ले लूँगी, लेकिन सुचि नहीं। मुझे तो घर पर तुम्हारे मिलने की आशा ही नहीं थी। लेकिन तुम चिन्ता न करो, मैं फिर आऊँगी। मेरी लड़की, हम तो अथक मेहनत में विश्वास करते हैं। धीरज ही हमारे धन्धे का विशेष गुण है।"

"थोड़ा-सा केक?" मैं फुसफुसाती हूँ। "दोज़ो, नागाइ-सान!"

उसके बाद जैसे अनन्त काल तक हम तातामी पर एक-दूसरी के सामने घुटने टेके चाय की चुसकियाँ लेती घर-गृहस्थी और जान-पहचान के लोगों के बारे में नम्र आदान-प्रदान करती बैठी रहती हैं। एक घंटा जोकि मुलाक़ात के लिए निश्चित समय होता है, किसी तरह बीत जाता है। आख़िर जब हम जलपान समाप्त कर लेती हैं तो इतनी नीचे तक झुकती हैं कि हमारे सिर आपस में दो उबले अंडों की तरह टकरा जाते हैं। फिर जल्दी से हम अपने पैरों पर खड़ी हो जाती हैं। बूढ़ी नाकादो कबूतर-जैसे पंजों पर फ्युसुमा की तरफ़ बढ़ती है। साथ वह अपने सिर को नसवारी पंखे से हवा करती जाती है।

"उस प्रौढ़ सम्मानित व्यक्ति को तो शादी करने की जल्दी है ही," वह बके जाती है। "पर सुन्दर ओहात्सू के लिए भी तो हमें जल्दी है। हाँ-हाँ, मेरी लड़की हमें, सच्चाई का सामना करना ही चाहिए। तुम्हारी युवा बहन की आज माँग है, लेकिन कल? इसके अलावा तुम्हें पता होना चाहिए, बच्चों का भी प्रश्न है। किस प्रकार के बच्चे ओहात्सू पैदा करेगी? हैं? आजकल हिरोशिमा में तुम्हारे-जैसे एटम बम से बचे लोगों की बहुत चर्चा है कि उनके बच्चे अजीब तरह के होंगे। ओह, यह सब-कुछ बहुत निराशाजनक है मेरी लड़की! लेकिन मेरे कहने का मतलब इतना ही है कि हमें जल्दी करनी चाहिए। वास्तव में हमें एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए। यह बात जितनी

अच्छी तरह तुम जानती हो, उतनी ही अच्छी तरह मैं भी जानती हूँ। एटम बम से बची लड़की को कोई भी परिवार अपनी बहू नहीं बनाना चाहता। फिर भी यह सम्मानित व्यक्ति...।"

"सायोनारा! आरिगातो गोज़ाइ माशिता!"

"सायोनारा! योकु इराशिते कुदासाइ माशिता।"

हम एक-दूसरी की तरफ़ बनावटी ढंग से मुस्कराती हैं। हम बहुत-बहुत झुकती हैं—इस बार इस बात का ध्यान रखकर कि हमारे सिर टकराएँ नहीं और काफ़ी देर बाद हम सीधी होती हैं तो मध्यस्थ मेरी तरफ़ तीखी नज़र से देख लेती है। फिर उसकी छोटी तीखी ज़बान होठों पर फिरती है। वह जानती है कि उसने मैदान मार लिया है। मेरी आँखों में उसने वह अनाम भय देख लिया है जो बम से बचे हर हिरोशिमा के व्यक्ति में पाया जाता है। ओहात्सू की और मेरी हड्डियों में चौदह साल पहले क्या रेडियो-ऐक्टिव किरणों ने प्रवेश नहीं किया था? ओह! हम बम की सन्तान हैं। हमारे बच्चे भी बम की ही सन्तान हैं, क्योंकि इसका असर तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलेगा। क्या यही मेरे मिचिको, मेरे स्वस्थ तादेओ और सुन्दर ओहात्सू का भविष्य होगा कि उनकी सन्तान...?

"आरिगातो! गोज़ाइ माशिता, आदरणीया नागाइ-सान!" मैं डर से काँपती हुई फुसफुसाती हूँ।

लेकिन बूढ़ी नाकादो-सान, मेरी दिल की सारी शान्ति साथ लिये अब तक जल्दी-जल्दी अँधेरे बाग़ के बीच से होकर जा रही है।

नौ

लम्बी सरदी के बाद, खिले चेरी के वृक्ष के नीचे बैठना कितना अच्छा लग रहा है! तेज़ धूप में फूटी कलियाँ और धरती में से हरियाली की बेचैन उँगलियों सी निकली घास! (मेरा बेटा तादेओ थोड़ी-सी तिगलियाँ तोड़कर खा जाता है) आकाश गरमी से काँपता है। छुट्टी मनाने आए अन्य कई लोगों की तरह हम अपनी फूस की चटाइयाँ साथ लाए हैं और घुटनों के बल उन पर गोलाकार बैठ गए हैं। मैं सबके बीच में हूँ। मैं सामिसेन पर एक धुन छेड़ती हूँ।

"ला...ला-ला...ला..."

मुझे गाना और साज़ बजाना कितना अच्छा लगता है! मैंने अनगिनत गीत बनाए हैं—उसी तरह जैसे कीट-पतंग अपने गीत बनाते हैं। एक लय का टुकड़ा—एक पत्ती के झरने का वर्णन करते कुछ शब्द, क्योंकि उसका समय आ पहुँचा है—और इसी तरह की चीज़ें।

"छोटी बहन, तुम क्यों नहीं गा रहीं? दोज़ो, गाओ न!" मैं उत्साह से कहती हूँ।

"अच्छा बड़ी बहन," ओहात्सू अंग्रेज़ी में जवाब देती है। लेकिन वह बहुत अनमने ढंग से गाती है। उसके विचार दूर कहीं हैं। मेरी छोटी बहन को क्या हो गया है? मैं अपने से पूछती हूँ। वह चेरी की कली का गीत अचानक बन्द कर देती है। मैं चौंक जाती हूँ।

"यह मत भूल जाना कि हम माएदा-सान से चायघर में मिल रहे हैं।" वह मुझसे फुसफुसाकर करती है। "अब लगभग चार बज गए हैं। बड़ी बहन!"

हे भगवान्, ओहात्सू को आज वक़्त का पता है! कुछ-न-कुछ बात ज़रूर है। क्यों यह ढीठ बच्ची सैम-सान से बात करने से कतराती है?

"किसे साके चाहिए?" मैं कुछ नशे में पूछती हूँ।

"मैं कहूँगा सभी को।" हैरो-सान हँसता है।

अगर उसका देश सैम-सान जैसे कुछ हज़ार लड़के पैराशूट से यहाँ नीचे उतार दे—इतने ही मस्त और इतने ही घुल-मिल जाने वाले—तो हम सबको अमरीकन अच्छे

लगने लगेंगे। ये हमारी साधारण-सी दावत से भी कितने प्रसन्न हैं! वह हमारे साथ छुट्टी के मूड में आकर (हम अपनी कभी-कभार की छुट्टी को यूँ लेते हैं जैसे वह एक मीठी गोली हो और उसे तब तक धीरे-धीरे चूसते रहना हो जब तक कि वह ख़त्म नहीं हो जाती), हमारा किरायेदार साके पी रहा है, मस्ती से गा रहा है और हमारे ही जैसे मज़ेदार और ऊलजलूल मज़ाक कर रहा है। हमारे साथ मिआजिमा टापू की हिचकोले-भरी जलयात्रा में भी वह कितना उत्साहित था, हालाँकि नाव इतनी भरी थी कि लगभग डूबने ही जा रही थी।

अब वह अपने आस-पास छुट्टी मनाने वाले झुंडों को देखता है जो फूस की चटाइयों पर घुटने टेके बैठे हैं। दफ़्तर के मालिक अपने ज़र्द चेहरे के क्लर्कों को साके का नशा दिलाने, और कारख़ानों के मालिक अपने मज़दूरों को चेरी के पेड़ों के नीचे कच्ची मछली की दावत उड़वाने साथ लाए हुए हैं। अपनी भारी ज़िममेदारी के कामों से एक दिन की छुट्टी पाने की ख़ुशी में नवयुवक मस्ती में इधर से उधर कूद रहे हैं। और 'बेबी-सान' जैसे कि मेरा किरायेदार तादेओ और मिचिको को बुलाता है, नए किमोनो पहने जोकि माएदा-सान ने उन्हें दिए हैं, पैरों पर कूदते हुए बैले-नृत्य कर रहे हैं। इनके किमोनो के ऊपर फ़्यूजी पहाड़ी के छोटे-छोटे शिखर बने हैं जिनके मुँह से मज़े से धुआँ निकल रहा है। सब लोग उनके नृत्य पर ताली बजाते हैं।

"अब तुम कोई गाना गाओ, युका!" मेरा पति अनुरोध करता है। वह धूप में आकर स्वस्थ लग रहा है। ओह मुझे आशा है कि बसन्त की यह कुनकुनी हवा उसका स्वास्थ्य फिर ठीक कर देगी! मैं उसकी तरफ़ देखकर मुस्कराती हूँ और उसके सम्मान में ताँका बनाकर सुनाती हूँ। अर्थ है कि अबाबीलों के आने और चेरी के खिलने से हमारा भाग्य भी चमक उठेगा।

"ला...ला-ला...ला..." मैं गाती हूँ।

जब मैं गाना समाप्त करती हूँ तो हम सन्तोष से कुछ देर ख़ामोश रहते हैं। इससे अच्छा क्या हो सकता है कि इतने सुन्दर प्राकृतिक दृश्य के बीच हम उन लोगों के साथ बैठ सकें जिनसे कि हम स्नेह करते हैं! और तो और, मेरा ख़ुश-मिज़ाज सैम-सान भी चुप और स्थिर है। उसकी नज़र ओहात्सू पर टिकी है, जिसकी सुन्दरता मई महीने के युवा-दिन से मेल खाती है। लेकिन अचानक हमारी सुन्दरी अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है।

"चार बज गए हैं, बड़ी बहन!" उसकी उत्सुकता ने उसकी रेशमी आवाज़ में ख़राश ला दी है। "चार से लगभग पाँच मिनट ऊपर।"

वह अस्थिर लड़की अपनी पतली उँगलियाँ मेरी उँगलियों में फँसाकर मुझे झटके से उठा देती है। मुझे हरी घास पर साथ खींचते हुए वह एक उत्तेजित बच्ची की तरह खिलखिलाकर हँसती है।

ओहात्सू का भाव इतना प्रफुल्ल है कि सब लोग रुककर उसकी तरफ़ देखते हैं और हँस देते हैं। लेकिन हमेशा की तरह छोटी बहन प्रशंसा की ओर ध्यान नहीं देती।

"वहाँ! वहाँ...वह है," वह चीख़ती है।

"माएदा-सान?"

"नहीं, नहीं। मेरा मित्र! मेरा वह मित्र जिसके बारे में मैंने तुम्हें कल बताया था।"

हम रुक जाते हैं। आसपास का शोर, चायघरों के आगे हँसते, छुट्टी मनाते झुंड-के-झुंड बड़े-बूढ़े, विद्यार्थी, माँ-बाप के हाथों से चिमटे बच्चे—ओहात्सू के और मेरे गिर्द लहराते समुद्र की तरह घूम रहे हैं। जल्दी से सिर घुमाकर वह एक नज़र 'रेड ड्रैगन' चायघर की तरफ़ देख लेती है, जहाँ हमें अपने मेज़बान माएदा-सान से मिलना है।

"वह रहा, वह हिरू। वह जो गहरे हरे रंग का किमोनो पहने सीढ़ियों पर खड़ा है।"

अपनी काँपती उँगलियाँ वह मेरे हाथ में ठूस देती है। जल्दी-जल्दी बोलती हुई मुझे यकीन दिलाती है कि वह 'अनन्त काल' के लिए प्रसिद्ध पौराणिक कथा की ओहात्सू की तरह प्रेम में फँस चुकी है। यह कितना विचित्र है कि उसके प्रेमी की शक्ल बिलकुल वैसी ही है जैसी पुराने जापानी चित्रों में पौराणिक ओहात्सू के प्रेमी की दिखाई जाती है।

"वह सुन्दर है, है न बड़ी बहन?" ओहात्सू मुझसे पूछती है, और मेरी आँखों को प्रशंसा से फैलते देखती है। सुन्दर? वह तो एक युवा देवता-जैसा है। मैं हाँफती हुई फुसफुसाती हूँ, "हाँ।" (ओह मुझे यह नहीं कहना चाहिए था! उस सुन्दर युवक के बारे में मुझे ज़रा भी तो जानकारी नहीं। इसलिए ओहात्सू को प्रोत्साहित करने का मुझे कोई अधिकार नहीं। लेकिन क्या करूँ? रोमांस मुझे अच्छा लगता है।) ओहात्सू मुझे बताती है कि उसका नवयुवक प्रेमी एक कलाकार है—माएदा-सान का एक शिष्य। माएदा-सान ने ही उन्हें मिलाया था। चूँकि कलाकृतियाँ मुश्किल से बिकती हैं, इसलिए वह बाध्य होकर आजीविका के लिए एक अख़बार में फोटोग्राफरी करता है।

"तो, इससे क्या हुआ?" मैं अपनी आवाज़ में उदासीनता लाकर पूछती हूँ।

"वह मुझसे शादी करना चाहता है।"

ओहात्सू उल्लासपूर्ण दृष्टि से चायघर की सीढ़ियों की तरफ़ देखती है। हम चेरी के पेड़ के नीचे खड़े हैं। उसके जुड़े हुए मुखर हाथों पर अचानक कलियों की वर्षा हो जाती है। मेरा दिल मसोस उठता है। छोटी बहन! वह उन सफ़ेद फूलों-जैसी

नाज़ुक लग रही है जिनकी जीवनलीला समाप्त हो चुकी है। फिर भी ओहात्सू उस महान जन-संहार से बची है जिसे मानव ने पहले कभी नहीं देखा था। उसके फूल-से कोमल जिस्म को, उस प्रचंड ज्वाला से हिरोशिमा नदी ने छीन लिया था जिसमें हमारी माँ एक मशाल की तरह जलती हुई कूदकर मृत्यु के मुँह में चली गई थी।

"ओहात्सू..." मैं कहना शुरू करती हूँ। और मेरी आवाज़ जो रूखी होनी चाहिए थी, स्नेह से काँप जाती है।

"बड़ी बहन! तुमने वचन दिया था। तुम अपनी बात से अब फिर नहीं सकतीं। तुमने कहा था कि मैं जिससे चाहूँ शादी कर सकती हूँ।"

क्या कहना चाहिए? क्या करना चाहिए? अभी सोच ही रही हूँ कि पाती हूँ उस सुन्दर नवयुवक ने हमें देख लिया है, और छोटी बहन की तरफ़ प्रेम के पंखों पर उड़ता चला आ रहा है। (देखने में कवित्वहीन लगते हुए भी पच्छिमी लोग कितने कोमल ढंग से अपने भाव प्रकट करते हैं।) ओह! इससे पहले कि मैं निश्चय करूँ कि मुझे उससे कैसे पेश आना है, ओहात्सू हमारा परिचय करा देती है। हिरू शिमिजु और मैं झुककर मुस्कराती हूँ, फिर झुककर मुस्कराती हूँ और उसी नाजुक क्षण में मेरा परिवार मेरे पास आ पहुँचता है।

"ओह, तो तुम सब आ गए!" मैं ऊपर से अपने को सहेजकर कहती हूँ। आंट मात्सुई कहा करती है कि चेहरे का भाव ही सबसे आवश्यक चीज़ है—थोड़ा-सा घबराये नहीं कि तुम बाज़ी हारे। फिर भी ओहात्सू के प्रेमी से सैम-मान और अपने पति का परिचय कराती मैं उतनी ही झेंप रही हूँ जितनी कि छोटी बहन।

"शिमिजु-सान, ओहात्सू का बहुत अच्छा मित्र है," मैं कहती हूँ। सुनकर मेरे किरायेदार का चेहरा लटक जाता है।

मेरा भाव भी बदलता है, क्योंकि मुझे महसूस होता है कि जो स्वप्न मैंने छोटी बहन के लिए सँजोये थे वे तूफ़ान में फूस की झोंपड़ी की तरह टूट-फूट गए हैं। हैरो-सान की आँखों से लगता है कि ओहात्सू के दोस्त के एकाएक आ प्रकट होने से उसे दुःखद आश्चर्य हुआ है। हर एक की तरह उसे भी लग गया होगा कि ओहात्सू उस देवता-जैसे हिरू से मन से प्यार करती है। ओह! एक क्षण में ही मुझे पता चल जाता है कि उसका ओहात्सू की निकटता पाना बिलकुल सम्भव नहीं था।

"प्रिय मित्रो, हम सब तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

चायघर की लम्बी सीढ़ियों से माएदा-सान की 'गेता' खुशी से नीचे-नीचे आती सुनाई देती हैं।

"हम चेरी की कलियों के बीच यह खुशी का शाम साथ-साथ बिताने जा रहे हैं।" वह कहता है। उसकी आँखें इतनी प्यारी हैं कि उसकी भारी और विध्वस्त आवाज़ भी मुझे प्रफुल्लित कर देती है। एक ही क्षण में उसने कितनी चतुराई से

स्थिति को सँभाल लिया है। ओहात्सू और हिरू स्पष्टतः एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हैं (और हैरो-सान को जाने इससे कितनी तकलीफ़ और होती!) माएदा-सान अपने ओबी से चेरी की एक छोटी कली तोड़ता है और सैम-सान को भेंट करता है।

''तुम खुशी से हमारी चेरी की 'फ़्यूरी' में शामिल हो सकते हो।'' वह अपनी अद्‌भुत मुस्कान के साथ कहता है और चेरी की डंडी सैम-सान की पेटी में लगा देता है। ''तुम्हारे साथ होने से हमारी पार्टी दुगुनी अच्छी रहेगी। बहुत खुशी का समय अब सामने है।''

हाँ-हाँ, खुशी का समय! मैं कितनी खुश-नसीब हूँ! यहाँ मैं एक बढ़िया चायघर में मैं बैठी सैमिसेन का संगीत सुन रही हूँ और इतना बढ़िया खाना खा रही हूँ कि हरादा-सान और अपनी गली के अन्य अभागे लोगों को मुझे इन भिन्न-भिन्न व्यंजनों की तस्वीरें बनाकर समझाना पड़ेगा। उदाहरण के लिए सुगन्धित सेवार पर सोती मछली की आँखें फेंटे मसाले में डूबी मधुमक्खियाँ—भूनकर करारी की हुई और सुन्दर ढंग से तीलियों पर चढ़ाई हुई। हे ईश्वर, हमारे रोज़ के मनहूस खाने से दावत का खाना कितना भिन्न होता है और उस चावल-पानी से और भी कितना भिन्न, जोकि हरादा-सान को हासिल है।''

''बान ज़ाइ! बान ज़ाइ!''

''बान ज़ाइ सैम-सान!'' मैं चिल्लाती हूँ। इन सब 'टोस्टों' से हमारी छोटी-सी पार्टी धुत्त हो रही है और सैम-सान का चेहरा गहरा सुर्ख़ हुआ जा रहा है।

वह अब भी ठीक मनःस्थिति में नहीं है। रह-रहकर ओहात्सू और हिरू पर, जोकि नीची मेज़ के कोने पर साथ-साथ घुटने टेके बैठे हैं, नज़र डालकर वह फिर से अपना गिलास भरता जा रहा है। ''कुछ अच्छी-सी चीज़ लो—यह मछली की आँख ले लो!'' मैं उससे अनुरोध करती हूँ।

''धन्यवाद! मुझे भूख नहीं है।''

यह स्पष्ट है कि सैम-सान को डाह है—अकेले हिरू से नहीं कि उसने ओहात्सू को हथिया लिया है, बल्कि उन दोनों से कि उन्हें एक-दूसरे में खुशी मिल गई है। लेकिन अब क्या होने जा रहा है? कान फाड़ती ऊँची हँसी हमें दूर की मेज़ पर से सुनाई देती है।

''आहा, खेल शुरू हो गए, थ्री चियर्स!'' यह देखकर कि दूसरे लम्बे कमरे के परले सिरे पर बेसबाल का खेल शुरू हो गया है, मैं चिल्लाती हूँ। यह सच है कि उनके पास असली गेंदें नहीं हैं और उनके बल्ले भी असली नहीं हैं। लेकिन डिनर के मेहमान इस तरह बेसबाल की चेष्टाएँ कर रहे हैं, मानो वे बल्ले इधर से उधर हिला रहे हों और हवा में उड़ती कल्पित गेंदों को दबोच रहे हों। यह सब एक तरह का बैले नृत्य ही है।

मैं मारदा-सान और उसके अन्य धुत्त कलाकार मित्रों का खेल में साथ देने उछलकर पैरों पर खड़ी हो जाती हूँ और जल्दी से उधर को चल देती हूँ। ओह! वे लोग कितना मज़ा ले रहे हैं! दो 'गीशा', जो इस अवसर के लिए भाड़े पर बुलाई गई हैं, सामिसेन बजा रही हैं। सब लोग बेसबाल के खिलाड़ियों की-सी चेष्टाएँ करते ज़ोर-ज़ोर से गाने लगते हैं।

उसके बाद हम 'रेलगाड़ी' का खेल खेलने लगते हैं, जोकि मेरा सबसे प्रिय खेल है। अपने हाथों को एक-दूसरे के कानों पर रखकर हम उस लम्बे कमरे में ऊपर से नीचे तक छुक्-छुक् फुसफुसाते दौड़ते हैं।

मैं अपने किमोनो में लगभग गिरती-सी दौड़कर वापस आती हूँ—सैम-सान के प्याले में साके भरने और उससे खेल में शामिल होने का अनुरोध करने।

"आओ, मेरे साथ छुक्-छुक् खेलो सैम-सान!"

"तुम बच्ची ही हो युका-सान! तुम सब जापानी बिलकुल बच्चे हो।" अमरीकन कहता है, लेकिन मैं सिर्फ़ हँसती हूँ और उसे कमरे के आख़िरी सिरे तक खींच ले जाती हूँ, जहाँ एक और खेल शुरू होने वाला है।

मैं उसे बताती हूँ कि इस खेल का नाम है, 'बूढ़ा शिकारी और भालू,' और यह जापान के सब चायघरों में खेला जाता है। यह दो आदमियों का खेल है, मैं उसे बताती हूँ, जिसमें हर खिलाड़ी एक लम्बे परदे के पीछे दूसरे से ओट में होकर या तो बुढ़िया बनता है (झुकी कमर से उछलती) या शिकारी (अपने शिकार का पीछा करता) या भालू (अपने पंजों पर आगे बढ़ता)।

"दर्शक दोनों खिलाड़ियों को देख सकते हैं, इसी से पहले से ही जान जाते हैं कि कौन जीतनेवाला है। लेकिन खिलाड़ी एक-दूसरे को तब तक नहीं देख सकते, जब तक कि वे परदे के पास नहीं पहुँच जाते। तुम्हें आया समझ?" मैं सैम-सान को छेड़ती हुई हँसकर पूछती हूँ।

"मैं अब चुप ही रहूँगा।"

"लेकिन यह खेल ज़रा भी मुश्किल नहीं है। बुढ़िया शिकारी को हरा देती है, लेकिन भालू उसे खा लेता है। शिकारी भालू को मार सकता है, लेकिन वह हार जाता है जब उसे बुढ़िया मिलती है। मज़ा आता है सैम-सान! सब हँस-हँसकर दोहरे हो जाते हैं।"

"सच?"

लगता है हैरो-सान को यकीन नहीं आया। लेकिन मैं उससे कहती हूँ कि फ़्यूमियो और मैं उसे खेलकर बताएँगे। हम अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। दाँत निकालकर एक-दूसरे की तरफ़ हँसते हैं और फिर परदे के दोनों तरफ़ अपनी-अपनी जगह ले लेते हैं। मैं क्या बनूँ? मैं अपने से अकेले में पूछती हूँ और शिकारी बनने

का निश्चय करती हूँ। फिर मैं हाथ में कल्पित छुरी लिए फ़्यूमियो को ढूँढ़ती परदे के अन्त तक पहुँच जाती हूँ, जहाँ वह दर्शक इसका आनन्द लेते हैं। मेरा फ़्यूमियो बहुत अच्छा अभिनेता है! हाँ, उसे आनन्द लेना कितना अच्छा लगता है! उसे ज़िन्दगी से कितना प्यार है!

अगली बारी निश्चय करती हूँ कि इस बार मैं बुढ़िया बनूँगी और मैं परदे के अन्त तक एक कल्पित लकड़ी के सहारे पीठ झुकाए चलती हूँ। इस बार फिर फ़्यूमियो मुझे हरा देता है। वह सिर हिलाता अपने चारों पंजों पर चला आ रहा है और गुर्राता हुआ मुझे निगल लेने को है। जैसे ही वह भयानक भालू मज़ाहिया ढंग से उलटबाज़ी खाकर अपनी पीठ पर लोट जाता है सब लोग चीख़ने-हँसने लगते हैं। सब लोग—सिवाय मेरे। मैं फ़्यूमियो के चेहरे के उतार-चढ़ाव को देखकर सहसा महसूस करती हूँ कि अब वह नाटक नहीं कर रहा।

उफ़्! मैं उसके करीब घुटनों पर गिर जाती हूँ। मेरा पति बेचारा सन्त्रस्त आँखों से मेरी तरफ़ देखता है। उसके चेहरे से पसीना टपक रहा है।

"मैं नहीं उठ सकता," वह कमज़ोर आवाज़ में फुसफुसाता है।

जैसे ही मैं आवाज़ देने के लिए मुँह खोलती हूँ, फ़्यूमियो अपना हाथ मेरे हाथ पर रखकर मुझे रोक देता है।

"किसी को मत बताना कि क्या हुआ है। उनकी शाम बरबाद हो जाएगी। युका—वह आ पहुँची है। यह वही बीमारी है..."

फ़्यूमियो की आवाज़ धीमी पड़ती जाती है और उसकी आँखें बन्द हो जाती हैं। मैं जानती हूँ कि वह बेहोश हो गया है। एक बार फिर मेरा मुँह आवाज़ देने के लिए खुलता है, लेकिन मैं किसी तरह अपनी गले तक आई चीख़ को अन्दर दबा देने की कोशिश करती हूँ। मेरा पति ठीक कहता है (फ़्यूमियो हमेशा ठीक कहता है) यह अनुचित होगा कि हम अपने सह-अतिथियों की शाम ख़राब करें—उनकी ज़िन्दगी में पहले ही बहुत कम खुशी है। अपने पति के ज़मीन पर पड़े शरीर के करीब घुटने टेककर मैं अपने मित्रों की ओर बहुत नीचे तक झुकती हूँ।

"कृपया हमें क्षमा करें," मैं कहती हूँ और उनकी तरफ़ मुस्कराती हूँ, "एक छोटी-सी दुर्घटना हो गई है। लेकिन कोई गम्भीर बात नहीं है। कृपया हमें क्षमा करें।"

"दोज़ो!"

दस

महँगे सेब, मैं तुमसे नाराज़ हूँ। इस अस्पताल की दुकान में सब-कुछ बड़ा महँगा है। वह सेलुलाइड की कंघी भी, जिसकी कीमत अभी पूछी है। मैं उस सेल्ज़-गर्ल से पूछे जा रही हूँ, "कितने की है?" (जैसे-जैसे मैं कैरामेल की थैली, एक काग़ज़ी पंखे और 'गो' वाले खेल को छूती हूँ)। मैं जानती हूँ कि 'इफुरा देसुका' कितने की है—अब से मेरा आम सवाल यही होगा। सफ़्—मैं हमेशा सें निर्धन रही हूँ। फ़्यूमियो की बीमारी से मैं कितनी मुसीबत में पड़ जाऊँगी, इस ख़याल से मैं जैसे बेहोश होने लगती हूँ। मैं उन लोगों से घृणा करती हूँ जो ज़िन्दगी से बहुत-कुछ की अपेक्षा रखते हैं, लेकिन हरादा-सान की तरह कभी एक सेब भी न ख़रीद पाने की आदत डालने में मुझे थोड़ा समय लगेगा।

"मैलिलिन मोनलो," वह भूरे चेहरेवाली सेल्ज़-गर्ल कहती है। "पंखे पर बनी है—माउंट फ़्यूजी की बगल में। यह फटा हुआ है। तुम आधे दाम पर ख़रीद सकती हो।"

उसे देखकर ऐसा लगता है मानो एक बदबूदार मछली उसकी नाक के नीचे लटक रही हो। निस्सन्देह रोगाणुनाशक की और दवाइयों की गन्ध दिन-रात उसके आस-पास रहती है। इस बात से इन्कार नहीं कि अस्पताल की एक अपनी ही गन्ध होती है और मैं अपने को एकदम उस गन्ध को स्वीकारने की सलाह देती हूँ। यह अभी से मेरे जीवन का हिस्सा बनने जा रही है। क्या यह शिष्टता नहीं कि जो कुछ भी ज़िन्दगी हमें दे उसे हम एकदम स्वीकार कर लें? इसी में सद्भावना है।

मैं असल में कुछ ख़रीद नहीं रही, सिर्फ़ देख रही हूँ। मैं उस सेल्ज़-गर्ल से झूठमूठ कहती हूँ, "मेरा पति..."

लेकिन इस ख़याल से कि फ़्यूमियो ऊपर बीमार पड़ा है, कारिडार एकाएक मेरे सामने घूमने लगता है। जैसे ही मैं जल्दी से काउंटर को थामती हूँ, मुझे आवाज़ आती है कि वह सेल्ज़-गर्ल मुझसे पूछ रही है कि मेरा पति किस वार्ड में है। जब मैं उसे जवाब देती हूँ कि वह रेडिएशन की बीमारी वाले सेक्शन में है, तो उसका तौर एकदम बदल जाता है। वह महँगा सेब मेरे हाथ में ठूँस देती है।

"ले लो! यह तुम्हारा है।" उसके जले गाल काँपते हैं। "मेरा परिवार एटम बम से जल गया था। यह बात कहने के लिए मुझे क्षमा करना।" वह नम्रता से कहती है।

हम एक-दूसरी की तरफ़ झुकती हैं। उसने अपने चेहरे की ऐंठन पर काबू पा लिया है। उस पर अब फिर एक नकाब-सी आ गई है, लेकिन हमारी आँखें देर तक मिली रहती हैं। जैसे ही और ग्राहक आता है, वह फुसफुसाकर मुझसे रुकने के लिए कहती है। वह फ़्यूमियो का सेब उपहार के कागज़ में बाँधना चाहती है। (ओह, ऐसा महसूस होता है, मानो उसने अपनी उँगलियाँ बढ़ाकर मेरे दिल को छू लिया हो।)

"शुक्रिया," मैं उत्तर में फुसफुसाती हूँ।

मैं दीवार से टेक लगाकर फ़्यूमियो के बारे में सोचने लगती हूँ। ऊपर के एक वार्ड में मेरा पति मृत्यु के साथ लड़ रहा है—मतलब कि उसका ख़ून, जिगर और तिल्ली लड़ रहे हैं, जबकि फ़्यूमियो अपनी खिड़की के चौखटे पर बैठे मस्त गिलहर को देख रहा है। वह और उसके कमरे के पाँच अन्य साथी उस गिलहर को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे जब कुछ ही देर पहले मैं उनके पास से आई थी। बात समझ में आती है। मेरा मतलब है कि चौदह साल पहले इन नवयुवकों के अन्दर मौत चुपचाप घुस आई थी और वह उन्हें आज ख़त्म कर रही है, जबकि यह मस्त गिलहर—

मैं अपनी आँखें बन्द कर लेती हूँ (वह सेल्ज़-गर्ल अभी व्यस्त है) और अपने थके शरीर को अस्पताल की दीवार के सहारे ढीला छोड़ देती हूँ। कल पूरी रात मैं बिलकुल नहीं सोई—मैंने पूरी रात फ़्यूमियो के बिस्तर के पास घुटने टेके काटी है—लेकिन मेरी थकान का मुख्य कारण यह नहीं है। मैं इसलिए थक गई हूँ कि मैं वे सब बातें सोचती रही हूँ जोकि मेरे लिहाज़ से बहुत बड़ी हैं।

मिसाल के तौर पर मैं सोचती रही कि संयोग का हमारी ज़िन्दगी में कितना बड़ा स्थान है। अगर फ़्यूमियो को उस विख्यात छह अगस्त सन् पैंतालीस के दिन फ़ौज से छुट्टी न मिली होती, तो वह हिरोशिमा में न होता और हिरोशिमा में न होता, तो उन ढेर-की-ढेर लाशों में से एक-एक लाश उठाकर मुझे न ढूँढता और न ही रेडिएशन की बीमारी से पड़ता। वह अब स्वस्थ हो जाए, तो हम चारों के लिए एक सुखी भविष्य की योजना बना सकेगा। पर इस वक़्त स्थिति यह है कि सब-कुछ उसके जिगर के हाथ में है और वह निश्चय किए है कि फ़्यूमियो को अपने साथ लेकर ख़त्म हो जाएगा। यही सब है जिसे मैं बहुत बड़ी बातें कहती हूँ।

"खड़े-खड़े सो गई हो, युका-सान?"

"सैम-सान!"

लम्बी टाँगें, बिखरे बाल, उत्सुक आँखें, वह अमरीकन सिर पर आ खड़ा हुआ है। जल्दी से मैं अपने चिन्तित चेहरे को ठीक करने की कोशिश करती हूँ।

"तुम फ़्यूमियो को देखने आए हो?" मैं पूछती हूँ, "मुझे अफ़सोस है कि वह सो रहा है, सैम-सान! उससे कोई मिल नहीं सकता।"

"हे भगवान्! युका-सान, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि फ़्यूमियो इतना सख़्त बीमार है?"

हैरो-सान बुरी तरह से झुँझलाया नज़र आता है। अभी उसे पता चला है कि कल रात फ़्यूमियो को क्या हुआ था और हमेशा की तरह, उसे अपने आवेश को छिपाना नहीं आया। उसकी हताशा मेरे अवरोध को तोड़ देती है और मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। मैं अपने को फिर से संयत रखने के लिए संघर्ष करती हूँ। तभी मैं अपने हाथों में कोई चीज़ महसूस करती हूँ और मुझे पता चलता है कि मेरी नई मित्र, वह सेल्ज़-गर्ल, मेरी रक्षा के लिए आ पहुँची है। फ़्यूमियो के लिए उपहार के बँधे सेब को अपनी उँगलियों में दबाती हुई मैं उसके चेहरे के सधे भाव को इस तरह देखती हूँ कि वह बहुत-कुछ सीख सकती है।

हम एक-दूसरी की तरफ़ देखती हुई खुलकर मुस्कराती हैं और कई बार झुकती हैं।

"सैम-सान, तुम घर चलकर वहाँ मेरा इन्तज़ार क्यों नहीं करते? फ़्यूमियो के पास किसी को जाने की इजाज़त नहीं है।" मैं अमरीकन से कहती हूँ और सुनकर खुश होती हूँ कि मेरी आवाज़ अब ठीक हो गई है।

जो मैंने कहा वह सच नहीं है। असलियत यह है कि मैं नहीं चाहती कि सैम-सान फ़्यूमियो को देखे—न ही उसके कमरे के सहवासियों को। वह समय गुज़र गया है जब मैं उससे चीज़ें छिपा सकती थी। लेकिन मैं अपने किरायेदार को इतना पसन्द करती हूँ कि उसे अनावश्यक रूप से भय की कोख में नहीं ले जाना चाहती। सैम-सान अभी तक स्वतन्त्र है। लेकिन जैसे ही एक बार उसके मन में दया (और दया के साथ लोगों की सहायता करने की तीव्र आकांक्षा) ने प्रवेश किया, वह शायद कभी के लिए भी स्वतन्त्र न रह पाए। मैं उसे हिरोशिमा की ट्रेजेडी से बाहर रखना चाहती हूँ।

अगर डॉक्टर दोमोतो उसी समय वहाँ से न गुज़रता तो सब ठीक रहता। वह अच्छा ख़ुशमिज़ाज डॉक्टर पहले मेरे पास से जल्दी में गुज़र जाता है, फिर रुककर मुझे बाँह से पकड़ लेता है। उसकी तीखी आँखें मोटे चश्मे के पीछे से चमक उठती हैं।

"आह, मैं अभी तुम्हारे पति की तरफ़ ही जा रहा था मिसेज़ नाकामुरा!" वह टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहता है।

मैं उसका परिचय अमरीकन से कराती हूँ। फिर एक ऐसी बात होती है जो मैं नहीं चाहती। डॉक्टर दोमोतो, जिसे 'रेडिएशन' के मरीज़ों के अपने नए विभाग पर

बहुत गर्व है, सैम-सान को हम सबके साथ ऊपर चलने को कहता है। भाग्य ने सब-कुछ मेरे हाथ से अपने हाथ में ले लिया है। मैं ख़ामोशी से सीढ़ियाँ चढ़ती हूँ–भाग्य-वश अपने शिष्टाचार को याद रखकर उस भद्र व्यक्ति से तीन क़दम पीछे। लेकिन जैसे ही डॉ. दोमोतो फ़्यूमियो के कमरे का दरवाज़ा खोलता है, सैम-सान सिर घुमाकर मुझे भर्त्सना से देख लेता है। 'तुम मुझसे यह सब छिपकार कैसे रख सकीं?' उसकी आँखें पूछती-सी लगती हैं। 'मुझसे युका-सान!'

"मेरी खिड़की के बाहर पेड़ के सूराख में गिलहर अपना घोंसला बना रहा है," फ़्यूमियो मुझसे फुसफुसाकर कहता है। डॉक्टर इस बीच उसे अभिवादन करके दूसरे विस्तर की तरफ़ चला गया है।

"क्या यही मेरा प्रिय पति है?"

वे हाथ, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानती और आदर-सम्मान देती हूँ, मेरे पति की रज़ाई पर सूजे-से पड़े हैं। इतने थोड़े समय में ही वे अजीब और डरावने लगने लगे हैं। हैरो-सान के कारण मैं जल्दी से उन्हें अपने हाथ से ढँक देती हूँ। मैं उस रोयेंदार पूँछ की तरफ़ देखकर सिर हिलाती हूँ, जो बड़े सचेत भाव से हिलती हुई उस चेरी के पेड़ के सूराख़ में से बाहर निकल रही है।

"तुम्हारा क्या ख़याल है–उसकी पत्नी अन्दर अंडों पर बैठी है, फ़्यूमियो?"

मैंने अपने पीड़ित पति को हँसा दिया है।

"हाँ बैठी ही तो है। बहुत-से अंडे हैं।"

उसकी आवाज़ एक भारी-सी फुसफुसाहट की तरह है। उसका चेहरा उसके फूले हुए पेट में उठते दर्द के मारे खिंचा हुआ है। फिर भी मेरा बहादुर फ़्यूमियो अस्पताल की खिड़की के बाहर के दृश्य का आनन्द ले रहा है। अंडों के बारे में मेरा अटपटा मज़ाक बिस्तर से बिस्तर तक दोहराया जा रहा है, और विकृत चेहरों पर मुस्कराहटें पैदा होती जा रही हैं। वह लड़का, जिसका हाथ चौदह साल से मुड़ा हुआ है और जिसकी उँगलियाँ एक पेड़ की भूरी-मुरझाई जड़ों जैसी नज़र आती हैं, उत्तेजित होकर चिल्लाता है, "हमें यकीन है कि उसमें ज़रूर छोटे बच्चे हैं। हाँ–यह बिलकुल निश्चित है।" वह मुझसे कहता है और अस्पताल के तकियों पर रखे पाँच चकत्तेदार सिर विश्वास से हिल उठते हैं।

"इस बिस्तर के आदमी के बीस ऑपरेशन हो चुके हैं।" डॉक्टर दोमोतो सैम-सान को बताता है। "यह जो लड़का है–एटम का युवा शिकार–इसका एक-तिहाई जिस्म विस्फोट के निशानों से भरा है। ओह–अंग्रेज़ी में नहीं बोल सकता।" डॉक्टर कहता है, और कुछ जापानी शब्द बोलता है कि मैं उनका अनुवाद कर दूँ। फ़्यूमियो की पीड़ित उँगलियों पर हाथ रखे, और आँखें चेरी के लहराते पेड़ पर टिकाये मैं धीरे-धीरे अनुवाद करती हूँ।

"डॉक्टर कहते हैं कि एक एटम बम के रोगी अन्दर और बाहर दोनों तरह की चोटें झेलते हैं। बहुत-से ऑपरेशन कभी-कभी जलने के तथा एटम बम के अन्य निशानों को मिटा सकते हैं, लेकिन अन्दर की चोटों के लिए कोई इलाज़ नहीं है।"

सैम-सान सिर हिलाता है। वह उन भयावह पट्टियों को देख रहा है जो मरीज़ों की छातियों और कन्धों पर लपेटी हुई हैं। उसकी एकटक नज़र मुझे याद दिलाती है कि उसका अपना पिता डॉक्टर था। हो सकता है सैम-सान स्वयं भी डॉक्टर बनता, जैसा उसने मुझे उस पहली शाम को बताया था। सम्भव है कि वह अब भी, किसी दिन बन जाए।

"यह लड़का जो यहाँ लेटा है, इसकी आँखों के पपेटे बम-विस्फोट से जड़ हो गए हैं।" डॉ. दोमोतो फिर मेरी जगह लेकर अंग्रेज़ी बोलने लगता है। "चौदह साल से यह खुली आँखों से सो रहा है, या सो ही नहीं रहा। दोनों कानों के ढकने गायब हैं। मुँह—खै़र, तुम खुद ही देख सकते हो उसके मुँह को क्या हुआ है..."

वह हर केस वैज्ञानिक दृष्टि से समझाता है। कभी-कभी आगन्तुक को नई विभीषिका दिखाने के लिए ऊपर से चादर हटा देता है। मैं डॉक्टर की आवाज़ सुनती हुई आश्चर्य करती हूँ कि मरीज़ स्वयं क्या सोचते होंगे। सौभाग्यवश वे अंग्रेज़ी नहीं जानते। जानते, तो भी शायद यह सब जानने के इच्छुक न होते कि उनमें से अधिकांश की मृत्यु क्यों अवश्यम्भावी है। उनकी आँखें गिलहर की लाल पूँछ पर अटकी हैं, मानो एक महान् रहस्य का उत्तर खोज रही हों—ज़िन्दगी के रहस्य का। क्या वे अपने से यह पूछते हैं कि क्यों आदमी ने, जोकि इस गिलहर की पूँछ का एक बाल भी नहीं बना सका, अपने को जीव-विनाश का विशेषज्ञ बना लिया है।

एक हाथ मेरे हाथ को ऊपर से थोड़ा दबाता है। कुछ देर के लिए हमारे तीनों हाथ—डॉक्टर का, मेरे पति का और मेरा—आपस में एक विश्वास के साथ जुड़े रहते हैं। फिर वे धीरे से अलग हो जाते हैं। जब डॉक्टर धीरे-धीरे फ़्यूमियो से बात करने लगता है, तो मैं अपना सिर घुमाकर सैम-सान की आँखों में देखती हूँ।

लेकिन हैरो-सान को क्या हो गया है? उसकी आँखों का भाव बदल गया है। सम्भव है वह अब बाहर से देखने वाला व्यक्ति नहीं रहा—वह अब अन्दर पहुँच गया है। जब से उसने फ़्यूमियो के कमरे में क़दम रखा है, वह हमारी ट्रेजेडी का साझीदार बन गया है—हमारी ज़िन्दगी का भी। सैम-सान अवश्य हिरोशिमा के तथ्य पहले से जानता होगा, लेकिन तथ्य जानना अलग बात है और एक कमरे में जहाँ छह पीड़ित आदमी पड़े हों, खड़े होना बिलकुल और बात है—न केवल उन्हें देखते हुए, बल्कि साथ ही दुःखी होते हुए और सहायता करने की इच्छा रखते हुए।

"क्या मैं...क्या मैं फ़्यूमियो के लिए कुछ कर सकता हूँ?" वह तनाव-भरी आवाज़ में पूछता है।

उसकी लड़कों की-सी लम्बी उँगलियाँ आपस में इस तरह भिंच जाती हैं कि क्षण-भर के लिए मेरे पति का ध्यान रोयेंदार पूँछ वाले गिलहर से हट आता है और वह किरायेदार की तरफ़ देखकर मुस्करा देता है।

"इससे कहो, गिलहरी के लिए कुछ दाने ख़रीद दे," मुझसे सवाल का अनुवाद सुनकर फ़्यूमियो कहता है। सैम-सान जवाब सुनकर भौंचक्का-सा हो रहता है, मानो उसके मुँह पर चपत लगा दी गई हो।

"दाने...सिर्फ़दाने...? क्या मैं सिर्फ़ इतना ही कर सकता हूँ...?" सैम-सान धीरे से दरवाज़े की तरफ़ मुड़ता है। उसे खोलने से पहले, वह एक नज़र एक-एक करके कमरे में पड़े उन छह व्यक्तियों को देख लेता है जो अपने दर्द के भार से दबे हैं। तभी उसका चेहरा सहसा इस तरह सुर्ख हो उठता है मानो उसका सारा ख़ून जिस्म से वहीं निचुड़ आया हो।

हमारा किरायेदार हताश भाव से ज़रा-सा झुकता है। फिर वह मुड़कर तेज़ी से कमरे से बाहर चला जाता है।

ग्यारह

मुझे भोर अच्छी लगती है। आदमी का दिन कई लोगों का होता है, लेकिन भोर सिर्फ़ अपनी होती है। मेरी तरह मेरी बेटी मिचिको भी प्रातः के उस एकान्त से प्यार करती है, शायद इसलिए कि उसका आधान भोर के समय हुआ था, और जन्म भी भोर के समय ही हुआ था। हर सुबह गुलाबी आभा निकलने से पहले, वह चुपचाप बाग़ीचे में चली जाती है—इस ख़याल से कि कोई उसका पीछा नहीं करेगा। उसकी उम्र में मैं भी ऐसा ही किया करती थी। मिचिको की तरह मैं भी कुछ समय अपने अकेलेपन के साथ बिताती थी। निर्धारित जगह पर पंजों के बल जाते मेरी साँस फूल जाती थी, जैसा कि बाद में चलकर प्रेम-मिलन के लिए जाते हुए होता था।

"मामा..." मैं हर सुबह उसकी फुसफुसाहट सुनती हूँ, और जल्दी से एक खर्राटा भरकर उसे आश्वस्त कर देती हूँ। (क्या मेरी माँ भी झूठी नींद का बहाना करती थी, जब मैं भोर देखने भागने से पहले उसका नाम फुसफुसाती थी? मामा-सान, प्यारी मामा-सान, मुझे यक़ीन है तुम ऐसा ही करती थीं!)

जैसे ही मैं 'शोजी' को फिसलते सुनती हूँ, देखती हूँ कि एक छोटी-सी आकृति नीले युकाता में नंगे पाँव चुपचाप बाहर निकल रही है। मैं अपने ओढ़ने के नीचे एक मोम की गुड़िया की तरह चुपचाप पड़ी रहती हूँ। सम्भवतः मैं अपना हाथ फ़्यूमियो की तरफ़ बढ़ाती हूँ, और यह याद हो आने पर कि वह वहाँ नहीं है, पूरी तरह जाग जाती हूँ। मैं अपना रात का किमोनो उतारकर युकाता पहने दबे पैरों फ़र्श पार करती हूँ ताकि मेरा मुटल्ला लड़का न जाग जाए। (उसे अपनी नींद में मैं हँसते सुनती हूँ) जल्दी से मैं रसोईघर में आग जलाने चली जाती हूँ। एक कटोरा गरम चाय शायद मेरे अकेले शरीर को गरम कर दे, जिसके पास कोई साथी अब उसे गरम करने के लिए नहीं रह गया है।

ओह! मैंने बी-बुलबुल को जगा दिया है। मैं उसे अपनी तीली-जैसी टाँगों को फैलाते और परों को झटकते सुन सकती हूँ, हालाँकि एक कपड़ा अभी भी उसके पिंजरे को ढके हुए है। जब मैं कपड़े का एक कोना उठाती हूँ, वह तुरन्त अपनी पीली चोंच खोल देती है। नहीं, नहीं, बी-बुलबुल! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। अभी मत

चहचहाना! तुम मेरे तादेओ को जगा दोगी! ओह, कितनी तीखी नज़र से बी-बुलबुल मुझे देखती है! नरम दिल होने से मैं हथियार डाल देती हूँ। अच्छा बी-बुलबुल, चहचहाओ। लेकिन आहिस्ता से डार्लिंग...आहिस्ता से।

शूँऽऽऽ!

लो चाय का पानी उबल गया। मेरी पुरानी चाय की केतली कितना शोर करती है। वह सीटी बजाती है और जैसे ही मैं जल्दी से उसे आग से उठाने लगती हूँ, वह मुझे बी-बुलबुल की तरह गुस्से की नज़र से देखती है। उसे सीटी बजाना पसन्द है। सीटी बजाना ही हमारी केतली का भाव प्रकट करने का एक ढंग है, फ़्यूमियो कहा करता था। मैं अपने को पकड़ती हूँ। कहा करता था, क्यों? ओह फ़्यूमियो!

मैं अपने लिए एक कटोरा चाय बना लेती हूँ और उसकी चुस्कियाँ लेती, फिसलते दरवाज़े तक आ जाती हूँ। दरार से आँख सटाकर मैं मिचिको को तालाब के किनारे बैठे देखती हूँ। ख़ामोश और स्थिर, वह घास पर घुटने टेके बैठी है और उसकी आँखें पानी में सोये बन्द कमलों पर रुकी हुई हैं। मैं अपनी साँस को तेज़ चलते महसूस करती हूँ। आह, तुम भी? मिचिको, तुम भी चीज़ों को खुलते देखने में सुख पाती हो—शुरू होते देखने में? हम लोग बिलकुल एक-जैसी हैं।

भोर की ख़ामोशी में घुटने टेके मेरी बेटी उत्सुकता से इन्तज़ार कर रही है। अपने सिर को एक तरफ़ झुकाये कमल की कलियों के खुलने की आवाज़ सुनना चाह रही है। कितनी अच्छी तरह मुझे याद है कि कुछ कमल 'पक्' की आवाज़ के साथ झट से खुलते हैं और कुछ चुम्बन की-सी आवाज़ से एक गहरे सन्तोष की चमक मिचिको के गोल चेहरे पर नज़र आती है और मैं महसूस करती हूँ कि उसने अभी एक करिश्मा देखा है—इस सर्वथा नए बसन्त की सुबह, एक बड़े-से नए फूल के जन्म का। मैं भी फ़्युसुमा के पीछे छिपी मुस्करा देती हूँ।

"दबोचो, मिचिको!"

मैं एक हरी गेंद को हवा में उछलकर आते देखती हूँ। वह हाथ जिसने उसे फेंका है और वह शरीर जिससे वह हाथ जुड़ा है, मुझे बाद में नज़र आते हैं। मेरा युवक किरायेदार इतना जाना-पहचाना हो गया है कि मैं उसके घर से निकलकर आने से पहले ही उस छोटे-से युकोता में, जोकि मैंने उसे पहनने को दिया है, लिपटी उसकी लम्बी टाँगों का अनुमान कर लेती हूँ।

"क्या तुम मेंढक ढूँढ रही हो मिचिका?" सैम-सान उससे पूछता है।

मिचिका त्यौरी चढ़ा लेती है। वह अंग्रेज़ी शब्दों से घबरा जाती है। फिर अपना सिर धीरे से हिलाती है। वह अपना गोल सिर लगातार हिलाती रहती है और मैं समझ जाती हूँ कि वह कभी किसी को नहीं बताएगी कि उसने अभी क्या देखा है। अपने अन्तिम दिन तक वह यह जानकारी अपनी विचित्र एकान्त मुस्कराहट के पीछे छिपाए रखेगी।

अब वह उछलकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है और अपने नीले युकाता में नीचे तक झुकती है। इस शिष्टाचार का पालन करते हुए उसकी आँखें गम्भीर हैं और वह बहुत आकर्षक लग रही है। अचानक मुझ पर अपराध की वह विचित्र-सी भावना छा जाती है। हमेशा यह ख़याल आने पर कि मैं अपने परिवार को कितना प्यार करती हूँ, यह भावना मुझ पर छा जाती है। लेकिन मैं क्यों उस भावुकता से लज्जित महसूस करूँ जोकि किसी भी स्त्री के लिए स्वाभाविक है? फिर मैं अपराधी क्यों हूँ?

जैसे कि इसके उत्तर में, तीन भूत-जैसी आकृतियाँ हमारे दरवाज़े के सामने से गुज़रती हैं—हरादा-सान और उसकी दोनों मित्र घिसटती हुई अपने दिन के काम पर जा रही हैं। (वे शहर से कुछ मील बाहर, एक नई सड़क के लिए पत्थर तोड़ती हैं।) हाँ, मुझे अपनी अपराध-भावना अब समझ आ रही है। अपने परिवार को पूरा वक़्त देने में, अपने पुराने मित्रों के प्रति मैं उदासीन रही हूँ—यह भूली रही हूँ कि हम एटम बम के उत्तरजीवियों का पहला कर्तव्य एक-दूसरे के प्रति है। पहले मैं उन लोगों के बीच जाकर उनकी सहायता किया करती थी, लेकिन अब काई से घिरे पत्थर की तरह मैं स्वार्थ से ढक गई हूँ।

"कोनिचिवा हरादा-सान।"

तालाब के किनारे खड़ी मिचिको हमारी तीन पड़ोसिनों की तरफ़ झुकती है। वे भी गम्भीरता से उत्तर में झुकती हैं। फिर हैरो-सान को देखती हैं और उसकी तरफ़ झुकती हैं। तीन थकी औरतें, काम करने की कालिख-भरी पैंटें पहने, जिनके अन्दर उन्होंने अपने बड़े-बड़े किमोनो ठूँस लिये हैं। युवा-विदेशी जवाब में झुकता है। मैं जानती हूँ कि एक सप्ताह पहले वह इस ईमानदारी से जापानी अभिवादन नहीं कर सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि हिरोशिमा आने के बाद हैरो-सान में इन कुछ दिनों में बहुत फ़र्क़ आ गया है।

मैं 'शोजी' में बनी दरार के बिलकुल करीब आ जाती हूँ और देखती हूँ कि सैम-सान मेरी मित्रों को ताक रहा है। वह परेशान है। अचानक वह झुककर अपने हाथ मिचिको की तरफ़ बढ़ा देता है। मेरी लड़की भागकर उसके आलिंगन में चली जाती है। मुझे हैरो-सान के उस लड़की को साथ सटा लेने से लगता है कि वह उसकी उस कहर से रक्षा करना चाहता है जो हरादा-सान और अन्य लोगों पर, हम हिरोशिमा के सब लोगों पर, टूटा है। उसका गम्भीर भाव मुझे चकित करता है। क्या मैंने शुरू से ही नहीं भाँप लिया था कि उस लड़कपन करते युवा-अमरीकन के अन्दर एक और सैम-सान बन्द है जो फूट पड़ने के लिए तड़प रहा है—कमल की कलियों की तरह?

उसके सुन्दर बाल धूप में चमक उठे हैं। हमारी गली की तिरछी छतें और चेरी के अकेले पेड़ की शाखाएँ रोशनी से सुलग उठी हैं। धूप! धूप! मैं 'शोज़ी' खोलकर भागती हुई बाहर सुबह के बीच जाने ही वाली हूँ कि एक ख़याल मुझे ठंडा कर देता

है। मेरे पति के अस्पताल की खिड़की के बाहर का पेड़ भी चमक उठा होगा। उसे भी सुबह उसी तरह नज़र आ रही होगी, जैसी कि मुझे नज़र आ रही है। लेकिन वह नया दिन, उसके और उन पाँच आदमियों के लिए उल्लास नहीं लाएगा। यह केवल उन्हें मौत के एक दिन और नज़दीक ले जाएगा। मैं भय की कँपकँपी को दबाती हूँ और एक क्षण के लिए 'शोजी' से अपना सिर टिका देती हूँ। ऐसी ही धूप से नहाई सुबह में उठना और बाग़ीचे में मिचिको के साथ घूमना, जबकि उसका पिता मुस्कराता हुआ देख रहा हो—यह उन खुशियों में से एक थी जो परसों मेरे लिए समाप्त हो गईं। हाँ, सिर्फ़ कल से एक दिन पहले।

हुम!

फिर वही हरी गेंद। वह ज़ोर से सीधी मेरी तरफ़ आती है। मुझे सोचना छोड़कर क्रियाशील होने के लिए मजबूर करती है। मैं उसे दबोचकर मिचिको की तरफ़ फेंकती हूँ। वह उस गेंद को सैम-सान की तरफ़ उछाल देती है। कितना मनोरंजक है यह, कितना आनन्ददायक! एक क्षण के लिए मैं उस खेल के उत्साह में सब-कुछ भूल जाती हूँ, क्योंकि मैं हमेशा से गेंद के खेलों में कुशल रही हूँ। हिरोशिमा के स्कूल में मैं लड़कियों की बेसबाल टीम में खेला करती थी। मैं अपनी कक्षा की सबसे अच्छी खिलाड़ी मानी जाती थी।

"युका-सान, तुम एक लड़की होने के नाते इतनी बुरी खिलाड़ी नहीं हो। बुरी हो, लेकिन इतनी बुरी नहीं।"

सैम-सान ठहाका लगाता है। कल मैंने उसे अस्पताल से विदा किया था, तो मैं डरी थी कि हमारी आज की सुबह बड़ी दुःखद होगी, लेकिन यह युवा अमरीकन बहुत समझदार और व्यवहारकुशल है। जानता है कि यह वक़्त मेरे दुःखों का ज़िक्र करने का नहीं, हालाँकि एक तरह से हम अब उनमें साझीदार हैं। मैं उसे देखकर जवाब में मुस्करा देती हूँ। वह मुझे ज़रा भी तनाव महसूस नहीं करने देता।

मिचिको खेलना बन्द कर देती है और नंगे धूल-भरे पैरों से दौड़ कर मेरी तरफ़ आती है।

"मामा-सान! यामागुचि-सान सड़क पर इधर को आ रहा है।"

मैं गेंद गिरा देती हूँ। उसे उछलकर बाग़ीचे में दूर जाते सुनते हुए मुझे लगता है जैसे मेरी खुशी ही मुझसे दूर भागी जा रही है।

"क्या बात है, युका-सान?"

मैं अपने होठों पर उँगली रखकर अपने किरायेदार को चुप कराती हूँ—इस ख़याल से कि अगर यामागुचि-सान हमारी आवाज़ न सुने तो शायद चला जाए, जैसे कि कोई मकान-मालिक ख़ून सूँघकर वापस जा सकता हो। निःसन्देह यामागुचि-सान ने बुरी ख़बर सुन ली है। मैं जानती हूँ कि वह हमें निकाल देने के लिए कितना उत्सुक है।

बहुत अरसे से वह चमकते आधुनिक मकानों की लम्बी कतार बनाने की सोच रहा है जिनसे उसे आज के किरायों से कहीं ज़्यादा किराया मिल सकता।

''आह, गुड मार्निंग, गुड मार्निंग नाकामुरा-सान!''

जैसा कि मैंने सोचा था, यह जोंक हमारे पीछे है। मैं किसी तरह कोशिश करके अपने को ख़ूबसूरत सूट और बाँकी पानामा हैट पहने उस नाटे व्यक्ति के सामने झुकाती हूँ। ओह! विद्रोही हाथो, मेरी जाँघों पर से नम्रतापूर्वक फिसलो। कमर, लोचदार कमर, नीचे झुको, थोड़ा और नीचे! होंठो, कृतज्ञता से हँसो! आँखें, झपको।

''कितनी सुहानी सुबह है,'' औपचारिकता पूरी होने पर मैं कहती हूँ। ''आज तुम बड़ी सुबह बाहर निकल आए, यामागुचि-सान!''

"जल्दी जागने वाले कीड़े को पकड़ना था। माफ़ करना, मेरा मतलब तुम्हारे पति से है,'' यामागुचि-सान खीसें निपोरता है। ''मुझे उससे एक बात करनी है।''

सोचने के लिए समय लेने के लिए मैं अपने किरायेदार का परिचय देती हूँ। यामागुचि-सान उसकी पीठ पर धौल लगाता है—केवल यह जताने के लिए कि उसे पच्छिमी ढंग आता है।

''सुनाओ, कया हाल हैं अपने देश के? अपना न्यूयार्क कैसा है?'' वह कहता है। उसने अंग्रेज़ी एक व्यावसायिक स्कूल से सीखी है और अपने काले रोज़गार के सम्पर्कों से उसे माँजा है।

''ठीक है,'' सैम-सान ठंडे ढंग से कहता है। यह स्पष्ट है कि वह इस सख़्त नज़र वाले जोकर से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता।

''मैंने कहा है मैं तुम्हारे पति से बात करना चाहता हूँ। नाकामुरा-सान!''

मकान-मालिक की आवाज़ बदल गई है, ढंग भी बदल गया है, जैसे कि एक अ-कलाकार एक नया नकाब चढ़ा ले।

''मेरे पति ओसाका गए हैं,'' मैं जल्दी से झूठ बोलती हूँ। ''उसके बॉस ने उसे गराज के लिए सामान ख़रीदने भेजा है।''

''सोदेस्का!''

यामागुचि-सान इस तरह इत्मीनान से मुस्कराता है कि मैं समझ जाती हूँ कि वह सब-कुछ जानता है, और हमें घर से खदेड़ना चाहता है। वह मुझे यकीन दिलाता है कि कोई बात नहीं, वह फिर किसी दिन आ जाएगा। उसका काम फिर भी हो जाएगा, वह कहता है। (हाँ फिर हो जाएगा। वक़्त जो उसके साथ है।)

''तो अब मुझे चलना चाहिए। पड़ोस में मुझे दो-तीन जगह और जाना है,'' यामागुचि-सान पहले से तेज़ धौल मेरे किरायेदार के लगाकर क़हता है। ''मैं काफ़ी अरसे से तुम्हारे देश का चक्कर लगाने की सोच रहा हूँ। वह दुनिया का सबसे बड़ा देश है। जापान मेरे लिए बहुत छोटा है। अच्छा तो फिर मिलेंगे, दोस्त!'' वह अपने

पानामा हैट को अधिक तिरछे कोण पर करता हुआ कहता है और लम्बे क़दम रखता हुआ बाग़ीचे के रास्ते चला जाता है।

"बिजली का तार है यह आदमी," सैम-सान खड़ा यामागुचि-सान को तेज़ी से लकड़ी का दरवाज़ा खोलते, बन्द करते और फिर सड़क पार करते देखकर कहता है। "लेकिन मुझे इस तरह के तार को नंगे हाथों छूने से घृणा है। मेरा ख़याल है तुम्हें भी होगी युका-सान!"

लेकिन मैं उसकी बात नहीं सुन रही। देख रही हूँ कि मैंने ठीक सोचा था। मकान-मालिक होदा-सान से बात करने रुक गया है, जोकि सड़क के पार अपनी सुचि की दुकान का दरवाज़ा खोलने जा रहा है। असली जासूस है यह यामागुचि-सान। निस्सन्देह वह होदा-सान से पूछ रहा है कि उसने फ़्यूमियो के बारे में अफ़वाह सुनी है या नहीं। साथ ही पता लगा रहा है कि मुझ पर उसका कुछ कर्ज़ तो नहीं। हमारे मकान-मालिक का यह ख़ास ढंग है। असल में वह होदा-सान के भी पीछे पड़ा है। उसका उसने किराया बढ़ा दिया है और उसे उस छोटी दुकान से बाहर निकालना चाहता है ताकि अपनी नए मकानों की योजना पूरी कर सके।

"क्या बात है, युका-सान? इतनी परेशान क्यों हो?"

मैं अपने को सँभाल लेती हूँ। देखती हूँ कि सैम-सान मुझे अपने युकाता की पेटी पर उँगलियाँ मरोड़ते देख रहा है। मैं उसकी तरफ़ मुस्कराने की कोशिश करती हूँ।

"कोई बात नहीं युका-सान! मैं कुछ भी जानने की कोशिश नहीं कर रहा।" सैम-सान कहता है। "मैं उस मकान-मालिक सान की तरह घास में बिलबिलाता साँप नहीं हूँ।"

मैं क्यों अपने दुःख सैम-सान के आगे रो देती हूँ? यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है, लेकिन मेरी तनी नसें फटने को हो रही हैं। यह सोचकर कि सैम-सान अब हमारा अपना ही है, मैं ज़बान ढीली छोड़ देती हूँ। अपने को यह बताते पाती हूँ कि एटम बम का शिकार होना क्या अर्थ रखता है। मैं उसे बताती हूँ कि कैसे हमें बहिष्कृत व्यक्ति समझा जाता है, जिनसे सम्पर्क रखना दुर्भाग्य का लक्षण है। और भी बड़ी बात–कि जिन्हें किसी भी अच्छी नौकरी के क़ाबिल नहीं समझा जाता। यह सच है कि हमारा बिगड़ा स्वास्थ्य हमें ज़्यादा काम करने लायक नहीं रहने देता। यह भी सच है कि हमारे जले निशानों को देखकर वितृष्णा होती है....

सैम-सान मेरी बाँह थाम लेता है (यह बाँह मेरे जख़्मों से भरी है जो युकाता के अन्दर छिपे हैं।)

"तुमने यह सब मुझे पहले क्यों नहीं बताया? क्या वजह है? बताओ मैं दोस्त हूँ या दुश्मन?"

"मैं तुम्हें अपने दुःखों से परेशान नहीं करना चाहती थी सैम-सान! तुम यहाँ काम से आए हो–और जापान देखने के लिए। एक-दो दिन में तुम क्योतो चले जाओगे।"

"जहन्नुम में जाए क्योतो।" उसके मुँह से निकल पड़ता है। फिर सैम-सान दाँत निकालकर मुस्करा देता है। "तुम्हें पता नहीं कि मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ जिसे रमणीक स्थानों या मन्दिरों आदि को देखने का शौक हो। क्योतो जाना टल सकता है। कैसा रहे अगर मैं क्योतो तार दे दूँ और यहाँ कुछ दिन और रहने का प्रबन्ध कर लूँ? हद-से-हद यही तो होगा कि मेरा सौतेला पिता मेरा काम छुड़ा देगा। सच पूछो तो मैं इससे छुटकारा ही महसूस करूँगा। और देखो, युका-सान, जब मैं यहाँ रुक ही रहा हूँ तो मुझे एक सप्ताह का किराया तुम्हें अग्रिम दे देना चाहिए।" मैं बिना जवाब दिए सैम-सान को देखती रहती हूँ और आभार से दब जाती हूँ। हमेशा की तरह मैं उचित शब्द नहीं ढूँढ पाती। मैं रूढ़ियों में इतनी बँधी हूँ कि अपनी भावना शब्दों में प्रकट नहीं कर सकती।

"अब तुम तैयार हो जाओ," सैम-सान मुझसे कहता है। "फ़्यूमियो अस्पताल में तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा होगा। क्या मैं दोपहर को तुम्हें वहाँ से लेता आऊँ? हम साथ-साथ कुछ ख़रीदारी करेंगे। ठीक है?"

कितना सुखकर लग रहा है! कितना सुरक्षित! मैं उसे धन्यवाद की मुस्कान से देखती हूँ।

"तुम मुस्कराती हो तो बिलकुल एक बच्ची-सी लगती हो।" सैम-सान अपने सिर को एक तरफ़ झुकाकर मुझे ध्यान से देखता हुआ कहता है। "मैं तो कहूँगा बिलकुल मिचिको की उम्र की जान पड़ती हो! दो बेरों की तरह तुम बिलकुल एक-जैसी लगती हो, तुम्हें मालूम है? यही बात मैं सुबह सोच रहा था, जब मैंने बाहर आकर उस बच्ची को तालाब में देखते पाया था। यह बिलकुल युका-सान की तरह लग रही है, मैंने सोचा था।"

"और मिचिका देख क्या रही थी?" मैं उसे छेड़ती हूँ।

"वह तो बस देखती जा रही थी, देखती जा रही थी, जाने क्या! मुझे यक़ीन है वहाँ था कुछ भी नहीं।"

मुझे अपनी लड़की के चेहरे का भाव याद हो आता है—जब वह भोर के वक़्त घुटने टेके तालाब के किनारे बैठी थी।

तुम ग़लत सोचते हो सैम-सान, बिलकुल ग़लत सोचते हो। वहाँ कुछ था ज़रूर। लेकिन उसे सिर्फ़ मिचिको ही देख सकती थी।

बारह

कितने सौभाग्य की बात बात है कि ओहात्सू की यह पार्टी जुगनुओं के मौसम में पड़ी। दो रात हम पहाड़ियों पर जुगनुओं का पीछा करते रहे। उन्हें उन बाँस के पिंजरों में बन्द करते रहे जिन्हें हम हर बसन्त में बाहर निकालते हैं। हमेशा की तरह, शहर से बाहर के जंगल, उस चकमक कीड़े को पकड़नेवाले लोगों से भरे थे। लेकिन मुझे यकीन है कि हैरो-सान जितने जुगनू किसी ने नहीं इकट्ठे किए। ओह, यह युवा अमरीकन हर काम कितने उत्साह के साथ करता है! उत्सुकता से वह आज रात की दावत का इन्तज़ार कर रहा है जो माएदा-सान ओहात्सू और अपने सबसे अच्छे शिष्य हिरू के लिए दे रहा है।

"हमें कब पहुँचना होगा?" वह मुझसे पूछता है, "उम्मीद करनी चाहिए कि मौसम आज अच्छा रहेगा। तुम क्या सोचती हो, मुझे सज-धजकर जाना चाहिए, युका-सान?"

"नहीं, सिर्फ़ एक बार कंघी करके।"

मैं मुस्कराती हूँ और अब मैं उससे इतनी अच्छी तरह परिचित हो चुकी हूँ कि उचककर उसके सदा बिखरे बालों को सँवार देती हूँ। वे उतने ही मुलायम हैं जितने कि देखने में लगते हैं। इन मुलायम सुनहरे बालों के कारण कभी-कभी हैरो-सान मुझे थोड़ा अयथार्थ-सा लगता है।

"जुगनुओं की दावतें तब शुरू होती हैं जब पहला सितारा निकलता है," मैं उससे कहती हूँ। "और माएदा-सान के शिष्य भी ठीक समय पर ही पहुँचेंगे।"

ठीक समय पर! वे रहे वे लोग अपने-अपने दावत के किमोनो में माएदा-सान के नरम बेंत के दरवाज़े के पास खड़े, अपनी गरदनें ऊँची किए सितारे को देखते हुए। विस्फोट से तहस-नहस होने के बाद माएदा-सान का यह नाजुक मकान फिर अपनी पहली हालत में नहीं आ सका। एक कलाकार अपने पंखे के पीछे से हँस रहा है।

"किसी दिन हमारे चित्रकला के अभ्यास के दौरान एक बम हम पर आ गिरेगा। हमारे गुरु यह जगह बदल लेते, अगर उन्हें ओका-सान का ख़याल न होता।" उफ़्!

सैम-सान शब्द ओका-सान पर अटक जाता है। (वह जापानी सीखने पर तुला है। इसी से हर शब्द को स्पंज की तरह सोख लेता है।)

"क्या माएदा-सान के पत्नी है? तुमने कभी, उसका ज़िक्र नहीं किया, युका-सान!"

मैं बाग़ीचे में निकल आती हूँ, मानो मैंने सुना ही न हो—इस बात की निरर्थक आशा लिये कि सैम-सान ईइज़ा को आज रात नहीं देख पाएगा। यह एक सुहानी शाम है और मैं हैरो-सान को हिरोशिमा के एक और दुःख से बोझिल नहीं बनाना चाहती। लेकिन मेरी आशा जल्दी ही टूट जाती है।

"आओ मेरी पत्नी से मिलो, प्यारे दोस्त!" माएदा-सान एक मुस्कान के साथ हमारा स्वागत करता है। "आओ और ईइज़ा को 'हैलो' करो।"

अपनी प्रिय पत्नी के प्रति स्नेह उसके चेहरे के हर रोम से फूटा पड़ता है। हल्के पैरों चलता हुआ वह अपने युवा मित्रों को इशारा करता है कि वे भी अपनी 'गेता' से आवाज़ पैदा न करें। माएदा-सान हमें बाग़ीचे के कमरे की तरफ़ ले जाता है, जिसकी बाहर की दीवार खुले लकड़ी के ढाँचे की है और जिस पर बेलें चढ़ी हैं। थोड़े-से जुगनू अपने पिंजरों से ज़रूर निकल गए होंगे और उनकी हरी रोशनी में हम ईइज़ा के कमरे का काफ़ी हिस्सा देख सकते हैं। रोग़न किए परदे के आगे वह घुटने टेके बैठी है। एक विचित्र दृश्य है! अगर किसी को यह मालूम न हो कि माएदा-सान की पत्नी सचमुच साँस लेती है, खाती और सोती है, तो उसे लग सकता है कि उसके पति ने एक आदम-क़द गुड़िया परदे से टिकाकर रखी हुई है—सख़्त किमोनो पहने गुड़िया, जिसे वह एक मॉडल के तौर पर इस्तेमाल करना चाहता है।

जल्दी से मैं सैम-सान की तरफ़ देख लेती हूँ। उसकी आँखें आधी बन्द हैं और मैं उसे उसाँसें भरते सुन सकती हूँ। माएदा-सान के शिष्य एक साथ झुकते हैं। सैम-सान भी अपने आगे-पीछे देखने के बाद झुक जाता है। सभी युवा पुरुष अपने गुरु की बीमार पत्नी को सम्मान दे रहे हैं।

मैं भी ईइज़ा को अभिवादन करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने शरीर को झुकाने से अधिक भी कुछ कर सकूँ, लेकिन मुँह से कुछ भी कहना निरर्थक है। ओह बेचारी ईइज़ा, तुम्हारा मस्तिष्क—हिरोशिमा की घड़ियों की तरह—उस बीते अगस्त के दिन सवा आठ बजे चलना बन्द हो गया था! मेरी अभागी मित्र, विस्फोट से भौंचक तुम फटे कपड़ों में अपने को घसीटती घर ले आई थीं—तुम्हारा अनुभूतिशील मस्तिष्क खो चुका था—और उसके बाद यहाँ से कभी नहीं गईं। तुम्हारे पति ने तुम्हें गेट के भीतर अपने मरते बच्चे को दूध पिलाते देखा था और तुम्हारी आँखें भय से जड़-सी होकर एटम की काली वर्षा को देख रही थीं।

"किरि।"

कोचिरो, सबसे युवक कलाकार, फुसफुसाता है, 'सुन्दर,' और कोई और धीरे-से इसे दोहराता है। क्यों नहीं? क्या वे सब कलाकार नहीं हैं? सौन्दर्य के प्यासे? एक जुगनू ईइज़ा की कोमल भौंह पर बैठ जाता है और वह लालटेन से उसके चेहरे पर रोशनी डालती है। वह वास्तव में सुन्दर है। उसके जुड़े हुए हाथ, जो इत्मीनान से उसकी गोद में रखे हैं, उसके रेशमी किमोनो की सलवटों की तरह रुपहले हैं। उसके लम्बे काले बाल उसके मखमली रिबनों की तरह मुलायम हैं। शब्द 'किरि' ही हमारी नेक ईइज़ा के लिए उपयुक्त है।

लेकिन उसके माथे पर चमकता जुगनू एकाएक अपनी रोशनी बुझा देता है और ईइज़ा का चेहरा एकदम अँधेरे में डूब जाता है। माएदा-सान हमें वापस चलने के लिए इशारा करता है, ताकि हम उसकी पत्नी को थकायें नहीं। फिर भी कोई उस बेचारी सफ़ेद गुड़िया को यह महसूस नहीं होने देना चाहता कि वह अपने ही घर की दावत में शरीक नहीं है। इसी से घास पर घुटने टेके, हम उसे गीत सुनाते हैं। हमारी आवाज़ें फुसफुसाहट से थोड़ी ही ऊँची हैं और हम हिरोशिमा के वे गीत गाते हैं, जो हम सबको बहुत प्रिय हैं। ''जबकि वह काली बारिश आई,'' हम गाते हैं और 'नदी में फूलों का गुच्छा' हमेशा की तरह हम 'बुँगाकु नो को' के साथ समापन करते हैं। हम अपना पूरा हृदय इन शब्दों में उँडेल देते हैं, "अब कोई हिरोशिमा नहीं होगा।'' ओह, हम अपने को एक-दूसरे के कितने निकट महसूस कर रहे हैं! हम एक विशेष जाति के लोग हैं—रेडिएशन-ग्रस्त जाति के—जोकि धरती पर अपनी तरह की सिर्फ़ एक ही जाति है। हम सब बहन-भाई हैं।

''युका-सान!''

मैं हैरो-सान को भूल गई थी। गाना रुक चुका है और उसकी जगह फुसफुसाहट ने ले ली है। मैं अचानक सोचती हूँ कि सैम-सान बहुत-बहुत अजनबी महसूस कर रहा होगा। अपने सम्मानित मेहमान की तरफ़ लापरवाह रहना, यह मेरी कितनी रुखाई है!

मैं अपराधी महसूस करती उसकी तरफ़ मुस्कराती हूँ।

''क्या यह...क्या यह कभी नहीं ठीक होंगी?'' वह फुसफुसाकर कहता है, जिससे कि ईइज़ा का ध्यान न बँटे। मैं सिर हिलाती हूँ और संक्षेप में उसे उसकी कहानी सुनाती हूँ। मैं देखती हूँ कि सैम-सान की आँखें भर आई हैं। वह मुझसे पूछता है कि क्या हिरोशिमा में ऐसे बहुत-से व्यक्ति हैं? मैं सिर हिलाती हूँ तो सैम-सान की भौंहें तन जाती हैं। वह उस समय वैसा ही लग रहा है जैसे डॉ. दोमोतो के वार्ड में भिन्न-भिन्न केस दिखाए जाने के समय लग रहा था। हाँ, सैम-सान को डॉक्टर ही बनना चाहिए था। वह संवेदनशील है और जीवन के प्रति अनुराग रखता है। उसका पिता, जिसकी वह अकसर बातें करता है, बिलकुल इसी तरह का होगा।

"जल-पान!" माएदा-सान की धीमी आवाज़, जिसका हम सब देर से इन्तज़ार कर रहे थे, सुनाई देती है। "युवा लोगो, आओ, पेट भरकर खाओ।" वह धीमे स्वर में हँसता है, फिर धीमे स्वर में ताली बजाता है। वह सब-कुछ धीमे स्वर में करता है ताकि उसकी पत्नी को बाधा न पहुँचे और उसी का अनुसरण करते हम लोग भी फुसफुसाहट में ही हँसते और बातें करते हैं। सच ही यह एक स्वप्न की-सी दावत लगती है। ओहात्सू और मैं चुपचाप 'सुचि' और हिशिमोशि की प्लेटें लिये इधर-उधर घूमती हैं। ओह, इन नवयुवकों को, जिन्हें कसकर भूख लगती है, खाना खिलाना कितना अच्छा लगता है! वे हर बार जब नए सिरे से प्लेटें भरते हैं, तो हमारी तरफ़ आँखें झपकते हैं क्योंकि यह खाना उनके लिए भी उतना ही दुर्लभ है जितना हमारे लिए। वे इतने युवा, इतने अच्छे हैं! रसोई की तरफ़ आते-जाते बीच में ओहात्सू और मैं अपना हिस्सा झपट लेती हैं और उन हीरे-जैसी हिशिमोशि को चबाने लगती हैं जो मैंने पकाई हैं। साथ ही जल्दी-जल्दी लेमनेड के घूँट भरती जाती हैं।

काफ़ी देर बाद जब सब खाना ख़त्म करते हैं, तो मैं ताली बजाती हूँ।

"अब जुगनुओं का समय है। आओ अपने-अपने पिंजरे ले लो। दोज़ो!"

माएदा-सान के युवा मेहमान अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। ईइज़ा को बाधा न हो, इसलिए जुगनुओं के लिए दौड़ने से पहले हम अपनी आवाज़ करती 'गेता' उतार देते हैं। फिर हम सब एक-एक करके उन बाँस के घरों के दरवाज़े खोल देते हैं ताकि वे कीड़े उड़ सकें। लेकिन जैसे ही दरवाज़े खुलते हैं कीड़े शरारत से अपनी रोशनी बुझा देते हैं। ओह! जुगनू कितना तंग करते हैं—यह सब जानते हैं! आदमी उनके पिंजरे को हिलाये जाता है, हिलाये जाता है, और जैसे ही वह हार मानने को होता है, वे अपनी रोशनी फिर जला देते हैं। "मेरे बुझ गए हैं," मैं चिल्लाती हूँ और इसके साथ हमारा खेल शुरू हो जाता है। हम सब अपने जुगनुओं का पीछा शुरू करते हैं। हँसते-गिरते हुए हम आहिस्ता से एक-दूसरे से अँधेरे में टकरा जाते हैं।

आह! जुगनुओ, जुगनुओ, वासन्ती रातों के, तारों-भरी रातों के जन्तुओ! अपनी-अपनी लालटेनें लिये तुम बिखरते, उड़ते हो—दिशा बदलते नाचते हो। तुममें से जिन्हें एकान्त प्रिय है, वे पत्तियों पर जा बैठते हैं और अपनी पीली रोशनी से उन्हें हरित नील बना देते हैं। तुममें कुछ को स्वप्न प्रिय हैं। जानते हुए कि तुम स्वयं छोटे-छोटे रहस्यमय चाँद हो, तुम सारी सतर्कता छोड़, बड़े चाँद की तरफ़ लपकते हो। मुझे बताओ जुगनुओ, क्या तुम चाँद की यात्रा में अकसर बेहोश नहीं हो जाते? आकाश में मर नहीं जाते? पर यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण है केवल उड़ना। हाँ-हाँ। हमारे अति विशाल स्वप्न, हमारे अति विकट रास्ते, केवल यही महत्व रखते हैं। जुगनुओ! जुगनुओ!

दौड़ते पैरों की आवाज़ों से माएदा-सान का बाग़ीचा भर जाता है। हम सब बच्चे बन गए हैं। अपने खेल में गुम। एक पेड़ के नीचे मैं सैम-सान से टकरा जाती हूँ। वह अपना बाँस का पिंजरा लिये खड़ा है। उसका दरवाज़ा खुला है और उसकी नज़र बेलों के पीछे ईइज़ा के अस्पष्ट शरीर पर टिकी है। उसकी जुगनुओं में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं रही—बावजूद उस उत्साह के जो उसने उन्हें इकट्ठा करने में लगाया था। ओह, वही हुआ जिससे मैं डरती थी! ईइज़ा के भाग्य ने उसे छा लिया है। वह कुछ सोच नहीं पा रहा। जहाँ तक उसका ताल्लुक है, दावत दावत नहीं रही।

"आओ, हमारा साथ दो, सैम-सान!"

वह अन्यमनस्क-सा मुस्कराता है। मुझे वह नहीं देख रहा।

मुझे आश्चर्य होता है कि वह अपनी लड़कों की-सी बाँह मेरे कन्धों के गिर्द डालकर मुझे क्षण-भर के लिए अपने साथ सटा लेता है—उसी तरह जैसे उसने उस सुबह मिचिको को तालाब के किनारे अपने साथ सटाया था।

"यह तुम्हारे साथ भी हो सकता था युका!" वह गम्भीरता से कहता है।

प्रसन्नता की एक लहर, जिसका कि मैं वर्णन करने की कोशिश नहीं करूँगी, मेरे भीतर कहीं से उठ आती है। शक्ति सँजोकर फिर मेरे पूरे शरीर में दौड़ जाती है। जिस ढंग से उसने यह कहा और जिस तरह उसने मुझे पहली बार सिर्फ़ युका कहकर बुलाया, उससे मुझे महसूस होता है कि मैं सैम-सान की कुछ लगती हूँ। मैं हिलती नहीं हूँ, क्योंकि मैं उसे अपनी सुरक्षित बाँह हटाने नहीं देना चाहती। मैं चाहती हूँ कि वह मेरी उष्णता महसूस करे, जैसे कि मैं उसकी महसूस कर रही हूँ, और बिना उसकी तरफ़ देखे बात करती हूँ।

"एक बात सच है कि आज की रात मुझे कुछ नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम यहाँ से। इससे मैं महसूस करती हूँ कि मैं सुरक्षित हूँ।"

सैम-सान की बाँह मेरे कन्धे के गिर्द कस जाती है, लेकिन तभी वह उसे गिरा देता है, जैसे कि उसे ख़याल हो आया हो कि उसे वहाँ नहीं होना चाहिए था। फिर थोड़ा लजाकर हँसता है।

"तुम जानती हो—यह पहली बार है जब मुझसे किसी ने ऐसा कहा है! मुझे अच्छा लगा। मेरे ख़याल में यही बात हर आदमी चाहता है कि वह किसी को सुरक्षित महसूस करा सके। शायद यह बड़े होने का एक हिस्सा है। हाँ युका, यह एक अजीब-सी बात है। एक तरह से मैं यहाँ हिरोशिमा में आकर बड़ा हुआ हूँ। एक तरह से नहीं, बलिक कई तरह से।"

थोड़ी देर में जुगनू पागल हो उठते हैं, जैसा कि जुगनुओं की पार्टी में हमेशा होता है। वे हर जगह हैं—पेड़ों पर, छतों पर। कुएँ के पास की आइरिस के फूल जली

मोमबत्तियों की तरह लग रहे हैं, क्योंकि जुगनू उनके कोनों पर टिके हैं। घास एक चमकदार ग़ालीचा बन गई है, जिसके ऊपर माएदा-सान की काली बिल्ली 'प्रिंस गेंजी' ठाठ से चल रही है। उसकी मूँछों पर भी रुपहले जुगनू चमक रहे हैं।

"बड़ी बहन!"

मैं अँधेरे में एक बार आवाज़ सुनती हूँ, और ओहात्सू की आकृति सामने आ जाती है।

"क्या है छोटी बहन?" ओहात्सू खेल से गरम और हाँफती हुई मेरे पास आ जाती है।

"तुम्हें यकीन है न कि तुम्हें हमारे इतना प्यारा समय बिताने से बुरा नहीं लग रहा? मेरा मतलब है कि फ़्यूमियो अस्पताल में इतना बीमार पड़ा है, इसलिए।" ओहात्सू फुसफुसाती है, "बड़ी बहन, यह मेरी ज़िन्दगी की सबसे प्यारी शाम है। सब-कुछ कितना सुन्दर है—ये जुगनू, ये सितारे—छोटे-छोटे केक जो तुमने बनाए हैं। मैं यह अपनी दावत कभी नहीं भूलूँगी। पर तुम्हें यकीन है न कि तुम्हें बुरा नहीं लग रहा?"

"बिलकुल नहीं, छोटी बहन!" मैं जवाब देती हूँ, "मैंने तुम्हें बताया नहीं था कि फ़्यूमियो पहले से अच्छा हो रहा है? उसका बुख़ार उतर गया है और उसके ख़ून में सफ़ेद अंश बढ़ रहा है। अब अपने हिरू के पास भाग जाओ।"

"तुम समझती हो कि फ़्यूमियो अब जल्दी ठीक हो जाएगा? नहीं?"

"हाँ मैं समझती हूँ ज़रूर ठीक हो जाएगा।" मैं जवाब देती हूँ। मेरी बहन के चेहरे से तनाव दूर हो जाता है।

"ओह बड़ी बहन, मुझसे बर्दाश्त नहीं होता! आह, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ! मैं हिरू को कितना प्यार करती हूँ! मुझसे तुम दोनों के लिए यह प्यार बर्दाश्त नहीं होता। मैं नहीं जानती कि मैं तुम दोनों में से किसे ज़्यादा प्यार करती हूँ।"

"हिरू को स्वाभाविक रूप से," मैं मुस्कराकर कहती हूँ, "अब जल्दी से उसके पास वापस भाग जाओ, यह मेरा हुक्म है।"

वह जल्दी से अपने लम्बे चिपकते किमोनो में उड़ने लगती है, लेकिन सहसा रुककर झटके से पीछे की तरफ़ मुड़ आती है।

"तुम वचन देती हो कि फ़्यूमियो ठीक हो जाएगा?" ओहात्सू याचना करती है। मैं उत्तर में कहती हूँ, "मैं वचन देती हूँ," तो उसकी आँखें चमक उठती हैं। वह जल्दी से पार्टी में लौट जाती है।

ओह प्रिय झूठ, तुम्हारी सहायता के बिना मैं कैसे सँभाल सकती थी? मैं जानती हूँ कि हैरो-सान तुम्हारे हक में नहीं है, लेकिन मेरे ख़याल में वह ग़लत सोचता है। प्रिय झूठ, तुम मूल्यवान हो—उसके लिए जो प्रेम करता हो।

तेरह

तो तुम पिता बन गए, गिलहर! कितने ख़ुशक़िस्मत हो! तुम्हारे पास छोटे, स्वस्थ और सुन्दर बेटे-बेटियाँ हैं जो पेड़ के सूराख़ से बाहर झाँक रहे हैं। हर एक तुम्हारी ही छोटी-सी मूर्ति-जैसा लगता है। ओहात्सू ने और मैंने तुम्हें अखरोटों की एक थैली ला दी है। अब तुम्हें चोगे के बारे में परेशान नहीं होना है। तुम सारा दिन फ़्यूमियो की खिड़की के चौखटे पर बैठकर उसे और उसके साथी मरीज़ों को याद दिला सकते हो कि इस धरती पर सुख अभी भी मिल सकता है। यह अजीब बात है कि मनुष्य भी गिलहर की तरह उन्हीं चीज़ों के लिए तरसता है—प्रेम, स्वास्थ्य, बच्चों और शान्ति के लिए। लेकिन इन चीज़ों को पाना आजकल गिलहरियों के लिए मनुष्य से ज़्यादा आसान है।

"हमारा गिलहर मोटा नहीं हो गया?"

मादोका, जिस लड़के के पपोटे नहीं है, खिड़की के पास अपने बिस्तर से मुझे पूछता है।

मादोका-सान की आवाज़ उत्साहपूर्ण लगती है। वह ख़ुद काग़ज के पन्ने की तरह पतला है—दरअसल उस कमरे के छह मरीज़ों का उतना वज़न नहीं होगा जितना तीन स्वस्थ पुरुषों का, हालाँकि उनके जिस्म वहाँ-वहाँ से सूज रहे हैं जहाँ उनकी ग्रंथियाँ बेकार हो गई हैं। ओह, मैं मुश्किल से फ़्यूमियो को देख पा रही हूँ! एक सप्ताह के छोटे-से समय में ही उसकी बाँह सिकुड़ी-सी लगने लगी है, जबकि उसका चेहरा दुगुना सूज गया है। अपने फूले, फटे होठों और थकी आँखों के साथ मेरे पति का चेहरा एक नक़ाब की तरह लगता है, जो शारीरिक पीड़ा को व्यक्त करता है। मैं दर्द हूँ, यह आवाज़ इसके मुँह से निकलती लगती है।

"आपको कल रात नींद आई, जीजाजी?" ओहात्सू पूछती है। वह, सैम-सान और मैं फ़्यूमियो के बिस्तर के पास खड़े हैं। वह हम सबको अपने करीब पाकर ख़ुश लग रहा है। मेरे पति की आँखों में एक अजीब-सा भाव उमड़ आता है, जब वह ओहात्सू की तरफ़ सिर हिलाता है, मानो वह हम सब लोगों से ज़्यादा देखता हो, ज़्यादा जानता हो। फ़्यूमियो क्या जानता है? अगर वह हमें बता सकता तो भी हम

उसे समझ न पाते। आंट मात्सुई कहती हैं कि दर्द को समझने से पहले इन्सान को स्वयं दर्द तक पहुँचना चाहिए।

सैम-सान अपनी नज़र मेरे पति पर से नहीं हटा पा रहा। इस सप्ताह हर बार अस्पताल आने पर और फ़्यूमियो की हालत बदतर होते पाकर वह अपनी आँखें सिकोड़े उसे देखता खड़ा रहा है। हो सकता है मेरे पति का अपने भाग्य को इतने धैर्य से स्वीकार कर लेना सैम-सान को दुविधा में डाले हो। अपने ही विनीत ढंग से मेरे पति ने ऊँचाइयों को छू लिया है। वह उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया है जहाँ छोटे और मामूली लोगों के लिए स्थान नहीं है।

"युका, क्या मैं फ़्यूमियो से दो शब्द कह सकता हूँ?" सैम-सान मेरे कान में फुसफुसाता है, "तुम्हें एतराज़ तो नहीं?

सैम-सान बिस्तर के क़रीब एक क़दम बढ़ आता है। उसका चेहरा गम्भीर है। वह अपने अव्यवस्थित बालों में हाथ फिराता है।

"देखो, मुझे बात कहनी नहीं आती," वह शुरू करता है, "मैं बात करने में ज़्यादा अच्छा नहीं हूँ। लेकिन मैं तुम्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ, फ़्यूमियो—मेरा मतलब है यह सब भोगने के लिए। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे ज़रिये मैंने हिरोशिमा का अर्थ जाना है—यह वह चीज़ है जिसे ज़्यादा लोग नहीं जानते। मैं कुछ-एक लोगों को बताऊँगा। यही कुछ मैं इस समय कर सकता हूँ कि लोगों को बताऊँ।

धीरे-धीरे, बड़े ध्यान के साथ, मैं अनुवाद करती हूँ। जब मैं समाप्त करती हूँ, तो फ़्यूमियो आँखें ऊपर उठाकर सैम-सान की आँखों से मिलाता है। एक क्षण के लिए दोनों युवक एक-दूसरे की तरफ़ देखते हैं। ओह, मेरे दीन पति, तुम्हारी नज़र में अचानक कितनी शक्ति आ गई है! फिर फ़्यूमियो हँसता है—हाँ, हँसता है। सैम-सान के चेहरे पर लहू दौड़ जाता है। फिर भी वे एक-दूसरे को देखते रहते हैं। एक क्षण के लिए मुझे लगता है कि सारा ब्रह्मांड रुक गया है—चुपचाप खड़ा अपनी टोपी उतारे इन दो युवकों के आगे नतमस्तक हो रहा है। वह अमर क्षण गुज़र गया, लेकिन समय के चेहरे पर अपना निशान छोड़कर।

"मेरे ख़याल में फ़्यूमियो सो गया है, बड़ी बहन!" ओहात्सू फुसफुसाती है।

"हाँ, छोटी बहन!"

हम पंजों के बल बिस्तर से परे हट जाते हैं। हम फ़्यूमियो के एक-एक साथी मरीज़ की तरफ़ झुकते-झुकते ही पीछे गलियारे में निकल आते हैं। हम डॉ. दोमोतो से लगभग टकरा जाते हैं। हर समय प्रसन्न रहनेवाला वह डॉक्टर जल्दी से गलियारा पार कर रहा है—लम्बे-लम्बे डग भरते एक पच्छिमी व्यक्ति के साथ, जिसके बाल घने हैं और दाढ़ी काली है।

"ओह! किस दुविधा में मैं फँस गया हूँ!" सैम-सान को देखते ही डॉ. दोमोतो चिल्लाकर कहता है, "अच्छा बताओ, तुम्हारी फ्रेंच कैसी है?"

सैम-सान सिर हिलाता है। वह गम्भीर है। यह सच है कि उसका लम्बा दुबला शरीर बाहर गलियारे में है, लेकिन उसके ख़याल अभी तक फ़्यूमियो के कमरे में ही हैं।

''आह, बुरी बात है! लेकिन छोड़ो, आओ चाय पियें। दफ़्तर में चलो।'' डॉ. दोमोतो कहता है।

वह दरवाज़ा खोलता है, और हम सब अन्दर दाख़िल होते हैं—वह झाड़दार दाढ़ी वाला फ्रांसीसी, सैम-सान, ओहात्सू और मैं।

''यह डॉ. बोनार्ड हैं—दुनिया-भर में उत्पत्ति-विज्ञान और विक्रियाओं के विशेषज्ञ।'' डॉ. दोमोतो सैम-सान को बताता है। ''पच्चीस साल पहले मैंने पेरिस में फ्रेंच सीखी थी, लेकिन अब तक मैं वह लगभग भूल चुका हूँ। डॉ. बोनार्ड हमारे प्रसिद्ध जापानी विशेषज्ञों से विचार-विमर्श करने जापान आए हैं—प्रोफ़ेसर तोमोकि से, डॉ. फ़्यूजिमोतो से और डॉ. किकुशि से, जो थोड़े कम प्रसिद्ध हैं। थोड़ी-सी स्वादिष्ट हरी चाय लोगे? हाँ? आह, अच्छा!''

झुकी टाँगों वाली एक क़स्बाती नौकरानी चाय पिला रही है और अपने हाथ के पीछे उस फ्रांसीसी की लम्बी दाढ़ी पर हँस रही है। लेकिन फ्रांसीसी की न तो चाय में और न ही शिष्टाचार में दिलचस्पी है। वह मेज़ पर पड़े नक्शो और तस्वीरों को ग़ौर से देख रहा है। मैं अपने प्याले के ऊपर से देखती हूँ कि उसमें एक तस्वीर मछली की है। लेकिन कितनी भयंकर मछली है!

''यह प्रोफ़ेसर तोमोकि द्वारा किया गया एक बहुत ही रोचक प्रयोग है।'' डॉ. दोमोतो बताता है (जो चालाकी से भाँप लेता है कि मैं चुपके से देख रही हूँ) तस्वीर में यह घृणित मछली जिसके दो सिर और चार आँखें हैं...

वह मुझे देखता है और उसे शब्द नहीं सूझता। फिर वह जापानी में बोलता है। मैं सैम-सान को समझाती हूँ कि इस मछली को प्रयोगशाला में निकिल की किरणें दिखाकर 'रेडिएट' किया गया था। बहुत जल्द ही यह अपरूपता के लक्षण दिखाने लगी।

''हाँ-हाँ,'' डॉ. दामोतो उत्सुकता से मुझे बीच में टोक देता है। ''सही है। जितनी ज़्यादा निकिल की किरणें, उतनी ज़्यादा अपरूपता। एक सप्ताह के बाद उसके दो सिर उग आते हैं और चार आँखें हो जाती हैं। यही बात पैदाइश से पहले इन्सान के बच्चों के साथ हो सकती है, अगर माँ को 'रेडिएट' किया जाए—बच्चों के बच्चे विकृत होने की अधिक सम्भावना होगी। विकृतियाँ कई बार एक नस्ल छोड़ जाती हैं। जो आदमी 'रेडिएट' हुआ हो, वह नहीं कह सकता कि उसके नाती-पोते इस मछली की तरह भयानक नहीं लगेंगे।''

प्रोफ़ेसर तोमोकि की मछली को देखते हुए हम मेज़ को घेर लेते हैं। फ्रांसीसी के हाथ में एक आतिशी शीशा है, जिसमें से वह काफ़ी देर तक देखता रहता है।

फिर वह शीशा ओहात्सू को देता हुआ मुस्कराता है। (काली दाढ़ी वाला वैज्ञानिक भी उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गया है) लेकिन छोटी बहन सिर हिला देती है और एक क़दम पीछे हट जाती है। वह कितनी पीली पड़ गई है! उसकी डरी आँखें एक बार जल्दी से मछली को देख लेती हैं, फिर इधर-उधर इस तरह भटकती हैं मानो भाग जाने का रास्ता ढूँढ रही हों। मैं एकाएक महसूस करती हूँ कि मुझे ओहात्सू को यहाँ से बाहर ले जाना चाहिए। मैं जल्दी से डॉ. दोमातो से नज़र मिलाती हूँ। एटम बम् के शिकार लोगों के ध्वस्त मस्तिष्क और सन्तुलन के अभाव को उससे ज़्यादा कौन जानता है!

"मिलने आने के लिए धन्यवाद," नाकामुरा-सान स्थिति को अपने योग्य हाथों में लेता हुआ जल्दी से मुझसे कहता है, "जल्दी ही फिर मिलेंगे।"

हम बाहर सड़क पर हैं। धूप में आकर ओहात्सू डॉक्टर के अँधेरे दफ़्तर से ज़्यादा ज़र्द नज़र आ रही है। उसके हाथ हृदय-विदारक ढंग से उसकी छाती को दबाए हैं।

"हमें भागना चाहिए। दस मिनट में मुझे काम पर पहुँचना है।" वह कहती है, हालाँकि उसे कभी वक़्त का पता नहीं रहता।

मैं उसे बताती हूँ कि अभी तो एक भी नहीं बजा और उसे तो दो बजे जाना है। मैं चाहती हूँ कि छोटी बहन को कुछ देर अपने साथ घुमाऊँ, लेकिन वह ज़िद करती है कि उसे आज एक घंटा पहले पहुँचना है। वह भाग जाती है। ओह! मैं डर से सिहर जाती हूँ और एक क्षण के लिए उसके पीछे भागना चाहती हूँ। मैं नहीं कह सकती कि छोटी बहन, जब उसका मूड बिगड़ा हो, तो क्या न कर बैठे!

"युका, ओहात्सू की चिन्ता न करो। तुम्हारी अपनी ही चिन्ताएँ कम नहीं हैं।" सैम-सान मेरी बाँह दबाकर आश्वासन देता है, "बच्ची प्यार में पड़ी है। सब ठीक-ठाक है।"

मैं सिर हिलाती हूँ और अपने को समझाने की कोशिश करती हूँ कि वह ठीक-ठाक है। पर मेरा ख़याल दूसरा है। कोई बच्चा, जिसने वह सब देखा हो जो ओहात्सू ने देखा है, कभी 'ठीक-ठाक' नहीं हो सकता। लेकिन मैं यह सब हैरो-सान से नहीं कहना चाहती।

हम नए पुल को पार करके नदी की तरफ़ चलते हैं। नीचे देखते हैं कि एक आदमी किनारे खड़ा जाल से मछलियाँ पकड़ रहा है। वह ठिगना आदमी जाल खींचकर फिर से फेंकता है। जाल एक दायरा बनाता गिरता है, जिससे फुहार-सी उठ आती है। किनारे के पास दो पत्थरों के बीच एक गुलदस्ता रखा है। मैं जल्दी-जल्दी चलती हूँ कि कहीं सैम-सान उसे देख न ले।

"देखो वहाँ फिर फूल रखे हैं! दोज़ख की मार! लगता है जैसे उन्हें वहाँ किसी मतलब से रखा गया हो।"

(मामा-सान, मैं इसे अब बताने जा रही हूँ! मैं किसी के सामने तुम्हारा प्यारा नाम लेते सकुचाती हूँ—तुम यह जानती हो। लेकिन सैम-सान अब हम लोगों में से ही एक हो गया है। उसे बताना चाहिए। उसके ज़रिये ही अन्य लोगों को पता चलेगा कि यहाँ क्या हुआ था। इसलिए प्यारी मामा-सान, मुझे क्षमा करना, अगर मैं इस अमरीकन लड़के को तुम्हारे अन्तिम समय के विषय में बता दूँ—पानी के अन्दर तुम्हारे गोलगोथा के बारे में। क्षमा कर मामा-सान! दोज़ो!)

"तुम ठीक कहते हो, सैम-सान! यह ओहात्सू का गुलदस्ता है।" मैं सैम-सान की बगल में खड़ी जंगले के पार देखती धीरे से कहती हूँ। सैम-सान चौंक जाता है, "ओहात्सू का?"

"हाँ," मैं कहती हूँ। "वह हर सुबह काम पर जाते समय ताज़ा फूल नदी में डाल जाती है।"

और मैं सैम-सान को वह बात बताती हूँ जो कुछ दिन पहले उसे बताना असम्भव था। मैंने इन सालों में किसी को यह बात नहीं बताई। मैं उसे बताती हूँ कि यही वह जगह है जहाँ हमारी माँ, एक ज़िन्दा जलती मशाल की तरह बम-विस्फोट के बाद नदी में कूदी थी। (उसने अपनी बच्ची ओहात्सू को पीठ से उतारकर नदी-किनारे डाल दिया था) मैं उसे बताती हूँ कि इस तरह के बीस हज़ार मानव-शरीरों के अवशेष हमारी इस नदी में दफ़न हैं। कभी-कभार लोग इस नदी की लहरों पर फूल चढ़ाने आते हैं। यही एक क़ब्र है जिसे वे सजा सकते हैं।

सैम-सान का हाथ मेरी बाँह को दबाता है। वह कुछ नहीं बोलता—मैं जानती थी वह कुछ नहीं बोलेगा। वह जान गया है कि उस पहली रात को, जो उसने हमारे घर पर बिताई थी, ओहात्सू ने उसके हाथों से फूल क्यों छीन लिये थे।

"सैम-सान, मैं तुम्हें मामा-सान के अन्तिम क्षणों के बारे में बताना चाहती हूँ। बताना चाहती हूँ, क्योंकि कितनों के आगे उस समय मौत बिछी थी—वह अन्त जो स्वभावतः हम सबके लिए है।"

मैं उसे वह दृश्य दिखाने की कोशिश करती हूँ जोकि मुझे बहुत साफ़-साफ़ याद है—हिरोशिमा का शहर आग की लपटों में घिरा है। मैं उसे बताती हूँ कि उस दिन कैसे मैं सड़कों पर भागी थी—अपनी मामा-सान और तीन साल की ओहात्सू के साथ, जोकि माँ की पीठ के साथ चिपकी थी। हमारे कपड़े विस्फोट से चिथड़े होकर उड़ गए थे और हम लगभग नंगी थीं। आग के गोले हवा में उड़ रहे थे—उड़ती आग के फ़व्वारे जोकि जिसे छूते उसी को निगल जाते—पेड़ों को, घरों को और भागते लोगों को। सड़कें इतनी गरम थीं कि उनका कोलतार उबल गया था। कितने ही कुत्ते ज़िन्दा भुन गए थे, क्योकि वे अपने पाँव नहीं छुड़ा सकते थे। ओह, मुझे याद है वे डर से कितना चीख़ रहे थे—वे कुत्ते! और मामा भी ज़रूर चीख़ी होंगी। पानी में कूदने से पहले...

"युका, अब और मत बोलो। तुममें ताकत नहीं है।"

"मुझे ताकत ढूँढनी पड़ेगी। तुम्हें मालूम होना चाहिए।" मैं कहती हूँ, "क्योंकि तुम अब इसके बीच में हो, हम सबके साथ।"

मैं सैम-सान को वह सब बताती हूँ, जोकि आंट मात्सुइ ने मुझे बताया था। एक पेड़ की शाखा मुझे बेहोश करती मुझ पर आ गिरी थी। इसी से मैंने अपनी मामा-सान के अन्त की कहानी अपनी आंट से सुनी थी। (ओह, झुलसी पेड़ की शाख़, अपनी ज़िन्दगी को शायद मैं तुम्हारी ही देन समझूँ!)

आंट मात्सुई कहती हैं कि वे कभी उन चीख़ों को नहीं भूल सकतीं—उस जलते मांस की तेज़ बदबू को नहीं भूल सकतीं। वही थीं जिन्होंने ओहात्सू को उठाया था जबकि मानमा हताशा चीख़ के साथ पानी में कूद गई थीं। वहाँ और लोगों के बीच से उन्होंने अन्तिम बार अपना चेहरा ओहात्सू की तरफ़ फेरा था। डूबने से पहले उन्होंने ओहात्सू का नाम लिया था—ठीक उसी जगह जहाँ तुम यह फूल देख रहे हो। उसके फूल...

मैं आगे नहीं कह पा रही। और मामा-सान, "तुम्हारा स्याह चेहरा उस भूरे पानी में से ऊपर अपनी बेटी की तरफ़ देख रहा है। तुम्हारे सिर के गिर्द एक दैवी मुकुट है—तुम्हारे जलते बालों का। मैं सौगन्ध खाती हूँ मामा-सान—तुम्हारे स्याह चेहरे की सौगन्ध खाती हूँ, तुम्हारे जलते बालों की—कि अपना शेष जीवन इस बात में दे दूँगी कि फिर कभी ऐसा न होने पाए। आह, मामा-सान! तुम मेरी तरफ़ देखकर मुस्करा रही हो? क्या यही तुम अपनी लड़की से आशा करती थीं—कि वह वचन दे कि वह इस काम में जुट जाए? तो लो वह तुम्हें मिल गया है। मैंने सौगन्ध खा ली है। अब तुम्हारा दुखी चेहरा लहरों में खो गया और उसकी जगह ओहात्सू के फूल तैर रहे हैं। क्या तुम्हें शान्ति मिल गई है मामा-सान? क्या तुम शान्ति से हो, डार्लिंग?"

चौदह

'को'! कोई कैसे किसी को समझाए–ख़ास तौर से एक अमरीकन को? वह 'को' को समझने में, या उसके लिए अपनी ज़िन्दगी को उलझन में डालने से उतना ही दूर है जितने कि हम अपने माता-पिता से मज़ाक करने या अपने पिता को 'पाप' बुलाने से। किओसोको में हिरू के परिवार से मिलने हम लोकल ट्रेन में हिचकोले खाते जा रहे हैं। मुझे यह याद करके हँसी आ रही है कि सुबह मुझे सैम-सान को 'को' समझाने में कितनी दिक़्क़त उठानी पड़ी थी।

"स्टेट्स में इस तरह की कोई चीज़ नहीं है," सैम-सान हठ करता रहा था, मानो 'को' जापान की ही विशेषता हो–कुछ-कुछ सुकियाकि की तरह। "मैं अपने पिता को प्यार करता था। सचमुच प्यार करता था, लेकिन पितृ-भक्ति..." वह हँसा, "नहीं, मैं बिलकुल 'को' को नहीं समझ पा रहा, युका!"

मैंने उसे दिखाकर समझाना शुरू किया। एक गद्दी लेकर मैंने उसे अपनी पीठ पर टिका लिया और बार-बार झुकती आगे को चलने लगी। बच्चा भी आगे को झुकता रहा।

"मैं एक जापानी औरत अपने पति का स्वागत कर रही हूँ। जब भी वह झुकती है, बच्चा-सान भी उसके साथ झुकता है। इस तरह घर में सबसे बड़े का आदर करना उसके निर्माण का हिस्सा बन जाता है। यह है 'को' की शुरुआत।"

"मैं कहता हूँ, युका, तुम तो ख़ासी अभिनेत्री हो।" सैम-सान चिल्लाया था।

उत्साहित होकर मैं उसकी तरफ़ दौड़ी, उसके सामने कितनी ही बार इतना नीचे तक झुकी कि मेरा सिर हर बार ज़मीन से टकरा गया।

"हे भगवान्! तुम क्या कर रही हो, युका?"

"यह नया साल है और मैं अपने सममानित पिता को उस सबके लिए धन्यवाद दे रही हूँ जो उसने पिछले साल मेरे लिए किया। मैं उसे अपनी भक्ति और उसकी इच्छाओं के सम्मान का वचन दे रही हूँ। यही 'को' है।"

ख़ैर, यह स्पष्ट है कि वह कभी नहीं समझेगा। अब इस दनदनाती गाड़ी में बैठकर हिरू को देखती महसूस कर रही हूँ कि 'को' सिर्फ़ हम जापानियों के लिए ही है। हिरू ने इस पर कभी सवाल नहीं उठाया–न ही मैंने या मेरी छोटी बहन ने। यह एक धार्मिक

अवसर है, क्योंकि उसकी होने वाली मंगेतर उसके माता-पिता के सामने पेश होगी–इसलिए हिरू ने अपना विशेष किमोनो पहन रखा है। उसकी चौड़ी बाँह पर सामुराइ परिवार का चिह्न कढ़ा है। इस पहनावे में हिरू बिलकुल भिन्न लग रहा है–अख़बार के उत्साही फोटोग्राफर-जैसा बिलकुल नहीं। वह हमारे पुराने ग्रन्थों के एक चित्र-जैसा लग रहा है। वह अपना सुन्दर शरीर तलवार की तरह सीधा किए है। न वह हिलता है और न बात करता है। सैम-सान का साथ न आना शायद अच्छा ही रहा।

उसकी बग़ल में बैठी छोटी बहन बाहर के दृश्य को देखती हुई अपने-से मुस्करा रही है। हमारी कभी-कभार की सैर से वह इतनी ख़ुश है कि होने वाली मुलाक़ात की परेशानी को बिलकुल भूली हुई है, हालाँकि यह मुलाक़ात ही उसके भविष्य के लिए सब-कुछ है।

"देखो, एक गाय।" वह चिल्लाती है। उसकी प्यारी नाक खिड़की से सटकर एक बटन की तरह लग रही है। "देखो वह नोकदार पहाड़ी! देखो वह नीला मन्दिर!"

हमारे डब्बे का हर व्यक्ति ओहात्सू पर मुग्ध है, और यह देखकर हिरू का तनाव थोड़ा कम हो गया है। शायद उसके माता-पिता पर भी उसकी मंगेतर का यही प्रभाव पड़े। कोई भी ओहात्सू से अप्रभावित कैसे रह सकता है?

"मिउचु!" जैसे ही हमारी गाड़ी एक छोटे-से स्टेशन पर रुकती है, वह हँसती और ताली पीटती हुई कहती है।

"मिउचु में ऐसी क्या विशेषता है?"

"कुछ नहीं। सिर्फ़ मैं बहुत खुश हूँ, बड़ी बहन! मैं हँसना चाहती थी–सिर्फ़ इतनी ही बात है।"

अगले स्टेशन पर जहाँ गाड़ी कई मिनट रुकती है, हिरू मुझसे पूछता है कि क्या मैं लेमनेड पिऊँगी? मैं सिर हिला देती हूँ। यह स्पष्ट है कि वह और ओहात्सू अकेले होना चाहते हैं। मैं एक ऐसा स्टाल देखती हूँ जहाँ उपहार की चीज़ों बिक रही हैं–लकड़ी पर नक़्क़ाशी किए फूलदान, रँगे काग़जी पंखे, सौभाग्य लाने वाले ताबीज़। मैं उन्हें छोड़कर उधर चली जाती हूँ। यहाँ सुनहले धागे से दिल की शक्ल का एक छोटा-सा नकली हीरा लटक रहा है। यह मेरी नाज़ुक ओहात्सू के लिए ही बना लगता है। हालाँकि इसकी क़ीमत कुछ येन ही है, फिर भी यह मेरी औक़ात से बाहर की चीज़ है। पर मैं बिना सोचे वह माला ख़रीद लेती हूँ और छोटी बहन की प्रफुल्ल मुस्कराहट देखकर मुझे उससे ज़्यादा क़ीमत वसूल हो जाती है। वह अपने हाथों को अपनी छाती पर दबाए फुसफुसाती है।

"मैं इसे हमेशा पहने रहूँगी, बड़ी बहन!"

"यह तुम्हारे लिए सौभाग्य लाएगी, डार्लिंग!"

अभी तक हम चावल के खेतों से गुज़र रहे थे, लेकिन अब हमारी गाड़ी उन्हें छोड़ देवदारों के जंगल में से गुज़रती हुई आख़िर समुद्र के पास पहुँच जाती है। हम कुछ

देर पानी के साथ-साथ चलते हैं और एक खाड़ी का चक्कर काटते हैं जिसके उस ओर से एक लाल चट्टान हमारी तरफ़ मुँह किए है। यह प्रसिद्ध ओसिमा चट्टान है।

"ज़रा सोचो, लोग यहाँ कूदने के लिए आते हैं।" अपनी नाक को फिर खिड़की से सटाए ओहात्सू कहती है। "कोई ऐसी मूर्खता क्यों करता है?" वह बिलकुल वैसे ही दाँत निकालकर हँसती है जैसे गाय नीले मन्दिर को देखकर हँसी थी। आज छोटी बहन को हर चीज़ मनोरंजक लग रही है—आत्म-हत्या करने का स्थान भी।

"लो, पहुँच गए। किओसोको!" हिरू कहता है। गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकती है। वह अब बहुत तनाव में है, और जैसे ही हम उसके परिवार के घर की तरफ़ बढ़ते हैं, मैं देखती हूँ कि उसकी कनपटी की एक छोटी-सी नस फड़क रही है। वह अभी से अपने घर के परिचित माहौल में आ गया है। कोई बूझ सकता कि और दिन यही आदमी एक पच्छिमी अख़बार का फ़ोटोग्राफ़र होता है? इस क्षण लगता है कि हिरू अपने धन्धे को भूल गया है—अपनी रोज़ की दुनिया को भी और हमें भी। ऐसे भाव से जैसे कोई मन्दिर में दाख़िल होता है, वह गेट पार करके वह तना हुआ-सा उस रास्ते पर बढ़ चलता है जो उसके बाँस के साधारण घर की तरफ़ जाता है। सामने देवदारों की एक कतार है और एक छोटा-सा आदमी और एक छोटी-सी औरत उन्हीं पेड़ों की तरह सीधे और तने हुए, सीढ़ियों पर खड़े हमारा इन्तज़ार कर रहे हैं। उनके किमोनो बिलकुल फटे-पुराने हैं और आसपास हर चीज़ टूट-फूटकर ध्वस्त हो चुकी लगती है। फिर भी इस घर को और घर के मालिकों को देखने से ही कुलीनता का आभास मिलता है। मैंने उनके किमोनो की बाँह पर बने फीके राज-चिह्न न देखे होते, तो भी मैं जान जाती कि वे ओहात्सू से और मुझसे भिन्न हैं। उसके चेहरे के भाव अत्यन्त संयत और सधे हुए हैं। स्वागत करने का उनका ढंग भी बहुत आकर्षक और नम्रतापूर्ण है।

"योकु इराशाइ माशिता। दोज़ो।"

कई बार नीचे झुकने के पश्चात् हम पाँचों सीधे होते हैं, तो मैं अपने अतिथियों के चेहरे पर एक छिपी नज़र डाल लेती हूँ। उफ़्! अपेक्षित मुस्कानों की जगह उनके शालीन चेहरों पर निराशा का भाव है जो मुझे चौंका देता है। यद्यपि उनकी आँखें ओहात्सू की सुन्दरता पर मुग्ध हैं और मुझे विश्वास है कि वे उसके हृदय की कोमलता को भी जान रही हैं, फिर भी कहीं कुछ ग़लत है—बहुत ग़लत। मैं अपने दिल में एक चुभन-सी महसूस करती हूँ।

"कृपया हमारे तुच्छ जलपान में हिस्सा लीजिए। दोज़ो!"

हम फिर से झुकते हैं। फिर से नम्रतापूर्ण रूढ़ियों को दोहराते हैं। फिर हम काले देवदारों के नीचे एक दायरे में कोमल फूस की चटाई पर घुटने टेककर बैठ जाते हैं। एक प्रौढ़ बोना जगह-जगह से रफ़ू किया किमोनो पहने काग़ज़-जैसे पतले कटोरों में हरी चाय उँडेलता है। यह आचार-विधि काफ़ी देर तक चलती है और सिवाय साधारण

शिष्टाचार के और कोई बात नहीं की जाती। दोनों परिवारों की इस पहली मुलाक़ात में चाहे कोई भी विशेष बात न हो, लेकिन इससे दोनों ओर के परीक्षण में कोई बाधा नहीं पड़ती। जो कुछ मैं और मेरी छोटी बहन हैं, वह गौण हैं; महत्वपूर्ण है हमारी आवाज़ों की ध्वनि, हमारा उच्चारण, हमारी भंगिमाएँ, और हमारे हाव-भाव। इसके अलावा हमारे पहनावे को भी बहुत ग़ोर से देखा-परखा जा रहा है। हिरू के माँ-बाप को ओहात्सू पसन्द आ गई है। वे एकाएक उस पर मुग्ध हो उठे हैं। लेकिन जितना ही लड़की उन्हें भा रही है, उतना ही उनकी आँखें उदास होती जा रही हैं।

आख़िर मैं उन्हें आपस में नज़रें मिलाते देखती हूँ। कुलीन लोगों की तरह वे शालीनता के साथ घुटनों से उठते हैं और अपने बेटे को सम्बोधित करके कुछ समय के लिए अकेले अपने साथ आने को कहते हैं। वे उसके साथ अत्यधिक औपचारिकता से पेश आते हैं। उसे आश्वासन देते हैं कि वे ज़्यादा समय नहीं लेंगे, और उसे शाम के काम के वक़्त तक हिरोशिमा पहुँच जाने देंगे। काम सबसे पहले है, उसका पिता संजीदगी से कहता है। फिर ओहात्सू के तथा मेरे सामने झुककर कहता है कि हम कुछ क्षणों के लिए उन्हें क्षमा करें।

"हमारा नौकर आपके लिए ताज़ा चाय ले आएगा। हमें क्षमा कीजिएगा। दोज़ो!"

"इसमें कहने की क्या बात है?" हम जवाब देती हैं और लगभग ज़मीन तक झुक जाती हैं।

पिता बहुत सीधा चलता हुआ सबसे पहले घर में घुसता है। फिर हिरू घुसता है और फिर उसकी माँ, उस फुदकती चाल से जोकि पहले स्त्रियों का गुण मानी जाती थी, अपने बेटे से तीन क़दम पीछे। (अवज्ञाकारी सैम-सान इसे कबूतरी चाल कहता।) सब-कुछ शिष्टाचार के अनुकूल है। कोई भी अखरने वाली बात नहीं, जब तक कि...

हिरू सिर घुमाता है। उफ़्! उसकी आँखों का भाव बिलकुल एक कैदी-जैसा है जोकि अभी अपनी सज़ा सुनने वाला हो। क्या यह सच में वही हिरू है जिसे हम ऊनी पैंट और चमड़े की जैकेट में रिपोर्टर का कैमरा लिये, और ज़ेबों में फ़ोटोग्राफ़िक फ़िल्में ठूँसे, इधर-उधर भागते देखती हैं? या क्या दो हिरू हैं? क्या हम सबमें दो-दो इन्सान हैं?

ओहात्सू उछलकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है। "हिरू..." वह फुसफुसाती है। हालाँकि उसने मुश्किल से सुन पाया होगा, फिर भी मैं देखती हूँ कि हिरू का तना हुआ जिस्म काँप जाता है। लेकिन तभी 'को' उस पर छा जाता है। अपनी नज़र हटाकर वह अपने पिता के पीछे उस जर्जर घर में चला जाता है। उसकी माँ सिर झुकाए अपने दोनों मालिकों के पीछे-पीछे फुदकती चली जाती है। उसकी नाजुक झुकी गरदन ज़िन्दगी-भर की आज्ञाकारिता और दुःख का आभास देती है।

"बड़ी बहन..."

ओहात्सू की व्यथा-भरी आवाज़ मुझ तक पहुँचती है, लेकिन मैं अपना सिर हिला

देती हूँ। इससे पहले कभी ओहात्सू के सहायता चाहने पर मेरी उसे मना करने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन ऐसे मौक़े पर व्यक्तिगत भावनाओं का कोई मूल्य नहीं होना चाहिए। जो हो, हमें शिष्टाचार के अनुसार रूढ़िगत व्यवहार करना चाहिए। ओहात्सू झट से समझ जाती है। घुटनों पर होकर वह फिर से मेरे क़रीब उसी तरह चुपचाप बैठ जाती है जैसे एक छोटी बहन को बैठना चाहिए।

उस ठिगने बूढ़े की मेहरबानी! उसे भी, हर एक की तरह, ओहात्सू बहुत प्यारी लगी है। वह उसके साथ लाड़-प्यार करने लगता है।

''कुछ चाय?'' वह तुतलाता है, ''एक केक? दो छोटे केक?''

बौना चमकते चेहरे से छोटी बहन की तरफ़ देखता है और ओहात्सू झुककर एक केक ले लेती है। धीमी आवाज़ में हम उस प्रौढ़ नौकर के साथ मौसम के बारे में बात करती हैं। वह बताता है कि सत्तर साल में यह सबसे गरम बसन्त है। (मेरी सुन्दर ओहात्सू एकदम हामी भर देती है, यद्यपि उसने कुल सत्रह बसन्त ही देखे हैं।) अपने नंगे पैरों पर हल्के से दौड़कर वह बूढ़ा चेरी के पेड़ से एक कोंपल लाकर ओहात्सू के सामने घास की चटाई पर रख देता है। वह फूलों को उसके हाथ में न ठूँसकर उसके सामने रखता है, मानो ओहात्सू इतनी नाजुक हो कि फूल भी न उठा सकती हो—वह, जिसे विनाश की शक्ति स्वयं छूकर जा चुकी है।

''आह, वे लोग वापस आ रहे हैं, छोटी बहन!'' मैं फुसफुसाती हूँ।

जैसे ही हिरू और उसके माँ-बाप संजीदा भाव से घर से बाहर निकलते हैं, हम अपने घुटनों पर झुक जाती हैं। उस समय मुझे लगता है कि हम किसी नाटक में हिस्सा ले रही हैं। जैसे हमारे प्राचीन नाटकों में हर संयत संकेत, मुँह में बुदबुदाया हर शब्द, एक निर्दिष्ट अन्त की ओर ले जाता है, वैसे ही ओहात्सू और मैं यहाँ घुटने टेके बैठी शेष कलाकारों के पहुँचने की प्रतीक्षा कर रही हैं। अ-नाटक अकसर प्रेम और कर्तव्य के संघर्ष को चित्रित करते हैं। हमारा नाटक भी ऐसा ही है, लेकिन इसकी तह में एक ऐसी भयानक कथावस्तु है जिसका आविष्कार किसी पुराने कवि ने नहीं किया था। कभी उन्होंने ऐसे पात्र की सृष्टि नहीं की थी जो अस्वाभाविक सन्तान पैदा करने के लिए शापित हो और इसी कारण जिसका अपने प्रेमी से मिलन निषिद्ध हो।

वह भयंकर मछली! जैसे ही ओहात्सू की नज़र हिरू के चेहरे पर पड़ती है, मैं उस मछली को उसकी आँखों में प्रतिबिम्बित देखती हूँ। उसकी फैली पुतली में वह 'रेडिएट' हुई मछली तैर रही है जिसके दो मोटे सिर हैं और चार दुःख-भरी आँखें—वह, जिसकी तस्वीर हमने डॉ. दोमोतो के दफ़्तर में देखी थी। मैं देखती हूँ कि मेरी बहन के शरीर में कँपकँपी भर जाती है। क्या उसे अचानक अपने शरीर से नफ़रत होने लगी है? उसकी बाहरी खाल बेदाग़ है, यह सच है, पर उस लहू का क्या होगा जो छोटी बहन की नाजुक नसों में दौड़ रहा है? क्या उस निरंकुश बम ने हमेशा के लिए

उसके लहू और अस्थियों को दूषित कर दिया है—ओहात्सू नाम की उस ख़ूबसूरत लड़की की कोख को भी?

"ओह, अभी से साँझ हो गई है," हिरू का पिता कहता है और मुझे लगता है कि उसकी आवाज़ भी एक अ-नाटक के अभिनेता की तरह है।

"बहुत सुन्दर साँझ है," मैं उत्तर में कहती हूँ।

क्या आदमी निराशा के क्षणों में भी सन्तुष्ट महसूस कर सकता है? 'सुन्दर साँझ' दृढ़तापूर्वक यह कहने पर अपने इन शब्दों की ध्वनि मुझे प्रसन्नता देती है। जैसे ही ओहात्सू और मैं अपने पैरों पर खड़ी होती हैं, मुझे लगता है कि उसे भी उस शक्ति से सहारा मिल रहा है जो मेरे अन्दर से फूट रही है। मैं उसे छूती नहीं, फर भी महसूस करती हूँ कि हिरू और उसके माँ-बाप से अलग होकर पीठ सीधी और सिर ऊँचा किए चलने में उसे मुझसे सहायता मिल रही है। हाँ, मैं महसूस करती हूँ कि मेरे पास हम दोनों को सहारा देने के लिए काफ़ी शक्ति है।

मैं उन्हें धन्यवाद देकर लौटने के लिए निर्धारित सीढ़ियों का पालन करती हूँ और अपने मेज़बानों को बताती हूँ कि उनके घर में स्वागत पाना हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है।

"कितना सुन्दर बाग़ीचा है! यह दृश्य भूला नहीं जा सकता। बहुत-बहुत धन्यवाद!"

आह, विजय! मेरी विजय! वह हल्की-सी मुस्कान जिसके साथ हिरू का पिता मुझे देखता है, उसके अनुमोदन का संकेत है। मैं देख सकती हूँ कि हिरू भी मेरे और ओहात्सू के व्यवहार से सन्तुष्ट है, हालाँकि उसकी आँखों में त्रास का भाव है। मेरा हृदय गर्व से फूल जाता है। मैंने अकेले समय के अनुकूल आचार को निभाया है और इस तरह पाँचों व्यक्तियों की पीड़ा को दूसरे धरातल पर ला दिया है। मैं एक और मुस्कान चेहरे पर ले आती हूँ और मुझे लगता है किं मैं हिरोशिमा की एक सच्ची बेटी बन गई हूँ।

"हमें गाड़ी पकड़ने के लिए जल्दी करनी होगी।"

"सोदेस्का। आपकी वापसी की यात्रा सुखद हो। अब धूप ढल चुकी है, इसलिए काफ़ी सुहावना लगेगा। समुद्र-तट का रास्ता बहुत ही प्यारा है।"

"हाँ, बहुत ही प्यारा है।"

हिरू के पिता के चेहरे के भाव से मुझे लगता है कि उसने हमें अपने परिवार का सदस्य मान लिया है, हालाँकि हम कभी भी उस परिवार की नहीं हो सकेंगी। उसने हमें सामुराइ स्वीकार कर लिया है—हालाँकि हम बहुत साधारण लोग हैं। वह छोटी बहन को उसी तरह देखता है जैसे कि अपनी बहू को देखता।

हम अन्तिम बिदाई लेती हैं—अपने रास्ते चलते बार-बार झुककर मुस्कराती हुई। जैसे ही हिरू नरम बेंत के गेट को खोलता है, गेट बिलकुल वैसी ही आवाज़ करता है जैसी कि अ-नाटक के अन्त में परदा गिरने पर होती है।

पन्द्रह

"मैं तुम्हारे लिए एक स्ट्राबेरी लाई हूँ, बी बुलबुल! बहार की सबसे पहली स्ट्राबेरी।"

प्लास्टिक का थैला बगल में दबाए मैं फ़्युसुमा सरकाकर जल्दी से घर के अन्दर घुस आती हूँ। जल्दबाज़ी अच्छी आदत है—अपने ख़यालों को जल्दी दौड़ाने से कहीं बेहतर है अपनी टाँगों को दौड़ाना। लेकिन एक बार आदमी घर आ जाए, तो दौड़कर कहाँ जा सकता है? मैं अपना थैला नीचे रखती हूँ और उन आवाज़ों को सुनने के लिए रुक जाती हूँ, जिन्हें जानती हूँ कि मैं सुन नहीं सकती। क्या यह चार दिन पहले की ही बात है कि यह छोटा-सा घर लोगों से भरा था और आवाज़ों से गूँजता था? जब से मिचिको और तादेओ आंट मात्सुइ के पास रहने चले गए हैं, मेरा घर एक दरगाह-सा बन गया है।

मैं बी बुलबुल की स्ट्राबेरी उसके पिंजरे के पास ले जाती हूँ। यह स्पष्ट है कि वह भी वैसे ही विषाद में है जैसे कि मैं हूँ। वह अपने बाँस के पिंजरे में एक बुढ़िया की तरह बैठी है, परों के दोशाले में लिपटी, पीठ दोहरी किए और सिर लटकाए। उसकी चोंच खुली है और आँखें बन्द हैं।

"तुम्हें शरम आनी चाहिए बी बुलबुल," मैं उसे डाँटती हूँ। "खाना खाने और पिंजरे पर मेरे चादर डालने से पहले ही तुम सुस्ताने लगीं?"

लेकिन मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं इसके पिंजरे के आगे घुटनों के बल बैठ जाती हूँ और बहुत कोशिश के साथ अपनी पीठ सीधी और सिर ऊँचा रखती हूँ। मैं इतनी थकी हूँ कि उठकर अपने लिए एक चाय का प्याला भी नहीं बना सकती। फिर भी मैं अपनी आँखों को निश्चित कोने में रखी सुपरिचित चायदानी की ओर जाने से नहीं रोक सकती। ओहात्सू भी उस दोपहर यही सोच रही होगी, जब चायदानी के भारी तले के नीचे परची रखकर वह चली गई थी।

"मैं तोक्यो जा रही हूँ," उसने लिखा था। "मुझे ढूँढने की कोशिश न करना, बड़ी बहन! हिरू मुझसे शादी करने के लिए ज़िद कर रहा है, अपने सम्मानित माँ-बाप की इच्छा के विरुद्ध। इसीलिए मुझे ऐसा करना पड़ रहा है। मैं शादी नहीं कर सकती। हर युवक को स्वस्थ बच्चे पैदा करने का अधिकार है। मेरे बच्चे, हो सकता है, उस

मछली की तरह हों। बड़ी बहन, मैं तुमसे प्यार करती हूँ, लेकिन मुझे जाना ही है। कृपया मुझे क्षमा करना। आदर के साथ, छोटी बहन!''

विचित्र बात है! ओहात्सू की लिखावट की अशुद्धियों के कारण मेरी आँखों से आँसू टपकने लगते हैं। स्वसत्य! बेचारी छोटी बहन अपनी विचारलिपि कभी ठीक नहीं कर सकी, और उसकी हस्तलिपि तो दोषपूर्ण थी ही। चावल के काग़ज को देखते हुए, जिसके कोने में चेरी का पेड़ बना है, मुझे लगता है कि उसके आड़े-तिरछे अक्षर उन कलियों की तरह हैं जिन्हें हवा ने बिखरा दिया हो।

साथ ही मुझे यह भी लगता है कि ओहात्सू के उन अशुद्ध लिखे शब्दों में एक चेतावनी है जिससे कि लोगों को सतर्क होना चाहिए। ओहात्सू अकेली एक कमज़ोर लड़की थी, लेकिन लाख—या दस लाख—ओहात्सू कमज़ोर नहीं होंगी! अगर युवा लड़कियाँ बच्चे पैदा करने से इन्कार कर दें तो वे बम लाने वाले विमान-चालकों से अधिक शक्तिशाली होंगी। विमान-चालकों के पास देने को केवल मौत है, जबकि वे कमज़ोर ओहात्सू अपने जिस्म में ज़िन्दगी के बीज लिये हैं।

''युका, युका! क्या बात है?''

मैं अपने पैरों पर जल्दी से खड़ी हो जाती हूँ। मेरे बालों की सुइयाँ गिर जाती हैं और मेरे लम्बे बाल मेरे कन्धों पर बिखर जाते हैं। अब लगभग अँधेरा हो चुका है, और मैं खुश हूँ कि सैम-सान मेरा चेहरा नहीं देख सकता। लेकिन मैं उसके हाथ को अपने बालों और गालों को छूते महसूस करती हूँ।

''तुम रो रही थीं युका?'' मैं अपना सिर हिला देती हूँ। लेकिन सैम-सान मुझे अब तक अच्छी तरह से जान गया है। मैं उसे धोखा नहीं दे सकती। "तुम्हें अभी तक ओहात्सू की कोई चिट्ठी नहीं मिली? यही बात है न, बच्ची?''

मैं सिर हिलाती हूँ। यद्यपि उसने कहा नहीं है, लेकिन मैं जानती हूँ कि सैम-सान को भी विश्वास है कि ओहात्सू हिरोशिमा के ढंग से 'बाहर चली गई है।' उसने बम के उत्तरजीवियों की आत्महत्या के बारे में इतना सुन रखा है कि वह मेरी हताश बहन के भाग्य के सम्बन्ध में सही अनुमान लगा सकता है। क्या उसी के नाम वाली प्राचीन ओहात्सू ने भी प्रेम की ख़ातिर आत्महत्या नहीं की थी? फिर भी मैं यह मानने से इन्कार करती हूँ कि सैम-सान सही सोचता है। साथ ही एक कँपकँपी महसूस करती हूँ। अपने सामने ओसिमा की चोटी देखते हुए भी, जिसके पास से हम उस दिन गाड़ी में गुज़रे थे, मैं इस आशा से चिपट रही हूँ कि मैं अपनी छोटी बहन को फिर से देखूँगी। मैं इस आशा को कभी नहीं छोड़ूँगी।

सैम-सान तुनक रहा है। एकाएक उसकी मुट्ठी आवाज़ के साथ नीचे आती है।

''हे भगवान्! ''मुझे उन सब ज़िन्दगियों का ख़याल आता है जो बम से तबाह हुई हैं। चौदह साल हो गए हैं उसे गिरे, लेकिन उसका काम अभी तक चल रहा है।

इस बीच हम ख़ामोश बैठे दूसरे बम के गिरने का इन्तज़ार कर रहे हैं। हम जानते हैं कि वह बम हिरोशिमा को तबाह करने वाले बम से हज़ार गुना शक्तिशाली होगा, लेकिन क्या हमें इसकी परवाह है? ऐसे लगता है जैसे कि हम कठपुतलियों की दुनिया में रहते हों। मैं इसके लिए ज़रूर कुछ करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें अभी और इसी वक़्त बता रहा हूँ।''

सैम-सान अपने हाथों को अपने बालों में फेरता है। वे भयंकर बिच्छू के डंकों की तरह तीखे लग रहे हैं।

''जी हाँ! मैं जीना चाहता हूँ। मैं युवा हूँ। मुझे कोई बटन दबाने वाला अफ़सर बुहार नहीं सकता—अगर मैं बचना चाहूँ, तो मैं बेचूँगा। मुझे इतना क्रोध आया हुआ है, और मैं इतना ढीठ हूँ कि सोचता हूँ मैं बच सकता हूँ। पिताजी हमेशा ज़िन्दगी के लिए लड़ते रहे। मैं भी क्यों न लड़ूँ?''

वह रुक जाता है। मुझे कोई बाग़ीचे से बुला रहा है—बल्कि केवल फुसफुसा रहा है। जो आवाज़ अन्दर आती है वह इतनी बैठी, इतनी धीमी है कि मैं एकदम जान जाती हूँ कि यह माएदा-सान है। उसे इस समय क्या चाहिए?

मैं सैम-सान को छोड़कर जल्दी से बाहर अँधेरे में चली जाती हूँ। लकड़ी के गेट के पास हमारा पुराना दोस्त खड़ा है। उसका चेहरा उस पत्थर की लालटेन की मद्धिम रोशनी में और भी ज़्यादा मुरझाया नज़र आ रहा है।

''क्या तुम ठीक-ठाक हो माएदा-सान?'' मैं घबराहट में पूछती हूँ। ''क्या ईइज़ा...?''

''युका, तुम्हें अपने-आपको मज़बूत बनाना चाहिए। उन्होंने तुम्हारे लिए अस्पताल से फ़ोन किया है। फ़्यूमियो तुम्हें बुला रहा है, युका!'' माएदा-सान कहता है। उसकी टूटी आवाज़ इतनी धीमी है कि मैं मुश्किल से सुन पाती हूँ।

मैं माएदा-सान के किमोनो की बाँह पकड़ लेती हूँ। मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या हुआ है, लेकिन फिर सोचती हूँ कि पूछने की क्या तुक है। उन्होंने मुझे इतनी रात गए कभी न बुलाया होता जब तक कि...। हम गेट पार करके सड़क पर चलने लगते हैं। मेरे पैर तेज़ी से चलते हैं, जिससे कि उस बेचारे बूढ़े आदमी को भी मेरे पीछे जल्दी करनी पड़ती है। उसकी एक 'गेता' उतर जाती है और वह झुककर उसे उठाता है।

''मैं दौड़कर आगे चलती हूँ, माएदा-सान!'' मैं चिल्लाती हूँ।

''यही अच्छा होगा। मैं तुम्हें अस्पताल में मिलूँगा। युका, तुम जल्दी चलो।''

ओह, मैं सालों से इतनी तेज़ नहीं दौड़ी! मैं काली स्याह सड़क पर भागती हूँ और वह ख़ाली मैदान पार करती हूँ जहाँ मैं नाकानो-सान और तामुरा-सान को हर सुबह लाती हूँ। एक क्षण के लिए मेरे लम्बे बाल मेरे पीछे पाल की तरह लहराते हैं,

और दूसरे ही क्षण हवा उन्हें मेरे मुँह पर दे मारती है और मुझे आधी अन्धी बना देती है। मैं आगे और आगे भागती जाती हूँ, बिना देखे कि मैं कहाँ जा रही हूँ—और अचानक मुझे लगता है कि मैं अकेली नहीं हूँ—कि मेरे आस-पास और हर तरफ़ और भी लोग भाग रहे हैं—भाग रहे हैं—भाग रहे हैं।

हाँ, ये सब भूत हैं। चौदह साल पहले मैं इन्हीं सड़कों पर एक भयभीत झुंड के साथ भाग रही थी। चौदह साल वे सब मेरे ही सिर के अन्दर भागते रहे हैं, लेकिन आज रात वे फिर हिरोशिमा में वापस आकर मेरे बराबर दौड़ रहे हैं। उनके चेहरे काले पड़ गए हैं, और कन्धों से फटा मांस नीचे लटक रहा है। मैं उन्हें इस तरह पहचानती हूँ मानो मैंने उन्हें किसी भयानक सपने में देख रखा हो। वह लड़की जिसका सारा चेहरा जल गया है—वह आदमी जोकि अपनी पत्नी को अपनी पीठ पर उठाये है—ये उस समय भी मेरे करीब से भागकर जा रहे थे। हम उन स्कूल के बच्चों को भी पास से देखते हैं जो एक दायरा बनाए घुटनों के बल झुके हुए हैं—सब मरे हुए। और यह है वह कुत्ता। 'दूर' मेरे रास्ते से हट, कुत्ते! तेरे पंजे जलते कोलतार में फँस गए हैं। यही हम सबके साथ होगा अगर हम जल्दी नहीं भागेंगे। तेरी तरह हम भी ज़िन्दा भुन जाएँगे। मैं तेरी सहायता नहीं कर सकती, कुत्ते! मुझे अपने को बचाना चाहिए। मुझे मामा-सान को ढूँढना है। अपने से बहुत आगे मैं नदी-तट की सीमा-रेखा और पानी में कूदते सायों को देख सकती हूँ। बहुत-सी जलती मशालों की तरह जलते सिरों वाली औरतें किनारे से कूद रही हैं। क्या मेरी माँ उनमें है? कहाँ, कहाँ है मामा-सान?

"सामने देखकर चलो! तुम्हें क्या हुआ है, औरत?" अपने को गिरने से बचाने के लिए मुझे एक रोशनी के खम्भे को पकड़ना पड़ता है। मैं पूरे ज़ोर से एक वर्दीधारी सिपाही से टकरा जाती हूँ। इससे सहसा होश में आ जाती हूँ। मैं झुकती और बुदबुदाती हूँ, "मुझे क्षमा कीजिए, कृपया मुझे क्षमा कीजिए।" फिर सामने अस्पताल की बड़ी इमारत की तरफ़ जल्दी से बढ़ती हूँ। पिछले दो हफ़्ते में मैं कितनी अच्छी तरह इस जगह को जान गई हूँ।

हॉल में से गुज़रते हुए मैं अपने को आईने में देखती हूँ। अस्तव्यस्त और जंगली-सी! बिना सोचे मैं अपना किमोनो शीघ्रता से ठीक करती हूँ और अपने बालों को सहेजती हूँ। रात का पहरेदार मेरे क़रीब से गुजरता है और मैं रुककर उसके सामने झुकती हूँ। फिर मैं सीढ़ियों के ऊपर 'रेडिएशन' विभाग की तरफ़ तेज़ी से चढ़ती हुई एक नर्स की तरफ़ झुकती हूँ जोकि कई काग़ज़ी प्याले एक ट्रे में ले जा रही है। (हर प्याली में एक लाल गोली है, जो निस्सन्देह नींद लेने वाली गोली है।) अपने पंजों पर चलते हुए, जिससे कि किसी को परेशानी न हो, मैं फ़्यूमियो के कमरे तक पहुँचती हूँ और धीरे से उसका दरवाज़ा खोलती हूँ।

एक परदा। छह बजे जब मैं यहाँ से गई थी तो मेरे पति के बिस्तर के गिर्द कोई परदा नहीं था। लेकिन अब नर्स ने परदा लगा दिया है। मैं एकदम जान जाती हूँ कि इसका मतलब क्या है। मैं उसकी तरफ़ बढ़ती हूँ, पंजों पर ही, और जैसे ही उसके करीब पहुँचती हूँ, मैं उसकी आवाज़ सुन सकती हूँ। पहले मुझे लगता है कि वह अकेला नहीं है।

''फ़्यूमियो!''

उसकी आँखें मेरी तरफ़ घूमती हैं। वह अपना सिर नहीं हिला सकता। लेकिन बिस्तर के उस तरफ़ से उसकी आँखें मुझसे मिल जाती हैं।

''मैं तुमसे बात कर रहा था युका,'' फ़्यूमियो फुसफुसाता है।

मैं सिर हिलाती हूँ। मैं बिस्तर के बराबर घुटनों पर बैठकर उसका हाथ अपने होठों तक ले आती हूँ। उसकी आँखें मुझे देखकर चमक उठती हैं—वे कोमल और विनीत आँखें जिनमें कभी कड़ुआहट नहीं आई—चाहे ज़िन्दगी ने उससे कितना ही कठोर व्यवहार क्यों न किया हो।

''हाँ, मैं यहाँ लेटे-लेटे तुमसे बातें कर रहा था,'' वह फुसफुसाता है। ''मैं तुम्हें वह सब बता रहा था, जो मैंने पहले कभी किसी को नहीं बताया। मैं बहुत संकोची रहा हूँ—शब्द कभी ज़बान पर आए ही नहीं।''

वह रुक जाता है। लेकिन मैं जानती हूँ कि उसे अभी और कहना है। मैं आगे बात सुनने के लिए रुकी रहती हूँ।

''तुम मेरे लिए सब-कुछ रही हो,'' फ़्यूमियो को फिर से फुसफुसाते सुनती हूँ। ''तुम जानती हो, युका! मैं भी तुम्हारे लिए बहुत-कुछ था, और यही मुझे तकलीफ़ देता है। मेरा मतलब है कि तुम अपने प्यार का बिना उपयोग किए रह जाओगी और नहीं सोच पाओगी कि उसका क्या करो।''

मैं सिर हिलाती हूँ, लेकिन वह ज़िद करता है।

''हाँ-हाँ! तुम्हें पता है कि तुमने अपना सारा प्यार मेरे साथ बाँध रखा है, और अब वह प्यार ही रह जाएगा—मैं नहीं रहूँगा। मैं तुमसे यही कहना चाहता हूँ कि उसे बाँट देना, उन्मुक्त भाव से। हर एक को तुम्हारी ज़रूरत है—बिलकुल वैसे ही जैसे मुझे तुम्हारी ज़रूरत थी...''

वह मुस्कराने की कोशिश करता है, लेकिन दर्द का दौरा उसके चेहरे को विकृत कर देता है। उसका सारा जिस्म सिकुड़ जाता है। मेरा पति वहाँ लेटा दर्द के साथ लड़ता रहता है, जैसे कि एक आदमी किसी शेर के साथ लड़ रहा हो।

मैं अपने घुटनों से आधा उठती हूँ, नर्स को भागकर बुलाने के लिए, लेकिन फ़्यूमियो की सूखी बाँह बढ़कर मुझे रोकती है। वह अपनी कराह रोकने के लिए अपने होंठ काटता है। वह अपने साथी मरीज़ों को, जो परदे के उस पार हैं, परेशान नहीं

करना चाहता। (वह बहुत सभ्य है, वह हमेशा सभ्य रहा है।) फ़्यूमियो और वह शेर वहाँ लेटे कुश्ती कर रहे हैं। ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई में उनकी फूली साँस की आवाज़ मैं सुन सकती हूँ।

जीत फ़्यूमियो की होती है। मैं यह जानती हूँ क्योंकि वह मुस्करा देता है। मैं स्वभावतः झुक जाती हूँ। ज़मीन पर घुटने टेके मैं विजेता के आगे झुक जाती हूँ–उस बीमार और दुःखी व्यक्ति के आगे–उस महा-मानव के आगे जोकि मेरा पति है। जैसे ही मेरा पति मुझे अपनी विजय के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते देखता है, उसकी आँखों में आँसू उमड़ आते हैं, जो क्षण-भर के लिए उसकी लम्बी युवा पलकों पर चमकते रहते हैं। फिर छोटी-छोटी नदियों के रूप में उस दुःख-भरे मैदान से होकर बहने लगते हैं, जोकि कभी एक इन्सान का चेहरा था। आँसू उसकी सूखी फुन्सियों के इर्द-गिर्द होते और उसके ज़ख़्मों पर से बहते, उसके खुले मुँह की तरफ़ रास्ता बनाते हैं।

''फ़्यूमियो!'' मैं फुसफुसाती हूँ। कहने को इतना कुछ है कि मैं कुछ भी कह नहीं पाती। मैं केवल वहाँ घुटनों पर झुकी फुसफुसाती हूँ, 'फ़्यूमियो' और जानती हूँ कि वह मेरी आवाज़ नहीं सुन सकता।

वह तकिये पर अपना सिर मोड़ लेता है और आँखें मूँद लेता है। कटा-सा वह वहाँ लेटा है–इतना दुबला, इतना सूखा! उसका कुछ भी शेष नहीं है। आज रात फ़्यूमियो कैसा लग रहा है? अरे हाँ–चिथड़े गुड्डे-जैसा! आह, चिथड़े गुड्डे, प्यारे चिथड़े गुड्डे, मैंने ज़िन्दगी-भर तुम्हें कितना प्यार किया है!

●●●

मोहन राकेश

जन्म : 8 जनवरी, 1925; जंडीवाली गली, अमृतसर।

शिक्षा : संस्कृत में शास्त्री, अंग्रेजी में बी.ए., संस्कृत और हिन्दी में एम.ए.।

आजीविका : लाहौर, मुम्बई, शिमला, जालंधर और दिल्ली में अध्यापन, सम्पादन और स्वतंत्र-लेखन।

प्रकाशन : आखिरी चट्टान तक (यात्रा वृत्तान्त); इंसान के खँडहर, नये बादल, जानवर और जानवर, एक और ज़िन्दगी, फ़ौलाद का आकाश (कहानी); अँधेरे बन्द कमरे, न आनेवाला कल, अन्तराल (उपन्यास); आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे (नाटक); परिवेश (निबंध), मृच्छकटिक, शाकुंतल (नाट्यानुवाद)।

पुरस्कार/सम्मान : सर्वश्रेष्ठ नाटक और सर्वश्रेष्ठ नाटककार के संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नेहरू फ़ैलोशिप, फ़िल्म वित्त निगम का निदेशकत्व, फ़िल्म सेंसर बोर्ड के सदस्य।

निधन : 3 दिसम्बर, 1972, नई दिल्ली।

जयदेव तनेजा

जन्म : 15 मार्च, 1943, ओकाड़ा (अविभाजित भारतवर्ष)।

शिक्षा : एम.लिट्. पी-एच.डी।

आजीविका : अध्यापन एवं पत्रकारिता।

प्रकाशन : हिन्दी/भारतीय रंगकर्म पर 26 पुस्तकें प्रकाशित। मोहन राकेश पर—लहरों के राजहंस : विविध आयाम, मोहन राकेश : रंग शिल्प और प्रदर्शन (समीक्षा एवं शोध), राकेश और परिवेश : पत्रों में, पुनश्चः, एकत्र, नाट्य-विमर्श, मेरे साक्षात्कार, पूर्वाभ्यास (सम्पादन)।

पुरस्कार/सम्मान : दिल्ली नाट्य संघ, साहित्य कला परिषद्, हिन्दी अकादमी एवं केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

मोहन राकेश रचनावली

खंड 1
अंतरंग

खंड 2
पहले पहल

खंड 3
नाटक

खंड 4
एकांकी

खंड 5
कहानियाँ

खंड 6
उपन्यास

खंड 7
उपन्यास

खंड 8
निबंध-आलोचना

खंड 9
विविध विधाएँ

खंड 10
पत्र

खंड 11
नाट्यानुवाद

खंड 12
कथानुवाद

खंड 13
कथानुवाद

ISBN : 978-81-8361-427-6
₹ 10400 (तेरह खंड)

राधाकृष्ण
नयी दिल्ली पटना इलाहाबाद